Includes vol. 10 (Sept. 1886 – Aug. 1887)
& vol. 11 (Sept. 1887 — Aug. 1888).

हिन्दीप्रदीप ।

मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणि दीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

१ सितम्बर सन् १८८६ } { जिल्द १० संख्या १

इलाहाबाद

पण्डित बालकृष्ण भट्ट संपादक की आज्ञानुसार
देशोपकारक यंत्रालय
प्रयाग में मुं० बच्चूराम के
प्रबंधसे प्रकाशित हुआ
मूल्य अग्रिम ३।=) पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १।=)

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द १० | संख्या १ | १ सितम्बर सन् १८८६ ई०

बर्षारंभ

इस नश्वर और असार संसार मे जहाँ मनुष्य का चण भंगुर चंचल जीवन नलिनी दलगत जलविन्दु के समान तरल और अस्थिर हो रहा है वहां हम लोट पोट इस नवम बर्ष में भी किसी तरह अवम् न रह आज दशम वर्ष में प्रवेश करते हैं यह क्या कोई थोड़ आनन्द का विषय है-अब हम लोग अपने को आस्तिकों की कोटि मे लगाते हैं अतएव सबके पहले इसका धन्यबाद परात्पर परमात्मा को है फिर हमारे कतिपय सहायकों को है जो अपनी परम प्रशस्त लेखिनी के हाव भाव से हमारे प्रकाश को चौगुना बढ़ातेही रहे—और सब धन्यबाद का लवलु आव हमारे प्रवीण पाठकों को है जो हमे सादर करावलम्ब देतेही जाते हैं और आशा है आगे को भी हमे ऐसाही सहारा देते रहैं गे-हमारी दीन हिन्दी को सब ओर से क्रूरग्रह आक्रमणही

किये हैं नहीं तो हमारी इच्छा चिरकाल से यही हो रही है कि ग्राहक कुछ थोरे और बढ़ जाते तो हम इसी मूल्य पर मास में बत्तीस पृष्ठ अथवा सोलह सोलह पृष्ठ से दो बार मास में अपने प्रेमियों से आमिलते अस्तु अब भी हम अपने सहयोगियों में किसी से कम नहीं हैं इतनेही से हम ढाढस बांध अपने पुराने टूटे फूटे चरखे को ओटते ही जाते हैं क्या अचरज कभी को दिन लौटैं-हारिये न हिम्मत बिसारिये न राम-हमने पहले एक बार यह बिज्ञापन दिया था कि जो महाशय हमारे ग्राहक हैं या होंगे उन्हें क्रमशः के ढंग पर जो बिषय हमारे में छपे हैं या आगे को छापैंगे उन्हें अलग छाप कर विना मूल्य वितरित करैंगे सो ईश्वर की कृपा से वह प्रतिज्ञा भी हमारी पूर्ण हुई और यह नवीन उपन्यास "नूतनब्रह्मचारी„ रसिक सज्जनो को उपहार दिया गया-फुही फुही ताल भरता है—यदि पाठक जन हमे यथोचित सहारा देते रहें और हम वर्ष में दोबार या तीन बार ऐसी ही पुस्तकाकार विषय अलग छाप २ वितरित करते रहें तो हिन्दी को अवश्यमेव कुछ न कुछ लाभ पहुंचेगा — आशा है हमारे पाठक जन हमे सदा ऐसा ही प्रोत्साहित करते रहेंगे ॥

इङ्गलैण्ड की राज नैतिक जर्जर दशा

यदि ग्रहों का देश सेभी कुछ सम्बन्ध है और एक २ मनुष्य के हानि लाभ जीवन मरण के अतिरिक्त देश की उन्नति और अवनति पर ग्रहों का पूरा २ असर होता है तो यह अवश्य कहा जायगा कि इंगलेंड पर बुरे ग्रहों के आ-जाने के कारण नीति सम्बन्धी बातों की गांठे जैसी २ इनदिनो उलझती जाती हैं वैसी पहले कभी न उलझी थीं—पहले की और सब बातें जाने दीजिये इधर वर्ष ही डेढ़ वर्ष से जो लोग पक्षपात रहित भाव से इंगलेंड की "पालिटिक्स" राजनीति पर ध्यान दे रहे हैं उनको केवल घृणाही नहीं वरन आगे के लिये भय का भी हेतु विदित होता है—अब हम संक्षेप में उसी की समालोचना यहां करते हैं—न केवल कन्सर्वेटिवही दल को किन्तु इंगलेंड मात्रको लार्ड बीकन्सफील्ड के मरने का रंज करना चाहिये-लार्डबीकन्सफील्ड को यदि इस बात का घमण्ड रहा हो कि हमारेही इन्तिज़ाम से "घर में चैन चान और बाहर इज्जत" इंगलेंड को हासिल हुई तो यह घमण्ड उस्का बहुत ही ठीक था जिस्के मरतेही कन्सर्वेटिव दल तो सदा के लिये ध्वस्त होगया जिनके बीच कोई ऐसा रहा न गया कि प्रधान मंत्री का पद ग्रहण कर प्रजाका यथोचित मनोरंजन करे और इस्से न केवल कन्सर्वेटिवदल की बरन इंगलेंड की भी हानि हुई क्योंकि यद्यपि ब्राइट और चेम्बर लेन की सहायता से और सब से अधिक मार्किस आफ़ हार्टिङ्गटन की पुश्तपनाही से ग्लाडस्टोन साहबने बीकन्स फील्ड का दल तोड़ा पर बीकन्स फील्ड की बात उन्ही के साथ गई और यद्यपि ग्लाड स्टोन साहब को सब लोग चाहने लगे यहां तक कि "पीपल्स विल" "अर्थात् सर्व साधारण प्रिय विलियम" ग्लाडस्टोन का नाम पड़ा पर बाहर वालों की आंख में इन के समय पहले की आधी इज्जत भी इङ्गलेंड की न रही-यह सब

कोई जानता है कि "पालिटिक्स,, राज नैतिक बर्ताव मे सीधी अंगुली घी कभी नहीं निकलता सिधाई किया और मारा गया—प्रिन्स विस्मार्क की आंखों में इंगलेंड की वह प्रतिष्ठा न रहगई रूस को अङ्गरेजों की बहुतही कम डर रहगई और इस सब हानि का हेतु ग्लाडस्टोन साहब की सिधाई और नेक मिज़ाजी लोगोंने निश्चय किया है—नेक मिज़ाजी और सिधाई अच्छी बात है पर जब उस नेकी से बुराई की जड़ बंधी तब वह किस काम की ॥

हमारे इस लेख से पाठक जन यहन समझैं कि हम ग्लाडस्टोन साहब की बुराई कर कन्सर्वेटिव दलका पक्ष पात कर रहे हैं हमारा कदापि यह मतलब नहीं है—इस सब राज नैतिक आन्दोलन के केन्द्र भाग से हमलोग इतनी दूर हैं कि "पार्टी पालिटिक्स,, अर्थात् लिबरल कन्सर्वेटिव रेडकल आदि विविध दलों की सीमाओंमे आबद्ध राजनैतिक आन्दोलन की तरङ्गे हमतक पहुंच भी नहीं सक्तीं—और फिर हमको किसी एक के पक्षपात से क्या लाभ है हमारे हिसाब तो जैसे "उदई वैसे भान,, अतएव पक्षपात रहित समालोचना हमलोगों के लिये स्वयं सिद्ध है-आरम्भ से लिबरल दल का सब इतिहास लिखने की कोई अवश्यकता नही जान पड़ती केवल पारसाल अर्थात् सन ८५ के आरंभ में इस दल की क्या दशाथी उसी पर यहां ध्यान देते हैं–यह हम सर्वथा मानते हैं—कि यद्यपि ग्लाडस्टोन साहब ने हर तरह से इंगलेंड की बदनामी और हेठापन सब देशों मे करा दियाहो पर उनसे बढ़कर कोई दूसरा इन्तिज़ाम करने वाला भी ऐसा नथा जिस्को प्रधान मंत्रीत्व का पद दिया जाता और जोकि देश के यावत् मनुष्यों का विश्वास पात्र हो उनका शासन करता ॥

सन ८५ के मार्च या अपरेल मे जबकि बाहर इंगलेंड की पूर्ण रीत पर हंसी हो रही थी मिस्र का झगड़ा इतना बढ़ा हुआ था कि जिस्के निपटने की कोई सूरत नहीं देखाई पड़ती थी "गये थे रोज़ा छोड़ने नमाज़ गले पड़ी,, मिस्र का

इन्तिज़ाम करने गये थे अब वहां से निकलना दुर्घट हो रहा था" ऐंचन छोड़ घसीटन मे पड़े थे,, देश के (जिस देश से मतलब सदा हिन्दुस्तान है क्योंकि उचित अनुचित कोई लड़ाई हो खर्च उसका हिन्दुस्तान ही पर लदता है यही खच्चर ऐसा मज़बूत है जो इतना बोझ उठा सक्ता है) रुपये और प्राणियों की मन मानता आहुति इस मिस्र महा समर यज्ञ मे दी जा रही थी और कोई फल सिद्धि की आशा भी कोसों दूर थी-हिन्दुस्तान के पश्चिमोत्तर सिवाने पर का गोल माल बढ़ा हुआ था—यद्यपि जो बात तब होती अब भी हो सक्ती है पर इस बात को सोंच कर हँसी आती है कि रूस ने इंगलेंड को उन दिनों क्या समझ लिया था। यद्यपि रूस की तयारी बीसों वर्ष से हो रही है और यह सब लोग जानते हैं कि एक न एक दिन इंगलेंड और रूस मे खुला खुली धर पकड़ हो जायगी पर जैसा उन दिनो रूस ने अङ्गरेज़ों को बेवकूफ समझा था कदाचित् किसी दूसरे मंत्री के मंत्रीत्व पदारूढ़ होने के समय ऐसा नहीं समझा और एक के बाद दूसरे शहर को जैसा उन दिनो चोरी और सीनाज़ोरी के साथ रूस फतह करता जाता था यदि अपने शासन का दृढ़ कोई प्रबन्ध कर्ता मंत्री इंगलेंड का होता तो कदापि रूस की ऐसी हिम्मत न पड़ती–कहनेका तात्पर्य यह कि उस समय ग्लाडस्टोन साहब के इन्तिज़ाम की खूबी से हानिही हानि इंगलेंड की हो रही थी और यद्यपि इंगलेंड यह कहता ही रह गया कि" अबकि मारा तो मारा पर अब आगे को कुछ हिम्मत किया तो हम किसी तरह बरदास्त न करेंगे और बिना भिड़े कभी न तुम्हे छोड़ेंगे,, पर हमारा शेर रूस कब किसी की सुनता था और अपनी मन मानी कियेही जाता था सारांश यह कि उन दिनों अंगरेज़ों की राज नीत अत्यन्तही जर्जरित हो रही थी ॥

हमने जैसा ऊपर कहा कि ब्राइट ग्लाडस्टोन आदि उस तरह के लोग हैं जो लड़ाई करने से लड़ाई को बरकाना उत्तम समझते हैं परन्तु प्रबल शत्रु

के साथ इस प्रकार की नीति का बर्ताव कहां तक चेम कारी है इस्का विचार अति गूढ़ है और घर मे जैसो अंगरेजों की इन दिनो की दशा है कि वर्ष मे कई बार पार्लियामेन्ट टूटी पर फिर २ के जुड़ी और कोई बात आज तक स्थिर न हुई यह उसी राज नैतिक निर्बलताका कारण है–अस्तु बाहर इंगलैंड की जैसी हेठी हो रही है उसे हम दरसाय चुके पर इंगलैंड की आभ्यन्तरिक दशा के सम्बन्ध में यह हम अवश्य मानैंगे कि निस्सन्देह ग्लाडस्टोनही सा आदमी था जो बाहर इतनी फजीहत करा कर भी घर पर सब भांत सह्माले था यह इन्हो से बन पड़ती थी कि बाहर फजूल लड़ाइयां भी किये जाते थे और उस्का खर्च सांटने को स्वदेशियों पर टिकस भी लगाते जाते थे पर सब चीज़ की एक हद होती है और इन्ही अत्याचारों ने लिबरल दल की गवर्नमेन्ट को अन्त में लेभी डाला–जितना रूपया मनमानता खर्च करने की परवानगी अंगरेज़ों ने ग्लाडस्टोनकोदिया निस्सन्देह किसी दूसरे कोकभी नहींदीगई॥

माना हमने कि बाहर वाले सब यही कहते थे कि यह सब रूपया ग्लाडस्टोन साहब बुरी तरह प्रर बुरे कामो मे लगा रहे हैं पर इस्को कोई क्या करे "जिसे पिया चाहैं वही सोहागिन„ और कोई उनकी जगह रह कर ऐसा करता तो सब उस्को फाड़ खाते॥

इसी राजनैतिक विस २ के कारण जेनरल गार्डन सा इंगलेंड का प्रिय पुत्र मिसिर के समर यज्ञ मे बलि दिया गया और ग्लाडस्टोन को केवल इधर उधर थोड़ी सी बदनामी के उपरान्त सब कोई शान्त हो बैठे किन्तु जब "बियर„ शराब पर टिकस लगाया गया तब देश का देश उमड़ चला और सबों को यह बात असह्य मालूम हुई–धन्य है अंगरेजों की भोग लिप्सा सच है "आनको लुखरी सगुन बतावै आप कुत्तों से चिथवावै„ इसी एक बात से ग्लाडस्टोन के अधिकार का अन्त हो गया और कन्सर्वेटिव

दल वालों ने अधिकार प्राप्त किया पर बहुतही जल्द ये भी पदच्युत हुए उप-रान्त फिर निर्वाचन किया गया और उस्में जैसा उम्मेद की जाती थी ग्लाड-स्टोन साहब फिर नियत किये गये क्योंकि कान्सर्वेटिवों की बात सुनने को देश राज़ी न था पर अब कि बार अधिकार मे आते ही लिबरल गवर्नमेंट एक बड़े पुराने जंजाल मे फसी जिस्का ते करना रूस की लड़ाई से कदापि कम न था अर्थात् अयर्लैंड का झगड़ा पेश हुआ और यह झगड़ा ऐसा है जिस्का तै कर-ना बड़ी ही बुद्धिमानी की कसौटी है क्योंकि यह बुखार कुछ एक दिनदोदिन का जमा हुआ तो है नही सैकड़ों वर्ष से इंगलैंड और अयरलैंड के बीच रंजिश बढ़ती जाती है यहां तक कि आज कल जो इस झगड़े के उठाने वाले हैं उन को आप साक्षात् पिशाच रूप समझिये अपना देश स्वछन्द करने के लिये ये लोग ज़मीन और आस्मान उलट डालने को तैयार हैं तब मार पीट, दंगा फसाद, खून करना, जान लेना, आग लगाना डइना माइट से उड़ा देना तो मानो उनकेलिये बांये हाथ का खेल है जब ऐसे लोगों से साबिका आपड़ा है तो आयर्लेण्ड का झगड़ा तै हो इस्के दो ही तरीके हैं उन्मे पहला वह है जो ग्लाडस्टोन साहब ने चाहाथा-अर्थात् आयर्लेराड को पार्लियामें ट अलग कर देना और धीरे २ या एक बारगी उनको कुछ २ इखतियार देते जाना जिस्के माने यही हो सक्ते हैं कि आयर्लेण्ड बिल्कुल इंगलेडके अधिकार से निकल जाय और ग्रेट ब्रिटेनकी एक भुजा मानो काट दीजाय-यों कहने में तो निस्सन्देह यह बड़ी भारी हानि मालूम होती है और यही जान पड़ता है कि कोई अंगरेज् जिस्को अणुमात्र भी अपने देश का स्नेह है और जो सदा यही देखना चाहता है कि उसके देशमें जेतृत्वा-धिकारिता और आत्मीयत्वाधिकारिता दोनो भली भांत रजे पुंजे हैं—यह का हे को उस्के मन में कभी आने लगा कि ब्रिटिश महा वृक्ष की शाखायें

जिन शाखाओं से उस वृक्ष को बड़ाई और शोभा है एक के बाद एक कटती जांय और वृक्ष बेचारा स्थाणुवत् अकेला रहजाय—जिन लोगों को राजनीति से कुछ सम्बन्ध नहीं (और जिनकी सम्मति ऐसी २ बातों में सदा माननीय और आदरणीय होती है) मुक्तकंठ हो यही कह रहे हैं कि आयर्लैंड वह घोड़ा नहीं है जिसपर इंगलैंड सवार होकर अपनी प्रभुता के लगाम से उसको अपने वशमें रक्खे—एक दिन वह सवार को अवश्यमेव पटक कर अपनी पीठ खाली करेगा इस्मे कुछ सन्देह नहीं है॥

इन्हीं बातों पर ध्यान दे लोग यह कहते हैं कि सब से कम हानि इंगलैंड की इसी में है कि ग्लाडस्टोन साहब का प्रस्ताव स्वीकार किया जाय और जैसा वे कहते हैं सोई किया जाय-पर इस बातको कोई अंगरेज़ महाशय स्वीकार नकरेंगे बल्कि ग्लाडस्टोन साहब जिन्हों ने यह चाहाथा अपने देश बासियों के वास्ते तोते होगये और मधर के हुये मवाट के॥

बिदेशों में उनकी पालिसी की बदनामी हम ऊपर स्पष्ट रिति से दिखला चुके हैं अब अपने घर में भी जो सब के मनसे उतर गये तो मानो कहीं के नहुये ग्लाडस्टोन साहब की बिल जब ना मंजूर की गई तब यह फिर आवश्यक हुआ कि अब देखना चाहिये कि देशके लोगों की क्या सम्मति है जिस्के माने यही हुये कि पार्लियामेंट टूट कर फिर से बने-यहां तक कुछ हरज नथा पर लिबरल दल में स्वयं आपस में फूट पैदा हुई और जितने बड़े २ लोग ग्लाडस्टोन के सहायक और मित्रथे सब उनसे अलग होगये—चेम्बरलेन अपनी राय लिये अलग तान गाने लगे ब्राइट साहब ने अलग ग्लाडस्टोन को कोरा जवाब देदिया—मार्किसआफ हार्टिंगटन अलग हो अपना डेढ़ चावल पका रहे हैं-इन सबों का अलग २ क्या मत है उस्को

समालोचना करने लगैं तौ पृष्ठ के पृष्ठ रंग जांय तात्पर्य यह कि ग्लाडस्टोन का साथी अब कोई नरहा तब क्या अकेला चना भाड़ फोंडेगा क्या? जब लिबरल दलमें आपस ही में यह फूट पैदा हुई और आयर्लेंयड के मामिले में अपने प्रति पक्षी दल कन्सर्बेटिवसे बहुत से लिबरल मिलगये तब ग्लाडस्टोन की राजनीति को कब स्थिरता हो सक्ती है सब कारखाना उथलपथल होगया—अब जो लोग फिर से चुने गये एक इसी बातपर कि ग्लाडस्टोन के साथी नहीं किन्तु उनके विपक्ष दलवालों में हैं—ध्यान देने की बात है इस्से बढ़कर घृणित राजनीति और क्या हो सक्ती है कि पार्लियामेंट महा सभा जो योग्यता और न्याय प्रबीणता देखलाने का थियेटर है उस्मे स्थान पाने की योग्यता की कसौटी केवल इतने ही से है कि ग्लाडस्टोन के सपक्ष या विपक्ष दल का हो तो बस मानो सम्पूर्ण पालिटिक्स का निचोड आगया॥

अस्तु लार्ड सालिसबरी अब प्रधान मंत्री के पदपर नियुक्त हुये हैं और आयर्लेंयड को स्वच्छन्दता के बाधक हो बहुत से लिबरल भी उनके साथी हुये हैं लार्ड सालिसबरी सिवा आयर्लेंयड के प्रश्न के और जोबात उठावेंगे सब मे उनकी हार होगी क्योंकि और किसी बात के सम्बन्ध मे देश उनकी कभी सुनेहीगा नहीं तब बस होगया ऐसीही एक २ बात के लिये नित उठ पार्लिमेंट बदला करेगी—और आयर्लेंयड का प्रश्न तै होने को केवल अस्त्र की सहायता के और कोई दूसरी उपाय नहीं दीखती सो उस्मे भी आयर्लेंयड किसी से कम नहीं है—अमरिका वाले इन आयर्लेंयड के उत्पातियों को अलग तार दे चुके हैं कि हम तुम्हारे साथी हैं फ्रान्स मे बहुधा इस्की कमेटियां हुआ करती हैं डानोवन और रोसा से लोग यही धमका रहे हैं कि लण्डन भर को हम भस्म सात् करके रख देंगे--ऐसी

दशा में पार्लियामेंट और "मिनसटरी" मंत्रियों के दल की मिट्टी खराब होरही है और इंगलैण्ड की महा दुर्दशा है कि किसी मंत्री के रहने से उसको चैन ही नहीं है—इसीलिये हम कहते हैं इन दिनो इंगलेंड के राजनीति के बुरेग्रह आये हैं और उसका राज नैतिक प्रबन्ध सर्वथा जर्जर होरहा है ॥

। बेकाम का काम ।

हमारी गवर्नमेंट जो बुद्धिमानी और राजनैतिककुशलता की कलंगी खोंसे हुये है एक ऐसे काम में सिर पचारही है जिसे हम अनुचित काम या बेकाम का काम कहसक्ते हैं—लार्ड डफरिन की क्षिप्रकारिता और लोभी प्रकृति का परिणाम गवर्नमेंट के लिये साप छछूंदर वाली मसल का नमूना हुआ—"सांप छछुंदर यों-ग्रस्यो कि उगलत लीलत पीर"—यह ब्रह्मा का युद्ध क्या हुआ कि द्रौपदी की चीर हुई या सृष्टि का सर्व ग्रास करने वाले अन्तक महाकाल रुद्र के तृतीय नेत्र की धूमायमान अग्नि शिखा है जिस्मे प्रतिदिन सहस्रावधि प्राणी शलभायित होते जाते हैं—गयेथे वहां प्रजा को थीबा के अत्याचार से छुटाने और शान्ति स्थापन करने सो वहां अब एक इंच पृथ्वी भी ऐसी न बचरही जहां अराजकता न छाई हो तब तो एकही थीबा अत्याचार करने वाले थे अब डकैती के घोर उपद्रव मे एक २ डाकू सहस्र २ थीबाका अंश धारण किये महा प्रलय की लीला का अभिनय कर रहे है

"मान न मान मैं तेरा मेहमान,, थीवा अपने देश का स्वच्छन्द राजाथा उसके राज्य में कुछ लोग ऐसे भी रहे होंगे जो उसके अत्याचार के आखेट बनगये पर देश के देश को तो सन्तोष था कि हमारा राजा है हम किसी विदेशी के आधीन नहीं हैं — आप को क्या पड़ीथी जो "दालभात मे मूसलचन्द,, हो जा कूदे क्या आप समस्त ब्रह्माण्ड के अन्याय मिटाने और शान्ति स्थापन करने का ठीका ले उतरे हैं—अस्तु आपने जो कुछ किया अच्छा ही किया पर यह क्या कि "अन्य भुक्तं अन्य दृष्टान्तं,, न्याय का अनुसरण कर रहे हैं — आप से जो भूल बनपड़ी उसका फलआ-पही भोगिये हम सबों को उस भूल के कारण क्यों पीसे डालते हैं "आप आनको फूली निहारते हैं अपना टेंटर नहीं देखते,, थीवा को आपने अत्याचारी निष्ठुर हिंसक माना और आप बड़ा न्यायकर रहे हैं जो हमारे देश के मनुष्यों का प्राण और धन ब्रह्मायुद्ध मे होम किये देते हैं — दोहरा अन्याय-एक तो ब्रह्मा लेनाही कोई न्याय न था दूसरा अन्याय यह कि ब्रह्मा के विनाश करने मे जो खर्च हो रहा है वह इनकं लइसेन्स आदि टेक्सों के द्वारा हम से भर रहे हो इसी को हम "अन्यभुक्तं अन्य दृष्टान्तं" कहेंगे — आपकीकुटिल नीत की वलिहारी धन्य हैं आप॥

"कुछ धुन कुछ घुन कुछ राम चर्चा सुन,,
अतः कुछ परमार्थ चिन्तन भी चाहिये ।

राम नाम एक अङ्क है सकल साधना सून ।
अङ्क रहित कुछ हांथ नहि अङ्क सहित दसगून ॥
तुलसी या जग आय के सीख देख से लेय ।
जोतासों अनरथ करै ताहि अधिक रस देय ॥
चलती चक्की देखिके दिया कबीरा रोय ।
दो पाटन बिच आयके साबित गया न कोय ॥
फर्ज़ी शाह न व्है सके गति टेढ़ी तासीर ।
अपनी सीधी चाल से पथ्यादा होत वज़ीर ॥
नेह सगो सोई सगो देह सगो सो नाहिं ।
चिया संग जरजात है माता बैठत रोय ॥
दीन हि सब कह लखत है दीन लखत नहिकोय ।
जो रहीम दीनहिलखत दीन बन्धु सम होय ॥
जो रहीम होती कहीं भावी अपने हाथ ।
राम न जाते मिरग संग सीता निसिचर साथ ॥
बोलना चालना कुछ नहीं चुपरहना है ख़ूब ।
चुपरहने से दोजने मे मेरा महबूब ॥
जगमे दिया अनूप है दिया करो सब कोय ।
करका धरा न पाइये जोकर दिया न होय ॥

अब जनि कोउ भाखै भट मानी। बीर बिहीन मही मैं जानी ॥

बस अब कोऊ मत कहो कि हम हिन्दू हैं बस अब हिन्दू धर्म हो चुका और जो कुछ हिन्दूओं से हो सक्ता है वह भी देख चुके—इनके सामने—इनकी बस्ती में—इन के घरों की दीवार के पिछवारे—गोवध हो और ये आंख पसार २ देखें और किया धरा कुछ नहो बरन ललकार के सरकार से इज़ाज़त ले के साथ पुलिसकी चौकी पहरा के ऐसा भारी अत्याचार हो और हमसे कुछ नहो सके—हा हृदय बिदीर्ण होता है लेखनी इस अत्याचार को लिखते कम्पमान होती है—आप की हिन्दुयानी रसातल को चली गई अब आप कभी अपने को हिन्दू मत मानिये, अब आप क्यों इतना सिर उठाये हुये हैं, क्यों व्यर्थ को उधम मचाते हो—इन बातों से होता क्या है आपसे क्या बना और क्या बनेगा जहां २ मुसल्मानो से काम पड़ा तुमने मुहकी खाई सेलम् के विद्रोह में आपने क्या लाभ उठाया पंजाब में आपसे क्या हो सका—कहां २ आपने जय पाई जो अब भी जयकी आशा रखते हैं—छिः धिक् आप का बोदा पन—धिक् आप की सिधाई गोबर गनेस जी आप धन्यहो—तुह्मारा वह समय अब नरहा तुह्मारी सिधाई ने तुह्मारे कर बल धन सबको सत्यानाश में मिला दिया न अपने निजका कुछ बल और पौरुष है न तुह्मारी फरियाद कोई सुनने वाला है इस्से या तो चुपके सब अत्याचार सहलो; या बिष खालो या गंगा में डूब मरो और जो इस बेहया जिन्दगी से जीना ही चाहते होतो राज कर्म चारी तुमसे अपने घरों में बकरीद की कुरबानी करा देने को कहैं तो चुप होरहो बल्कि होसके तो उस्का सब प्रबन्ध करदो क्योंकि राजाज्ञा

पालन महा धर्म है और जो यह तुमसे नहो सके तो हिमालय में चलकर एकान्त में जहां बहुत से तुह्मारे पूर्वज कलियुगकी भयसे जाछिपे हैं वहीं तुमभी चल बसो जिस्मे ऐसे २ अत्याचारों की बात तुह्मारे कान तक न प्हुंचे और तुह्मारे मन तथा अन्तरात्मा में घिन न पैदा करे—वाह आपने भी खूब वही एडिटरो की टांग तोड़ा इसी अकिल से पार करोगे देखते नहीं ब्रिटिश राज्य का न्याय कारी सूर्य सहस्र किरनो से प्रकाश कर रहा है—शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं तब क्यों सर्वतोभावेन हमारी ही हार होगी ? मुसल्मानो को उनके अत्याचार का दण्ड दिया जायगा भाई आप का कहना चाहो सत्य भीहो पर तुमने क्या नही सुना—टेढ़ जानि शंका सबकाहु, बक्र चन्द्रमा ग्रसै न राहु—हिंदू सिवासिधाई के टेढ़ा होना जानै क्या ? तबक्यों इनकी बात पर कान दिया जाय यदि कहो सर्कार हमारी न सुनेगी तो हम अपना धन बल सब काम मे लावेंगे—सोधन को तो डफरिन से शासन कर्ता सदा आया करैं और टिकसों का ढेर आप के ऊपर लगा दिया जाय धनको कमतो न रहेगी और बलकी कहिये तो ईश्वर आपको सुमति दे जिस्मे वाल्य विवाहकी कुरीति आपकी जाति से नहटाये हटै देखिये कितना बल आपका दिन २ दूना होताजाता है—बुद्धिके बल को चिर कालसे आपने बिदाई कर रक्खी है जिस दिन से फूट का बीज देश में पड़ा उसी दिन से बुद्धि के सोते पर डांट लगा दीगई "काल दण्ड गहि काहु न मारा—हरै धर्म बल बुद्धि विचारा„ जब आपकी बुद्धि में यह समाया कि गोहिंसकों का देशमें अधिकार होनेसे हम सुखी रहेंगे और इसी आशामें उस समय अपने देश रक्षाके लिये प्राण न देदिया रण से भाग २ उनके अधिकार में जीते रहना अपना सौभाग्य समझा बल्कि उलटे उनके सहायक हुये तब क्यों व्यर्थ को चिल्लाते हो और अपना

सिर पिटवाने का उपाय करते हौ—एक बड़ा भारी बल एका का होना सो उस एका को गंध तक आपमें नहीं रह गई—क्या जब सेलम् मे झगड़ा भया था तब आप सोते थे आप नहीं जानते थे कि इन दुष्ट यवनो से एक बार हमको भी दुख सहना पड़ेगा—सेलं वालों की आपने क्या सहायता की थी जो उसी समय हिन्दू मात्र मिलकर इस्का उपाय करते तो आज यह बिपत्ति सहनी पड़ती? परन्तु आपको क्या पड़ी आप क्यों इस्का उपाय करते अब अपने सिर पर आपड़ी तो बिल बिलाते हो आज आप इस्का आन्दोलन किया चाहते हैं कल सरकार डरावेगी खबर दार किसीने कुछ सिर उठाया कि उपद्रवी समझा गया और ताज़ीरात हिन्द का दण्ड भागी हुआ बस फिर चुप रहतेही बनेगा और यह निश्चय जानिये सर्कार मुसल्मानो ही को प्रसन्न रखना चाहती है क्योंकि उन्में एका है और सरहंग भी वे ही हैं सिधाई सज्जनता आदि अच्छे २ गुणो की कदर का ज़माना अब न रहा—"नैर्गुण्य मेव साधीयान् धिगस्तु गुणगौरवम्" हम सत्य कहते हैं इस्का भर पूर सदमा आप को पहुचाही नहीं पहुचा होता तो दवाकी कहीं दूर न जाना पड़ता ढूढने के लिये आयर्लेण्ड वालों से सीख लीजिये कितना कष्ट सहते हैं पर जिस बातकी धुन बंधी है उस्से नहीं हटते—जिस बात से अपने धर्म मे बट्टा लगे उस्के लिये दुख उठाना भी उत्तम काम है "रंति देव बलि भूप सुजाना, धर्म धरेउ सह संकट नाना" जो इतनी हिम्मत हो तो कुछ करने का मन कीजिये नहीं चुप हो बैठ रहिये-जो आपस के मेल और एका के मीठे शरबतों से यह दुख जाता रहे तो क्या बात है नहीं तो सर्कार के कठिन शासन का हला हल का प्याला अवश्यही पीनाही पड़ेगा-परन्तु यह सब हम किस्से कहते हैं हमारे नगर मे कोई सच्चा हिन्दू रहगया है जिस्को इस गोवध का पूरा २ दुःख पहुंचा हो-बड़े रईस जिन्हों ने महाजनी और रियासत की नाक काट लिया है उन

की आमदनी का बड़ा हिस्सा बूचड़ों का व्यौहार है वे कब इस काम की ओर से मुह मोड़ अणु मात्र भी अपनी हानि सहना गंवारा करेंगे सौ कसाइयों के एक कसाई तो हमारे भाई बन्धों मे मौजूद हैं ऐसे नराधम महाचाण्डाल का संपर्क पहले छोड़िये तब आगे बढ़ने का मन कीजियेगा; आप अपने को अंगरेजी राज्य की प्रजा मत मानिये जब कभी इस तरह का मज़हबी झगड़ा आ पड़े तब यही मानिये कि आलमगीर के अन्यायान्धकार पूरित देश मे हम बसते हैं अन्तर केवल इतनाही है कि तब ऐसे समय मे हिन्दू भी मुसल्मानो से दबकर नही रहते थे दोनो कट मरते थे जो प्रबल होता था उसी की बिजय होती थी अब हिन्दू के लिये सर्कारी कानून सिर पर चढ़ा नाच रहा है कभी को इज्ज़त की भय से कभी को धर्म की भय से येनो दम निकालते हैं मुसल्मान लोगों की वही मसल है— "नंगा नाची फाटीका„ इसी से हम यही कहते हैं सर्कार का भरोसा बिल्कुल छोड़ रक्षा प्रबन्ध अपने आप कीजिये हो सके तो हिन्दूमात्र एकमत हो किसी तरह का संपर्क मुसल्मानो से न रखिये और यह प्रण आपका साधा न सधे तो चुपके हो रहिये और जो २ अत्याचार आप पर किये जांय उसे सहते जाइये मालाजपिये और पागुर करते बैठे रहिये।

। भारत मे राज नैतिक एकता कीबढ़ती ।

योंतो हिन्दू धर्म के कठ मुल्लाओं का हर एक बात मे "कलियुग कलियुग„ पुकारते रहना-कामही है किन्तु भारतवर्ष की वास्तविक दशा पर जो हम ध्यान देते हैं तो बहुत से ऐसे भलाई के चिन्ह देखते हैं जिन्हे देखने से प्रायः समस्त देश हितैषियों के मनमे एक तरह की ढाढस बंधती है—देश के व्योपार

इत्यादि को नष्ट होजानेसे बचाने के लिये जो हमारे देश बान्धव गण यत्न कर रहे हैं और कहते हैं भारत प्रतिदिन हजारों तरह पर धन से क्षीण हो-ताजाता है ऐसे लोगों की शिकायत को यथार्थ और समूलक मान कर भी हम इस बात पर यहां अपनी समालोचना में ज़ोर नहीं दिया चाहते वरन कुछ थोड़े से शारीरिक कष्ट सहकर भी जो हम लोगों की मानसिक उन्नतिके द्वार खुले हैं उनपर विशेष ध्यान दिया चाहते हैं—हम इस बात के पक्षपाती नहीं हैं कि हमारे देशकी धन के संबन्ध मे उन्नति होरही है किन्तु इसी धनकी क्षीणताही को दृष्टान्त मान हम यह पूछते हैं कि इस अवनति को दूर करने की उपाय सोचने वाले कौन लोग हैं ? निस्सन्देह इस हानि को सहने वाली आपकी सीधी सादी गौरूप भारतीय प्रजा है जिस्को भूखो मरना कैसा आप उनकी खाल भी खींच लें तो आहतक न करें गी और सब सहते जांयगी पर राज भक्ति से विमुख नहोंगी इस्से अधिक अपने मालिक की चार दासी और क्या होसक्ती है—हमारा यह कदापि आशय नहीं है कि अंगरेज़ी राज्य मे हमलोगों की आपदायें बढ़ती जाती हैं और हमलोग भी उनको दूर करने में सर्वथा असमर्थ हैं किसी तरह अपनी हालत बेहतर नहीं कर सक्ते—किन्तु बिट्रिश राज्य के आधीन रहकर बुराइयों से मुक्त होनेकी आशा प्रजा के लिये असंभव है—हम मुक्तकण्ठ हो अवश्य इस बात को कहा चाहते हैं कि हम लोग बहुत तरह की विपत्तियों मे फंसे हुये हैं। पर हर्षकी बात है कि उन बिपत्तियों के समझने की शक्ति हममे बढ़ती जाती है और सुशिक्षित गण जो हर जगह समाज के अग्रणी होते हैं उनकी संख्या भी बढ़ती जाती है—और सब बातों को छोड़ देश में धनकी क्षीणता ही को लीजिये हिन्दुस्तान का ऐसा कोई प्रान्त नहीं बचा जहां से इस्की पुकार नही सुनने मे आती बस एक इसी बात पर हम विशेष ध्यान दिया चाहते हैं।

यह कितनी भारी बात है कि इस समय कोई ऐसा प्रतिकूल वेदनीय दुःख नहीं है जिस्से भारत सन्तान दुःखित होकर एक स्वर से उस्के दूर करने को न चिल्ला उठती हों-यह हम नहीं तै किया चाहते कि मुसल्मानी राज्य में इस्से अधिक हम लोगों को पीड़ा थी या कम पर यह तो अवश्य कहेंगे कि इस अंगरेजी राज्य मे भारत का कोई कोना अंतरा नहीं बचा जहां कुछ अत्याचार हो और सब देश मात्र उस्को आंख खोल कर न देखें और उस्की व्यथा को न बूझें अर्थात् इस समय सर्व साधारण का ऐकमत्य रूपी ऐसा अमूल्य रत्न प्राप्त है जिस्के आगे बड़े से बड़े सम्राज्य का एकाधिपत्य का ज़ोर भी कोई चीज़ नहीं है ॥

अंगरेज़ी के बड़े २ नीति वेत्ताओं का मत है कि जब कोई देश उदाहरण को छोड़ वस्तु के निमित्त कारण Principle' पर लड़ता है तो जानना चाहिये Political education राज नीति शिक्षा का फल पूर्ण रीति से उसे मिल चुका है-हमारे यहां भी यही सिद्धान्त ठहराया है "यतोधर्म स्ततो जयः" इस Principle उसूल की लड़ाई से बढ़कर धर्म युद्ध और क्या होगा अतएव उसूल पर लड़ने वालों की प्रशंसा मे जो कुछ कहाजाय सब थोड़ा है-एकमत्य के लिये सब लोग तरसते हैं हमारे देश मे आजदिन "प्रिन्सिपल" उसूल के लिये लड़ने कोसवों का एकमत्य स्वयं सिद्ध है-लार्ड रिपन के समय इलबर्ट बिल के घोर आन्दोलन मे कौनसा तात्कालिक लाभ था किन्तु उसूलही पर लोगों ने ज़मीन आस्मान एक कर डाला।

निस्सन्देह यह ऐसीही भारी बात है जब किसी देश के मनुष्यों मे इस्के मर्म समझने की भरपूर बुद्धि आने लगती है तब उस देश के कल्याण मे बहुत दिनों तक बाधा नहीं रहजाती-किसी देश के जन समूह मात्र का एक उद्दे

श्य हो और उस उद्देश्य के लिये लाख आदमी लाख तरह से यत्न कर रहे हों तब उनके मनोरथ सफल होने मे क्या सन्देह है ?

कुछ लोगों का यह मत है कि हिन्दुस्तान में अभी तक जातीयता Nationality का अभाव है—हम कहते हैं जातीयता का इससे परे और क्या शुभ चिन्ह हो सक्ता है कि एकही वस्तु के लिये यत्न करने वाले यद्यपि अलग २ विचार और ढंग के मनुष्य हों पर उद्देश्य उन सबों का एकही हो तो जातीयता होने के लिये और चाहिये क्या ?

यहां तक हमने संक्षेप मे उस वस्तु को खोल कर दिखाया जो विविध भाषा और बिविध जाति और मत मतान्तर से छिन्न भिन्न भी भारत को एक कर रही है—और जिस्का नाम हम एक शब्द मे राजनैतिक एकता Political unity कहेंगे और यही राजनैतिक एकता के नित्य बढ़ती जाने से भारत मात्र को Common interest सर्व साधारण का सहज लाभ रूप रज्जु मे दृढ़ रीति पर बांधते जानेकी आशा है—हम देखते हैं जहां तहां बहुधा साल मे सर्वसाधारण की महा सभायें और कौमी जल्से इत्यादि अनेक द्वार हैं जिन्से यह एका दिन प्रतिदिन बढ़ताही जायगा—जिन लोगों की ऐसी समझ है कि यह सब थोड़े से ठौर २ आन्दोलनकारी लोगों की करतूत है उन लोगों को अपनी अज्ञान निद्रा में ढंपी हुई आंखको खोलकर देखना पड़ेगा और अपना धोखा दूर करना पड़ेगा॥

मनुष्य जातिका नियम है कि राजनैतिक सामाजिक या धर्मसम्बन्धी नियम किसी बाहरी द्वार की प्रेरणा से नहीं ग्रहण किया जासक्ता—ये बातें ऐसी हैं कि इनको देवता लोग भी अपने वरप्रदान से पूरी नहीं कर सक्ते अर्थात् इन बातों का अथवा उनपर चलने वालों की प्रणाली का निकट से निकट संबन्ध मनुष्य के रुधिर और अस्थिके साथ जुटा हुआ है और राजनैतिक

सामाजिक या धर्म संबन्धी नियम मनुष्य अपने लिये स्वेच्छया बनाता है और वेही उस्को ग्राह्य होते हैं—यह कोई छिपाने की बात नहीं है आज कल हमारे सामाजिक नियमो में बड़ा उथला पथल हो रहा है इस्का न कुछ आश्चर्य है न यह कोई खेद प्रकाश करने की बातहै जो लोग कुछ भी बिचार शक्ति को काम में ला सक्ते हैं वे मानते हैं कि कि काल की गति का सहज फल यह होताहै कि नई बातें पुरानी हों पुरानी बंधी हुई बातें जीर्ण और छिन्न-भिन्न हों और जो नियम एक समय समाज में अच्छी तरह काम देते थे और बुद्धिमत्ता की सीमा समझे जाते थे दूसरे समय काल के हेर फेर से उसी समाज के लिये अनुपयुक्त हों यहां तक कि उन नियमों का पक्षपात करने वाले भी हंसेजायं—लोग कहते हैं हिन्दूओं की समाज के बहुतसे नियम अत्यन्त कठोर हैं कदाचित् ऐसाही हो परन्तु इस बात की उनकी कितनी प्रशंसा है और उनकी जड़ कितनी पुष्ट और दृढ है कि इतने कठोर होने परभी आज तक चलेही जाते हैं और अबभी हम यह नहीं कहते कि टूट गये किन्तु यह तो अवश्य देखते हैं कि काल की गति से उन्मे भी कुछ २ जीर्णता आही गई है और जैसा हमारे महर्षि गुरू जनो के समय उनका आदर और मान था अब नहीं है—कहने का तात्पर्य यह कि इन्ही महर्षि गुरु जनोने ये नियम निकाले जो सब लोगों को ग्राह्य हुये और बड़े भारी सामाजिक बन्धन का कारण हो हमलोगों को अबतक आश्चर्यित करते हैं किन्तु समय के फेरफार से उन्मे भी कुछ २ ढीलापन आघुसा और सर्वथा अग्राह्य नहीं तो क्वचित् २ हास्यास्पद तो अवश्य हो रहे हैं-तो क्या इस्से यह सिद्ध हो सक्ता है कि हमारी समाज नियम राहित्य रूपी महा अन्धकार की दशा मे है? कदापि नही–"सामाजिकबन्धन„ "सामाजिक एका„ का यथार्थ अर्थ आजही कल तो हमलोग समझने लगे हैं और हमारी सुशिक्षित मण्डली

मे सामाजिक एका इनदिनो अपनी पूरी जवानी और जोश पर पहुंच दिन दूना चौगुना बढ़ता जाता है—और इस एकेकी नेव अपने लिये इन लोगों ने स्वयं डाला है-अब आप सोच सक्ते हैं वह कितनी दृढ़ होगी और सर्व ग्राह्यता और सर्व प्रियता इस राजनैतिक एकाकी इसीसे सूचित है कि आनन फानन दसही पांच बर्ष मे यह वृक्ष कितना पल्लवित और हरा भरा हो कर फूल फल से लद जाने की आशा को दृढ़ कर रहा है।

शेष

घी मे चर्बी आदि की मिलावट क्यों की जाती है।

अभीतक घीकी शिकायत केवल कलकत्ते ही मेथी अब बनारस और यहां भी मिलावट के घीका प्रवाद सुन आश्चर्य होता है कि क्या हिन्दुस्तान मात्र मे इस भ्रष्ट घीका प्रचार होगया है—हुआचाहे हम कई वर्ष से देखते आते हैं घीका भाव घटताही जाता है इस सबका कारण घृत उत्पादक पशुओं की दिन २ चीणता है रुपयेका सेरभर घी बिकना यहां तक तो सह्य होगया जब यह समझा गया कि अब आगे इसके लोग घीको महंगी नहीं सह सकेंगे तब उसमे मिलावट होनेलगी-अबभी हम अन्धे ही रहें और गोरक्षिणी सभा के उद्देश्यपर ध्यान न दें तो लाचारी है-अंगरेजी राज्य के जहां बहुतसे क्लेश हम उठा रहे हैं उन्मे घृत का अभाव भी अपने देश मे इतना होजाना एक महा दुस्सह दुःख है क्योंकि गो जो हम लोगों को घी दूध इतर पशुओं से कितना

अधिक देती हैं उनकी चीणता जैसा गवर्नमेंट के द्वारा इस समय होतीजाती है उतनी कभी नहीँ होती थी और न सर्कार अपने लाभके आगे प्रजाके लाभको समझेगी तब इसके लिये सिर दुखाने से हो क्या सक्ता है जो आपड़े उसे भोगें और सर्कार को उसकी स्वार्थ परता का धन्यवाद दें॥

।छोटा और बड़ा।

अन्ध परम्परा का अनुसरण करते संसार के काम का कुछ ऐसा ढर्रा चल निकला है कि बड़े पर सबकी निगाह जाती है सबों को यही होंसिला रहता है कि हम बड़े से बड़े हो जांय इज्जत मे बड़े हों नाम मे बड़े हों धन मे बड़े हों बात मे बड़े हों कुल मे बड़े हों विद्या मे बड़े हों इत्यादि फिर कहां तक बड़े होते जांय इसकी कुछ सीमाही नहीं-छोटे से छोटा भी यह कभी नहीं चाहता कि हम वैसेही बने रहें किन्तु जिसे देखिये बड़ा बननेही को हाथ लपकाता है-उसी अन्ध परम्परा का कुछ ऐसा प्रवाहचल निकला है कि छोटा शब्द कान मे पड़तेही लोग नाक भों सिकोड़ने लगते हैं छोटा अर्थात् घटिया बे कदर तुच्छहलका और हकीर-यह कोई नहीं समझता कि बड़े से बड़े की बुनियाद भी छोटा ही है-छोटे से बड़ाहो जाने मे तारीफ़ है खतरा और भय भी बड़ा ही होने मे बहुत है छोटे को कोई पूछता भी नही छोटा अपना जीवन जैसा चैन

और आनन्द में काटता बड़ा उसके लिये तरसता फिरता है इन्हीं सब बातो का सारांश यह वाक्य है "नान्हिक नन्हाऽहै रहै जैसो नन्हीं दूब सबे घास जल जांयगी दूब खूब की खूब,,

। पुस्तक प्राप्ति ।

मंत्र मीमांसा-काशी ब्रह्मा मृत बर्षिणी सभा सम्पादक श्री राम मिश्र शास्त्री प्रणीत ब्राह्मण किम्बा क्षत्रिय और वैश्य को गायत्री मंत्र के अतिरिक्त दूसरे मंत्र की दीक्षा लेना अनुचित है गृहस्थों को संन्यासी अथवा दण्डी से दीक्षा लेना भी वैसाही अननुचित है इन्हीं बातों को शास्त्र के प्रमाण द्वारा इस ग्रन्थ मे सिद्ध किया है और इसी के लपेट मे रामानुज आदि सम्प्रादयों की भी मन मानी चित्थार की गई है-यह ग्रन्थ संस्कृत भाषा मे रचा गया है इसकी न्याय गर्भित गूढ़ संस्कृत ग्रन्थकार के पाण्डित्य का पूर्ण परिचय देती है पण्डितों को ऐसे २ ग्रन्थों को आदर देना चाहिये बनारस भारत जीवन प्रेस मे यह ग्रन्थ छपा है ।

चिकित्सा सम्मीलनी मासिक पत्रिका के सम्पादक श्री अविनाश चन्द्र कविरत्नद्वारा अनुवादित शुश्रुत और चरक संहिता का हिन्दी अनुवाद—प्रति मासा १६ पृष्ट छपता है भाषा इसकी सरल और सीधी है—केवल हिन्दी अनुवाद का मूल्य वार्षिक डाक व्यय सहित २।=) संस्कृत टीका मूल और भाषा अनुवाद का ४।=)

संस्कृत टीका और मूल का ३।७) जिसे लेना हो इस पते से लिखें।

मैनेजर शुश्रुत संहिता
नं० २०० कार्नवालिसस्ट्रीट कलकत्ता।

"बूझौतो जानी,,"

यहां वहां कहूँ नहीं ढूँढ़ो तो पासमा ।
मूँड़ गोड़ कुछो नहीं चलै लंबी चालमा ॥
दांत जीभ एको नहीं गिरै मीठे भातमा ।
अकल कहीं पाया नहीं बोलै हर बातमा ॥
जान जान जानै औ मानै अप मानमा ।
बच्चूराम कहैं कोउ बतावै तो जहानमा ॥ १॥
गुंगा व्हैके बात करै वेद औ पुरानकी ।
अंधा व्हैके देखा करै ज्योति रूपी ज्ञानकी ॥
बहरा व्हैके शब्द सुने अनहद तानकी ।
पंगुल व्हैके बाट चलै सीधी अस्मानकी ॥
अला पता होई कहूँ कहै को जहानकी ।
बच्चूराम जानै कोउ बात पर मानकी ॥ २॥

मैनेजर देशोपकारक
यंत्रालय





हिन्दीप्रदीप ।

मासिक पत्र ।

बिद्या, नाटक, इतिहास, परिहास उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बान्धी इत्यादि के बिषय में
हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंदभरै ॥
बचिदुसह दुरजन बायुसों मणि दीप समथिर नहिंटरै ॥
सूझै बिवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

---

१ अक्टूबर सन् १८८९ } { जिल्द १० संख्या २

इलाहाबद

पण्डित बालकृष्ण भट्ट संपादक की आज्ञानुसार
देशोपकारक यंत्रालय
प्रयाग में मुं० बच्चूराम के
प्रबंधसे प्रकाशित हुआ

मूल्य अग्रिम ३।=) पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १॥=)

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द १०
संख्या २

१ अकटूबर
सन् १८८६ ई०

पश्चिमोत्तर और अवध के नियम "कानून" बनाने वाली सभा

सत्य परायण शान्ति शील ऋषि मुनिजनों के निर्मित–बिमल न्याय और धर्म की बुद्धि से स्थिरी कृत–प्रायः अविचल नियमों के अनुसार प्रजाका पालन और उनके सुख वृद्धिका उपाय चिन्तन इस भारत भूमि में उसी दिन से लुप्त हुआ जब हिन्दू कुल कैरव विकाशक वीर पृथ्वी राज ने पाप प्रवाह वाहिनी यवन सेना से लड़कर अपने भौतिक शरीर का त्याग किया– पृथ्वी राज के समय तक भारतीय न्टपगण प्रजाओं के शासन में अपना इतनाही कर्तव्य समझते थे कि जो नियम और मर्यादा परार्थैक जीवन दिव्य दृष्टि ऋषि जन स्थापित करगये हैं उनका पालन प्रजा से करावें और उनके उल्लङ्घन करने वालों को उन्ही ऋषियों के निर्द्धारित दण्ड विधि से दण्ड दें—जो राजा उच्छृंखल हो विषय दूषित चपल बुद्धि से अनियत नियम गढ प्रजा को पीड़ा पहुचाते उनका दैवी वा मानुषी शक्ति के द्वारा थोड़े काल में विनाश होजाता और उनके स्थान में प्रजाके सुख बढ़ाने वाली दूसरी शक्ति स्थापित होती थी ।

नियम अर्थात् कानूनों का बनाना उन्ही ऋषियों का कर्तव्य कर्म था जो संसार की समस्त संपत्ति और भोग विलास से मुंह मोड़ वन पर्वतों पर शीत और आतप को सहते कन्द मूल फलों का आहार कर ईश्वर के मनन और लोक के उपकार के विचार से अपने पुण्य जीवन की महिमा को बढ़ाते थे-यहां पर वर्णाश्रम की प्रथा की श्रेष्टता और उसके अनन्त लाभों का विस्तृत वर्णन का अवकाश और अवसर नहीं है इसके लिये एक स्वतंत्र लेख की आवश्यकता होगी-यहां इस समय केवल इतनाही कहना बहुत होगा कि यह उसी वर्णाश्रम की प्रथा का फल था कि ऐतिहासिक समयके आरंभही से आर्य सन्तानो को अपने राज्य प्रबन्ध में वह वस्तु प्राप्तथी जिसका आभास यूरोप के विद्वानों की बुद्धि में अब इस उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ है-अर्थात् राज्य प्रबन्ध के दोअंग "कानूनो का बनाना (Legislation) और उनका प्रति पालन कराना (Execution)„ एक ही व्यक्ति वा समूह में संमिलित नहीं किन्तु भिन्न २ श्रेणी के लोगों में बटे रहैं जिनको कानून बनाने का भार दिया जाय उनको उन कानूनों के प्रतिपालन कराने से कुछ संबन्ध नहीं और जिनको उनके प्रतिपालन कराने का भार सौंपा जाय उनको उन के बनाने में कोई अधिकार नहीं-यह बात जिसको आजकल के यूरोपीय विद्वान राज्य के सुशासन के हेतु नितान्त आवश्यक समझते हैं वर्णा श्रम की प्रथा के द्वारा इसके प्रवर्तक महात्मा महर्षि जनो की कृपा से आर्य लोगों को अनादि काल से प्राप्तथी—कानून अर्थात् नियमो का बनाना पुण्य चरित्र ब्राह्मणो का धर्म था और उन नियमो के अनुसार प्रजाका शासन करना क्षत्रियों का धर्म था—पर वे बातें अब कहां—जब से पृथ्वी राज के अस्त होने से आर्यों का बल घटा तब से आज तक अनेक मत और अनेक देश के रहने वालों के वश में पड़ इस अभागी पुण्य भूमि की

प्रजा भिन्न २ क्रम और नित्य २ बदलनेवाले अनियत नियमों से शासित हो अनन्त अकथ दुःख और वेदना सहती चली आती है।

अपने मत के न मानने वालों को का फिर-पशुओं से भी अधिक निकृष्ट-बध ही के योग्य समझने वाले दुष्ट अत्याचारी मुसल्मानों के समय जो हुआ सो हुआ ही दयालु ईसा मसीह के अनुयायी अंगरेजों के अधिकार में तो प्रजा को अब तक और भी स्थिर नियमों के अनुसार शासन का सुख नहीं प्राप्त हुआ— नित २ नये २ कानून बनते रहते हैं और ऐसी अदूर दर्शिता से बनाये जाते हैं कि पहले बनाये हुये एक कानून का आशय प्रजा भली भांत समझ ने भी नहीं पाती कि तब तक में उस्के सुधारने को दूसरे कानून का बिचार आवश्यक हो जाता है अथवा उस्के स्थान में दूसरा कानून जारीकर दिया जाता है और उस्की इतनी शाखा प्रशाखा बढ़ाई जाती हैं कि उनकी हलचल में पड़ प्रजाको हानि और संकट के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं लगता--इस्के अनेक उदाहरण हैं और यदि सब लिखे जांय तो ताजीरात हिन्द सी दो चार जिल्द तैयार होजांय पर हम इस समय यहां पर उन में से एक ऐसी बात दिखलाते हैं जिस्के समझने मे किसी को कुछ विशेष कठिनाई नहोगी और जिस्से यहां की छोटी बड़ी सब प्रजा को पीड़ा पहुंचती है॥

जब तक इस देश में हिन्दू राजाओं का प्राबल्य रहा और हिन्दूओं के धर्म शास्त्र के अनुसार प्राजाओं का शासन होताथा तब तक राजा लोग शास्त्र और मर्यादा पर दृढ़ रह प्रजाओं से पृथ्वी की उपज का केवल छठवां भाग लेकर सन्तुष्ट रहते थे-पर इस समय के हमारे शासकों की प्रजा बत्सलता इतनेही से स्पष्ट है कि पृथ्वी की उपज पर नित २ लगान बढ़ातेही जाते हैं यहां तक प्रजा का लोहू मास सब चुस गया कि अब केवल हाड़ मात्र बचरहा है पर तौभी संतोष नहीं होता-बंगाल बिहार तथा और कई एक छोटे

स्थानो में जहां लगान इन्हो ने स्थायी कर दिया है वहां की प्रजाओं को पेट भर अन्न खाते देख इन की छाती पर सांप सा लोट रहा है—लगान का घटाना तो एक ओर रहे राज कर्म चारी जब देखते हैं कि किसी खेतिहर की खेती में कुछ उन्नति हुई है तुरन्त उस्पर ड्योढ़ा लगान बढ़ा देते हैं जिस्से वह किसान बेचारा न केवल अपनी खेती की उन्नतिके लाभही से बंचित रहता है किन्तु उस्की पहिले की पूंजी में भी घुन लगता है—यह एक उदाहरण हमने यहां पर दिया ऐसे २ कितने हैं जिनसे यही सिद्ध होता है कि इन कानूनो की अदल बदल से प्रजाको क्या २ हानि और दुःख सहना पड़ता है।

इन बदलते हुये कानूनो २ से यदि प्रजा को सुख की प्राप्ति और दुःख की निवृत्ति होना इष्टहै तो अवश्य है कि उनके बनाने वाले परायें कबुद्धि न्यायाधार प्रजा के सुख दुःख के समझने वालेहों उनकी रहन सहन उनके व्यवसा व व्यापार से अभिज्ञहों उनके बीच में रह कर उनके समाज में बिचर उनके सुख दुःख सम्बन्धी भावों को भली भांत समझते हों—संक्षेपतः प्रजाओंके दुःख ह्रास और सुखवृद्धिके लिये यह आवश्यक है कि जिन नियम "कानूनों„ से वे शासित किये जाते हैं उनके बनाने वाले उन्ही के समान जाति समान गुण शील और समान सुख दुःख हों।

यह बात इंगलैड प्रभृति स्वतंत्र देशों मे भी जहां शासक और शासित प्रजागण भिन्न देश और जातिके पुरुष नहीं हैं आवश्यक समझी जातीहै तब भारतवर्ष से विदेशियों से शासित देश के सुशासन के लिये तो यह और भी अधिक आवश्यक है जहां की प्रजा आधी तीतर आधी बटेर आधी हिन्दू आधो मुसल्मान है जिनकी जाति और मत कभी आप्रलयान्त एक होही नहीं सक्ता और जहां के शासक उन दोनो से भिन्न दालभात में मूसलचन्द्र अंगरेज़ हैं!

हमारे शासक प्रभुवरों की हम से एक बात मे भी समता नहीं पाई जाती हमारा और उनका मत भिन्न– सामाजिक नियम एक से नहीं–जो बातें उनके समाज में निर्दोष वा सामान्य समझी जाती हैं उनको हमारी समाज अत्यन्त लज्जा कर समझती है-जिस्को वे सन्मान समझते हैं उस्को येअपमान मानते और उस्के लिये प्राणदे डालते हैं-जिस्को वे मान भंग और मर्मान्तिक पीड़ाकर समझते हैं उस्कोयेकेवल मूर्खता अथवा उपहास मात्र की बात समझते हैं इत्यादि इत्यादि पर फिर भी काल की कुटिल गति से यही तीसरे इस समय इन दोनो स्वतः भिन्न लोगों पर राज्य कर रहे हैं—येही उनके लिये नियम बनाने वाले और बिगाड़ने वाले हैं–यदि ये अंगरेज़ मुसल्मानो के समान नितान्त अत्याचार और क्रूरता से यहां शासन करना चाहते तो इनके वनाये अनुपयुक्त नियमो से और भी पीड़ित हो आश्चर्य नहीं कि प्रजा अबतक इनसे बहिर्मुख हो-जाती पर कुशल इतना ही है कि इन्मे और अनेक दोषों के रहते भी शासित प्रजाओं के प्रति इनके भावों मे कुछ उदारता हो चली आई है—मलिन स्वार्थ परता और असदभिमान के वश हो प्रायः इनकी करतूत प्रजा को पीड़ा कार होती आई है पर फिरभी सत्य देव के अपराध के भयसे यह अवश्य कहना पड़ेगा कि जो अनेक उपकार बिशेषकर विद्या प्रचार आदि विषयों मे इन से प्रजा का हुआ है वह और किसी दूसरे यूरोपीय देश के लोगों के अधिकृत शासन मे भी होना कम संभव था–अस्तु इसी उदारता के कारण प्रायः और नहीं तो देखानेही के लिये इन्होंने कानूनो के बनाने मे कुछ दिनो से प्रजाओं के भावों की जिज्ञासा सूचक यह रीति निकाला है कि प्रजाओं ही मे से किसी विद्या और गौरव संपन्न पुरुष को कानून बनाने वाली कौंसिल में संमति देने के लिये बुलालेते हैं—यह नियम सन ६१ से प्रचलित है—सन ५७ के पहले तक अंगरेज़ी पार्लेमेंट ने इस देश को

शासन प्रणाली सुधारने का कभी विचार भी नहीं कियाथा—जब सन् ५७ के बड़े बलवे की आग उठी और महाविध्वंस का कारण हुई तब पार्लमेंट के नेत्र खुले और सन् ६१ मे भारतवर्ष के उत्तम शासन के लिये नियम बानाने को कलकत्ते मे एक सुप्रीम लेजिसलेटिव कौंसिल नियत की गई और उसी महती साभा के आधीन मद्रास बंबई तथा बंगल मे भी प्रत्येक प्रान्त के लिये अलग २ "प्रोविंशियल लेजिसलेटिव कौंसिल„ स्थापित की गई और उसी सन ६१ के ऐक्ट मे यहां भी लिखदिया गया कि गवर्नर जेनरल जब उचित समझैं तब पश्चिमोत्तर और अवध तथा पंजाब मे भी स्वतंत्र अलग २ बड़ी सभा के अधीन ऐसीही प्रत्येक प्रान्त की एक २ लेजिसलेटिव कौन्सिल नियत करदें।

पर जैसा विद्या प्रचार आदि अनेक विषयों मे वैसही इस बात मे भी सरकारने इस पश्चिमोत्तर और पंजाब को अब तक इस योग्य नहीं समझा था कि यहां की ४ करोड़ प्रजा के सुख दुःख के कारण कानुनों के बनाने के लिये यहीं एक कौंसिल स्थापित की जाय अस्तु गत के सोचने से क्या अब यह बात निश्चय होगई कि पश्चिमोत्तर और आवध के लिये एक स्वतंत्र कानुन बनाने वाली सभा नियत होगी—तो जैसा हम पहिले कह चुके हैं यदि किसी व्यक्ति वा मंडली के बनाये नियमो से प्रजा के सुख की समृद्धि दृष्ट है तो यह अवश्य मेव उचित है कि उन नियमो के बनाने वाले पुरूष प्रजाओं के भीतरी जीवन, भीतरी दशा, रीति भांत, रहन, सहन व्यवहार व्यवसाय से अच्छी तरह जानकार हों—यह संभव नहीं कि कोई अंगरेज़ वह कैसाही उदार भाव पूर्ण और प्रजाका हितैषी क्यों न हो हिन्दू और मुसल्मानों की इन भीतरी बातों को उतना पूर्ण रीति पर जाने जैसा एक सामान्य हिन्दू वा मुसल्मान स्वयं जानता है।

कानूनो के अच्छे या बुरे होने ही पर प्रजाका सुख दुःख निर्भर है और उन्हीं पर राजा में प्रजा की प्रीति और भक्ति भी निर्भर है इसलिये न्याय और

नीति दोनो यही घोषणा करती हैं कि इस कानून बनाने वाली मंडली में यदि सब इस समय संभव नहीं तो इस के अधिकांश सभासद तो अवश्य प्रजाओं ही में से लिये जांय।

अब यहां यह प्रश्न उठै गा कि प्रजाओं मे से यदि सभासद इस मंडली के लिये नियत किये जांय तो वे किस क्रम वा रीति के अनुसार चुने जांय—जो लोग अंगरेज़ कर्मचारियों के कृपा पात्र और चापलूसी करने वाले लाला टिक हों वे चुने जांय वा जो प्रजा के सच्चे सुख दुःख के बूझने वाले स्वच्छन्द बिचार शील और निःशङ्क हो अपने मत के प्रकाश करने वाले हों वे चुने जांय इस प्रश्न के उतर मे किसी को कुछ हेंच पेच और बिलंब न लगे गा—यदि काल की विपरीतता से यह अभी संभव नहीं कि नियम बनाने वाले लोग प्रातः स्मरणीय ऋषियों के समान पुण्यशील हों तब यह तो अत्यन्त ही प्रार्थनीय है कि जहां तक हो सके वैसेही सात्विकी वृत्ति के लोग चुने जांय जिन्मे उन महापुरुषों के गुणो की कुछ अभासमात्र भी तो पाई जाय—जिन्मे प्रजा गण का बिश्वास और प्रीति तो हो—सो यह बात तभी संभव है जब प्रजाओं की मत समष्टि के अनुसार इस सभा के लिये सभ्य चुने जांय—अतएव यदि सर्कार सच्चे हृदय से प्रजा का सुख चाहती है और उनकी प्रीति और भक्ति से निस्पृह नहीं है तो उचित है कि इस मंडली के यदि अधिक नहीं तो आधे सभ्य अवश्य प्राजाओं ही के मत और इच्छा के अनुसार नियत करे और इस्के करने मे कुछ विशेष क्लेश भी नहीं है—महामना रिपन को ईश्वर प्रसन्न रक्खे आत्मशासन प्रणाली के क्रम ने इस बात की जड़ बहुत अच्छी तरह जमा दिया है—म्युनिसिपल कमिशनर प्रजा के चुने होते ही हैं अभी आरंभ में इन्ही नगर २ के कमिशनरों के द्वारा प्रजा का अभिप्राय जानकर प्रत्येक कमिशनरी से कम से कम एक सभासद इस कानून

बनाने वाली सभा के लिये सुख पूर्वक चुन लिये जा सक्ते हैं–और उनको कानूनो के बनाने में और राजकीयव्यय के विषय में मत प्रकाश करने का अधिकार भी दिया जासक्ता है इस समय इतने ही में प्रजा प्रसन्न हो जायगी और राज्य प्रवन्ध भी विशेष उत्तम होगा–पीछे ज्यों २ लोग इस्मे और उत्साह और योग्यता प्रगट करैंगे त्यौं २ उनकी संख्या और अधिकार बढ़ाते जाना उचित होगा अंगरेजी राज्य तक में भारतीय प्रजाकी प्रीति और भक्ति उद्दीप्त रहने के लिये यह अत्यन्त सुगम और परम निश्चित उपाय है ।

अब भी मुसलमानोही की खातिरदारी ?

रामलीला और मुहर्रम के सत्यानाशी दिन किसी तरह पार हुये–बेहिम्मत हिन्दुओं का निष्टुर कट्टर मुसल्मानों से अब तो साल भर के लिये गला छूटा–"जबकी स्वासा तबकी आशा„–दूसरे वर्ष देख लिया जायगा–हमें खेद और अचरज इसी बात का है कि हमारी ब्रिटिश गवर्नमेंट इटावा दिल्ली आदि कई स्थानो में मुसल्मानो ही की ज़ियादती और उन्हीं को अग्रसर होते देखकर भी अणु मात्र अश्रद्धा और अविश्वास उनकी ओर नहीं प्रगट करती–हिन्दुओं की कब इतनी हिम्मत पड़ सक्ती है कि इटावे दिल्ली के मुसल्मानो के समान यूरोपीय कर्म चारियों पर हाथ छोड़ैं—फिर भी हमारे मुकाबिले उन्ही की कदर उन्ही की खातिरदारी उन्ही के भाषा की कचहरियों में रिवाज पुलिस और माल के महकमें में अच्छे २ ओहदों पर जितने मुसल्मान हैं उतने हिन्दू नहीं-कई एक स्थान में जो घोर उपद्रव होगया उस्का कारण भी यही था की पुलिस विभाग के अप्सर कोतवाल दारोगा आदि सब मुसल्मा नही हैं उन लोगों ने तअस्सुब में भर मुसल्मानों की भरपूर सहायता की और हिन्दुओं को हेठी तथा उन्हें मर्मान्तिक दुःख पहुचा ने में कसर न किया–

यहां भी बकरीद की कुरबानी में गोवध करवाय हिन्दुओं का जी दुखाने और उन्हें कुढ़ाने का बानी मुबानी कौन हुआ? वही कोतवाल और शहरके कई एक नीच जवन्य मुसल्मान और प्रधान २ थानों पर के जमादार थानेदार आदि ॥

अच्छा तो अब सोचना चाहिये कि इस्का कारण क्या है कि सर्कार को मुसल्मानो ही के मनकी लाचार हो करना पड़ता है हमारे ध्यान में इस्का दोही कारण आता है याती जैसी चापलूसी और खुशामद हुक्कामों की मुसल्मानो से बन पड़ती है वैसी हिन्दुओं से कब होगी या इन से सर्कार डरती हो—अपने मुंह पोछने के रूमाल से साहब लोगों के बूट की धूल हिन्दू कहां झार सक्ता है उनका जूठा गिलास हिन्दू पैर से छूजाने में भी स्नान से अपनी शुद्धि मानेगा—फिर प्रगट मे यह सेवा और परिचर्या पर अन्तः करण से मुसल्मान यही चाहते हैं कि कब मौका मिले और हम भरपूर अपना दांव लें—सीधे सादे क्षुद्र हिन्दुओं से ऐसा काहे को बन पड़ेगा तब उन से डर भी काहे को—फिर किस माथे उनकी कदर और ख़ातिरदारी हो—सच पूछिये तो हमे हिन्दुओं की कौम सर्वथा निकम्मी ही जंचती है खुशामद इन से नहीं—ज़ाहिदारी इन्हें नहीं—जोश और सर गरमी का बीजही मारा पड़ा जैसे रक्खो वैसे रहैं जो कुछ कहो कहने वाले का शुद्ध अशुद्ध भाव बिना सोंचे सब मानने को तैयार—बस इतनेही मे समझ लाइये खोल कर सब हाल बतलाने से अपनी जान सांसत मे छोड़ने के सिवा और लाभ क्या है।

जनाब मिस्टर एडिटर महाशय—

राई को पर्वत कर दिखाना तो आप लोगों की मनहूस लेखनी को मामूली बात है तब जोश और जमामर्दी पर नई वार्निश चढ़ाने वाले रामलीला और मुहर्रम के बांके दिनो का दोष निकाल २ कागद रंग देना आप लोगों का कामही है—पर हम तो यही कहेंगे कि ब्रिटिश सिंह के कठिन शासन के समय जिसने हिन्दुस्तान मात्र को गीदड़ों की मांद कर रक्खा शस्त्र छिन जाने से लुज पुंज निःसत्व निर्वीर्य हिन्दुस्तानी भी लड़कों से निकलकर नई गरमी और जोश मे भर उठते हैं यह क्या कोई तनिकसी बात है—सच जानिये देश को हिजड़ा बनाने का बीड़ा उठाये हुये आप की नई सभ्यता और अंगरेजी राज्य की शान्ति से बीजही मारा पड़ा था बड़ी बात कि उस बीज का अंकुर हिन्दू मुसल्मान के ३६ वर्ष पर इस जमघट ने बचाय रक्खा—आप चाहो बुद्धि मे वृहस्पति हो जांय विज्ञान और कला कौशल मे विश्वकर्मा को भी परास्त कर दें डाक्टरी और चिकित्सा के अभ्यास मे महाराज धन्वन्तरि को अपना चेला मुंड लें—पर यह प्रसाद जिस्से आप की रक्त सम्वाहिनी शिराओं मे यत्किंचित् गरमी और जोश कुछ दिन के लिये छाजाता है मुहर्रम और रामलीला के एक साथ पड़ने ही से प्राप्त हो सक्ता है कहेंगे हम सच्चही मानिये चाहो न मानिये — एक—क—ख—ग—

। सच्ची कविता ।

आपने कोई लेख पढ़ा और वह आपको बहुतही रुचा तो आप अन्त मे कहते हैं इसने हमारे दिल पर असर किया—आपने किसी समाज मे किसी बड़े वावदूक बक्ता की वक्तृता सुना उसके कहने के ढंग ने आपके चित्त को

ऐसा लपेटा कि पीछे से जो आपने सोंचातो बिना यह कहे आपसे न रहा-गया—बेशक साहब उनकी स्पीच ने हमारे दिल पर बड़ा असर किया—किसी नाटक या उपन्यास के किसी पात्र का चरित्र आपको मन भावना लगा तो आप अवश्य ही कहेंगे "हम ज्यों २ उस्को सोंचते हैं उस्का चरित्र हमारे चित्त पर खचित होता जाता है,, अथवा इन सब बड़ी बातों को जाने दीजिये अपने एकान्त मित्रों के साधारण आलाप संलाप को लीजिये—"साहब उन्होने हमसे एक बात ऐसी कहा जिस्से हमारे दिलपर बड़ा असर हुआ और हमारा दिल बिल्कुल फिर गया–,, अब बताइये वह असर क्या वस्तु है जो बाज़ लोगों के एक २ शब्द मे भरा रहता है यह जादू कहां से आया? किसी के वाक्य मे वह कौनसी ऐसीबात है जिस्की चोट चित्त पर ऐसी लगती है कि हम कभी नही भूलते? और उस चोट में ऐसी क्या बात है जिस्के खाने को जी सदैव चाहा करता है?

जिस्से यह सब अचम्भे की बातें होती हैं वही बात किसी लेख के किसी काव्य के किसी वक्तृता के असर होने की जड़ है—अब यदि पूछिये यह असर किस बात पर निर्भर है तो हम बहुत थोड़ेही में इस्का उत्तर आपको देसक्ते हैं—जिसे हम पूरा असर कहेंगे वह केवल इतनेही से होता है कि जो आपके मन मे है वह आपके पढ़ने वाले या सुनने वालों के मन में भी खचित होजाय–आपको अपने देश की भलाई के लिये बड़ा जोश है आप चाहते हैं कि अमुक अमुक बातें की जांय तो देश का बड़ा उपकार हो फिर इतनेही से तो काम न चलेगा यदि आप मे वक्तृत्व शक्ति है और आपने औरों के मनमे भी वही बातें उतनेही अच्छी तरह पर जमादिया जितनी अच्छी तरह आपके मनमे जमी हैं तो जोकुछ करना चाहिये वह आपने करदिया—क्योंकि बड़े से बड़ा हौसिला लोगों का हर एक बात मे यही रहता है कि

"क्याकहें कहीं जो हमारे ऐसे दो चार आदमी और होते तो हमारे मन की बन आती," और फिर जब आप के अक्षरों मे वह शक्ति है कि औरों के मन मे वह बात वैसीही बैठ जाय जैसी आपके मन मे है तो वह जादू जिस्की चर्चा हम ऊपर कर आये हैं उस्की जड़ बंध गई—यही बात हम काव्य मे भी पाते हैं किसी प्रसङ्ग को आपने कबिता मे ऐसे ढंग से बांधा कि पढ़ने या सुनने वाले फड़क उठे किसी चित्र को आपने ऐसा उत्तम खीचा कि देखने वाले जितना डूब कर उस्को देखते हैं उतनाही अधिक असर उस्का उन पर होता है—

यह जितने उदाहरण हमने लिखे वे सब मनुष्य के हृदगत भावनाओं के बिबिध रूपहैं इन्में कविता को हम मनुष्य के हृदगत भाव का सत्त "एसन्स," मानते हैं अब आप सोच सक्ते हैं इस्का भरपूर असर होने के लिये कविता कितनी सच्ची होनी चाहिये—निस्सन्देह जब पहले पहल कोई बात आरंभ होती है तो बिना चोखी और सच्ची हुये क्या चल सक्ती है ? खोंटा सोना कभी कुन्दन के भाव बिक सक्ता है ? इस लिये आदि में तो वह बात अवश्य ही सच्ची होगी और झूठी तो होही नहीं सक्ती क्योंकि उस्के पहले कोई बात उस प्रकार की थी ही नहीं जिस्की नकल वह कर सके—पर बहुत जल्द ऐसा समय आता है कि झूठा और नकली सोने को असिल कर दिखा देनेका हुनर लोगों को मालूम होजाता है—ठीक यही बात कबिता में है निस्सन्देह पहले जिनलोगों ने कुछ कहा वह तो सच्ची और खरीबात थी क्योंकि कबिता का Art हुनर तब तक पैदा हुआ ही नहीं था—कबिता झूठी और नकली होनेकी संभावना ही नहीं थी—इस को हम प्राथमिक अथवा वास्तबिक कबिता कहेंगे हमारे वेदादि सत्य शास्त्र उस समय की कबिता के बड़ मूल्य रत्न हैं—जब कविता और बढ़ी और उस्मे

रस या स्वादु स्थापित हुआ तो जो बातें पहले रूखी और फीकी थीं उन्मैं अब छील कर चमक दमक दीगई और कवियों के भी वृन्द के वृन्द पैदा होगये उन्होने पुरानी बातों को जिलो देना आरंभ किया—इस समय को हम कवित्ववासना का Classic stage सुसंस्कृत समय कहेंगे—वाल्मीकि व्यास और गुणाढ्य कविसे आरंभकर कालिदास भवभूति श्रीहर्ष दंडी भारवि भट्टी प्रभृति कवि इसी समय के हुये हैं और विक्रम तथा भोजके समय कविता को जो चमक दमक दीगई उस्की अकथ कहानी का जौहर वही पासक्ता है जिसने इन कवियों की सूक्ति का अनुभव किया है—पर प्रथम की उन लिखावटों से मिलान करने से आप यह जान सक्ते हैं कि गाम्भीर्य इन कवियों के अक्षरों का घटता ही चलाआया—यदि आप पूछैं गांभीर्य आप किसे कहैंगे तो इस्का उत्तर हम यही देंगे कि गाम्भीर्य हम उस लेख में मानते हैं जिसे ज्यों २ मनन कीजिये, त्यों २ उस्का आशय गूढ़ होताजाय और नई बातें ऐसी निकलती आवें जिसे आपकी विचार शक्ति सिवाय अंगीकार करने के उस्की सचावट को किसी तरह इनकार न करसके और यह तभी हो सक्ता है जब खरा और चोखा सौदा है-जब से लेख सम्बन्धी भाषा में संस्कार करने की बुद्धि लोगों मे आई तब से निस्सन्देह Art बनावटने जो अपना काम है सो कर दिखाया अर्थात् पहले जो बात आप से आप पैदा होती थी उस्को इस बनावट के हुनर ने नियम बद्ध करदिया—यह हम मानते हैं कि इस दशा मे कविता की अत्यन्त वृद्धि हुई और पहले की अपेक्षा सुगमता और सौन्दर्य भी उस्मे अधिक तर होता गया परन्तु स्वाभाविक और बनावट में बड़ा अन्तर होता है-हमारे मन मे जो भावना जिस समय जैसी उठी कह डाला यदि हमारे मन की उमङ्गें सच्ची हैं हमारी भावनायें सच्ची हैं तो जो

बातें हमारे चित्त से निकलैंगी सच्ची होंगी और उनका असर भी सच्चाही होगा—इस्के विरुद्ध जब हम किसी नियम से जकड़ दिये गये तब उस्के बाहर तो हम पैर रखी नही सक्ते इसलिये सुसंस्कृत कविता Classic poetry अवश्य मेव कृत्रिमता दोष पूरित रहेगी क्योंकि पहली प्रणाली कविता की अब बिल्कुल बदल गई—अब जो ढर्रा बंधगया उस्के अनुसार जो बातें अच्छी गिनी जांयगी बंधी हुई होंगी तब इस प्रणाली के कवि भी सब एकही ढंग के निकलेंगे और उन्ही बंधीबातों को आदि से अन्त तक बड़ी खूबसूरती के साथ निबाह लेजांयगे पर बिल्कुल निराले ढंग पर उनके खयालात दौड़ें यह तो उनके लिये असंभव है।

हिन्दी के कवि भी उन्ही पुराने कवियों की शैली का अनुसरण कर आज तक चले आये और उस ढंग को छोड़ कोई दूसरे प्रकार की भी कविता हो सक्ती है यह बात उनके मन मे धंसती ही नहीं जिस्की उपमा हम एक छोटे से तालाव की देंगे जिस्मे न कहीं से पानी का निकास है न नया ताज़ा पानी उस्में आनेकी कोई आशा है तब इस्के अतिरिक्त और क्या होसक्ता है कि उस्का पानी दिन२ सड़ताही जाय और गन्दगी बढ़ती जाय क्यों कि नियम बद्ध हो जाने से गिनी २ बातैं उनके लिये बचरहीं उन्ही का बार २ पिष्ट पेषण क्रिया करें प्रायः तो नायिका नायक का एक २ अंग का नखसिख वर्णन उनकी सम्पूर्ण कवित्व शक्ति का ओर छोर आलगा है बहुत बढ़े षट ऋतु के बर्णन में जाफसे वसन्त हुआ तो वही सहकार मधुकर काम देवकी सेना को अपने २ ढंग पर गाजाने के अतिरिक्त एकही विषय पर नई बात और लावैं कहां से पावस को कहने लगे तो मोर दादुरकी टर २ वियोगिनी नायिका की स्मर दशा आदि इनीगिनी दस पांच बात हैं जिन पर कविता की अधिष्ठात्री देवी को सैकडों बर्ष से घसीट जीर्ण कलेवर कर डाला—और अनियम बद्ध कविता

जो कविके हृदगत भावनाओं का स्वच्छ विकाश और पूर्ण स्वच्छन्दता युक्त है उस्की उपमा हम यदि एक झरने से दें तो कुछ अनुचित नहोगा जिस्का विमल जल पहाड़ी चट्टानो पर तीखेपनके साथ वहता सूर्यकी किरणो में झिल मिलाता हुआ बेरोक टोक चला जाता है और फिर आगे वढ़ कर उसी झरने से कितनी बड़ी २ नदियां बनजाती हैं—जो गाम्भीर्य में समुद्र के साथ होड़करती हैं–प्रसाद और माधुर्य उनके स्वच्छ जलका स्वभाव सिद्ध है अब बतलाइये प्रसाद माधुर्य गाम्भीर्य उत्तम काव्य के तीनो गुण भरपूर उन्मे हो जानेके अतिरिक्त कविता के लिये आपको और चाहिये क्या ?

अब ग्राम्य कविता पर ध्यान दीजिये मल्लाहों की गीत कहारों का कहरवा बिरहा अथवा आल्हा आदि सब मद्दा भद्दी और केवल गवारों को रोचक कवितायें हैं इनकी प्रशंसा में यदि हम कुछ कहें तो नागरिक जन जो भाषा की उत्तम कविता के रस पान के घमंडमें फूले नहीं समाते अवश्य हम पर आक्षेप करेंगे और हमे निपट गवांर समझेंगे निस्सन्देह वे ग्राम्य कविता हैं और मलार ठुमरी का स्वादलेने वालों की दृष्टिमें महाभद्दी और घृणित हैं पर इस्से यह तो सिद्ध नहीं होता कि कविता के वंधे कायदे पर नहोने से उन्मे कोई भी गुण हई नहीं और सर्वथा दूषितही हैं-अब हमारे पाठक जन पूछसक्ते हैं आपने उस्मे ऐसा कौनसा गुण पाया जो उस्पर इतना लट्टू होरहे हैं ? माना वे सर्वथा दूषित और कविता के गुणो से बंचित हैं पर उन्मे सच्ची कविता का लसरा पाया जाता है अर्थात् उन्मे चित्तकी एक सच्ची और वास्तविक भावना की तसबीर खिंची हुई पाईजाती है और आपकी Classic उत्तम श्रेणी की भाषा कविता का ज़हर इस्मे कहीं नहीं पायाजाता जो यहांतक कृत्रिमता पूर्ण रहती है कि उस्के जोड़ की एक निराली दुनिया केवल कविजीके मस्तिष्क ही मात्र से स्थान पायेहुये है ।

जिन लोगोंकी कीहुई ये कवितायें हैं वे अवश्य ग्रामीण हैं तब उच्च श्रेणी की उक्ति युक्ति की आशाही उन्मे नही होसक्ती पर बिना कुछ बनावट के अपने चित्त की भावना निष्कपट हो स्वच्छन्दता के साथ उन्मे दरसाई गई हैं–काव्य के नियम और कायदों से वे कोसों दूर हैं उनके खयाल अभी उस दरजे को पहुचें ही नहीं कि नियम क्या वस्तु है इस्का ध्यान स्वप्न में भी उन्हे आयाहो तब खरी और सच्ची होना उनकी कविता के लिये स्वयं सिद्ध है—आप की नागरिक कविता को पहले पहल जो लोग काम मे लाये जैसा चांदकवि पद्मावत सूर तुलसी और दो एक और भी उनके वास्ते या उनके समय मे चाहो भलेही वे कवितायें सजीव और ओज पूर्ण रहीहों और यही कारण है कि अबभी उनको पढ़िये तो उन्मे वैसाही टटका और ताज़ा रस मिलता है-पर उस प्रकार की कविता का एक ढर्रा चल जाने से अब वह आपकी नागरिक कविता फीकी और घिनौनी मालूम होती है–और दूरतक डूबकर सोचियेतो कविता पहले ग्रामीण हुये बिना प्रचलित नहीं होसक्ती और उसी ग्राम्य कविता को मांजते २ वही नागरिक वा उच्चश्रेणी की कविता बनजाती है-

अब यदि आप यह पूछें क्या नागरिक कविता नियम बद्ध होनेसे नई बात उस्मे आही नहीं सक्ती? यह हमारा तात्पर्य कदापि नहीं है जहां बहुत से लिखने वाले हैं उन्मे कोई नई बात होही नही सक्ती यह हम कैसे कहैं–पर काव्य के नियमो का उल्लंघन होजाने की भयसे बहुधा उसीं क्रमपर चलैंगे घुणाक्षर न्याय से कोई नई बात आजाय तो लाचारी है–और फिर उन्मे नयापन हम इसी बात मे पाते हैं कि उन पुरानी बातों को नये तरह से निबाहें–अंगरेज़ी मे एक शब्द स्कूल है अमुक कवि इसस्कूल या परिपाटी के हैं क्या भाषा मे उन विविध परिपाटियों का होना असंभव था केवल इस कार-

ण से कि उच्चश्रेणी के नागरिक जनो की रसज्ञाता Taste दोचार दसपांच बातों मे बंध रही है उस्के बाहर कवि की प्रतिभा जाही नहीं सक्ती।

कविता में यह सहज नियम है कि कविके हृदय का काव्य पर और काव्य का कविके हृदय पर अन्तः संवन्ध कार्य कारण की रीति पर बराबर चला आत है तब यह माननाही पड़ेगा कि आदिमें हृदय की ऐसी भावना हुई उस्से ऐसा काव्य उत्पन्न हुआ–एक बार यह नियम कर लिया जाय कि जिस समय जो भावना मनमें उठै उसी पर काव्य किये जांय और नियम वद्ध होने की कैद उठा दी जाय देखिये कितनी स्वच्छन्द अनूठी और नई कविता होती हैं वल्कि हमारे देशमें कविता को एक नवीन जीवन मिलेगा और कृत्रिमता का कूड़ा जो सैकड़ों वर्ष से जमा है क्रम २ हटता जायगा हमने ऊपर कविता की विविध परिपाटी का निदर्शन किया है अंगरेज़ी की कविता में ढंगको कौन कहे विषय तक एक कविका दूसरे से नहीं मिलना परिणाम इस्का यही हुआ कि आज दिन अंगरेज़ी कविता के भण्डार में सब तरह के बहुमूल्यरत्न तैयार हैं—

यह सब हम इस अभिप्राय से कहते हैं कि आज कल सब ओर से हिन्दी की उन्नति की पुकार सुनने मे आती है इसलिये हम समझते हैं पुरानी ही बातों को फिर २ से नकल करने मे किसी की किसी तरह आजतक न उन्नति हुई है न होगी—आजदिन हिन्दी की इस टूटी फूटी दशा मे भी कविलोग गलो २ हैं—यहां तक कि हिन्दी लिखने और समझने के मानेही हिन्दी कविता होरही है पर उस हिन्दी कविता को हम ध्यान करते हैं (जैसी इन दिनो बनाई जाती है) तो उस्को बिल्कुल बेजान देख शोक होता है कि हमारे कवि लोग व्यर्थ अपना समय और कवित्व शक्ति बरबाद कर रहे हैं—निस्सन्देह इस नये ढंग की कविता करने वाले पुरानी भाषा कविता के

रसिकों से हंसे जांयगे लोग कहैंगे इस नयेढर्रे की कविता मे न कोई नायिका खुलती है न कोई रस खुलता है पर इस उनके कहने का बुरा न मान इसे अपने लिये एक सार्टिफिकेट मानैं कि पुराने ढर्रे से हम कुछ तो अलग हुये गद्य रचना हिन्दी के भाण्डार में हई नहीं जोकुछ है भी सो इसी पद्यरचना में अतएव भाषा की उन्नति सुगमता के साथ इस कविताओं के द्वारा होसक्ती है-रहे नये २ विषय अपनी भाषा मे जमा करना सो "प्रोज," गद्य लिखनेवाले करीरहे हैं-कहनेका तात्पर्य यह कि भाषा की कविता यदि फिर से सच्ची और सजीव होजाय तो उस्की उन्नति का एक नया द्वार खुलजाय-हम आशा करते हैं हमारे नये उत्साही कवि गण और हिन्दी के लेखक हमारे इस कहने का बुरा न मानें इस्के अनुष्ठान मे तत्पर होंगे--

उघरहिं अन्तनहोहि निबाहू ।
कालनेमि जिमि रावण राहू ।

संपादक महाशय

यद्यपि मुसलमानो से हम से कुछ विरोध नहीं बरन आपस की तकरार और दोनो के मन में परस्पर की मैल द्वेष उलटा दुःख होता है—हमारा चित्त तो यही चाहता है कि इस उन्नति के समय ये दोनो दल आपस के विरोध को छोड़ अपने २ कर्तव्य कर्म पर ध्यान दे आपस में प्रीति भावसे वर्तें जिस्में हमारा बल जो फूट के कारण चीण होता जाता है सो नहो और आपस के मेलसे पुष्ट पड़ता जाय—परन्तु हमारे चाहने से होता क्या

है—विचारते २ हैरानथे कि इस बिरोध का कारण क्या है ? कुछ समझ मे नहीं आता था पर इन दोवषीं के कृत्य देख अब स्पष्ट होगया और जो कुछ मेरी समझ में आया आपकी भेट करताहूं चाहो हिन्दू जान मुर्ख पक्षपाती मानिये किन्तु जो सच्च बात है वह अवश्य ही कही जायगी।

दिल्ली इटावे आदि स्थानो के उपद्रव से यह बात स्पष्ट है कि अत्याचार मुसलमानो ही से प्रारंभ हुआ—हम यह नहीं कहते कि हिन्दू मुसलमानो से उपद्रय मे कुछ कमहैं परन्तु अन्तर यह है कि हिन्दू सीधे और बोदे होने के कारण समझाने बुझाने से अपनी हट छोड़ देते हैं आज आप इन्हे मार लीजिये जो चाहो इनका नुकसान कर डालो कल्ह सब भूल कर आपको देवता समझ पूजने और मानने लगेंगे शहीद मुसलमान चाहो हिन्दू धर्म के विध्वंसही करने में शहीद हुआ हो पर पीछे से हमारे हिन्दू भाई उसमृत प्रेत की कबर को बड़ी प्रतिष्टा और आदर देतेहैं काम पड़ने पर मलीदा चद्दर अवश्य चढ़ावेंगे मुसलमानो के समय इतना उनसेमिल गये कि बहुत से हिन्दू इनका रोजानमाज करने लगेथे हमारे कायस्थ भाइयें में अपने लड़कों की विद्यारंभ के समय श्रीगणेश के स्थान में अब तक विसमिल्लाही कराते आतेहैं मुसलमान चाहो कभी एक हिन्दू को भी नौकर न रक्खे परन्तु हिन्दू रईसों में जब तक दस पांच

प्यादे मुसलमान नहीं तब तक प्रतिष्टाही नहीं ईसाई जब से यहां आये उनसे भी ये सरलता और सिधाई के साथ हिल मिल चले सारांश यह कि हिन्दू जातिका स्वभाव ही ऐसा है कि किसी का बिरोध इनके मनमे देर तब नही ठहरा रहता वही मुसलमानो को लीजिये चाहो इधर का ब्रह्माण्ड उधर होजाय ये अपनी हठ कभी नछोड़ें हमारी सरकार ने बहुत कुछ चाहा कि हम इन्हे आदमी बनावें बल्कि हाल की शिक्षा कमिशन में मुसलमानो की तालीम के लिये इनपर विशेष कृपा प्रगट करने का निश्चय कियागया – लार्ड डफरिन को इनकी उन्नति का विशेष ध्यान हुई है – पर जिन लोगोंने अलेकजेंडरिया का बड़ा प्रसिद्ध पुस्तकालय केवल इसी लिये भस्मसात् कर डालाकि अलावे कोरानके किसी किताब की कुछ ज़रूरत नहीं है उन्ही की सन्तान ये मुसलमान हमारी सर्कार की बात पर कब कान देसक्ते हैं इसी तरह जब काफिरों को मारना और जैसे बने उन्हे सताना मुसलमानी धर्म का उपदेश है तब उनसे कैसे हम यह आशाकरै कि ये दूसरे धर्म वालों का संपर्क प्राय स्वास्थ्यके साथ रहैंगे – चाहो इन्मे बल नही साहसनहो वीर सैन्य दल देख भागही निकलें पर मजहबी तअस्सुब और हठ से कभी न मुह मोडेंगे हमारे शासन कर्ता अंगरेज कर्मचारी जो पहले से इन बातों पर ध्यान रख उत्तम प्रबन्ध किया चाहते तो दिल्ली इटावे से यह बिपत्ति क

भी न होती परन्तु इस्मे गवर्नमेंट की अवश्य हम भूल कहेंगे कि वह हिन्दू मुसलमान दोनो से एकसी राज भक्ति की आशा करती है और समझती है कि हिन्दूओं के समान मुसलमान भी जैसा ऊपर से साधु हैं वैसा ही भीतर से भीहोंगे ध्यान देनेकी बात है "सब जनहोंहिंन एक सम,, कुछ लोग "विषकुंभं पयो मुखं,, भी होते हैं—आपसे जब मीठी २ बातें करने लगेंगे तब यहीसमझ पड़ेगा कि उनके समान साधु और सज्जन दूसरा नहोगा परन्तु काम पड़ने पर वेही लोग उनका गला काटने को उद्यत होजाते हैं विशेषकर ऐसे पुरूष जिनके मज़हब में तकीया अर्थात् अपने को छिपाना धर्म मानागया है ऐसों से अवश्य सावधान रहना उचित है—इसी से तुलसी दासजी का यह वाक्य है—उघरहिं अन्तन होहि निवाहू—इत्यादि हम यह नहीं कहते कि सर्कार मुसलमानो को फासी देदे नही यह हमारे आर्य धर्म के विरुद्ध है हम केवल यहीचाहते हैं कि सर्कार हमारे मुसलमान भाईयों कोभी वैसाही सरल बनादे जैसा वह उनको समझती है परन्तु जब तक वे यथार्थ मे सीधे नहीं तब तक एका एकी उनके कहने पर विश्वास भी नकरले—हमको मुसलमानो से कुछ विरोध नहीं है परन्तु उनकी समझ अच्छी नहीं है वे हमारी सब बातों को उलटीही समझते हैं इस्से सर्कार से प्रार्थना है कि वह उनकी उलटो समझ को सीधी करदे नही तो

आश्चर्य नहीं कि उसी उलटी समझके जोशमें भर जिनको वे काफ़िर मानते हैं उन पर आक्रमण कर महा विद्रोह और पीड़ा का कारण हमारे लिये हों – अन्त में यह भी निवेदन किया चाहते हैं कि यह-गवर्नमेंटही की एक पालिसी है कि वह जब तब कोई ऐसी कल उमेंट दिया करती है कि इन दोनो में विरोधका वीज जमतारहे और इस देशके कोई कोनेमें ऐक्य का बल न बढ़ने पावे – एक सब काहितू –

। प्राप्त ग्रन्थ ।

शिल्प संग्रह – लाला राम चरण रईस फर्रूखाबाद और सभासद परोपकारिणी सभा तथा उपमंत्री वैदिक समाज की प्रेरणा से पं – रामचरण पाठक कृत – इसमे घड़ी बनाने का प्रकार – धुआँकी कल चलाने की बिधि – तार बिजली – गृह निर्माण आदि अनेक वैज्ञानिक विषयों का वर्णन है भाषा भी इस्की सबों के समझा ने योग्य खड़ी बोली रक्खी गई है ऐसे २ ग्रन्थों की हमारी भाषामे विशेष आवश्यकता है – हम लाला रामचरण साहब को इस्का धन्यबाद देते हैं हमे बिशेष हर्ष इस बातका है कि हमारे देश के भई महाजन रईसों मे भी अब कालके प्रभावसे ऐसी २ काम काजी शिल्प सम्बन्धी बातों का खाद जमने लगा देशके उन्नति का अङ्कुर इसी का नामहै मूल्य प्रति पुस्तक । –) पांचआना ॥

गोमहात्म्य

श्रीमत्परमहंस परि व्राजकाचार्य श्रीमत्प्रकाशानन्द सरस्वती विरचित और बाबू मोहनलाल सभासद गोरक्षिणी सभा हरि द्वार द्वारा प्रकाशित इसे पढ़ कर भी हमारी परम पूज्य गौओं पर यदि दया का उद्गार नहो तो हृदय क्या पाषाण से भी अधिकतर कठोर है मूल्य प्रति पुस्तक –)॥ इस पुस्तक का थोड़ा सा अंश हम यहां उधृत करते हैं ॥

आरत होकर गऊ पुकारै तुम बिनको प्रभु कष्ट निवारै ॥
पशुअन से हम निर्बलजाती बोलिसकैं न लिखैं हम पाती ॥
अल्प मनुज करुणा जिनकेरे लिखैं कुंकि अखबार घनेरे ॥
तदपि छुरी नित वपुषि हमारे-प्राणहानिकरिअंग बिदारे ॥
है कोऊ साधु जो हमे बचावै-दुर्लभ मोक्ष परम पद पावै ॥
हाहा खाय सुजन जन पाहीं-हमेबचावत हौ क्योंनाहीं ॥
नरकुचालि कलिकाल प्रभाऊ-हानिलाभ सूझत नहि काहू ॥

गोधर्म प्रकाश।

हरिद्वार गोरक्षिणी सभा सम्बन्धी मासिकपत्र वेदादि सत्य शास्त्रा नुकूल सनातन गोधर्मोपदेश देशोन्नति कारक व्याख्यान तथा प्रेरित पत्रादि निष्पक्षतता युक्त सरल भाषा में मुद्रित होता है—इसका अग्रिम मूल्य १॥) मेडाक व्यय के है हरिद्वार गोरक्षिणी सभाकेसभापति बाबू मोहनलाल द्वारा स्थान फर्रुखाबाद मुहल्ला लुहाई से प्रकाशित होता है-बाबू-मोहनलाल जी का यह उद्देश्य अत्यन्त सराहना के योग्य है भाषा भी इस पत्र की सरल

और मधुर है गौओं का कल्याण चाहने वाले हिन्दू मात्रको उचित है कि इस पत्रकी सहायता करें २४ पृष्ठ प्रति मास छपता है।

आरोग्य दर्पण

विविध वैद्यक विद्या विषयक मासिक पत्र जानस्टन गंज इलाहाबाद आयुर्वेदिक औषधालय के प्रवर्तक पं० जगन्नाथ वैद्य द्वारा संपादित अग्रिम वार्षिक मूल्य १॥) हमारी वैद्य विद्या जो दिन २ दबी जाती है उसको चीण होने से बचाये रखने को ऐसे एक पत्र को नितान्त आवश्यकता थी अभी तक जितने अङ्क इसके निकले कोई ऐसे नहीं हैं जिन्हे हम निरी भरती कहें और जिस्मे वैद्यक के उपकारी विषयों पर लेखन रहा हो भाषा भी इसकी उत्तम है।

प्रेरित पत्र

सम्पादक–महाशय–

हमारे भारत वर्षका ढंग संसार भरसे निराला है यहां के लोगों में परस्पर सुमति और एका होना अत्यन्त दुष्कर है—जिस देश या समाज में किसी एकही मजहब या मतका बन्धन दृढ़ होगा उस्मे कुमति या बुराई प्रवेश नहीं पासक्ती है सो हमारे देशमें सामाजिक बन्धन को दृढ़ रीति पर बांध रखने को कौनसा बन्धन है? मै समझता हूं कोई भी नहीं है–दुराग्रह मानो हमारे प्राण और रुधिर के साथ जुट रहा है आंख से कुछ सूझता ही नहीं विचार शक्ति इस भूमि से मानो रूठ कर हजारों मील के अन्तर पर होगई है—इस समय देश भर के हिन्दू और मुसल्मानो में जो द्वेषकी आग भड़क रही है जिस्से एक न एक दिन आश्चर्य नहीं यहां की पृथ्वी महा वीभत्स रस के नाटक की रंग भूमि बन उठे विचार शक्ति की हीणताही का कारण है–ईश्वर कुशल करे और इन्हे विचार शक्ति दे इसी में कल्याण है-का-प्र-

विज्ञापन

विदित हो कि सब प्रकार के टाइप का छापने वाला अति सुथरा और सस्ते दाम पर काम देने वाला "देशोपकारक यंत्र" अभी नवीन स्थापित हुआ है भला कोई कार्य होय तो परीक्षा कर देखो तो।

मुन्शी बच्चूराम मैनेजर देशोपकारक यंत्रालय

नखास कुहना इलाहाबाद





हिन्दीप्रदीप ।

मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंदभरै ॥
बचिदुसह दुरजन बायुसों मणिदीप समथिर नहिंटरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

१ नवम्बर सन् १८८६ | जिल्द १० संख्या ३

इलाहाबद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
देशोपकारक यंत्रालय
प्रयाग में मुं॰ बच्चूराम के
प्रबंधसे प्रकाशित हुआ

मूल्य अग्रिम ३।≤) पीछे देने से ४।≤)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १॥≤)

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द १०
संख्या २

१ नवम्बर
सन् १८८६ ई०

बास्तविक और कल्पित या अनुमित जगत

दुनिया दारों मे "पक्का आदमी„ ऐसा एक प्रचलित वाक्य है–जिस किसी के लिये यह वाक्य प्रयोग किया जाता है उसकी यह एक बड़ी तारीफ समझनी चाहिये कि यह मनुष्य इतर संसारिक मनुष्यों से किसी बात मे न्यून नहीं है और भलाई के अंश भी औरों की अपेक्षा उस्मे बहुत अधिक हैं–यह पदवी उसी को दी जाती है जो अपने घर गृहस्थी की खबर अच्छी तरह ले सक्ता हो-पुत्र कलत्र भाई बन्धों को उस्से किसी तरह का क्लेश न पहुंचता हो बाहरी लोगों के साथ भी हिला मिला हो—अपव्ययशील न हो आमदनी टांके टूक है तो खर्च भी बहुत नही है–जिस बात से उनको सरोकार नहीं उस्मे दाल भात मे मूसलचन्द नहीं बनते–सारांश यह कि सदा काम काजी बातों मे फंसे रहते हैं–उनके बारे मे यह कोई नहीं कह सक्ता कि वे व्यर्थ की खट खट किया करते हैं–संसार मे ऐसे को सब कोई पक्का आदमी कहता है और सब समझते हैं कि इन्होने अपना जीवन बहुत अच्छी तरह निबाहा-।

अब हम एक दर्जा आगे बढ़ते हैं ऐसेही लोगों मे यदि कोई ऐसा हुआ कि संसार के सब काम तो अच्छी तरह करता ही है जितने फर्ज़ हैं उनको तो अदा करो रहा है पर किसी एक बात में उसकी विशेष रुचि है अर्थात् उस मुख्य वस्तु में अपनी अधिक प्रीति प्रगट करता है-जैसा टोपी अथवा पगड़ी एक नये वज़ा की देंगे कोट एक नये काट का पहने गे ऐसे लोग किसी के फेशन को बुरा नहीं कहते केवल अपनी पसन्द एक नई तरह की रखते हैं और उसी खास चाल की टोपी या उसी खास काट का कोट अपने लिये उमदा समझते हैं और वही उनको भावना है-परिणाम इसका यह होता है कि ऐसे लोग अपने परोसियों मे अपने मित्र गणो मे एक लक्ष्य हो जाते हैं यहां तक कि लोग हंसी दिल्लगी मे उनका नाम ही वैसा रखलेंगे अर्थात् फलाने फलानी तरह की टोपी वाले इत्यादि इत्यादि-यदि उनसे पूछिये फलाने साहब इस वज़ा की टोपी क्यों देते हैं या इस फेशन के काट का कोट क्यों पहनते हैं तो लोग हंसकर कहेंगे-"सिड़ी हैं क्या हम लोगों की टोपी कुछ बुरी है" या बाजे लोग कहेंगे "साहब उन्ही से पूछिये जो ऐसे फेशन की टोपी देते हैं"-अब यदि उन्ही साहब से इस फेशन की छिलावटका अर्थ पूछिये तो निस्सन्देह वे अपनी पसन्द की हुई वज़ा मे कुछ न कुछ तारीफ का सबब ज़रूर बतावेंगे कि सामान्य लोगों की टोपी या पोशाक मे यह ऐब है इसलिये मैंने उस ऐब को दूर करने के लिये अपने वास्ते यह फेशन रक्खा है---।

अब हम एक तीसरी श्रेणी के लोगों का उदाहरण देते हैं ऐसे लोग वे हैं जो सामान्यतः और सब तरह से अच्छे हैं पर उनको किसी एक बात को इतनी अधिक ललक है कि हर एक बात में और हर एक मौके पर अपनी उसी ललक के लिये जान देने को तैयार हैं-मान लीजिये एक महाशय ऐसे

हैं जिनको स्त्री शिक्षा की धुन बंधी है-कोई बात स्त्री शिक्षा की उन्होने ऐसी देखा है कोई गुण उस्मे ऐसा पाया जिस्से अनेकानेक बुराइयों का संशोधन होसक्ता है इस लिये जहां कहीं होता है अपनी साधारण बात चीत मे भी बिना उस्के गुण प्रगट किये नहीं रहते और अपने भरसक इस विषय में कुछ काम कर दिखाने से उदाहरण बनने को भी उपस्थित हैं शक्ति भर धन खरचने मे भी न रुकें गे—यदि उनकी बात सुनिये और उसे अच्छी तरह सोचिये तो सम्भव है कि कोई नई बात उस्मे न पाइयेगा परन्तु ऐसे लोगों के खयालात यदि सच्चे हैं तो निस्सन्देह उस्मे आप एक बात पाइयेगा कि जो बात वह कहता है अत्यन्त पुष्टता के साथ कहता है और इस्में एक तरह का ज़ोर पाया जाता है और यद्यपि उस बेचारे को इस बातका कोई ज़रिया नहीं है कि और लोगभी उसी केसमानकोटि के हो जांय पर उस्की बात जो सुनता है कोई उस्मे दोष नहीं पाता-पर यदि अपने कहने के अनुसार वैसा आचारण भी करने लगा अर्थात् जिनबातों को वह मानता है उन्हें अपने व्यवहार से दिखलावे भी तो लोग उस्को क्या कहेंगे ? जबतक खाली बात चीत और ज़बानी जमा खर्च था तबतक तो लोग कुछ बहुत नहीं समझते थे पर अब अपने आचरणो मे भी उस उद्योग को उसने उठालिया तब लोग कहने लगते हैं "इनको इस्से क्या मतलब था„ ? "इस बात के लिये इतना कष्ट उठाने से इनको लाभ क्या„ ?

अस्तु यदि संसार का यही क्रम होता कि लोग प्रश्न मात्र ही से सन्तोष कर लेते तो हमको इस लेख लिखने की आवश्यकता ही न होती पर खेद का विषय है कि लोग उस्के बारे मे खाली प्रश्नही नहीं पूछते वरन अपनी एक तरह की राय भी कायम कर लेते हैं और उस्का बहुतसा धन और समय तथा शारीरिक और मानसिक शक्तियों का व्यय होना संसार मे सराहना नहीं पाता।

इस्के पहले कि हम आगे बढ़ैं और चौथी श्रेणी के लोगों के विषय मे कुछ लिखैं सामान्यतः हमने जिन लोगों का चित्र खींचा है उस्पर कुछ अपनी विशेष समालोचना किया चाहते हैं-इन चित्रों मे एक बात जो आप साधारण रीति पर उस्मे पाते हैं वह एक प्रकार संसार और संसारिक जनो से उनको पृथक् रखने का मानो द्वार है-संसारिक जनो से उन्हे भिन्न रखने वाला वह द्वार चाहो नित्य की मामूली और उचित आराम और आसाइशकी बातों का हो या किसी उत्तम से उत्तम प्रशंसनीय उद्देश्य के कारण हो-हम यह भी दिखला चुके हैं कि इस भेद की जड़ केवल एक बात से है कि कुछ लोगों मे सूक्ष्मानुसन्धान करने वाली बिवेचना शक्ति और अनुभव इतर सामान्य लोगों की आपेक्षा अधिक तीक्ष्ण और उत्कृष्ट होता है जोबात उस्मे जिनका नाम हमने दुनिया दार रक्खा है कहीं छूतक नहीं गई-परिणाम इस्का यह होता है कि वे लोग जिन्मे सूक्ष्मानुसन्धान की बिवेचना शक्ति तीखी से तीखी है ऐसे पुरुष चट्ट संसार से अलग हो जाते हैं और संसारिक जन भी ऐसों को वेवकूफ सिड़ी सौदाई इत्यादि नामो से पुकारने लगते हैं--क्यों उन्हे सिड़ी कहते हैं इस्का कारण भी हम दरसाय चुके हैं कि संसारिक जन उनके उद्देश्य के महत्व को समझ नहीं सके और उनके बारे मे मनमानी राय गढ़ लेते हैं जिस्को गढ़ने मे हर एक आदमी स्वच्छन्द और किसी के आधीन नही है—।

अब यदि यह कोई प्रश्न करे कि लोगों को यह अधिकार कहां से आया तो इस्का उत्तर हम नही देसकते-पर देखते हैं कि निस्सन्देह सबों कोपूरा २ अधिकार इस्मे है-और यह भी हम मानैगे कि खेद की बात है कि यह भ्रम हो-पर खेद करने से लाभही क्या जब प्रकृति के नियम को हम बदल नहीं सकते ।

सारांश यह कि दुनिया दार या लौकिक मनुष्यों से अलौकिक या लोकोत्तर मनुष्यों मे जो भेद है उस्की जड़ एक ऐसे भ्रम मे उलझी हुई है जिस्का निवारण या दूर करना असम्भव है इसी से कविकी उक्ति है–"लोकोत्तराणां चेतांसिकोनुविज्ञातुमर्हति„–वल्कि सचपूछिये तो उसके निवारण करने के प्रयत्न के मानेही यह होंगे कि संसार के जो नियम आज तक चले आये हैं आप उनको उलट कर रखदें–ऐसे लोग जो भेड़िया धसान से अलग हो लोगों के हजारों ताने और भेड़िया धसान मे बदनाम हैं उनको इस सब का प्रतिफल क्या ? तो इस्का उत्तर मे हम यही कहेंगे कि ऐसे मनन शील लोकोत्तर महात्माओं के लिये क्या यह कोई थोड़ा लाभ है कि उनके मनन की अविच्छिन्न धारा मे दुनियादारी के पचड़े मे न फसने के कारण अणु मात्र भी विक्षेप नही होने पाता ।

यहां तक तो हमने इस विभेद का दुःखात्मक चित्र खींचा अब आगे बढ़ते हैं–ऊपर जो उदाहरण हमने दिये हैं वे केवल इसी बात के हैं कि लौकिक और लोकोत्तर मनुष्यों मे जो भेद है वह किसी एक विशेषण कारण से है। अब यदि कोई ऐसा पुरुष हो जो अपनी प्रकृति ही से दुनिया दारी की सब बातों से निराला है अर्थात् उस्के सब उत्तमोत्तम गुण उस्मे स्वभावही से ऐसे हैं जो उस्की समस्त ज्ञान इन्द्रियों के मानो प्राधान विषय हैं, मान लीजिये कोई मनुष्य ऐसा है जिस्को आत्म गौरव का बड़ा खयाल है, औदार्य उस्मे पल्ले सिरेका है । सहानुभूति मैत्री या करुणा उस्को प्राणी मात्र के साथ है इत्यादि, और ऐसे पुरुष को इन सद्गुणों से शून्य कोई आचरण करना ऐसा ही असंभव है जैसा जल में के मीन का वायु में उड़ना, अब आप समझ सक्ते हैं ऐसे पुरुष की सूक्ष्मानुसन्धान करने वाली विवेचना शक्ति और अनुभव कितना तीक्ष्ण होगा और सर्व साधारण के लिये वह कितना सुख दुख अनु

भत कर सकता है, दुनिया दार लोग जब उसी श्रेणी के मनुष्य को सिड़ी मान लेतेहैं जिस्को वस्त्र आदि की काट छांट में निराली पसन्द है तब इसे तो महा सिड़ी या पागल समझेंगे क्योंकि उस्मे तो वे कोई ऐसी बात पातेही नहीं जिस्के तले तक वे डूब कर पहुंच सकैं, अपना लाभ देखने के बदले वे उस्मे आत्मत्याग का जोश पाते हैं, आत्म रक्षाके बदले परोपकार की धुन उसे बांधी है इत्यादि अर्थात् कोई ऐसी बात उस्मे वे पातेही नहीं जिसे अपनी बातों के साथ मिलान कर उस्के गुण को अपने जी में जगहदें, ऐसे पुरुष को यह कहना कि इस्मे जोशहै मानो पिष्ट पेषण करना है पर हमको उसजोश पर कुछ लिखना है इस लिये अब इसी शब्दको पाठकों के ध्यान के सामने लाते हैं॥ इस जोशके माने यदि ध्यान कर देखिये तो यही मालूम होता है कि यद्यपि पूर्व लिखित पुरुष में बहुत अच्छे २ गुण हैं पर वे गुण उस्के मालिक बन बैठे हैं और उस्का अधिकार उन गुणो पर बिल्कुल नहीं है अर्थात् उन अच्छी बातों का उस्पर इतना वेग है कि वह उनका बश बर्ती हो अपने को भूल जाता है पर सच पूछिये तो उन्नत मना होने के यह अर्थ नहीं हैं कि हम उनके आधीन हो जांय, हम ऊपर सिद्ध कर आये हैं कि वे सब परमोत्कृष्ट गुण ऐसे पुरुष में ज्ञान इन्द्रियों के विषय के समान होजाते हैं चाहो वे विषय कितनेही उत्कृष्ट क्यों नहों यदि आप उन इन्द्रियार्थक बिषयों को पहचानतेही नहीं और न उनका अनुभव आपको कभी हुआ है तब तो आप निस्सन्देह दुनियादारों के दर्जे मे गिर जायगे जो सिवा अपने रोज़ मर्रे के दुनियवी कामो के और कुछ जानतेही नहीं—उन विषयों को सर्वथा कुछ न जानना एक बात है जैसा हमारे पहिले दर्जे के लोग हैं और बिल्कुल उनके बश मेहोजाना दूसरी बात है जैसा हमारे चौथे दर्जे के लोग हैं—कहने का प्रयोजन यह कि यदि आप कोई पांचवा दर्जा कायम किया चाहैं और चौथे दर्जे के लोगों

से बढ़कर किसी को माना चाहें तो हमारी समझ में ऐसे लोग वेही होंगे जिन्होंने बड़े से बड़े उपद्रव का मूल चंचल इन्द्रियों के विषयों को अच्छी तरह अनुभव कर पीछे से जोग के बदले परम शान्ति की दशा को पहुंच इस भयंकर भव सागर के पार हो गये हैं—ज्ञान विज्ञान में ये लोग औभर किसी से कम नहीं हैं किन्तु भेद इतना ही है कि अपने ज्ञान पर पूरा अधिकार उनको है--हमारे यहां के जो बड़े २ यम नियम के सूत्र हैं उनका स्वाद ऐसे ही लोग चक्खे हुये हैं, ऐसे ही स्थलों में यह बात देखी जाती है कि जो लोग बुद्धि के ऊंचे से ऊंचे शृङ्ग पर चढ़े हुये हैं उनकी दशा यदि किसी से मिलती है तो उन्हीं लोगों से जो सर्वथा अल्पज्ञ और मूढ़तम हैं,।

इसी से यह श्लोक है

"यश्च मूढ़तमो लोके यश्चबुद्धेः परंगतः ।
द्वाविमौ सुखमेधेते क्लिश्यत्यन्तरितोजनः॥"

कमिशन

हमारे पाठक जन समझते होंगे कमिशन बड़ीभारी बात है इस्से हमारे देशको बड़ा लाभहै पर यह निरे धोखे की टट्टी है जहां बहुत से गूढ़ राज नीति के मर्म हैं वहां यह भी सर्कार की एक चालहै—गवर्नमेंट हिन्दुस्तानियों को फुसला रखने को हिकमत अमली है—गुड़ दिखाकर ढेला मारना है—बतलाइये इतनी बार कमिशन किया गया किस कमिशन से आपको क्या लाभ पहुंचा ? आरंभ में बरोदा कमिशन लार्ड नार्थब्रुक से उदार चेता के समय किया गया था परिणाम में क्या हुआ मल्हाररावकी दुर्गति हुई और गायकवाड़ एक गुड़िया बनाकर बरोदा की गद्दी पर स्थापित कर दिये गये सो यह भी लार्ड नार्थब्रूक की उदारता का कारण था—कहीं लार्ड लिटन या लार्ड डफरिन महाशय होतेतो यह भी नहोता ब्रह्मा राज्यके समान बरोदा भी सर्कारी

राज्यों में मिला लिया जाता-उपरान्त शिक्षा कमिशन किया गया-नगर २ इसकी धूम मची हंटर साहब की भांत २ के एड्रेस दिये गये हम लोगों को यही आशा हुई कि स्कूल और कालेजों के यावत् छात्र सब उशना और वाचस्पति कर दिये जांयगे-परन्तु अन्त में "टांय टांय फिस" सच पूछिये तो हमारे देश में अंगरेज़ी के पढ़ने पढ़ाने में तब से घुन लग गया फीस दूनी कर दी गई हंटर हिस्टरी सरीखी नष्ट किताबों का प्रादुर्भाव हुआ और यही निश्चय किया गया कि देशी भाषाओं के पढ़ने पढ़ाने में लोगों को फसाय अंगरेज़ी शिक्षाकी जड़ काट दीजाय जिस्से लोगों में वह उत्तेजना और जोश न बढ़ने पावे जिस्के द्वारा हमारे भावी कल्याण की आशा थी-अब यह सिविल सर्विस कमीशन का प्रारंभ है देखैं इस्के फल में हमें क्या भुगतना पड़ता है बिना कुछ बुराई किये यह कमिशन पिशाच कभी शान्त होहीगा नहीं-अवश्य यह कमिशन इलबर्ट बिलका छोटा भाई है क्योंकि इस्का प्रयोजन यही मालूम होता है कि हिन्दुस्तानी और ब्रिटिश बार्न सबजेक्ट में फर्क बनारहै और अंगरेज़ सिविलियनो के बराबर नेटिव सिविलियन किसो तरह पर न समझे जांय-धर्म की भयसे बहुत से लोग बिलायत जाकर सिविलियन होना नहीं चाहते इस्का हमे कुछ हर्ष सोच नहीं है १९ वर्ष की कैदहै वह भी रहै हम नहीं चाहते आप अपने इस नियम को तोड़िये पर हज़ार में लाख में एक आदमी इस देश का यदि सिविलसर्विसकाइमतिहान पास कर आवे तो वह वैसाही समझा जाय जैसा एक अंगरेज़ समझा जाता है-हम नही चाहते कि हमारा देश का देश सिविलियन होकर भी विलायती अंगरेज़ों के आख में नेटिव पदवाच्य हो विनके योग्य बनाही रहै तथा उनके साथ बराबरी का दावा बांधने की हिम्मत न करसके और यही इस कमिशन का मतलब है कि हिन्दुस्तानी और अंगरेज़ एक सां न समझे जांय इन्ही कारणो से कमिशन शब्द की भनक भी कान में आती हम लोग चौंक उठते हैं॥

हिन्दुस्तान मे दरिद्राका वास क्यों दृढ़ होता जाता है ?

दस वर्ष पहले जोथा सो आज नही है--दस वर्ष पहले जिस घर में आनन्द कोलाहल मचा रहता था आज वह घर गुप चुप दुःखित दशा से अपना दिन काटरहा है—फिर एक दो घर की ऐसी दशा हो सो नहीं देश का देश दरिद्रता के कारण बेकली और बेचैनी से वीभत्स रस का थियेटर बनता जाताहै—देशमें प्रति वर्ष रेल और नहरें बढ़ती जाती हैं बड़ी २ नदियों में व्यौपारियों के स्टीमर आया जाया करते हैं—जो नगर समुद्र के तट पर हैं उन्मे जेसा रोज़गारियों की धूम और जहाज़ों का जमाव रहता है देखतेही बनताहै—बड़े २ इलाकों में छोटे बड़े शहरों में व्यौपार बढ़ता जाता है परन्तु इस सबके प्रतिफल में हम धनवान् होतेजाते हैं इस प्रश्न की मीमांसा करने से कुछ औरही बात प्रगट होती है ।

इस्मे सन्देह नहीं अंगरेज़ी राज्यकी जागतीज्योति ने निरुद्यमता को भारत से दूर बहाया और अब सौ आदमी में एक भी आपको हाथपर हाथ रक्खे मक्खी मारता हुआ नदेख पड़ेगा प्रत्येक मनुष्य कुछ न कुछ उद्यम में प्रवृत्त हैं थोड़ा या बहुत धन सब कमाते हैं पर क्या किसीने पहले के समान एक साथ अपरिमित धन एकत्र भी कर लिया है ? ज़मीदार और इलाकेदारों के पास ज़मीन और इलाकों की कमती नहीं पर कर्ज़ उनपर भी दिन प्रतिदिन लदता जाता है--मध्यम श्रेणी वालों के घर में जो कुछ आता है वह टांके टूक उतना ही जितने में कुटुम्ब पोषण मात्र होजाय तब नीची श्रेणी वालों की क्या कहना दिनभर मेंहनत करते २ दांतों पसीने आते हैं पर सांझ को पेटका एक कोना खाली ही रखकर सोतेहैं—समय को देखिये तो जो समय

आज है कल्ह इस्से बत्तर ही नज़र आवेगा क़ानूनकी क़िलावट और एच पेच से लोगों में सयान पन बेइमानी और अविश्वास बढ़ताही जाता है—यह बात केवल इस पश्चिमोत्तरही में हो सो नहीं पंजाब, बंगाल, बंबई, मन्द्राज सर्वत्र एकसा ऐसही बीभत्स रस छाया हुआ है॥

जन संख्यासे निश्चय हुआ कि अंगरेज़ी राज्य के आधीन सब मिलके २० करोड़ अदमी हिन्दुस्तान में रहते हैं और उन सबोंको आमदनी हिसाब कर नेसे ५ अरब होती है अर्थात् औसतके हिसाब से फी आदमी २६) पड़ती है बहुत से मनुष्यों को दिन भर मेहनत करने पर भी पेटभर खाने को नहीं मिलता इस्पर सर्कारी खर्च नित्य २ बढ़ता ही जाता है और नये २ टैक्स के द्वारा उस हमारी आधी खुराक से भी असंख्य रुपया निकला जाता हैं।

सन १८५६ मे ईस्ट इन्डिया कंपनी के समय फौज का और पबलिक वर्क्स का खर्च छोड़ कुल सर्कारी खर्च १५ करोड़ सालियाना था, १८७१ मे २३ करोड़ हुआ और १८७९ मे ३३ करोड़ बढ़ाया गया इस्के पीछे दो करोड़ साल मे बढ़ाने की दरखास्त हुई है।

१८५६ मे हिन्दुस्तान का कर्ज़ ५८ करोड़ रुपया था १८७१ मे वह कर्ज़ बढ़ कर ११९ करोड़ हुआ और अब इस समय १६० करोड़ है जिस्का ब्याज प्रोमेसरी नोटों के द्वारा ७ करोड़ रुपया वर्ष मे दिया जाता है।

१८७३ तक गवर्नर जेनरल गवर्नर लफटिनेंट गवर्नर चीफ कमिश्नर कलक्टर जज्ज आदि ओहदेदारों की पेनशन का खर्च ११ करोड़ रुपया था सन १८७९ में जिस्का बट्टा १६ लाख रुपया होता था १८७९ मे १३ करोड़ ६३ लाख रुपया हुआ चान्दी का भाव बढ़ जाने से जिस्का बट्टा २ करोड़ १८ लाख रुपया सन १८८२ मे दिया गया था—हिन्दुस्तानी एक हज़ार से २ हज़ार तक माहवारी तनख्वाह पाने वाले विरले दो चार हैं पर अंगरेज, एक हज़ार

से ८ हज़ार माहवारी तनखाह पाने वाले हज़ार बारहसौ के भी ऊपर हैं इस हिसाब से ४० करोड़ के लगभग प्रति वर्ष अंगरेज, ओहदेदारों की तनखाह का रुपया बिलायत मे जाता है-इस्के अतिरिक्त हमारे देश का वनिज इंगलेंड के आधीन हो रहा है मुनाफे का सारांश मक्खन वहीं जाता है छाछ मे हम लोग अपना निर्वाह करते हैं-धूल सी वस्तु इंगलेंड हमे देकर सोना चांदी हमसे खींचे लेता है-व्यौपार के मार्ग से १० करोड़ ५० लाख रुपया प्रति वर्ष यहां से विलायत को जाता है-सर्कार के शासन के गुण से कहो अथवा विलायत के साथ व्यौपार के सम्बन्ध से कहो दोनो रीति से हम नित्य २ गरीब होते जाते हैं- जहां १५ आने की आमदनी है और एक रुपये का खर्च है वहां सिवा इस्के कि दरिद्रा अपना प्रभुत्व दृढ़ रीति पर स्थापित करै और क्या होना है।

ल

पहले तो यही कि (द) के मुकाबिले (ल) किसे न भावता होगा दूसरे कोमलता वात्सल्य और शृङ्गार की यह ल सिद्ध मूर्ति है-निश्चय जानिये वर्ण माला मे ल यदि न रहा होता तो कवियों को वात्सल्य अथवा शृङ्गार रसके वर्णन को कभी इच्छा ही न होती क्योंकि ललना ललाम लालित्य लालिमा लीलमा लाड़ लाडिला लाल नवल नवेली अलबेली सहेली अवली कमला अवला चपला सरला तरला वत्सला लालसा लिप्सा लोलुप आदि शब्द जिन्मे सब तरह के अनुप्रास की लड़ी की लड़ी झरती है और रस टपका पड़ता है कहां से उन्हे मिलते—मृदुता तो इस लकार की यहां तक ध्यानदेने योग्य है कि हाला हल महा विष जिस्के स्मरण मात्र से कम्प होता है सो भी लकार का योग पाय गरल मे कैसा सरल भाव धारण कर लेता है—सौष्ठव मार्दव

सुकुमारता कोमलता तो प्राकृतिक नियम से वह हो सृष्टि के आदि से लकार को अपने साथ लिये २ चली है लता एला मल्लिका लवली कदली मालती चमेली आदि शब्द जिस्मे या जिस वस्तु मे सुकुमारता या सौन्दर्य पाया गया है उनके नाम मे प्राचीन समय के सर्जित पदार्थों के नाम करण करने वाले बुद्धिमानों ने अल्प प्राण वाले वर्णों का बहुधा प्रयोग किया है उस्मे भी लकार को तो बहुत ही बहुत काम मे लाये हैं लकार को हम शृङ्गार रस का प्राण और काव्य का जीवन माने तो अनुचित नहीं है अंगरेज़ी मे भी "लेडी„ के साथ "लव„ की सहयोगिता मे लकार का साथ नहीं छुटने पाया प्रसाद और माधुर्य तो मानो लकार के गांठ मे बांध दिया गया है—"कोकिला लापवाचलो मा मे ति भलयानिलः„ ॥

"ललित लवंग लतापरिशीलन कोमल मलय समीरे„

आधेही श्लोक मे कै बार ल का प्रयोग किया है-न जानिये लकार में क्या प्रलोभन शक्ति है कि वैयाकरणों को भी इसका आश्रय लेना पड़ा–अल् हल् इत्यादि प्रत्याहारों को छोड़ दीजिये तिङ् के नवगण तो सर्वथा "ला देशाः परस्मै पदम्„ पर निर्भर हैं– इन्ही उत्तम गुणो के कारण विष्णु के साथ इसकी आकृति की समता दी गई है और "लाकृति„ विष्णु कहे जाते हैं ॥

। यहां के ज़िला स्कूल मे पैसे की उगहनी।

हम इस पैसे की उगहनी को न जानिये कै बार लिख चुके पर कहीं इसकी सुनाई न हुई तो लाचार हो फिर पिष्ट पेषण करनाही पड़ा–हमने जहां तक इसकी खोज किया छोटे बड़े कहीं के ज़िला स्कूल मे ऐसा दस्तूर नहीं है कि गरमियों मे पंखा कुलियों की तनखाह का चार २ पैसा फी महीना हर एक लड़कों से उगाहा जाय और जाड़ों मे चार पैसा फी महीने

अलावे फीस के क्रिकेट खेलने का लिया जाय-यह अन्धेर यहां ही है क्योंकि यहां शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर साहबका हेडक्वार्टर है-निश्चित जानिये हमारे हेड मास्टर साहब की लोभी प्रकृति के कारण हम सबों को अनेक क्लेस प्राप्त हो रहे हैं पर कहा किया जाय ऊपर के अफसरों के कान और आंख दोनो मे कुछ फर्क आगया है इस कारण वे लोग उन अनेक कारखाइयों को कभी अपनी आंख से न देख सक्ते हैं न कान से हम लोगों के कहने को सुन सक्ते हैं तब क्या बश है कभी २ को हमारे सहयोगी मिस्टर इंडियन यूनियन भी हमारे ही समान दबी जबान से उक्त महाशय के चरित्र गाने को गुन गुना उठती हैं पर ऊपर के हाकिमों को इस ओर दत्त चित्त न देख खुल के कहने मे संकुचित से हो जाती हैं तब हमतो मिस्टर यूनियन के मुकाबिले मे अणु मात्र भी नहीं है—पर तो भी इतना कहने का तो अवश्यमेव हमे साहस होताही है कि यह पैसे की उगाहनी तथा फीस का दूनाहोना तथा और २ बहुत से स्कूल के सम्बन्ध के गुप्त रहस्य जिनके प्रगट करने में हमलोग सर्वतो भावेन किसी न किसी कारण से संकुचित हुए हैं सब ऐसे ही महा पुरुष की करतूत हैं—जिनका आधिपत्य यहां सदा के लिये स्थिर कर दिया गया है और अब विन्ध्य पर्वत के समान ऐसा दृढ़ और पुष्ट पड़गया कि किसी के टसकाये न टसकेगा इससे चुप रहने ही मे कल्याण है॥

। बिनामात्रा के शब्द ।

। पुराने क-व-सु-से ।

जय भगवत भय हरण—अशरण शरण-कमलदलचरण-नवल घन वरन-हरन मन बचन-सकल अघ समन-अजहर पदनमन-अब बक खल दमन-करद

कर लसत अधमसब नसन-जपतपकल जनक—धन धन जन तपत—हर हर हर जपत—ब्रजबर महँरमत हम पद तब नमत ।

। ह्रस्व मात्राके शब्द ।

विविध रतन मनिबलसित नवल तन—छिन छिन छबि बर बढ़त मनहु घन—नवल विपिन महि विचरत रति सुख—सरद सुभग ससि सम सुसरस मुख—मुरलि रचित कर कमल अरुन तल-ब्रजजन सुखद सकल जग पर छित-विधि शिव नमित चरन युग नित नित-अलक झलक लखि ललकत तियमन-कनक बरन पट निपट सुखदतन-दरहु विविध दुख पतित अधमतम प्रियतम हरितुबचरन सरन हम ।

ऐसे शब्द जो उलट कर पढने में अपने । स्वरूप में रहै ।

हे नन्दनन्दनजलजनयन, हे वर कौरवसहासवदन हे खंका कंकाल नामन, हे कालिका फननर्तन, हे कनक पीताम्बर, हे महा कहिम, हे लाज जहाज, हे विगत कलंक, हे तनु मध्यम, हे कंचन कांचिका शोभित, हे नाना बेद कारिका प्रति पादित, हे मम प्राण जीवन, क्रपाकरो दरद हरो ।

।ऐसे शब्द जो उलटकर दूसरे शब्द बनै ।

हे राधा रमण धारा धर धर, हे नन्दक पाणि असुर निकन्दन, हे नील मणि मालिका कालिमा शोभित, हे दीन रचाचार नदीश, हे यम राज भय नाशक जरामय जन शरण, हे मार मोहन रमारमण, हे वशिष्ट शिव शिष्ट पूजित हे नित्य युवा वायु नन्दनपते हे सदा दास जन रचक, हे हेवगुतश्यामल तनु, हम तुह्मारे शरण हैं ॥

। तीन गिराने कोट ।

यह हिन्दी कहावत है कि जब कोई घर बनाया गया और गिरपड़ा तो वह कुछ धरती से ऊंचा हो जाता है फिर उसीपर बनाया गया और किसी हेतु से दुबारा गिरपड़ा तो अधिक ऊंचा होजाता है और अन्तको तीसरी बार जब समझ बूझके खूब सोच बिचार के बनाया गया तो एक अच्छा कोट बन जाता है–इस भूमिका के कथन से हमारा तात्पर्य्य यह है कि सन् १८५७ से कई वर्ष प्रथम जब अवध के बादशाह पर दुर्व्यसनी और अनीतिशाली होनेका दोष लगाके मुल्क छीन लिया गया था तो उस समय यह ढांचा डाला गया कि जिसका जो गांवहो उसी के साथ उसका बंदोबस्त किया जाय सो वैसा ही हुआ कि तमाम इलाका ताल्लुकेदारों से निकल गया जिमींदारों के साथ इन्तिज़ाम होता तो एक न्याय की बातथी जिस का जिस गांव से किंचिन्मात्र सम्बन्ध निकला झट उसी के नाम गांव का बंदोबस्त होगया या जिसको बादशाह या नाज़िमकी तरफ से सालाना बंधान या जीविका या सहायता किसी गांव की निकासी से मिलाकरती थी या खुद ताल्लुके दार ने जिस किसी को नोकरी के पलटे में कोई मौज़ा सपुर्द कर रक्खा या पुन्यार्थ देरक्खा था सो सब उस समय उसका होगया––उस नई अमलदारी में गांव पुकार पुकार के ऐसे बटते थे जिसतरह मङ्गल के दिन महावीर जी का प्रसाद बटता है–खैर ज़मीदार और ताल्लुकेदारों की लड़ाई होरही थी पर विशेष डिगरियां ज़मीदारही पातेथे बस जब उस प्रथम वेदीकी पूर्णाहुति सन् ५७ के गदरने कर दी और उसकी सांगता में बड़े २ जीव यज्ञ पशु की गति को पहुंचे तो फिर के दूसरी वेदी रचीगई अर्थात्

फिर उन्ही ताल्लुकेदारों के साथ बन्दोबस्त हुआ जिन्हो ने पशु मोचण मे अपने अस्त्र शस्त्र को चैतन्य दिखाया था और उनका कैसा कुछ सन्मान और खातिरदारी हुई कि उन्ही के गौं और घातके योग्य कानून रूपी भार बन वा दिया गया कि जिस्मे इन्धन की जगह आम की पत्ती के समान वही सन ५७ से पहले की डिगरियां झोंक २ के छोटे २ ज़मीदार भूने गये और रैयत कौल्ही गई–इस मध्य बेदी का अनुष्ठान और क्रत्य दो युग २४ वर्ष से अधिक समय तक रहा इतनी बेदखली और इज़ाफा लगान और अनीति पूर्वक धन लेलेने की धूम मची थी कि अवध की भूमिमण्डली के बराबर आकाश मे उतने तारे न होंगे यह बात सर्कारी रिपोर्ट से साबित है–इस मध्य बेदी को यज्ञाधिकारियों ने मनमानी दक्षिणा पाके समाप्त किया और इस्की सांगता मे आचार्य ने ब्रह्मा का मुल्क ले लिया।

अब तीसरी बेदी या पूर्वोक्त कोट के आरंभ मे एक नई पद्धति बनाई गई है जिस्का नाम ऐक्ट ११ इन १८८५ ई० अवध का लगान ऐक्ट है–इस ऐक्ट का आरंभ पहली जनवरी सन १८८६ से होगा इस्मे ११ अध्याय हैं–प्रथम अध्याय केवल पारिभाषिक प्रकारण है–दूसरे अध्याय में छोटे बड़े मलिकों के हक्क का वर्णन है–छोटे बड़े मालिक वेही हैं जिनकी पूर्ण स्वामित्व की डिगरियां मध्य बेदी के वैश्वानर को समर्पण हो चुकी हैं और इस्मे हक्क कब्ज़ेदारी और बाकी आदिका व्याख्यान है—तीसरे अध्याय मे लगान लेने की रीति है–चौथे मे लगान के बढ़ाने और उस्की शरह ठहराने अदि की १८ दफायें हैं—पाचवें मे बेदखली आदि का वर्णन है—छठे अध्याय मे काश्तकारी कर्ज़ की किस्म और सीर का निरूपण है—अध्याय ७मे कुर्की का विधान विस्तार आदि है—अध्याय ८ में अदालत के अधिकार और

नालिशों की सुनाई की विधी का निरूपण है—नवे मे नालिशों की सुनाई की सीमा और दसवें मे अनुष्ठानिक कृत्य के बर्ताव का वर्णन है—ग्यारवें अध्याय मे कुछ साधारण आज्ञा और कायदे आदि बनाने के अधिकार दिये जाने की कथा है—इस्के कुल दफा १५८ हैं-यदि इन्ही ग्यारहो अध्यायों को ११ स्कन्ध समझ लिया जाय और हा दशस्कन्ध वह कायदा मान लिया जाय जो इस ऐक्ट के अनुसार जल्द बनेगा तो यह ऐक्ट एक प्रकार का भागवत बन गया है जिस्से थोड़ेही समय मे औध के अनेक छोटे बड़े ज़मीदारों की जीवन्मुक्ति हो जायगी-उस भागवत से राजा परीचित और धुन्धकारी को पूर्ण फल मिला है इस्से गांव २ मे लोग धुन्धकारी और परीचित की गति को पहुंचैंगे-इस नवीन भागवत के पौराणिक महात्मा वकील मुख्तार बनैगे और इस्मे प्रधान देवता ज़िले के हाकिम डिपुटी कमिशनर आदि और आवरण देवता तहसीलदार सरिश्तेदार अनेक अमला लोग हैं यह सब कोई जानते हैं कि भागवत पुराण उस महाभारत का सारांश है जिस्मे कौरव पाण्डव दो प्रतिपक्षी माने गये हैं-सो इस नवीन भागवत मे तीन पक्ष कायम हुआ है एक बड़े मालिक एक छोटे मालिक एक रैयत"तीन तिकट महाबिकट,, इस्मे युद्ध और विग्रह का भी खूब निरूपण है-बात २ मे घात पेंच और लड़ने की चाल बताई गई है-पर इस भागवत की पूजा मे तुलसीदल और गंगा जल से काम न चलैगा इस्मे रजत चन्द्र देवत की बड़ी ज़रूरत है—और अन्त मे हर एक प्रार्थक सुदामा की पूर्व गति को प्राप्त हो श्रीभगवान् के इस बचन को कण्ठस्थ करैगा—"यस्यसम्यक् प्रसन्नोस्मितस्य सर्वं हराम्यहं,, बस जब यह अन्तिम वेदी खूब चल निकलेगी तो वह कहावत चरितार्थ होगी कि—"तीन गिराने कोट,,—।

हम इसे कमजोरी मानें या साहस कहें।

मुकद्दमे की रूदाद से गवाहों के इजहार से व्यरिस्टरों की तकरीर से यह अच्छी तरह साबित कर दिया गया कि बकरीद की कुर्बानी मे गो बध मुसलमानो ने हिन्दुओं के जी दुखाने को किया था तोभी मेजिसटरेट साहब न जानिये क्या खेल खेले कि मुकद्दमा खारिज कर दियागया और मुसलमानों की रिहाई की गई- यहां के हिन्दू मात्र साहब के इस काम से अत्यन्त अप्रसन्न और खिन्न हैं-हिन्दू और मुसलमानों मे यहाँ जैसा परस्पर विद्रोह बढ़ता जाता है इसका भावी परिणाम एक दिन बहुत बुरा होगा और साहब को पछताना पड़ेगा क्योंकि इस विद्रोह की जड़ यहां के कोतवाल और ज़िले के हाकिम हैं-माना कि हिन्दू स्वभावही से क्षमा शील और दब जाने वाले हैं और हाकिमों को यही बात जंचीहुई है कि मुसलमानो को खुश रक्खो हिन्दुओं की कौन इन्हे जैसे रक्खेंगे वैसेही रहेंगे सो अब ऐसा होना असंभव है अब नाक मे प्राण आगया है-अस्तु यदि केवल मेजिसटरेट ही की यह सब काररवाई है और ऊपर से डिमीअफिशल कुछ इशारा नहीँ किया गया तो हमे कोई अचरज और खेद इसमे नहीं है क्योंकि ज़िले के हाकिमों की अपने ज़िले मे मनमानी अविचारकारिता और पक्षपात कर

गुज़रना कोई नई बात नहीं है—पर यदि ऊपर का इशारा भी इस्मे रहा हो तो अवश्यमेव हम गवर्नमेंट की कमज़ोरी कहेंगे कि सर्कार मुसलमानो से दबती और डरती है तबतो जो कोई इसीतरह पर उत्पथ गामी होकर चलेगा उसी से दबजाना पड़ेगा यदि कहो सर्कार की कुटिल पालिसी के अनुसार यह दबजाना नहीं है किन्तु हिन्दू और मुसलमानो के मुकाबिले मे मुसलमानो पर विशेष कृपा प्रगट करने का जानबूझ के साहस किया गया है खास कर लार्ड डफरिन के ज़माने मे जिनके बहुत से अनर्गल कमो मे मुसलमानो की हद से ज़ियादह खातिरदारी भी एक काम है जिस्मे रूस के साथ भावी मुट भेड़ मे मुसल्मान हमारे सहायक हों सो यह आपकी निपट भूल है—ईश्वर न करे वह दिन आवे जिनकी आप इतनी खातिर दारी कर रहे हैं पहले इन्ही का इन्तिज़ाम आप को करना पड़ेगा—हमारे लिखने को आपने गुस्ताखी माना हो तो माफी चाहते हैं पर कहेंगे उचितही कि राज्य के सुप्रबन्ध और न्याय के यह माने नहीं है कि एक को घटावे दूसरे को बढ़ावे राजा के लिये प्रजा पर समभाव रखना यावत् राजनीति और पालिटिक्स का पहिला सूत्र है इसके विरुद्ध चलियेगा पछताइयेगा ॥

प्रेरित पत्र

। निम्नलिखित के उत्तर दाता हमन होंगे ।

। डूबो बंश कबीर को, उपजे पूत कमाल ।

यहां फर्रुखाबाद मे सदानन्द तिवारी के प्रिय पुत्र बच्चूलाल का निषिद्ध कर्म सुन आप भी हंसेगे और उनकी निपट मूर्खता पर घिन करेंगे इन्होने नायब तहसीलदार होने की मिडिलक्लाश की सनद हासिल करने का यह उपाय सोंचा कि कोई भारेका टट्टू मिले जो हमारे नाम से कानपूर मे जाकर प्राइवेट तौर पर इमतिहान् देआवे पहले इसकी खोज इसी शहर में की गई जब यहाँ किसी ने अङ्गीकार न किया तब दलालों की मारफत एक लड़का काशगंज से बुलवाय भरपूर उसकी मुट्ठी गरमकर अपने नाम से इमतिहान दिलवाय प्रसिद्ध करदिया कि बच्चूलाल रईस फर्रुखाबाद औवल दर्जे मे पास हो गये और जबतक मे सनद मिले तीनबार कलट्टर साहब से भी नायब तहसील दारी पाने को मिलआये--पर इनके सब जाल की पूरी २ खबर कलट्टर साहब को मिलचुकी थी सनद पाने के समय हवालात सुपुर्द किये गये और जंट साहब के इजलास से मुकद्दमा फैसल हो बच्चूलाल डेढ़ वर्ष के लिये जेल मे भेजे गये--बच्चूलाल के इस

६८

जाल का पता लगाने के बानी मुबानी यहाँ के डिपुटी इनस्पेक्टर पं० दीन दयाल तिवारी हुये हैं इसलिये बच्चू लाल के पच्च पातियों मे बहुत से लोग इनपर दाँत लगाये हैं-परन्तु उक्त पण्डित जी ने इस विषय में आदि से अन्त तक एक अच्चर भी झूठ तथा कोई अनुचित बर्ताव नही किया और न उनको किसी का गैर वाजिब बर्ताव अच्छा लगता है तब उनको दोष लगाना सर्वथा भूल है॥

झम्मनलाल मु० फा०

हिं० प्र० जो हो पर पण्डित जी साहब को इतना अधिक Overstrict होने से क्या मिलगया ?

लखनऊ की खूबियां

यह लखनऊ कौन शहर है ? हमारे मुल्क में ऐसे बहुत थोड़े शख्स होंगे जो इसके नाम से वाकिफ न हों-क्या शहरीयत, क्या गुफ्तगू और क्या तुहफों से यह शहर दिल्ली आगरे के बराबर समझा जाता है-वरन जब मुसलमानों की शाइस्तगी या किसी दूसरी किस्म की खूबी का जिक्र किया जाता है, लखनऊ का नाम जरूर मिसाल में आता है- यहां की बहुत सी खूबियां अकसर लोगों को जाहिर हैं, इससे उन्का लिखना यहां पर फ़जूल होगा

लेकिन चन्द बातें यहां की ऐसी हैं जो और मुकामो के लोगों को नमालूम होंगी, इस लिये उन्हें जाहिर करना जुरूर है।

बड़ा भारी फ़न यहाँ के आम लोगों में जेब कतरना समझा जाता है जिस्को इस हुनर में कामिल कामयाबी हासिल है वह होशयारी और चालाकी के अव्वल दरजे के तमगे का हक दार है चौक या अमीनाबाद का बज़ार इन बहादुरों के favorite resorts हैं आप उन्को कभी पहचान नहीं सक्ते-अगर आप बहुत बढ़िया और सोफयानी पोशाक पहने हुए हैं और उर्दू बड़ी फ़सा- हत के साथ बोल सक्ते हैं, इन तगमे याफ्तों के लिबास में हर किस्म की उम्दगी व खुशनुमाई पाइयेगा गुफ्तगू में तो वह मो तियों की बौछाड़ बरसाते हैं और इस तरह पर आपके साथ पेश आते हैं कि आप को उन्की शराफ़त या दियानत दारी के बाबत एक लमहे को भी शक या शुबहा नहीं होसक्ता आप के बड़े दोस्तहोंगे लेकिन दुश्मन सिर्फ जेब के होते हैं आप उन्के साथ देर तक बात चीत कीजिये या टहलीये जेब या जेब का असबाब न दारद, और क़िबले भी गायब, ये मर्द शरीफ़ जिन्को कि यहां के लोगों ने शौन् को हे से बदल, "हरीफ़,, का नाम देरक्खा है, मज़हब में अहल इस्लाम होते हैं और बहुतेरे अच्छे खान दानी, यहां तक कि नव्वाबों और वज़ीरों से अपना रि श्ता निकाल सक्ते हैं।

जेब कतरना इन लोगों का पेशा है इसी से इस बदले हुए ज़माने में उन्का अक्सर गुज़र होता है मेले इस शहर में बहुत होते हैं, अगर मेले नहीं तो शायद इनगांठकटों की रोज़ीही मारी जाय मेले के मौके पर रात के वक्त चौक में ये कई तरह अपने हुनर को काम में लाते हैं जब देखा कि कोई बनिया या खत्री वा दूसरा भला मानस अपने बच्चे को गोदी में लिये कोई चीज़ खरीदने में मशगूल है, और बच्चा बेश कीमती टोपी पहने है पीछे से टोपी की झट से ले उस खरीदार के आगे हो जायगे, क्योंकि टोपी उतर जाने पर वह शख्स अपने पीछे ही को देखेगा, और उस बदमाश को तलाश न कर सकेगा।

एक दफे का ज़िक्र है कि किसी दूसरे शहर के एक बड़े हौसिले के जेबकट साहब लखनऊ में तशरीफ़ लाये, और अपनी जेब में पीतल की अशर्फियां डाल कर लगे चौक के बीच भीड़ में होकर घूमने उन्हें घूमते दो तीन रोज़ होगये, पर अशर्फियां जेब से न गईं तब घमंड में आकर किसी से कहने लगे कि "हम सुनते थे यहां बड़े नामी जेब कट रहते हैं लेकिन देख लिया,, यह साहब बोले "अजी जाइये, पीतलकी मुहरें डाले फिरते हो, यहाँ ऐसी चीज़ों पर हाथ नहीं डालते,,

सुनते हैं नव्वाबी और बादशाही ज़माने में इस फ़न का ज़ियादा चर्चा था दुशाले, रूमाल, टोपियां, छड़ी, घड़ी, पगड़ी, अगर मर्द शरीफ़ को पसन्द आगई, आप से आप उन्को पहुंचती थीं और ये लोग चैन करते थे जब से अंग्रेज़ी आयी, यहां के

लोग तवाह होगये ! वह ऐश वह यारों के साथ हमागोशी जो वाजिद अली शाह के ज़माने में था उस्से पहले गुजरती थी अब ख्वाब होगई अशराफ लोग रात के वक्त डाढ़ी और मुंहको कपड़े से छुपा "मुहताज २" पुकार बज़ार में कौड़ियां और रोटियां मांगते हैं इसी तरह परदा नशीनें तमाम बदन की आवि जेठप भीख मांगती नज़र आती हैं बजा है

" अत्युग्र पुण्य पापाना मिहैव फल मश्नते "

लखनऊ में एक बड़ा आरामहै हर चौराहे पर या बाज़ार मे ब्राह्मन लोग डोल और लोटा लिये पानी पिलाने को तयार मिलते हैं दिल्ली और आगरे मे यह नहीं देखागया वहां जैसे भिश्ती कटोरा बजाते हैं यहां ये ब्राह्मन, डोल का कुन्ठा खड खड़ा या करते हैं यह बम्हनई है यानी कि कौड़ीयां दीजिये, खिदमत करा लीजिये ॥ एक सैयार

। हमारी निद्राभंग ।

पाठक महाशय इधर थोड़े दिनो से हमको कुंभकरण की शागिर्दी का चसका पड़गयाहै कईएक विशेष कार्य वश या मानलीजिये यों-ही महीनो तक पड़े २ सोते रहते हैं एकबारगी अचाकन आंख खुलजाने पर जंघते हुये पीनकमे भरे घबड़ाकर खयाल के अथाह सागर मे गोता मार सब ओर टटोलते २ जोकुछ हाथ लग जाता है लेखीनी उसे ले भागती है और अपनी कारीगरी की खराद से पालिश किये हुये ये नये टटके माल आप लोगों की भेंट कर अपने अपराध की छमा चाहती है और वादा तो नहीं पर दबी ज़बान यह भी सूचित कीया चाहती है कि कदाचित् अगेको ऐसा न होगा ।

ओ३म्

विज्ञापन

गोधर्म प्रकाश मासिकपत्र

सब सज्जन महाशयों को विदित किया जाता है कि बहुत से धर्मासक्त स्त्रियों की प्रेरणा अनुसार अर्थात् गोप्रेमी महात्माओं की आज्ञा से (गोधर्म प्रकाश) नामक हिन्दी भाषा का मासिक पत्र मुद्रित करा कर प्रकाश किया जाता है यह पत्र बहुत अच्छे कागज़ पर किताब की रीति पर छपा करता है इस पत्र में जहां तक मालूम होगा सम्पूर्ण भारत वर्ष की गोशालाओं का हाल अर्थात् गोरक्षिणी सभाओं का कर्त्तव्य और सहायता देने वाले पुरुषों का नाम आदि समय २ पर प्रकाश किया जायगा और इस पत्र में गोरक्षा विषय के व्याख्यान आदि अति उत्तम हुआ करेंगे यह पत्र हर मास की १ तारीख को ग्राहकों की सेवा में पहुंच जाया करता है विशेष आनन्द इस पत्र के विषय में यह है "कि आमो के आंम और गुठलियों के दाम" यानी ग्राहक को घर बैठे प्रमाण सहित ठीक २ ख़बर मिला करेगी और पत्र का कुल द्रव्य गोरक्षिणी सभा हरिद्वार को दिया जायगा इसीलिये हम आशा करते हैं कि ग्राहक लोग हमको आनन्द पूर्वक ग्राहक होने की सूचना देवेंगे इस पत्र का मूल्य १) और डाकव्यय सहित १।) वार्षिक है, निम्नलिखित स्थान में इत्तला देने से पत्र प्राप्त होगा ॥

मोहन लाल सभापति गोरक्षिणी सभा हरिद्वार स्थान फ़र्रुख़ाबाद
मुहल्ला लुहाई ॥

विज्ञापन

सब लोगोंको जनाया जाता है कि अब बच्चूराम मनेजर देशोपकारक प्रेस को कोई रुपया पैसा देगा तो कम्पनी जुम्मेदार न होगी जिन्हें रुपया पैसा मनीआर्डर वगैरह देना या भेजना हो तो लाला माधोराम सिक्रेटरी देशोपकारक प्रेस के नाम प्रेषित करे ॥

फ़्रेंड ऐंड कम्पनी देशोपकारक प्रेस इलाहाबाद

हिन्दीप्रदीप ।

मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंदभरै ॥
बचिदुसह दुरजन बायुसों मणि दीप समथिर नहिंटरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

१ दिसम्बर सन् १८८६ } { जिल्द १० संख्या ~~५~~ ४

इलाहाबाद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
देशोपकारक यंत्रालय
में प्रकाशित हुआ

मूल्य अग्रिम ३।≈) पीछे देने से ४।≈)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १॥≈)

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द १०
संख्या ४

१ दिसम्बर
सन् १८८६ ई०

। मन की दृढ़ता ।

अनेक मानसिक शक्तियों में दृढ़ता भी मनका एक उत्तम धर्म और मनुष्य के प्रशंसनीय गुणों मे है-परन्तु इन मानसिक शक्तियों पर कुछ लेख लिखने या उनके बिचार के सम्बन्ध में कुछ कथोपकथन करने के पहले यह प्रश्न उठता है कि इस कथोपकथन का उद्देश्य क्या है ? यदि यह माना जाय कि कोई न कोई मानसिक गुण लोगों में रहता ही है और जो लोग इन गुणों का पूरा आनन्द और लाभ उठा रहे हैं वे उठाहींगे तब आप अपने इस लेख से और क्या अधिक लाभ पहुंचा सक्ते हैं किन्तु इस्के बिपरीत यह मानलेने में कि जितने अच्छे गुण हैं उनके उद्दीपित करने का यही उत्तम उपाय है कि हम उन गुणों की यथोचित मीमांसा कर उनसे जो २ लाभ हैं उन्हे प्रगटकर दिखावें तब अलबत्ता लेख आदि की आवश्यकता हो सक्ती है-और कुछ नहीं तो इतनाही सही कि जो लोग उन गुणों के आधार हैं उनके साथ सहानुभूति प्रकाश करने से हम ऐसे लोगों को किञ्चित भी हर्ष पहुंचा सकेंगे तो हमारे लेख का कुछ क्रत्य हुआ और इसी को ध्यान में रख हम आगे बढ़ते हैं ।

गदहा पीट घोड़ा नहीं हो सक्ता जिन्मे किसी गुण का लेश नहीं है वे किसी तरह गुण आली न हो सकेंगे-लोगों के इस कहने को हम किसी २ अंश में सत्य मानते हैं-अधिक विद्या की वृद्धि स्थान स्थान में पुस्तकालय

क्लब और सभायें तथा अनेक उपकारी बिषयों पर वक्तृता समाचार पत्र तथा बिविध विद्या विषयक नित नये मासिक पत्रों का बिशेष प्रचार यही सब उपाय है जिनसे आप लोगों की चाल चलन में शुद्ध और सुचरित्र तथा मानसिक शक्तियों मे आगे को बढ़े हुये करसक्ते हैं-जब ये उपाय आप का प्रयोजन सिद्ध करने को किसी तरह कारगर नहीं हुईं और आप के लोग भी वेही हैं जिनपर इस्का कुछ असर नहीं पहुंचसका तो यह आशाही करना व्यर्थ है कियत और उपाय से जगत् का वह लाभ होगा जो आजतक नहीं हुआ-गदहा पीट घोड़ा न हो सकेगा ऐसा मानने वालों के मत का खण्डन करना हमारा तात्पर्य नहीं है किन्तु इस्के साथही हम यह भी मानते हैं कि बुद्धि का काम मनुष्य को सत्कर्म सम्बन्धी शिक्षा देने से यही मालूम होता है कि यद्यपि जो बात प्रबल संस्कार के कारण या किसी दूसरे दूसरे हेतु से दैवही ने किसी को नहीं दिया वह बात हम उस्मे न उपजा सकें तो इतना तो करें कि सदुपदेश की परिणत दशा पर उस्की आंख तो खोलदें अर्थात् उस्की अपेक्षा दस भले लोग और उस्से दस बुरे लोगों के साथ उस्के चाल चलन का मिलान कर उस्की भली या बुरी चित्त वृत्ति का एक अन्दाजा तो उसे देदें उपरान्त उसे स्वयं अधिकार है चाहे वह अपनी दशा को आगे बढ़ावे अथवा अधः पतन से अपने को नीचे गिराताही जाय क्योंकि अब यह कहने वाला तो कोई न रहेगा कि सुधारने के लिये किसी ने कुछ यत्नही न किया अब तो बुद्धि रूपी लैम्प के द्वारा उसने अपनी पहली निबिड़ अन्धकार पूरित अथवा प्रकाश के संस्कार से संस्कृत पिछली दशाओं को देखलिया है तो इस बात का ज्ञान तो उसे अवश्यही हो गया है कि हम कहां हैं और वे कौन और कैसे लोग हैं जिनसे हम कई दर्जे अच्छे हैं अथवा वे कौन हैं जिनके समान हम चेष्टा करने से हो सक्ते हैं-और यह सब कोई छोटी बात नहीं है क्योंकि यदि हमसे कोई पूछे कि प्रशंसा का मूल आप किसे कहेंगे तो हम यही उत्तर देंगे कि प्रशंसनीय केवल वेही हैं जिन्होने दीर्घ काल के अभ्यास और प्रयत्न से कुछ प्राप्त कर लिया है यदि देव की देन उस्पर हुई

और सहजही में कोई अच्छी बात उसे प्राप्त होगई तो निस्सन्देह यह तो अवश्यही कहेंगे कि वह गुणी है पर यह न कहेंगे कि यह मनुष्य प्रशंसनीय है क्योंकि जैसा हमने अभी कहा प्रशंसनीय होने की योग्यता हम केवल असकृत् चेष्टा और यत्नोंही पर निर्भर मानते हैं—ईश्वर की देन से स्वभावतः प्राप्त गुणों की अपेक्षा चाहो असकृत् चेष्टा और अभ्यास द्वारा प्राप्त गुणों में वैसा तीखापन न हो पर विचार की गंभीरता इस प्रकार के गुण में अवश्य विशेष होगी और यह लाभ किस्से कम है—इस बात के स्पष्ट करने को हम कवित्व शक्ति का उदाहरण देते हैं कवियों को कविता करने की शक्ति ईश्वर प्रदत्त होती है सही परन्तु निरन्तर अभ्यास से जो कवित्व शक्ति सम्पादित की जाती है वह भी कुछ कम नहीं बरन विचार की गंभीरता ऐसे ही काव्यों में विशेष पाई जायगी क्योंकि पहले तरह के काव्य में कविके हृदय से आपसे आप जो निकलेगा वही रहेगा पर दूसरे प्रकार के काव्य में खूब सोच समझ और गढ़ २ के पद रक्खे जांयगे कहां तक तब वे पद सारगर्भित नहोंगे–मंमट भट्ट की कारिका से भी यह बात सम्यग् व्युत्पादितहोती है–"शक्ति निपुणता लोक शास्त्र काव्या द्यवेक्ष णात्। काव्यज्ञ शिक्षया भ्यास इति हेतुस्त दुद्भवे„—दण्डी का भी यही मत है–"नविद्यते यद्यपिपूर्व वासना गुणानु बन्धिप्रतिभान मद्भुतम्। श्रुतेन यत्नेनचवागु पासिता ध्रुवं करोत्येव कमप्यनुग्रहम„ "तदस्ततन्द्रै रनिशं सरस्वती श्रमा दुपास्या खलुकीर्ति मीप्सुभिः। कृशेकवित्वे पिजनाः कृत श्रमाः विदग्ध गोष्ठी षुविहर्तु मीशते„—कहने का प्रयोजन यह कि नाना प्रकार के गुणो में मनुष्यों की असमता में विधाता का विषम भावही कारण है परन्तु इस्के साथ ही यहभी माननाही पड़ेगा कि विधाता की विषमता से जो यह भांत २ की त्रुटि संसार में देख पड़ती है उस्का पूरा करने वाला सर्वोत्तम प्रधान कारक अभ्यास ही है—"करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान„ लड़के शिक्षा कैसे ग्रहणकरते हैं इस बात को जिस्ने कभी सोचा है वह हमारी बात अवश्य मानेगा–बालक जब छोटेसे छोटे दर्जे में रहते हैं तभी से अपनी विशेष

रुचि किसी एक मुख्य विषय पर प्रगट करने लगती हैं—किसी विषय में उनकी बुद्धि अधिक धसती है किसी बातके सीखने को वे अलसाते और जान छिपाते हैं कोई २ बातों में वह अपनी अरुचि आदिही से प्रगट करता है कोई २ बात मे शीघ्र उस्की बुद्धि पुष्ट पड़ जाती है, कुछ बातों में बड़े यत्न के उपरान्त भी वह कमज़ोर बना रहता है, किसी को काव्यमें बड़ी रुचिहै तो गणित के सीखने सेदूर भागता है किसी को दर्शनी। ही के अभ्यास में आनन्द मिलता है काव्य का रस उस्के नीरस चित्त में स्थान ही नहीं पाता, किसी की तबियत शिल्प और कारी गरी की ओर अधिक झुकती है, किसी की प्रखरबुद्धि विज्ञान के ज्ञान में अतिशय दौड़ती है, क्यों ऐसा होता है इसे यदिपूर्व संस्कार या ईश्वर की देन मानिये तो बहुत कम लोगों का इस्मे मत भेद होगा तब इस्के क्या माने आप कह सक्ते हैं कि इस बालक को आरंभही से अच्छी शिक्षा दीगई है अर्थात् इस्के यही माने हैं कि जिस बातकी ओर उस्की झुकावट होती थी वह विषय तो उस्मे खराद परचढ़े नगीने की भांति स्वयं जगमगा रहे थे जिस बात की ओर से वह अलस भाव धारण कर अरुचि प्रगट करताथा वह कमी भी उस्मे भली भांत सह्माल दी गई, अन्त में परिणाम इस सब का यह हुआ कि उस बालक की शिक्षा के सम्बन्ध में आप कह सकते हैं कि इसे अच्छी शिक्षा या पूर्ण शिक्षा दीगई है, अब बतलाइये इस अच्छे या पूर्ण के क्या माने हैं ? केवल यही कि यद्यपि बहुत बातों में स्वभावही से वह बालक अच्छा रहा हो परन्तु उत्तम शिक्षा के प्रभाव से उस्के निर्बल अंश भी दूर कर दिये गये और सब विषय में पूर्ण अथवा "कालाचरी„ वाक्य उस्के लिये उपयुक्त होता है ।

यह हमने केवल एक दृष्टान्त के ढंग पर दिखलाया जो बात बालकों में देखते हैं कोई ऐसी वजह नहीं कि जवानी में वह बात न पाई जाय अर्थात् जो Natural gifts ईश्वर की देनसे नहीं आई उसे भी Culture अभ्यास के द्वारा बढ़ाना, भेद इतना ही है कि बालकों को इस बात की आवश्यकता है कि कोई दूसरा अपने सहारे से उन्हे लेचले पर जवानी को भला कौन सहारा

होगा यदि अपनी मदद वे आपही नकरैं—और इसी का नाम हम मनकी दृढ़ता रक्खेंगे, अब देखना चाहिये इस मनकी दृढ़ता का असर उसी आदमी के ख्याल पर किस तरह होता है।

जो लोग यह मानते हैं कि कुछ लोगों की किसी खास बातकी तरफ झुकावट इत्तिफाक से है ऐसीही बात आपड़ती है कि वह उस बात को चाहने लगता है या अच्छी तरह उस बात को समझता है इस सब का कारण बिलकुल इत्तिफ़ाक ही है, हमारी जान में ऐसा मानने वालों की बड़ी भूल है आदमी की पसन्द तबियत मिजाज खयालात रुचि और अरुचि इस्में छोटी सी छोटी या बड़ी सी बड़ी बातों पर इत्तिफाक का उतनाही असर है जितना इत्तिफाक से पेड़में कानी खोतरी पत्तियां या फूल फल लग सक्ते हैं—इन्ही बातों पर सोचने से इस प्रश्न का उत्तर मिलता है कि कैसे मानसिक दृढ़ता रहने से किसी के खयालात में वह ज़ोर आता है जिसे देख या सुन लोग चमत्कृत होते हैं-जब यह माना गया कि आदमी का मन उस्के खयालात के साथ ऐसा नधा है जैसा वृच अपने एक २ रगोरेशे से नधा हुआ है तो यह सिद्ध हुआ कि किसी मनुष्य के खयालात उस्के मन और ज़बान पर वैसेही हरे भरे मालूम होंगे जैसे अपने स्थान मे जमा हुआ पेड़ हरा भरा मालूम होता है-क्या यह कभी संभव है कि पेड़ को आप उखाड़ डालें और उस्की पत्तियां हरी भरी बनी रहैं ? कभी नही—ऐसाही यह भी संभव नहीं है कि किसी के अनोखे खयालात उस्के मन को छोड़ कहीं और ठौर तरोताज़गी को पासकें और इसी को हम मानसिक दृढ़ता कहेंगे जिस्का अर्थ अनोखापन भी कहा जायतो अनुचित नहीं है।

यहां तक हमने इस मानसिक दृढ़ता का एक लक्षण लिखा इस दृढ़ता को हम हठ न कहेंगे निस्सन्देह हठकी मज़बूती इसमे है पर एक तरह का अनोखापन जो इस दृढ़ता मे पाया जाता है इस्से हठ या दुराग्रह के दोष का सम्पर्क भी इस्से दूर हटा हुआ है—क्योंकि हठ का शब्द सुनने वाला किसी के बारे में तभी प्रयोग करता है जब उस्की मज़बूती का तो वह कायल

है पर बात उस्की अप्रिय और सदा अग्राह्य उसे मालूम होती है और ठीक यही दोनो शब्द हैं अप्रिय और अग्राह्य जिनको आप मानसिक दृढ़ता के साथ लगाही नहीं सकते क्योंकि यदि सुनने वाले को ग्राह्य अग्राह्य प्रिय अप्रिय ते करने को फुर्सत मिली तो बोलने वाले को मानसिक शक्ति की प्रशंसा में हम "दृढ़" का प्रयोग करेंहीं गे नहीं मानसिक दृढ़ता का मुख्य लक्षण या गुण यह है कि वक्ता सुनने वाले का मन अपनी मुट्ठी में करले।

इस दृढ़ मन का दूसरों के ऊपर क्या और कैसे असर होता है इसे हमने प्रगट कर दिखलाया अब पाठक जन इस्से यह न समझलें कि केवल अति दृढ़ मनवालोंही का असर दूसरे पर होता है यह हमारा तात्पर्य नहीं है पर यह एक साधारण नियम है कि जब कभी दो चित्त आपस में टकरखांयगे तो एक का दूसरे पर कुछ न कुछ असर होहीगा—इसी असर को भली या बुरी सोहबत का असर कहते हैं सोहबत का असर जरूर होता है इस्के रोकने की सामर्थ्य किसी को नहीं है-यह असंभव है कि एक चित्त अपना असर दूसरे पर न पैदा करे या वह दूसरा भी उस असर को अपने ऊपर न आने दे और यह एक ऐसी अनदेखी बात है जिस्का रोकना या उसे कुछ अदल बदल कर ग्रहण करना दोनो की सामर्थि के बाहर है-जब यह बात है तो दृढ़ मन वाले अपनी ऊंची समझ और ऊंचे खयलात से कमजोर और दुर्बल चित्त वालों को ऐसा बेकाबू कर डालेंगे जैसा बड़े से बड़े नशा का असर किसी को बेकाबू कर देता है इस लिये दुर्बल चित्त वाले का दृढ़ मन वाले के साथ सम्पर्क कभी उपकारी नहीं है--इस चुपचाप असर पैदा करने की शक्ति को हम केवल आदमियोंही में नहीं बरन जड़ पदार्थों में भी पाते हैं—काठ पत्थल के संगरह कर चिर काल के उपरान्त पत्थल हो जाता है अंगरेजी में जिसे फासिल कहते हैं—दोतरह के पत्थल या दो तरह की खान या दो तरह के वृक्ष जो आस पास होते हैं उनका भी बहुत कुछ असर एक का दूसरे पर होता है—हमने यह भी सुना है कि दो खान जो आस पास होती हैं उन्में जो खान बड़ी या तीव्र द्रव्य की खान थी छोटी और हल्के द्रव्य

वाली खान को ऐसा दबाया कि कुछ दिन के उपरान्त दोनो एक में मिल गईं और दोनो एकही द्रव्य की खान हो गईं–अब आप निश्चय कर सके हैं कि एक मन का असर दूसरे पर कितना होता है खास कर उन्में जब दोनो में एक अति दृढ़ और दूसरा दुर्बल मन है अत एव दृढ़मन यद्यपि उत्तम गुण है पर दूसरों पर उस्का असर इतना गुणकारी नही मालूम होता और इस दृढ़ मन के साथ सहानुभूति भी हो अर्थात् हर तरह के भले बुरे ऊंचे नीचे ज्ञानी अज्ञानी सबों के मन में प्रवेश करने की शक्ति भी हो तो दृढ़ मन मधुकर हो प्रत्येक मन का मधु निकाल २ लाभ उठाने की शक्ति बढ़ाताही जायगा और सत्य क्या वस्तु है इस्की पहचान में एकता होगा।

। अन्याय और अनीति की भरमार।

हमारे पुराण वाले रूपकालङ्कार के द्वारा इस पृथ्वी को गो रूप मानगये हैं जब बड़े २ अत्याचारी दुष्ट दानवों ने इस्का बहुत कुछ दलन किया यहां तक कि यह पृथ्वी अत्यन्त क्षीण शक्ति और क्षीण बीर्य हो गई तब महाराज पृथु ने अपने योग बल से इसे गौ बनाके दुहा और अपनी कन्या इसे माना और इस्का पृथ्वी नाम धरा--सारांश यह कि जब इस्पर असह्य अत्याचार होने लगते हैं तब यह गो रूप हो रुदन करती है इस कारण जो राजा इसे भोगे अर्थात् इस्पर अपना अधिकार रक्खे उस्का पहला काम यही है कि गो रक्षा करे—गौ का पृथ्वी के साथ अत्यन्त घनिष्ट सम्बन्ध है यही इस रूपकालङ्कार का तात्पर्य है अतएव गो रक्षा राजा के लिये सर्वथा न्याय और नीति संमत है जिस्का हमारे सामयिक राजा के शासन में एकान्ततः अभाव है बरन जैसी प्रचण्ड उद्दण्डता के साथ इस राज्य मे गोवध होता है कभी नहीं होता था हम नहीं कह सके ईश्वर कबतक इस महा बीभत्स अन्याय को देखता और सहता रहेगा—सर्कार थोड़ीसी किफायत के खयाल से इतना बड़ा अन्याय गांट बांधे है यह न किया जाय बल्कि इस्के लिये

एक पृथक टिक्कस हमपर लगा लियाजाय जिस्मे सर्कार को घाटा न हो हम लोग प्रसन्नता पूर्वक देने को सन्नह हैं—हजारों फजूल टिक्कस देतेही हैं सेर न लादा सवासेर सही—फौज मे जो मांस उठता है उस्के स्थान मे और २ पशुओं का मांस उठा करे तो हमारा कितना गो धन बच रहे और सैकड़ों गऊ जो प्रतिदिन चीण होती हैं उनकी रचा रहे घी दूध यावत् वस्तु सब सस्ती बिके और प्रजा का कितना कल्याण हो—इस देश की अधिकांश प्रजा निरामिष भोजन वाली है तब उनको भोजन मे पुष्टता और बल बढ़ाने वाले द्रव्य केवल घी दूध बच रहे हैं पहले घी दूध कितना सस्ता रहता था अब उस्की मंहगी से यहां के लोग चीण बल चीण सत्व चीण बुद्धि होते जाते हैं यह कौन नहीं जानता—पर सर्कार हमारी कोरी रचा तो चाहती नहीं गेहूं के साथ बथुआ भी चाहो भलेही सिंचजाव अपनी रचा के साथ खिलौने मे चाहो हमारी रचा भी हो जाव लचारी है पर कसदन ऐसा हुकम ऐसा कानून ऐसा नियम सर्कार बहुत कम जारी किया चाहती है जिस्से केवल हिन्दुस्तानियों को लाभ पहुंचे—और जब सर्कार खुद इस महा अन्याय के सौमन का बोझ सिर पर लादे है तब मुसल्मानो को किस मुंह से कहे कि आप हिन्दुओं के जी दुखाने को जो बकरीद की कुर्बानी प्रति वर्ष महा बीभत्स कर्म करते हैं उसे छोड़ दें—हम लोगों की यह पस्त हिम्मती मूर्खता और अज्ञानकारी है जो बार २ प्रार्थना करते हैं कि आप मुसल्मानों को इस दुष्कर्म से रोक दें सर्कार क्यों रोकने जाय हमी क्यों न पिनाक पाणि होकर इन दुष्टों को इस दुष्कर्म से रोकैं-यों कहिये हमारे में इतनी हिम्मत और साहस नहीं है।

सर्कार के पच में क्या यह महा अनीति नहीं है कि वह हिन्दुओं के धर्म शास्त्र और मुसल्मानों की शरह से भरपूर जान कार होकर भी (क्योंकि दोनो का तर्जुमा अंगरेजी में मौजूद है) तब क्यों नहीं इन दोनों के झगड़ों में यथार्थ न्याय कर देती जिस्से सदा के लिये निपटारा होजाय और दोनो के मुट भेड़ में रक्त की नदियां न बहा करें—सर्कार हम लोगों के लिये मा

बाप के तुल्य है एक मा बाप के दो पुत्र होते हैं एक सरल सीधा और सुचाल दूसरा क्रूर कुचाल और उत्पथगामी है तो जो कुचाल होता है मा बाप उसी को साम दाम दण्ड भेद से ताड़न या शासन द्वारा सुधारती है जिस्में उस्के क्रूर कर्म से सूधे पुत्र को क्लेश न पहुंचे प्रजा जिस्के माने पुत्र के हैं उस्के दो भाग हिन्दू और मुसल्मान मुसल्मान अतिशय क्रूर अत्याचारी और विशेष क्लेश दायी हैं हिन्दू इन की अपेक्षा परम राज भक्त सीधे और डरपोक हैं कितना ज़ोर जुलुम सहकर भी बदला लेना नहीं जानते फिर भी सर्कार की ओर से यही हर एक बात में दबाये भी जाते हैं और मुसल्मान इतना उत्पथ गामी होकर भी सब तरह पर सहाड़ा पाते जाते हैं क्या अच्छा न्याय है धिक ??? प्रसिद्ध है—"सीधी अंगुरी घी जम्यो क्यौंहु निकसत नाहिं—„ हिन्दू और मुसल्मान इन दोनो का झगड़ा सहज में ते होने वाला नहीं है जब तक कोई भारी उपद्रव न उठखड़ा होगा-सर्कार ईस्का कुछ खयाल नहीं करती बरन इस झगड़े की आग को बुझाने के बदले अपने कामों से घी छोड़ती जाती है—अपराधी को समुचित दण्ड और निरपराधी की सुनाई और भरपूर रक्षा हो तो क्यों हम गवर्नमेंट को दोष दें- जब देखते हैं साफ़ २ जीती मक्खी लील बैठी आदालत मे मुसल्मानो का अत्याचार और अन्याय अच्छी तरह साबित कर दिया गया फिर भी उनका कुछ तदारुक न हुआ और बेइल्जाम छोड़ दिये गये तब यह कहने का साहस होताही है कि अन्याय और अनीति की भरमार है।

। अनूठी उपमा ।

मनकी उपमा बेगसे—"मनोजवम्„ ।

स्वच्छता की—चित्तसे—"स्वच्छं सज्जन चित्तवत्„

मधुरता की—बालकों की तोतरी बोल से ।

हलकाई की—याचकसे—'लघुतरं दीनार्थिवत्„

नायिका के अङ्ग मार्दवको—मालती से—"अङ्गा नामक ठोरता यदि दृशत् प्रायेव सामालती ।

अधर को—सुधा से "सत्कबिरसना शूर्पी निस्तुषतर शब्द शालिपाकेन । तृप्तोदयिता धर मपिनाद्रियते का सुधादासी,, ।

मनुष्य के जीवन को—वृक्षके चिकने पत्ते पर स्थित जल बिन्दुसे "अमीषाँ प्राणानाँ तुलित बिसनी पत्र पयसाँ कृते किन्ना स्माकं विगलित विवेकै र्व्यवसितम्,, ।

मूर्ख के बुद्धिको—ऊषर पृथ्वी से । बेधने को—कान्ता के कटाक्ष से—"मुग्धाक्षी क्षण बीक्षितस्य नहिमेमंत्रो नवाप्यौषधम्,, ।

ईषत् हास्य को फूलों से—"स्मित पुष्पोज्वलं लोलनेत्र भृङ्ग मिदं सुखम्,, ।

अस्थिरता को—खलको प्रीति से—"दामिनि दमकन रह घन माहीं । खलकी प्रीति यथाथिर नाहीं ।

अङ्गार को—कुपूत से—"कुलाङ्गार—,, "जिमि कुपूत के उपजे कुलकर धर्म नसाहिं,, ।

उलझने मे आंख से—दृग उरझत टूटत कुटुंब जुरत चतुर सों प्रीति—पड़त गाँठ दुरजन हिये दई नई यह रीति ।

बुद्धि को—गहराई से—अगाध बुद्धि ।

खल को—भुजङ्ग से-अहो खल भुजङ्गस्य बिचित्रो यंवधक्रम: । अन्यस्य दशति श्रोत्र मन्य: प्राणै र्बियुज्यते ।

क्रूरता को-मृत्यु से- क:क्रौर्यं दर्पस्ते मृत्योस्त्वत्तुल्या: सन्तिहि स्त्रिय: ।

। सिबिल्ल सर्बिस कमिशन ।

यह किसे मालूम नहीं कि एक ओर "फैनेन्स कमिटी" खर्च कम करने वाली पंचायत इसलिये नियत की गई है कि सर्कारी खर्च कम करने का उपाय सोचा जाय—दूसरी ओर टैक्स पर टैक्स बढ़ताही जाता है कि जिस्मे अब भी खर्च सब संट जाय—ऋण इस देश के राज्य का कभी चुकनेही वाला नहीं बरन प्रतिदिन साबन भादों की नदियों के समान बढ़ रहा है—और यहां के ऋण की कौन कहे हमारे गुरूघंटाल अंगरेज़ लोग जो प्रत्येक बिषय में हमे सन्था देने को सन्नद्ध हैं अपनेही देश का ऋण नहीं चुकता करसके तो यहां हमारे लिये इनसे क्या बन पड़ने वाला है—जहां सब ओर से खर्च के कमी की पुकार मच रही है वहां कमिशन पर कमिशन बैठते जांय और अन्त में टांय टांय फिस हो जाय—हम नहीं समझ सके इस बिशेष कमिशन की क्या आवश्यकता थी क्या समाचार पत्रों के द्वारा लोगों की सम्मति नहीं ले सके थे सभा और कमेटियों से वैसेही नहीं पूछ सके थे—खैर जो यह आशा होती कि कमिशन में लोगों की गवाही साखी से जो ते होगा वह अवश्य किया जायगा तो उस्के भी कोई अच्छे आसार नहीं नज़र आते प्रधान २ नगरों मे बड़े आडम्बर के साथ कमिशन बैठा जहां २ यह कमिशन गया वहां की शिक्षित समाज मे दो चार दिन के लिये (Idle gossips) चुरट और हुक्कों के धुयें के साथ उड़ने वाला व्यर्थ की गप्प हो यह ज़िकिर फिर ऐसा शान्त भाव धारण कर लेगा कि कभी स्वप्न मे भी किसी को कमिशन की याद न आवेगी जो कुछ लिखापढ़ी हुई है वह किसी सर्कारी कार्यालय मे जाकर फेंक दी जायगी और उन कागज़ों को झींगुर और कीड़े कुछ दिनो तक अपने डिनर और सपर के काम मे लायेंगे—जिनके रुपये की बरबादी कर यह कमिशन हो रहा उन्हे इस्के भावार्थ से कुछ भी इत्तिला नही की जाती उचित है कि देश भाषा में तर्जुमा हो प्रत्येक दिन की काररवाइयां और लोगों की गवाहियां छाप दी जतीं जिस्मे सर्व साधारण इस्के गुण दोष को

समझते अथवा अंगरेज़ी ही मे छपकर प्रकाश कर दी जाती—पायोनियर अलबत्ता दस पांच सतरें नित्य रख देता है सो चुनकर वही बात जिस्मे हिन्दुस्तानियें के लिये कुछ बुराई है और अंगरेज़ों को उस्से लाभ है—हिन्दुस्तानी दीवानी या फौज़दारी अफ़िसरों की योग्यता की जो गवाहियां कमिशन मे लोगों की गुज़री हैं उनके कहने मे पायोनियर मूक और अवाक रहता है किन्तु हमारे विरुद्ध जो कुछ वहां कहा जाता है उस्को प्रकाश करने को अलबत्ता शेष शारदा बनता है—अब यदि इस कमिशन से निश्चय कुछ हमारी भलाई का इरादा है तो इतना जगडवाल न रच के चुने २ लोगों के पास जो २ बात इस्के सम्बन्ध में प्रष्टव्य रहीं एक विज्ञापन के द्वारा भेज दिई जातीं कि इन २ बातों पर बिचार होगा जिन्हे जो इस विषय में अपनी संमति प्रगट करना हो वे अपना मन्तव्य किसी नियत स्थान मे भेज दें—और जिन लोगों से सम्मति लेना अवश्य समझा जाता उनसे विशेष पत्र द्वारा संमति लेलीजाती—जब ये सब पत्र इकट्ठे हो जाते तब जिन लोगों से इस्का विचार और निर्धारण कराना मंजूर था उन्हे एक स्थान मे एकत्र कर सब काररवाई उनके सामने पेश कर दी जाती वे जैसा निश्चय कर देते वही स्थिर किया जाता—कमिशन के दर २ घूमने से जो बहुत कुछ अपव्यय हुआ सब बचजाता—पर बड़े लोगों के आगे हमारी गंवारू अकिल को कौन पूछता है हमको इस संबन्ध में जो वक्तव्य है कहते हैं सुनिये या न सुनिये आप को अधिकार है।

इन दिनो सिविल सर्विस दो प्रकार की है—एक वह जिस्मे बिलायत मे लोग परीक्षोत्तीर्ण हो यहां जज्ज कलट्टर आदि उच्च पद पर नियत होते हैं-दूसरी वह कि यहीं के प्रतिष्ठित और धनी पुरुषों से चुन २ कर इस्मे भरती किये जाते हैं ऐसें के लिये कोई परीक्षा नहीं है और इनका वेतन भी पहिली श्रेणी वालों से न्यून है—अब इन दोनो प्रकार के प्रबन्धों में जो गुण दोष हैं उन्हे भी दिखाना अवश्य है—अपने २ पक्ष के गुण और दूसरे पक्ष के दोष सबी कहते हैं परन्तु हमको यहां दोनो पक्ष के गुण और दोष

देखना चाहिये और दोनो का मध्यवर्त्ती जो मार्ग हाथ लगे जिस्से दोनो के दोष कम हो जांय और दोनो मे गुण आजांय वह मार्ग अवश्य ग्राह्य होगा।

पहली श्रेणी मे लोग यह दोष बतलाते हैं कि जाति भ्रष्ट होने को भय अथवा अपनेभाई बन्धु कुटुम्बी लोगों से छुट जाने की भय से यहां के लोग बहुधा बिलायत जाना स्वीकार नहीं करते तो इस देश के लोगों को उस्का होना न होना दोनो एकसा है--क्या हुआ जो दो एक पुरुष कभी बिलायत गये परन्तु देश भरका बल बुद्धि और गुण जो इस कार्य के लिये हितकारी हो सक्ता है उस्से कुछ काम नहीं सरता बाहर से लोगों को बड़ी २ तनखाहों पर बुलाना पड़ना है–दो चार एतद्देशीय जो इस श्रेणी मे आये भी हैं वे बेचारे तो अपनी ओर से बहुत कुछ प्रयत्न अपने देश बान्धवों के हित का करते हैं परन्तु इस्मे दो प्रकार की बाधा उपस्थित होती है–एक तो यह कि बिलायत मे रहने से यह लोग इतने बढ़ जाते हैं कि अपनी पुरानी बातों को बिल्कुल भूल जाते हैं इनके बिचार सब अंगरेज़ी हो जाते हैं इनको यह ध्यान नहीं रहता कि एतद्देशीय लोगों को क्या दशा है कैसे उनके आचार हैं क्या उनकी प्रकृति है किस वस्तु की उनको आवश्यकता है इत्यादि–और जो यहां के लोग हैं उनके लिये भी यह एक शोक का बिषय है कि वे इनको और इनके बिचारों को बिदेशीय अंगरेजोंही सा हौआ समझने लगते हैं न उनसे खुलके मिलते हैं न अपने मनका भेद उनसे खुलके कहते हैं बस सब बात गोल मालही मे रह जाती है।

दूसरी श्रेणी अर्थात् नेटिव सिबिल सर्विस मे लोग यह दोष लगाते हैं कि पहले तो ये लोग यथोचित योग्यता और गुण के अनुसार नियत नहीं होते जिनको अंगरेज़ ओहदे दारों ने अच्छा समझ कर नियत कर दिया वही होगये, ओहदे दार लोग गुण और योग्यता को क्यों देखने लगे— "विद्यानृपयुवती लता ये नलखैं कुल जात। जो जाके निकटै बसै ताही सों लिपटात„ जो लोग इनकी चारदासी के लिये इनके यहां आते जाते रहते हैं इनकी खुशामद में लगे रहते हैं—इनकी हांमें हां मिलाने मे नहीं चूकते

चालाकी की बातें बनाना और बोलना जानते हैं–बहुधा डालियां भेजते हैं–गाड़ी घोड़े सवारीके लिये देतेहैं-शिकार खेलाते हैं—उन्ही के लड़कों को ये ऐसे ऊंचे ओहदों पर नियत करना अपना परम धर्म समझते हैं—और वेही उनकी समझ में रईस और भलमनसाहत की नाक हैं—पर जो लोग सीधे सच्चे और सब तरह की योग्यता संपन्न हैं परन्तु खुशामद करना नहीं जानते झूठी चालांकी से दूर भागते हैं ऐसे लोग हमारे हाकिमो को नहीं भावते तब उनको ऐसे २ पद क्यों दिये जांय—बस इसका परिणाम यही होता है कि जोलोग नियत होते हैं वे न्याय अन्याय सत्य असत्य का दृढ़ बिचार नरख जिस बात में हाकिम लोग खुश रहैं वही उन्हे करना चाहो वह ठीक हो या नहो क्योंकि ये लोग तो आदिही से स्वार्थ वश थे इसी लिये हाकिमों को चार दासी को थी जिस्से इस दरजे को पहुंचे और अपना मतलब सधजाने पर भी इस खुशामद के पथसे बाहर पांव नहीं रक्खा चाहते कि कहीं ऐसा नहो कि हमारे ऊपर के हाकिम नाराज़ होजांय और आगे को तरक्की रुकजाय बस ऐसे लोगों का नहोनाही प्रजाके लिये हितकारी है इन से तो वे अंगरेज़ सिबिलियनही अच्छे कि वे स्वच्छन्द तो रहते हैं अन्याय करेंगे भी तो औद्धत्य में आय किसी की भयतो उन्हे नहीं हैं इसी लिये लोगोंकी यह राय भी है कि जब तक ऐसे लोग बिलायत नजांयगे तब तक वह स्वतंत्रता और निर्भयता उनको प्राप्त नहोगी जो इस उच्च पद वालों मे अवश्य होनीचाहिये—सैयद अहमद खां बहादुर तथा उनके चेलों ने अपनी गवाहियों में जो इस बात पर बड़ा जोर दिया है कि यह इमतिहान केवल बिलायत में हुआ करे सो यह केवल अपने फाइदे के खयाल से क्योंकि इन प्रान्तों के हिन्दू एक तो यों ही धर्म की हानि पुकार २ कान पर हाथ रख कोसों भागते हैं यदि यह निश्चय होगया कि यह इम तिहान केवल बिलायत में होगा तो मुसल्मान दो चार हर साल सिबिलियन होजाया करेंगे हिन्दू अभी दस वर्ष तक एक भी इस्में शरीक नहोंगे यह कहिये तो अलबत्ता मान लें कि क्या फाइदा जो इतना कष्ट सह करहजारों

रुपये का खर्च अपने ऊपर उठाय वर्षों के लिये जाति कुटुंब भाई बिरादर से अलग हो इंगलेंड से शीत प्रधान देशमें जा ठिठुरें-बहाना और बातों में फ़सला रखना तो जुदी बात है यदि सच्चे और शुद्धमन से हिन्दूस्तानियों को भी सिविल सर्विस का ओहदा देना सर्कार चाहती है तो यह इमतिहान यहां भी हुआ करे बिलायत की बिल्कुल कैद उठा दी जाय पर सवाल तथा परीक्षोत्तीर्ण होनेके लिये गुण यहां वाले और बिलायत वालों केलिये सब तरह पर एकसे रहैं हम नहीं चाहते कि इस बात में हम लोगों के साथ किसी तरह की रियायत की जाय—बिलायत में लाटिन और ग्रीक दूसरी भाषा रक्खी गई है यहां वालों के लिये अरबी संस्कृत रक्खी जाय गुण दोनो भाषा में बराबर के अन्दाज़कारहै न मुसल्मानो के लिये अरबी में रियायत की जाय न हिन्दूओं को संस्कृत में बल्कि जो जिस प्रान्त के लिये चुनाजाय उस्को उस प्रान्त की देश भाषा बंगाली गुजराती हिन्दी उर्दू आदि में भी पूर्ण अभिज्ञता प्राप्त करने का नियम करदिया जाय—उमर हिन्दूस्तानियों के लिये २५ वर्ष से कम होनी चाहिये क्योंकि हमारे लिये अंगरेजी भी जो इस इमतिहान में मुख्य है बिल्कुल विदेशी भाषा है-दूसरे बड़ा लाभ यह है कि हम लोग उस अर्से तकमें गदह पचीसी जो बड़ाही नाज़ुक बख्त होता है टांक जांयगे कई एक अंगरेज़ महाशयों ने इस बात पर विशेष ज़ोर अपनी गवाहियों में देरहे हैं कि हम ज़िला इनके सिपुर्द नहीं करसक्ते इस शंका के करने वाले पहले अपने गुन तो देखैं जैसा निडर हो न्याय अन्या के विचार को गढ़हे मे फेंक अपनी मन मानी बिलायत के छोकड़े सिविलियन के घमण्ड से फूल हमपर करते हैं वैसा करने की तो कदाचित् हम कभी भी साहस न करसकेंगे-फिर यह देश इंगलेंड के समान बीताभरका तो है नहीं किन्तु हिन्दुस्तान यूरूप के महाद्वीप से मुकाबिला कर रहा है यदि पंजाब के आदमी बंगाल में और बंगाल के सिंध में पश्चिमोत्तर के मंदराज में और मंदराज के गुजरात में कर दिये जांय तब किस बात की शंका रह गई—ये जो हमे अपने समान करना चाहैं तो कोई बड़ी बात

नहीं है यदि भांत २ के बहाने बाजी में हमें फुसलानाही इनका उद्देश्य है तो लाचारी है ।

अंगरेज़ लोग जो यहां आकर अपने को देवता समझने लगते हैं हिन्दुस्तानियों को हिन्दुस्तानीही समझ घिन करेंगे चाहो वे जन्म भर विलायत में रहे हों कोट पतलून पहन अपनी रहन सहन अंगरेज़ों की सी करलियाहो परन्तु अपने बराबर इन्हें कभी न समझेंगे–"खरे ईसा अगर बमक्का रवद चूंबि आयद हनोज़ खर बाशद „ इलबर्ट बिल के महा आन्दोलन ने इस बात को अच्छी तरह प्रत्यक्ष करदिया–और जब तक इस कानूनी दबाव से भी अंगरेज, ऊंचे और हिन्दुस्तानी नीचेही समझे जांयगे तब तक उनको कभी हिम्मत अंगरेजों की बराबरी की न होगी और न तब तक उन्में भरपूर स्वतंत्रता और निर्भयता आवेगी हां कानूनी जोर और भरोसा मिलने से चाहो विलायत जांय या न जांय हमलोगों में भी कुछ न कुछ हिम्मत आही जायगी क्या भया जो दासत्व के बोझ से दबे जाते हैं–हमारी हाल की कलत्ते की "कनग्रेस„ महासभा में सैकड़ों आदमी ऐसे देखे गये जिन्हों ने विलायत की हवा कभी नहीं खाई इन पर से यदि कानूनी दबाव की कैद उठाली जाय तो उन लोगों से जो यहां आकर अपने को देवता समझने लगते हैं उन से ये किस अंश में कम ठहरें—इस कारण विलायत जाने की कोई आश्यकता नहीं जान पड़ती उत्तम शिक्षा और कानून दानी की ताकत से वह स्वतंत्रता यहीं प्राप्त होसक्ती है—हां अलबत्ता इंगलेंड जाने से नई २ बातें मालूम होंगी नये २ लोगों से मिलैंगे तबियत खुलेगी तो इसके लिये इंगलेंडही क्यों यूरोप के किसी देश मे घूम आने से यह प्रयोजन निकल जायगा–सिविल सर्विस के लिये इंगलेंड गमन नितान्त आवश्यक करदेने से हमारी बड़ी हानि है–हां एक बात हो सक्ती है कि इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने के उपरान्त बर्ष दो बर्ष जो इंगलेंड मे भी जाकर रह आवें उनके लिये कोई खास इनाम मुकर्रर कर दिया जाय या पेन्शन के समय उनकी पूरी मुलाज़िमत मे जितने दिनों तक वे इंगलेंड मे रहैं वह भी जोड़ दिया जाय – फिर

८९

जब इनाम आदि नियत कर दिये जांयगे तब लोग आप से आप बिलायत जाया करेंगे आप हमे शुद्ध भाव से इस पद के देने का मन तो कीजिये— पहले इतना साहस तौ आप को हो कि हम संकीर्ण हृदय सिविलियनो के बहकाने से न बहकेंगे—केवल बातोंहो में बहुत दिन तक टाल चुके अब कुछ कर दिखाइये।

यह लम्बी तान गाते गाते फिर भी एक बात रही जाती है कि उनके लिये जो अभी टटके स्कूल से निकले हैं और जिनको संसार का कुछ भी अनुभव नहीं होने पाया उनके लिये तो बहुत से बिचार किये गये और वे लोग जो जुगान युग से सर्कारी नौकरी करते २ सब प्रकार का अनुभव प्राप्त किये हैं उनके वास्ते क्या कियागया-- हम कई एकों को बतला सक्ते हैं जो बहुधा इन सिवि-लियनो के गुरु रहे साहब जब जंट होकर आये थे तब डिपटी या तहसीलदार से बिना हिदायत पाये तिलभर जंट से बहकते फिरते थे पीछे जंट साहब कमिश्नर और लफटिनेंट बन बैठे डिपटी साहब डिपटी के डिपटी बने रहे दूसरे या औवल दरजे पर पहुंचने से ये डिपटी और सदर अमीनभी कलट्टर और जज होने के मुस्तहक क्यों नहीं किये जाते बल्कि स्टैटेलरी सिबिल सर्विस ऐसेही लोगों को दी जाया करे तो इस स्टेटुलरी को नापसन्द भी कोई न करे और काम भी बहुत अच्छा हो--साल भर में जितने सिविलियन प्रथम श्रेणी के हों उसका छठवा हिस्सा ये लोग किये जांय-पाठकजन इस अरोचक प्रस्ताव को अत्यन्त सामयिक समझ इतने देर तक हम आपको बिलमाये रहे आशा है आपलोग हमे क्षमा करेंगे।

तर्क चूर्णिका

सरयू प्रसाद मिश्र संपादित

बरवा

जागत जगत बिरंगवा रंगवा भाग ॥
प्रभुपद पदम परगवा रगवा लाग ॥ १ ॥

सवैया

मति मूढ़ मढ़ी इतैं गूढ़ गती उतैं वेदहुं लीन्ह नखेद लवेदा ॥
अरु आतुर चातुर होतु नहीं चतुराइ विना अतुराइते खेदा ॥
उर धारन धीर सधारनता असधारन त्यों निरधारन भेदा ॥
विन भेद गये किमि कीजिये हे परिहार परिग्रह योग विभेदा ॥ २ ॥

दोहा

पूरब सुकृत समूह ते । श्रीहरि कृपा कनेख ॥
सतसङ्गति लहि धीरधरि । पाइय बोध बिशेख ॥

बरवा

तुहि बिनु तनु भा पियरवा । परम पियरवा ॥
तनि धनि आउ नियरवा । जुड़उ जियरवा ॥४॥

श्लोक

चिरयङ्गादि फलसिद्धि निमित्त हेतो संसार सागर समुत्तरणैकसेतो ॥
जाने न केन सुकृतेन पदाम्बुजेते लोभाद् भ्रमद् भ्रमर विभ्रम भ्रमनोमे ॥५॥

"सब तर्क अति प्रतिष्ठित हैं," यदि यह सिद्धान्त है तो वह सिद्धान्त भी "तर्क" ही के द्वारा निरूपित हुआ है और जब लों तर्क आप सिद्ध नहीं हो तब लों वह सिद्धान्त के साधन में समर्थ नहीं हो सकता है, इस हेतु से अनुकूल तर्कों का आश्रय निर्दूषण है, निरुक्त में कहा है कि ऋषि लोग जो कि अतीन्द्रियदर्शी थे पृथ्वीतल को छोड़ चले तो उनके निकट मनुष्यों ने निवेदन किया कि आप लोगों के बिना हमें अतीन्द्रिय बातों का ज्ञान कैसे हो सकेगा तिसके उत्तर में ऋषियों ने कहा कि तुम्हारे समीप "तर्क" ऋषि रहैगा उसीसे अतीन्द्रिय बातों का ज्ञान तुम पा सकोगे वस्तुतः अनुकूल तर्क का समाश्रय उचित है यथा मनु जीने भी कहा है ॥

प्रत्यक्षं चानुमानं च शास्त्रं च विविधागमम् ।
त्रयं सुविदितं कार्यं धर्मशुद्धि मभीप्सता ॥

आर्षं धर्मोपदेशं च वेदशास्त्राऽविरोधिना।
यस्तर्केणानुसन्धत्ते सधर्मं वेदनेतरः इति॥

हिन्दी भाषा में तर्क का ग्रन्थ कदाचित् कोई हो, मैं प्रत्याशा करता हूं कि संस्कृत भाषा के तर्क शास्त्र से कुछ चुन २ के तर्कोपयोगी चूर्णिकाएँ हिन्दी में लिखूँ तो लोग उसके पठन पाठन का प्रचार करें॥

तर्क शास्त्र के लेख के नाम से लेखनी उठानी मेरे पक्ष में सचमुच महा साहस की बात है क्योंकि यह बिच्छी का मंत्र न जानना और सांप के बिल में हाथ डालना है तथापि अपनी साध के परवश हूं साधु जन सुधार लेंगे संख्याओं के निर्देश से चूर्णिका की संख्या समझिये॥

ग्रन्थारम्भ

(१) उद्देश, लक्षण, और परीक्षा ये तीन विषय तर्क वा न्याय शास्त्र के हैं।

(क) पदार्थ के नाम कथन को उद्देश कहते हैं, उदाहरण यथा "पृथ्वी" यों पृथ्वी पदार्थ का नाम कथन उद्देश हुआ॥

(ख) जाति वा विशेष के समनिष्ठ (असाधारण अर्थात् जो औरों में न पाया जावे) धर्म को लक्षण कहते हैं उदाहरण यथा पृथ्वीत्व जाति वा विशेष का समनिष्ठ (असाधारण) धर्म गन्ध, पृथ्वी का लक्षण है क्योंकि वह पृथ्वी को छोड़ के दूसरी किसी वस्तु में नहीं पाया जाता है; लक्षण का विशेष बरनन पश्चात् किया जावेगा॥

(ग) लक्ष्यपर लक्षण का निरूपण (पर्यालोचन) करना परीक्षा कहलाती है, उदाहरण यथा पृथ्वी के लक्षण गन्ध का निरूपण करना कि यथार्थ में पृथ्वी का लक्षण गन्ध सिद्ध होता है वा नहीं यही परीक्षा है॥

न्याय शास्त्र की उक्त तीन बातों से वस्तु का बिबेक होके निर्णय होता है उदाहरण यथा उद्दिष्ट पृथ्वी के लक्षण गन्ध की लक्ष्यपर परीक्षा करने से निर्णय हुआ कि गन्धवती वस्तु पृथ्वी है॥

निदान न्यायशास्त्रोक्त युक्तियों से आत्मा का अपरापर पदार्थों से विवेक

होके निर्णय होता है जिससे शरीर का गुण चैतन्य है ऐसा कहने वाले नास्तिक निरस्त होते हैं. ॥

(२) जिसपर जो रहता है उसका वह (रहनेवाला) धर्म; और जिसपर जो धर्म रहता है उस धर्म का वह (रखनेवाला) धर्मी कहलाता है. उदाहरण यथा (क) गन्ध पृथ्वी पर रहता है इसलिये वह पृथ्वी का धर्म है (ख) और गन्ध रूप धर्म पृथ्वी पर रहता है इसलिये पृथ्वी अपने धर्म अर्थात् गन्ध का धर्मी है, लक्षण के धर्मी को लक्ष्य कहते हैं. ॥

(३) एक धर्मी (आधार) पर जितने धर्म हों वे सब आपस में समानाधिकरण कहलाते हैं, उदाहरण यथा, जिस पर्वतपर जो अग्नि है उस अग्नि का धूम भी उस पर्वतपर है निदान उन (अग्नि और धूम अर्थात्) दोनो का आधार एक ही पर्वत है इसलिये अग्नि और धूम ये दोनो धर्म आपस में समानाधिकरण (अर्थात एक आधार वाले) कहलाये ॥

(४) भिन्न २ आधार पर रहने वाले धर्म आपस में व्यधिकरण कहलाते हैं, उदा० यथा हाथी में सूंड़ है और गो में गल कम्बल अर्थात् लोरी है, निदान सूंड़ और लोरीये आपस में व्यधिकरण (अर्थात् भिन्न २ आधार वाले) धर्म कहलाये क्योंकि उनके आधार भिन्न २ हैं ॥

(५) समान धर्म वाले धर्मी आपस में सधर्मा कहलाते हैं उदा० यथा जिन पशुओं का धर्म शृङ्ग सब में समान है वे सब पशु आपस में सधर्मा (अर्थात् समान धर्म धारण करनेहारे) धर्मी कहलाये,

(६) विरुद्ध धर्म वाले धर्मी आपसमें विधर्मा कहलाते हैं उदा०यथा, हाथीमें सूंड़ है, और गौमें लोरी है, जो आपसमें विरुद्ध धर्म हैं क्योंकि एक आधारपरदोनो नहीं पाये जाते हैं इस लिये उन विरुद्ध धर्मों के पृथक २ रखनेहारे गौ और हाथी आपस में विधर्मा (अर्थात् विरुद्ध धर्म धारण करने हारे) धर्मी कहलाये,

(७) जितने धर्म परस्पर समानाधिकरण होते हैं उनका "समानाधिकरण होना," जो यह धर्म है उसे सामानाधिकरण्य (धर्म) कहते हैं उदा० यथा

एक ही पर्वतपे अग्नि और धूम ये दोनो परस्पर समानाधिकरण धर्म हैं इस लिये उनमें आपस के विचार से सामानाधिकरण्य„ (अर्थात् समानाधिकरण होना) धर्म है,

(८) जितने धर्म परस्पर व्यधिकरण्य होते हैं उनका "व्यधिकरण होना„ जो यह धर्म है उसे वैयधिकरण (धर्म) कहते हैं उदा०यथा, हाथीकी सूंड़ और गौकी लोरो ये परस्पर व्यधिकरण धर्म हैं इस लिये उनमें आपसके विचार से "वैयधिकरण्य„ (अर्थात् व्यधिकरण होना) धर्म है,

(९) परस्पर सधर्माओंका "सधर्मा होना„ जो यह धर्म है उसे उनका साधर्म्य कहते हैं, उदाहरण यथा सींग जिन पशुओका समान धर्म है उन सधर्मा पशुओं का आपसके विचार से "साधर्म्य„ (अर्थात् सधर्मा होना) धर्म है,

(१०) परस्पर विधर्माओंका "विधर्मा होना„ जो यह धर्म है उसे उनका वैधर्म्य कहते हैं उदा०यथा हाथी और गौ ये सूंड़ और लोरी के कारण परस्पर विधर्मा हैं उनका आपसके विचार से "वैधर्म्य„ (अर्थात् विधर्मा होना) धर्म है,

(११) अनुमिति ज्ञानमें सपक्ष, और विपक्ष के विचार में सामानाधिकरण्य और वैयधिकरण्यका विचार विशेष उपयोगी होता है, और साधर्म्य और वैधर्म्यका ज्ञान ही पदार्थों के परीक्षा पूर्वक विवेक में सहायक होता है,

(१२) पदार्थका अर्थ है पदका अर्थ अर्थात् शब्दका वाच्य, यही पदार्थमात्रका लक्षण भी है जिसका कोई वाचक शब्द हो अथवा शब्द के द्वारा जिसका कथन करके बोध किया जाये वही पदार्थ है, वाचक शब्द रहित पदार्थ की कल्पना नहीं की जा सकती है, जिस पदार्थ का नाम हममेसे कोई नहीं जानता है उसका भी नाम सर्वज्ञ ईश्वर जानता ही है, अथवा हम ही कुछ नूतन नाम रखके उसे पदार्थ कहेंगे उदाहरण यथा "गौ„ लोरीवाला पदार्थ है क्योंकि "गौ„ शब्द का वह वाच्य अर्थ है, यह मासिक पुस्तक पदार्थ है क्योंकि इसका नाम "हिन्दी प्रदीप„ रक्खागया है, जोपदार्थ नहीं है उसका नाम भी नहीं है यथा मनुष्य को सींग आकाश का पुष्प और वन्ध्याका पुत्र इत्यादि पदार्थ नहीं हैं क्योंकि उनका कोई वाचक शब्द नहीं है, और न शब्द

के द्वारा उनका कथन करके बोध किया जा सकता है, मनुष्य शृङ्ग, आकाश, पुष्प, बन्ध्या, वा पुत्र ये पदार्थ हैं क्योंकि इनके वाचक शब्द हैं और शब्दके द्वारा कथन करके उनका बोध किया जा सकता है परन्तु मनुष्य सम्बन्धी शृङ्ग आकाश सम्बन्धी पुष्प वा वन्ध्या सम्बन्धी पुत्र कोई पदार्थ नहीं है क्योंकि न वे हैं, और न मनमें आते हैं अत एव उनके वाचक शब्द भी नहीं हैं,

(१३) (क) जिस पदार्थ का जो ज्ञान होता है उसे उस ज्ञान का विषय कहते हैं उदाहरण यथा गौ पदार्थ का ज्ञान होता है इसलिये वह गौ पदार्थ अपने ज्ञानका बिषयी कहलाया,

(ख) जिस बिषय का जो ज्ञान होता है उस ज्ञान को उस बिषयका बिषयी कहते हैं उदा० यथा गौ पदार्थ अपने ज्ञानका बिषय है इसलिये उसका ज्ञान उसका बिषय कहलाया,

(१४) (क) जिस इन्द्रियके द्वारा जिस पदार्थका ज्ञान होता है उस पदार्थको उस इन्द्रिय का विषय भी कहते हैं उदाहरण यथा "गौ पदार्थ" का ज्ञान नेत्रेन्द्रियसे होता है इस लिये नेत्रन्द्रियका बिषय गौ पदार्थ कहलाया,

(ख) जिस इन्द्रियके द्वारा जिस बिषयका ज्ञान होता है उस इन्द्रिय को उस बिषयका बिषयी कहते हैं उदा० यथा, नेत्र न्द्रियके द्वारा गौ पदार्थ का ज्ञान होता है इस लिये गौ पदार्थ अर्थात् नेत्रे न्द्रिय के बिषय का नेत्रे न्द्रिय बिषयी कहलाया,

(१५) पदार्थों के व्यवहार का मुख्य कारण ज्ञान है, यदि ज्ञान न होता तो पदार्थ रहके भी अपने आप व्यवहार में असमर्थ रहते परन्तु केवल ज्ञान बरन और दूसरा कोई पदार्थ न भी हो तौ भी ज्ञान आप ही अपना विषय और विषयी बनके व्यवहार का कारण कदाचित् कल्पित किया जा सकता, शेषआगे

। अकिल का अजीरण ।

सब के पहले यह अजीरन देव को है कि या तो अवर्षण हो और एक बूंद पानी के लिये भी लोग तरसैं परिणाम में ऐसा दुर्भिक्ष और मरी फैले कि

६५

हज़ारों प्रजा का वारा न्यारा होजाय—नहीं तो इस कदर पानी बरसे कि मारे पानी के सब खेती सड़जाय जिसखेत में मनो का बिगहा उपजता था वहां पंसेरियों की उपज में भी लाले पड़ैं झूरा पड़ैं तो कई वर्ष तक बराबर झरा ही झरा पानी बरसता है तो महीनों से बादल छाये हुये हैं कई बार ओले पड़चुके हैं मारे जाड़े के दांत किटा किट बोलरहे हैं पर उसका अजीरन पचता ही नहीं।

फिर अकिल का अजीरन इलाहाबाद के हिन्दुओं को है यह अच्छी तरह निश्चय होगया कि ज़िले के हाकिम सब तरह मुसल्मानो ही के पक्षपाती हैं फिर भी इनके ऊपर जो अत्याचार किया गया है उस्की दाद रसी उन्ही हाकिमो से चाहते हैं।

और यह अजीरन हमारे पण्डितों को है—यह खूब टटोल लिया गया कि सिद्धान्त कौमुदी की फक्किका फांक २ देशका देश मूर्ख बन बैठा फिर भी उस पुराने क्रम के पठन पाठन से मुह नहीं मोड़ते छाती फाड़ मेंहनत के साथ रट २ ग्रन्थ का ग्रन्थ कण्ठस्थकर डालते हैं पर अर्थ बोधसे कुछ सरोकार नहीं रहता तब समान्यतः सब शास्त्रों में अपहत बुद्धि और प्राग लभ्य जो पाण्डित्य का प्रधान लक्षण है उस्के लिये कौन झीखै।

अब आगी बढ़िये मरभुक्खी अंगरेज़ी सर्कार को इस्का महाअजीर्ण है—हजारों तरह के टैक्स सैकड़ों प्रकार के ड्यूटी नजानिये कितने भांतकी चुंगी उगाहते २ प्रजाका चूर ढीला होताजाता है उस्पर भी नितनया लइसेन्स निकलता आता है इस सबके रहते भी राजलेडी डफरिन फंड में चन्दा लिखो कल जुबिली की उगहनी में शरीक हो इत्यादि।

और अकिल का अजीरन पायोनियर को है जो कलकत्ते के अमीरअली के नशरीक होने से कानग्रेस को हिन्दू कानग्रेस कहकर गाचला—आगापीछ कुछ न सोचा कि हिन्दुस्तान भर के सब जाति और सब फिरके के लोग इस कानग्रेस (जातीय महा सभा) मे शामिल हैं अतएव यह आन्दोलन केवल हिन्दू ही जाति का किया नही हैं—पर भला पायोनियर कि अकिल के अजीरन को कौन रोके।

अन्तमे एक आधा छोटा उस अजीरन का हम पर भी आपड़ा है—सब समझते हैं कि हिन्दी की उन्नति की चेष्टा नितान्त मूर्खता है इस हत भागिनी को न कभी राजा आदर देगा न प्राजाके मनमें इस्का लालित्य उर्दू के मुकाबिले कभी चुभने वाला है फिर भी आगी पीछे का कुछ खयाल न रख इस्के नाम का सियापा हमरे वते ही जारहे हैं अपने कई एक सहयोगियों को भग्नोद्यम देख कर भी हमारा अजीरन नहीं पचता बरन बढताही जाता है।

। पुस्तक प्राप्ति ।

। साहित्य सङ्ग्रह ।

बाबू बीरेश्वर चक्रबर्ती एसिस्टेंट इनस्पेक्टर स्कूल छोटा नागपूर कृत—यह संग्रह प्राचीन और आधुनिक भाषा के उत्तमोत्तम अनेक गद्य पद्य लेखों से चुनचुन कर संग्रह किया गया है। प्रारंभ में बीरेश्वर बाबू ने जो अंगरेजी में भूमिका लिखी है वह बहुत ही सयुक्तिक है और इसमे एक प्रकार का हिन्दी भाषा का इतिहास है जिसके पढ़ने से साफ मालूम होता है कि हिन्दी कितनी प्राचीन और सार्वत्रिक भाषा है पहले इसकी क्या दशा थी बीच में क्या होगई और अब यह किस क्रम पर है—मिडिल क्लास वालों के लिये यह संग्रह बड़ा उपकारी है यहां के स्कूलों मे भी हंटर हिस्टरी सी नष्ट पुस्तक तथा हजार वर्ष का पुराना जर्जरित गुटका उठाकर यह रखदियाजाय तो विद्यार्थियों को बड़ा लाभ पहुचे मूल्य १) बिहारबन्धु प्रेस बांकीपूर मे छपी है ।

। चलन कलन ।

बाराणसी संस्कृत कालेज के पुस्तकालयाध्यक्ष पं॰ सुधाकर द्विवेदी रचित—हमउक्त ग्रन्थकारकी ऐसी अद्भुत रचना को अनेक धन्यवाद देते हैं क्योंकि बीजगणित और रेखागणित की अनेक पुस्तकें लोगों ने रचडाली हैं पर गणित के इस भाग पर कुछ लिखने का किसी का साहस न हो सका बरन इस न्यूनता की पूर्ति करना इन्ही का काम था—हमको विशेष हर्ष इस बात का है कि प्राचीनों मे गणित के परमाचार्य एक बापूदेवशास्त्री रहे नवीनों मे पं॰ सुधाकर भी इन्ही के टक्कर के निकले-यह ग्रन्थ बनारस मेडिकल हालप्रेस मे छापा गया है ॥

हिन्दीप्रदीप ।

मासिक पत्र ।

बिद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंदभरै ॥
बचिदुसह दुरजन बायुसों मणि दीप समथिर नहिंटरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

१ जनवरी सन् १८८७ | जिल्द १० संख्या ५

इलाहाबाद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
मनेजर बाबू नीलमनी सरकार ने देशोपकारक यंत्रालय
में प्रकाशित किया

मूल्य अग्रिम ३।≤) पीछे देने से ४।≤)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १॥≤)

५७

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द १०	१ जनवरी
संख्या ५	सन् १८८७ ई०

। जातियों का अनूठा पन ।

(National charecter)

मनुष्य व्यक्ति के चरित्र का बिचार कई एक रीति से हो सक्ता है और जिस रीति पर आरूढ़ हो इस्की मीमांसा कीजिये उस ढंग के वैसे बिचार होंगे चाहो मनुष्य के धर्म अथवा सच्चरित्र सम्बन्धी गुणो का बिचार कीजिये या चाहो इसी के निकट का कोई प्रश्न उठाकर उस्पर कुछ शंका समाधान कीजिये अर्थात् सच्चरित्र से सामाजिक क्यालाभ है इन सब बतों के बिचार से हमको इस लेख में कुछ प्रयोजन नही है किन्तु हमको यहां उस मुख्य बात से प्रयोजन है जो इस प्रकार की मीमांसा के भी पूर्व बिचार मे आनी चाहिये और वह यह बात है कि जातियों का अनूठापन उस देश के इतिहास का फल है ।

जब हम किसी एक जाति पर ध्यान देते हैं तो निश्चय उस जाति के आचरणो से कुछ ऐसी बातें लक्षित होती हैं जो खास उसी जाति में पाई जांयगी और वे बातें ऐसी न होगी जो मनुष्य मात्र मे साधारण रीति पर पाइजांय क्योंकि न तो कोई जाति इतनी भली है कि उस्मे कोई बुरे होंही गे नहीं न देश का देश इतना बुरा हो सक्ता है कि उस जाति में एक भी भला न हो इस लिये उन बातों को खोजना चाहिये जो किसी जाति का एक

विशेष धर्म है और इसकी मीमांसा हम दार्शनिक रीति पर करते हैं अर्थात् जब कार्य समझ में नहीं आता तब यह चिन्ता मन मे होती है कि इसका कारण ढूढ़ें और इस संबन्ध मे कारण की खोज करने पर उस जाति या देश के पूर्व इतिहास से बढ़कर और क्या सहारा हो सकता है—अब पहले इस बात का ज्ञान स्पष्ट रीति पर होना चाहिये कि किसी एक काल मे जो हम किसी जाति का कुछ अनूठापन पाते हैं वह निरा आकस्मिक नहीं है क्योंकि यदि आकस्मिक मान लिया जाय तो बस विचार का अन्त होगया और कारण का समझना तो दूर रहा तज्जनित जो कार्य है वह भी स्पष्ट रीति से मनमे न आवेगा सुतराम् ऐसी बातों का कोई आकस्मिक परिणाम भी हो सकता है यह कदापि न मानना चाहिये—इस्से बस निश्चित हुआ कि जातियों का अनूठा पन तैयार करने मे थोड़े से प्रधान कारक की अत्यन्त आवश्यकता है तो अब खोज इसी बात की है कि किसी विशेष जाति में किसी विशेष प्रकार का अनूठापन आजाने के लिये वे कारक क्या हैं और उनका क्या और कैसे असर होता है ।

ऊपर हम ने "किसी एक काल में„ ऐसे वाक्य का प्रयोग किया है अब यह प्रश्न उठ सकता है कि अन्त को इस रीति पर ते करने की अवधि क्या और कैसे होगी काल तो इतिहास की सुगमता के लिये सर्वथा एक कल्पित पदार्थ है किसी एक काल मे कोई जाति का कुछ अनूठापन उस प्रकार का क्यों है यदि इसका लगाव आप उसी काल के पूर्व के इतिहास से रखते हैं तो उस पूर्व काल के इतिहास का दूसरे पूर्व काल के इतिहास से रखना पड़ेगा और इसी तरह यह शृङ्खला कभी टूटे हो गी नहीं इसलिये इस अनवस्था दोष का निराकरण होहीगा नहीं जब तक कहीं एक स्थल पर ठहर और इसी शृङ्खला में कहीं खंड कल्पित कर अपने प्रयोजनीय विषय के विचार पर आरूढ़ न हो जांयगे अर्थात् किसी जाति के इतिहास में कोई खास वक्त से विचार चलावैं और इस उत्तम रीति को जब हम अपने मतलब पर लगाते हैं तो यह देखते हैं कि जब हमारा प्रश्न ही मनुष्य व्यक्ति के जाति

का अनूठापन नितान्त ऐतिहासिक है तो इस लिये जहां इतिहास हमको सहाड़ा न देगा वहां निश्चय हमको ठहर जाना पड़ेगा या इसी बात को और स्पष्ट तर रीति पर यों कह सक्ते हैं कि किसी एक जाति को जबसे हम इतिहास में देखते हैं तब से हम उस्मे वही बिभेदक गुण पाते हैं जो मानो उसी जाति का लक्षण है—ऐसी बातों पर ध्यान देने से यह समझ मे आता है कि किसी जाति के चरित्र के सम्बन्ध मे अनूठापन का बीज कोई वस्तु है अर्थात् वेदोचार बातें जो किसी जाति के बिगड़ी या बनी दशा मे आदि से पाई जाती हैं उन्हे आप एक जाति से दूसरी जाति को भिन्न रखने का बीजक कहैं तो अनुचित न होगा और उस देश के उपरान्त के इतिहास का असर इसी बीज को पुष्ट करने मे देखा जाता है—अथवा ज्यों २ वह जाति उन्नति करती जाय कालान्तर मे यही बात विविध पुष्ट रूपों मे देखी जायगी और कुछ काल के उपरान्त प्राकृतिक और ऐतिहासिक कारणों से जब इन्हीं बीज गुणों मे एक प्रकार की पुष्टि आगई और वह जाति बराबर बराबर उन्नति करती गई तो उसी प्रकार की और पुष्टि दिखाई देगी—पर यह भी देखा जाता है कि किसी संयोग से ऐसी विपरीत ऐतिहासिक घटनायें हुई हैं जिनसे उन्नति के बदले उस जाति मे अवनति और ह्रास की सूरत बंधी तो स्पष्ट है कि उस जाति के गुणों मे भी अवनति और हानि की शकल देखाई दे और तब से वहां वह जाति अपने उत्कर्ष से ढल जायगी और अच्छी बातों का होना उसमे बन्द हो जायगा।

यहां तक हमने सामान्य रीति पर जातीय उन्नति और अवनति के नियम कहे पर खूबी इन नियमों की किसी एक मुख्य जाति पर लगाने से और उनका पूरा २ असर उस जाति पर दिखलाने में है—हम समझते हैं सब से उत्तम उदाहरण हमको अपनीही जाति पर लगाने के अतिरिक्त और कहां मिलेगा—बहुत आदि काल से आरंभ कर हम जब से इस जाति को लक्ष्य करते हैं तो उस बिभेदक गुण का बीज पाते हैं और इसका नाम मननशीलता रक्खेंगे यद्यपि संसार में बहुत से मज़हब

हैं जिन्में बड़ा २ उत्कर्ष किया गया है पर "मुनि„ और "आश्रम„ के जोड़ की कोई बात हम संसार के किसी मज़हब में नहीं पाते यह बीज गुण जो हमारी जातिको औरोंसे अलग करता है क्यों ऐसा है इस्का उत्तर चाहो हम न देसकें पर यह तो अवश्य कहेंगे कि जब से इतिहास वा लेश भी इस जातिमें पाया जाता है तभी से प्राकृतिक कारणों ने इस मननशीलता की जड़ डाल रक्खा था—इन प्राकृतिक कारणो से हमारा प्रयोजन यहां के ऊंचे २ पहाड़ों बड़े लंबे चौड़े मैदानो से है अथवा आब हवा जो अफ्रिका देश के समान न अत्यन्त उष्ण या तो न लापलैंड सरीखे शीत प्रधान देशके सदृश अत्यन्त शीतल वर्ष मे बराबर से छ ऋतु का होना पैदावारी भी थोडी मेहनत में बहुत सा पैदा होना इत्यादि से है—और येही सब प्राकृतिक गुण ऐसे हैं जिन्से इस जाति के अनूठेपन (National charecter) का बीज बोया गया है—इसी मननशीलता के कारण हम देखते हैं कि केवल मनन करने के जो विषय हैं उन्में यह जाति इतना उत्कर्ष प्राप्त किये है कि जिस्के जोड़ का गुण संसार भर की किसी जाति मे नहीं देखाजाता और यही कारण है कि हम लोगों के यहां धर्म बहुत जल्द और बहुत अधिक चमका जब और २ जाति असभ्यता के अन्धकार में पड़ी टटोल रहीथीं हमारे यहां ऐसे २ सूक्ष्मानुसूक्ष्म सिद्धान्त निकाले गए जिस्की बारीकियां योरोपकी समझमें अब आने लगी हैं—पर जहां इस मनन शीलता में सब गुण हैं वहां बहुत से अवगुण भी इस्से पैदाहुये—इम सूक्ष्मानुसन्धाके पीछे दौड़ने से बहुत सी महोपकारी पदार्थ विद्या सम्बन्धी स्थूलबातें रहगईं—इसी मनन शीलता के कारण अकर्मण्यता इनकी नस २ में घुसगई और कितने प्रकार के विज्ञान और "साएन्स„ जिन्मे भरपूर उद्यम और प्रागल्भ्य (Activity)का काम पड़ता है उन्हें शान्ति महकोगिनी इनकी मनन शीलता ने होने ही न दिया—धर्म सम्बंधी उत्कर्षता निस्सन्देह अति उत्तम है किन्तु इस्के साथही यह भी हुआ कि इस धर्म की उत्कर्षता और पारलौकिक चिन्तन ने समाज और देशके हितकी स्थूल बातों को इतना दबा दिया और

उन सब हितकारी उपायों के स्थान में ऐसी टांग अड़ाया कि उनका लेश भी न आने पाया—"मोरालिटी„ जिसके लिये कोई उचित शब्द हमारी भाषा में मिलताही नहीं बिल्कुल मज़हब होगई मज़हब से कुछ सरोकार नरख स्वच्छन्द मोरालिटी की बुनियाद पाना असंभव सा होगया वैद्यकमें मज़हब बा घुसा ज्योतिष में मज़हब जा पैठा नीतिशास्त्र उसी मजहब का एक अङ्गही है—यूरोपकीसी स्वच्छन्द पालिटिक्स क्याहै सो हम जानतेही नहीं इसकातो मानो बीजही मारा पड़ा कामन्दक और चाणक्य का नीति शास्त्र अथवा मनु और महाभारत में जो राज धर्म लिखागया है वह सब उससे बिल्कुल निराला है जिसे हम पालिटिक्स के द्वारा यूरोप के क्रम पर स्वतंत्र रखा "इण्डिविडुअल रइट„ और "प्रिविलेज„ की बुनियाद कहेंगे यहां तक कि इन बातों का ध्यान भी कभी उनको न हुआ—एक मनुष्य या जाति केवल एक तरफ तरक्की कर सक्तीहै जिन बातों को आप अच्छा समझते हैं और जो आपके अइडियल्स हैं उन्ही से अपके जीवन के सब काम नियमित होंगे इस लिये इसमें कुछ आश्चर्य की बात नहीं है कि पारलौकिक बातों के अनुसन्धान में लगे हुये हमारे पूर्वजों का चित्त क्षणभर के वास्ते भी राजनैतिक तत्वों की ओर न झुकाहो—अब इसी के तारतम्य में अंगरेज़ों की दशा पर ध्यान दीजियेतो यह बात देखी जाती है कि जैसा हमारे यहां धर्म और मज़हब नस २ में घुसा है वैसाही आदिही से अंगरेजों का बीज विभेदक गुण हम स्वच्छन्दता पाते हैं—यही कारण है कि बहुत जल्द उनका इतिहास राजनैतिक स्वच्छन्दता की लड़ाइयों के लिये प्रसिद्ध होगया जो लड़ाइयां किसी शकल में वे बराबर चलतेही गये जब तक उन्हो ने मनमानी राजनैतिक स्वच्छन्दता नपालिया—इसी स्वच्छन्दता की इच्छा को यदि हम बीज मानलें तो अंगरेजों का इतिहास समझने में हम को केवल सुगमता ही नहोगी वरन एक २ कल पुरज़ा इस इतिहास का हम को स्पष्ट होजायगा—जिस समय से कि इंगलेंड के साक्सन लोग वहशियों के तरह रहते थे उसी समय से इम स्वच्छन्दता की इच्छा को हम इस अंगरेज़ जातिमें पाते हैं और उसीका परिणाम उनकी राजनैतिक स्वच्छन्दता और उत्कर्ष है।

चाहो धर्म सम्बन्धी आदि एकता से आप और २ तरहका लाभ माने पर देशकी उन्नति और वास्तविक भलाई करने का द्वार हम राजनैतिक एकताही को मानेंगे—जब तक कोई जाति एक राजनैतिक समूह न होगी जिसका एक ही राजनैतिक उद्देश्य है और जिस जातिके लोग एकही राजनैतिक ख़याल से प्रोत्साहित नहीं हैं तब तक आप उस जाति की संपति और वृद्धि की बुनियाद किस चीज़ पर कायम रक्खेंगे? हम देखते हैं अंगरेजों के इतिहास में बहुत जल्द राजनैतिक एक जातित्व आगया जिस्के कारण उनकी जाति की उन्नति चरम सीमाको पहुंचने लगी और उसी के विपरीत हम देखते हैं कि राजनैतिक बन्धन न होने से बहुत जल्द हमारी जाति तीन तेरह होगई—मनुष्यों के सम्बन्ध में "प्रारब्ध„ कुछ है ऐसा आप मानते हैं परन्तु जाति के सम्बन्ध में तो आप को यह अवश्य मानना पड़ेगा कि अपना इतिहास कोई जाति आप स्वयं बनालेती है—हम ऊपर कह आये हैं कि अंगरेजों में राजनैतिक एकता के कारण उनके देश की वास्तविक उन्नति हुई उसी के विपरीत राजनैतिक एकता न होने से हमारा ह्रास हुआ और आगे चलकर इसका यह परिणाम हुआ कि अंगरेज़ जातिने अपना इतिहास अपने अनुकूल कर लिया वही हमारे जाति का इतिहास झक मार के हमारे प्रतिकूल होगया और आपस की फूट से बची खुसी जो कुछ ताकत रह भी गई थी उसे विदेशीय जेताओं ने आकर चूर २ कर डाला इसी कारण यह बात यहीं देखी गई कि वह देश जहां की सम्पत्ति इतनी अधिक थी जिसे लूट २ और २ मुल्क वाले धन गये और धनते जाते हैं सदा विदेशीय जेताओं का शिकार बना उनके पंजे में पड़ा रहा और कभी अपनी दशा को सोचा तक नहीं तब उस्से निवृत्त होने की सामर्थ्य पाना तो बड़ी दूर रहा—जहाज चलाने की विद्या में तरक्की करना और जहाजों मे चढ़कर अपने देश का वाणिज्य दूसरे दूर देश मे ले जाना और वहां का अपने देश मे लाना इत्यादि बातों मे उद्यम और प्रागल्भ्य Activity की दरकार थी इस लिये ये बातें हमारे यहां सपने की सी होगईं—दूसरे एक यह कारण भी है कि जब पेटभर खाने को होगा तो

सब ओर ख़यालता दौड़ेंगे —इसी कारण अंगरेजों के इतिहास मे हम बराबर देखते हैं कि किसी समय अंगरेज़ों ने किसी का कोई खयाल मंगनी मांग अपनी उन्नति नहीं किया जैसा हम उनसे उन्नति करने वाले खयालात मागने को ललचा रहे हैं बरन उनके इतिहास में एक से एक बढ़कर नवीन सोचने वाले हरएक काल में होते गये हैं-हिन्दू और अंगरेज़ इन दो जातियों का पूरा इतिहास दर्साना इस लेख मे हमारा उद्देश्य नही है पर बीज बिभेदक गुणों की पुष्टि हम समझते हैं कि हम अच्छी तरह दिखा चुके और यह भी दिखला चुके कि प्रत्येक जाति किस तरह अपने अनुकूल या प्रतिकूल अपना इतिहास बनाकर उन्नति अथवा अवनति करती है—

इस सब लेख का सारांश हम यों कह सक्ते हैं कि यदि भारत का उद्धार अब किसी तरह हो सक्ता है तो शान्ति सम्पादक अकर्मण्यता वाले गुणों से नहीं जिन्के लिये हम अब तक प्रसिद्ध थे और जिसने हमको इस दशा तक गिरादिया बरन अंगरेज़ जाति के साथ टक्कर खाने से और उनसे Activity प्रगल्भता सम्पादक उद्यम शीलता वाले गुणों के सीखने से--हम आशा करते हैं हमारे पाठकवृन्द इस लेख से जातियों मे अनूठापन क्या है भरपूर समझ गये होंगे और यह लेख किंचत् क्लिष्ट हो जाने के लिये हमारा अपमान न करेंगे।

। माघमेला और कल्पवास।

यह माघ मेला और कल्पवास इस तीर्थराज प्रयाग में बहुत दिनो से चला आता है पुराणो से प्रगट है कि जिस समय यह पवित्र स्थान स्थापित हुआ उस समय इस क्षेत्र की महिमा अत्यन्त बढ़ी हुई थी सिवा भारत खण्ड के और २ द्वीप द्वीपान्तरों के लोग यहां एकत्र होते थे—प्रयाग माहात्म्य से स्पष्ट है कि जितने पहाड़ी इलाके हैं वहां के बड़े २ महानुभाव और कैलास के अपूर्व दिव्य पुरुष इस प्रयाग भूमि में वास करते थे और चारो दिशा के उत्तम २ प्राणी जिनका नाम देव यक्ष किन्नर गन्धर्व था सब यहां

बास करती थे तचक बंशी और नाग बंशी यहां बहुत सातीर्थ और उन लोगों ने इस तीर्थ के स्थापन करने में बहुत कुछ सहायता और प्रयत्न कियाथा-इन तीर्थ के मुख्य संस्थापक कोई पाये जाते हैं यातो हिमालय श्रेणी के महर्षि लोग दूसरे पाताल वासी तचक या नाग वंशी जिनका चिन्ह अब तक वासुकेश्वर या नाग वासू और तचकेश्वर शतनागेश्वर या कुतनगा के नाम से प्रसिद्ध है—यदि पाताल शब्द का अर्थ कुआ इंदारा खोह दरी कन्दरा का नलगावें तो पाताल लोक अमरिका या तत्समीप वर्ती देश ठहर सक्ते हैं—पाताल लोक वही कहा जासक्ता है जो यहां की धरती के बहुत नीचे है—मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत देवी माहात्म्य से ज्ञात होता है कि पूर्व काल में पाताल वासियों का राज्य भारत वर्ष के उत्तम २ स्थानो में बड़ी दृढ़ता के साथ होगया था उसी कथा से यह बात भीजानी जाती है कि उन राजाओं ने यहां के देवताओं और सत्पुरुषों के साथ बहुत कुछ अन्याय किया अन्त को पहाड़ी प्रान्त के देवी गणोंने उन्हे युद्ध में परास्त किया—उक्त लड़ाई होने के प्रथम महाकालीजीने शुंभनामक पाताल के राजा के दूत से यह संदेशा कहला भेजाथा—"यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितु मिच्छथ„—तुम सब लोग पाताल को चलेजाओ यदि जिन्दगी चाहते हो—खैर उस राजाने नहीं माना अन्तको बड़ी लड़ाई हुई और बहुत से दैत्यगण मारे गये और जो बचे वे पाताल को चले गये क्योंकि उसी देवी माहात्म्य में लिखा है "शेषाः पाताल माययुः„ इस वाक्य का यह अर्थ होही नहीं सक्ता कि कुआ खोद नीचे घुसगये बरन जहां कहीं पाताल लोकथा वहां चलेगये—उसी पाताल लोकका वर्णन प्रयाग माहात्म्य में भी लिखा है कि पाताल वासी गण बड़ी धूम धाम से आये और भक्ति श्रद्धा पूर्वक यहां बास किया—मत्स्य पुराणान्तर्गत प्रयाग माहात्म्य में लिखा है कि कोई देश नदी या पर्वत अथवा बन ऐसानथा जहां के उत्तम २ लोग यहां न रहे हों कई कोसतक प्रयाग मण्डल ठहराया गया था जिसमें अबतक तीर्थ सूचक चिन्ह बने हुये हैं और बहुत से स्थान अधिक समय बीतने और राज बिराजी होने के कारण नष्ट भ्रष्ट हो गये के-

वल अन्तर्वेदी के कुछ स्थान बाकी हैं उन्मे सब से मुख्य और प्रधान स्थल गंगा यमुना का सङ्गम है जो अब तक यथातथ्य बना हुआ है जिस्के किनारे छावनी के द्वारा यत्किंचत् अब भी कल्पबास होता है और नाममात्र को थोड़ासा बाज़ार भी बस जाता है इस कल्पबास की छावनी और बाज़ार की दशा दिन प्रतिदिन ठीक ऐसीही होती जाती है जैसा कृष्णपक्ष के चन्द्रमा की कला दिन दिन घटती जाती है—कथा पुराण की बात तो अदृष्ट है जो लोग ४० वर्ष से देखते आते हैं वे अपनी आंख की देखी कह सक्ते हैं कि पहले से अब शत गुना अन्तर हो गया है इसी बाज़ार की कई श्रेणियां बनती थीं और बड़े नामी शहरों और मुकामों से व्यौपारी माल लाते थे कितने हाथी घोड़ों के सौदागर और कितने तम्बू किनातों की दूकाने आती थीं—लोग कहते हैं उस समय धरती आदि का महसूल बहुत कम था पहले एक रुपया हाथ से अधिक महसूल न था और अब सात रुपये हांथ से भी अधिक पड़ता है उस समय यात्रियों की बड़ी भीड़ होती थी माल बहुत बिकता था—उस समय के हाकिमों की प्रयोजन मात्र लेना मंजूर था कफन खसोटू बन कमाई करनी मंजूर न थी—बड़े २ पण्डित विद्वान् देश देशान्तरों से कल्पबास करने को आते थे और इसी प्रसंग से महीने भर सत्संग के द्वारा बहुत सी बातों का निर्णय और देश तथा जाति की भलाई का अनेक प्रयत्न सोचते थे—सरयूपारी ब्राह्मणों मे एक प्रभुनाथ तिवारी बड़े प्रसिद्ध वैयाकरण हुये हैं उनकी प्रतिष्ठा और सन्मान रीवां के महाराज बिश्वनाथ सिंह के दरबार मे बहुत कुछ था सो एक समय उक्त पण्डित जीने यहां कल्पबास किया था और उन्ही के सत्संग के कारण और भी कितने प्रतिष्ठित सरयूपारी बिद्वान् नित्य अनेक शास्त्रीय विचार बराबर महीने भर करते रहे और अब उस प्रकार के कल्पबासी विद्वान् कदाचित् एक दो भी ढूढने से न मिलैंगे—प्रथम तो संस्कृत विद्या का मार्तण्ड अस्ताचल के समीप आगया है दूसरे जो कोई विद्वान हैं भी सो वृत्ति हीन होने के कारण ऐसी सामर्थ्य नहीं रखते कि डेढ़ सौ बीघा के हिसाब से महसूल देकर विद्यार्थियों समेत ठहर

सकैं-यह तो कहिये विरक्त वैष्णव वैरागी भजन भाव और घंटा शंख आदि की ध्वनि से फिर भी तीर्थ की महिमा कुछ न कुछ बनाये हुये हैं—रहे प्रयागवाले सो उनकी भी महिमा अब वैसी न रही पहले अपने तख्त पर बादशाह के समान बैठे पुजाते थे अब गली २ यजमान बटोरते फिरतेहैं तौभी पेट नहीं भरता या सन्तोष नहीं आता केवल पैसे की फिक्रमें चूरचूर रहतेहैं-रहा विद्याधर्म की वृद्धिका उपाय सो यह इन प्रयागवाले पण्डों को आता ही नहीं ये मानो केवल दानही लेने को स्थापित किये गये हैं—इसमे सन्देह नहीं इलाहाबाद में प्रयाग वालों सेबढ़ कर कोई हिन्दू तेजस्वी नहीं है यदि इन्मे विद्या गुण की अरुचि नहोती तो येलोग बहुत कुछ कर सक्ते थे जो ये लोग अपनी जीविका चमत्कार कियाचाहैं और दूसरे प्रान्त के मेलों की भांत यहां के हाकिम गण भी व्यापार को बढ़ाया चाहैं और लोगों के आराम और सुबीते की युक्ति निकाली जाय तो फिर भी यह मेला चमक सक्ता है—खैर जो कुछहो यह बात हमारी सामर्थ्य के बाहर है परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद है कि पारसाल से सर्कारी प्रवन्ध बहुत अच्छा है मत द्रोही दुराचारी लोग मेले वालों को तंग करते थे उनका आधिपत्य तथा प्रवेश मेले मे नहीं किया जाता जितने अफसर तथा सिपाही मेलेके प्रवन्धकर्ता होतेहैं सब हिन्दूही नियत किये जातेहैं जो बड़े तड़के स्नान पूजन से निश्चिन्त हो अपनी २ नौकरी पर डटजाते हैं औरठीक २ कामकरते हैं उन्हे दोहरा डरहै प्रथम तो सर्कार का दूसरे अपने धर्म का—कोई २ कहते हैं बिनसन साहब ने यह प्रवन्ध सुझाया है खैर जिस ने सोचाहो वह सहस्रों धन्यवाद के योग्य है—इसी किस्म की तजबीज़ यदि अंगरेज़ लोग निकाला करैं तो अटल राज करैं—बड़ी मुशकिल तो यह है कि कहीं २ टेढों की बन्दर घुड़की में आय सीधों को पीसने लगते हैं जिस्के साथ शुद्ध राज भक्ति के धागे में धब्बा लगजाता है—महसूल की जियादती के सिवाय अब कि इस मेलेका प्रवन्ध बहुत अच्छा रहा केवल हलवाइयों ने मिठाई का भाव इस साल मंहगा कर दिया था पारसाल ६ आने सेर की निर्ख थी अब की साल साधारण मिठाइयां सात आने सेर बिकीं—यहां जो यात्री केवल

स्नानार्थ आते हैं उनके समान शुद्ध भाव कम लोगों का देखा जाता है वे लोग फूंक २ पांव रखते हैं हिंसा आदि पाप कर्मों को बहुत बरकाते हैं क्योंकि दूसरे तीर्थों मे लोग कामना और संसारिक सुख के लिये जाते हैं यहां केवल निष्पाप होने और मुक्ति पाने की इच्छा से आते हैं—इस पुनीत स्थान मे आतेही विषय बासना का लोपसा हो जाता है और पाप कर्म से घिन पैदा होती है इस पुण्य स्थल की महिमा सामवेद संहिता मे स्पष्ट रूप से लिखी है—चित्त के संशोधन और शान्ति आने के लिये प्रयाग के समान कोई क्षेत्र नही दिखाता—यदि धरती का महसूल ऐसाही बना रहा और व्योपारियों के उत्साह बढ़ाने की कुछ चेष्टा न की गई तो कुछ दिनों मे यह मेला अत्यन्त ही क्षीण हो जायगा—यदि हमारे सामयिक राजा इन मेलों के तत्त्वपर दृष्टि फैलावें तो सहज मे देख सक्ते हैं कि इस्से प्रजा को बड़ा लाभ है—यदि हम बादशाह होते तो महाराज भगीरथ को अलावे और बातों के उस बड़ी आमदनी का अनेक धन्यबाद देते जो श्रीगंगा जी के कछारों मे बिन सींचे अन्न की उपज के कारण होती है—संसार मे मत द्रोह ऐसी बुरी बलाय है कि जिस्से आज कल के नये कानून बनाने वाले बड़े सुयोग्य होकर भी हमारे प्राचीन कानून कर्ताओं के आशय को नहीं समझ सक्ते यदि हमारे दूरदर्शी कानून कर्ता बात २ मे धर्म का पच्चड़ न लगाते तो दूसरे मत के डिपटी कलट्टरों से बढ़कर हिन्दूमत के एक चमार का घर भी नित २ लीपने और पोतने से झकझ और स्वच्छ क्योंकर रह सकता था—हमारी बूढ़ी म्युनिसिपेलिटी को अपनी नई म्युनिसिपेलिटी में मिलाइयेगा तो हमारे धर्म संबन्ध को बुरा न कहियेगा जिस धर्म को इस टूटीदशा पर भी सहाड़ा एक मात्र श्रीगंगा जी हो रही हैं॥

हिन्दू और मुसल्मानों मे सर्कारी ओहदों का विभाग

कई वर्ष हुये हमने यह दिखलाया था कि मुसल्मानो की अपेक्षा हिन्दुओं को कितने कम बड़े २ सर्कारी ओहदे दिये गये हैं और मनुष्य संख्या के हि-

साब से तथा लिखपढ़ उत्तम २ परीक्षाओं मे उत्तीर्ण हो पूर्ण प्रज्ञ होने की अपेक्षा कितने अधिक ओहदे हिन्दुओं को मिलने चाहिये—यही दुर्दशा अब तक विद्यमान है कि मुसल्मान तहसीलदार गिनती मे फिर भी अधिक हैं-हिन्दू तहसीलदार इन जिलों मे १०८ हैं तो मुसल्मान १३६ हैं और अवादी के हिसाब से मुसल्मान छठवा हिस्सा हिन्दू से कम हैं तो ये बड़े २ ओहदे हिन्दुओं से मुसल्मानो को उसी हिसाब से मिलने चाहिये सो न हो कर मुनसिफ़ हिन्दू ५१ हैं तो मुसल्मान मुनसिफ भी उतनेहो हैं सदर अमीन हिन्दू १६ हैं मुसल्मान सदर अमीन गिनती मे सिर्फ एक कम अर्थात् १५ हैं। खैर हमारे लिये यह सब बात शिकायत करने को थी ही किसर अल-फ्रेड लायल साहब चलती चलाते हिन्दुओं का असह्य अपमान कर चले इस वर्ष सिविल सर्विस मे दो मुसल्मान किये गये हैं और हिन्दू केवल एक—यदि पढ़ने लिखने की योग्यता के अनुसार यह ओहदा दिया जाता तो यह पक्षपातकभी चल न सक्ता—टुक दृष्टि फैलाय के देखिये हाईकोर्ट का इमतिहान प्रतिवर्ष होता है के मुसल्मान उस्मे पास होते हैं इस साल जो १० आदमी पास हुये हैं उन्मे मुसल्मान एक भी नही हैं—किन्तु जब मुनसिफी और सदर अमीनी लुटने लगती है तो यह टलू किस्के हिस्से मे आगिरती है? उन्ही मुसल्मानो ही के—हमारे खां साहब बहादुर को अपने चेलों को बेरिसटर बनालेने का ढंग बहुत अच्छा आगया है केवल बिलायत में जाने और दोतीन वर्ष वहां टिक कर अंगरेजों को डिनर देने का खर्च दस बारह हजार रुपया होनाचाहिये जब यह हाल है तो कहीं से थोड़ासा रुपया जोर बटोर भाई भतीजों को वेरिसटरी की छाप दिलबाना कौन बड़ा कठिन काम है—खास कर जब देखते हैं वेरिसटरी की छापका सद्यः फल होता है कि योग्यता में सितारे से चमकते हुये हिन्दू नव युवक बि-ए-एम-ए-बैठे २ हाथ मलते रहजाते हैं और बेरिसटरी की छाप दियेहुये निरे घोंघा भी सिविल सर्विस में दाखिल कर लिये जातेहैं वाहरे न्याय!! धन्य सरअलफ्रेडलायल साहब का इनसाफ़ और योग्यता की कदर दानी—तब क्यों न खां साहब के चेले सिविल सर्विस कमिशन में सिविल सर्विस की परीक्षा हिन्दुस्तान में

नहोने के लिये यत्न करें? क्योंकि बिलायत हो आनेका ऐसा सहज लटका है जिस्मे बुद्धि को बिलकुल कुछ नहीं देना पड़ता और कालेजों में रह कर वर्षों तक दिमाग पिच्ची करने का दुष्कर परिश्रम सब बचता है—हर्रा फिटकरी बिल्कुल मैल नहो रंग चोखाही आता रहै वह तरकीब खां साहब के चेलो को क्योंन पसन्द आवे—धन्य हैं।

प्राप्त

जनाब मिष्टर एडिटर साहब—

आपतो मुझे बखूबी जानते हैं कि मैंनतो नई रोशनी वालों में हूं न नइन टीन्थ सेंचुरी के ओल्ड फूलसही में हूं यहां तो यार लोगों का ढंगही कुछ निराला है परन्तु आप मुझे इतना कहने की अवश्य आज्ञा देंगे कि बक २ करने और करके दिखादेने में कितना अन्तर है—हमारे नई रोशनी के छैल छबीले बांके तिरछे जैसा बातों के सड़ाके मारने में शूर वीर हैं वैसा करके दिखाने में भी बहादुर होते तो क्या पूछना था सब ठौर हमी हम देख पड़ते मैने बहुत से नई रोशनी के पुतले देखे हैं वे सब रंग रूप रहन सहन में बहुत अच्छे भले मानुस पूरे जेंटिलमेन हैं—कपड़े लत्ते भी बड़ी वज़ेदारी का पहनते हैं सभाओं मे कुब और कमेटियों में हाव भाव के साथ हाथ हिलाय २ जब वकृता और लेच्कर देने लगते हैं तो आपके शहरकी नामी रंडियां भी लजा जाती हैं और हमतो उनकी वाज़ सुन फूल कर कुप्पा होजाते हैं-हैंहैं आप हंसते क्यों हैं यह क्या झूट है अजी जनाब येनई रोशनी वाले देखने में ढोल पर भीतर से पोलं पोल हैं एक से एक बढ़ कर गुरू घंटालहैं चेलातो कोई भी नहीं हैं शंकराचार्य एक थे रामानुज एक थे माधवाचार्य एक थे बल्लभाचार्य एक थे पर हमारे नई रोशनी वाले पांचो सवारों मे और नाई की बरात में सब के सब ठाकुर ही ठाकुर हैं–उन्हे हमारे निरे पण्डितों के विचार कभी रुचते ही नहीं जिस्की अंगरेज़ लोग तारीफ न करें वह सब झूठ और गप्प जिसे यूरोपियन और अमरिकन अच्छाकहैं वह सब सर्वोत्तम

और श्रेष्ठ—पहले योग विद्या झूठी थी योगी सब झूठे धूर्त और ठग थे परन्तु जब से करनल आलकट का प्रादुर्भाव हुआ तो अब योग की कैसी महिमा बढ़गई और योगशास्त्र को सब लोग सच्चा मानने लगे हैं—इसदेश के ज्योतिषी बेवक़ूफ हैं पर विलायत के असट्रोलोजर सब अकिलमन्द और सच्चे हैं—संस्कृत का कुछ भी ज्ञान न हो अंगरेज़ी के दो चार ग्रन्थ देख लिये हों तो छाती ठोंक कर कहने लगते हैं कि कालिदास और बाणभट्ट से शेक्सपियर और मिलटन अधिक बुद्धिमान हैं मातृ भाषा हिन्दी को बुराई करेंगे अंगरेज़ी फारसी जिसने उन्हें वकील ट्रेन्सलेटर क्लर्क या मुन्सिफ बनाया है बड़ी तारीफ करेंगे—विधवाओं की दुर्गति देख मानो उनका कलेजा फटा जाता है और लेक्चरों में उस्का रोना रोज़ रोवेंगे पर अवसर होने की हिम्मत कभी न कर सकेंगे—पराशर स्मृति का श्लोक चिल्ला चिल्ला के पढ़ेंगे पर घरही में कोई बाल विधवा बैठीहो तो पराशर की आज्ञा पर हरताल पोत देंगे—ऐसी २ कितनी बातें हैं कहां तक गिनावें मिस्टर एडिटर साहब आप सच मानिये यह जितनी उन्नति हुई है वह सब देखने को ऊपरी टीप टाप है हां अलबत्ता नये फेशन के अनुसार कोट बूट पतलून पहन बाजे वालों के समान ज़रूर बनगये—जैसा उपदेश ये लोग दिया करते हैं उस्से तो हमारी डोकरी बुढ़िया अच्छा उपदेश दे सक्ती है—पादरी साहब पुनर्जन्म नहीं मानते इसलिये इन्हें भी उस्से इनकार है पाणिनी के समय लिखने की चाल नथी ऐसा जो भट्ट मोक्ष म्यूलर कहैं तो हमको भी वैसाही कहना चाहिये अंगरेज़ों के से सद्गुण चाहो न आवैं पर उनके वाह्यवेश और आचरणों की अवश्य चेष्टा करेंगे घरमे चाहो छप्पन प्रकार के भोजन तैयार हों खुदाबक्श ब्रह्मचारी के हाथ का पकाया हुआ होटल का महा प्रसाद जब तक न लेंगे तब तक जीभ चटचटाती रहेगी—मुह से दिनरात देशानुराग चिल्लाते रहना पर जब काम करने का समय आवै तो ओढ़नी ओढ़ परदे के भीतर घुस रहना—यह सब देख यही कहने को जी चाहता है कि जब लों शंकराचार्य रामानुज नानक कबीर से परोपकारी पराक्रमी ज्ञानी करके दिखा देने वाले बि-

हान इस भूमि मे पैदा न होंगे तबजों मुर्भ्के बिश्वास नहीं होता कि हमारी कोई सच्ची भलाई हो—आगे जो आप लोगों की राय हो—

आप का—

खरी कहवैया डाढ़ीजार

नागर—

।होली।

कैसे बने हो अनारी, हाय कुल रीत बिसारी ॥
यह भारत आरत ह्वै रोवत पावत अति दुखभारी।
तुम बिन और कौन सुधिलेहिए देखहु नैन पसारी।
आस एक हैगी तुम्हारी ॥ १ ॥ कैसे०
धन बल विद्या बुद्धि चातुरी, नष्ट भृष्ट भई सारी।
फूट कपट छल द्वेष कलह हठ, बढ़त अधर्म अपारी।
गई सब की मतिमारी ॥ २ ॥ कैसे०
भ्रात सनेह न एकता दीसतु, लड़त सबै दैगारी।
नस्यो हाय अनुराग देश को, स्वतन्त्रता स्वर्ग सिधारी।
भयो सब देश भिखारी ॥ ३ ॥ कैसे०
दास वृत्ति करि बहु सुखमानत, निज व्यौपार बिडारी।
रही प्रमाणिकता न बनिज में, झूठ कौरीत प्रचारी।
बढ़ी चहुं चोरी चिकारी ॥ ४ ॥ कैसे०
आर्य तनय ह्वै फारसी सीखत, तजि निज पितु महतारी।
धिक धिक तुम पामर पापीजन, नर्क के भे अधिकारी।
देत सब जगफिटकारी ॥ ५ ॥ कैसे०

धनी महाजन लम्पट मूरख धनकी करत नित ख्वारी ।
पूजहिं रांड भांड़भड़ुअन को, निज कुल पूज्य बिचारी ।
छांड़िके व्याहिता नारी ॥ ६ ॥ कैसे०
बाल बिवाह करहु दुखपावहु, मानौन सिख हितकरी ।
पुनर्विवाह न नेक रुचत है, जासों हैं विधवा दुखारी ।
देंय तुम्हें आप बिचारी ॥ ७ ॥ कैसे०
सज्जन देश हितैषि महोदय, चेतहु शीघ्र विचारी ।
विनय करत शिवराम जोड़कर, मानहु सीख सुखारी ।
जाऊं तुम पर बलिहारी ॥ ८ ॥ कैसे०

। इसे जुबिली कहैंया भिक्षा टैक्स ।

बड़े हर्ष और आनन्द का अवसर है कि हमारी महाराणी राजराजेश्वरी को ५० वर्ष राज्य करते हो गया—पर हम यह पूछा चाहते हैं इसमे कौनसी खुशी की गई और किसने खुशी किया हमारे यहां ऐसे २ मौकों पर राजा महाराजा नौवाव बादशाह लोग खजाने का खजाना लुटा देते थे सैकड़ों प्रजा को पुश्त दर पुश्त की रोटी हजारों इलाके और गांव बखशीशनामे और पादार्घ मेंकार देते थे—रघुवंश मे कथा है रघु राजा पुत्र के जन्मोत्सव मे इतना दिया और लुटाया कि राज छत्र और चमर के सिवा कुछ न रख छोड़ा—"जनायशुद्धान्त चराय शंसतेकुमार जन्मामृत संमिताक्षरम् । अदेयमासीत् त्रयमेवभूपते शशिप्रभं छत्र मुभेचचामरे—„ अस्तु यह बहुत पुरानी बात है इसे गप्प और कोरे सुबालिगे मे छोड़ दीजिये तवारीख को सच्च मानिये तो अकबर और शाह जहान अपनी सालगिरह मे सोने चांदी की तुला चढ़तेथे मोती और जवाहिरों के सदके उतारे जाते थे खैर इन सब बातों को आप फजूल खर्ची मूर्खता (Oriental barbarism) के नाम से बदनाम करेंगे तो

हम भी आप के अवसरों के इस ढंग को प्रजा रक्षक नहीं बल्कि लुटेरा पन कहेंगी हम इस जुबिली ही पर विशेष लक्ष्य न कर पूछा चाहैंते हैं इनका शाही तरीका खुशी मनाने का क्या यही है कि जब कोई इस तरह का अवसर हर्ष प्रकाश करने का आपड़े तो बादशाह साहब को यही मंजूर हो कि इसी बहाने अपनी जेब मे जहां तक भरती बन पड़े भरलें—राजकुमार प्रिन्स आफ वेल्स यहां आये एक २ रईस और राजाओं से लाखों की भेट पूजा ले गये और अपना जरूरी काम चलाया बदले मे उन रईस और राजाओं को दे क्या गये किसी को एक अपनी तस्वीर किसी को एक तगमा किसी को सो भी नहीं अंगरेजी क़ौम की उदारता और खुशी के मौकों पर इनकी शाह खर्चीं को बस इतने ही से हम अच्छी तरह टटोल सक्ते हैं—खैर इस तरह की शिकायत इस अवसर पर हम नहीं किया चाहते इस बनिया कौम अंगरेज़ों का सदा से यही क्रम रहा और रहेगा किन्तु उद्देश्य हमारा इस लेख से केवल इतनाही है कि ऐसे महोत्सव मे अंगरेज़ राजकर्मचारी (Officials) लोगों ने जिस्के अग्रगामी समस्त अंगरेजी गुणो से भरे पुरे लार्डडफरिन जी महोदय सरीखे हैं क्या किया? रूपया अपनी जेब से निकाल कर देना तो एक ओर रहा इन लोगों ने जैसा आनन्द राजराजेश्वरी की जुबिली "षष्टिपूर्ति„ का किया वह इतनेही से प्रगट है कि एक दिनके लिये भी अपना आराम और शिमला नैनीताल की तरावट का प्रमोद और विहार न घटाने चाहा—इंगलेंड तथा और २ ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध २० जून के बदले १६ फरवरी रक्खा क्योंकि पूरा ५० वर्ष तो महाराणी के राज्यसिंहासन पर सुशोभित होने का २० जून को होगा सच पूछिये तो "षष्टिपूर्ति„ को अभी ४ महीने बाकी हैं अपने आनन्द और अराम मे विक्षेप न हो इस्से पूस ही मे फाग खेल डाला और खासकर ऐसे समय जब टैक्स पर टैक्स और चन्दे पर चन्दा वसूल करते २ लोगों के चिथरे उड़ रहे हैं—यह कहां का दस्तूर है कि बादशाह के घर खुशी हो तो रियाया भखमार के खुशी मनावे और उस खुशी मे कुछ बक्सीस या इनाम पाना दूर रहे गरीब कुली कबारी तीन आने रोज़ की मज़दूरी से अपना पेट पालने वाले

कंगाल किसानों तक से भिक्षा के समान यक २ दो २ आने तक वसूल किये जांय धिक्!! ऐसी लालच और स्वार्थ परता पर है अथवा धिक् क्यों यह भी एक हिकमत अमली है २० जून को बिलायत में जो जुबिली होगी उस्मे यही कागज़ात पेशकिये जांयगे जो मानो इस बात के दस्तावेज़ होंगे कि देखिये छोटे से छोटी प्रजा भी हमारे इन्तिज़ाम से कैसी खुश है कि राज़ी से सबोंने चन्दा दिया है—खैर फिर भी हमारी महाराणी ५० बर्ष तक एक चक्रा बसुन्धरा का अखंडराज्य करती रहीं इसका महा आनन्द तो हमे हुई है—एक रुपये की खींच छोड़ और अनेक प्रकार का सुख हमे इनके शासन में अवश्य मिला इस बात से कौन मुकुर सक्ता है नकि हिन्दूस्तान ऐसे देशमें जहां राज भक्ति की पताका फहरा रही है जहां आकर और देश वाले चाहो राज भक्ति हमसे सीख जांय—यह हमारेही धर्म शास्त्रों का दृढ़ सिद्धान्त है कि राजा प्रत्यक्ष देवता है इन्द्रादिक लोकपाल अपने २ अंशसे सब उस्मे बसते हैं किन्तु अब दिन प्रति दिन हिन्दुस्तान की जैसी दशा होगई और होती जाती है यह बिला यततक छिपा नहीं है एकतो टैक्स पर टैक्स दूसरे महा क्रूरता और स्वार्थ परता से पूर्ण इस देश के साथ इंगलेंड का व्योपार जिस्के कारण हमारे यहां की दस्त कारी और हुनर सब लुप्त होगये लाखों घराने भूखों मरती हैं शहर के शहर उजड़ गये बिलट गये—तीसरे गवर्नमेंट की कुटिल पालिसी कि हमारा बिश्वास नकर ऊंचे २ पदों से हमें बंचित कर रखना—एक तो थोड़ी आम-दनी दूसरे किसी न किसी बहाने रुपये की खींच ये सब महा कारण एक साथ मिल कर राज भक्ति के पौधे को बढ़ने ही नहीं देती।

हम देखते हैं बंगाल के कई एक अखबार और उन के संग लगे हमारे यूनियन जी भी इस जुबिली के अवसर पर सर्कारसे कुछ कानून में अदल बदल मांगरहे हैं—इन लोगों की अटूर दर्शिता को हम क्या कहैं—हमको खेद होता है कि इस तरह की लिखावट से हमारे अंगरेज़ी पत्रों के सहयोगी अंगरेज़ और अंगरेज़ी सच्ची पालिसी क्या है इस बात की ओरसे अपनी पूरी अज्ञता प्रकाश करती हैं ज़रासा सोचिये तो कि जब एक से एक बढ़

कर राज नैतिक आन्दोलन ने हिन्दूस्तान और बिलायत तक को एक छोर से दूसरे तक हिला डाला तब भी गवर्नमेंट ने इतना ध्यान भी नदिया कि एक बार पूछती तो कि तुम क्या बकते से हो और क्या मांगते हो तब क्या वे बड़े २ राज नैतिक लाभ (Concessions) इस जुबिली की खुशी में अपने को भूल के सहजही मे कर देती ? जबकि हम खुशी का यह हाल है जैसा हम ऊपर लिख आये हैं—सर्कार यह भली भांत जानती है कि अपनी पुरानी और दृढ रीतिपर जमी हुई पालिसी से जो मात्र भी खसकने से या उस्मे अणु मात्र भी परिवर्त्तनकर देने से करोड़ों प्रजाकी मर्मान्तिक पीड़ा जो उनको मृत्युके समान क्लेश देरही है दूर होजायगी यह हम नहीं कहते कि येराज नैतिक लाभ हम को किसी काल में होहीं गे नहीं पर हमारा प्रयोजन इय कि वे यदि यह आशा करते हों कि मक्खन के लड्डू समान वे सब राज नैतिक लाभ इस जुबिली की खुशी में उनको मिल जांयगे तो इस्से परे और क्या भूल हो सक्ती है—निस्सन्देह यह हमारे प्रभु बरों के जुब्त को तारीख है और साथ ही हमारे भी उतावले पनको धन्यवाद है कि सबसे आगे और सब से अधिक नजानिये किस माथे इस जुबली की खुशी करने को कूदे पड़ते हैं पर एक तरह पर सोचिये तो यही उतावलापन पराकाष्ठा के राज भक्ति का सूचक चिन्ह है—ऐसी राज भक्त प्रजा महाराणी की और कौन होगी ?

तर्क चूर्णिका

पुर्व प्रकाशिता नन्तर

(१६) न्याय शास्त्र के मतसे कोई पदार्थ स्वयं सिद्ध नही माना जाता है किन्तु एक की सिद्धि मे दूसरे को अपेक्षा अवश्य होती है यद्यपि इस मत मे अनवस्था (अर्थात कहीं ठहरावन होना) और अन्यो न्याश्रय अर्थात् (परस्पर एक दुसरे की सिद्धि की सापेक्षता) दोष हैं तथापि अन्त में अव्यभिचारी (अटल) फलों के द्वारा वास्तविक पदार्थ की सिद्धि विवश होके स्वीकार करनी पड़ती है तथा अनवस्था वा अन्यो न्याश्रय दोष के निरा करणार्थ आरम्भ मे उत्पन्न ज्ञान के बोध सीमा का नियामक समझते है उदा० यथा "गौ,,

यह पदार्थ स्वयं सिद्ध नहीं हैं, किन्तु अपने लक्षण " लोरी " से सिद्ध होता हैं, लोरी वाले गौपदार्थ का अव्यभिचारी " गौका दृष्टि पड़ना " "गौका स्पर्श होना," वा "किसी २ गौका दुग्ध देना," इत्यादि फल है। उनसे अन्त में निश्चय होता है कि लोरीवाला पदार्थ गौही है, और आरम्भ में लोरी का ज्ञान उत्पन्न होके ज्ञान की सीमा कर देता है, अर्थात् लोरी के लक्षण भी खोजने के लिये गौ के ज्ञान में दौड़ नहीं करनी पड़ती है, यदि कोई करे भी तो कहीं न कहीं अवश्य उसे विराम लेना पड़ेगा, नहीं तो अनवस्था वा अन्योन्याश्रय दोष से गौको कदापि सिद्ध न कर सकेगा, परन्तु फलों की उपलब्धि से गौ को अवश्य गौ अङ्गीकार करनाही पड़ता है, यथा कहा भी है "आंखी देखे साखी पूछै" अर्थात् आंख से प्रत्यक्ष जिसे देख रहा है उसके लिये साक्षी से पूछना उपहास की बात है, अतएव अनवस्था वा अन्योन्याश्रय दोष से विमुख होके आरम्भ में उत्पन्न ज्ञान को ज्ञान की सीमा माननी पड़ती है।

(१७) सब से पहिले पदार्थों को विभागों में बांटते हैं, एक भाव पदार्थ और दूसरा अभाव पदार्थ है (क) भाव पदार्थों का लक्षण यह है कि उनमें से प्रत्येक के मूल में भेद होने से प्रत्येक के स्वरूप की प्रतीति में विलक्षणता होती है, उदा० यथा गौ, गौका रूप, और गौ की चाल इत्यादि प्रत्येक भाव पदार्थ हैं, क्योंकि उनमें से प्रत्येक के मूल में भेद है (ख) परन्तु अभाव पदार्थ में ऐसा नहीं पाया जाता है, क्योंकि उनके मूल में भेद होने से भी उनके स्वरूप की प्रतीति में विलक्षणता नहीं पाई जाती है, उदा० यथा घट उत्पन्न होने के पूर्व में जो घटाभाव है घट नष्ट होने के अनन्तर वाले घटाभाव से वह मूल में भिन्न है तथापि उन दोनों की (गृह्यमाण) स्वरूप की प्रतीति में कुछ भी विलक्षणता नहीं पाई जाती है जैसी कि गौके रूप और गौकी चाल इत्यादि के स्वरूप की प्रतीति में स्पष्ट उपलब्ध होती है।

(१८) जिस किसी पदार्थ का अभाव जानना होता है तो पहिले उस पदार्थ का ज्ञान हो लेता है तदनन्तर अवसर अनुसार उस पदार्थ के अभाव का ज्ञान होने का नियम है, उदा० यथा घट के अभाव के ज्ञान के पूर्व घट के

ज्ञान की आवश्यकता है, क्योंकि यदि घट का ज्ञान पूर्व में नियम से न हो लेवे तो कदापि घटाभाव की बुद्धि उत्पन्न होने की सम्भावना नहीं है, ।

(१९) (क) जिसका अभाव होता है उसे प्रतियोगी कहते हैं उदा० यथा घट का अभाव है इस लिये घट "प्रतियोगी„ कहलाया, और (ख) प्रतियोगी चाहो जिस किसी आधार पर गृहीत होता है उस आधार को उस प्रतियोगी अनुयोगी कहते हैं, उदा० यथा घटाभाव का प्रतियोगी घट भूतल आधार पर है इस लिये भूतल "घट प्रतियोगी का„ अनुयोगी कहलाया अनुयोगो का ज्ञान उद्देश्य रहता है, प्रतियोगी को अनुयोगी का भी प्रतियोगी कहते हैं।

(२०) प्रतियोगी जहां २ जिस २ सम्बन्ध से रह सकता उस २ सम्बन्ध को अभाव की दृष्टि से प्रतियोगिता का नियामक सम्बन्ध कहते हैं, उदा० यथा भूतल पर घटाभाव का प्रतियोगी घट, संयोग सम्बन्ध से रहता है इस लिये भूतल पर घट का संयोग सम्बन्ध अभाव की दृष्टि से घट की प्रतियोगिता का नियामक सम्बन्ध है, ।

(२१) (क) भाव पदार्थ जो उत्पन्न होता है सो अवश्य विनष्ट होता है, (ख) और उसी भाव पदार्थ का विनाश नहीं होता है, जिसकी उत्पत्ति न हो परन्तु उसका अस्तित्व हो उदा० यथा (क) घट यह भाव पदार्थ उत्पन्न होता है सो वह अवश्य विनष्ट होता है, (ख) और आकाश यह भाव पदार्थ है उसकी उत्पत्ति नहीं होती है, परंतु उसका अस्तित्व है इस लिये उसका विनाश कदापि नहीं हो ताहै, (ग) जिसकी उत्पत्ति और विनाश न होवे परंतु अस्तित्व हो उसे "नित्य„ कहते हैं, और (घ) नित्य के विपरीत अर्थात् जिसकी उत्पत्ति और विनाश हो उसे "अनित्य„ कहते हैं, उदा० यथा (ग) आकाश नित्य है क्योंकि उसकी उत्पत्ति और विनाश नहीं होता है, और (घ) घट अनित्य है क्योंकि उसकी उत्पत्ति और विनाश होता है, ।

(२२) नित्यत्व वा अनित्यत्व का विचार भाव पदार्थ के विषय मे वास्तविक है, तथापि अभाव के विषय में भी बोध की सुगमता के लिये उसका उपयोग उपचार से करते हैं तथाहि, ।

(२३) अभाव पदार्थ के लिये उक्त नियम नहीं है, (क) यद्यपि कोई अभा-

व न तो उत्पन्न होता है और न विनष्ट होता है और अपना अस्तित्व रखता है इस लिये नित्य है, तथापि (ख) कोई अभाव उत्पन्न तो नहीं होता और अपना अस्तित्व रखता है, अन्त में विनष्ट हो जाता है, इस लिये अनित्य है, (ग) उसके विपरीत कोई अभाव उत्पन्न तो होता है परंतु अनन्त काललों बना रहता है इस लिये उसे नित्य कहते हैं (घ) अनित्य अभाव को अनादि सान्त (अर्थात् जिसकी उत्पत्ति तो न हुई परन्तु विनाश तो होता है) (ङ) और जिस अभाव की उत्पत्ति हो के फिर विनाश नहीं होता है ऐसे नित्य अभाव को सादि अनन्त (अर्थात् जिसकी उत्पत्ति तो होती है पर फिर विनाश नहीं होता है) कहते हैं, उदा० यथा (क) जो घट आज उत्पन्न हुआ वह घट गये कल्प का उत्पन्न नहीं कहा जयगा इस लिये गये कल्प के कालिक सम्बन्ध से आज के घट का अभाव सदा से रहा आया और है और सदा बना रहेगा इस कारण आज के घट का उक्त विध अभाव नित्य है ऐसेही न पूर्व में, न आज, और न आने वाले काल में आकाश काल हो सकता है अथवा काल आकाश हो सकता है इस लिये आकाश का काल पर और काल का आकाश पर जो अभाव है वह नित्य है, क्योंकि उक्त विध अभावों की न उत्पत्ति होती है और न विनाश होता है परन्तु उनका अस्तित्व तो है, (ख) घट उत्पन्न होने के पूर्व घटा भाव अनादि काल से चला आता है परन्तु घट के उत्पन्न होने के अनन्तर उस घटाभाव का विनाश हो जाता है इस लिये वह अनित्य है, (ग) उस घटा भाव के विपरीत देखो घट फूट गया तो नूतन घटाभाव उत्पन्न हुआ जो पूर्व में न था, परन्तु अब उत्पन्न होके वह अनन्त काल लों बना रहेगा क्योंकि फूटा घट फिर नहीं उत्पन्न होगा इस लिये नित्य है, (घ) घटोत्पत्ति के पूर्व का जो घटा भाव अनित्य कहा गया वह अनादि सान्त है क्योंकि यह अनादि काल से रह के अन्तमे अर्थात् घटोत्पति के क्षणमें विनष्ट होगया (ङ०) घटके विनाशानन्तर जो अभाव उत्पन्न होके अनन्त काललों बना रहैगा वह सादि अनन्त है (क्योंकि उसकी उत्पत्ति तो हुई परन्तु अब विनाश नहीं होनेका)

(क) वाले अभावके वर्णनमें दो प्रकारके अभाव बतलाये गये उनमे से पहि-

ले प्रकार के अभाव को अत्यन्ताभाव कहते हैं यथा आजके घटका गये कल्प के सम्बन्ध से अत्यन्ताभाव है और दूसरे प्रकारके अभावको अन्योन्याभाव कहते हैं यथा आकाशपर कालका और कालपर आकाशका अत्यन्ताभाव है

(ख) में वर्णित अभावको प्रागभाव कहते हैं यथा घटकी उत्पत्ति के पूर्व में घटका अभाव; वह अनादि सान्त है,

(ग) में वर्णित अभावको प्रध्वंसाभाव कहते हैं यथा घटके विनाशके पीछे घटका अभाव; वह सादि अनन्त है इन अभावों की दृष्टिसे प्रतियोगिता के नियामक सम्बन्धका विचार पश्चात् कियाजायेगा।

(२४) पदार्थ ही भाव वा अभाव के रूपमें रह सकते हैं जो है नही न वह भाव हो सकता है और न अभाव हो सकता है उदा० यथा मनुष्य को शृङ्ग इत्यादि नहीं हैं इस लिये न वेभाव के अथवा नवे अभावके रूपमें हो सकते योंही व्यापक द्रव्योंका परस्पर संयोग नहीं हो सकता है इस लिये न वह भावपदार्थ है न अभाव पदार्थ हैं।

(२५) कुछ बेला पहिले देखा था कि बीज धरतीपर पड़ा है परन्तु उसमें से कोई नवीन बस्तु (जोकि पूर्वमें न थी) फूटनहीं निकली है, पश्चात् कालान्तरमें उसी बीजको देखते हैं तो उसमेंसे एक अङ्कुर (जो कि पूर्व में नथा) फूट निकला है जोबीजसे भिन्न और नबीन वस्तु बूझ पड़ती है अपने मनमें कौन उस अङ्कुरको कहसकता है कि यह पूर्वमें भी था क्योंकि यदि था तो अबकी नाईं पूर्वमें भीदिखलाई देता परन्तु पूर्वमें तो वह नहीं दिखलाई दिया इससे कहते हैं कि वह पूर्वमें नहीं था हां कोई २ वस्तु (स्वतः) होके भी छिपी रहसकती है, जिससे सम्भव है कि न दिखलाई देवे, परन्तु अङ्कुर उस ढङ्गका नहीं है जो छिपा रहा हो, पूर्वकाल में जब अङ्कुर नथा तो कहना पड़ता है कि उस पूर्व कालसे इस अङ्कुरका सम्बन्ध नथा क्योंकि यदि सम्बन्ध रहा होता तो अब के समान तबभी प्रकट रहता,परन्तु इधर इस समय प्रकटीभूत अङ्कुरका कालसे सम्बन्ध स्वीकार करना पड़ता है, क्योंकि यदि प्रकटी भूत अङ्कुरका इस समयसे सम्बन्ध अब भी नहोता तो पूर्वकाल के समान सम्प्रति भी वह अङ्कुर प्रगट नहुआ होता इस्से यह अङ्गीकार करना पड़ता है कि इस समय अङ्कुर का अवश्य २ कालसे सम्बन्ध है अब ध्यानमें ल्याना चाहिये कि कोइ क्षण ऐसा है जिससे पहिले पहिल अङ्कुर से सम्बन्ध हुआ, बस उसी प्रथम क्षणसे पदार्थ के सम्बन्ध को पदार्थ की उत्पत्ति कहते हैं उदा०यथा अङ्कुरकी उत्पत्ति में अङ्कुरका प्रथम क्षणसे सम्बन्ध है,

(२६) पदार्थकी उत्पत्ति, योंही अनायास आपही आप नहीं होजाती हैं, किन्तु पदार्थ की उत्पत्ति के पूर्वमें अवश्य नियमसे कतिपय पदार्थों की उपस्थिति अपेक्षित होती है उदा०यथा अङ्कुर की उत्पत्ति योंहीं अनायास आपही आप नहीं हो जाती है किन्तु उसकी उत्पत्ति के पूर्व में अवश्य नियमसे बीज, धरती, जल, तेज, और वायु, इत्यादिकी अपेक्षा तथा जबतक उनके आपसके संयोगादि न हो लेवें तो कदापि अङ्कुरकी उत्पत्ति नहोगी—सम्भव है किकिसी पदार्थ की उत्पत्ति के पूर्व में बहुतेरे पदार्थ ऐसे भी उपस्थित हों जिनका नियमसे अवश्य पूर्वोपस्थिति उस पदार्थ की उत्पत्ति के लिये अपेक्षित नहो अथवा जिनकी नियमसे अवश्य पूर्वोपस्थिति अपेक्षित होनेके कारण उपस्थित हुए हों तथापि उस प्रदार्थ की उत्पत्ति नहीं हुई उदा०यथा अङ्कुरकी उत्पत्तिके पूर्व में उस स्थलपै गर्दभ चरता हो परन्तु अङ्कुरकी उत्पत्ति के लिये गर्दभकी अवश्य नियमसे पूर्वोपस्थिति अपेक्षित नहीं है क्योंकि अन्यत्र उसी जातिके अङ्कुरकी उत्पत्ति में गर्दभकी अपेक्षा नहीं हुईथी और सोचो कि धरती में कीड़ोंसे खाया हुआ बीज पड़ा है यद्यपि अङ्कुरकी उत्पत्ति के लिये बीजकी अवश्य नियमसे पूर्वोपस्थिति अपेक्षित है तथापि कीड़ों से खाये हुए बीजकी पूर्वोपस्थिति अपेक्षित नहीं है क्योंकि यदि अपेक्षित होती तो अङ्कुरकी उत्पत्ति उस बीजके रहते रुकन रहती कारण यह है कि और सब पदार्थ जिनको कि अवश्य पूर्वमें नियमसे उपस्थिति अपेक्षित है वे उपस्थित हैं तथापि अङ्कुरकी उत्पत्ति नहीं हुई वस्तुतः उसमें हेतु इतना ही है कि बीजकीड़ोंका खाया हुआ है क्रमश।

(२७) तत्तत् पदार्थकी उत्पत्तिके पूर्वमें अवश्य नियमसे उपस्थित हुए उन २ पदार्थों को जो २ कि ऊपर के उक्त दो प्रकारके नहों तत्तत्पदार्थका कारण कहते हैं उदा०यथा बीज, धरती, जल, तेज, और वायु इत्यादि तथा उनके परस्पर संयोगादि ये सब अङ्कुरके कारण हैं क्योंकि अङ्कुर पदार्थकी उत्पत्ति के पूर्वमें अवश्य वे नियमसे उपस्थित होते हैं और वे गर्दभके प्रकारके किंवा कीड़ोंसे खाए हुए बीजके प्रकारके नहीं हैं क्रमशः

हिन्दीप्रदीप ।

मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने को पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित   प्रगट ह्वै आनंदभरै ॥
बचि दुसह दुरजन बायुसों   मणि दीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति   कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख   तादि भारत तम हरै ॥

१ फरवरी सन् १८८७ | जिल्द १० संख्या ६

इलाहाबाद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
मनेजर बाबू नीलमनी सरकार के प्रबन्ध से देशोपकारक
यंत्रालय में प्रकाशित किया गया

मूल्य अग्रिम ३।≶)   पीछे देने से ४।≶)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १॥≶)

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द १०	१ फरवरी
संख्या ६	सन् १८८७ ई०

धन्यबाद

हम अतिशय प्रफुल्लित मनसे श्रीमान् रायगूदर सहांय वखरा निवासी को रोम रोम से धन्यबाद देते हैं जिन्हो ने अपने स्नेह के पूर्ण उद्गार से प्रदीप की सहायता के लिये २० रुपये दान दिये—उक्त महानुभाव देश हित में अत्यन्तही दत्त चित्त हैं और भाषा के समाचार पत्रों को एक मात्र अवलम्ब हैं—इस प्रकार की अनोखी बदान्यता हम इन्ही मे पाते हैं जब हमारे देश के धनी जन रजो गुण की मैल मे सने हुये अनेकानेक द्वार से अपने धन को बहा रहे हैं वहां बिवेक धारा शत धौत इस क्रम की दान शौण्डता क्या प्रशंसा के योग्य नही है ? जिस्से देश का महा कल्याण कारी पौधा सिच कर हरा भरा होता है और सभ्य समाज मे ऐसि दानो का यश मन मानता बिस्तार पाता है हां पामरों मे इस तरह के दान का कहीं भी चर्चा न होगा—और क्यों होने लगा ब्रह्मणो की पोथियों मे उजड्ड तीर्थ

लियें बक बृत्ती पुजेरियों और महामोटे तुन्दिल पंडों को छोड़ हम लोगों का कहीं जिकिर नहीं किया गया न हमारे देने से स्वर्ग की सीधी सीढ़ी लग जाती है तब नितान्त व्यर्थ समाचार पत्रों के सहायार्थ क्यों दिया जाय ? न कि हम ऐसे कुच स्वभाव को जो मिलन सारी के दुश्मन बन रहे हैं न हम से चार चार आने पर काले का काले पातकी से पातकी की भौआ भर तारीफ गाई जाय न किसी दूसरे तरह की चापलूसी या धूर्तता हमे याद है प्रत्युत हम तो कोरे सम्पादकीय कृत्य पर लक्ष्य किये हुये राजा अथवा प्रजा के बीच अन्याय कारी को तीखी व्यंगोक्ति का सूजा चुभोया करते हैं तब क्या मीठा देख हमारी ओर किसी की श्रद्धा हो—न जानिये क्या समझ हमारा बेड़ा दैवही पार लगाता है अथवा ऐसे २ उदार मना सज्जनो के सहाई से पार होता है—अस्तु प्रकृतमनुसरामः॥

सर्कार का मुसल्मानो पर पक्षपात का क्या परिणाम है।

कुछ दिनो से हम देखते हैं हमारे मुसल्मान भाई हिन्दुओं के मुकाबिले अपनी न्यूनता खूब अच्छी तरह मालुम करने लगे हैं—ये लोग जाति पांत के झगड़ों से बिल्कुल बरी रहे हैं फिर क्या अलीगढ़ के मुल्लाओं के उस्काने से थोड़ी बहुत पूंजी जमा करकराय "छूटा घोड़ भुसौले ठाढ़,, वाली मसल के अनुसार चटपट बिलायत को सिधार देते हैं—यह हम नहीं कहते कि ऐसे लोग यहां ही रहते तो किसी न किसी खेत की मूली न होते किन्तु केवल डिनर देकर सम्पूर्ण योग्यता की सार्टिफिकट

१२३

पा जाने का सहज लटका बिलायत ही में हाथ लग सक्ता है–मानो इमतिहान लेने वाले वहां के साहबों का पेट भर देनाही पूरी लियाकत की कसौटी है–खैर जो हो बिलायत से लौटतेही ये लोग एक चीज़ हो जाते हैं और यहां सामाजिक अथवा मानसिक या और दूसरी तरह की योग्यता की परख के समय उनका बिलायत हो आना ही जल में तूंबी के समान ऊपर २ तैरता रहता है और लोगों में तथा सर्कार में कदर और प्रतिष्ठा तथा उच्च पद पाने को सब पर भारी है–अस्तु इन सब लाभ कारी बातों को अपने पक्ष में रहते भी इन मुसल्मानो ने ऐसा चिलपों मचाया कि महा न्याय शीला गवर्नमेंट जो कभी किसी की सुनतीही नहीं वह भी इस चिलपों पर चौंक पड़ी बल्कि सच तो यों है कि इनकी चीत्कार ध्वनि पर मोहित सी होगई–हमारे पाठक गण समझते होंगे कि हम यहां पर बहुत बना कर और बढ़ा कर लिखते हैं किन्तु वे यदि इस बात को स्मरण करेंगे कि गवर्नमेंट ने इन मुसल्मानो को आगे बढ़ने के लिये किस २ तरह पर पुचारा दे रही है इनके साथ कैसी २ मेहरवानी और दया प्रकाश कर रही है तो हमारे इस लिखने को किसी तरह अत्युक्ति न मान सर्वथा यथातथ्य और युक्ति संगत समझेंगे श्री मान् लार्ड डफरिन साहब ने बम्बई में पांव रखतेही यदि किसी बात का खयाल रक्खा और किसी तरह की भलाई करने का होसिला उन्हें हुआ तो इन्ही मुसल्मानो की भलाई का–अस्तु अहो भाग्य मुसल्मानो के कि श्री मान् डफरिन महोदय के कृपा पात्र तो हुये–शिक्षा कमिशन के द्वारा जो कुछ मुसल्मानोपर विशेष कृपा की गई उसे सब लोग जानते ही हैं–दूर न जाकर इस पश्चिमोत्तर और अवध में देखिये आबादी के औसत से मुसल्मान कितने कम हैं फिर भी ऊंचे २ ओहदों पर हिन्दुओं की अपेक्षा मुसल्मान संख्या में बराबर होना एक ओर रहा कहीं २ किसी ओहदों पर अधिक हैं।

अब हम यह पूछते हैं गवर्नमेंट इस तरह का पक्षपात किस उद्देश्य से करती है-इस पक्ष पात के शब्द पर यदि किसी को कुछ खटक हुई हो तो उनसे हम यही पूछते हैं कि इस प्रकार की मेहरवानी को जैसा सर्कार मुसलमानो के साथ कर रही है आप और क्या कहें गे? सिवा इस्के जब गवर्नमेंट ही को यह मंजूर नही

है कि अपनी इस पक्षपात की पालिसी को किसी तरह पर छिपावे तब वे लोग क्यों चौंकते हैं जो इस पालिसी के पोषक बना चाहते हैं—हम जहां तक सोच सक्ते हैं उस्से यही बात मन में आती है कि गवर्नमेंट यह सब पक्ष पात इस प्रयोजन से कर रही है कि मुसल्मानो ने अपनी न्यूनता की पुकार सर्कार से किया और सर्कार ने भी प्रत्यक्ष देख लिया कि वे सब बातें जिस्में ये लोग अपने को न्यून मानते हैं सत्य है सो उस न्यूनता के दूर करने का उपाय सर्कार ने यह निकाला कि मुसल्मानो के साथ कुछ विशेष कृपा प्रगट की जाय हां हम भी मान सक्ते हैं। "प्रोत्तुङ्गान्नमयन्न तान्समुदयन्· ·मालाकारइवप्रयोग निपुणोराजाचिरं नन्दति„ इत्यादि राजनीति के भारी २ सिद्धान्तों पर अमल करने का परिणाम इस्के अतिरिक्त और क्या हो सकता है किन्तु सर्कार यह अच्छी तरह जानती है कि हिन्दुओं से मुसल्मानो को आगे बढ़ने के लिये कितने विशेष सबीतें और आराम हैंम उनको इस्के लिये उनकी समाज कुछ बाधा पहुंचा सक्ती है न किसी तरह की मज़हबी कैद से कुछ हर्ज पहुंच सक्ता है-यह तो हिन्दुही समाज और मज़हब की परम कृपा से हर तरह पर लुंजपुंज हो हाथ पांव तोड़ाय कोठरी के भीतर बन्द रहने को ईश्वर के घर से बनाये गये हैं तब मुसल्मानो पर विशेष कृपा के द्वारा हमारे और उनके बीच तरक्की और तनज्जुली का पलरा दुरुस्त रखने की यह तरकीब जो सर्कार ने निकाला है उसे निष्पक्ष शुद्ध विचार की कसौटी में कसने से कोई मनुष्य न्याय सम्मत न कहेगा — सर्कार के इस पक्ष पात से हिन्दुओं के लिये कितना घाटा है यह तो स्पष्ट ही है यदि हमारे मुसल्मान भाई हमे आज्ञा दें तो गवर्नमेंट का यह उन पर अनुचित पक्ष पात जिसे पाकर वे फूले नहीं समाते और जिसे वे अभी अमृत अपने लिये समझते हैं पर वास्तव मे उनकी भावी हानि का उत्पादक विष क्यों कर हो रहा है इसे हम उन्हें प्रत्यक्ष कर दिखावें—

गवर्नमेंट का यदि यह उद्देश्य है कि अपनी प्रजा की प्रत्येक जाति के साथ न्याय पूर्वक बर्ताव करे तो क्या यह भी उन्ही उद्देश्यों में न होना चाहिये कि उन प्रत्येक जातियों की हर एक बातों में आगे की तरक्की करने की भी फिक्र रक्खें—यह तो स्पष्ट है कि मुसल्मान इस देश की और २ जातियों से सुशिक्षा आदि वर्तमान समय की बहुत सी बातों में न्यून और पीछे हटे हैं

तब उनके साथ बहुत तरह की रियायत और अनुचित पक्ष पात का और क्या फल होसक्ता है कि वे अपने स्वयं पुरुषार्थ का भरोसा ढीला कर सर्कार के अन्याय युक्त पक्षपात का दिन प्रति दिन अधिक सहारा पकड़ते जांय--इन दिनो हिन्दुस्तान के एक छोर से दूसरे तक लोगों की झुकावट इसी ओर देखी जाती है कि चाहो पहले थोड़ी बहुत हानि होती हो पर निज पुरुषार्थ और बाहुबल का भरोसा छोड़ पक्षपात अथवा किसी दूसरी तरह की मेहरबानी अपनी उन्नति के लिये "नेशनालिटी„ जातीयता के गढ़न को सर्वथा हानि कारक है—इस बात का सबूत कलकत्ते की महा सभा "कानग्रेस„ और सामयिक समाचार पत्रों के लेख हैं—हर्ष की बात है कि इसी पक्षपात के दूर करने की इच्छा से हमारे पश्चिमोत्तर देश की भिन्न २ जाति जो बंगाल और बाम्बे की अपेक्षा मानसिक उन्नति में बहुत पीछे हटी हैं वह भी मानसिक उन्नति के शिखर पर चढे हुये बंगाल और बम्बे के लोगों से यथोचित स्पर्द्धा (fair competition) करने को उद्यत हैं—ऐसा करने से चाहो कुछ हानि हो वह मंजूर है पर अन्याय युक्त गवर्नमेंट की ओर से नामजद करने का तरीका (Nomination system) नहीं पसन्द करते अब हम पूछते हैं इन न्यून उन्नति वाली जातियों को यह हानि सहना क्यों गों है ? इसी से कि इन लोगों ने निश्चय कर लिया है कि यथोचित स्पर्द्धा के बिना हुये जातीयता (Nationality) हमारे में कभी नहीं आने की है-चाहो सिविल सर्विस आदि बड़े २ पद जो हमारे लिये एक प्रकार उन्नति के द्वार हैं बंगाल और बम्बे वालों को अधिक मिलजांय और पहले पहल हम इस्के घाटे में रहें पर अन्तको हमारी न्यूनता दूर होने का यदि कोई उपाय है तो इसी तरह के इन्तिज़ाम से सम्भव है—न कि हम अपनी न्यूनता तो स्वीकार करते रहें पर सर्कार से पक्षपात के लिये भी आशा रख भविष्य उन्नति की सदा के लिये जड़ काट डालें क्योंकि यथोचित स्पर्द्धा (free competition) को न होने देना मानो हिम्मत हारना और मर्दानगी से मुहमोरना है।

यह हमने केवल उदाहरण की रीति पर लिखा पर इस्से जो सिद्धान्त निकलती हैं इस्के विपरीत हम मुसल्मानों के आचरण देखते हैं जिनकी चेष्टा न केवल अपने हिन्दू भाइयों के साथ अन्याय युक्त पालिसी का बर्त्ताव ही अकेला है किन्तु यह चेष्टा अत्यन्त अदूर दर्शिता से अन्तको अपनेही कल्याण की बाधक होगी—और गवर्नमेंट को हम क्या कहें राजनैतिक शिक्षा (Political education) मेंहमारी गुरु वही ठहरी पर बिना कहे रहा भी नहीं जाता कि इस सब प्रबन्ध में हमारे गुरु लोगों ने अपने पक्षपात युक्त आचरण से नजानिये किस्की और किस तरह की भलाई सोचा है— यदि यह कहैं कि हमारी ब्रिटिश गवर्नमेंट महा प्रवीण है जिस्के आगे चाणक्य की दुर्बल छिछली और खुली नीति अति तुच्छ है जानती हो नहीं तो यह कहते भी हमें लाज आती है क्योंकि अपने गुरु लोगों के कान काटने की धृष्टता अभी हम्मे नहीं आई—इस्के विपरीत यदि यह मानलें कि सर्कार ये सब बातें भली भांत जानती है और इतने ही से क्या हजारों ऐसे दांव पेंच जानती है जिस्का खयाल हमको कभी स्वप्न में भी नसूझैगा तब यह प्रश्न उठता है कि इन सब बातों को जान कर भी इस पक्षपात की पालिसी को सर्कार क्यों बढ़ाया चाहती है ? हमारी उन्नति का बाधक क्या यह अन्याय सर्कार संयोग बश से किया चाहती है अथवा गूढ़ नीति के ढंग पर जानबूझ के कर रही है ? इन प्रश्नोंका उत्तर देना हमारी सामर्थि के बाहर है।

परम मित्र

परम मित्र की पदवी वही पा सक्ता है जिसके संसर्ग या साथ या देखने या जिसके कर्तब या दबाव से हित और पथ्य की बातैं सूझें इस समय भारत बर्ष का परम मित्र कोई ढूंढे या खोज करे या किसी से पूंछैतो जल्दी मे कोई नहीं बतला सक्ता यदि इस की शर्त बांध दी जाय तोभी बतलाना सहज नहीं है परम मित्र उस दोस्त को कहते हैं जिसका दर्जा सब से ऊंचा हो खैर हम बिना फीस या दक्षिणा पाये सेंतमेंत बतलाये दे-

ते हैं कि भारत वर्ष का परम मित्र दरिद्र है कि जिसके संसर्ग से हमें अनेक बातें सूझती जाती हैं और कितनी एक भविष्य में सूझेंगी और हज़ारों किम्बा लाखों किस्म को बातें तो पहले सूझ चुकी हैं किसी काल में यह हमारे परम सखा ब्राह्मणों के लिये तो मानो कल्प वृक्ष थे इन्हीं महात्मा की दिव्य दशा के दिनों में बेद और बेदांग पूर्ण रूप से प्रगट था बस एक यही ऐसे हितू थे कि ब्राह्मणों के तपस्स्वाध्याय रूपी महीपति को प्रति क्षण सावधान रखते थे वह इन्हीं की बताई हुई युक्ति थी कि जिससे ब्राह्मणो ने इन्द्रियों का दुर्व्यसन मांड़ पसा पसा के महा कर्मनाशा नदी में फेंक दियाथा कि जिसको आज कल के ब्राह्मण कुतिया के समान लपलपी जीभ से चाटरहे हैं यह नहीं सोचते कि हमारे पूर्व पुरुषों ने इस विषयासक्ति को घिनौनी बस्तु समझ त्याग दिया है—जिस समय हमारे परम मित्र दरिद्र जी हमारी तपो मयी राजलक्ष्मी की रक्षा और विद्या गुण कोषके बढ़ाने पर सन्नद्ध थे हमारा वही भोजपत्र जो अब रक्षा यंत्रमें बर्ताजाता है दिव्यजुलाहों का रचित अखंड वस्त्रथा और हमारा वही मृगचर्म जो अब केवल यज्ञोपवीत दान के समय दृष्टि गोचर होता है हमारा मांगलिक आभूषण था हमारा वनज कंदमूल और वह झरनों का पानी जो न मालूम किस के काम में आता है हमारे देव पितृ कार्य का सर्वस्वथा उसी अवस्था में उक्त परम मित्र की प्रेरणा से अनेक साहित्य और सृष्टिकी उपकारक वस्तु एकत्र की गईं हजारों क़िस्म के यंत्र औज़ार अस्त्र शस्त्र युद्ध शिक्षा और नीति के सूत्र रचे गये—उक्त परम मित्रने जब देखा कि ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र चारो भाई अपने २ अनुकूल साहित्य और सामग्री से परिपूर्ण होगये हैं तो एकाएक अन्तर्ध्यान होगये और ऐसी डुब्बी मारी कि समुद्र पार होरहे किसी को कुछ खबर नथी कि आप कहां बिराज रहे हैं कई शताब्दी के पश्चात् ज्ञातहुआ कि द्वीप द्वीपान्तरों की मास्टरी कर रहेथे वहां भी जाकर ऐसा कुछ उपाय बतलाया कि उन द्वीपान्तर वासियों के सब अभाव दूर होगये और सर्वाङ्ग परिपूर्ण होवे सब द्वीप द्वीपान्तर वासी भारतका बड़ा नाम सुन अपनी पूर्णता का भारत की पूर्णता के साथ मिलान करने को दौड़े

जिन के साथ ही साथ यह हमारे परम मित्र भी लौट आये और सबकी आंखों के खोलने की सुनादी कर रहे हैं पर कोई इनको बातजी लगाके नहीं सुन्ता कारण यह कि इनके उत्तम २ उपदेशों को बिलायतियोंने छीनलिया और इधर जी कुछ उपदेश कर गयेथे उस में उलट पुलट होगई अब कुछ दिन से इन्होने फिर उपदेश करने का आरंभ किया है ब्राह्मणों को पुरानी उत्तम बातें बतलाना चाहते हैं तो दुर्व्यसन और अनाचार मुंह पकड़ता और कहता है कि चुपरहो अभी हमारा ठेका बाकी है और क्षत्रियों की तरफ झुकके कुछ कहा चाहते हैं तो श्रोताओं के कान को आलस और अनुत्साह उगलियों से बंद कर देते हैं और बनिऔटी में तो अभी इनको कोई कुछ समझताही नहीं अब इनका इरादा है कि दूसरे ढंग का कानून और कायदा बनावें और एक नये ढंग का कमीशन नियत करें इनको आशा है कि अंगरेजी कानून और कायदों से इनको बड़ी मदद मिलेगी सो इन्शाह कलियुग ने वादा किया है कि हे हमारे परमेष्ट गुरू आप घबराइए मत हमने आपकारी और अदालत और स्टाम्प और रजिस्टरी के सरिश्ते को आप की मदद के लिये लिखा है और देहात के पासी कोल डोम और शहर के जुआरी गुंडे सब किस्म की रंडियां आप की मदद के लिये मुस्तैद हैं-इससे ज्ञात होता है कि हमारे परम मित्र का उपदेश फिर कभी चमकेगा।

संसार का सार

वक्रता कुटिलाई चालाकी नुमाइश ये सब संसार के परम प्रशस्त सारपदार्थ हैं जिसने इन्हे नजाना मारा गया-कालो के खप्पर में झोंक दिया गया-कौड़ी काम का न रहा-सौदाई कहलाया इस लिये संसार में रह कर यदि सारवान् हुआ चाहे तो इन राक्षसियों की सेवा में सदा तत्पर रहे एक क्षण के लिये भी अपने से इनको अलग न रक्खे—खैर हम तो इस्का प्रतिक्षण अनुभव करी रहे हैं नमूने की दस पांच बात आप को भी बतलाये देते हैं—

अंगरेज़ों ने हिन्दुस्तान को क्यों लिया इस लिये कि कुटिलाई और चालांकी में गुरु घंटाल हैं–हिन्दुस्तानी भकुआ गबुसर धोंधा और गाउदी क्यों समझे जाते हैं इस लिये कि इन्होने चालांकी बिल्कुल नहीं पढ़ा कुटिलाई का किंचित् भी अभ्यास न कर रक्खा आज तक अपनी स्वाभाविक सिधाई के परबश हो बराबर धोंखे पर धोंखा खाते जाते हैं अतएव असार हैं राह की ठिकुरी से भी अधिक बेक़दर हैं एक २ पैसे को मंहगे हैं—इसी तरह देशी चीज़ें बेकदर क्यों हुईं क्योंकि उन्में नुमाइश नहीं रहती अंगरेज़ी कारीगरी के मुकाबिले भद्दी मोटी खरखरही और मंहगी जंचती हैं–बाबा खरीदैं पोतै बरतैं इस किफायत और सूमपने को दरिद्रता के अनेक कारणो में छोड़ दीजिये–बिलायत की बनी चीज़ों की नुमाइश सुबुकपन और आसाइश पर ध्यान रखिये–एकही चीज़ को एक बार मंहगी से मंहगी खरीद आजन्म उसी के लिये सती होते रहे तो नई तरक्की और नई ईजाद फिर कहां रही–नीति और पालिटिक्स के मानेही यह है कि एक से एक बढ़ कर बुरा काम करते जाइये पर ऐसे ढंग से कीजिये कि किसी को बोलने की गुंजाइश न रहे क्योंकि अगर सब लोगों ने उसे ताड़ लिया तो नीतिज्ञ और बदमाश में भेदही क्या रहा—इन दोनों के उद्देश्य या दोनो के कामो के परिणाम मे कोई वास्तविक अन्तर नहीं है इस लिये कि न्याय अन्याय जैसे बने अपनी बढ़ती और दूसरे की घटती दोनो चाहते हैं फर्क इतनाही है कि नीतिज्ञ ऐसे ढंग से चलता है कि कानून या लोग उस्पर चूं नहीं कर सके बल्कि उस्के बिरुद्ध मुंह से कुछ निकालनाही खिलाफ कानून और जुर्म है—यह तो नीति हुई अब दूसरी ओर दृष्टि दीजिये यह कौन जानता है कि किस नून कैसा नाज़ुक वख्त किसी पर आ गिरै तब लाचार हो सरासर अपना फाइदा देख थोड़ी सी बेइमानी या अन्याय किसी ने किया तो कानूनभी गरज कर उस्के सिर पर सवार होता है लोगों की निगाह में भी वह हल्का जचने लगता है–पर जिनके हाथ मे कानूनो की गढ़न्त और जां बे जां बिलोंका चटपट पास करना रख दिया गया है उन्हे किस्की ताकत है कि

कुछ कई—प्रिन्स विस्मार्क जो आज दिन यूरोप भर मे बड़े २ नीतिज्ञों के सिर मौर हो रहे हैं जिनके बोलचाल के एक २ शब्द और ज़रा ज़रा से इशारों पर बहुत कुछ टिप्पनी और टीका क्यों किया जाता है इसी लिये कि उनकी बराबर कुटिल नीतिज्ञ संसार में कोई नहीं है—अब और आगे बढ़िये साक्षात् दंभ के महा पोषक ये भिन्न २ धर्म क्या हैं? केवल टट्टी के आड़ में शिकार—क्योंकि जैसी वंचकता कपट और खुशामद इन भिन्न २ मत और संप्रदाय के अगुआओं मे पैठ रही है वैसी इन नीतिज्ञों से भी न बन पड़ेगी इन स्वार्थ लम्पटों की वाणी सुनिये तो धर्म और उपदेश में सनी पर भीतर से यही ताक लग रही है कैसे ही इस अकुआ को चेला मूड़ जो कुछ फंसते बने पुजा लें—"वाचा धर्मान्प्रवदति मनसापापमिच्छति। ज्ञानीयात्तं मुनिश्रेष्ठाः महापातकिनंनरम्„ आप बीत राग हो कितना ही चाहते हैं कि हमे संसार को हवा न लगे पर कज्जल की कोठरी में बस कर बिना दाग लगे कोई बच सका है—सारांश यह कि जन समाज मे रह-कर यदि आप चाहते हैं कि हमसे सब खुश रहें और हमारी सुख्याति बनी रहे तो बिना कुछ रंगे चुंगे कभी संभव नहीं कि यह मतलब आपका सिद्ध हो—सबेरे से उठते ही न जानिये कितनी आधि व्याधि ग्रस्त हो सोच चिन्ता से जर्जरित कलेवर यहां के मारे वहां दर२ घूमते हुये क्षण भरके लिये भी स्वास्थ्य और विश्राम न पाया इस दशामे शामत के मारे आप से मुट भेड़ हो गई आप भी कौन जिन्हे देखते जी कुढ़ता है नाम लेते घिन-आई आती है पर संसार में रहनाहै इसी लिये अपने आभ्यन्तरिक भावों को गोपन करते खीस बाय आपसे हंसके बोलनाही पड़ा नहीं बोलते तो रूखेपनवडी या नाशाईस्तगी को बदनामी का ठिकरा सिर पर फूटता है थोड़ीसी लल्लो पत्तो और राम रमौअल के बाद कुशल प्रश्न के उत्तर मे यह कहते ही बना हां आपकी कृपा से सब आनन्द मंगल है—अब बतलाइये समझ बूझ कर भी ज़ाहिर दारी के लिये कितना झूठ कहना पड़ा हम को जैसा आनन्द मंगल है जी जानता है आप जैसे

कृपालु हैं हमारा अन्तरात्मा साक्षी है की जो कृपा के नाम पर हरताल पोते बैठे हैं खोटाई जाहीर दारी और झुठाई का जामा पहने हुये हैं पर नही आप के साथ नहीं मिल बजते तो गुजरान नहीं होती क्योंकि हमारे से समान शील तो कदाचित् इतने बिरल हों गे कि कहीं खोजने पर भी मिलैं या न मिलै झक मारें आप की हांमे हां मिलावें क्योंकि रहना और बर्तना तो आप लोगों के बीच है—किसी प्रकार के गुण का कहीं लेश तक नही आने पाया किसी प्रकार के सच्चरित्र की बासना भी नही है किन्तु पत्र लिखें गे तो "श्रीलश्री सर्वो पमा योग्य„ लिखेहीं गे बतलाइये इस्से परे प्रत्यक्ष मिथ्या बाद और क्या हो सक्ता है नई सभ्यता की परिपाटी का बात २ मे धन्य बाद प्रदान "थैंकयू„ कथन ने इस झूठी जाहीर दारी को उचाई के शिखर पर चढ़ा दिया है बोध होता है सभ्यता के थोड़ा और बढ़ने पर अब पदाघात से भी "थैंकयू„ के साथ एहसान मानने का क्रम निकल पड़ेगा और क्या आश्चर्य इसी एक बिषय का श्रवण मनन करते २ हम और आप दोनो पर इस नुमाइश का नशा सवार होजाय तो कड़ा चूर कहने वाले इस संसार से फिर उच्छिन्नही होजांयगे इस्से बस ।

होली क्या है

आज हम इस बात का निश्चय किया चाहते हैं कि होली क्या वस्तु है इस्का ऐसानाम क्यों पड़ा इस्का तात्पर्य क्याहै और क्यों लोग इस्मे ऐसे उन्मत्त होजाते हैं—बिचार करने से ऐसाजान पड़ता है कि हमारे प्राचीन आर्यों ने अपने धर्म तथा सामाजिक कार्यों में ४ के अङ्क को मुख्य रक्खाथा—चारही इनके वेद चारही वर्ण—चारही आश्रम—चारही साधन मुक्तिके—चारही पदार्थ—धर्म अर्थ काम मोक्ष—चारही प्रकार के भक्त "आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानीच भरतर्षभ„ चारही युग—ऐसाही चारही अपने मुख्य त्यौहार

नियत कर गये हैं—पहला सलोनो यह सब से पहला त्यौहार है जैसा सबसे प्रथम युग सत्य युग है और प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्य है जिस्मे मनुष्य के जीवन में विद्या ध्ययन प्रथम कर्म है सो इस सलोनो मे ऋषि तर्पण आदि अनेक ब्रह्मकर्म के उपरान्त अपनी २ शाखा और सूत्रके अनुसार नियत स्थलतक वेदका पठन पाठन समाप्त कर "अध्यायोत्सर्ग„ अर्थात् कुछ दिन के लिये अनध्याय तथा छुट्टी लेते हैं इन दिनो जैसा इन्ट्रेन्स आदि परीक्षाओं का दिन प्रति वर्ष अलग २ नियत किया जाता है हमारे यहां सो नहो कर एक विशेष दिन परीक्षा का नियत था उसी दिन बड़े २ कुल पति ऋषि जिनकी शाला ओं में दस हजार विद्यार्थी पढ़ते थे और उसकुल पति ऋषिकी ओरसे खाना कपड़ा पातेथे उन सबों को इस दिन परीक्षा होतीथी और सब लोग बड़ी खुशी मनाते थे—"मुनीनां दस साहस्रं योऽन्नदानादिपोषणात्। अध्यापयति विप्रर्षिरसौकुलपतिः स्मृतः„—प्रयाग में जैसा भारद्वाज ऋषिथे-प्राचीन आर्य गण अपने जीवन का प्रथम भाग विद्यो पार्जन ही में लगाते थे-साधन चतुष्टय में भी प्रथम साधन विवेक है जो विद्योपार्जनही के द्वारा होसक्ता है प्रथम युगमें भी सब लोग ज्ञानी होतेथे—"कृत युग सब योगी विज्ञानी कर हरि ध्यान तरहिं भवप्रानी„—

अब दूसरा युग त्रेता है इस्मे कर्म और उद्यमका प्राधान्य है—यथा—"त्रेता विविधयज्ञनर करहीं। प्रभुहिसमर्पि कर्म भव तरहीं—इसी प्रकार जीवन के द्वितीय भाग में उद्यम और पुरुषार्थ से अपने शत्रुओं को जय करना अर्थात् हमारे मनोर्थों के पूरा होनेमे जो बाधा आकर उपस्थित हों उनको परास्त कर अपने मनोर्थों को सिद्ध करना-यज्ञों में भी तप यज्ञ यही है कि भांत २ के कष्ट और सन्ताप सहकर अपने शत्रु काम क्रोधादिकों को पराजय कर वांछित फल को प्राप्त करना अंगरेजी मे इसी को "मार्टरडम„ और मुसल्मानो मे यही शहीद होना कहलाताहै इसीलिये दूसरा त्यौहार दशहरा या विजया दशमी है इस्मे सब ठौर शस्त्रों की पूजन महाराज श्रीरामचन्द्र जी

के और चरित्रों का स्मरण कर बीरत्व को प्राप्त होना आदि इस त्योहार का मुख्य कर्म है।

अब तीसरा युग द्वापर है इस युगमे हमारे भारत देशकी उन्नति अपनी चरम सीमाको पहुंची थी द्वितीय युग त्रेतामें जो परिश्रम किया गयाथा उस्का सुख रूप फल द्वापर मे भोगा और अपनी उपार्जित सम्पत्ति भगवत् प्रीत्यर्थ लगाते रहे यथा—द्वापर करि रघुपति पद पूजा नर भव तरहिं उपाय न दूजा„—इसी से तीसरा त्योहार दीवाली है कि इस्मे सब प्रकार अपने स्थानो को शुद्ध और मार्जितकर लक्ष्मीनारायण की पूजा करना और अपने उपार्जित धन को भोगना बिलसना इत्यादि अब रहा चौथा युग कलियुग जिस्का यह चौथा त्योहार होली है—यद्यपि कलियुग सब से अधम युग समझा जाता है पर वास्तव मे यह सब से उत्तम है जैसा कहा भी है—कलियुग सम युग आन नहि जो नरकर बिश्वास। गाय राम गुण गण बिमल भवतर बिनहि प्रयास—जैसे जप तप और ध्यान और युगो के साधन हैं वैसही भक्ति इस युग का साधन है और मुक्ति चौथी अवस्था है कि न किसी से बैर है नद्रोह है किसी को दूसरा नसमझ अपनाही रूप माने "अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम्! उदारचरितानान्तुबसुधैव कुटुम्बकम्„ "बैरनबिग्रह आसनचासासुखमयताहि सदासबबासा„ तीन अवस्थाओं मे मनुष्य सुख के बिबिध उपाय करता है प्रथम तो संसारी सुखों की प्राप्ति के लिये बिद्या पढ़ता है फिर अपने शत्रुओं के जय के लिये पुरूषार्थ करता है और अपना बल हरतरह पर बढ़ाता है और लोगों से बैर प्रीति आदि करता हुआ अपनी उन्नति साधन करता है—फिर इस रीति से प्राप्त धन के भोग की इच्छा करता हुआ अनेक मार्ग से उस धन को ब्यय करता है इस करने से बहुतों को हानि और बहुतों को लाभ पहुचाता है पर अन्तको यही सोचता है कि इन सब उपायों मे एक भी सुख की देने वाली नही है जो सुख सब से प्रीति के साथ मिलने मे है वह कहीं और किसी मे नही है और यही सोचता है कि जो कुछ होनीथी वह "होली„ अब अगे को सब भेद मिटाकर प्रीतिपूर्बक सब से मिलना सीखैं हमारा कोई कितनाही अपकार करै उस्की

साथ भी हम भलाई करें इसीलिये इस चौथे त्यौहार का नाम होली हुआ और इसका मुख्य कर्तव्य यही है कि कपट आदि जितनी मन की मैल है उन्हे दूर बहाय इस प्रकार शुद्ध हो लोगों से मिलें और स्नेह के जल से सबको भिगोवें कि जो कोई गाली दे वा अपनी कुछ हानि करे उस्से और भी प्रीति से मिलें—"चाखा चाहै प्रेमरस सीस देख मों लेय। जोतोसों अनहित करै ताहि अधिक रसदेय„ —लोक लाजको छोड़ संसार की प्रशंसा को गधे की सवारी समझ प्रेम के रंगमे रंगे रहैं जिस प्रकार कलियुग अन्तयुग और फागुन वर्ष का अन्त मास है वैसाही यह होली इस प्रकार से खेलीजाय तो मनुष्य जाति की उन्नति का अन्त याचरम सीमा की द्योतक हो—बहुतेरे लोग ऐसा भी कहते हैं कि भारत ऐसेही उपदेशों से गारत भया यहां के वासियों ने प्रेम २ रट किसी को दुसरा समझाही नहीं इनके परम वैरी यवनादिकों के साथ भी ये भलमनसाहत करते रहे जिस्का परिणाम यह हुआ कि धोखे मे आय सर्वस्व खोबैठे और खोते जाते हैं और चालाकी के पुतले विदेशी जन इन्हे अब तक गवुचर बनातेही जातेहैं पर हम कहते हैं जो कुछ इन्हो ने खोया वह भलमनसाहत के कारण नही किन्तुअपनी नासमझी और दैव के प्रतिकूल होने से खैर जो होनी सो होली अब सावधान हों तो यह भोती आर्य जाति की झोली फिर भी भर उठै ।

! एक गुरू चार चेला पाचों मिल के किहिन झमेला !

(१ ला—चेला) गुरू जी नमस्ते ।

(गुरू)—न भजते तो कैसे बचते ।

(२ रा चेला) आप की कृपा से ।

(गुरू)—कहो आनन्द मे तो रहेव ?

(३ रा चेला) बाबा जी की बातें कहूं सपने तक मा तो देखिस न होई।

(गुरू) यह क्यों क्या इसै कुछ कष्ट है?

(४ था चेला) कष्ट न होता तो ऐसही मुह बगारे दुखिया बना फिरता।

(गुरू) कौनसा कष्ट है—खाने पीने को तो जुरता जाता है?

(१ ला—चेला) सर्कारी टिक्कस और रोज उठ एक न एक चन्दा और उगाही के मारे जब जुरने पावै—रोजगार मे कुछ तत्त न रहिगा को जाने अपन निबाह कैसे कोऊ करत हैं—गुरू महाराज आप तो सब के घट २ की जान के भी अजान बने जात हौ।

(गुरु) हमे क्या मालूम हम तो दुनिया दारी सब छोड़ न दीन—हम यह सब का जानो--हम तो रात दिन मोह निद्या की कन्दरा में पड़े २ सोया करते हैं—जो यह जानते कि हमारे चेले चाटियों पर कलेस है तो रघुनाथ जी के ध्यान सुमिरन से उसको टारने का उपाय न सोचते--अच्छा तो सब पूरा २ वृत्तान्त कहो।

(२ रा--चेला) अच्छा सुनिये मै सब हाल बतावतहौं--सावधान—कहीं आप निद्रावस न हो जाना—अथ कथा का प्रारंभ।

(३ रा चेला रोक कर) नहीं २ अम कहु बिथा का प्रारम्भ।

(२ रा चेला) अच्छा ऐसाही सही—श्रोतासावधनम्—पहले एक चुंगी पिसाचिन का जन्म भा—जोकि राजा प्रजा धुनिया जुलाहा सबन के सिर पर बैठ कर इन तरह से सताबा कि रोजगारिन का खून चुहक लिहिस इतने मे महा चाण्डाल कानों का काल टिक्कस भूत घम्म से कूद पड़ा और लगा सबन का गला घोटने जिसके डर से लोग थाग थर २ कापने लगे–बड़ी चिरौरी बिनती कीन गई पर वह कानो का बहिरा आंखो का अन्धा न कुछ देखिस न सुनिस–दैयो का न डेरान जनम भर का भूखा चट पट सब को धर दबाइस और इन तरह अघाय के चरिस कि जो देही मा मास रहै सोऊ खाय डाइस और लाग पूजा तपौना मांगे तो सबन मिल के बिचार कीन कि कोऊ अच्छे नउतिहा

झरवैया से झराई साइत छोड़ दे–पचीसों नौतिहा अखबार वाले झाड़ फूंकजंत्र मंत्र के के बहुत कबुनाइन पर एकौ बाधा न दिखिस और रोज रोज जोर पकड़ता गा–सब झरवैया फुकवैया थक गये तब तो मोर सब चौकड़ी हेराय गई बड़े सोच सागर में पड़ेउं पर तुरते टोटका की एक डोंगी आय गय–सो उसी के सहारा में उन टोटकनका साधन करै लगेउं रोज जंत्री और पत्रा उलट २ देखा किहों कि वह जोग कबै आई कि मोर टोटका सुफल हो–पर ज्यों २ जोग नचकाय आवतगा त्यों २ कोजाने का आय मोहिका तो अच्छो तरह नामौ नहीं आवत लाग घर २ पूजा तपौना फूल बतासा मांगे–सो हे भाई "मरता क्यानकरता„ यह समझ हम ओहू दीन कि आपन खाजी पाय शान्त होइ जाई पर वह तो शान्त हो ना कैसा और हू भारी पड़त गै सुनाहै इस बरस और टिकस बढ़ावा जइ है—

इतने में गुरुजी बोल उठे "अच्छा चुपरहो अब कबहूं ऐसान कहना„—

(चेला) महाराज यह क्यों इस्का भेद बताओ?

(गुरु) भेद क्याबतावें इस्के सुनने से सब बुरामानें गे।

(चेला) बुरा मान के कोऊ का करी–झूरे हाड़ पर चाहै जो कोऊ छुरी खट खटाय लेय हमतो जुबिली की राह निहारत आस लगाये बैठ रहे कि जैसे पहले राजा बादशाह उत्सवों में हजारों गांव इलाके माफी में देडालती रहे खैरात करती थे प्रजाका बड़ा कल्याण होताथा सो हमारी राज राणी महाराणी श्रीमती विकटोरिया महाराणी के जुबली उत्सव मे ऊपर कहे भूत प्रेत डाकिनी शाकिनी से हमारा गला छुट जायगा— देवनागरी दफ्तरों में स्थान पावैगी—गोरक्षा का प्रवन्धहोगा—मौएकौन भा पुराने इतिहास और तवारीखों का विसर्जनकर दीनगा—कि जन्म उत्सव में वे लोग अपनी प्रजा गण को कैसा आनन्द देतेथे—

(गुरु) इस्मे किसी का क्या वश है–यह तो हमारे मनकी मौज है हम अपना प्रसाद तुह्मे नहीं देते तुह्मारा क्या दावा हैं—

(चेले) सच कहते हो गुरुजी जान लिया आप को भी–जाइये–सब गये।

। पसन्द ।

पसन्द आदमियों के शौक मे देखी जाती है और जिस ओर मनुष्य की रुचि जाती है या जिस तरह वह अपने मनके हवस को धधकती आग को बुझा सक्ता है वह तरहदारी ही उसकी पसन्द या रुचि को प्रगट करती है—यद्यपि आदमी के पसन्द की चीजें इनी गीनी दो चार हैं अर्थात् वे चीजें जो हम लोगों के मामूली खाने कपड़े सुगन्धि इत्यादि में जलद ते हो-सक्ती हैं पर उन्ही दोचार बातों पर मनुष्य का मन मदहस्नों स्रोत के द्वारा इतना अधिक बेग से दौड़ता फिरता है कि जिस्का रोक देना बिना कुछ आध्यात्मिक सहाड़े के असंभव सा जान पड़ता है और इसी कारण योगी जन संकल्प विकल्पात्मक मनही को मार डालते हैं तब पसन्द तो इस चं-चल मनका सच्चा मुग्ध बालक के समान है इसे कब मन में ठहरने के लिये स्थान मिल सक्ता है—अब चिरकाल से हमारे देश में अंगरेजी राज्य के भर पूर जम जाने से उस पसन्दके दो खण्ड होगये हैं अंगरेजी पसन्द और हिन्दुस्तानी पसन्द—अस्तु अंगरेजी सभ्यता की पसन्द जिस ढर्रे पर ढलक रही है उस्मे कुछ बिचित्र कार्कश्य और रुखापन पायाजाता है जिसे हम अपनी हिन्दुस्तानी पसन्द के साथ मिलाते हैं तो आकाश और पाताल का अन्तर देखाजाता है—पहले पहनने के कपड़ोंही को लीजिये माना कि हमारे साहब लोग अति शीतल देशके रहने वाले हैं इस कारण इनको भारी और अधिक कपड़ों की जरुरत पड़ती है पर कपड़ों में तूल और पशमीने के भांत २ के चिकने और नफीस कपड़ों की ईजाद होगई और दिन २ होती जाती है किन्तु साहब लोगों को टाटही अपने लिये पसन्द आता है सो क्यों इस्का यही कारण है कि टाटकी बुनावट मे जैसा कड़ा और खर खरा पन हमारे हुजूर लोगों के मिजाज के साथ जोड़ खाता है और जैसा आराम उस्मे उन्हें मिलता है वैसा बयालीस आंक की तनजेब या आबरवां में काहेको मिलने वाला है—तेल अथवा बाल या बदन में लगने की चीजें लीजिये तो जिसे

अंगरेज़ी पसन्द ने निहायत उमदा खुशबू मान रक्खा है शायद उन्हें देखने से भी हिन्दुस्तानी पसन्द वालों को घिन होगी बरन अंगरेज़ी खुशबू का कड़ापन हमारे हिन्दुस्तानियों को बरदाश्त नहोगा--खैर चुरटकी करीह और कड़ी दुर्गन्धि को छोड दीजिये "नाम बड़ा दरसन थोड़ा„ आपको गोलडेन लीफ तमाखू हमारी घटिया से घटिया तमाखू जिसे इस देशके गरीब से गरीब लोग पीते हैं उस्से भी कितनी अधिक कड़ी है—तात्पर्य यह कि अंगरेज़ी पसन्द की चीजों में एक ऐसी कर्कशता होती है जो हिन्दुस्तानियों को महा असह्य मालूम होती है—यद्यपि बहुत सी अंगरेज़ी वस्तु हमारे हिन्दुस्तानी भी अब बर्तने लगेहैं पर उन वस्तुओं को हिन्दुस्तानी पसन्द की चीज़ों के बराबर खूबसूरत और आराम देनेवाली मानेंगे यह सन्दिग्धही है क्योंकि खूबसूरती की कसौटी स्त्रियों की रुचि हम मानेंगे जिस वस्तु को स्त्रियों ने अपने लिये मण्डन की सामग्री मान लिया उसे पसन्दीदा कहने में किसी को कुछ उज़्र नहोगा और हमारे देश में स्त्रियों की रुचि अंगरेज़ी पसन्द की ओर झुकने को कौन कहे सर्वथा उस्के विरुद्ध है इस्का कारण भी हम यही कहेंगे कि उनकी कर्कशता वे बरदास्त नहीं कर सक्तीं–पर हिन्दुस्तानी पसन्द की चीज़ों में अंगरेज़ों को ऐसा नहोगा बहुत से साहब लोग चोरी छीपा हमारे पसन्दकी वस्तुओं को काम में लाते हैं पर खुला खुली उनके न वर्तने में शायद यह वजा है कि वे चीजें नेटिव लोगों के पसन्द की हैं—नेटिवों के वर्ताव की चीज़ों को खुला खुली अपने काममें लाना इस्से बढ़कर उनके वास्ते और क्या बेइज्ज़ती हो सक्ती है–अस्तु इन मामूली खान पान की चीज़ों को छोड़ अब हम उनकी संगीत का विचार करते हैं हमारे यहां के गान के अलंकार की सुघराई अंगरेज़ी संगीत में एक भी नहीं है जो इनके यहां के वाद्य यंत्रों पर ठीक ठीक उतर सकें इनके यहां सिवाय सात स्वरों के उतार चढ़ाव से बढ़ कर स्वरों की कोई दूसरी खूबसूरती हई नहीं जहां तक हम जानते हैं लय और तालों की अत्यन्तसूक्ष्मता जो यहां के स्वरों में है इनके यहां के बड़े से बड़े गान विद्या में प्रवीणों को भी कभी स्वप्न

में न सूझैगी—वास्तु विद्या मियामारी के हुनर में हम समझते हैं पक्के दर-जे की बारीकी और मज़बूती यहां ही है इनके बेजोड़ मकानो की खूब सूरती और बारीकी तथा मज़बूती देख दुःख होता है कि किसने इमारत के उन गुणो पर तलवार चलाय उन्हें सत्यानाश में मिलाया—इन सब अपूर्णता के होते भी ये परम बुद्धिमान् और सभ्यता की नाक हैं वही हमारे में सब तरह की पूर्णता के होते भी हम गवांर असभ्य और मूर्ख बन रहे हैं समय पड़ेकी बात है—"प्रतिकूलता मुप गतेहि विधौ विफलत्व मेंति बहुसाधनता-अवलम्बनाय दित भर्तु रभूत्र पतिष्यतः कर सहस्र मपि„—

। करमहीन को सब ठौर घाटाही घाटा है।

लीजिये फैनेन्स कमिटी के चिन्ह भी चमकने लगे और सर्कारी खर्च की तख फीफ जिस्के लिये देशी समाचार पत्रों ने सिर धुन डाला ज़ाहिर हुई यद्यपि इस कमिटी की रिपोर्ट ने अभी सूरज की रोशनी नही देखी पर उस्की कार रवाइयां नई दुलही के समान घूंघट खोल २ सबको झांकी देने लगी और हम लोगों का यह अन्देशा कि बहुत सा हिस्सा इस तख फीफ का हिन्दुस्ता-नियों ही के तरफ आझुकेगा वह सच निकला लीजिये हमारे देश के देश हितोटमाहियो आपका चाहा पूरा हुआ आप चाहते थे कि भारत गवर्नमेंट के भाण्डार से जो बहुत सा रुपया गरमियों मे पहाड़ों पर दफ्तर जाने मे हर साल उठा करता था सोनही वही हुआ-इस बात को सुन आप फूलकर आतशबाज़ी के गुब्बारा होगये होंगे आपकी कुन्द अकिल मे शायद हमारी महीन बात अभी नही धसी तो हम साफ २ न कहदें—हमारे लाट साहब का पूरा दफ्तर नैनीताल हर साल जाया करता था कहो हां—उस्के साथ क्लार्क लोग भी जाया करते थे कि नही—उनको रास्ते का खर्च मिला करता यह तो आप जानतेही हैं—बस वह खर्च अब उतना न मिला करेगा १००) या उस्से ऊपर तनखाह पाने वालों को तो पहले के बराबर मिलेहीगा सिर्फ

सैकड़ा पीछे दसही रुपये के हिसाब से कम होजांयगी पर सौसे नीचे वालों को बहुतही कम दिया जायगा—कदाचित् इसका पूरा २ भेद आपके मनमे न आयाहोगा तो वह भी सुनिये—सौ याभोसे ऊपर तनखाह पाने वाले लाट साहेब के दफ्तर मे कौन बहुत हैं और सौ के निचे तनखाह पाने वालों मे किन का नम्बर अधिक है—अबतो आपको थोड़ी अकिल मे हमारी बात कुछ धसती चली होगी—खैर तो जिस श्रेणी के क्लार्कों का राह खर्च घटा कर आधा कर दिया गया है उस श्रेणी मे आपके भाई बिरादर हिन्दुस्तानी बहुत हैं और सदा रहेंगे और जो सौ के ऊपर या सौ की तनखाह वाले लोग हैं उन्मे अधिक नम्बर यूरेशियन और किरानियों ही का है—तात्पर्य यह कि खर्च की किफायत आप चाहते थे सो आपही के साथ की गई अभी तो आपको चाहके बगीचे का यह पहला पौधा उगा है धीरे २ सब देखते जाइये और अपना भाग सराहते रहिये—

तर्कचूर्णिका

पूर्वप्रकाशितानन्तर

(२८) कार्य की उत्पत्ति के विषय में कारणों का नियम रहता है कि जो कारण जिस सम्बन्ध से उपलक्षित (पहिचाना गया) बन के कार्योत्पत्ति के स्थल में पूर्व में उपस्थित होके कार्योत्पत्ति करता है, अवश्य वह उसी सम्बन्ध से उपलक्षित बन के कार्योत्पत्ति के स्थल में पूर्व में उपस्थित हो लेगा तभी अपने कार्य की उत्पत्ति करेगा, अन्यथा (अर्थात् निज अपेक्षित सम्बन्ध से उपलक्षित बन के कार्योत्पत्ति के स्थल में पूर्व में उपस्थित भये बिना) कारण कदापि अपने कार्य की उत्पत्ति में समर्थ न होगा क्योंकि यदि उक्त नियम न होता तो कोई कारण चाहे कहीं भी क्यों न होता परन्तु अनिवारित अपना कार्य उत्पन्न किया करता जिससे कार्योत्पत्ति में महा असमञ्जस

हो जाता, उदा० यथा, जिन पदार्थों से कि घटकी उत्पत्ति हो सकती है उन में से मिट्टी पृथ्वी भर मे पड़ी है, दण्ड पेड़ में लगा है, कुम्भकार घर में लेटा है, परन्तु उक्त दशाओं में वे पदार्थ घट की उत्पत्ति में समर्थ नहीं हैं, तिसका हेतु यही है कि अपने कार्य (अर्थात् घट) की उत्पत्ति के विषय में उनका नियम है कि अपने कार्य की उत्पत्ति के स्थल में निज २ सम्बन्ध से उपलक्षित बन के उपस्थित हो लेवैं, अतएव जबलों उस नियम को वे पूरा न करेंगे स्वकार्योत्पत्तिमें सर्वथा तबलों असमर्थ रहैंगे, मिट्टीका नियम है कि स्वकार्य (अर्थात् घट) की उत्पत्ति के स्थल में स्वकार्य (अर्थात् घट) के साथ समवाय सम्बन्ध से (जिसकी चर्चा पश्चात् की जायेगी) उपलक्षित बन के पूर्व में उपस्थित हो, दण्ड का नियम है कि अपने व्यापार (जिसकी चर्चा पीछे की जावेगी) अर्थात् चक्र भ्रमण रूपी सम्बन्ध से उपलक्षित बन के स्वकार्य (अर्थात् घट) की उत्पत्ति के स्थल में पूर्व में उपस्थित हो, ऐसाही कुम्भकार का नियम है कि अपने व्यापार अर्थात् प्रयत्न और हस्तादि चालन रूपी सम्बन्ध से उपलक्षित बन के स्वकार्य (अर्थात् घट) की उत्पत्ति के स्थल में पूर्व में उपस्थित हो इत्यादि २ फलतः प्रत्येक कारण जबलों अपना उक्त विध नियम पूरा न कर ले तबलों उससे उसके कार्य की उत्पत्ति असम्भव है ।

स्मरण रखना चाहिये कि जो २ कारण जिस २ सम्बन्ध से उपलक्षित बन के स्व २ कार्योत्पत्ति के पूर्व में स्व २ कार्य की उत्पत्ति के स्थल में उपस्थित होने का नियम रखता है उस २ सम्बन्ध को कारणताका नियामक सम्बन्ध कहते हैं, उदा० यथा मिट्टी का समवाय सम्बन्ध, दण्ड का चक्र भ्रमण रूपी व्यापार सम्बन्ध उनकी निज २ कारणताका नियामक सम्बन्ध हैं, (नियम से काम कराने वाला नियामक कहलाता है) ।

(२८) विचारांश की बात है कि किसी एक कार्य पदार्थ की उत्पत्ति में इतने सूक्ष्मानुसूक्ष्म कारण होते हैं जिनकी कि गिनती करनी दुर्घट है, उदा० यथा, घट की उत्पत्ति में कुम्भकार और कुम्भकार का पिता, पितामह इत्यादि कारण अगण्य हैं, योंही अङ्कुरों की उत्पत्ति में जल के असङ्ख्य बिन्दु

कारण इत्यादि २ कौन गिनके कह सकता, है कि किस २ कार्य के (वस्तुतः) कितने २ कारण, हुए हैं ? बस इसी कठिनता के हेतु से मनुष्य की बुद्धि में जब जो कारण, कारणता के रूप में गृहीत होता है तब वही कारण, कारण कहा जाता है, परन्तु हां उस कारण में कारणका पूर्वोक्त लक्षण अवश्य पाया जावे अन्यथा अकारण को कारण जानने से वह कारणताका ज्ञान भ्रान्त्यात्मक होगा।

स्मरण रखना चाहिये कि मनुष्य की बुद्धि में जब जो कारण, कारणता के रूप में गृहीत होता है उसे छोड़ के और जो शेष बचे जिनकी कि पूर्वोपस्थिति थी सब के सब अन्यथा सिद्ध कहे जाते हैं, उदा० यथा, घट की उत्पत्ति में जिस समय कुम्भकार कारणता के रूप में मनुष्य की बुद्धि में गृहीत किया जाता है उस समय उस कुम्भकार का पिता व पितामह इत्यादि अन्यथा सिद्ध कहे जायगे क्योंकि उस ढङ्ग से कारणों की शाखा प्रशाखा के पुङ्खानुपुङ्ख अनुसन्धान से कारणताका विचार करने बैठें तो किसी न किसी ढङ्ग से सभी के सब कारण ठहर सकेंगे, तो कारणताके विचार में बड़ा गोलमाल हो जायगा,

इतने पर भी जब किसी प्रयोजन वश स्थूल लक्ष्य (ध्यान) से कुम्भकार के पिता आदि को किंवा मिट्टी ढोने वाले गर्दभ आदि की पूर्वोपस्थिति से उनकी कारणता मनुष्य की बुद्धि में गृहीत की जाती है, तब वे भी कारण कहे जाते हैं, उदा० यथा, कहनावत में प्रसिद्ध है "काटै धार नाम तलवार का॥ लड़ै सिपाही नाम सरकार का„ सूक्ष्म विचार से काटने का कारण तलवार की धारा है तथापि धारा के साथ सम्बन्ध रखने से उसके सम्बन्धी तलवार की कारणता स्थूल लक्ष्य से ग्रहण की जाती है, इसलिये तलवार ही को कारण कहते हैं, ऐसेही लड़ने का स्थूल कारण सिपाही हैं तथापि सूक्ष्म विचार से लड़ने का कारण सरकार की सेवा के सम्बन्ध से सरकार कहा जाता है, निदान उक्त व्यवस्था से जब जिस कारण पर अकारणता बुद्धि उदित होती है तब वह अन्यथा सिद्ध कहलाता है, (अन्यथा सिद्ध और प्रकार का भी हो

ता है जिसकी चर्चा आगे चल के होगी) नैयायिकोंकी बोल चाल में सुगमता के निमित्त अन्यथा सिद्ध को कारण कहने की परिपाटी नहीं है।

(३०) जब जो ज्ञान उत्पन्न होता है उस ज्ञान रूपी विषय में जो पदार्थ रूपी विषय जितना अंश भासमान रहता है उतने अंशमात्र विषय को व्यक्ति कहते हैं और कारणत्व वा कार्यत्वकी बुद्धि, व्यक्ति के ऊपर मनमें उदय होती है, उदा० यथा, कुण्डल में सुवर्ण का जितने अंश भासमान है उतने अंश व्यक्ति पर कारणत्वकी बुद्धि मनमें उदित होती है योंही जितना अंश सुवर्ण कुण्डल की दशा में बुद्धि में भासमान व्यक्ति है उतने अंशव्यक्ति के ऊपर कार्यत्व की बुद्धि, मनमें उदय होती है,।

(३१) कारण का लक्षण पूर्व में कहा जा चुका है, और कार्य का लक्षण यह है कि जिसकी उत्पत्ति होती है, उदा० यथा, अङ्कुर की उत्पत्ति होती है इस लिये अङ्कुर कार्य है, इत्यादि।

(३२ बटलोही भर भात की सिद्धि रूपी कार्य में प्रत्येक चावल का पकना कारण है, तथापि जितने चावल पके हैं उन सभों का पकना एक व्यक्ति विचारा जाके चावलों का पकना एक कारण माना जाता है, ऐसेही अङ्कुर की उत्पत्ति में जलबिन्दुओं के समूह को समझना चाहिये और योंही जब कुम्भकार की घट के प्रति कारणता गृहीत की जाती है तब उसके व्यापार अर्थात् प्रयत्न और हस्तचालनादि सब के सब एक व्यक्ति समझे जाते हैं, क्योंकि संक्षेप से यदि ऐसा ग्रहण न कर लिया जावे तो किस सूक्ष्मानुसूक्ष्म को कारण कहैं तिसके विषय में बड़ा पचड़ा पड़ जायेगा।

सरांश यह है कि जितनी दूरी पर्यन्त कारणता ग्रहण की जावे तिसका नियामक बुद्धि है, क्योंकि जब जितनी दूरी पर्यन्त कारणता बुद्धि में गृहीत होती है तब तितनी दूरी पर्यन्त कारणता स्वीकृत होती है।

कारण के विषय में जैसा उल्लेख किया वैसा ही कार्य के विषय में भी समझना चाहिये कि जब जितनी दूरी पर्य्यन्त कार्यत्व, बुद्धि में ग्रहण किया जावे तब तितनी दूरी पर्यन्त कार्यत्व स्वीकृत होता है, उत्तम उदा० इसका धूम है, क्योंकि जब जितना धूम कार्य के रूप में बुद्धि में गृहीत होता है तब उतने अंश को कार्य कहते हैं ऐसा ही मेघ के विषय में भी समझो।

(३३) कारणत्व वा कार्यत्व की बुद्धि अनाप सनाप नहीं उत्पन्न हो जाती है, क्योंकि यदि अनाप सनाप उत्पन्न हुआ करती तो कारणत्व वा कार्यत्व की बुद्धि का कुछ भी ठिकाना नहीं रहता, बरन उसके उत्पन्न होने में पदार्थों के आपस के सम्बन्ध नियामक रहते हैं अतएव कारणत्व वा कार्यत्व का विचार परिष्कृत हो सकता है, अन्यथा किसको सामर्थ्य था कि अमुक को कारण वा अमुकको कार्य निरूपण करे अब हम कारणत्व वा कार्यत्वकी बुद्धि की उत्पत्ति मे नियामक सम्बन्ध को कुछ चर्चा करते हैं। क्रमशः

प्राप्ति स्वीकार।

हम सर्कार को धन्यवाद पूर्वक इंडिया गवर्नमेंट गजट की प्राप्ति स्वीकार करते हैं—हम इसे गवर्नमेंट की बड़ी कृपा मानते हैं जो भाषा के पत्रों को यह गजट बिना दाम दिये जाने का प्रबन्ध किया गया क्योंकि हम लोगों के पत्रों को अभी वह दशा नहीं आई कि ऐसे २ दामी पत्रों को खरीद सकैं—दूसरा बड़ा लाभ इस्से यह है कि हम लोगों को सर्कारी कार रवाइयों के जानने का कोई ज़रिया न था तो बहक कर और का और गाय जाते थे सो अब न होगा।

हिन्दीप्रदीप ।

मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंदभरै ॥
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप समथिर नहिंटरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

१ मार्च सन् १८८७ | जिल्द १० संख्या ७

इलाहाबाद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
मनेजर बाबू नीलमनी सरकार के प्रबन्ध से देशोपकारक
यंत्रालय में प्रकाशित किया गया

मूल्य अग्रिम ३।=) पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १॥=)

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द १०
संख्या ७

१ मार्च
सन् १८८७ ई०

। काबुल के बिद्रोह में सर्कार क्यों पड़ती है ?

इन दिनो समाचार पत्रों में काबुल के बिद्रोह की बड़ी गरम खबर उड़ रही है वहां गिलजी लोगों की एक निपट असभ्य जाति है सो सुनने में आता है कि काबुल के अमीर अबदुर रहमान से इसलिये बिगड़ गई है कि अमीर उनके साथ बड़ा अत्याचार करते थे और मामूल से अधिक टेक्स उन्से वसूल करने का इरादा कर रहे थे—यद्यपि अमीर ने बड़ा यत्न किया कि बिद्रोह न होने दें पर उनकी एक भी न चली कोई कहते हैं इस बिद्रोह में अमीर मारे गये कोई कहते हैं छिपे हैं—जोहो पर यह सर्बथा निश्चय है कि गिलजी लोगों से अमीर हार गये और अब इस समय काबुल में नितान्त अराजकता छाई हुई है—

यदि यह बात सच है कि अमीर हार गये तो हमारी अंगरेजी गवर्नमेंट को अब क्या करना पड़ेगा—याकूब को मनसूरी

२४६

मे कैद कर रक्खा है अयूब फारस मे कैद हैं अबदुर रहमान का वह हाल हुआ—याकूब को जो काबुल का राज्यासन फिर दिया जाय तो उनके सह्माले सम्हलेगा नहीं क्योंकि काबुल वाले याकूब से बड़े नाराज़ हैं और उनसे किसी तरह न डरेंगे यह एक बार देख लिया गया सरलुइस केवेनरी याकूब के बचाये न बचे काबुल के लोगो ने उन्हे मारही डाला—अयूब अंगरेजों का परम शत्रु है उसे देहोंगे नहीं—यदि किसी चौथे को जो काबुल के राज वंश में नहीं है उसे वहां के तख्त पर बैठाना चाहें तो काबुलिये उस्से कभी न दबैंगे क्योंकि उनको अंगरेजी गवर्नमेंट के बनाये राजा से महा घिन है—गिलजी मुल्लाओं को वहां का राज्यपद देते थे पर उन्हो ने ग्रहण नहीं किया अब सोचना चाहिये कि यदि सचमूच अबदुर रहमान मारागया तो इतना रुपया जो यहां की प्रजा का प्राणगत रुधिर के समान पंप लगा कर खींच २ के दिया गया जिसमे अबदुररहमान हमारी गवर्नमेंट से खुश रहें और काम पड़ने पर रूसियों से न मिल जांय सो सब व्यर्थ हुआ मानो भार में झोंक दिया गया—अब काबुल के साथ युद्ध करने का सब सामान इकट्ठा करना पड़ेगा उपरान्त काबुल मे या तो दखल करना पड़ेगा या वहां का कुछ इन्तिज़ाम कर लौट आना उचित समझा जायगा इस सब के होने मे भी हिन्दुस्तान ही के रुपये की बरबादी और खुआरी होगी—योंही इस देश का दिवाला निकल रहा है कर्ज़ पर कर्ज़ बढ़ताही जाता है इस साल के "बजट" सर्कारी जमा खर्च में साढ़े पांच करोड़ के घाटाने ग्वालियर का खाहा किया

और सेंधिया की जन्मो की कमाई सब एक बालिश्त भर कागद प्रोमिसरी नोट से समा गई दूसरे साल इस विद्यमान काबुल विद्रोह के शमन की चेष्टा से जो खर्च होगा उसमें कोई दूसरी रियासत का स्वाहा होगा।

माना गि अबदुर रहमान अभी बचा है मारा नहीं गया तो यह क्या कि ऐसे निष्ठुर अत्याचारी का पोषण करना जो अपने जुल्म से वहां की प्रजा का नाकों दम कर रहा है और ब्रह्मा के राजा थीबा को उसी अत्याचार के कारण पदच्युत कर कैद कर रखना यह कहां की बिमल नीति है ?

लार्ड लारेंस ने कहा था कि हिन्दुस्तान की स्वाभाविक सीमा को पुष्ट रक्खें हिन्दुस्तान और अफगानिस्तान के बीच में जो हिन्दूकुश पर्वत की घाटियां हैं वह इस देश के लिये प्राकृतिक दुर्ग सा हई है उसी के आस पास कहीं पर ठौर २ किले और गढ़ी बनवा दी जांय सेना समूह सदा वहीं रहा करे इत्यादि बातें जो इस देश की रक्षा के लिये उचित हो कर दी जांय तो काबुल अथवा रूस कोई हमारा कुछ न कर सकेगा—सो न कर आज पेशावर में सीमातिक्रम किया गया कल हिरात में किया जायगा फिर और आगे बढ़ कर कहीं पर सीमास्थापित करने का बिचार होगा—लोभ का अन्त न ठहरा ईश्वर की कृपा से जितना हाथ लग गया है वह सम्हाला न सम्हाले बला से आगे बढ़ते चलो—हमारी ब्रिटिश गवर्नमेंट प्राचीन रोम के महा साम्राज्य का ठीक अनुकरण कर रही है देखिये इङ्गा

परिणाम क्या होता है—काबुल की इतनी खातिर दारी और भेंट पूजा से हम नहीं समझते सर्कार ने कौन सा बड़ा लाभ सोच रक्खा है काबुल सा क्षुद्र राज्य का रोका कभी रूस सरीखा भयानक भालू रुकने वाला है जिस समय ये दोनो विकराल सिंह और भालू भिड़ जांयगे उस समय क्षुद्र काबुल पिस कर चूर २ हो धूल में मिल जायगा तब इसकी झार फूंक और रक्षा बिलकुल बेहूदगी है।

। रणधीर सुन्दरी।

। उपन्यास।

बाबू हरदेव प्रसाद सम्पादित

यद्यपि इस समय बहुत से बन काट डाले गये और अब उस भूमि में बहुत से गांव खेड़े बस गये और बसते जाते हैं खेतियां होती हैं और साम्प्रतिक राजा को यही अभीष्ट है कि जहां तक होसके बनों को काट २ जो पृथ्वी उनके कारण व्यर्थ पड़ी है वह सब खेती बारी के काम मे आकर मनुष्यों के सुख को उपयोगी हो परन्तु उस समय जब का इतिहास हम लिखते हैं इस भारत भूमि का अधिकांश दुर्गम गहन कानन और बनों से घिरा हुआ था—उस समय के और अब के विचार में बड़ा अन्तर है उस समय के लोग यह समझते थे कि देश में बनो का रहना प्रजा को बड़ा लाभदायक और उन से देश की शोभा है—जैसा कोई नगर जिस्में बाग बगीचे न हों वह रमणीक नहीं मालूम होता चाहो गृह और मन्दिर उस नगर में बढ़िया से बढ़िया बने हो इसी प्रकार कोई देश जो बनो से शून्य है वह कभी शोभा नहीं पाता चाहो उस्में कैसेही रमणीक और जन सङ्कीर्ण नगर बसे हों—देश में बन के रहने से एक बड़ा उपकार तो यही है कि प्राकृतिक

नियम के अनुसार वर्षा बहुत अच्छी होती है और अनेक प्रकार के रोगों की रुकावट रहती है—बन के हिंसक पशुओं को बास स्थान मिलता है वे सुख से इसमें विचरा करते हैं मनुष्यों की बस्ती में आकर जन समाज को दुःख नहीं पहुंचाते दूसरे हमारे प्राचीन आर्यों की न्याय परता दयालुता और उदारता की परख इसमें थी जिनके गूढ़ विचार में यह आया कि पशुओं के समूह भी अपने स्वामी और सर्व सामान्य पिता जगदीश्वर की सृष्टि में बसने और सुख से रहने का उतनाही अधिकार रखते हैं जितना हमको है इस लिये सम्पूर्ण देश का उन्होंने दो भाग कर बन को पशुओं के लिये छोड़ दिया और बस्ती अपने लिये रख छोड़ी—अस्तु पहले इसके कि उस समय के किसी बन की शोभा के वर्णन से हम अपने पाठकों का मन रमावें देश की दशा की भी संक्षिप्त समालोचना उचित जान पड़ती है—

क्योंकि हमारी कथा का आरंभ उस काल से है जब कि पश्चिम के लोगों ने पहलेही पहल इसदेशपर आक्रमण किया और व्यर्थ वीराभिमानी क्षत्रियों ने भी उनपाश्चात्यों के अधिकार को महा प्रमाद समझ सब प्रकार उनका पदाघात सहने में लज्जित न हो उनको अपना स्वामी कह के सर्व तो भाव से उनकी सेवा में तत्पर रहे और उनकी ओर हो अपनेही देश भाइयों की जड़ उखाड़ने में सब तरह लगे रहते थे चाहो अन्यायही से उन्होंने इन का देश छीनने का प्रयत्न क्यों न किया हो—इस प्रकार साहस वीरता पुरुषार्थ का विसर्जन होजाने पर भी प्रकृति देवी भारत भूमि पर सहोदर भगिनी का भाव प्रगट करती अपने मन्द मुसक्यान से यहां बन उपबनो को सुशोभित कर रही थीं—भारत के उत्तराखण्ड का विस्तार और वहां के सघन बन जिसके करणगोचर न हुए होंगे स्वयमुत्पन्न जटिल लताओं से आवेष्टित जहां के एक २ वृक्ष मानो भगवान स्वयंभू ब्रह्मा और धूर्जटी महादेव का अनुकरण करते हुये अपनी एकान्तर निराली हरियाली को प्राकृति शोभासे मानो ऋतुराज का बारहो मास बास के लिये मन लोभा रहे हैं-जहां को बनस्थली में यह अद्भुत गुण देखा जाता है कि सब वृक्ष सब समय में अङ्कुरित पल्लवित

मुकुलित और फलित हो अपने आश्रित जीवों को कल्प वृक्ष के समान सब प्रकार के सुख के सम्पादन की सामग्री सदा प्रस्तुत किये रहते हैं—जहां सदा बसने के लोभही से लोगों ने कदाचित ऋतुराज का बसन्त नाम धर लिया हो अस्तु इस बनस्थली रंगशाला में बसन्त नायक का नाट्य यद्यपि स्थायी भाव से रहता है सही पर वर्षा का हर्ष शरद का आमोद हेमन्त का सन्तोष शिशिर का सुख भी क्रम २ संचारी बन भौतिक पदार्थों पर समय से अपनी सत्ता प्रकाश करती ही हैं-जहां की * साल कानन शोभिनी उद्यान माला बाला नव युवती सी शोभा दे रही है पंक्ति के पंक्ति नील तमाल वृक्षों पर पंख फैलाये नाचते हुये मयूरों को दूर से देख पथिकों को काली घटा पर शतह्रदा दामिनी की दमक का भ्रम होता है-एक दिन इस बन मे दो अश्वारोही देख पड़े और ये दोनो युवा पुरुष चुप चाप चले जारहे हैं और इन दोनो की चितवन और आकृति से बोध होता था कि किसी बात के विचार मे मग्न घोड़े पर चढ़े चले जाते हैं एक का बय तो १८ वर्ष के लगभग है जिस्के मुख की कान्ति मनसिज के मन को भी लज्जा दिलाती है ऊंचा माथा शंख की सी गरदन—वीर रस में पगी आजानुलम्ब बाहु-वृष स्कन्ध—कपाट तुल्य चौड़ा वक्षस्थल—कुआं सी गहरी नाभी अलग २ भीमसेन के दृढ़ अंगों का अनुहार कर रहे हैं अस्त्र शस्त्र से ऐसा सजा बजा है मानो दूसरा अर्जुन है परन्तु ललाट पर जो बल पड़े हुये हैं उस्से यही जाना जाता है कि इसे कुछ सोच है—दूसरा पुरुष ऋषि के भेख मे है परन्तु ब्राह्मण है सो इस्के फुरतीले गठीले अंगों की गढ़न से कभी प्रतीत नहीं होता-वय इस्का ३० वर्ष के लग भग है पर देखने में पचीस अथवा छब्बीस वर्ष से अधिक किसी को अनुमान न होगा—इस्की रूप माधुरी देख बोध होता है कि यह भी कोई राजकुमार है संसार से विरक्त हो बनो में मुनियों की भांत रहता है अथवा दूसरे महाराज भरत हैं जो अपनी

* अलक सहित मुख से शोभा देती हुई बाला-दूसरे पक्षमे शालवृक्ष का कानन अर्थात् बन ।

भ्राता श्रीराम चन्द्र के विरह में ऋषि वेशधारण किये हैं—इन्मे से छोटे का नाम रणधीर सिंह पर बड़े का नाम कोई नहीं जानता आश्रम में सब लोग धीरानन्द नाम से पुकारते हैं इस लिये हम भी इसे इसी नाम से अपने पाठकों को परिचित करते हैं—।

हम पहले कह चुके हैं ये दोनो चुप चप घोड़े पर चढ़े कुछ सोचते चले जा रहे हैं परन्तु वे किस सोच में भरे हुये थे कौन जान सक्ता है—आध घंटे लों वे दोनो मौन साधे चले गये उपरान्त रणधीर सिंह बोले स्वामी धीरानन्द जी आप को कुछ ज्ञात हो तो बतला दीजिये महर्षि धौम्यने मुझे आज ऐसा क्या अपनी कृपा के योग्य समझा जो हम सरीखे क्षत्रिया धम को अपने दर्शन को बुला भेजा—धन्य मेरे भाग्य आज मैं सफल जन्मा हूं जो मुनि श्रेष्ठ का चरणस्पर्श करूंगा और आशा है महर्षि के चरण कमलों के दर्शन से मेरी सब अभिलाषा पूरी होगी—स्वामी धीरानन्द जी ने उत्तर दिया राज कुमार जी हम जानते भी होंतो हम को इस विषय मे कुछ कहने की आज्ञा महर्षि की नहीं है थोड़ी ही देर मे तुम आश्रम को पहुंच जाते हो वहां पहुंच कर आपही महा मुनि के मुखारबिन्द से सब वृत्तान्त जान लेना इतने आतुर क्यों होते हो पर इतना तो हम जानते हैं कि धौम्य महाराज का आपके ऊपर बड़ा छोह है और कुछ आपही के हित के लिये आप को बुलाया है—पर राजकुमार आप ग्लानि से अपने मन मे इतनी टूट क्यों माने हुये हो और क्यों अपने को क्षत्रिया धम कहते हो आप इस समय अस्त्रविद्या के जानने और पराक्रम मे अर्जुन के समान हो।

रणधीर बोला स्वामी जो महाराज आप यह क्या कहते हैं हमारे पूर्व पुरुष अर्जुन सरीखे पराक्रमी जनों को समता कैसी हमतो उन कीसी बीरता और पराक्रम आदि लोकोत्तर गुणो का लवांश भी अपने में नही पाते तब क्षत्रिया धम नहीं तोक्या हैं—

नहीं २ कुमार हमे बन वासियों कीसी मिथ्या प्रशंसा से प्रयोजन क्या हम यथार्थ में जैसा देखते हैं वा समझते हैं सोकहते हैं—हां जो बल और

पराक्रम ही पर अपने प्रयोजन की सिद्धि में न लगावें और अपना कर्तव्य कर्म न करें तो निस्सन्देह शोक का कारण हो सक्ता है परन्तु आप के लिये शोक का वह कारण भी उपस्थित नहीं है तब आप अपने को क्यों इतना तिरस्कृत मानते हो—और अपने को ऐसा मानना उचित भी नहीं है क्योंकि अपने आत्मा का तिरस्कार करने से आगे को बल पौरुष और पुरुषार्थ क्षीण होता है किन्तु इसपर सदा लक्ष्य रक्खे कि जो कुछ हमारा कर्तव्य है वह करते हैं चाहो कार्य की सिद्धि हो वा नहो भगवद्वाक्य है—कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन—ऐसी समझ रखने से मनुष्य का उत्साह भंग नहीं होता किन्तु जितना उद्यम और परिश्रम करता जाता है उतनाही उत्साह दूना बढ़ता जाता है जैसा ज्वारी चाहो हारे वा जीते जब तक उसके पास धन रहता है खेलने से मुह नहीं मोरता जीत में चाहो खेल छोड़ भी दे पर हार मे तो कभी छोड़ताही नहीं इसी प्रकार साहसी पुरुषों को अपने बल पराक्रम की निन्दा करना कभी ठीक नहीं—यह सुन रणधीर बोला स्वामी जी हमारा तात्पर्य यह नहीं था कि इसग्लानि से हम अपने कर्तव्य से हट जांय किन्तु खेद होता है कि क्षत्रियों का बीज रहते भी भारत की ऐसी दीन दशा हो तो ऐसे क्षत्रियों को धिक्कार है और उनके बल और पौरुष पर सहस्त्रों फिटकार है—अपनी मातृ भूमि अपना धर्म अपनी स्वतंत्रता अपना स्वत्वाभिमान सब शत्रु के समर्पण कर आत्म सुख रतहो चैन की निद्रा में सोते हैं।

स्वामी धीरानन्द बोले राजकुमार इसमें उनका भी कुछ दोष नहीं है समय बड़ा प्रबल है अर्जुन से पराक्रमी के हाथ से भील लोग यदुवंशी स्त्रियों को छीन लेगये अर्जुन खड़े २ मुह ताकते रहगये कुछ न बन पड़ा नजानिये उनका सब पराक्रम कहां बिलाय गया—

पाठक रणधीर की बातों से आपको विदित हो गया होगा कि उसे अपने देश की दीन दशा का कितना शोक था और दिन रात उसके मन मे यह खटक लगी रहती थी—पर धीरानन्द की चित्त वृति मुनियों के संगसे कुछ ऐसी

होगई थी कि किसी बात से उस्के मन मे व्यग्रता और घबड़ाहट आतीही नथी प्रिय अप्रिय जो कुछ आपड़ता था सबको एकसा जान सब मे ईश्वर की इच्छा मात्र सन्तुष्ट रहता था—इस प्रकार बात चीत करते उस गभिन बन के अन्त तक दोनो पहुंचे और आगे तपोवन के सब चिन्ह देख पड़ने लगे—दूरही से घ्राण इन्द्री को तृप्त करती जहां संध्या के अग्निहोत्र का धूम आकाश वितान को चितकबरा कर रहा है—यूथ के यूथ ऋषि कुमारों का लय और स्वर सहित वेद पाठ कान को एक अकृत्रिम सुख पहुंचाने लगा—ज्यों २ आश्रम के समीप पहुंचते गये करुणा मैत्री और शान्ति का साम्राज्य देखा गया—योगबल के अनेक प्रभाव सुनने मे आते थे सो रणधीर को वहां प्रत्यक्ष होगया तिर्यक्योनि पशु पक्षी भी जहां अपने स्वाभाविक विरोध से मुंह मोड़ शेर और बकरी एक ही स्थान मे बसते थे अतएव भय आदि उद्वेग जनक किसी बातों के नहोने से कंप केवल कदली वृक्षों ही मे आरहा—तपश्चर्या की अविच्छिन्न शान्ति के कारण मन जिस्की चंचलता की उपमा दी जाती है सो भी वहां आश्रम वासियों के मन से अलग हो केवल मृग बालकों ही मे आटिकी—किं बहुना पहुंचते ही रणधीर का सब शोक जाता रहा आनन्द से प्रफुल्लित होगया सब विकलता दूर हो एक प्रकार की शान्ति मन में समाय गई चकितसा हो थोड़ी देर ठिटक गया और बोला धीरानन्द जी आप क्या सदेह मुझे शिवलोक में लेआये हैं स्वर्ग सुख का वर्णन शास्त्रों में सुनाथा परन्तु यह अलौकिक सुख तो कुछ औरही वस्तु है—मुझे ऐसा जानपड़ता है कि मै पृथ्वी का निवासी नही हूं संसार जिसे हम अब तक बहुत समझे हुये थे कुछ रहाही नहीं संसारी लोगों को इस स्थान के दर्शन के सुख का अनुभव स्वप्न मे भी हुआ होता तो स्वर्गादिक की प्राप्ति के लिये बड़े २ यम नियम व्रत और तपश्चर्या के द्वारा व्यर्थ अपने शरीर को इतना क्लेश कभी नदेते—इन बातों को सुन धीरानन्द अपने मन मे बहुत हंसे और कहने लगे—राज पुत्र ऋषि का आश्रम यहां ही से आरंभ होता है अब इस्के आगे ऋषि महाराज

के दर्शन और उपदेश से अभी आपको इससे अधिक आनन्द प्राप्त होगा परन्तु अब भगवान् दिन मणि चरमा चल पर पधारा चाहते हैं सन्ध्या का समय हो गया यह सरोवर भी पास है यहां सन्ध्या वन्दन आदि ईश्वरोपासना के नित्य कर्म से फराकत हो तब आगे चलें गे—पाठक जन अब आप भी यहां थोड़ा विश्राम कर लीजिये इसके आगे की कथा हम दूसरे अंक में आप के कर्ण रसायन करें गे--क्रमशः—

। भ्रान्ति भंजन ।

आज कल के लोग बहुधा कहा करते हैं कि भारत के अधः पात का असाधारण कारण ब्राह्मण जाति है परन्तु पूर्व काल मे इस देश की उन्नति का असाधारण कारण ब्राह्मण जाति थी इस विषय मे कितना अंश भ्रान्ति का है सो नीचे निरूपण किया जाता हैं—जन्म और कर्म दोनो से यदि ब्राह्मण को ब्राह्मण स्वीकार करें तो आज काल की कर्म हीन ब्राह्मण जाति जो केवल जन्म से ब्राह्मण रहगई है वह ब्राह्मण जाति नहीं कही जा सक्ती और केवल कर्म से यदि ब्राह्मण जाति मानें तो क्वचित् युगान्तर मे यद्यपि मानी भी जाती थी पर इन दिनो केवल कर्मसेही ब्राह्मण जाति स्वीकार करने में बड़ी आपत्ति आपड़े गी और यदि केवल जन्म से ब्राह्मण को ब्राह्मण मानें तो यज्ञोपवीत आदि संस्कार व्यर्थ होते हैं इस लिये ब्राह्मण के कुल मे उत्पन्न यज्ञोपवीत संस्कार संपन्न कोही ब्राह्मण कहें गे–प्राचीन काल में केवल कर्म से ब्राह्मण मान भी लिये जाते थे तो कितने पचड़े से महाभारत आदि ग्रन्थों के देखने से ज्ञातहोताहै कि ब्राह्मण जातिहीको यह सामर्थ्य था कि अन्य जातिको ब्राह्मण जाति किसी हेतु से मान लेवे वा न मानलेवे—उसी ब्राह्मण जातिने वर्तमान् युग के लिये यही व्यवस्था रक्खी है कि जो ब्राह्मण के कुल मे उत्पन्न हो कर ब्राह्मण का सब संस्कार पावे उसी को ब्राह्मण जाति स्वीकार कीजावे–ब्राह्मण के कर्म पर बिलकुल जोर नदेकर कुल और यज्ञोपवीत आदि संस्कारही से ब्राह्मण

जाति की प्रधानता इस युग के लिये मानीगई है—अब यहां पर विचार करने का अवसर है कि कर्म से ब्राह्मण जाति की प्रधानता मानने वाली व्यवस्था (जिस्के द्वारा अन्य जाति वाले भी ब्राह्मण जाति मे समावेशित हो सक्तेथे) का भंग होजानाही भारत वर्ष के अधः पात का बीज हुआ परन्तु सोचने की बात है कि पहले से प्रचलित व्यवस्था के भंग की तभी संभावना की जाती है जब कि उस्के द्वारा किसी अंश मे कुफल की प्राप्ति हो अथवा कोई बलवान् बलपूर्वक उसे किसी छिपे हुये "दुरभि सन्धि„ दुष्ट आशय से भंग करावे इन दो बातों मे पहली बात अर्थात् कुफल की प्राप्ति यदि ठीक है तो ब्राह्मण जाति निर्दोष बच जाती है क्योंकि ब्राह्मणों ने जब उस व्यवस्था के प्रचलित रहने से कुफल की संभावना देखा तो उसे भंगकर दूसरी नई व्यवस्था अर्थात् ब्राह्मण का कर्म न रहने पर भी कुल और संस्कारही से ब्राह्मण जाति की प्रधानता निर्भर रक्खा—यदि दूसरा पक्ष ग्रहण किया जाय और उस्के साथ ब्राह्मण की जाति भी बलवती मानी जाय तो दुरभिसन्धि के कारण से ब्राह्मण जाति पर दोष आरोपण किया जा सक्ता है परन्तु जो जाति पूर्व में दुरभिसन्धि नही रखती उस्मे दुरभिसन्धि का लेश योंही अनायास नहीं आगया किन्तु बल आजाने के कारण यह संभव है कि ब्राह्मण जाति के चित्त में दुरभिसन्धि ने प्रवेश किया हो और ब्राह्मण जाति को भारत का अधःपात का हेतु मानने वाले के लिये यही दूसरा पक्ष अंगीकार करना होगा।

यदि मानलें ब्राह्मण जाति दुरभिसन्धि के परवश थी तो उस दुरभिसन्धि का कारण अनुचित राग और द्वेष स्वीकार किये जांयगे यह राग द्वेष विषयों के ज्ञान और उनके आस्वादन से होता है—धर्म शास्त्रों के व्यवस्थापक जिस जाति में उत्पन्न हुये उनके राग की विषय प्रतिष्ठा और द्वेष का विषय अ-प्रतिष्ठा छोड़ के दूसरी बात कल्पना नहीं की जःसक्ती—इस्के अतिरिक्त किसी दूसरी वस्तु की प्रबल बासना स्वीकार की जावे तो व्यवस्थापक गण जिन्होने धर्म शास्त्र बनाये हैं ऋषि की पदवी पाने के योग्य नहीं हो सक्ते थे और ऋषि की पदवी का नियामक उत्कृष्ट विद्या या ज्ञान और तपस्या

दोनो एक साथ थी—ऋषि पदवी प्राप्त किये बिना कोई व्यवस्थापक हुआ इसमे प्रमाण क्या है ? यद्यपि झूठे सच्चे दो चार श्लोक गढ़ गढ़ाय आज कल के कोई २ ब्राह्मण ऋषि के नाम से जगत् को ठगते हैं कि यह वचन अमुक ऋषि का है तथापि वर्तमान् युग मे ब्राह्मण जाति बिना कर्म के भी जन्म और यज्ञोपवीत संस्कार से ब्राह्मण जाति रह सक्ती है मूल में यही व्यवस्था उक्त विध अनर्थ का मूल है—यदि वह व्यवस्था न होती तो उस प्रकार के ब्राह्मण अब्राह्मण कर दिये जाते और वैसेही ब्राह्मण २ रहने पाते जैसेऔर २ युगों में रहने पाते थे ।

यदि कोई कहे कि सब ब्राह्मण तो ऋषि न थे हम उन ब्राह्मणो को भारत के अधःपात का मुख्य कारण उल्लिखित करते हैं जो ऋषि न थे—परन्तु व्यवस्था संस्थापनकेवल त्रिकाल दर्शी ऋषियोंही का धन्धा था अन्य ब्राह्मणो का नही आज कल के लोग भी जब जान लेते हैं कि यह वचन ऋषि प्रणीत नही है तो हिचकिचाने लगते हैं और उस वचन की ओर से श्रद्धा हटा लेते हैं—

अब हमारे बादी गण यह कहेंगे कि चारो वर्ण में ब्राह्मणादि जाति का स्वजातिपर पक्षपात और शूद्रादि जाति पर निष्ठुरता जो पाई जाती है वह मनुष्य की स्वाभाविक है कि स्वकीयों पर पक्ष पात और परकीयों पर भेय बुद्धि हो उसी स्वाभाविक वृत्ति के परवश हो ऋषियों ने वैसी २ व्यवस्थाये स्थापित कीं जिनसे उनकी उक्त स्वाभाविक वृत्ति स्पष्ट झलकती है परन्तु उत्तम वे कहे जाते हैं जो उक्त स्वाभाविक वृत्ति का दमन कर विवेक से जिसे जो बात या अधिकार प्राप्त है उसका दान या बितरण सामर्थ्य रहते करैं यदि वैसा न किया जाय तो उस अनाचरण का कड़ुआ फल अवश्य फलै गा—बस ऋषियों के उसी अनाचरण का कुफल फलरहा है कि भारत वर्ष का नित्य अधः पात होता जाता है—यदि ऋषि लोग विवेक पूर्वक उक्त स्वाभाविक वृत्ति को दमन करके न्याय पूर्वक व्यवहार करते तो भारत की उन्नति दिन दूनी होती जाती—उसी स्वाभाविक वृत्ति के आधीन हो इस आशय का

लेखक भी ब्राह्मण जाति का पक्षपात कर रहा है—यह क्योंकर मान लिया जाय कि ऋषियों में प्रतिष्ठा के लोभ से राग और अप्रतिष्ठा के कारण द्वेष न था—ऋग् और यजुर्वेद मे यह शतशः स्थलों मे पाया जाता है कि सुत वित्त और लोक की एषणा उन्मे कितनी थी क्योंकि बार २ आशिष प्रार्थना मे उन्हो ने इन्ही सब बातों को मांगा है और शत्रुओं पर द्वेष भी उन्मे अत्यन्त था यजुर्वेद में "आशुःशिशानो," अध्याय की अध्याय महा उत्तेजक मारण के मंत्रो की है—आर्य लोग देशान्तरों से आये यहां के लोगों को विजय कर उन्हे दस्यु कहा और यहां के पूर्व निवासियों के पुरुष वा स्त्री के संग से जो सन्तति उत्पन्न हुई उन्हे निषाद आदि घृणित नाम से पुकारा और अनुलोम वा प्रतिलोम व्यभिचार से उत्पन्न सन्तति अवस्थानुसार मूर्द्धा भिषिक्त शूद्र इत्यादिकहलाई सब घोर घार मंठा ऋषियोंही का तो किया है—कोई २ ऋषि स्त्री आसक्त हो दीर्घ काल की तपस्या से च्युत भी हो गये—वृहस्पति की स्त्री के निमित्त चन्द्र का तारकामय संग्राम और जमदग्नि के मारने से परशुराम के द्वारा २१ बार क्षत्रियों का नाश—वशिष्ठ और विश्वा मित्रका परस्पर विद्वेष प्रसिद्ध ही है तब किसे कहने की सामर्थ्य है कि ऋषियों में विषय वासना निमित्त क राग वा द्वेष नथा द्रोण और द्रुपद की शत्रुता माहाभारत मे जाज्वल्य है-धन के लोभ से शुनः शेफ नाम पुत्रको अजीगर्त ऋषिने बेचा किसी २ वेद मंत्र के अर्थ ऐसे फूहड़ हैं जिनके पढ़ने से ऋषियों की कुप्रवृति तो इतनी तीक्ष्ण जान पड़ती है कि उनको अपेक्षा इन दिनो के साधारण मनुष्य अच्छे समझ पड़ते हैं—अश्वमेध मे अश्वशिश्नका रानी से स्पर्श कराना रानी और रानी की सहेलियों से श्रोत्रियों के ठठ्ठे भला ये क्या बातें हैं-सारांश यह कि ऋषि गण पूरे भद्र प्रकृति के न थे अत एव यह बात अप्रमाणिक है कि ऋषियों मे दुरभिसन्धि केवल प्रतिष्ठा की बासना से थी-किसी से तनिक अपराध बना कि बस ऋषिजी ने शापदिया यद्यपि संभव है शूद्रादिको ने ब्राह्मणो को सताया हो तथापि बुद्धिबल को अधिकाई ब्राह्मणो

ही मे प्रबल थी जिस्से शूद्रादिकों की स्वतंत्रता उन्हों ने छीनली न केवल शूद्रोंही पर किन्तु अबला स्त्रियों पर भी उन्हों कहांलो निठुराई प्रकट की यह स्मृतियों से प्रगट है—वेदाध्ययन स्त्री और शूद्रों को मना कर दिया समाज तथा धर्म संबन्धी कामो मे किसी तरह का अधिकार उन्हे न दिया—तब उन ऋषियों को छोड़ भारत वर्ष के अधः पातका प्रधान कारण हम और किसे कहैं—इत्यादि हमारे बादी लोगों के कुतर्क हैं।

अब इन सब बातों के उत्तर मे कहा जाता है कि बलवान बुद्धिमान् दुर्बलों और निर्बुद्धियों को बशीभूत करते हैं यह प्राकृतिक नियम है और उन्हे अपने बश मे कर दुर्बल और निर्बुद्धियों के साथ न्यायानुसार बर्तना बिबेकियों का कर्म है परन्तु मनुष्य सीखते २ सिखता है यदि चित्त में बिवेक पूर्बक बर्ताव प्यारा लगता है तो यद्यपि पूर्बाभ्यास के कारण भूल चूक हो जाया करे किन्तु धीरे २ उस बुरे अभ्यास को छोड़े और न्याय पथ पर आरूढ़ हो यही महात्मा का लक्षण है और इस अंश मे जीव जहां तक उन्नति कर सके उतनाही अच्छा—निःशेष निर्लेप दोष शून्य जीव हो सकता है या नहीं इसका निर्णय दुर्घट है सो ऋषियों के आचरण की शैली मे क्रम से आप क्या पाते हैं यह कि धीरे २ स्त्री शूद्रादिकों को अधिकार मिलता गया है और नीचों की प्रकृति होती है कि उनके साथ उत्तम बर्ताव किया जाय तो कभी उनसे उस बर्ताव का उत्तम प्रतिफल मिलता है और कभी मन्द सो जब मंद प्रतिफल मिलने लगता है तब फिर ऊपर के अधिकारी के हृदय मे क्रोध उदय होता है जिस्से फिर उन्हे अपनी प्रकृति कठोर कर लेनी पड़ती है—ऋषियों के बिषय मे ठीक ऐसाही सुघटित होता है स्त्री शूद्रादि जब अपने लब्ध अधिकार का अपव्यय अर्थात् बुरा परिणाम प्रगट करने लगे तब फिर उनपर क्रूरता करनी पड़ी क्योंकि यदि ऐसा ब्यवहार न किया जावै तो परस्पर बिरोधी अर्थ धर्म काम रूपी पुरुषार्थ की सिद्धि नहीं हो सकती—ऋषियों ने स्त्री शूद्रादिकों को स्वार्थ परता बश हो अपने आधीन रक्खा हो सो नहीं किन्तु परस्पर की भलाई के आशय से—परंतु एकही के आधार से सब

गुण नहीं रह सकती बल के लिये क्षत्रियों की सहायता लेनी पड़ती थी इस लिये इन चारो वर्ण का अच्छा प्रबन्ध रखने को बुद्धि ऋषियों की और बल उस समय के बड़े २ राजाओं का काम मे लाया गया—ऋग्वेद मे कहीं २ वर्ण विभाग का लेख पाया जाता है परन्तु यजुर्वेद मे अनेक स्थलों मे चारो वर्ण का नाम पाया जाता है—ऋषियों के पूर्वज जब भारत वर्ष में आये तब उन्मे चार वर्ण विभाग था ।

जो लोग उत्तम वंश के हो नीच का सङ्ग करैं और नीचा काम करैं उनको नीच पदवी देना क्या अनुचित है बस इसी दण्ड के आशय से नीच जाति का आरंभ हुआ—जीवन भर भले २ काम किये कभी चूक से स्त्री आसक्त हो पड़े तो क्या उनके जीवन भर की भलाई भूल जाना उचित है—तारकामय संग्राम मे चन्द्र का दोष था कि अपने गुरु की स्त्री छीनना चाहा उसमे ब्राह्मण जाति का अपने स्वत्व की रक्षा के लिये लड़ना अन्याय नहीं है—महाभारत के आदि पर्व मे पढ़िये भृगु वंशी ब्राह्मणों का लोभी कापुरुष क्षत्रियों ने बिना अपराध महासंहार किया उसी के लगाव मे जमदग्नि का घात किया गया तब परशुराम ने अत्यन्त क्रूरता की—जिनके पिता ब्राह्मण और माता क्षत्रिया थी सो परशुराम की क्रूरता पर ब्राह्मणों को अत्यन्त घृणा हुई उनसे प्रायश्चित्त कराया समस्त धरती जिसे उन्हो ने क्षत्रियों से जीता था दान करनी पड़ी और उन से प्रतिज्ञा कराई गई कि फिर इस धरती पर न आइयो और अन्त को क्षत्रियों के हाथ मे फिर राज्य सौंपा गया—द्रोण की बुद्धि धनुर्विद्या मे अभ्यास के कारण ब्राह्मणता पर पूरी नहीं रही —वेद मे कोई २ मंत्रो के अर्थ जो फूहड़ हैं सो इस लिये कि उपहास रसिकों का मन बेद मे एकाएक न लगेगा उनकी चित्त वृत्ति के आकर्षण के लिये वे मंत्र हैं—"जोरीझै जिहिभावतें तेसेताहिरिझाव । पाछेयुक्ती बिवेकसे अपनेपथपरल्याव–„ एकाएकी किसी की प्रकृति फेर देनी सहज बात नहीं है उनको प्रसन्न करने के लिये कुछ-स्वांग आप को अवश्य लाना पड़ेगा असभ्यों को भी अपनी दल मे मिलानें के लिये ऋषियों ने यह युक्ति निकाली पीछे असभ्यों को

शिक्षित कर उनकी और २ मन्द बातें उनसे छुटवा दीं—फिर बगीचे मे जाकर सुगन्धित पुष्पों की महक के आगे लोग कूकरमुत्त को भूल जाते हैं पर ईश्वर की सृष्टि मे कूकरमुत्ता निष्प्रयोजन न होगा उस्से भी कुछ लाभ हुई है सो वे फूहड़ मंच उपहास रसिकों के चित्ताकर्षण के लिये हैं—पशुओं की हिंसा देख धीरे २ यज्ञों के द्वारा थांवते २ बहुत अल्प हिंसा रक्खी यहां लौं कि क्वचित् पशु छोड़ दिये जाते हैं क्वचित् फलादि से पशु का काम निकाल लिया जाता है कहीं पशु हिंसा होती भी है तो केवल मांस का घ्राण मात्र कर लेते हैं—शापों को बच्चों की धमकी की उपमा में समझिये—सुतरां ऊपर के प्रतिपादन से सिद्ध होता है कि ब्राह्मण जाति अपने आश्रितों के कल्याण की इच्छा रखती थी—प्राचीन बेद मंत्रों की अपेक्षा अर्वाचीन बेद मंत्र यथा उपनिषदों के मंत्र का विचार करने से उन ऋषियों के उत्तम होने में कोई संशय नहीं रह जाता–यह ऋषियों की दुरभिसंधि न थी किन्तु क्रम से अपने दोष छोड़ते और औरों के दोष यथाशक्ति छुड़ाते आये और भारत की उन्नति उन्होंकी की हुई–अब उन्हीं की सन्तति अपनी पूर्व वृत्ति संभाल न सके इस लिये आज कल की अवनति का आक्षेप उन पर किया जाता है—तादृश उत्तम वृत्ति रत्न को जानबूझ के महामन्द बुद्धि को छोड़ दूसरा कोई निज हाथ से न गंवावेगा ब्राह्मण जाति एतादृश अबूझ न थी कि निज हाथ से गंवा बैठती किन्तु संभव है परवश पड़ के लाचारी की दशा मे उनके हाथ से वह वृत्ति चुराली गई जिस्की गन्ध अबलौं भी ब्राह्मण जाति के तनमन धन में पाई जाती है।

विषय बासना के परवश राजा लोग परस्पर विद्वेषी होके ब्राह्मणो के उपदेश की उपेक्षा की पुरोहित लोगों को धर्मशास्त्र मे आज्ञा है कि राजा अन्याय करता हो तो उस्का हाथ रोकै यदि वह तिसपर भी न मानै तो उसे छोड़ चला जाय ऐसा करने से ब्राह्मणो को राजा से सहायता दूर हुई उसी सहायता के अभाव से बन में बस के तपश्चर्या ब्राह्मणो के लिये दुर्घट हो गई क्योंकि अप्रसन्न राजाओं के कोप से उन्हें अड़चन पड़ने लगा—यदि राजा

लोगों धार्मिक होते तो पथ सेभ्रष्ट होते ब्राह्मणों को दण्ड द्वारा संभालते और ब्राह्मणो का कहा मानते जिस्से राजा प्रजादोनो की भलाई होती पर इधर राजा लोग विषय बासना मे लगे तो उन्ही की देखादेखो तथा विषयी लोगों के कुस्संग और भांत २ के उत्पीड़न से ब्राह्मण जाति आपदा मे पड़ के भ्रष्ट होगई और पूर्ववत् पठन पाठन मे तत्पर न रह के पेट के लिये व्यभिचारिणी स्त्री के समान नष्ट भ्रष्ट हो गई—तो अब बतलाइये राजाओं का न्याय पथ से च्युत होना भारत के अधःपात का हेतु कहा जायगा कि ब्राह्मण जाति ? राजाओं का परस्पर संघर्ष भारत की अवनति का असाधारण कारण है ब्राह्मण जाति का स्वपथ से भ्रष्ट होना उस असाधारण कारण का व्यापार है सो असाधारण कारण के व्यापार को जो लोग असाधारण कारण मान बैठे हों उन्ही की भ्रान्ति मिटाने को यह मेरा प्रयत्न है—बल्कि यों कहिये तो ठीक होकि भारत वर्ष की उन्नति का असाधारण कारण ब्राह्मण जाति और राजाओं का सदा चार रक्षा पोषक था।

यद्यपि अब भी ब्राह्मणजातिही वेद विद्या में जो सदा चार की शिक्षा का स्रोत है कुछ रुचि रखतो है सो भी अधिकांश पेट पूजा के निमित्त क्योंकि ऋषियों के प्रवर्तित धर्म के छीटे अब भी हैं इन्ही के निबाह केलिये कभी २ वेद विद्या की आवश्यकता होती है पर केवल अपना धर्म समझ वेद मे अभ्यास करने वाले बहुतही थोड़े ब्राह्मण होंगे—इन दिनो की शिक्षित समाज और नई रोशनी वाले हजार २ सिर धुनते हैं कि मुल्क की तरक्की हो और किसी का किया कुछ नहीं होता—ब्राह्मण जाति जिस दिन चेत उठे गी आनन फानन उसी दिन देश का देश उन्नति के सोपान पर चढ़ने लगे गा—इतिहासों से प्रगट है जब २ भारत को अवनति के राहु ने आयासा तब २ सिवा ब्राह्मण के किसने देश को थांब रक्खा— शंकराचार्य रामानुज आदि ब्राह्मण नहीं तोकौन थे जिन्हो ने बौद्धतिमिर और माया वाद से देश का उद्धार किया और सब छोड़ हालमे स्वामी दयानन्द सरस्वती को लीजिये जिन के चलाये पथसे देश का कितना कल्याण हो रहा है बड़े २

शिक्षित समाज के अग्रणी बैठे २ झंखते हैं और हिचकते हैं दयानन्द सब हिचक और संकोच छोड़ जो कुछ उनसे करते बना कर गुजरे—ईश्वर करे जल्द भारत के वे दिन आवें कि ब्राह्मणो के एक २ बालक शंकराचार्य कृष्ण चैतन्य और दयानन्द के पथके अनुकरण करने वाले हों—

कलिकाल की प्रत्याशा निहारते शान्त और मौन बैठे रहना भी ठीक नहीं क्यों कि "राजा कालस्य कारणम्" मनुस्मृति के इस वाक्य का सारांश यही है कि उत्तम युग में भी अधर्मी राजा अधम युग उपनीत कर सकते हैं वैसाही अधम युग में उत्तम राजा उत्तम युग प्राप्त कर सक्ता है—इस्से अब भी जो राजा लोग धर्मानुसार बर्ताव करैं दण्ड आदि के द्वारा प्रजा मात्र को सुधारलें आप विषय लंपटता छोड़ दें और प्रजा से छुटवावें और प्रजा आप रुचि पूर्वक उद्योगी और साहसी हो विद्या भ्यास कर के बल पकड़ के राजा को बश मे लाके भारत की उन्नति मे समर्थ हों सो काहे को होना है—उधर से बौद्ध और जैन इधर से मुहम्मदी और ख्रिष्टीय और भी लोगों की भ्रान्ति को बढ़ाते गये जिस्से दिन पर दिन चोट खाते २ भारत का चकना चूर होता जाता है—राजा लोग परस्पर के विद्रोह अनल मे भस्मसात हो गये ब्राह्मण जाति बल हीन और विद्या रहित होगई और न इस लायक ब्राह्मण रहगये कि उनकी अब सुनी जाय तब कौन सहारा रहगया कि जिस्से देश अधः पात से बचता इस लिये जो लोग ब्राह्मण जाति को भारत के अधः पात का असाधारण कारण मानते हैं उनकी निपट भूल है—यह मेरा लेख दृष्ट बाद गर्भित है जहां पर कहीं कुछ अनुचित हुआ हो उसे पाठक जन क्षमाकरैंगे—

एक ब्राह्मणो का हितैषी
प्रयाग

। संपादकों का ईश्वरही सहायक है ।

संपादक प्रयाग समाचार का बुरा परिणाम देख हम लोगों

को एक प्रकार की बिभीषिका उत्पन्न होगई —जब हम लोगों के लिखने पर हाकिमों की इतनी कद्र रहती है कि किसी बहाने हम लोगों को पकड़ पावें और अपना चिरकाल का संचित क्रोध प्रगट कर दिखावें तो हम लोगों को चाहिये कि यातो महाटेढ़े इस संपादकीय कृत्य से हाथ धो बैठें या सच कहना छोड़दें न-हीं तो हमारे हुजूर लोग चाहो जो कर गुजरें उनकी खुशा-मदही करते जांय—यह कौनसी नीति है कि चोर से कहो चो-री करे शाह से कहो जागता रहे—वहां कहने को हम लोगों को आजादगी भी दी गई है और बर्ताव से कुछ लिखते पढ़ते हैं तो कद पैदा होती है—हमारी समझ में प्र-स—संपादक का कोई ऐसा अपराध न था जिसके लिये उन्हे इतना अधिक दण्ड मिला आशा है अपील मे ऊपर के हाकिम इसमें उचित न्याय करेंगे—निस्सन्देह संपादकीय कृत्य है महाटेढ़ा ईश्वरही सहायक हों तो बेड़ा पार हो ।

। नेटिवइंडिया ।

नीजाम और उनके वजीर सर सालार जंग के बीच बहुत दिनों से दिलकी कसा कसी चली आती थी इसका कारण कि-सी को मालूम न था—पर ऐसा सुना गया है कि अभी थोड़े दिन हुये जब लार्ड डफरिन हैदराबाद गये थे तो सालार जंग ने उनसे कहा कि जो प्रस्ताव मै रियासत के इन्तिजाम का नीजाम के पास पेश करता हूं उसे रियासत की बुराई चाहने वाले कई एक चक्रान्तकारी ऐसा कुछ उलटा पुलटा नीजाम

को समझा देते हैं कि उनके मन में मेरी ओर से खटक पैदा होजाती है जिस्से नीज़ाम और सालारजंग के बीच विरोध बना रहे और इन स्वार्थ परायणो का उद्देश्य सिद्ध हो—लार्ड डफरिन ने इस्का यह प्रवन्ध किया कि कर्नल मार्शल जो किसी रजवाड़े मे पोलिटिकल एजेंट थे उनको नीज़ाम का उपदेष्टा और सलाहकार नियत किया — कर्नल मार्शल के उद्योग से अबतक नीज़ाम और सालारजंग मे मेल रहा और रियासत का सब इन्तिज़ाम ठीक २ चला जाता था—पर पायोनियर जो सदा हम लोगों का छिद्र देखा करते हैं हाल मे कई बार लिख चुके हैं कि हैदराबाद मे विरोध सालार जंग के कुसूर से है—खेर इस्की भरपूर भूमिका रचने का यही प्रयोजन था कि सालार जंग अपने पद से च्युत कर दिये जाँय और कर्नल मार्शल उनके स्थान मे नियत हों सोई किया गया—सुनते हैं नीज़ाम की वज़ारत से सालार जंग ने इस्तीफा दे दिया और बीमारी के बहाने से विलायत की सेर को जाने वाले हैं और कर्नल मार्शल अब वज़ीर मुकर्रर हुये हैं—बेगम भूपाल को यह ज़ाहिर हो कर दिया गया कि उन की वज़ारत के लायक हिन्दुस्तानियों मे कोई नहीं है और कर्नल वार्ड उनके वज़ीर बनाये गये तब नीज़ाम को यह उद्बोधन करा देना कौनसी कठिन बात है कि उनकी वज़ारत के लायक इस देश मे कोई नही है—हमारे सुयोग्य हिन्दुस्तानी अंगरेज़ी राज्य मे अपनी योग्यता के अनुसार अंगरेजों के मुका-

बिले ऊंचे पद पाते ही नहीं रही हिन्दुस्तानी रियासतें वहां भी अंगरेज़ लोग वज़ारत आदि उच्च पद पर आक्रमण करने लगे तब हिन्दुस्तानियों के लिये अब कौन आशा है—हम लोगों को इसका बिशेष सोंच है कि हमारे रईस और राजाओं को इतनी बुद्धि न रही जो समझ सकें कि अंगरेज वज़ीर करने से उसके नौकर हो कर उलटा हमीं को रहना पड़ेगा हमारी बिलकुल आज़ादी जाती रहेगी हमारी चौकीदारी वे करेंगे और हम को उनकी हुकूमत सहना पड़ेगा—धिक् इन रईस और राजाओं की बुद्धि में क्या परदा पड़ रहा है अपनेही जाति और कौम के हिन्दुस्तानियों का बिश्वास न कर बिदेशी अंगरेजों को बड़ा बिश्वास पात्र मानना इससे बढ़कर मूर्खता और क्या हो सक्ती है—भूपाल में अंगरेज़ वज़ीर हुई है कश्मीर के बदइन्तिज़ामी की गीत पायोनियर जब तब गाय उठतेही हैं कदाचित् वहां भी कोई अंगरेज़ वज़ीर किया जाय तो क्या आश्चर्य—सेन्धिया के मर जाने से नई रिजेंसी जो कायम हुई है वहां भी सब इन्हीं का दारमदार है यदि कोई दूरदर्शी हिन्दुस्तानी उस रिजेंसी में होता तो साढ़े तीन करोड़ की बजट की घटती ग्वालियर के खज़ाने से न पुरई जाती नीज़ाम के बारे में हम ऊपर लिखी आये—हमारी राय में बेहतर यही होगा कि रजवाड़े मात्र पेन्शनर कर गुड़िया बनाकर थाप दिये जांय और उनकी रियासत के इन्तिजाम का भी सब बोझ सर्कार अपने ऊपर उठाकर जैसा सर्कार के अधिकार में जो हिन्दुस्तान के प्रदेश हैं

वे "ब्रिटिश इंडिया,, कहलाते हैं वैसाही इन रियासतों के अधिकृत देशों का "नेटिव इंडिया,, नाम रक्ख दें तो बस सब ठौर यही रहै हमारा नाम निशान भी न रहै छुट्टी हो।

। तर्क चूर्णिका ।

पहली के आगे से—

(३४) (विशेषण का विवरण पश्चात् किया जायेगा) दूसरों में दुर्लभ विशेषण असाधारण कहलाता है और उसमें तथा औरों में भी सुलभ विशेषण विशेषण साधारण कहलता है उदा० यथा गौ का विशेषण लोरी असाधारण है और शृङ्ग साधारण है क्योंकि लोरी गौ को छोड़ के दूसरों में दुर्लभ है परन्तु शृङ्ग गौ में और महिषादि में भी सुलभ है।

बुद्धि में साधारण विशेषणों के ग्रहण में असाधारण विशेषण बाधक हो के वह अपना ज्ञान पहिले करा देता है, यह नियम है उदा० यथा बनारस में राज घाट पर खड़े होके देखोगे तो और २ घरों की बुद्धि मन्द पड़ी रह के किन्तु माधव राज के धवलगृह की बुद्धि उद्दीप्त होगी तिसका कारण यही है कि उक्त धवलगृह २ (असाधारण) (उच्च होने से) विशेषण है अतएव उसने अपनी बुद्धि को (अपरापर गृहों की बुद्धि की उत्पत्ति में बाधा देके) पहले उत्पन्न किया, दूसरा उदा० यथा मेले में बहुतेरी स्त्रियों के मध्य में असाधारण सुन्दरता रूपी विशेषण वाली सुन्दरी स्त्री पर स्वभाव से सब की दृष्टि विशेष पड़ती है, तिसका कारण यही है कि साधारण रूप रूपी विशेषणों के ज्ञान में असाधारण रूप रूपी विशेषणने बाधक होके अपना ज्ञान प्रखर उत्पन्न कर लिया (बाधा का सविशेष वर्णन पश्चात् किया जायेगा) यहां पर स्मरण रखना चाहिये कि असाधारण विशेषण के द्वारा साधारण विशेषण के ग्रहण की बाधा को अभिभव कहते हैं कभी तो पूरा अभिभव होता है और कभी अधूरा पूरे अभिभव का उदा० यथा सूर्य की दीप्ति से ताराओं के प्रका-

श का अभिभव हो—और अधूरे अभिभव का उदा॰ यथा चन्द्र की चन्द्रिका से ताराओं के प्रकाश का अभिभव होता है।

(३५) साधारणत्व और असाधारणत्व का विचार सजातियों ही के मध्य में किया जाता है विजातियों के मध्य में नहीं तिसका हेतु यह है कि किसी की उपस्थिति की सम्भावना रहते अथवा किसी के उपस्थित होने पर उसकी बाधा हो सकती है अनुपस्थित की बाधा नहीं होती है साधारण विशेषण किसी अंश में असाधारण का सजातीय होता है अतएव बुद्धि में उसकी उपस्थिति की सम्भावना रहती है अथवा वह बुद्धि में उपस्थित होता है तब उसका अभिभव करके असाधारण विशेषण अपना स्थान उत्पन्न कर देता है, उदा॰ यथा मेले में स्त्रियों के रूप रूपी साधारण वा असाधारण विशेषण का विचार सजातीयों ही के मध्य में किया जा सकता है, विजातियों के मध्य में नहीं, अर्थात् स्त्री के रूप की तुलना के विचार में पशु पक्षी की स्त्रियों के रूप पर दृष्टि नहीं जाती है कि देखो शकुन्तला का रूप कपोती के रूप से असाधारण है किन्तु शकुन्तला का रूप प्रियंवदा के रूप से असाधारण है, तिसका हेतु यह है कि शकुन्तला के रूप की तुलना के प्रकरण में प्रियंवदा आदि के रूप की उपस्थिति की सम्भवना है अथवा शकुन्तला के रूप के आगी प्रियंवदा आदि का रूप चित्त में चढ़ के भी आभिभूत किया जाता है, कपोती के रूप की उपस्थिति की न सम्भावना है और न वह उपस्थित हो के अभिभूत किया जाता है, ऐसेभी सूर्य के प्रकाश के द्वारा उसके सजातीय, ताराओं के प्रकाश का अभिभव होता है, सूर्य का प्रकाश गङ्गा जल के तरङ्ग के स्थान का अभिभव नहीं करेगा क्योंकि वे अत्यन्त विजातीय हैं।

(३६) जो अभिभव करता है वह प्रबल और जो अभिभूत होता है वह दुर्बल कहलाता है, उदा॰ यथा सूर्य का प्रकाश ताराओं के प्रकाश का अभिभव करने से प्रबल और ताराओं का प्रकाश अभिभूत होने से दुर्बल कहलाया।

(३७) प्रबल को मुख्य और दुर्बल असुख्य कहते हैं, उदा॰ यथा सूर्य का प्रकाश प्रबल होने से मुख्य और ताराओं का प्रकाश दुर्बल होने से असुख्य कहलाया॥ क्रमशः—

प्राप्त

महाकविभवभूति बिरचित उत्तर राम चरित्र का भाषा अनुबाद संवल पूर हाईस्कूल के हेडमास्टर नन्दलाल विश्वनाथ दुवे कृत—भवभूति के गंभीर आशय का ठीक शब्दार्थ अनुबाद कोई सहज काम नहीं है भाषा भी अपनी ढंग की अच्छी है दोष केवल इतनाही है कि संस्कृत मे जो श्लोक जिस छन्द का था उसी छन्द मे अनुबाद करने की चेष्टा ग्रन्थ कारने की है—हमारी समझ मे संस्कृत छन्दों से भाषा के छन्दों कीशैलीही निरालीहै जिन छन्दों को भाषा के प्राचीन कबि अपने काम मे लाये हैं वही भाषा के काव्यके लिये उपयुक्त और सोहावने हैं और वेही क्या कम हैं जो संस्कृत की नकल की जाय जहां पर ग्रन्थ कारने संस्कृत छन्द का आश्रय दोहा चौपाई सोरठा आदि मे रक्खा है वह बुरा भी नही लगता संस्कृत की नकल लड़कों का खेल सा मालूम होता है मूल्य ।॥≈है



हिन्दीप्रदीप ।

मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंदभरै ॥
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप समथिर नहिंटरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

१ एपरैलसन् १८८७ | जिल्द १० संख्या ८

इलाहाबाद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
मनेजर बाबू नीलमनी सरकार के प्रबन्ध से देशोपकारक
यंत्रालय में प्रकाशित किया गया

मूल्य अग्रिम ३।≈) पीछे देने से ४।≈)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १॥≈)

१९८

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द १० | १ अपरैल
संख्य ८ | सन् १८८७ ई०

भारत में अङ्गरेजी प्रजा की जैसी दशा देखने में आती है उस्से क्या अनुमान होता है ।

अंगरेज़ों ने अनुचित प्रवृत्ति के परतंत्र हो हमारे देश को अपने बश में रक्खा है अथवा उचित प्रवृत्ति के अनुसार ? मै समझता हूं यदि उचित प्रवृत्ति के अनुसार बश मे रखना उनका उद्देश्य होता तो क्लाइब वारेनहेस्टिंग और डलहौसी के अनुष्ठित अन्याय से पकड़ा के उस अन्यायोपार्जित धन और देश को उस्के यथार्थ स्वामियों को पुनः प्रत्यर्पण करते और ऐसा काम जान बूझ के फिर न करते—अस्तु इसे जाने दीजिये इस देश के रईस और राजाओं में अपने धन और रियासत के यथार्थ संरक्षण को उपाय और बुद्धि न देख उनको योग्य कर उनके हाथ में उनका धन और देश फिर लौटा देने की इच्छा रखते हों तो इस्को प्रमाण से सिद्ध करना चाहिये कि उन्हें योग्य बनाने की कौनसी रास्ता निकाली गई है—यदि यह सोचा जाय कि साभान्यतः भारत बर्ष मात्र को सुधार के अवसर पर किसी योग्य देशी अधिकारी के हाथ में फिर सौंपने के प्रयोजन से अभी उसे अपने हाथ मे रक्खा है तो मै पूछता हूं यह भी कभी किसी गज़ट में इश्तिहार दिया गया है कि उस योग्यता का लक्षण क्या लक्ष्य में लाया

जावे जिस्के संपादित करने में यहां वाले उद्योगी और यत्नशील हों और उस्के लिये उचित प्रवृत्ति वाले महाशय गण सहायक हों—इस्मे संशय नहीं है कि कोई २ व्यक्ति अंगरेजों में भी उचित न्याय पर चलने वाले और हिन्दुस्तानियों के हित चिन्तक हैं तौभी संसारिक योग्यता संपादन करना जो सर्वथा बुद्धि और पौरुष के आधीन है हमारे हित चिन्तक महाशय हमे यह नहीं बतलाते कि उस बुद्धि और पौरुष का आश्रय ले हम कितनी योग्यता संपादन करें कि हममे से किसी सुयोग्य के हाथ मे भारतवर्ष पुनः प्रत्यर्पण किया जाय—यदि उक्त महाशय शालीनता के कारण अपने को गर्विष्टता के दोष से बचाने के विचार से सुखसे न कहते हों, परन्तु उनका भीतरी आशय यही हो कि यहां वाले हमारे अर्थात् अंगरेजों के समान योग्य हों तब उनके हाथ में उनका देश सौंपाजाय तो उक्त महाशय बत लावें कि वे क्या यत्न कर रहे हैं कि हम उनके समान हो जावें—हमारे कितने धन से समुद्रयान बनवाके व्यापार के लिये हमे आप समुद्र यात्रा के लिये प्रोत्साहित कर रहे हैं और रेल आदि के निर्माण मे समर्थ करने को हमे वे सब विद्या और कला सिखला रहे हैं जैसा युरोप देश मे सिखाई जाती है—जब कि पेट पोषण करने वाली विद्या की वृद्धि मे भी आप यहां तक कृपणता और हृदय की संकीर्णता प्रकाश कर रहे हैं कि स्कूलों मे पढ़ने वाले विद्यार्थियों की फीस दूनी तिगुनी बढ़ाते जाते हैं तो उस प्रकार की शिक्षा पाने की आशा आप से हम क्या रक्खें—कहने को तो आप यही प्रगट किये हैं कि हम धर्म के प्रकरण मे हस्त क्षेप न करैंगे पर भीतर २ पादरियों को आप बड़ी भारी सहायता पहुंचाते जाते हैं कि वे लोग इसाई धर्म के प्रचार से हमे अपने पूर्वजों के धर्म से च्युत और श्रद्धा रहित कर दें छोटी २ साधारण बातों मे आप न्याय २ पुकारते रहते हैं परन्तु जिस्मे आप अपना महा लाभ समझते हैं उन बातों मे न्याय अन्याय कभी नहीं देखते सर्वग्रास कर बैठते हैं—काम मे आप अपने समान हमे आचरण करते देख कुढ़ भी जाते हैं ।

आप योग्यता की सीमा निर्द्धारण किये बिना अपनेही ऊपर उसके तौलने का भार रखते हों तो जैसा पिता आदि के ऊपर पुत्रादि विश्वास रखते हैं तादृश विश्वास हमसे आप चाहते हैं परंतु पिता आदि का आचरण पुत्र आदि के आचरण की शिक्षा की भूमि है—आप जैसा आचरण कर रहे हैं हम भी वैसा आचरण सीखते जाते हैं पर पिता अपने सामर्थ्य से उस आचरण के कुफल मे बिलंब सह सक्ता है किन्तु पुत्र अपनी सुकुमार प्रकृति के कारण तुरन्त फल भोगी हुआ चाहता है—बस इसी युक्ति से इस देश के कुछ लोग आप को अनुचित प्रवृत्ति वाले कहने लगे हैं और कुछ लोग संशय मे पड़े हैं—थोड़े लोग होंगे जो आप पर पूरा बिश्वास रखते हों डर के मारे मुख से चाहो जैसी लल्लो पत्तो करैं पर हृदय में आप पर बिश्वास का बन्धन बहुतेरों के चित्त से ढीला होताजाता है—ऐसे अवसर पर जैसा बाप को उचित होता है कि अपने पुत्र पर बिश्वास की दृढ़ता की सामग्री संपादन करै वैसाही आपको हमारे बिश्वास की दृढ़ता के उपायों का आयोजन करना उचित है ।

हम लोगों के साथ आप का अनुचित बर्ताव देखआप के खृष्ट धर्म मे जो लोग स्तम्भरूप हो रहे हैं उन से निर्णय के लिये पूछा जाता है तो यही उत्तर मिलता है कि अंगरेजी राज्य की बर्तमान शैली खृष्ट धर्म के सर्वथा बिरुद्ध है—आप के मतानुयायी जब आप को धार्मिक नहीं कहते तब हमारी दृष्टि मे आप धार्मिक कब ठहर सक्ते हैं रहगये अर्थ और काम सो इसमे सन्देह नहीं कि उन दोनो के उपार्जन की योग्यता आप मे भर पूर है और उन दोनो के संपादन करने की बुद्धि और पौरुष आप मे ईश्वर प्रदत्त है-वही इधर हम्मे न अर्थ और न धर्म दोनो की योग्यता न रही क्योंकि चिरकाल से अपने देश और मत का राजा शासन कर्त्ता न रहने से और परस्पर के बिद्वेष से हम अपनी बुद्धि बिद्या और बल सब खो बैठे हैं जो अर्थ के उपार्जन मे बड़े सहकारी हैं—तब बिना पूंजी पास रहे यह समझना कि हम काम सेवन मे बड़े चतुर और योग्य हैं नितान्त उपहास

और हिमाकत की बात है निदान अर्थ धर्म काम तीनो की योग्यता से हम बंचित चले आते हैं।

हमारी योग्यता के वृद्धि का उपाय केवल आप के स्थापित विद्यालय हैं उन्मे नीचे दरजे की शिक्षा तो महा अनर्थ का मूल है कि बहुधा ईश्वर का बिश्वास उनके चित्त मे स्थिर नहीं रहता यद्यपि प्राकृतिक रचना कौशल की उपपत्ति उनसे करते नहीं बनता तब भी निरीश्वरतावाद अपनी विद्वत्ता का भूषण समझते हैं—इस दर्जे के शिक्षित यथोचित आत्मस्तंभन नकर सकने से कुपथ गामी होजाते हैं और अन्त को इन के और अर्द्ध शिक्षितों और अशिक्षितों तथा असभ्य उजड्डों के आचरण मे कुछ भी अन्तर नहीं रहता बल्कि वे मूर्ख असभ्य अल्पज्ञ फिर भी भले कि सुख साध्य होते हैं अत्यन्त बुरा और कुत्सित आचरण करते समय अपनी आस्तिकता के कारण ईश्वर तथा समाज की भय मन मे रख ते हैं पर ये जिन्मे ज्ञान और बोध का लेश मात्र आया है नास्तिक होजाने के कारण कुत्सित से कुत्सित आचरण करते किसी तरह का भय मन मे नहीं लाते —राजर्षि भर्तृ हरने अच्छा कहा है— "अज्ञःसुख माराध्यः सुखतर माराध्यते बिशेषज्ञः। ज्ञानलव दुर्विदग्धं ब्रह्मा पितं नरं न रंजयति„—अब मध्यम श्रेणी की शिक्षा जिन्हों ने पाई है उन्मे से कुछ वे हैं जो पहलेही से लोहेतावे उतर चुके हैं और थोड़े हैं जो अपने को पीछे संभाल सकैं—हां कुछ ऐसे भी हैं कि निरीश्वरता बादी होके भी आपाततः अपना चरित्र संभालते हैं—ईश्वर पर यथार्थ निष्ठा रखने वाले मध्यम श्रेणी के विद्यार्थी गिनती के दो चार होंगे परन्तु जैसा कौपीन आच्छादन समाज की लाज रखता है महत् पारलौकिक बिश्वास संसार की मर्यादा को स्थिर रखता है—बहुत सा बाद विवाद के उपरान्त जैसे कोई धोती पहनना बोझ ठहरावे उसी प्रकार सृष्टि की रचना देख के भी परलोक का निराकरण समझा जाता है—उच्च श्रेणी की शिक्षा भारत भूमि मे अंगरेजी राज्य ने प्रचलित नहीं की किन्तु किसी २ को स्वदेश इंगलैंड मे लेजाके महाशय लोग सिखलाते हैं उन्मे से बहुतेरे तो अंगरेजी मेंम साथ लिये पूरे योग्य हो के आते हैं—आत्म सुख

रत तो अंगरज़ी के विद्यार्थी मात्र पाये जाते हैं परार्थ मे प्रयत्न परायण न वे हिन्दुओं के महात्मा ऋषियों की नाई हैं न ख्रष्टीय सेंट के अनुगामी हुआ चाहते हैं—कोई किसी कामना से कोई किसी बासना से सभा क्लब इत्यादि खड़ी करते हैं परन्तु पूर्ण दत्त चित्त हो कर्तव्य का संकल्प किसी के चित्त में यथार्थ पायाजाना मानो ऊषर की खेती है—इस प्रकार का परिणाम होने की अपेक्षा तो यही उत्तम है कि अंगरेज़ी विद्या के साथ अन्तः करण की पवित्रता का भी उपाय निर्द्धारण किया जाय और चेत रखिये इसका उपाय यही है कि राजा स्वयं ऐसा आचरण करे जिस्से उसकी उचित धार्मिकता और न्याय परायणता पाई जाय जिसे देख प्रजा भी पुत्र के समान वैसाही अभ्यास करे—नहीं तो राजा का कुटिल बर्ताव देख प्रजा भी कुटिलाई पर उन्मुख होती जायगी।

अंगरेज़ों के उत्तम गुणो का अनुकरण करने मे यहां की प्रजा का चित्त इस लिये नहीं लगता कि यहां वालों मे उन गुणों का संस्कार नहीं है और अंगरेज़ों का दोष ग्रहण करने मे यहां वाले पटु इस लिये हैं कि प्रकृति के नियम अनुसार जीव को नई बात नया साहित्य सदा भावता है बिबेकी यहां की प्रजा रह नगई कि पूर्वा पर पर्यालोचन करके परिणाम को बूझती—अंगरेज़ लोग चाहते हैं प्रजा उन पर प्रीति करे परन्तु प्रजा की कुछ मुरौअत किसी बात में जानतेही नहीं प्रजा ने हज़ार २ सिर धुना गोबध से बिमुख न हुये—देश का देश मेमोरियल देते २ और अखबार वाले लिखते २ थक गये हिन्दुस्तानियों को वालंटियर होनेका अधिकर नदिया गया— ऐसे २ बुरे कानून प्रचिलित कर रक्खा है जिस्के बल से असाधु लोग छिपे २ साधुजनो को इतना सताते हैं कि विवश पड़ के साधुओं को भी असाधु प्रकृति ग्रहण करनी पड़ती है और असाधुता का पूरा २ अभ्यास न रहने से झट प्रगट हो महा संकटमे पड़जाते हैं—अंगरेजी राज्य मे झूठी गवाही का विशेष प्रादुर्भाव देख हृदय बिदीर्ण होता जाता है—व्यर्थ की लड़ाइयों मे सर्कारी खज़ाने से बहुतसा रुपया खर्चकर भारी २ कर और

टेक्स प्रजा पर लगाते तनिक भी संकोच मन मे नहीं लाते इत्यादि प्रजा की अनेक यातनाओं का ध्यान न कर कचहरियां न्याय के लिये नियत हैं ऐसा प्रगट कर रेलतार डांक पोष्ट आफिस आदि का देश मे प्रचार देख अंगरेजी राज्य से देश कीउन्नति प्रमाणित करना दूरदर्शी का लक्षण नहीं है—वकीलों से प्रजा का धन लूटाजाता है प्रजा मद्यप होतीजाती है खेत का कर अधिक बढ़ा देने से इंच भर पृथ्वी न बच रही जो प्रतिबर्ष कसके न जोती बोई जाती हो जिस्से धरती की उत्पादिका शक्ति नित्य २ बिनष्ट होती जाती है—करके बढ़ जाने से गेहूं आदि सार अन्न बेंच कर किसान लोग सर्कारी जमाबन्दी अदा करते हैं आप बेचारे मोटा कदन्न से प्राण पोषते हैं कोई २ आधे पेट रहजाते हैं इस दशा में इतने बृहत् देश मे कहीं न कहीं दूसरे तीसरे बर्ष अकाल पड़ा ही करता है और सहस्रों प्रजा इस अकाल महा मेध मे स्वाहा हो जाती है रेलवे कंपनी की बन पड़ती है गल्ले के चलान से करोड़ों रुपये खीचलेती है—

इस राज्य मे कौन सा पाप होगा जो प्रजा से न बन पड़ता हो चोरी व्यभिचार घूस तो साधारण बात है—हिन्दुओं के राज्य मे पापी को पहले पाप से पश्चात्ताप करा के प्रायश्चित्त से शुद्ध करने की रीति थी और जो हठीले पन से पश्चात्तापन करता और न प्रायश्चित्त करता केवल उसी को राजद्वार से दण्ड दिया जाता था—मुकद्दमो मे वादि प्रतिवादियों की ओर से अब के समान वकील मुखतार प्रजा का धन लूटने को नहीं मुकर्रर किये जाते थे—चोरी का धन यदि राजा चोर को पकड़ के न दिलवासके तो उतना धन अपने खजाने से देता था—पातकी से जो जरीबाने का रुपया लिया जाता था उसे राजा अपने खजाने मे नहीं जाने देता था कोई २ पातकी अपनी पाप का प्रायश्चित्त करने पर भी इस बात की परख के लिये कि इसकी प्रकृति सुधरी की नहीं पृथक रक्खे जाते थे—परन्तु अंगरेजी राज्य मे इन उक्त बातों मे से एक भी नहीं है—हिन्दुस्तानी प्रजा अंगरेजों की स्वेच्छाचारी समझ के घृणा करती है और अंगरेज लोग हिन्दुओं को मूर्तिपूजक समझ के अयोग्य मानते हैं तब राजा प्रजा मे परस्पर वास्तविक प्रीति कहां से हो सकती है।

हम लोगों के सन्तोषार्थ कुछ उच्च पदवी ये हमे दिया चाहते हैं सही तो बड़े ओहदे वाले स्थानीय हाकिम बाधक होते हैं जो उन्ही निरक्षर धनवानों को ऊंचे ओहदे दिया चाहते हैं जो सदा उन हाकिमों की खुशामद और खातिरदारी मे लगे रहते हैं जिस्का परिणाम यह होता है कि बड़े ओहदे उन निरक्षरों के हाथ मे आने से उलटा फल होता है और देशी लोगों को यथा योग्य पद न देने का कारण ढूढ़ने वाले हमारे महाप्रभु गण देशी विद्वानो को निर्बुद्धी प्रति पादित करते हैं—अंगरेजों की अपेक्षा मुसल्मानी राज्य मे हिन्दू लोग ऊंचे २ ओहदे पाते थे जिस्से इस देश की कुछ न कुछ भलाई हो ही जाती थी—मुख से कहते हैं कि जाति और रंग का पक्षपात न किया जायगा परन्तु बर्ताव में कुछ औरही बात पाई जाती है—मुसल्मानो को ऊंचे २ ओहदे अधिकाई से दिये जाते हैं क्या कारण है कि हिन्दुओं को नही—कचहरी मे उर्दू प्रचलित रखने का हेतु गुप्त रक्खा गया है—टिक्सों की वृद्धि सावन भादों की नदियों की बाढ़ को भी दबाये देती है-हिन्दू प्रजा समझती है हमारे पूर्व जन्म के पाप से दैव ने हमे पराधीन किया है अंगरेज़ समझते हैं बइबिल मे बिश्वास के प्रतिफल मे भगवान के अनुग्रह से हमारा राज्य बढ़ा है इत्यादि अनेक कारणो से अंगरेजी राज्य के द्वारा हमको अपनी उन्नति की आशा रखना आकाश कुसुम और शश शृङ्ग के समान है ।

। दिलीप सिंह का क्या किया जाय ।

अखबारों मे महाराजा दिलीप सिंह का बृत्तान्त पढ़ बड़ा शोक होता है कि महाराजा रणजीत सिंह के पुत्र का आज कोई मित्र या बन्धु न रहा जो उनके दुःख से दुखी हो उनकी सहायता करता—क्या रणजीत सिंह के नाम को लोग ऐसी जल्द भूल गये जिनके नाम से शत्रु लोगों का हृदय कांपता था

और जो पंजाब के सिंह कहलाते थे जिनके कारण केवल पंजाब और पंजाबियों ही का नहीं वरन देश भर का सिर ऊंचा था—दिलीप सिंह की सहायता से हमारा यह प्रयोजन नहीं है कि हम उनके इस मतवाले पन के साथी बनैं किन्तु ऐसा कोई उपाय करैं कि उनकी यह उन्मत्तता शान्त हो और हमारी अंगरेजी गवर्नमेंट के शत्रुओं के बहकाने मे पड़ जो अपने को और अपने देश को हानि पहुंचाने मे तत्पर हो रहे हैं उस्से रुकैं—हमारी समझ में हम सब लोग मिलकर महाराणी से इस बात की प्रार्थना करैं कि इस बहके हुये राजकुमार के कहने का कुछ बिलग न मान उस्के ऊपर दया दृष्टि रक्खैं और यहां से कुछ पंजाबी सर्दारों को आज्ञा दें कि वे दिलीप सिंह को समझा बुझा के यहां ले आवैं और परीक्षा के निमित्त पंजाब का थोड़ा सा राज्य उन्हें देदें और अपना अधिकार भी थोड़ा २ वहां बनाये रहैं जिस्मे पंजाब सर्वथा अंगरेजी राज्य से अलग नहोजाय और फिर जो दिलीप सिंह अपनी योग्यता दिखलावें तो क्रम २ उनका अधिकार बढ़ता जाय और जो आयोग्य समझे जाँय तो उनको राजपद से च्युत कर उनकी पेन्शन नियत कर दी जाय—ऐसा करने से गवर्नमेंट की हानि कुछ नही है और लाभ कई प्रकार का है—प्रथम तो यही कि देशी लोगों को अंगरेजी गवर्नमेंट की सत्यता न्यायाचरण दृढ़ता और देश की हितेच्छा पर पूर्ण बिश्वास हो जायगा महाराजा दिलीप सिंह और पंजाबी लोग भी कृतज्ञता के बोझ से इतना दब जांयगे कि अपना सर्बस्व देकर भी ब्रिटिश राज्य की

सहायता करना एक बहुत तुच्छ प्रत्युपकार समझेंगे—अबदुल रहेमान को इतना कुछ चटाया और सब भांत उसकी खुशामद की यह थोड़ा सा कहना सर्कार हमारा भी मानले फिर देखे हमारे पंजाबी वीरों के सामने रूस की कैसे हिम्मत आगे बढ़ने की पड़ती है—एक अकेले ब्रिटिश सिंह से रूस चहो निडर हो परन्तु जब दो सिंह एकत्र हो जायगे तो भालू दूरही से दुम दबा कर भागेगा जो हम सब लोग मिल इस बात की प्रार्थना राज राजेश्वरी से करेंगे तो कदाचित इसका स्वीकार कर लेना महाराणी के लिये कोई बड़ी बात न होगी और राजराजेश्वरी इसउपाधि की पूरी चरितार्थता हो जायगी क्योंकि बहुत से स्वतंत्र राजे उन के अनुगामी होंगे—हमारे यहां चक्रवर्ती राजाओं का यही नियम था कि छोटे राजाओं को जीत उसको अपना बशवर्ती बना कर उसका राज उसी को दे देते थे आशा है महाराणी के मंत्री गण हामारे इस विचार का अनुमोदन करेंगे।

बिचित्र स्वप्न

दिन भर के परिश्रम से थका थकाया शोक मोह से व्याकुल आज मैं चांदनी रात में अपनी टूटी खाट पर पड़ा यह बिचार कर रहा था कि क्या कारण है जो भारत भूमि की नित्य २ अवनति होती जाती है। क्या ऐसा कोई उपाय नहीं है जिसमें इस अभागिनी का विनाश न हो? यह अन्धकार जिस से इस की सुख की छवि मलिन हो रही है किस जतन से दूर हो? क्या यह वही भूमि नहीं है जो वीरों की उत्पन्न करनेवाली और बड़े यशस्वी और प्रतापी पुरुषों की माता कहलाती थी, जिस की अब यह दशा हो रही है

कि लज्जा के मारे मुंह किसी के सामने नहीं कर सकती? क्या उपाय करें, कहां जांय, किस से कहें, किस देवता की प्रार्थना करें कि इस दुखिया का क्लेश दूर हो। यह सोचता ही था कि निद्रा ने मुझे आ घेरा। दिन के परिश्रम से तो थका ही था तुरन्त गाढ़ी नींद के बस हो गया। इतने में देखता क्या हूं कि प्रसन्नबदन, सर्वाङ्ग सुन्दर, विशालनेत्र, एक युवा पुरुष मेरे पास आकर मेरा हाथ पकड़ यह बोला "उठ क्या पड़ा सो रहा है? यदि कुछ कौतुक देखा चाहता है तो मेरे साथ हो ले।„ यद्यपि इस पुरुष का कुल शील मैं कुछ नहीं जानता था पर उस समय उस का सुन्दर आकार और गौरव मुझ पर ऐसा व्याप्त हो गया कि मैं बे कुछ कहे सुने उस के साथ हो लिया, और एक ऐसी जगह जा निकला जहां की पृथ्वी मानो स्वर्णमयी थी और स्वर्ग की भूमि भी उस के आगे तुच्छ जान पड़ती थी। इस देवनिर्मित देश के एक ओर पर्वतों की श्रेणी देख पड़ी जिसके शिखर आकाश को छूरहे थे मानो सदेह स्वर्ग जाने के लिये सीढ़ियां बनी थीं। इस में से अनेक छोटी बड़ी नदियां निकल कर उस स्थान को अपने जल से सींच २ वहां की पृथ्वी को बहुत उपजाऊ कर रही थीं। मै उस महापुरुष के साथ उस पुण्य भूमि में घूमता अनेक आश्चर्यकारी पदार्थों को देखता उस स्थान के मध्यभाग में जा पहुंचा जहां स्फटिकमणि की बेदी पर बिराजमान एक परम सुन्दरी स्त्री बैठी थी। यह चन्द्रमुखी अपने देह के तेज से सम्पूर्ण स्थान को प्रकाशित करती उस भूमि की अधिष्ठाची देवी सी जान पड़ती थी। उस के चारो ओर काले काले भयंकर रूप के अनेक नर नारी खड़े उसे पीड़ा दे रहे थे। उस मृगनयनी के आकार और ढंग से मुझे यह जान पड़ा कि इन दुष्टों के व्यवहार से वह महा व्याकुल हो रही है, मानो ये सब उस के लोहू के प्यासे हैं। उस भीड़ में से एक कंकालिनी बूढ़ी स्त्री भयंकर दृष्टि से उसे ऐसा देख रही थी मानो वह इसी जतन में लगी थी कि किस भांत इस सुन्दरी का सर्बनाश कर डालूं। इतने में मेरा साथी उस बुड्ढी के पास जा उस से पूछने लगा "देवी

तुम कौन हो और अपने भयंकर रूप से इस सुन्दरी को क्यों डरा रही हो? इस ने तुम्हारा क्या अपराध किया है?" यह बचन सुन वह डाइन अपना कन्दरा सा मुंह खोल कर बोली "इस ने मेरा कुछ अपराध नहीं किया पर मैं क्या करूं मेरा यह स्वभाव ही है कि किसी की सम्पत्ति और उन्नति मुझ से नहीं देखी जाती। सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने मुझे उत्पन्न कर मनुष्य जाति के हृदय की अंधेरी कोठरी में बास दिया है। मैं ईश्वर की बड़ी उपकारक भी हूं क्योंकि जिसे वह अप्रसन्न हो कर दंड दिया चाहता है उस के निकट पहले मुझी को भेज देता है। मेरा गुण न जान कर पहले सब मेरा आदर करते हैं पर पीछे से पछताते हैं। यदि यह विदित होता कि मेरे आने से सब चौपट हो जाता है तो मुझे कोई क्यों आने देता। जिस राज्य देश वा कुल में मेरा चरण गया उस का सत्यानाश होते देर नहीं लगी। और इस सुन्दरी को आप क्या पूछते हैं। इस का वंश तो मेरा बड़ा पोषक है जिन की चाल ढाल, रीत व्यवहार, खान पान, सब में मेरा कुछ अधिकार रहता ही है यह जात पांत की रीत जो इस के पुत्रों में बड़ी प्रतिष्ठा की बात समझी जाती है मेरा ही एक स्वरूप है। मैं वह आग हूं जो बिना धुएं के भीतर ही भीतर सुलगा करती हूं। नाम मेरा फूट है। कोई २ मुझे कुमति भी कहते हैं। ईर्षा डाह, आदि मेरी और भी बहुतसी बहनें हैं। यह सब जिन्हें तुम मेरे पास खड़ी देखते हो मेरे सन्तान हैं। इन के नाम बैर, दुर्भाव, कुटिलता, निन्दा और दुष्टता हैं। मैं सदा इसी जतन में रहती हूं कि जहां कहीं सुमति वा एका हो वहां जा कर प्रवेश करूं। कलियुग की मैं सगी बहन हूं। किसी की उन्नति देख मुझे बड़ी कुढ़न होती है। कोई कितना ही उपाय करे मैं इस युवती का पिंड न छोड़ूंगी। मेरे ही समान यह दूसरी जो मेरे दहनी ओर खड़ी है मेरी परम प्यारी सखी है जिस का नाम स्वार्थतत्परता है। निष्ठुरता की यह कन्या है, और मूर्ख धनी महाजनों के घर बहुत प्रीति पूर्वक बास करती है। यह दूसरी इसी की कन्या है

जिस का नाम क्षपणता है...... । वह यह सब कह रही थी कि पश्चिम दिशा से बड़े दृढ़ाङ्ग महा क्रूरप्रकृति पुरुषों की एक भीड़ देख पड़ी जिन की छाती तक लम्बी २ डाढ़ियां थीं । ये हाथ में नंगी तलवारें लिये थे और "काटो मारो„ शब्द बार २ उन के मुंह से निकलता था । उनकी कुटिल दृष्टि और चेष्टा से जान पड़ता था कि कितनों की तो यह इच्छा है कि उस सुन्दरी को लूट खसोट जो कुछ मिले ले लिवा चल खड़े हों, कितने यह चाहते थे कि उसे अपने बश कर उस का सुख उठावें, किसी की यह मनसा थी कि उसके सन्तान को जड़ मूल से उखाड़ हमीं लोग रह जायं, किसी का यह अभिप्राय जान पड़ता था कि उस का जड़ से नाश कर रसातल को भेज दें । इतने में गोरे २ अनेक विद्या में प्रवीण, कोमलप्रकृति थोड़े से पुरुष पूरब और दक्खिन की ओर से आकर इन भयानक पिशाचों को उचित दंड दे दे कर इन का यथोचित शासन करने लगे । भीतर इन के जो कुछ हो पर बाहरी रंग ढंग और आकार से जान पड़ता था कि ये इस युवती के परम उपकारी हैं और इस की दुर्बल सन्तान का पुनर्जीवन करेंगे । थोड़ी देर में वे नरान्तक राक्षस तो न जानें कहां बिला गए पर उन के समूह में से कई एक स्त्री और पुरुष जो अब तक बचे रह गए थे उस कोमलाङ्गी के पास आकर अपनी भयंकर चेष्टा दिखा २ उसे पीड़ा देने लगे । उन में से एक महा कुरूप स्त्री उन सभों की अगुआ बन उस सुन्दरी से यह कहने लगी "मुझे शरण दो। मैं अब कहां जाऊं। ये यवन जो मेरी उत्पत्ति के कारण थे उन का अब कहीं पता तक नहीं है । जो बचे खुचे हैं भी वे अति तुच्छ हो रहे हैं । ये गौर वर्ण मेरा आदर हो नहीं करते । अब मुझे तेरा ही आसरा है । मैं देशदेशान्तर छान आई पर मुझे बासयोग्य स्थान कहीं न मिला । अन्त को मैं ने यह प्रण किया कि मरने तक तेरे पुत्रों में रह कर अपने इस तुच्छ जीवन को किसी भांत बिताऊं । ये गौर वर्ण मेरी सौतिन विद्या और कलाओं का प्रचार कर यदि मुझे तेरे पास से न

हटावें तो मैं अपना काम पूरा कर चुकी हूं । देख षटदर्शनों का अब कहीं किसी को दर्शन भी नहीं मिलता साहित्य राहित्य भाव को प्राप्त हो गये व्याकरण का मरण हुआ चाहता है, श्रुति की किसी को स्मृति भी न रही बेदान्त का अन्त हो गया पतंजलि को भी मैं ने तिलांजली दिलवादी, पाणिनि को बिना पानी मरना पड़ा, गौतम और अक्षपाद दोनों को मैं ने पांव से रौंद डाला, मीमांसा का मांसाहार मैं ने ही किया, पुराण को परान्न की भांत रुचि से खाया व्यास का नाम सुनते ही त्रास होता है, नाटक की नाक कटे बहुत दिन हुए संगीत भयभीत हो कर न जानिये कहां छिप गई, कला सब काल बस हो गईं, गुण सब घुन गए, हां मेरी एक सखी अन्धपरम्परा सब की शिरोमणि बन निश्शङ्क घूमती फिरती है । देख मेरा पराक्रम कि नीति और प्रीति दोनों की रीति उठ गई । मेरी पूरी बैरिणी चतुराई के नाम लोग रोते हैं । जहां देखो तहां लंठदास प्रकाश कर रहे हैं । वाह ! तेरे पास रहने से मुझे बड़ा चैन है„ । सुन्दरी ने उस से पूछा तेरा नाम क्या क्या है । उस पिशाची ने उत्तर दिया मेरा नाम मूढ़ता है । अज्ञता मूर्खता जड़ता, आदि मेरे और कई एक नाम हैं । ये सब आलस्य, दुर्व्यसन, कलह आदि जिन्हें अपने पास खड़े देखती हो मेरे साथी हैं। यह अपनाराम रसरा समाप्त नहीं कर चुकी थी कि अत्यन्त क्षीण महा उदासीन, सुखमलीन, पराक्रम और बुद्धि से हीन एक पुरुष न जानिये कहां से आकर वहां उपस्थित हुआ । इसे देख वह सुन्दरी करुणा के सागर में डूब उस से पूछने लगी तू कौन है और तेरी क्यों यह दशा हो गई है । वह बोला "माता इस दीन को क्या आप ऐसा भूल गईं । मैं आप ही के कुल का कलंक ब्रह्मचर्य हूं । इसी मूढ़ता की प्रेरना से मेरी यह दशा हो गई है । इन दिनों तुम्हारी सन्तान की बुद्धि को इस ने ऐसा छा लिया है कि वे बुरे परिणामों पर बिना दृष्टि किये बाल अवस्था ही में विवाह कर समस्त उन्नति की जड़ काट डालते हैं । मा तुम ही सोचो समस्त पुरुषार्थ के बीज को जब अंकुरातेही सब प्रकार के रोगों ने आघेरा तब भला अब मेरा किया क्या हो सकता है । यह सब कौतुक मैं

देख रहा था कि अचानक मेरी आंख खुल गई और मैं जाग उठा । देखा तो न वह स्थान है न वह सुन्दरी, और न वे राक्षसियां, केवल मैं अकेला पड़ा हूं । पाठक जन मुझे इस स्वप्न पर बड़ा आश्चर्य है, विशेष कर उस महा पुरुष पर जो मुझे अपने साथ वहां ले गया था ॥

। हैज़ा ।

कौन ऐसा है जो इस रोग का नाम न जानता हो अंगरेज़ी मे इसे कलरा कहते हैं संस्कृत वैद्यक मे विशूचिका रोग लिखते हैं-विशूचिका कुछ २ हैज़े से मिलती है पर ठीक २ हैज़ा नहीं है इस का कारण यही मन मे आता है कि जिस समय को हमारे वैद्यक की पुस्तकें बनी हुई हैं उस समय कलरा इतना भयंकर आकृति से नहीं होता था—यूरोप के डाक्तर लोग इस बात को भली भांत जानते हैं कि कितने रोग जो पहले होते थे अब नहीं होते और कितने नये २ रोग उत्पन्न हुये हैं जो पहले नहीं होते थे और कितने रोग ऐसे भी हैं जिनके क्रम मे अन्तर पड़ गया है—देश के अन्तर से भी रोग मे अन्तर पड़ता है जैसा विषमज्वर हिन्दुस्तान मे होता है इंगलेंड मे नहीं होता और कई प्रकार के ज्वर विशेष कर एकही स्थान मे होते हैं जैसा तराई का ज्वर मैदान मे नहीं होता-बहुत काल बीतने पर इसी प्रकार संभव है कि देश के चाल व्यवहार खेती जंगल वर्षा आदि प्राकृतिक बातों मे इतना अन्तर हो जाय जिस्से नये २ रोग उत्पन्न हो सकें-तात्पर्य यह कि हैज़ा बहुत प्राचीन रोगों मे नही है और इसी कारण वैद्यक शास्त्र मे इस्का व्याख्यान नहीं पाया जाता पर विशूचिका रोग का मेल कलेरा के साथ कुछ २ मिलता सा है—अंगरेज़ी डाक्तरों ने पता लगाया है कि कई शताब्दी से हिन्दुस्तान के भिन्न २ विभागों मे हैज़ा किसी २ स्थान मे होता रहा परन्तु प्रायः मैली गन्दी नम जगहों मे कदन्न खाने वाले कंगाल मनुष्यों के बीच मे रहा-सन १८१७ मे यह रोग "इपिडिमिक„ हो गया अर्थात् देश मे फैल गया—सर आर्किबाल्ड अलिसन लिखते हैं ग्वा-

लियर मे ५ नवम्बर १८१७ को जब सेंधिया से अहदनामा हुआ हैज़ा बड़े वेग से लार्ड हेस्टिंग्स को सेना मे जारी हुआ और अंगरेज़ी इतिहासों मे हैज़े का नाम पहले पहल यही सुना गया है—इस वर्ष मे काल पड़ा अनाज मंहगा और खराब मिलता था और मर्कारो फौज नोची जगह मे पड़ी थी इस्से फौज मे तबाही आगई दस दिन तक इतना ज़ोर रहा कि सम्पूर्ण सेना अस्पताल हो गई एक सप्ताह मे २६४ सिपाही और ८०० आदमो मरे—उपरान्त छावनी ऊंची और हवादार जगह मे हटा दीगई और हैज़ा रुक गया—यह बात स्मरण रखने के योग्य है कि ऐसे प्रबल वेग का हैज़ा स्थान बदलने से रुक जाता है—सत्रह वर्ष तक हैज़ा एशिया और यूरोप खण्ड के देशों मे फैलता रहा सन १८३१ मे इङ्गलेंड पहुंचा तब से ५ बार इस्का बहुत ज़ोर वहां हो चुका है जिस्मे लाखों आदमी जायां गये बंगाल में हैज़ा सदैव फैला रहता है पर कभी २ यह "इपिडिमिक„ हो जाता है जब इस्का फैलाव अत्यन्त विस्तार के साथ हो जाता है–प्रायः तीर्थों मे बड़े मेलों के समय बहुत मनुष्यों के एकत्र होने से हवा ऐसी बिगड़ जाती है कि हैज़ा प्रारम्भ हो जाता है और वहीं से फैलने लगता है–जहाज़ों के बन्दरों मे प्रायः हैज़ा प्रारंभ होता है जहां देश देश से मनुष्य आते हैं जो अपने साथ इसे लाते हैं—

बहुत से डाक्तरों का मत है कि हैज़े का बिष रोगी के मल या वान्ति मे रहता है डाक्तर सैंडरसन साहब ने इसे अच्छी तरह निश्चय किया है और चूहों को हैज़े के रोगी का मल और वान्ति खिला कर देखा कि उनको हैज़े की तरह रद्द दस्त होने लगते हैं पानी के द्वारा होकर इस्का बिष प्रायः फैलता है या किसी जगह जहां संयोग से हैज़े के बीमार का रद्द दस्त पड़ा रहा तो वह सड़ कर बढ़ता जाता है बिशेष करके यदि सड़ती हुई किसी वस्तु के साथ मिला जैसा कूड़े के ढेर इत्यादि मे। हैज़े के फैलने और इस्के बिष पर अंगरेज़ी डाक्तरों के कई मत हैं और अभी तक कितनी बातें निश्चित नहीं हुई पर दिन २

इसका भेद खुलता जाता है और सैकड़ों आदमी इसकी छान मे अब तक लगी हैं।

डा० जानसन की यह राय है कि इसके बिष का असर पहले रुधिर पर होता है जिस्से रुधिर गाढ़ा पड़ जाता है और फेफड़े की सूक्ष्म नसों "क्यपिलरीज़„ मे जाने मे रुकावट होती है और लहू दिल के दहने ओर से बायें ओर को बड़ी कठिनाई से जाता है—जब रुधिर की गति मे अन्तर पड़ा तो "नर्वस सिसटेम„ के मुख्य स्थानो मे स्वच्छ रक्त न पहुंचने के कारण उनका काम बिगड़ जाता है शरीर मे पीड़ा और ऐठन होने लगती है सांस लेने मे कठिनाई पड़ती है मूर्छा आ जाती है और नाड़ी दबने लगती है-इनका यह मत है कि अतीसार और वान्ति इस बिष के निकलने के स्वाभाविक यत्न हैं-इस मत का पोषण यों होता है कि जिस हैज़े मे रद्द और दस्त नहीं होते उस्मे मृत्यु शीघ्र होती है क्योंकि विष शरीर से नही निकलने पाता और यदि रद्द दस्त होने लगे तो मूर्छा आदि भयानक उपद्रवों की शान्ति होने लगती है-इनका मत ठीक हैतो रेचक औषध से इस बीमारी मे लाभ होना चाहिये पर अनुभव से जानागया है कि इस्से हानि होती है।

बहुत लोगों का मत है कि हैजे का बिष जब शरीर मे प्रवेश करता है तो पहले रुधिर को बिगाड़ता है—कोई कहते हैं नर्वस सिसटेम पर पहले इसका ज़ोर होता है और कुछ लोगों का मत है कि आतों पर इसका असर पहले होता है और रुधिर पीछे बिगड़ता है।

बहुत लोग ऐसा समझते हैं कि हैजा एक मनुष्य के संसर्ग से दूसरे मनुष्य को होता है इस लिये किप्रायः एक स्थान के कई मनुष्यों को एक ही समय होता है पर इसके विरुद्ध यह बात आपड़ती है कि डाक्तर और रोगी के पास रहने वालों को और मनुष्यों की अपेक्षा अधिक नहीं होता—कितने डाक्तरों का मत है कि इसका बिष हवामे फैल जाता है।

सबसे नये बिचार इस बीमारी पर जो डाक्तर मूरसा हब के हैं वह यह हैं कि सब से पहले नर्वस सिसटेम मे इसके बिषका असर होता है

यह बिष आप से आप किसी स्थान मे पैदा हो सक्ता है कुछ आवश्यक नहीं कि किसी और देश या स्थान से आवे पर और जगह से अनेक प्रकार से आता है मनुष्यों के समागम से कपड़ों मे लिपट कर पानी के द्वारा इत्यादि—तिजारत की बहुतेरी चीजों के साथ यह बिष लिपट कर दूसरे देशों तक जाता है भोजन के द्वारा स्वांस लेने के साथ पेट मे पहुंचता है—अत्यन्तही सूक्ष्म कण भी इस बिष का शरीर के भीतर पहुचने से कलरा होसक्ता है थोड़ासा यह बिष बड़े तालाब कुआं या दूसरे जलाशयों को गन्दा कर देता है जिस्का जल पीने से यह भयानक रोग होजाता है-यहां तक कि कीड़े बिशेष कर मक्खियां एक स्थान से दूसरे स्थान मे इस्को बिष को फैलाती हैं-इस्से जाना जाता है कि हैजे के बिष के फैलने का एकही रास्ता नहीं है अनेक रीति से यह फैल सक्ता है और हैजे के दिनो में हवा मे भी बिषत्व आजाता है ।

जब किसी कारण से हैजा एक स्थान मे आयातो उस्के फैलने मे बहुतसी बातें सहायक होजाती हैं जैसा दिन को बड़ी गरमी और रात को ठंढ सीढ़ और नम पृथ्वी जैसा बर्षाके अन्त मे—तरीका जल्दी सूखना हवा का चलना अर्थात् उमस ओज़ोन की आकाश मे कमी (बिजली के चमकने से यह हवा पैदा होती है और बायु को स्वच्छ करती है इस लिये जब बिजली कम चमकै गी तो ओज़ोन की कमी होगी) मलिन आकाश नदियों के जल में अधिक ऊष्मा इत्यादि इस्के सहायक हैं ऊंचे और ठंढे स्थानो मे हैजा कम होता है पर कोई देश इस्से बचा नहीं है—एक साल रूस के उत्तर भाग में जहां सदा बर्फ पड़ती है हैजा बड़े वेगसे फैला और हिन्दुस्तान में एक बार मसूरी मे जो समुद्र की सतह से ६००० फुट ऊंचा है हैजा फैला ।

इस्के लक्षण या प्रागरूप ये हैं हैजा प्रगट होने के पहले कभी २ तबियत मैली रहती है—किसी को बेचैनी होती है या बदन टूटता है-नाड़ी सुस्त चलती है मुख की कान्ति मलिन पड़जाती है—चक्कर आता है या कान मे

शब्द सुन पड़ता है—पेट गड़गड़ाता है या पेटमे पीड़ा होती है-दोचार दिन तक हैजे, का बिष शरीर मे गुप्त रहता है पर थोड़ेही काल मे अपना प्रभाव प्रगट कर दिखाता है—जो प्रागरूप ऊपर लिख आये बहुधा एक भी लक्ष्य मे नहीं आता एकाएक हैज़ा होजाता है—इसकी चार अवस्थाये हैं पहली अवस्था मे दस्त आती हैं—दूसरी में रद्द और दस्त जल्दी २ होती हैं—तीसरी मे मुग्धता होती है चौथी मे ज्वर आता है—पहली अवस्था प्रायः थोड़े ही समय तक रहती है या दस्त और रद्द बड़े वेगसे एकही समय होने लगती हैं—हैज़ा प्रायः कुछ रात रहते प्रातः काल आरंभ होता है—और भी मरी की बीमारी मे देखा गया है कि रात को इसका आरंभ होता है-डाक्तरों का मत है कि रात को सोने से शरीर ऐसा शिथिल होजाता है कि बीमारी के विषको सह नहीं सकता कई बार देखागया कि मरीके दिनो मे जहां इसका बड़ा जोर हुआ लोग रात को सोनेसे भय खाते हैं क्योंकि सोते २ रातको इसकी बाधा होती है-पहले दस्त आते हैं और मल बंधा या ढीला होता है दस्त आने मे प्रायः दर्द या मड़ोर नहीं होता पर जल्दी दस्त सफेद चावल के धोवन के तरह होने लगते हैं और बहुत २ सा होता है उपरान्त रद्द बड़े बेगसे होती है-प्यास का चटका आरंभही से होता है पर पेट मे पानी ठहरता नहीं रद्द हो जाता है-पिंडलियों मे और अंगुलियों मे ऐंठन शुरू होजाती है पेट के पट्ठों मे दर्द होने लगता है शरीर से बहुत सा पानी निकल जानेसे सुस्ती आजाती है और उपरान्त रोगी मुग्ध होने लगता है चेहरा सूख जाता है नीला और भयानक होजाता है आखें बैठ जाती हैं शरीर का रंग शीशे की तरह हो जाता है छूने मे बहुत ठंढा और पसीने से तर होजाता है अंगुलियां सिकुड़ जाती हैं जैसा पानी से भिगोई गई हों नह नीले पड़ जाते हैं नाड़ी की गति नहीं मालूम होती सांस लेने मे कठिनाई होती है और सांस ठंढी आती है- आवाज़ दब जाती है यहां तक कि रोगी बहुत धीरे २ बोलता है पर होश अब तक दुरुस्त रहता है- रोगी एक तरह पड़ा नहीं

रहता बेचैनी होती है हांथ पैर फेंकता है कपड़ा शरीर पर नहीं रखता गरमी बहुत मालूम होती है पर शरीर ठंढा रहता है बीच २ सांस लेनेमे रुकावट होती है प्यास नहीं बुझती रद्द दस्त जल्दी २ होते हैं पेशाब नहीं होता।

उपरान्त तीसरी अवस्था आरंभ होती है तब रद्द दस्त कम होते जाते हैं आंख आधी बन्द आधी खुली रहती है नाक नुकीली हो जाती है और चमड़ा सिकुड़ जाता है अगर चमड़े को चुटकी से उठावें तो सिकुड़न बहुत देर तक रहती है--इस अवस्था मे शरीर के सब काम रुकने लगते हैं और रस शरीर मे खिंचता नहीं मुह और कण्ठ शुष्क हो जाता है थूंक नहीं इकट्ठा होता पेशाब नहीं बनता-दस्त और रद्द बन्द होने लगता है पर फ़री ओकी आती है—दस्त पहले से गाढ़ा होता है और उसमे मछली की गन्धि आती है—प्यास बहुत बढ़ जाती है और पेट मे बड़ी जलन होती है—जीभ ठंढी और सूखी रहती है सांस लेने मे इतनी कठिनता होती है और सुस्ती इतनी बढ़ जाती है कि रोगी थोड़े ही काल मे शान्त हो जाता है।

चौथी अवस्था आराम होने की है इसको "रिऐक्शन„ कहते हैं जब बीमार आराम होने लगता है तो मुख की कान्ति सुधर जाती है—शरीर का रंग अच्छा हो जाता है शरीर मे गरमी आजाती है नाड़ी प्रबल हो जाती है श्वास क्रम से होने लगती है बेचैनी और प्यास मे कमी हो जाती है औंघाई आती है रद्द बन्द हो जाती है पर दस्त कुछ २ होता जाता है और दस्त के रंग मे अन्तर पड़ जाता है जिसकी रंगत कुछ पीली पड़ जाती है और पित्त जो अब तक बन्द था दस्त के साथ जान पड़ता है—धीरे २ तबियत दुरुस्त हो जाती है कभी इतनी भलाई होने पर भी फिर बिमारी बढ़ जाती है—इस अवस्था मे देखना चाहिये कि मूत हुआ या नहीं यदि न हुआ हो तो इसका यत्न करना चाहिये—शरीर मे गरमी आ जाती है पर प्रायः जितनी आरोग्य के लिये उष्णता चाहिये उससे अधिक उष्णता

हो जाती है और ज्वर हो आता है परन्तु ज्वर आजाने पर भी यदि मूत्र न हुआ तो बड़ा डर रहता है।

इन लक्षणों से मालूम होगा कि हैज़ा बड़ा भयानक रोग है और इसमे मृत्यु का बहुत भय है—किसी साल हैज़े के विष मे बड़ा ज़ोर रहता है और कभी कम—हर सौ बीमार मे बीस से लेकर अस्सी आदमी मर जाते हैं—जब हैज़ा किसी स्थान मे आरंभ होता है तो औसत के हिसाब से आधे से कुछ अधिक रोगी चंगे हो जाते हैं बूढ़े या बहुत छोटे बच्चों की मृत्यु बहुत होती है अधिक मद्य पीने वाले भी इस रोग मे बहुत मरते हैं।

इसके असाध्य लक्षण ये हैं—जल्दी २ रोगी का हाल बिगड़ना—शरीर जल्दी ठंढा होना नाड़ी का दब जाना—बेहोशी कभी २ दस्त का एकाएक रुक जाना—साध्य के लक्षण ये हैं—धीरे२ तबियत दुरुस्त होना—बदन गरम हो आना—पेशाब होना—नाड़ी का प्रबल हो जाना—इस रोग मे दो घंटे से लेकर सात दिन तक मे मृत्यु हो सक्ती है प्रायः मरने वाले रोगी दो या तीन दिन मे मर जाते हैं जब हैज़ा फैले तो इससे बचने के लिये क्या २ तदबीर है इसे फिर लिखेंगे—   डाक्तर जि—के—व्यास क्रमशः—

। तर्कचूर्णिका ।

। पहले के आगे से ।

(३८) कार्य की उत्पत्ति के स्थल में पूर्व कारणता के नियामक सम्बन्ध से जो यथार्थ कारण (कार्योत्पत्ति के सम्बन्धी) (अपने) असाधारण विशेषण से उपलक्षित बन के उपस्थित होता है, वह उक्त रीति से (कार्योत्पत्ति के सम्बन्धी) साधारण विशेषण वाले उक्त विध कारणों से प्रबल होगा, और असाधारण विशेषण के पहिचानने में कठिनता भी नहीं है क्योंकि असाधारण विशेषण वही है जिसने कि साधारण विशेषणों की बुद्धि को बाधित की है, उदा॰ यथा, जब कुम्भकार का, घट से साक्षात्सम्बन्ध रूपी (घटोत्पत्ति का सम्बन्धी) असाधारण विशेषण गृहीत होता है, तब कुम्भकार की अपेक्षा

कुम्भकार के पिता, पितामह इत्यादि जो घट से परम्परा सम्बन्ध रूपी (घटोत्पत्ति के सम्बन्धी) साधारण विशेषणों से उपलक्षित हैं दुर्बल कारण कहे जाते हैं; परन्तु जब मृत्तत्व रूपी असाधारण विशेषण की ओर ध्यान देते हैं तब कुम्भकार के पिता, पितामहादि को कौन कहे बरन ईश्वर पर्यन्त अनुधावन करके ईश्वरही को कुम्भकार की अपेक्षा प्रबल कारण कहते हैं।

तुलसीकृत रामायण के उत्तर काण्ड में एक दोहा है "सो परन्तु दुख पावै शिर धुनि धुनि पछताइ॥ कालहिं कर्महिं ईश्वर हिं मिथ्या दोष लगाइ॥ यहां पर साक्षात्सम्बन्ध से कर्त्ता का कारणत्व गृहीत किया गया है परन्तु अन्यत्र उसी ग्रन्थ में वाक्य है यथा: "कर्म प्रधान विश्व करि राखा। जो जस करै सो तस फल चाखा॥ सो ऐसे स्थल में कर्म के असाधारण विशेषण का ग्रहण किया है, और भी उसी ग्रन्थ में एक चौपाई है यथा, "होइहैं सोइ जो राम रचि राखा॥ को करि तर्क बढ़ावै शाखा॥ यहां पर ईश्वर रूपी कारण का असाधारण विशेषण ग्रहण किया गया है इत्यादि?

प्रबल कारण के जोड़ तोड़ में दुर्बल कारण अन्यथा सिद्ध होता है, उदा॰ यथा, कुम्भकार के सम्मुख कुम्भकार का पिता अन्यथा सिद्ध है, फलतः उक्त भांति से कार्य्य की उत्पत्ति के विषय में कारण का असाधारण विशेषण से सम्बन्धही कारणता की बुद्धि में नियामक है,॥

ऊपर यथार्थ कारण कहने का तात्पर्य्य यह है कि अंकुर रूपी कार्य्य की उत्पत्ति के स्थल में पूर्व से यद्यपि गर्द्दभ अपने अत्युग्र कर्कशनाद रूपी असाधारण विशेषणसे (जिसके कि श्रवण से औरों के ग्रहण की क्या कही जावे विवश होके बुद्धि यथा स्थित नहीं रह जाती है) उपलक्षित बनके उपस्थित है तथापि उस (गर्द्दभ) में कारण के लक्षण नहीं पाये जाते हैं इस लिये असाधारण विशेषण से युक्त होके भी गर्द्दभ न प्रबल अथवा न दुर्बल कारण है।

कारणों की प्रबलता और दुर्बलता भली भांति चित्त मे चढ़ जावे इस हेतुसे कुछ और भी उदा॰ लिखता हूं यद्यपि कार्य्य के सन्निकट कारण अर्थात जिस कारण की कारणता के ग्रहण में कार्य्य से उस कारण की सन्निकटता हमारे

चित्त में चढ़े वह कारण प्रबल होता है उदा० यथा राजा के सेवक युद्ध करते हैं इसलिये वे युद्ध के कारण सत्य २ हैं परन्तु यदि वे राजा से वेतनादि न पाते तो काहे को युद्ध करते अतएव वेतनादि सेवकों की अपेक्षा युद्ध कार्य के सन्निकट कारण चित्तमे चढ़ते है इस लिये वे सेवक रूपी कारण की अपेक्षा प्रबल हैं ऐसेही जहांलो बने तहांलों एकको कारण मानें अनेकों को नहीं उदा० यथा, अग्नि जो दाह रूपी कार्य का कारण है इसी एक को कारण मानें अग्नि मे निज मन से नवीन दाहिका शक्ति की कल्पना करके अग्नि और अग्नि की शक्ति इन दोको कारण मानने की अनावश्यकता है तथापि यदि किसी और प्रमाण की प्रबलता से आपातत: दुर्बल कारण की मूलमें सेवास्तविक प्रबलता सिद्ध होती दीखे तो उसी को अङ्गीकार करना चाहिये, ऐसेही जहां प्रमाणान्तरों से अनेकों को कारणता प्रबल सिद्ध होवे तो उससे भी विमुख होना नहीं चाहिये क्योंकि महात्माओं ने कहा है कि बुद्धिका फल अनाग्रह है आपातत: दुर्बल कारण की मूल में प्रबलता का उदा० यथा घरकी मलिनता औरों की बुद्धि मे यद्यपि मारी के प्रति अप्रबल कारण समझ पड़ती है परन्तु वैद्यों की प्रमाणी कृत बातोंसे घर की मलीनता मारी का प्रबल कारण सिद्ध होती है इस लिये मलिनताको हमे भी मारी का प्रबल कारण स्वीकार करना पड़ता है अनेक कारणों की प्रबलता का उदा० यथा घड़े के एकही खपड़े को दूसरे खपड़े से प्रबल कारण नहीं मान सकते हैं— क्योंकि प्रमाण प्रत्यक्ष से सिद्ध है कि दो खपड़ों से घड़ा बना है इस लिये दोनो खपड़े परस्पर समान हैं।

चेत रखना चाहिये कि उक्त बिध दो प्रकार के अर्थात् वास्तविक "सन्निकट" और "एक" कारण "लघु" और उससे विपरीत अर्थात् "वास्तविक असन्निकट" अथवा "आपातत: सन्निकट" और "अनेक" कारण "गुरु" कहलाते हैं, गुरु से लघु प्रबल अर्थात् अन्यथा सिद्ध होता है, क्योंकि गुरु की अपेक्षा लघु शीघ्र चित्त में चढ़ आता है, हाँ प्रमाणान्तर से सिद्ध "गुरु" कारण "लघु" कारण से प्रबल होता है, जैसा कि घड़े के खपड़ों के विषय में ऊपर उदा-

हरण दिया गया, निदान सूक्ष्मानुसन्धान से सर्वत्र प्रबल कारण की प्रबलता का हेतु उसका (कार्योत्पत्ति के सम्बन्धी) असाधारण विशेषण से ही सम्बन्ध सिद्ध होगी इसमें संशय नहीं, यथा ऊपर के उक्त उदा० में सेवक की अपेक्षा वेतनादि सामीप्य रूपी असाधारण विशेषण से युक्त है, योंही बहुत्व की अपेक्षा एकत्व असाधारण विशेषण है, उससे अन्यत्र यथा घड़े के खपड़े आदि के स्थल में अनेकत्वही असाधारण विशेषण है; और साधारण विशेषणों की अपेक्षा असाधारण विशेषण पहिले चित्तस्थ होता है इस लिये असाधारण विशेषण वाला कारण प्रबल वा मुख्य अथवा अनन्यथा सिद्ध कारण कहलाता है, और उसके विपरीत साधारण विशेषण वाला कारण दुर्बल वा अमुख्य और कोई २ अन्यथा सिद्ध भी कहा जाता है॥

भाग्यवती

स्त्री शिक्षा की अपूर्व पुस्तक पं—श्रद्धा रामजी फुल्लौरी द्वारा रचित हमारी समझ में स्त्री शिक्षा की जितनी पुस्तकें छपी हैं इसके सदृश उपकारी बहुत कम पुस्तकें हैं भाषा इसकी सरल और शुद्ध हिन्दी है—भाग्यवती काशी के उमादत्त नामक ब्राह्मण के घर मे उत्पन्न हुई है उसी के प्रसंग मे यह कहानी ऐसी उत्तम रीति पर लिखी गई है कि बिना अन्त तक पढ़े पढ़नेवाले का चित्त उपराम को प्राप्त होही नहीँ सक्ता—इस ग्रंथ मे जिस देश और जिस भाँति के स्त्री पुरुषों की बात चीत हुई है वह उसी की बोली और ढब से लिखी है बाल्य विवाह के जटिल कुसंस्कार की बुराई इसमे अति उत्तम रीति पर दिखाया है—जैसा संस्कृत मे बहुतसी आख्यायिकायें हैं उसी ढंग पर इसे हम हिन्दी की आख्यायिका कहेंगे— इस पुस्तक पर भाषा संवर्द्धिनी सभा अलीगढ़ से ५०) पारितोषक भी मिला है मूल्य १।) पता पुस्तक मिलने का पं—श्रद्धारामजी का स्थान जिला जालन्धर।

१६२



हिन्दीप्रदीप ।

मासिक पत्र ।

बिद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित	प्रगट ह्वै आनंदभरै ॥
बचिदुसह दुरजन बायुसों	मणिदीप समथिर नहिंटरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति	कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख	तादि भारत तम हरै ॥

१ मई सन् १८८७ | जिल्द १० संख्या ९

इलाहाबाद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
देशोपकारक यंत्रालय में प्रकाशित
किया गया

मूल्य अग्रिम ३।≋) पीछे देने से ४।≋)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १॥≋)

२९३

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द १० | १ मई
संख्य ८ | सन् १८८७ ई०

। सभ्यता और साहित्य ।

साहित्य सभ्यताका प्रधान अंग है यह कभी सम्भव नहीं कि कोई देश सभ्यता मे बढ़ जाय और साहित्य उस देश की भाषा का पीछे हटा रहै—कोई देश जो एक बार सभ्यता की सीमा को पहुच पीछे घटती की दशा मे आगया है वहां का साहित्यही इस बात की साक्षी और नपाना है कि वहां सभ्यता किस दरजे तक पहुच चुकी थी—सभ्यता का असर जितना अधिक देश के साहित्य पर पहुचता है उतना उस देश या जाति की और किसी बातों पर नहीं—जैसा पुष्प को अपने विकाश के लिये सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता है वैसाही साहित्य के विकाश के लिये सभ्यता की आवश्यकता है और सभ्यता भी विना साहित्य के ऐसी फीकी और बेजायके होगी जैसा बिना नोन का भोजन बिरस और फीका मालूम होता है-

१६४

यहां तक तो सभ्यता और साहित्य का घनिष्ट सम्बन्ध दिखला या गया अब सोचना चाहिये कि पहले पहल साहित्य की बृद्धि का क्या सहारा है—कर्मण्येवा धिकारस्ते माफलेषु कदाचन—से साहित्य की बृद्धि मे काम न निकलेगा इसके लिये किसी तरह के प्रति फल का सहारा अवश्य होना चाहिये—श्री मान्सर बिलियम म्यूरने हमारी भाषा को जरा सा प्रोत्साहन दिया था दोही तीन बर्ष मे कितनी पुस्तकें बनगईं—बिलायत के बहुतेरे उच्चश्रेणी के लेखकों को जीते जी द्रब्य सम्बन्धी कोई प्रति फल कभी नहीँ मिला जब कोई नई किताब छपवाते थे तो उपरान्त उन्हे झीखनाही हाथ लगता था सर्व साधारण मे उनकी रचना वालेखका वड़ा मान्य और चाहहोना एक ओर रहा कोई पूछता तक नहीँ था — पर यह एक सहारा उन्हे भरपूर था कि उन के जी को ढाढ़स देने के लिये उन्ही के सम कोटि और समान धर्म्मा दो चार मनुष्य थे जिन से उन के लेख का मान्य और प्रतिष्ठा के द्वारा उन का आंसू पुछ जाता था—हमारी हिन्दी मे सोभी नहीँ है कि कोई उन विषयों का देखने और कदर करने वाला भी तो हो—

Full many a flower is born to blush unseen,
And waste its sweetness on the desert air.
Full many a gem of purest ray serene,
The dark unfathomed caves of ocean bear. Gray

इस दशा मे भी जब कि सब ओर से नैराश्य और अनुत्साह का तिमिर छाया हुआ है जो लोग अपने तन का लहू सुखा

सुखा कर प्राण पण की बाजी लगाये हुये भाग्यहीना हिन्दी के साहित्य की वृद्धि मे लगे हुये हैं ऐसे सफल जन्मा क्या कम धन्यबाद के योग्य हैं ? अस्तु जिन लोगों का यह मत है कि अंगरेजी राज्य के प्रताप से हमारे देश मे नये ढंग की सभ्यता का प्रभात हो रहा है और यह बड़ा शुभ सूचक चिन्ह है किन्तु सभ्यता और साहित्य का घनिष्ट सम्बन्ध हम ऊपर दिखा चुके हैं उस सूत्र के अनुसार जब तक हमारी भाषा के साहित्य की उन्नति नहोगी तब तक इस सभ्यता को भी बिजली की चमक के समान क्षणिक मानना चाहिये चाहो हमारे नव शिक्षित नाक फुलाय फुलाय सभ्यता सभ्यता पुकार कितनाही गाल बजाया करें पर पूर्ण सभ्यता विना देश भाषा की उन्नति के सर्वथा असंभव है ।

हमारे सुशिक्षितों में पति पत्नी का मेल रहने की क्या उपाय है ।

अंगरेजी शिक्षा से हमारे देश का बड़ा उपकार हुआ इसे कौन न मानेगा ? जिस्का फल नई प्रकार की सभ्यता में परिणत हो हमारे देश के शिक्षित नव युवकों को कृत कृत्य और कृतार्थाभिमानी कर डाला किन्तु कृत विद्य युवक जन एक इस बात से अपने को अत्यन्त दुखी मानते हैं कि संसार के संपूर्ण सुख की सार भूत उनके घर को स्त्रियों के साथ उनका मेल नहीं खाता—अच्छे २ कुलीन वंश के बालक स्कूल और कालेजों मे बरसों तक उत्तम शिक्षा लाभ कर परंपरा प्राप्त अनेक कुसंस्कारों से अपने को विमुक्त पाते हैं कठिन से कठिन परीक्षा मे उत्तीर्ण हो लम्बी चौड़ी उपाधि भी

प्राप्त कर लिया बेरिस्टर ऐटला मास्टर आफ मेडिसिन एल एल डी हो ऊंची से ऊंची सभ्यता और ऊंची से ऊंची उन्नती के शिखर पर चढ़े हुये धन कमाने के अभिलाष से किसी न किसी काम मे प्रवृत्त हो सौ दो सौ चार सौ रुपये प्रतिमास घर मे लाने लगे—गाड़ी, घोड़ा, नौकर, चाकर, दर वान, धन, धान्य, वस्त्र, अलङ्कार किसी की कमी न रह गई जाति बिरादरी वन्धु भाई के बीच मान संभ्रम प्रतिष्ठा प्राप्तकर मर्त्यलोक मे स्वर्ग सुख का अनुभव करने लगे—किन्तु थोड़े ही काल मे उनका यह सब स्वर्ग सुख सपने का हो जाता है जैसा शोभायमान् सौन्दर्य शाली गुलाब के फूल मे कांटा—इतना सब सुख संपदा के रहते भी उनकी स्त्री जिसे वे "स्वीटहार्ट" कहते लज्जित होती हैं उनके जीवन में कंटक रूप हो जाती हैं—बाबू साहब अपर्याप्त यंत्रणा और कष्ट सह कर अनेक उत्तम वस्त्र अलंकार लाते हैं कि घर वाली अब भी प्रसन्न रहे और उनकी अनुगामिनी हो किन्तु महारानी जी को कहां सन्तोष—बाबू साहब का मन ज्ञान गिरि के ऊंचे शिखर पर चढ़ा हुआ है बहूरानी का मन भ्रम बिषाद मूर्खता आदि बाल भाव की भूमि से एक इंच भी ऊपर को नहीं चढ़ा—बाबू साहब शेक्सपियर और मिलटन के परम भक्त हो उनके पाठ और मनन मे असीम सुख के सागर मे मग्न होते हैं उन की प्रेयसी को काला अक्षर भैंस बराबर लिखने पढ़ने का नाम सुन कुढ़न पैदा होती है—बाबू साहब राज-नीति बिज्ञान बिलायत और भारत की दैनिक घटना और पालिटिक्स पर कथोपकथन कर कहिये आपका दिमाग चाटजांय वहां सबेरे से सांझ तक सियापा और बिरादराने का चवाव जिस्के आगे बाबू साहब के महापोलि-टिकल बिचार भी तुच्छ हैं—पति सदा इसी चिन्ता मे व्यस्त रहते हैं क्या करें कि बिद्वानो की मण्डली मे आदरणीय हों हम सिविल लहनमे प्रविष्ट होजांय या अमुक उच्च पद पर पहुंच जांय तो देश का बड़ा उपकार और कल्याण साधन करें इत्यादि—उनकी पति प्राणा अपने जीवन का उद्देश्य यही मानती हैं कि कौनसा ऐसा बशी करण करावैं कि वे हमारे दासबने रहैं

सुनती हैं पुत्तन महाराज का जन्तर बहुत अच्छा है सुखिया को भेज आज उन्हे यहीं बुलावैं या हमी उनके घरजांय इत्यादि—तात्पर्य यह कि स्त्री पुरुष दोनो को प्रकृति रुचि लक्ष्य और संस्कार मे इतना आकाश पाताल का अन्तर रहता है कि उन्मे परस्पर यथार्थ प्रेम और सन्तोष जनक प्रणय किस भांत पुष्ट पड़ सक्ता है यह हमारे अति सूक्ष्म बिचार के विषय से भी बाहर है—हमारे देश की समस्त महिलागन इसी प्रकार की हैं यह हमारा तात्पर्य कभी नहीं है बामा बंग मण्डल कितनी ऐसी भारत रमणी निकलेंगी जिन्मे यूरोप की ललना ललाम का भरपूर सादृश्य पाया जायगा किन्तु कहीं २ ढूढ़ने से अति विरल जैसा दाल मे नमक तब इस दशा मे जब तक उनके सब संस्कार और रुचि तथा प्रकृति बदल कर अपने शिचित पति के अनुकूल न होंगे तब तक वास्तविक प्रेम का अभावही बना रहेगा और यह तभी होसक्ता है कि जब उनको उत्तम शिक्षा दीजाय—हमारे देश के महिला मण्डल का पुराना जटिल संस्कार बदल कर आधुनिक सभ्यता के ढंग पर लाया जाय और सब के ऊपर सर्व नाशकारी बालबिवाह की कुरीति मे कुछ रुकावट की जाय अन्यथा इस उद्देश्य की पूर्णता असंभव है ।

।गदहे मे गदहापन क्या है ?

ऐसा भी कोई होगा जो इस तीन अक्षर के शब्द को न सुना हो—हम पूछा चाहते है इसमे कौनसी ऐसी बात बुराई की है जो सभी इसे नापसन्द करते हैं जिसने कोई बुराकाम बेवकूफी का किया लोग झट्ट कह बैठते हैं गदहा है अब बतलाइये इस गदहे मे गदहा पन क्या है जो उस आदमी की बेवकूफी से मेल खाता है—सच पूछिये तो गरीबों के यह बड़े ही काम का है मनुष्यों के काम की यावत् वस्तु यह अपनी पीठ पर लाद

२ एक स्थान से दूसरे से पहुंचाता है खाता थोड़ा है रात भर चौकसी रखना है और शहनाई बजाया करता है—कुत्ता तो न घर का होता है न घाट का और यह घर और घाट दोनों का होता है—क्या यह बी॰ए॰ पास कर वकालत करता तब इसे कोई बुरा न कहता? या डाक्टर होता तो लोगों से प्रशंसा पाता? कुसूर साफ़ काम से चाहो नहो पर नाम से तो यह बड़े २ वैद्य राजों का भी सह नामी है "गद रोग हन्ति,,—अथवा पंडित और पाधा बन यजमानो को अपना सा बनाय उन्हें उलटे छूरा मूड़ा करता तब यह प्रतिष्ठा के योग्य समझा जाता ? या यह म्युनिसिपल कमिशनर हो शहर की सफाई मे लगा रहता तब इसे आप बुद्धिमान कहते ? फिर न केवल यह अपनेही जात से बुरा है वल्कि इसका कुल खान दान मे पालने वाले तक को लोग बुरा समझते हैं—क्या कहें यह खुद इस लायक नहीं है कि कलम उठा कर कुछ लिख सके नहीं तो यह अपनी निन्दा करने वालों से भर पूर समझ लेना और एक बात कहने वालों को चार २ सुनाता—किन्तु यह बेचारा बड़ा गरीब है सब तरह की मेहनत देता है किसी तरह का उजर नहीं करता—सिधाई निकाई और सुन्दरापे मे तो आप आपही हैं आप क्या आप के बाप को भी कुछ कुदरत हासिल नहीं कि मुंह खोल सकिये-यह आप कि सिधाई का सबब है कि जिसके मनमे जो कुछ आता है कह सुन डालता है और को कोई बुरा कहने की हिम्मत नहीं बांधता जिसकी शकल देखने को कौन कहे नाम सुनते कम्प होता

२८९

है करालता जिसमे यहां तक है कि जिस बन में रहता है वहां के साधु जन्तुओं के लिये मानो यमराज का छोटा भाई है — सच है "सीधेका मुंह कुत्ता चाटै,, गदहे मे इतनी सिधाई न होती तो कोई इसपर व्यंग्य और आक्षेप करने का साहस न बांधता ।

तारे का गिरना और जीव की उत्पत्ति

तारे टूटते सब लोगों ने देखा होगा । बहुत से लोग समझते हैं कि सचमुच तारे ही गिरते हैं पर यह कल्पना ठीक नहीं । तारे कभी नहीं गिरते धरती पर इन के गिरने के पीछे देखने से निश्चय हुआ है कि ये पत्थर, लोहा या इसी प्रकार के और कोई पदार्थ होते हैं। धात या दूसरी चीजों से बने-हुए अनगिनत पदार्थ आकाश में घूमा करते हैं। अंगरेजीमें इन्हें मीटियर (meteor) कहते हैं और हिन्दी में उल्कापिंड कह सकते हैं। यह बात सिद्ध हो चुकी है कि उल्कापिंड सूर्य आदि पिंडों की आकर्षण शक्ति से ग्रहों की भांति अपनी २ पथ में आकाश में घूमा करते हैं। जब कोई उल्कापिंड घूमते २ पृथ्वी के आकर्षण की सीमा में आ जाता है तो उस के जोर से भूमि पर बड़े बेग के साथ गिरता है और पृथ्वी के चारो ओर की वायु से टक्कर खाने के कारण आग निकल आती है। यही आग इस उल्कापिंड की चमक का कारण है जिस से लोगों को इसके तारा होने का धोखा होता है। इन उल्कापिंडों को ग्रहखंड कह सकते हैं। इन के विशेष करके दो मंडल पृथ्वी की राह को काटते हैं। एक मंडल में से १० वा ११ अगस्त को पृथ्वी चलती है और दूसरे मंडल में से १२ वा १३ नवम्बर को जाती है। इन्हीं दोनों समय में बहुत से उल्कापिंड रात को गिरते देख पड़ते हैं। विद्वानों ने गणित के द्वारा सिद्ध किया है कि इन दोनों मंडलों में से एक का बेरा यूरेनस नामी ग्रह के मंडल से और दूसरे का नेपच्यून ग्रह के

मंडल से बड़ा है। ज्योतिषियों ने यह भी ठहराया है कि बहुत से उल्का-पिंड दूसरे जगत से आये हैं और दूसरे में जा भी सकते हैं। कितनों का यह भी मत है कि ये सब किसी दूसरे जगत के प्रलय में टूटे हुए ग्रहों के टुकड़े हैं। इस बात का कोई पक्का प्रमाण नहीं है और बहुधा लोग इस पर विश्वास नहीं करते परन्तु इंगलिस्तान के प्रसिद्ध ब्रिटिश असोसियशन समाज के सभापति सर विलियम टाम्सन ने इस मत को मान कर एक विचित्र बात निकाली है।

भूतत्व विद्या से यह बात जानी गई है कि पृथ्वी पर आदि में करोड़ों बरस तक किसी प्रकार के जीव और वृक्ष आदि न थे। फिर जीव आदिक आये कहां से? बहुत दिनों तक यूरप में इस विषय पर विवाद होता रहा। देखने में आता है कि बिना जीव जीव की सृष्टि नहीं होती। यद्यपि पहले बहुत लोगों की यह राय थी कि अंडादिक बिना भी जीव उत्पन्न होते हैं पर अब सूक्ष्मदर्शक यंत्र (microscope) की सहायता से लोगों का यह भ्रम मिट गया है। इस बात का प्रमाण भली भांत मिला है कि लोग जिन जंतुओं को आप से आप बिना अंडे के पैदा हुआ समझते थे वे सब अंडज हैं। बस जब जीव बिना जीव की उत्पत्ति के नहीं हो सकता तो पहला जीव कहां से आया! इस प्रश्न के उत्तर में बहुधा लोग कहते हैं कि "ईश्वर की इच्छा से"। परन्तु उसी ईश्वर ने अपनी इच्छा को भी नियम के आधीन कर रक्खा है।

सर विलियम टाम्सन लिखते हैं कि बहुधा उल्कापिंड जो दूसरे जगत से आते हैं अपने साथ जीव आदि के बीज लाए हैं और उन्हीं से इस पृथ्वी पर जीव आदि की सृष्टि हुई है। तहकीकातसे यह मालूम हुआ है कि आदि में पृथ्वी आग के गले हुए गोले के रूप में थी। ऐसे गोले पर जीव का बसना सम्भव न था। इस से यह बात सिद्ध होती है कि जब पृथ्वी जीवों के रहने के योग्य हुई उस समय उस पर किसी प्रकार के जीव न थे। पहाड़

जल वायु प्रकाश आदि तो थे, परन्तु पेड़, पल्लव, जीव आदिका नाम भी न था। तो क्या ये आप से भूमि फोड़ कर निकल आये और अपनी २ शोभा को धारण किया, या बीज से उत्पन्न होकर पृथ्वी पर फैल गए? इस प्रश्न के उत्तर में टाम्सन साहिब ज्वालामुखी पहाड़ों का दृष्टान्त देकर कहते हैं कि विसूवियस और एटना पहाड़ी की गुफा में से द्रव पदार्थ (लावा) निकलकर जब नीचे बह आता है तो झटपट जम जाता है। कुछ दिन पीछे दूसरे स्थानों से आकर उस में जीव रहने लगते हैं या हवा छोटे २ अंडों और बीजों को उड़ाकर वहां लाती है जिस से उस में जीव और पेड़ उपजती हैं। जब हम लोग देखते हैं कि किसी नये टापू में जो अग्नि के उत्पात से पैदा हुआ है थोड़े ही दिनों में बनस्पति और जीव फैल गए हैं झट यह अनुमान होता है कि हवा और मछलियों से लाए बीज इस के कारण हैं। इसी प्रकार टाम्सन साहिब के अनुसार पृथ्वी पर आदि में जीव उत्पन्न हुए हैं। हजारों सूरज, ग्रह और उपग्रह आकाश में घूम रहे हैं। अगर समुद्र में हजारों जहाज बरसों तक बिना मांझी दूर दूर छोड़ दिये जायँ तो एक जहाज से दूसरे जहाज का भिड़ जाना सम्भव है। इसी प्रकार आकाश रूपी समुद्र में भी एक ग्रह घूमते २ दूसरे ग्रह से भिड़ जायगा और धक्का लगने से जो गरमी पैदा होगी उस से उस ग्रह का बहुत सा भाग तो उसी समय गल जायगा और थोड़ा सा जो बच रहेगा उल्कापिंड बनकर आकाश में घूमने लगेगा। टूटने के पहले ग्रह में जो सब अंडे जीव और पेड़ पल्लव रहे होंगे उन के कुछ न कुछ बीज उन बिना गले टुकड़ों में अवश्य रह जायंगे। किसी ऐसे ही टुकड़े के पृथ्वी पर गिरने से पेड़ पल्लव और जीव आदि उत्पन्न हुए होंगे॥ —का—प—

इश्क और रिज़क

संसार इसी दो से है—इसी दो पर है—इसी दो मे है—सूक्ष्म विचार की बारीकियों पर चित्त को लगाइये तो इस जीवन मे सिवाय इस दो बात के और कुछ न पाइयेगा हेर फेर एक न एक रूप रंग मे सब इसी दो के ढंचर या इसी दो के अन्तर्गत पाइयेगा—जब से उठते हैं और जब से गाढ़ निद्रा के परवश हो सोते नहीं इसी दो के आवर्त मे भ्रमते फिरते हैं—हम पहले कह चुके हैं, संसार इसी दो से है—दो मे एक इश्क है जिस्के अनेक नाम रूप हैं—इसे चाहो इश्क कहो चाहो Love "लव" कहो चाहो प्रेम कहो प्रणय कहो स्नेह कहो प्यार कहो मोहब्बत कहो प्रीति कहो भक्ति कहो तात्पर्य और परिणाम सब का एक सा है—अब दूसरे को लीजिये संपूर्ण मान और प्रतिष्ठा को भंग करने वाली यह उदर दरी ऐसा भारी गड़हा है जिस्के गहराई का अन्त नहीं है नित सबेरे से उठ सांझलों इस्के पाटने की भर पूर फिकिर किजिये दूसरे दिन फिर खाली का खाली—पहले तो इस पेट के पाटने की चिन्ता कीट पतंग से ले मनुष्य तक एक २ के साथ लगी है सन्तोष को जो पास नहीं खड़ा होने देती—माना कि इस

ओर से फराकती हुई शरीर मे स्वास्थ्य ओर बल आया आमोद ओर बिलास की सूझी प्रबल पंचेन्द्रियों के बिषयों ने जकड़ रक्खा है कहां छुट कर भाग सक्ते हो बिरक्त ओर बेदान्ती बेदांत के बछड़ों के समान पड़े २ बंबाया करें कौन उनकी सुनता है—स्नेह के फन्दे ने फसा लिया प्रेम पाशी के परबश हुये—जिसे चाहो प्रेयसी कहो प्रियतमा कहो प्राण प्यारी कहो ललना कहो "स्वीटहार्ट,,-"बेटर हाफ,,—आशना—बुत आदि हजारों शब्द हैं जिन्मे रस टपका पड़ता है स्मरण मात्र से शृंगार का समुद्र उमड़ता है—चंचल मन दृढ़ता ओर धैर्य बांधे मदन बान से बिधकर टबका पड़ा रहे कभी संभव नहीं बिबेक बिचार मोरालिटी की लाखों कश्तियां इस शृंगार सागर की लहरों मे टकराती फिरती हैं—पहले एकही गड़हा पाटने की चिन्ता रही अब दो की हुई अल्पही समय मे दो से चार हुये आठ हुये दस हुये बड़ा भारी कुनबे का कुनबा जुड़ गया बस संसार चक्र की धुरी चल निकली—राव से रंक तक सब उसी धुरी मे लटके हुये घिसलते चलेजारहे हैं परमात्मा की अजेयमाया के खेल खेलोनाबने बिबश हो अपनी २ बुद्धि ओर पौरुष के अनुकूल पेट के कारण भांत २ का स्वांग रचा करते हैं पाप आचरण से बचते हुये उचित रास्ते पर चलते

रहे पुण्य शील धर्मात्मा कहलाये जो हजारों मे कोई दो एक बिरले हंगे किन्तु सौ मे निन्नाड़वे राजसी तामसी प्रकृति के सहकारी हो अपना सुख अपना लाभ सदा ताकते रहते हैं और उसी इश्क और रिज़्क के ढांचे मे ढुलकते चले जाते हैं।

। हैज़ा ।

पहले के आगे से

हैज़े से बचाव क्योंकर हो सक्ता है ? इस्का उत्तर एक बात में है अर्थात् सफाई रखने का सदैव यत्न करना चाहिये पर इस रोग के फैलने पर तो और भी सावधान हो जाना चाहिये—सब से बड़ा ज़रिया हैज़ा फैलने का पानी है इसलिये पानी की स्वच्छता बहुत मुख्य है कुआं या तालाब के पास गन्दगी बहुत बचाना चाहिये—दूध के द्वारा भी यह बीमारी दूरतक फैलती है क्योंकि दूध में प्रायः जल मिलाया जाता है यदि जल स्वच्छ न होगा तो रोग का भय है—हैजे के रोगी का मल और वान्ति को पृथ्वी पर न पड़ने देना चाहिये एक बरतन में दो या तीन तोला कौसीस छोड़ दे उसी मे रोगी मल या वमन करे और उसे पृथ्वी पर न गिरने दे और उस मल या वान्ति को कुआं या तालाब से बहुत दूर पर गड़वा देना चाहये क्योंकि निकट होने से संभव है पृथ्वी पोली हो या बलुही हो तो छन कर जलाशय तक पहुंच सके—रोगी का बिस्तर कपड़ा तौलिया अंगोछा और पलंग जिस्के द्वारा हैजे का बिष फैल सक्ता है या तो जला देना चाहिये या कोई ऐसी वस्तु पानी मे मिला-

कर धोना चाहिये जिस्से विष नष्ट होजाय जिस्के धोने की उत्तम रीति यह है कि एक हिस्सा कार्बोलिक एसिड पचास हिस्से पानी में मिलाकर आध घंटे तक कपड़ा उस्मे भिगा रखना चाहिये और फिर उस्को साबुन से धोकर कई दिन तक कपड़ा हवा मे फैला रहने दे—जिस घर मे रोगी रहा हो उस्की अच्छी तरह सफ़ाई की जाय चूना खुरच कर उस्मे गन्धक जलादी जाय और फिर से सुफेदी करा दीजाय—कच्ची जगह जहां रोगी का मलमूत्र गिरा हो वहां की थोड़ी २ मिट्टी खुदवा के फिकवा देना चाहिये—हैज़ा आने के पहलेही शहर या गांव की सफाई करना उचित है क्योंकि बीमारी के फैल जाने पर नाली और मुहरियों को खोलने से और भी गन्दगी फैलेगी और हानि पहुंचेगी—बीमार को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिये जुदा गाड़ी रहना चाहिये और जब तक उस गाड़ी की खूब सफाई न हो नीरोग मनुष्य को उस्पर न बैठना चाहिये—बैद्यों और डाक्टरों को उचित है कि रोगी को देखने के पीछे अपना हाथ अच्छी तरह मिट्टी या साबुन से धोडालें जिस पानी से धोवें उस्में कार्बोलिक एसिड मिला रहे और ऊनी कपड़ा पहिन हैजे के रोगी को न देखना चाहिये क्योंकि जो उस कपड़े में विष लग जायगा वह साधारण में दूर न होगा सूती कपड़े में भलाई यह है कि वह जल्दी २ धोया और बदला जा सक्ता है—हैजे मे मरे हुये को जल्दी गाड़ देना या जला देना उचित है यदि गाड़ना हो तो लाश के साथ कार्बोलिक पौडर या चूना अथवा कोयला रख देना चाहिये जिस्मे हवा बिगड़ने न पावे।

कितने शहरों में नल लगी हैं जिस्के द्वारा सारे शहर का मल मूत्र बहा दिया जाता है इन नलों की चौकसी रखना चाहिये ऐसा न हो कि नल

कहीं से टूटा हो और धरती मे मैला सोख कर पीने के पानी में मिल जाय-समुद्र के किनारे के बन्दरों मे सदैव जहाज़ आया करती हैं उनके सफाई का बड़ा ध्यान रहना चाहिये यदि जहाज़ मे किसी को यह बीमारी हो तो किनारे पर जहाज़ लाने की मनाही कर दीजाय सर्कार की ओर से मनुष्य नियत होने चाहियें जो सदा देखा करें कि ये सब बातें उचित रीति पर की जाती हैं या नहीं ।

अब प्रत्येक मनुष्यों के लिये इस्से बचाव की उपाय लिखते हैं—जब किसी नगर या गांव मे इसका उपद्रव फैले तो जो लोग वहां रहते हों उस स्थान को छोड़ ठंडी जगह में चले जांय या ऐसे स्थान में जांय जहां बीमारी न हो—कच्चा फल साग या तर्कारी खाना अच्छा नहीं खर्बूजा तर्बूज़ या ककड़ी खाना अहित है—मांस या मछरी जिस्में दुर्गन्धि हो न खाना चाहिये पीने का पानी छान कर और पका कर पीना चाहिये-दूध औंटा हुआ जिस्मे पानी न मिला हो लेना चाहिये—जो वर्तन काम मे आवें उन्हें गरम पानी से धोलेना अच्छा है—भोजन अधिक न हो गुरु और अयोग्य वस्तु खाना अहित है—भोजन नियम से करना चाहिये देर सबेर होना अच्छा नहो—उपवास या देर तक भूखे रहना ऐगुण है—परिश्रम अधिक न करे खाना पीना सोना सब नियमित समय से हो—थकावट बचाना चहिये सोने का स्थान हवादार और ऊंचे पर हो—इस बिमारी के फैलने पर रेचक औषधि बचाना चाहिये ।

पेट के ऊपर फलालैन की पट्टी बांधने से बहुत बचाव रहता है—गन्धक का तेज़ाब यदि नित्य लिया करे तो यह बीमारी बाधा नहीं करती—यह

तेजाब अंगरेजी दूकान पर मिलता है जिस्का नाम "एसिड सल्फूरीक डेलूट" है मात्रा इस्की पन्द्रह बूंद छटाक पानी मे मिला कर प्रातः काल खाली पेटपर लेना चाहिये ।

हैजे की चिकित्सा—हैजे के दिनो मे किसी को मामूल से अधिक एक दस्त भी आजाय या रद्दहो तो बहुत ही सावधान होना चाहिये और शीघ्रही उस्का यत्न आवश्यक है यदि यह पहिले ही से यत्न हो तो हैजे से इतनी मृत्यु कदापि न हो—जब किसी को रद्द या दस्त होती हैं तो कोई २ कह उठते हैं अजीर्ण होगया कल्ह भोजन अधिक होगया है गरमी से जी घूम उठा कुछ हर्ज नही और उचित चिकित्सा नहीं करते—यदि संभव हो तो तुर्त वैद्य को दिखाकर औषध दीजाय—जितनी औषधें हैजे के लिये लाभ कारी समझी गई हैं और जो २ क्रम इस्के चिकित्सा के बुद्दिमानो ने प्रस्तुत किये हैं उनका अतांश भी यहां लिखना असंभव है क्योंकि हमारे पढ़ने वाले प्रायः ऐसे होंगे जो बहुत सी औषधों का नाम तक नहीं जानते तब उन के फल और गुण का तारतम्य बताना अति कठिन है—इस देश के वैद्यक मे इस्की चिकित्सा पाई नहीं जाती और अंगरेजी दवाइयों का बनाना मिलाना और प्रयोग करना बिना डाक्तर के हो नहीं सक्ता तथापि हम यहां कुछ उपाय लिखते हैं जो सब की समझ मे आजाय और जिस्से रोगी को अवश्य लाभ पहुंच सक्ता है जब दस्त आने लगे तो उचित है वहक औषधें दी जांय या क्लोरोडिन २५ बूंद पानी मे मिलाकर तीन २ घंटे के बाद देवे—यह मात्रा जवान आदमी के लिये है जैसा २ उमर कमहो वैसा २ मात्रा भी कम देना होगा—क्लोरोडिन ऐसा प्रसिद्ध हो

गया है कि बहुत मनुष्य इसे काम मे लाने लगी हैं पर इस्को श्रोषी के साथ इस्के देने को विधि लिखी है उसी के अनुसार देना चाहिये--यदि जी बहुत मिचलाय या रद्द हो तो पेट पर राई का पलस्तर देना उचित है—विधि इस्को यह है—थोड़ी राई पानी से पीस या बिलायती राई जो पिसी हुई होती है और देशी राई से तीव्र होती है पानी मिलाकर एक कपड़े पर लगाय जो लग भग ६ इंच लंबा और ४ इंच चौड़ा हो पेट पर नाभी से कुछ ऊपर कौड़ी से मिला हुआ रख दे दस पन्द्रह या बीस मिनिट मे जब देखे खाल लाल होगई उतार ले--इस्से छर्दि में बड़ा लाभ होता है—प्यास अधिक होती है इस्के शमन के लिये बर्फ के टुकड़े मुह में रख चूसना चाहिये बर्फ का पानी भी ठंढा पिलाने से कुछ हानि नहीं होती--यदि बर्फ न मिलसके तो ठंढा पानी बराबर देना चाहिये जब तक रद्द दस्त हो रहे हैं भोजन कुछ न देना चाहिये -ऐसे समय मे भोजन हानि कारक होता है क्योंकि पाचन शक्ति इस समय सर्वथा बन्द होजाती है—जब गांवों मे हैजा फैलता है तब सर्कार की ओर से गोलियां बटती हैं इस्में प्रायः ये वस्तु पड़ती हैं—हर एक गोली मे दो चावल अफीम ४ चावल लाल मिर्च और ८ चावल हींग-अफीम का देना तभी तक उचित है जब तक दस्त हो रहे हैं—जब रद्द दस्त दोनो जारी हैं और रोगी का शरीर ठंढा होता जाता है अफीम कदापि न देना चाहिये- ऐसे अवसर पर अफीम से लाभ के बदले हानि होती है-इस महा भयंकर व्याधि मे अनाड़ी का काम नही है कि औषध दे सके प्रायः जो अफीम मिली औषधें दी जाती हैं उस्से बहुत उत्तम यही है कि कुछ औषध न दीजाय यदि होसके तो योग्य वैद्य या डाक्तर को बुलाकर उस्की चिकित्सा की जाय नहीं तो केवल शीतल जल या बर्फ यथेच्छ देते जावें कच्चे वैद्य या हकीम की चिकित्सा से केवल शीतल जल या बर्फ उत्तम है रोगी को अच्छा होना है तो शीतल जल हो पीपी कर लोग बहुधा चंगे होग ये हैं कपूर का प्रयोग भी इस्मे बड़ा हित है।

। इल्लाहाबाद की नाक ।

सब के पहले बाज़ारों मे मछली बाज़ार रेलवे स्टेशन से उतरतेही ऐन शहर के सिरे पर जहां पहुंचतेही कच्ची मांस की दुर्गन्धि घातित पशुओं की हड्डियों पर बूचड़ों के गड़ासों का खटा खट शब्द और मांसाहारी पक्षियों बाज बहरी और गीधों का मड़राना मानों रण खेत के महाश्मसान का रूपक प्रगट कर रहे हैं-और न्यायाभिमानी अंगरेजी राज्य के प्रभाकर की प्रभा को मन्द करते बीभत्स रस की महा निशा का स्मरण दिलाते हैं-जिस्का अभिनय देख भक्ति भाव पूर्ण श्रद्धालू यात्रियों को तीर्थराज मे पहुंचने का प्रमोद अवश्यमेव सहस्र गुना बढ़जाता होगा-सच पूछिये तो ऐसे ही समय हमारे ब्राह्मणों को अपने पूर्वज ऋषियों की मंत्र शक्ति क्षत्रियों को अपनी जाति के प्राचीन बाहुबल का स्मरण आकर अन्तरात्मा को प्रज्वलित करता है-हिन्दुस्तानी महल्लों मे खुली नाली शहर की नाक है जिस्मे दिन रात एक अद्भुत प्रकार के अतर केवड़े की सुगन्धि उड़ा करती है बीच बाज़ार मे खड़ंजे की खड्डढेदारनाली बुढ़ियों के खुड़हे दांत की शोभा धारण किये मुहबाये मेहतर साहब को वात्सल्य भाव प्रगट करती असोसती रहती है—सबसे बढ़कर वह महा बैतरणी की प्रपौत्री जिस्की अनेक धारायें महल्ले २ से निकल कर टक्कर साहब के पुल पर एकत्र हो महा पापियों की शिफारिस करने को दरिया बाद के नीचे यमराज की बहिन यमुना मे जामिली है जिस्से बलुआघाट का जल बनारस की गंगा के जल का मुकाबिला करने लगा है घाट पक्का बनाने की फिकिर कभी न कीगई म्युनिसिपलिटी की कृपा से यह लाभ अलबत्ता आखोंको सुख दायी हुआ-बाज़ार मे शांम को चिड़ियों का गला दबाय दबाय बहेलियों का घूमना शहर की नाक है कठोर से कठोर चित्तवाले के हृदय मे भी चिड़ियों का चिल्लाना उस समय करुणा का उद्गार करता शहर की रौनक बढ़ाते शहरीयत की नाक रक्खे हुये है — चौक और ब्रह्मभोज के स्थान

में किलनर और लारी का होटल जिस में अह निगयूरोपियन तथा नेटिब परम हंस और महा महन्तों को खुदा बक्श ब्रह्मचारी और सद्दारी खान सामा के कर कमलों का पकाया हुआ महा शुद्ध और टटका भोजन दिया जाता है-पर अन्तर केवल इतनाही है कि हिन्दुओं के चौकों के समान सब धान बारह पसेरी वाला हिसाब यहां नहीं है किन्तु जैसी दक्षिणा जेब में रख के जाइये गा वैसा भोजन पाइयेगा-मीरगंज प्रभृति कई एक स्थानो मे घनी बस्ती के बीचो बीच नई कोठियों की अद्भुत अनोखी महक नगर की शोभा को चौगुनी करती जाती है-हम हिन्दुओं के देवी देवताओं मे अलोपी देवी इलाहाबाद की नाक हैं ब्राह्मणों की पोथियों को ओर से छोर तक छान डालिये इस नाम की देवी कहीं न पाइयेगा पाणिनि महा-मुनि अष्टाध्यायी के सूत्रों को गढ़ते २ थक गये अलोपी और शीतला शब्द सिद्ध न करसके-न कात्यायन अथवा पतंजलि इस अन्ध परम्परा के संशोधन का कोई वार्तिक अथवा भाष्य बना सके- शहर के बाशिन्दों मे प्रयागवाल The aboregenes of Prayag इलाहाबाद की नाक हैं जिनका असभ्य आचरण कुप्रवृत्ति और उजड्डपन देख बड़े २ देश हितैषी संशोधक और रिफार्मर दुम दबाते हैं बेनी घाटपर उनका संकल्प सुन शास्त्र कार मुनियों के बचन कानो मे अंगुलियां दे पलायमान होते हैं-तपस्वियों मे त्रिवेणी तट के बैरागी इलाहाबाद की नाक हैं जिनके द्वारा कितनी हुड़ंगिनियों का लालन पालन होता है-सिधाई मे कई एक हिन्दू रईस शहर और रियासत की नाक हैं हम जानते हैं यदि ये बेचारे न होते तो बोदा पन भोला पन सिधाई आदि कई एक गुण संसार से बिदा होजाते और कट्टर अत्याचारी मुसल्मानो को अपना अत्याचार प्रगट करने का मौकाही कहीं न मिलता पाठक जन इतना तो हम घोख २ यादकर रक्खा था सो आज आपको सुना दिया अब और आगे ज्यों २ याद पड़ता जायगा आपके नजर करती जायगी पहले इतने को कंठ कर डालिये एक बारगी सब सुन लोगे तो अजीरन हो जायगा इस्से इती—

माधुर्य्य॥

। हिन्दुस्तान से।

माधुर्य्य मिठास मिठाई सलोना सोहावना नमक आदि पर्याय शब्द हैं जिनके तात्पर्य यह है कि चित्तको आकर्षण करनेवाले— अब हम पूंछा चाहते हैं शृङ्गार रसका प्राण इस प्रकार का यह आकर्षण क्यावस्तु है जिसके हमने इतने नाम धरलिये हैं और जो अपने चित्तके अनुकूल जंचा या जिसपर चित्त लट्टू होगया उसे उन विविध नामों से पुकारने लगते हैं—लोग कहते हैं इसकी सुहावनी सूरत मन हरे लेती है—जी यही चाहता है उसकी मीठी बातें सुनते ही रहैं—उसके एक २ अंग का सलोनापन देखते ही बनता है—धन्य हैं ऐसे सौन्दर्यसागर रूप उजागर जिनकी रूप माधुरी में बिधाता ने नजानिये कहां की मोहनीडाल दिया है—इस उमर पर भी उसके चेहरे में जो नमक है वैसा कहीं दूसरे ठौर ढूंढने से भी न मिलैगा— इत्यादि अब बतलाइये "सूरत का सुहावना होना," "बातों में मिठास,"—" अंग २ का सलोनापन,"—"रूप की माधुरी,"— "चेहरे में नमक," आदि सब क्या वस्तु हैं जो हमारे मन को अपनी ओर आकर्षण करतीं हैं और जो अवश्यमेव कोई ऐसी बिच्छित्ति विशेष हैं जो एक साधारण रीतिपर सब में नहीं पाई जातीं किन्तु कोई २ बिरले भाग्यवान सुकृती के सुकृत का उदय समझा जाता है—इसे हम बिच्छित्ति विशेष इसलिये कहते हैं कि इसका रस आप रसना के द्वारा अनुभव नहीं कर सके

किन्तु इसका असर आपकी प्रत्येक इंद्रियों पर पंहुचता है और यहां तक मनको पिघला देता है कि उसे अपने बश मे नहीं रखसक्ते इस अनुपम भूषण को प्रकृति देवी अपने साथ २ ले उतरती हैं प्राकृतिक माधुर्य्य का सादृश्य आप (Art) कृत्रिमता या बनावट के द्वारा कभी सम्पादन हो नहीं कर सक्ते अतएव कवि की उक्ति है—"इय मधिक मनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी किमिवहि मधुराणां मण्डनं नाकृतिनाम्,,—काव्य का तो माधुर्य साक्षात् जीवन है जिसके बिना रसकी स्थिति किसी प्रकार होही नहीं सक्ती महा कबि दंडी अपने काव्यादर्श में लिखते हैं-"मधुर रस वद्वाचि वस्तुन्यपि रसस्थितिः येन माद्यन्ति धीमन्तो मधुनेव मधुव्रता:, ईश्वर की अद्भुत रचना में क्या ऐसे भी बिफल जन्मा जनमे होंगे जिन पर प्रकृति की मिठाई अपना माधुर्य्य गुण नहीं पहुंचा सक्ती और न उनके पषाण हृदय को द्रव कर सक्ती है तो ऐसे जीवन से लाभ क्या ? इस प्रश्न का उत्तर किसी (स्वीट हार्ट) मीठे दिल वाले से पूछिये जिसका पूरा २ अनुभव बिना "स्वीट हार्ट,, के होना ही असंभव है—अथवा यह हमराही प्रौढ़वाद मात्र हो कि जो इस रसके भावुक नहीं हैं या इस की ओर से सर्वथा अनारी हैं उन्हें विफल जन्मा मानते हैं क्योंकि इस पंथके बटोही को कोई कवि मना भी तो करता है—"शीशे सा दिल पत्थर से लड़ाना होगा मन समझ बूझ कांटे में फंसाना होगा,, —जो हो इस से क्या हानि लाभ है पाठक जन आपही लोगों पर निर्भर है बिचार लें ॥

तर्कचूर्णिका

पहले के आगे से

(३९) असाधारण विशेषण की बुद्धि जब नाश पाती है तब साधारण विशेषण की बुद्धि की उत्पत्ति होने पाती है, अतएव असाधारण और साधारण विशेषणो के मध्य परस्पर मुख्यत्व और अमुख्यत्व के विचार का अवसर लहता है, अर्थात असाधारण विशेषण की बुद्धि, साधारण विशेषण की बुद्धि की उत्पत्ति मे एतादृश बाधा नहीं करती है कि फिर साधारण विशेषण की बुद्धि उत्पन्नही न होने पावे क्योंकि यदि साधारण विशेषण की बुद्धि की उत्पत्ति सर्बदा के लिये वाधितही रहा करती तो विशेषणों के मध्य मे साधारणत्व वा असाधारणत्व के विचारही की क्या सम्भावना थी? उदा०यथा काशी के माधव राज के धवल गृह की (जो काशी का असाधारण विशेषण है) बुद्धि उत्पन्न होके जब विनष्ट हो जाती है तब काशी के और २ घरों की (जो कि काशी के साधारण विशेषण हैं) बुद्धि उत्पन्न होने पाती है, यदि माधवराज के धवल गृह की बुद्धि के द्वारा और २ घरों की बुद्धि सर्वथा सर्वदा के लिये बाधित रहा करती तो काशी के अपरापर गृहों की बुद्धि से सर्वदा सब लोग बञ्चित रहा करते किन्तु केवल माधवराज के धवल गृह की बुद्धि से व्याकुल रहा करते और माधवराज का धवल गृह और २ घरों से असाधारण है और २ घर उससे साधारण हैं इस बात के विचारकी भी सम्भावना न थी क्योंकि जिस पदार्थ की बुद्धि ही नहीं है उस पदार्थ की शुद्धि हम कैसे करें !

(४०) कार्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में असाधारण विशेषण वाला कारण असाधारण कारण और साधारण विशेषण वाला कारण साधारण कारण कहलाता है, साधारण कारण का उदा० यथा बाह्य प्रत्यक्षात्मक ज्ञान रूपी कार्य के बाह्य ज्ञानेन्द्रिय

कारण हैं उनके विशेषण की जो विषयों से सन्निकर्ष (समीपता) है, वह अपरापर (अर्थात अनुमित्यादि) ज्ञानों के कारणों मे दुर्लभ है, और बाह्य ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा उनके कार्य (अर्थात् बाह्य प्रत्यक्षात्मक ज्ञान) की उत्पत्ति मे सम्बद्ध है क्योंकि विषयों का इन्द्रिय से सन्निकर्ष न होवे तो उनके ज्ञान की उत्पत्ति नहीं हो सकती है, इस हेतु से बाह्य ज्ञानेन्द्रियों का विषयों से सन्निकर्ष असाधारण विशेषण है बस उसी विशेषण के सम्बन्ध से बाह्य प्रत्यक्षात्मक ज्ञानके असाधारण कारण बाह्य ज्ञानइन्द्रिय कहलाये ॥

साधारण कारण का उद्दा० यथा आत्मा का मनसे संयोग बिना कोई ज्ञान उत्पन्न नहीं हो सकता है अत एव वह केवल बाह्य प्रत्यक्षात्मक ज्ञानका एकाङ्गी (ऐकान्तिक) नहीं है, किन्तु ज्ञान मात्र मे अपेक्षित होता है, और आत्मा और मन ये ज्ञान के कारण हैं उनका आपस मे संयोग उनका विशेषण है, वह प्रत्येक ज्ञान की उत्पत्ति मे सम्बद्ध है इस लिये आत्मा वा मनका साधारण विशेषण सिद्ध होता है और उस साधारण विशेषण के योग से आत्मा वा मन बाह्य प्रत्यक्षात्मक ज्ञान रूपी कार्य का साधारण कारण कहे जायेंगे साधारण कारण के असुख्य और असाधारण कारण के सुख्य होने से यद्यपि बाह्य प्रत्यक्षात्मक ज्ञान रूपी कार्य मे आत्मा वा मन असुख्य और बाह्य इन्द्रिय सुख्य हैं तथापि आत्मा वा मन अपर बहुतेरे कारणों की अपेक्षा स्वकार्योत्पत्ति के सम्बन्धी असाधारण विशेषण से सम्बध रखते हैं इसलिये वे अपर बहुतेरे स्वकार्योत्पत्ति के सम्बन्धी साधारण विशेषण वाले कारणों की अपेक्षा सुख्य कारण ठहरते हैं उद्दा० यथा जिस पर्वत आधारपर अग्नि की अनुमिति होती है वह पर्वत भी अनुमित्यात्मक ज्ञान मे कारण है तथापि आत्मा वा मनकी अपेक्षा वह अनुमित्यात्मक ज्ञान रूपी कार्य मे साधारण विशेषण वाला है, क्योंकि आत्मा ज्ञानमात्र का समवायि कारण (जिसकी चर्चा पश्चात् की जायगी) है, और मन आत्मा का साक्षात् सम्बन्धी है, परन्तु पर्वत केवल आधार रूपी निमित्त कारण (जिसकी चर्चा पश्चात् की जायगी) है, दोंनो कारणों के मध्य परस्पर साधारणत्व और अ

साधारणत्व के विचारकी परम्परा करते २ जब जितनी दूरी को बुद्धि सहन कर लेती है तब तितनी दूरी पर्यन्त कार्य और कारण के सम्बन्ध को अङ्गीकार करती है, परन्तु जब इतनी दूरी बुद्धि में जचने लगती है कि और बुद्धिसे सह्य नहीं हो सकती है तब बुद्धि कार्य और कारण के सम्बन्ध का भङ्ग मान के फिर दूरवाले कारणों को कारण नहीं कहती है किन्तु उन्हें अन्यथा सिद्ध कहती, है उदा० यथा स्पष्ट है, जब कुम्भकार के पिता पर्यन्त के सम्बन्ध को बुद्धि सह सकती है तब कुम्भकार के पिता को भी कारण कह सकती है परन्तु जब बुद्धि से कुम्भकार के पिता पर्यन्त के सम्भन्धकी दूरी नहीं सही जाती है तब वह कुम्भकार के पिता को घट कार्य के प्रति अन्यथा सिद्ध कहती है, विशेष इतना है कि साक्षात् सम्बन्ध वाले की अपेक्षा परम्परा सम्बन्धवाला ही अन्यथा सिद्ध ठहरेगा, परम्परा सम्बन्धवाले की अपेक्षा साक्षात्सम्बन्धवाला अन्यथा सिद्धनहीं कहा जायेगा तिस मे हेतु पूर्व मे कहा जाचुका है कि असाधारण वा साधारण विशेषण का सम्बन्ध है, उदा० यथा घटके प्राप्ति मे कुम्भकार के पिता की अपेक्षा कुम्भकार का पितामह अन्यथा सिद्ध ठहरेगा क्योंकि कुम्भकार के पिता का घटके कुम्भकार रूपी कारण से साक्षात्सम्बन्ध है और कुम्भकार के पितामह का परम्परा सम्बन्ध है, कुम्भकारके पितामहकी अपेक्षा कुभकारका पिता अन्यथा सिद्ध नहीं ठहरेगा।

चित्तमे चढ़जाने निमित्त साधारण और असाधारण कारणों का संक्षिप्त लक्षण लिखताहूं कार्यकी उत्पत्ति केस्थल में पूर्व में प्रतिनियत (खास) कारणता के नियामक सम्बन्ध से उपलक्षित बनके उपस्थित होके जो कारण प्रतिनियत कार्यको उत्पन्न करे वह कारण उस (प्रतिनियत) कार्यका असाधारण कहलाता है उदा० यथा„ बाह्यप्रत्यक्षात्मक ज्ञान यह प्रतिनियत कार्य बाह्य ज्ञानेन्द्रिय का है सो बाह्यज्ञानेन्द्रिय रूपी कारण अपने प्रतिनियत विषयसन्निकर्षरूपी कारणता के नियामक सम्बन्ध से उपलक्षित बन के कार्यकी उत्पत्ति के पूर्व में उपस्थित होके अपने प्रतिनियत (अर्थात् निष्कैवल) बाह्य

प्रत्यक्षात्मक ज्ञान रूपी कार्य को उत्पन्न करता है इस लिये उस (बाह्य) प्रत्यक्षात्मक ज्ञानरूपी) कार्यका वह (बाह्य ज्ञानेन्द्रिय) कारण असाधारण कहलाता है (क्योंकि सन्निकर्ष असाधारण विशेषण है)

कार्यकी उत्पत्ति के स्थल में पूर्व में प्रतिनियत, कारणता के नियामक सम्बन्ध से उपलक्षित बनके उपस्थित होके जो कारण जैसे एक कार्यको उत्पन्न करता है वैसे यदि दुसरे कार्यको भी उत्पन्न कर सके तो वह उत्पन्न कार्योंका साधारण कारण कहलाता है उदा० यथा आत्मा और मन के कार्य प्रत्यक्ष अनुमिति इत्यादि ज्ञानमात्र हैं वे अपने कार्य (अर्थात् ज्ञानमात्र की उत्पत्ति के स्थल में पूर्व में अपनी कारणता के नियामक सम्बन्ध अर्थात संयोग से उपलक्षित बनके उपस्थित होके जैसे एक (प्रत्यक्षात्मक ज्ञानरूपी अपने कार्यको उत्पन्न करता हैं जैसे (अनुमित्यादि ज्ञानरूपी) कार्योंका भी उत्पन्न करते हैं (अर्थात् अनेक कार्यों की कारण होने से, आत्मा और मन बाह्य प्रत्यक्षात्मक ज्ञानरूपी कार्य के साधारण कारण सिद्ध होते हैं क्योंकि उनका आपसका संयोग साधारण विशेषण है) ऐसेही हम जब ज्ञानइच्छादि आत्मा के गुण गण को एक व्यक्ति के रूप में बुद्धि में गृहीत करते हैं तब देखते हैं कि आत्माके ज्ञान इच्छादि गुण गण के असाधारण कारण आत्मा और मन हैं क्योंकि वे उन्हें छोड़के अपने संयोग से और किसी दूसरे कार्यको उत्पन्न नहीं करते हैं इत्यादि अन्यत्र भी विचारलेना चाहिये।





।रसायन संग्रह।

संसारिक परमोपकारी आवश्यकीय वस्तुओं के बनाने की विधि बाबू विश्वनाथ वर्मा द्वारा प्रकाशित—इस पुस्तक मे भांत २ की स्याही कलाई गिलट आदि के बहुत से उत्तम २ लटके हैं यह पुस्तक निस्सन्देह बड़े उपकार की है मूल्य ॥) कलकत्ता सारसुधानिधि प्रेस क्रासस्ट्रीट नं०—५१ में पं०—सदानन्द मिश्र द्वारा मुद्रित हुई है।

हिन्दीप्रदीप ।

मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंदभरै ॥
बचिदुसह दुरजन बायुसों मणि दीप समथिर नहिंटरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

१ जून सन् १८८७ } { जिल्द १० संख्या १०

इलाहाबाद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
देशोपकारक यंत्रालय में प्रकाशित
किया गया

मूल्य अग्रिम ३।=) पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १॥=)

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द १० | १ जून
संख्या १० | सन् १८८७ ई०

। सेंधिया का तीन करोड़ किसको खेलगा ।

सेंधिया से जो तीन करोड़ रुपया ऋण लेकर सर्कार ने वहां का खजाना खाली करा लिया इसे बिलायत वाले और बहुत से हम लोगों मे भी अच्छा समझ इसका अनुमोदन करते हैं और अंगरेजों की बड़ी कृपा अपने ऊपर मानते हैं कि जो रुपया व्यर्थ पड़ा था उसको सर्कार ने काम मे लगादिया जिस्से वह रुपया दिन २ बढ़ताही रहैगा—वाह चालाकी इसी को कहते हैं कि सर्वस्व नाश कर भी भले का भला बनारहै—हमको इस बात पर गुसांई तुलसी दास की चौपाई याद आती है—"मन कपटी तन सज्जन चीन्हा। आप सरिस सबही चह कीन्हा,, जैसे आप सदा दिवालिये बने रहते हैं और हर साल ऋण पर ऋण खोलते जाते हैं वैसाही सर्कार चाहती है कि इस देश के रजवाड़े भी होजांय कि पास एक कौड़ी न रहे ऋण लेकर

व्यौपार मे लगावैं और जब कोई आवश्यक कार्य उपस्थित हो तो ऋण लें नहीं नयेटेक्स प्रजा पर लगावें—अब के लोगों की चाहो जो रायहो पर पहले के लोग ऐसे नितान्त मूर्ख नथे जिन्हो ने यह सोच रक्खा था कि राज्य कर का कुछ भाग अवश्य बचत मे रखना चाहिये जो समय पर काम आवै क्योंकि वे लोग इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि "पुस्तकस्थाचयाविद्यापरहस्तेगतंधनम् । उत्पन्नेषु चकार्येषुनसा विद्यानतद्धनम्,,—जिस प्रकार प्रत्येक गृहस्थ को उचित है कि अपना उपार्जित धन सब खर्च नकरे किन्तु कुछ पीछे के लिये भी डालता जाय इसी प्रकार राजा को भी चाहिये कि राज्यकर का कुछ भाग आवश्यकीय कामो के लिये बचत मे रखता जाय—प्रजा अपना धन राजा को इस लिये नहीं देती कि वह उससे व्यौपर करे किन्तु उस रुपये से राज्यका प्रवन्ध किया जाय और जो कर राज्य के प्रबन्ध की जरूरत से अधिक हो तो उसे व्यर्थ फूकने से यह अच्छा होगा कि प्रजा का कर घटा दिया जाय—व्यौपार के लिये तो बहुत सी कंपनी हो सक्ती हैं वा लोग आप कर सक्ते हैं—राजाही जब सब तरह का व्यौपार करने लगा तब प्रजा भूखों क्यों न मरे—यह राज्य है बणिक समाज नहीं पर जब राज्य करने वालों की कौम बनियोंही की है तो क्या किया जाय बनियों से भी कौन बनिये जिन्मे उदार भाव का लेश नहीं आने पाया—कौड़ी कौड़ी दुहलें फिर भी सन्तोष नहो पेटखांय मुह लखातेही रहैं यही समझ

हमारे पहले के राजा लोग संपूर्ण उपजका षष्ठांश या दशमांश ही से अपने राज्य का प्रवन्ध बहुत उत्तम रीति से करते थे और रुपया भी बचाये रखते थे जिस्से आजतक हमारा देश धन के कारण विदेशियों की आंख में खटकता रहा—वही बाप दादों का गड़ा धन अब तक खाया पकाया—अब तो इस अंगरेज़ी राज्य की ऐसी छून समाई कि बरकत बिलकुल उड़गई आमद से अधिक खर्च होगया जब से लोग अंगरेज़ी चाल पर चलने लगे हैं तब से कितना धन हमारे देश बान्धवों के पास जुड़गया है जहां पहले दस पांच करोड़पती थे वहां अब दो भी नहीं हैं और जो कहा जाय कि पहले दो करोड़पती थे तो अब दो हजार लखपती हैं इस्से देश का धन बढ़ाही सो भी नहीं देखते क्योंकि आज काल अधिकांश दुखी और झींकते हुये पाये जाते हैं पुराने ढंग के राज्य मैसे एक अवधही था जहां कंचन बरसा करता था और लोग अभी तक नवाबी के समय को याद करते हैं चाहो उसमे कितनाही अन्धेर था—इसी से अनुमान करलेना चाहिये कि अंगरेज़ी राज्य में संपत्ति की कितनी वृद्धि है—हमारी कौन हम तो इंगलेंड की प्रजा के मुकाबिले खिलौने मे हैं मुख्य तो इंगलेंड वाले हैं—नीति है पहले घरमे दिया जलाय तब मसजिद मे जलाना होता है सो इस प्रकार की गवर्नमेंट के अनोखे प्रबन्ध की बदौलत इंगलेंडही की कितनी प्रजा भूखों मर रही है आयरलेंड वाले बिगड़ेही हैं अमरिका वाले अपनी चीजों के बदले

स्वर्ण मुद्रा मांगते हैं तो ब्रिटिश गवर्नमेंट खीस काढ़ रहजाती है गेहूँ आदि जो अमरिका से इंग्लैंड मे आता था सो बन्द होजाने से हम लोगों के सिर पर धौल बैठनी जाती है और गेहूं जो हम लोगों का प्रधान भोजन है बिलायत को खिचा-जाताहै गेहूं मंहगा होने से प्रत्येक गृहस्थ का चौगुना खर्च बढ़गया है और गरीब कंगाल तो अधेही पेट सो रहते हैं—इस्से हमारी समझ मे तो यही आता है कि सिंधिया राज्य के मंत्रियों ने यह अच्छा काम नहीं किया जो अंगरेजों के बहकाने मे आय पुरानी रीति को तोड़ दिया और बहुत दिन के इकट्ठे किये हुये धन को व्यर्थ खोदिया—जो योंही अपना धन उनको भारी पड़ा था तो अपनी प्रजा का एक वर्ष का कर माफ कर देते जिस्मे प्रजा को सुख मिलता और फिर जब कभी धन की आवश्यकता होती तो प्रजा इस्का दस गुना धन अपने महाराज पर निछावर कर देने को तैयार रहती—अब लार्ड डफरिन महोदयने दो करोड़ का ऋण और खोला है देखैं यह किसे २ चापर करता है—ग्वालियर की रियासत के समान रामपूर की रियासत भी नाबालिगी की हालत मे आगई है खुदा खैर करै ।

। इंगलैंड और भारत का तारतम्य।

श्लोक।

पुरायत्रस्रोत: पुलिन मभवत्तत्रसरितां विपर्यासं यातो घनविरलभाव: क्षितिरुहाम्। बहोर्दृष्टं कालादपर मिव मन्ये वनमिदं निवेश: शैलानां तदिदमितिबुद्धिं दृढयति।

ऊपरका यह श्लोक महा कवि भव भूति के हृदय का विकाश है जिस्का तात्पर्य यह है—इसभूमण्डल के अभ्यन्तर जोसमस्त भौतिक शक्ति निहित हैं उस्के परस्पर संघर्ष से कहीं २ बहुजनाकीर्ण जनपद अतल जल मे डूबजाता है एवं कहीं जल मग्न नीची भूमि ऊर्द्ध उन्नामित हो कालगति से सुरम्य नगर बनजाती है--मनुष्यों का बास स्थान उजड़ कर खंडहर हो जाता है और कितने नदी नाले उस्मेबहाकरते हैं—इसी प्रकार जहां मेघमाला मण्डित अत्यन्त ऊंचे १ पहाड़थे वहां समुद्र की लहरें क्रीडा करने लगती हैं और जहां किसी समय अनन्त विस्तारित समुद्र की भयङ्कर तरंगें उठा करतीथीं वहां पशु पक्षियों की कलध्वनि से निनादित उदासीन पर्वत स्थली हो जाती है–समय के आवर्त से इंगलंड औरभारत मे भी इसी प्रकार का विप्लव होगया हमारी समझ मे यह विप्लव पार्थिव विप्लव की अपेक्षा कुछ कम नहीं है भारत वर्ष क्याथा क्याहो गया।

कहां भारत कहां ब्रिटन का टापू कभी यह बात मन मे आती थी कि सहस्रों योजन समुद्र नांघ डांक ब्रिटेन निवासी यहां आकर भारत के सिर मौर बन जांयगे—अनन्त पर्वत श्रेणी और अपरिमित महासागर के बीच जहां पवन का भी गमन असंभव था उस्का आज उदय है जिस्का नाम तक प्राचीन भारत निवासियों ने कभी नहीं सुना था—आज दिन इंगलेंड की बराबरी कौन कर सक्ता है यह वही इंगलेंड है जिस्को पर्ण कुटी देख रोमन अथवा डेनस या नार्मन हंसते थे आज वही इंगलेंड की ऊंची २ प्रासाद पंक्ति

स्वर्ग की शोभा का उपहास करते दिग दिगन्त बासी पथिक जनों को आश्चर्य उपजाती है—किल किला शब्द के समान जिनकी बोली किसी समय नितान्त अश्राव्य थी आज वही अंगरेज़ी भाषा समस्त भाषाओं का रसाकर्षण कर सकल कला काव्यचतुरी दर्शन इतिहास परिहास चरिताख्यान प्रभृति की भाण्डारगृह हो रही है और अमरिका के वाशिंगटन नगर से चीन और जापान तक शतकोटि मनुष्यों की जीभ के अग्र भाग मे नच रही है—जिस्के विक्रम वैभव और समृद्धि की तुलना जगती तल मे आज दिन कोई देश नहीं कर सक्ते—जिसकी क्षुधा यहां लौ बढ़ गई है कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड को भी ग्रास करलेने से शान्त नहीं हुआ चाहती जहां देखो तहां अंगरेज़ी सभ्यता अंगरेज़ी फैशन अंगरेज़ी चातुरी और इंगलैंड के प्रचण्ड सूर्य का प्रकाश हो रहा है वही अंगरेज़ ईसवी सन के ५५ वर्ष पहले थे जबकि रोम देशाधिपति ज्यूलियस सीज़र थोड़ी सी सेना साथ ले विजय करने की इच्छा से ब्रिटेनियां द्वीप मे आया था उस समय ये ब्रिटेन निवासी आधे मनुष्य आधे पशु थे कच्चा मांस खाया करते थे गढ़े खोद अथवा पर्वत की कन्दराओं मे रहते थे नील पीत रक्त आदि रंगों से चित्रित उनकी मुखच्छबि हास्य रस की उद्दीपक प्रतीत होती थी-भाषा उनकी मुखच्छबि से भी अधिक तर अद्भुत श्रवण कटु शाखा मृगों की बोली के सदृश किसी तरह समझ मे नहीं आ सक्ती थी-ये लोग यहां तक वन्य थे कि युद्ध मे शत्रु के दल का यदि कोई मनुष्य उनके हस्त गत होता था उसे अपने देवता के सामने बलिदान कर खा जाते थे वही अब और चूड़ामणि सिकन्दर ज्यूलियस सीज़र से प्रायः ३०० वर्ष पहले यवन राज्य पारस आदि देशों को पादतल से दलन करता भारत वर्ष के प्रान्त देशों मे आकर उपस्थित हुआ था उस समय सिकन्दर भारत का लोकोत्तर चमत्कार देख अत्यन्त विस्मित हुये - यहां की विद्या सभ्यता और चातुरी यूनानियों की शिक्षा गुरु निकली भारत के लोगों का डील डौल देख विदित होता था किये अतुल बल शाली हैं नृत्य गीत वाद्य आदि कला कौशल मे गन्धर्व के सदृश

थे इन का खान पान आचार बिचार अत्यन्त स्वच्छ और शुद्ध था इनका सकल परिच्छेद और केश बिन्यास देख बोध होता था कि ये मानो देव लोक से आये हैं प्रासाद पंक्ति समाकीर्ण यहां के नगरों की शोभा अमरावती की स्पर्द्धा कर रही थी बल पौरुष दया दाक्षिण्य आदि समस्त पौरुषेय गुण बिभूषित यहां के निवासी थे और यतः परो नास्ति श्रुति मधुर उन की भाषा अतिशय प्रशंसा के योग्य थी- जिस समय भारत की यह अवस्था थी उस्से यदि ब्रिटिश द्वीप की उस समय की दशा का मिलान किया जाय तो इन दोनो देशों के निवासियों मे बड़ा अन्तर पाया जाता है जिस समय भारत निवासी शान्ति का प्रिय निकेतन रमणीय तपोवन मे अथवा किसी पुण्य नदी के मनोहर पुलिन मे बैठ योगाभ्यास मे तत्पर हो ब्रह्म के बिचार मे लगे थे और जलद गंभीर स्वर से जगदीश का गुणानुवाद स्वरूप साम बेद का गान किया करते थे उस समय ब्रिटेन निवासी भयंकर आकार की मूर्ति के निकट जीते मनुष्य को अग्नि कुण्ड मे फेंक देते थे और अपने पुरोहित ड्रुइड लोगों के बशमे थे जबकि भारतीय आर्य सन्तान व्यास बाल्मीकि आदि महा कवियों के हृदय अरबिन्द की सुगन्धि समान उनके काव्य रस का पान कर आनन्द की परा काष्ठा का अनुभव करते थे-जब कि और बिनोदिनी भारत ललना बहु मूल्य मणि मुक्ता प्रवाल को भी अनुपयुक्त आभरण समझ धारण करते लजातीसी थीं और सूक्ष्म पटवस्त्र का पहिनना अपने सुकुमार अंग को आयास कर समझ तिरस्कार करती थीं उस समय ब्रिटिश जाति की रमणी गण जानवरों की खाल से केवल आधाही अंग ढांक अपना कुश जीवन किसी भांत बिताती थीं —जिस समय भारत भूमि मे दर्शन पदार्थ बिज्ञान राजनीति-शिल्प बिद्या बैद्य बिद्या-रसायन बिद्या—ज्योतिष् शास्त्र—अपनी परमोत्कर्ष को पहुंचे हुये थे सूर्य और चन्द्रबंशी राजाओं की शूरता बीरता उदारता दशो दिशा को प्रकाशित कर रही थी शाक्य मुनि शंकराचार्य सरीखे साधु जनो के सदुपदेश से भारत का मुख उज्वल हो रहा था पाणिनि और पतंजलि से महर्षियों के भाषा बिज्ञान जगत भर मे भरतीय

बुद्धिका परिचय दे रहे थे कपिल कणाद गौतम जैमिनि से सूक्ष्मदर्शी मुनिवरों के दार्शनिक विचार समस्त भूमण्डल को आक्रमण किये थे उस समय ब्रिटेन निवासी निरक्षर और अज्ञान तिमिरावृत रह कर सर्वथा मनुष्य गणना से बहिष्कृत थे - किन्तु काल की क्या विचित्र महिमा है - संसार की क्या विलक्षण गति है - आज वही क्षुद्र ब्रिटेनिया राज राजेश्वरी है और विपुल भारत भूमि उसकी दासी बन रही है - अब इस समय ब्रिटिश जाति के लोगों के साथ भारत निवासी इस असंगत दशा मे भला क्या समता कर सक्ते हैं जिन की संपूर्ण बातें उन्नति के शिखर पर चढ़े हुए अंगरेजों के विरुद्ध और उलटी हैं उनका मूल मंत्र अहर्निश औष असन्तोष हमारा मूल मंत्र सन्तोष वैराग्य और निरुत्साह—वे निरालस्य उत्साही निद्राहीन —हम आलसी निरुद्यमी निद्रा देवी के परम उपासक — उनके सब कामो मे ऐक्य भीतर २ चाहो कैसाही बिरोध हो काम पड़ने पर सब एकही जांय —निदान एकाही उनका बल है एकताही से उनको बुद्धि और वैभव है—इसके विरुद्ध हमारे सब कामो में फूट कितनाही यत्न कर कोई इन्हें मिलादे फिरभी ये अपना डेढ़ चावल जुदाही पकाते रहेंगे—सुतराम् यह फूटही इनकी दुर्वलता है इसी से इनकी क्षीणत और यावत् कुश का बीज बोया हुआ है अंगरेज् जातिका नेत्र विज्ञान और कला कौशल भारत वासियों का नेत्र दर्शन और काव्य उनका सिद्धान्त पुरुषार्थ और साहस try try try again हमारा सिद्धान्त अदृष्ट और ईश्वरेच्छा "यद्विधिना लिखितं ललाट फलके तन्मार्जितुं कः क्षमः„ — उनकी धर्मनीत लाभ और जहां तक खीचते बन पड़े बराबर दुहते रहना — हमारी धर्मनीत दान और हर एक बहाने उलचते जाना —उनकी राजनीति विश्वास कुटिलता और चालाकी— हमारी राजनीति विश्वास अथ, मात्र भी उच्छिष्ट पाजाने मे निहाल औंदूदास —उनके जीवन का उद्देश आत्मोत्कर्ष समाजोन्नति और देशहित—हमारा उद्देश स्वार्थ साधन देश जाय चूल्हे मे हमी अकेले रहैं हमी अकेले जिऐं सबठौर हमाराही दार मदार हो इत्यादि—

। अङ्गरेज़ और हमारे राजाओं का बर्ताव ।

हिन्दुस्तान मे जो अंगरेज़ रहते हैं उन्मे हर एक छोटा बड़ा इस बात को भली भांत जानता है कि उनके बहुत से हक्क हम पर ऐसे हैं जिस्का हाल विलायत के अंगरेज़ों को पहंचना एक ओर रहा उनकी मंडली के बाहर यहां ही के लोगों को उस्की भनक और आहट तक नहीं मिलती—तात्पर्य यह कि जो इस तरह के हक्क हैं उन्मे किसी को बोलने की गुंजाइश नहीं रक्खी गई कानून ऐसी बातों मे कुछ टोक सके कभी होही नहीं सक्ता किन्तु हिन्दुस्तानियों अथवा अंगरेज़ों की समाज मे भी यह बात ऐसी गुप्त रीति पर निवाही जाती है कि उन २ महकमों के जो प्रधान २ कर्मचारी हैं वेही कदाचित् इस्का पूरा २ भेद जानते होंगे—इस्मे सन्देह नहीं मुसल्मान बादशाहों का तरीका लेने का भद्दा था किन्तु यदि यह कोई कहे कि अंगरेज़ लोग कुछ लेते ही नहीं यह हम कभी न मानेंगे क्योंकि अंगरेज़ी सभ्यता के अनुसार लेना बुरी बात नहीं समझी जाती यदि उस्का भेद न खुलने पावे—खैर इसे छोड़ दीजिये हमारे जेताओं के इसो लेने के तरीकों मे अतिशय लाभ दायक तरीका हिन्दुस्तानी रईस और राजाओं से उनका किसी प्रकार का संबन्ध रखना है—इस्मे देने वाला कहां तक भकुआ है इसे वेही अच्छी तरह जानते होंगे जो इस बात को भी जानते हैं कि हिन्दुस्तानी किस्म की अशराफीयत किस प्रकार निवाही जाती है और यह लेने का तरीका कुछ आज का नहीं है किन्तु यह सर्व ग्रास कारक तरीका उतने दिनो का बूढ़ा हो गया है जितने दिनो का बूढ़ा ब्रिटिश राज्य इस देश मे है केवल अन्तर इतनाही हो गया है कि ईस्ट इन्डिया कम्पनी के समय जो लोग यहां से खूब लबालब जेब भर के जाते थे वे विलायत मे नबाब कहलाते थे और क्यों न कहलावें जिन बेचारों का सर्वस्व अपहरण कर लिया वे तो अब इस योग्य

भी न रह गये कि नबाब कहलावें ! अब उस पुरानी खातिरदारी के हज़ारों रेज़े पुरज़े हो कर साधारण से साधारण कलट्टर और जंट तक के जेबमे जा समाई—अस्तु एकही आदमी महा महोदर बन करोड़ों न भर लिया बहुत से छोटे २ जीवों का अन्तरात्मा सन्तुष्ट किया गया—यहतो समय का हेर फेर है कभी कोई चाल अच्छी पड़ी कभी कोई किन्तु इन सब बिबिध प्रकार के परिवर्तन भे भो देने वाले हमारे हिन्दुस्तानी रईस और राजाओं की श्रद्धा और उत्साह एकसा ध्रुव रहा किसी न किसी बहाने देना उन्हे तब भी था अब भी है और हम समझते हैं आगे को भी ऐसाही बना रहेगा ।

इन पूर्वोक्त बातों से बहुत लोगों की राय मे हमारे देश के हिन्दुस्तानी भाईयों की अत्यन्त मूर्खता झलकेगी किन्तु यह तो प्रत्येक देश की जल बायु के साथ संलग्न भिन्न २ जाति के स्वाभाविक धर्म का एक अंग है जिसे यहां हम स्पष्ट रीति पर दिखाया चाहते हैं और वह अंगरेज़ जातिकी धूर्तता और हिन्दुस्तानी भाइयों की सदा खातिरदारी करने को तैयार रहने का उत्साह है जो कभी पुराना या जर्जर होताही नहीं ।

हम नहीं जानते अंगरेज़ों मे इज़्ज़त और इज़्ज़तदारी के क्या माने हैं किन्तु हमारे यहां तो यह इज़्ज़त भलेमानुस और अशराफों के अशराफीयत का खुलासा है—यदि पूछिये इस्से क्या वास्तविक लाभ हैतो कोई इस्का भरपूर उत्तर न देगा पर समाज मे अशराफों की अशराफीयत इसी बात पर निर्भर है—हज़ारों लाखोंक्षण भर की शोभा के ध्यान से व्यर्थ को उड़जाते हैं और उस शोभा मे नाम और इज़्ज़त का जिस्को जैसा खयाल होगा वहवैसा उस नाम और इज़्ज़त को निबाहेगा—इस देश में अंगरेज़ों की इज़्ज़त निबाहने वाले हमारे राजालोग हैं जो कि ऊंचा नीचा काम पड़ने पर उनका भरम बट्टा बनाये रहते हैं बिना कहे भी अपनी स्वाभाविक उदारता के जोश मे आय वे जो कुछ खर्च और खातिरदारी करते हैं सोतोहई है किन्तु अंगरेज़ों की इज़्ज़त की मरम्मत समय कुसमय करते

रहना यह एक ज़बरदस्ती का टैक्स नितनया उपस्थित रहता है—

इस कहने मे हम समझते हैं कुछ भी अत्युक्ति न समझी जायगी कि बेचारे राजालोग भी क्या करैं यदि इसतरह पर न भरते रहैं और रेज़ि-डेंट आदि छोटे बड़ों का मुह न मीठा करते रहैं तो एक दिन मे उनकी लेव देव कर दीजाय—यदि इस अत्याचार के बिरुद्ध किसी खुदमुख़तार तबियत Independant spirit या इनसाफ पसन्द Justice loving राजाने मन या कामसे अपनी कुछ भी कुढ़न दिखलाया तो यह समझ लीजिये अंगरेज़ी भाषा के अभिधान मे बुराई का सूचक कोई ऐसा बिषशेण नहीं है जो ऐसे राजाओं के लिये अनुपयुक्त होगा— पागल और जनूनी की पदवी पाकर राज्य से च्युत बे कर दियेजांय सलामी उनकी घटा दीजाय दरबार में कुरसी उनकी नीची कर दीजाय यहां तक कि परम राज बिद्रोह "डिसलायटी„ का टीका उनके माथे पर लगाया जाय जिस्का उदय हमारे गोरुप राजा लोगों के मन से कभी स्वप्न मे भी न हुआ होगा—चाहो भीतर से गवर्नमेंट के बे कैसेही हितैषी क्यों नहीं और नाम मात्र को भी इसके साथ गड़बड़ी सुन अपना सर्बस्व चाहो महाराणी के चरणो पर समर्पण करने को उद्यत हों—और जिनका लाखों किरोड़ों एहसान इन अंगरेज़ों पर है-इसे चाहो आप उन राजाओं को मूर्खता कहैं या अंगरेजों की धूर्तता— अंगरेज़ों की खुशी का कोई छोटे से छोटा अबसर आया राजा साहब को बड़ा भारी डिनर देना उचित क्रत्य समझागया जिस्मे और नहीं तो स्टेशन भरके छोटे बड़े साहब लोगों को बुलाना अति आवश्यक है इन अबसरों पर अंगरेज़ी समाचार पत्रों मे लिखा जाता है— The dinner passedoff very successfully "दावत बड़ी काम याबी के साथ को गई„—हम नहीं समझते इस लिखने के क्या माने हैं इस्मे आपको कुछ तरद्दुद नहीं करना पड़ा एक पैसा आपकी गांठका उठा नहीं जिन्दगी भर मे जितनी शराब न पिया होगा उतनी एक दिन मे ७ रुपये बोतल की शांपेन उड़ागये अब बतलाइये इतने पर भी दावत कामयाबी के साथ क्यों न हो--हुक्कर ही को लीजिये

जिनकी २१ जून की जुबली उत्सव मे इतनी खातिर शिकनी की गई—हम इस्मे पत्युक्ति सर्वथा न मान कहा चाहते हैं कि यदि आदि से हिसाब लगाया जाय तो इसी हुल्कर के रियासत की न जानिये के लाख की केवल शराब साहब लोग पी गये होंगे राजवंश के प्रिन्स अफवेल्स से लेकर छोट भइये तक कोई ऐसा अंगरेज़ नही बचा जिसने इस राज्य का नमक न खाया हो--दूर न न जाइये महाराज काशी नरेश की एक छोटी सी रियासत है किन्तु किसी छोटे से छोटे अवसर पर भी महाराज का दस पन्द्रह हजार उठ जाना साधारण सी बात है—न जानिये किस कुसाइत मे चकिया के शिकार गाह की नेव डाली गई है जिस्के बहाने वर्ष मे दो एक बार बड़े ओहदेदार कोई न कोई शिकार के लिये वहां पहुंचा ही करते हैं जिनकी खातिरदारी और दावत का खर्च उठाते २ महाराज का धुर्रा उड़ा जाता है।

हम इतना यहां पर और दर्साया चाहते हैं कि इस देश मे साहब लोगों के रहने सहने चाल चलन का क्रम उपयोगिता (utility) की पराकाष्ठा है जो बातें केवल शोभार्थ हैं उनको अपने आचरणो से उन्हों ने दूध की मक्खी सा निकाल दूर बहाया—हमारी बुद्धि मे इस्का यही कारण आता है कि एक तो यहां की शोभा के निबाहने मे गांठ का खर्च होता है और जहां एक २ पैसा जोड़ विलायत भेजना मुख्य उद्देश्य है वहां इस प्रकार अपव्यय और फजूल खर्च की बरदाश्त कहां ? दूसरा कारण यह भी है कि जब बेवकूफ कंबख्त राजा लोग इस बोझ उठाने को खुद कन्धा दिये हैं तब पास का पैसा उठाने का ध्यान भी मन मे लाना निपट मूर्खता है—इसी जुबिली की भेंट मे पचासों लाख का धन विलायत मे राजाओं का रह गया—किसी राजा ने महारानी को मोतियों का हार नजर दिया किसी ने मणि जटित सोने की सुराही दिया क्या अच्छी मेहमानदारी की गई–मेहमान बन कर चपत खाना यह नया तरीका मेहमानदारी का ईजाद किया गया–पाठकजन हम अपने राजाओं की उदारता का विशेष वर्णन केवल पिष्ट पेषण सा मानते हैं किन्तु यहां जो बार २ उसी एक बात की चर्चा करते रहे सो इस लिये कि २१ जून

को लन्दन मे महाराणी की जो जुबिली की गई उस्मे महाराज हुल्कर प्रभृति कई एक हमारे देश के रजवाड़े राजभक्ति के उद्गार से पूरित हो वहां गये थे उन्हे क्या प्रतिफल मिला ? उसो प्रतिफल और राजाओं की ओर से क्षुद्रा तिक्षुद्र अंगरेजों की खातिरदारी का तारतम्य दिखाया चाहते हैं—मेहमानदारी और आतिथ्य सत्कार करने का क्रम जिन राजाओं मे कुल परम्परा प्राप्त हो रहा है जहां राजाओं के लिये प्रजा रक्षण आदि कर्तव्य कर्म समझा जाता है वहां दूसरे का कोई काम खुद खड़े हो कर निकाल देना और उस काम मे शोभा उत्पादन कर देना भी अपना कर्तव्य कर्म वे मानते हैं यहां तक कि यह उनकी शिष्टता और अशराफीयत उदाहरण की रीति पर ऐतिहासिक हो गई है तवारीखों मे जिस्का ज़िकिर बार २ पाया जाता है—ऐसे उदार मना राजा लोग कंत्रखनी के मारे दो चार दिन के लिये बिलायत गये और वहां इन अंगरेज़ों से उनका कुछ भी आतिथ्य न बन पड़ा—रुखाई अभिमान और अशिष्टता की पराकाष्ठा हैं बिलायत मे न जानिये कितने ऐसे अंगरेज़ होंगे जिन पर इसी हुल्कर के राज्य का न मालूम कितना एहसान है यहां तक कि इसी खातिर शिकनी के सबब हुल्कर नाराज़ हो इंगलेंड छोड़ फ्रान्स चले गये उसपर भी पायोनियर साहब गाल बंधोटा की रीति पर लिखते हैं राजाओं की भरपूर खातिरदारी की गई—छिः क्या पायोनियर साहब को शरम क्या चीज़ है इस्का कुछ खयाल ही मन मे नहीं आता—स्वजाति पक्षपात यहां तक पायोनियर को सवार है कि जिसने हमारे राजाओं के सैकड़ों वर्ष के एहसान पर धूल डाल दिया और अपनी कर्तव्यता का ध्यान तो जड़ पेड़ से जाता रहा—धन्य हैं अंगरेज़ धन्य है इंगलेंड का जल वायु जो ऐसे २ स्वार्थ साधकों की जन्म भूमि है फिर भी हमारे महामान्य बने ही हैं लाचारी है।

। धैर्य ।

—हिन्दोस्तान से—

ईश्वर की सृष्टि मे धैर्य यह दो अक्षर भी मनुष्य का कितना उपकारी है—एक तो इस असार संसार मे हम सबों का जीवन ही अस्थिर और क्षण भंगुर उसमे भी पद २ मे विपद संकट अस्वास्थ्य हानि लाभ आदि बिविध यातना की असह्य बेदना—इस दशा मे "गत सुखी संसार—„ "जैसी पड़े अवस्था वैसा सहै शरीर—„ आदि बुद्धिमानो के सिद्धान्त ही अवलंब होते हैं—जब मनुष्य की ज्ञान शक्ति नष्ट हो जाती है और यह गांभीर्य शूरता तेजस्विता मनस्विता वदान्यता आस्तिक्य भाव आदि जन्म २ के अभ्यसित उदार गुण और चतुराई आदि सब से हाथ धो सर्वथा किं कर्तव्यता मूढ़ हो अत्यन्त व्याकुल और घबड़ा उठता है उस समय शान्ति भाव धारण किये ईश्वर की यही परमोत्कृष्ट शक्ति आगे आकर खड़ी होती है और सबतरह आश्वासन और जीवन दान देती है—राज्य गया पाट गया सुख संपत्ति सब क्षार मे मिल गई उस समय यही आगे आय खड़ी होती है और हरिश्चन्द्र रन्ति देव नल प्रभृति राजर्षि और बाबर हुमायूँ आदि बादशाहों का दृष्टान्त देदे समझाती है और हर एक पहलू से आप को सम्हालती है—प्रियतमा का वियोग हो गया सहाय शून्य हो घोरतर विपत्ति मे ग्रस्त हो गये दर २ पहाड़ और जंगलों मे फिरा किये उस समय यह आगे आय वीर चूड़ामणि राघवेन्द्र श्री रामचन्द्र का दृष्टान्त देदे आप

को हर तरह का दिलासा देती है—पुत्र न रहे विभव सब नष्ट हो गई कारागार का दुःख सहना पड़ा तब भी यही आप के आगे आती है और ज्ञान और वेदान्तों के बड़े २ सिद्धान्त नेत्रों के सामने रख आप को महाशान्त शील सहिष्णु और तितिक्षू बना देती है और ज्ञान के भांडार मे आप को लेजा कर बैठा देती है—प्रीति पात्र मित्र का बिछोहा हो गया अब घड़ीभर भी जीना दुष्कर है संसार का सुख सब फीका लगने लगा यह आप के सन्मुख आय कहती है बिछुरे मिलते हैं मिले बिछुरते हैं किस भरम जाल मे पड़े हो संसार का यह कारखाना ही है हमारा कहा मानो और हमे अपना साथी बना लो जीवन्मुक्त हो जाओगे और दुख तुम्हारे पास न फटकने पावेगा इत्यादि— तात्पर्य यह कि ऐसे संकीर्ण समय मे जब कि आप दुःख सागर मे डूब रहे हैं ढाढ़स बंधाने की सामर्थ्य यदि किसी को है तो इसी धैर्य गुण मे है और धैर्य आजाने पर आप के दुःख का भार कितना हल्का हो जाता है यह किसे अनुभूत और प्रत्यक्ष नहीं है—उन्नत मना तेजस्वी पुरुष जिन्हे धैर्य का पूरा २ अवलंब हैं वे देश काल समाज अथवा और २ कारणो से अदृष्ट की प्रतिकूलता को कुछ मात्र नहीं गिनते और अपने पौरुष पर निर्भर हो बार २ विफल प्रयास भग्नोद्यम और नाकामयाबी का धक्का सह कर भी धैर्य की डोरी पकड़ दृढ़ बने रहते हैं—बड़ी से बड़ी हानि मे भी ऐसों की मुखच्छवि मलिन होते और चेहरे पर सिकुड़न आते किसी ने न देखा होगा ऐसों के

महत्व के गर्व को खर्व करने की किस्की सामर्थि है-जो सागर के सामान गंभीर और शैल सदृश अचल हैं उनका विधि नियोग सर्वथा अपरिहार्य होकर भी क्या कर सक्ता है क्योंकि करम रेख या विधिनियोग कृत यातना का अनुभव ये भी वैसाही करने लगे जैसा सामान्य जन करते हैं तो इन्मे और उन्मे क्या अन्तर रहा—"द्रुम सानुमतां कि मन्तरं यदि वायौ द्वितये पिते चला:,,—रणोत्साही बीर के समानधैर्य धरे जो बिपत्ति का सामना करने को सदासन्नद्ध रहते हैं वे अवश्य बिजयी होंगे-चित्त की स्थिरता उनके दुःख का भार हल्का करदेती है नैराश्य कभी उनके पास नहीँ फटकने पाता-मै तो ऐसों का जीवन धन्य मानता हूं पाठकजन आप की जो सम्मति हो—

। यहां के जिला स्कूल से हेड मास्टर की बदली ।

जिलास्कूल के हेड मास्टर साहब जिन के चरण चिर काल से यहां ऐसे जम गये थे कि हम लोगों को यहां से उन के टसकने की अशाहीमिट गई थी सो अब दैव की अनुकूलता से दूसरे पद पर नियत किये गये और उनके स्थान मे बनारस ले सी-प्राट साहब आये हैं-यदि इनसे अधिक योग्य कोई दूसरा पुरुष आता तो हमे पूर्ण सन्तोष रहता किन्तु इनका आना भी हमे इस कारण से रुचा है कि जो अनेक कुरीतियां यहां स्कूल मे बद्धमूल होगई थीं उन्मे कुछ तो विक्षेप पड़ेगा – सुनते हैं पहले हेड मास्टर साहब की बनाई बहुत सी किताबें जिन के रटने से विद्यार्थियों की बुद्धि को व्यर्थका बोझा ही बोझा था समय बहुत सा व्यर्थ जाता था और अंगरेजी समझने की शक्ति कुछ नहीं बढ़ती थी उठा दीगई' किन्तु हेड मास्टर साहब से "प्रइवेट ट्यूशन,, तनखा देकर अलग पढ़ने की रीति जिस्के कारण स्कूल मे अनेक अन्याय

238

। प्राप्त ।

इङ्गलैंड याचा

पर घर कबहु नजाइये गये घटत है जोति
रवि मण्डल मे जातही छीनकलाशशि होत

आज कल बहुत से सज्जन इङ्गलैंड याचा के विषय में उपदेश देरहे हैं और आश्चर्य करते हैं कि हमारे लोग क्यों हठ धर्म्मों से पीछे हटते हैं और दूसरे देशों में जाकर वहां से विद्या और धन आदि का लाभ क्यों नहीं उठाते हैं—इसके प्रत्युत्तर में बिलायत गमन के बिरोधी लोग कहते हैं कि हमारे प्राचीन गुरुजन जिनका लक्ष्य इस ऊपर लिखे हुवे दोहे पर है इसको बर्जित कर गये हैं—और गुरुजनो की आज्ञा पालन परम धर्म्म है इस हेतु उसको उल्लघन करने से हम अधर्म्म के भागी होंगे—हमारे प्राचीन लोग केवल अपने मन के बहलाने को वा अपने निजसुख के हेतु कोई काम करना दूषित समझते थे वे जो कुछ करते थे सब प्राणियों के हितके अर्थ करते थे इस लिये अपने सन्तोष के हेतु वा निज सुख के प्राप्ति के हेतु देश विदेश घूमना उन्हों ने बर्जित कियाथा—उनकी आज्ञा है कि जब तुम बाहर जावो तो केवल बिजय के हेतु वा वाणिज्य से अपने देश को लाभ पहुचाने के लिये वा राज्याज्ञा प्रतिपालन के अर्थ बाहर जावो—अन्यथा कभी मतजावो—नही तो तुह्मारा तिरस्कार और अवज्ञा होगी जिसका प्रमाण अभी मिलचुका है कि महाराज हुलकर ऐसे बड़े लोगों का भी अनादर हुआ—अपने घरमे भूखा रह करभी पड़रहना अनुचित नहीं परन्तु दूसरों के आगे हाथ फैलाना मरने से भी अधिक है—आजहम जो स्वतंत्रराज्य में होते और जिन के देशों में जाते वहां उनसे बराबर होकर रह सकते तबभी हम वाणिज्य आदि के लिये दूसरे देशों में जाना बुरानसमझते—परन्तु अब अपनी इस दासत्व की अवस्था में दूसरों के बीच जो सबप्रकार स्वतंत्र हैं

जाकर क्या मुंह दिखासकते हैं और क्या प्रतिष्ठा पासकते हैं—और लाभ की जोकहये तो इस अप्रतिष्ठा के लाभसे हमभूखों मरना अति श्रेष्ठ समझते हैं- "तुलसी बनैसो रघुवरसे बने ना बिगड़े भरपूर—और देवसे जोबनेवाबनवे मेधूर„-हमारे देश में कौन वस्तु नही है और कौन वस्तु अन्य देशों से हम यहां ही प्राप्त नहीं कर सकते—हम यह समझते हैं कि पहले हम अपने को आदमी बनालें तब फिर आदमियों के बीच बैठने और जाने का विचार करैं— क्योंकि व्याह बैर और प्रीत बराबर वालों ही में होती है जो हम अपने से बड़ों से मिलैंगे तो अवश्य हमको छोटा बननाही पड़ेगा जब एक मनुष्य अपने को दूसरे से अच्छा समझे गा तो दूसरे को वह अपनी बराबर वाले की भांत कभी नही वरते गा आप अपने ही को देखैं कि जब कोई गंवार किसी सुशिचित मनुष्य के पास जाता है तो वह उसकी वैसी प्रतिष्टा कभी नही करता जैसी अपने बराबर वाले की करता है—यही कारण है कि अंगरेजौं और हिन्दोस्तानियों से कभी मेल नही हो सकता चाहो जितना यतन करो जब तक कि दोनो बराबर न हो जांय—यह प्राकृतिक नियम है इसके विरुद्ध होना संभव नही है—धर्मोपदेशक लोग कितनाही कहैं और समझावैं—यहां तक तो देखने में आता है कि जो परम धार्म्मिष्ट हैं उनको अधर्मी और पातकियों का तिरस्कार करना स्वभावही से सिद्ध होता है जब यह बात है तो हमको मिलने का उपाय छोड़ कर यह यत्न करना चाहिये कि हम उनकी बराबर हो जांय--और सब से श्रेष्ठ गुण जिसके आश्रय और सब गुण हैं और जिसके कारण वे आजदिन जगत विख्यात और स्वतंत्र हैं अर्थात् और किसी का आश्रय न करके अपनेही बल और पौरुष से सब काम करना जानते हैं तब हमको भी सब से प्रथम यही गुण सीखना चाहिये—क्यौं हम अपनी बढ़ोतरी के लिये इङ्गलैंड के आश्रित रहैं-क्या कभी इङ्गलैंड ने भी किसी दूसरे देश का आश्रय लेकर अपनी वृद्धि की है-फिर हम क्यौं नही कर सकते आज हम इनका आश्रय छोड़ दें-यह न समझें कि इन्ही के न्याय करने से हमारा न्याय होगा

इन्ही से हमको खाने पहरने की सब वस्तु मिलेगी इत्यादि तो बस कल तो हमको स्वतंत्रता बड़ाई आदि सब चीजें मिलजांय-परंतु नहीं यह तो हमसे होहीगा नहीं—तनमन धन हमसे लगाया जायगा नही मुशकिल हमसे उठाई जायगी नहीं फिर जो हम अपनी बढ़ोतरी चाहते हैं तो बिना दासत्व के कैसे मिले-और दास की जो कुछ बड़ाई है वह स्वामी की दी हुई है-उसमें अपना कुछ है नहीं-चाहो वह दे वा न दे और जब चाहै तब दे और जब चाहै तब छीन ले फिर उसमें हमको चिल्लाना न चाहिये-जो हमको वास्तव में अपनी उन्नति अभीष्ट है तो उसका पथ इङ्गलैंड जाकर बेरिस्टर वा सिवलसरवेंट हो कर आना नहीं है-क्योंकि बहुत से तो हो आये क्या लाभ उठालिया-हां यह लाभ तो निस्संदेह हुआ कि हमारी प्रकृति और रहन सहन अंरेज़ी हो गई जिसके कारण हम अपने भाई बंधु जनो को घृणा सहित देखने लगे उनसे कोई मेल न रहगया-और जिन लोगों के स्वभाव और प्रकृति हमने अंगीकार किये वे भी हमको समझते हैं कि हमने उनका अनुकरण किया है प्रत्यक्ष में जो चाहो सो बनावट करैं परन्तु मनमे वे हमको अपनी बाराबर कभी नहीं समझते बस दोनो दीन से गये पांड़े हलवा मिले न माड़े-धोबी के कुत्ते हो गये कि न घर के रहे न घाट के हुवे-जो आप यह कहैं कि जितने लोग इङ्गलैंड हो कर आये हैं वह सब तो अंगरेज़ नहीं हो गये-बहुत से उनमें से ऐसे भी हैं कि वह तनमन से हमारे मित्र और सच्चे हितकारी हैं और हमही उनको नहीं मिलाते नहीं वह तो मिलने को अत्यंत उत्सुक हैं इसमें उनका क्या दोष है-नही साहब यह तो हम भी नहीं कहते कि उनका कुछ दोष है हम तो दोष केवल इङ्गलैंड यात्रा का बताते हैं-जैसे स्वर्ग गये हुये लोग देव योनि को प्राप्त हुये लोग हमारे इस पाप और दुख से भरे हुये लोक की आबहवा को सहन नहीं कर सकते और इसी लिये दूर की आंच से चाहो जितना सेकैं परन्तु हममें आकर मिलकर हमसे सहानुभूति प्रघट नहीं कर सकते और हमारा हित साधन करके हमारे प्रेमपात्र नहीं बन सकते इसी प्रकार इङ्गलैंड गये हुये लोगों के स्वभाव और प्रकृति

भी ऐसे नाज़ुक हो जाते हैं कि उनको बंगले को छोड़ हमारे सड़े मुहल्लों में बसना नहीं भा सकता और इङ्गलैंड गये हुवों को कौन कहै जिनको अंगरज़ी शिक्षा हो मिली है वा अंगरेज़ों से कुछ संपर्क रहा है वह भी हमारे लोगों को अर्द्ध शिक्षित व नीमवहशी समझ कर हमसे मिलना पसन्द नहीं करते हमसे घृणा करते हैं हमारे शास्त्र और धर्म्म में श्रद्धा खो देते हैं इत्यादि और क्या हुआ जी सौ में एक बना भी रहा ९९ तो हमारे हाथ से गये—सुना है एकबेर कुछ चीन के लोग अमेरिका में गये और वहां जाकर अपनी मातृ भाषा भूलगये इसपर वहां के सम्राट ने यह आज्ञा दी कि कोई चीनी मनुष्य सिवाय इसके कि किसी विशेष कारण से राजाज्ञानुसार जावे विदेश में में जाने से दण्ड का भागी होगा—तात्पर्य यह कि जिसमे चीन का देश एक स्वतंत्र देश और चीनी लोग एक स्वतंत्र जाति बने रहैं अन्यदेशियों से मेल करके अपने आपे को भूल न जांय—वही आज काल हमारे देशवाले अपनी सब बातों की निंदा और तिरस्कार करके जिस वस्तु में अंग्रेज़ी पन का नाम भी आजाय उसको सर्वोत्तम समझते हैं और अपनी जाति व देश के अभिमान को भूलकर दूसरे लोगों की अधम वस्तु को भी अपनी उत्तम वस्तुवों से अच्छा समझ कर उनकी प्राप्ति के लिये दास्य भाव भी अंगीकार करलेना अपना सौभाग्य मानते हैं ।

फिर जो हमारे दूरदर्शी विधिवेत्ताओँ ने ऐसी आज्ञा दी होतौ कोई आश्चर्य नही है—संग का गुण दोष सबही जानते हैं भृङ्गी के संग से कीट भी भृङ्गी हो जाता है फिर अंगरेजों के चिरसहवास से जो हमारे लोग भी अंगरेज़ बनजांय तो कोई आश्चर्य को बात नहीं है और यह जो आप कहते हैं कि वे लोग मेल करना चाहते हैं हमही उनसे मेल नही करते यह भी सर्वथा असंगत है क्यौंकि जब बहुत से अन्यदेशीय अरब और तुर्क लोगौं से हम मिलगये (क्यौंकि वे लोग हमसे मिलना चाहते थे हमसे घृणा नही करते थे) तो यह क्यौं नही मिल सकते—कारण यह है कि यह हमसे अल-

गही रहना पसन्द करती हैं—हां जैसे भिखारी को भीख देती हैं परन्तु उनके संग बराबरी नहीं भाती इसी प्रकार हम यह मानती हैं कि उनको हमारी दुर्दशा देखकर दुख लगता हो दया आती हो और वह हमारे हित का उपाय भी करती हों-परंतु इसका नाम मेल नहीं है इसका प्रतिफल जो हम इस भीख को ग्रहण भी करें तो केवल क्रतज्ञता मात्र हो सकता है प्रेम वा प्रीति नही हो सकती-क्योंकि ऐसा तो मनुष्य मात्र कोई हो सबही करेंगे-

जब आप अपने को बहुत अच्छा समझ कर हम नीचों से नही मिलती तो हम भी अपने नीचों ही में सुख से रहकर गुजरान कर सकती हैं।

इसी लिये हम कहती हैं बिलायत से बेरिस्टर आदि बन कर आने से हमारा लाभ और बास्तविक कल्याण नहीं हो सका—अपनी भलाई के लिये पहले हमे निर्लोभ होकर तन मन धन सब अर्पण कर देश के सुधार और अपनी देशी भाइयों की भलाई मे लगें उन्हे पशु समान केवल खाने पीने और आराम की इच्छा से हटा कर मानुसी धर्म अर्थात् प्रतिष्ठा मान रक्षा और प्रीति आदि का प्रतिपालन करना सिखावें और जिस धर्म के बल किसी समय हम सब से उत्तम बने हुये थे और जिस्से च्युत होने से इस दुर्दशा को पहुंचे हैं उसी को फिर स्थापित करने की चेष्टा करें हमारे देश के लोग बहुत कहे सुने से किसी काम मे लगे भी तो तत्काल बड़ा लाभ न देख जल्द उस काम से हट जाते हैं इस नगर मे थोड़े दिनों से एक देशी-तिजारत कंपनी स्थापित की गई परन्तु इसे प्रगट करते लज्जा और शोक होता है कि लाखों कहने वालों मे २००० मनुष्य भी ऐसे न निकले जो १) महीने से २५ महीने तक इसकी सहायता करते रहते बड़े प्रयत्न से थोड़े लोग हुये भी तो दोही चार महीने के मेहमान बन इस्से घबड़ा गये कोई तो अपने हिस्से बेचने को उपस्थित हैं किसी ने दो चार महीने दे कर किश्त देना बन्द कर दिया कोई कहते हैं देश मे आग लगी हमने तो अपने लाभ के लिये यह काम किया था जो हम को इस्मे चार रूपये सैकड़ा प्रति मास न मिला तों हम इस्के साथी बन कर क्या करेंगे बहुत से लोग कहते

हैं इसका प्रबन्ध अच्छा नहीं है परन्तु ऐसा सपूत कोई न मिला जो यह कहता कि आओ हम इसका प्रबन्ध ठीक करदें जिनको भला मानस समझ यह काम सौंपा गया वे यही तके बैठे हैं कि किसी तरह यह रुपया हज़म हो जाय न देना पड़े तो अच्छा जब पढ़े लिखों का यह हाल है तब जिन्हे वे मूर्ख माने बैठे हैं और जिनके उपदेशक बनने का वे दावा बांधते हैं उन बेचारों की कौन कहे—इस्से हे सज्जनो आप इंगलेंड जाकर अंगरेज़ बनने के बदले यहीं रह कर थोड़ा कष्ट अपने ऊपर उठाके दृढ़ संकल्प से एक काम को उठाइये और उसे बिना पूरा किये उस्से न हटिये—हमारे कहने के अनुसार चलियेगा तो थोड़ेही समय मे बिना किसी की सहायता के उन्नति की सीढ़ी पर चढ़े हुये अपने को पाइयेगा—आप पूर्ण दत्तचित्त हो कर बिलकुल उसमें लगजावो न फिर धन का सोच करो न समय का जैसे हो वैसे अपना कार्य साधो जो ऐसा करो गे तौतो सभ्य मंडली मे प्रतिष्ठा पावोगे और दूसरे लोग तुम से डरेंगे भी क्योंकि यह समझेंगे कि तुम किसी काम में बंद नही रहोगे जो कुछ काम करना चहो गे वह सब कर सकोगे और सबको पूरा करलो गे—जब हमारे यहां के सुशिक्षित और विद्वान लोग इस पर कमर बांधेंगे तो सब कुछ शीघ्रही हो जायगा—

आपका हिताभीलाषी

ह० प्र—

280

। शब्दों की युक्त योजना या मुहाविरे ।

मुक्तकण्ठ--साफ २ कहना—

मुक्त हस्त—दानशील-"व्ययेचा मुक्त हस्तया„-मनुः-

बद्धमुष्टि—सूम—

मुक्तसंग—त्यागी—"मुक्तसंगोनहं वादी—गीता-

रिक्तपाणि—खाली हाथ-"रिक्त पाणिं न पश्येत राजानं भिषजं गुरुम्-

शूची भेद्य-अन्धकार—

असूर्यं पश्या-सूर्य चन्द्रमा भी जिसकी छाया तक न देख सकें-राजदारा।

ललाटंतप-मध्यान्ह के सूर्य ।

यातयाम-पर्युषित-बासी-यातयामंगतरसं पूति पर्युषितंच यत्-गीता।

नक्तंचर-रात्रिंचर-राक्षस-रातको चलने फिरने वाला।

वैयात्यं-ढिठाई-"अन्यदा भूषणं पुंसांक्षमा लज्जेवयोषिताम्। पराक्रमः परिभवे वैयात्यं-सुरते ष्विव"-माघः ।

इतो भ्रष्ट स्ततो भ्रष्टः-न इधर के न उधरके ।

। क्षमा प्रार्थना।

इस महीने में हमारे पास बहुत सी पुस्तकें आई हैं स्थान न रहने से समालोचना न कर सके ग्रन्थकार हमें क्षमाकरें दूसरे मास में उनके ग्रन्थों की समालोचना अवश्य रहेगी ।

रा. का. गो.
२१-८-२१

हिन्दीप्रदीप ।

मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंदभरै ॥
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणि दीप समथिर नहिंटरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

१ जूलाई सन् १८८७	जिल्द १० संख्या ११

इलाहाबाद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
देशोपकारक यंत्रालय में प्रकाशित
किया गया

मूल्य अग्रिम ३।= पीछे देने से ४।=
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १।=

२४९

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द १० | संख्या ११ | १ जूलाई | सन् १८८७ ई०

। न्याय श्री खण्ड ।

श्रीखण्ड नाम है मलयगिरि के अति शीतलकारी सकल परितापहारी आदि अनेक सद्गुण संपन्न चन्दन का जिस्के लेपन से सुगन्ध और हर्ष की प्रकर्षता बढ़ती है अलक्ष्मी और ताप दूर भागता है जिसके वृक्ष का यह प्रभाव है कि समीप के जिन २ वृक्षों तक उस्की महक पहुचती है उन सबों को अपने समान चन्दन बना देता है यदि हम उसी चन्दन की उपमा ब्रिटिश राज्य के वास्तविक न्याय को दें तो कुछ अनुचित नहीं है क्योंकि ब्रिटिश न्याय रूपी चन्दन का वास्तविक गुण और स्वभाव ठीक ठीक वैसाही है जैसा पूर्वोक्त चन्दन मे है—ब्रिटिश न्याय का शुद्ध स्पर्श और निर्मल पवन जिस राज्य वा जहां की प्रजा को प्राप्त हो वह अवश्य तदाकार गुणों को धारण कर सक्ती है किन्तु

२५२

जिस प्रकार चन्दन वृक्ष मे अनेक दुष्ट जीव लिपटे रहते हैं उसी तरह इस न्याय श्रीखण्ड की भलाई के अवरोधक अनेक विघ्न उपस्थित रहते हैं यथा—

मूलंभुजंगैः कुसुमानिभृंगैः शाखाप्लवंगैः शिखराणिभल्लैः ।
नास्त्येवतच्चन्दनपादपस्य यन्नाश्रितं दुष्टतरैश्चहिंस्रैः ॥

इस ब्रिटिश न्यायकारी चन्दन वृक्ष के अङ्ग प्रत्यङ्ग मे अनेक अभिघातक दुष्ट जन्तु लिपटे हैं जिनके दुर्गुण और भय से उस न्याय चन्दन तरु का वास्तविक गुण हम सबों को नहीं मिल सक्ता—इस वृक्ष का प्रधान या मूल भाग जो पार्लियामेंट है उस्मे साधारण प्रजा के विपक्ष मतावलंबी कन्सर्वेटिव रूपी महा भोगी विषधर भुजंग लिपटे हुये हैं जिनके भयानक फण और महा विकराल फुफकार के त्रास से कोई भारत बासी प्रजा मूल तक नहीं पहुंच सक्ती बरन उनकी जगत् प्रक्षोभक फुफकार की उष्णता दूर तक व्यथा पहुंचाती है फिर उसकी बड़ी मोटी २ शाखायें जो जुडिशल तथा क्रिमिनल दीवानी या फौजदारी हैं उस्पर महा महा कौतुकी न्यायशील बन्दर बैठे हुये हैं जो अर्थी प्रत्यर्थी मुद्दई मुद्दालों के झगड़ों की एक टुकड़ा रोटी की भांत कानून रूपी तीखे २ दांतों से नोच २ प्रकारन्तरिक न्याय तुला पर तोल २ तृष्णा के महागर्त मे झोंकते जाते हैं अन्त को उनकी रोटी का ऐसा सूक्ष्म टुकड़ा रह जाता है कि दोनो अर्थी प्रत्यर्थी के दृष्टि पथ से बाहर हो जाता है और अन्त को "न्याय शाखाधीशप्लवंगेभ्योनमः" यह मंत्र पढ़ परस्पर बैर की हवनाग्नि

से दीनो होम कर दिये जाते हैं—इसीसे किसी ने कहा भी है-
"जोनहिमानो हमरीसीख जावअदालत मांगोभीख—,,

उक्त न्याय चन्दन की ओर जो छोटी २ डालियां पुलिस प्रभृति हैं उन्मे बड़े भयानक भल्लूक जो दया का नाम नही जानते और पकड़तेही रक्ताशय को सुखा देते हैं बिराजमान हैं उनका भयानक स्वरूपही देख कर होश हवास बिगड़ जाता है मूर्छा आजाती है तो फिर उस न्याय शिखर तक कौन जासके—बाकी रहा उस चन्दन तरु का फूल और पुष्प रस राजस्व—कोश—और इनकम्—माल—खजाना—और आमदनी आदि सो उस्के आस पास झुन्ड के झुन्ड रस ग्राही मधु लोलुप द्वीप द्वीपान्तर निवासी भृङ्ग और कीट पतंग गूँज २ मीठा रस चूस रहे हैं तब भला ऐसे पक्षधारी अलिमंडल के सामने हम सब पक्ष रहित दीन हीन जनो को उक्त न्याय चन्दन वृक्ष का पुष्प अथवा पुष्प रस कब मिल सक्ता है—हां चाहो सड़ी गली पर्युषित रस हीन खूभी कूड़ा करकट भलेही बटोर लें और महा प्रसाद की भांत उसे उठाकर आंख से लगावें माथे पर चढ़ावें मन बहलावें डींग मारें परन्तु उस सच्चे न्याय श्रीखण्ड से भेंट नहीं क्योंकि उक्त चन्दन का कोई अंग ऐसा हई नहीं जो उन भयानक जन्तुओं से न लदा हो-रह गई उस चन्दन की शीतल छाया और ठंढी पवन सो पेटागिन मरो और उस ठंढी पवन पी पी कर रहो और उस शीतल छाया की तारीफ करते जाओ—"वाह

वाह ! क्या आराम और चैन है सब ओर से जान और माल की रक्षा हो रही है बाघ और बकरी एक घाट पानी पीते हैं,, इत्यादि—

। शुभ परामर्श ।

विषमोपिविगाह्यतेनयः क्षततीर्थःपयसामिवाशयः।
सतुतत्त्वविशेषदुर्लभः सदुपन्यस्यतिकृत्यवर्त्मयः॥
किरातार्जुनीयम् ।

किसी जलाशय नदी तड़ाग आदि की पिच्छिल दुर्गम तट भूमि मे अपने ऊपर बहुत सा क्लेश उठाय घाट बना देना कठिन काम है पर अच्छा सुबीते का घाट बन जाने से सबो उस्मे उतर चढ़ नहा धो सक्ते हैं—ऐसाही राज नैतिक विषयों के भी पथ दिखलाने वाले बहुतही थोड़े हैं पर जब एक ढर्रा उस्का चल निकला और राजनीति की उलझी गाठें सुलझा दी गईं तब उस्का समझना या उस्पर चलना सबों के लिये सहज हो जाता है ।

जब किसी की कोई अति निन्दा करे तो वह निन्द्या मान यदि कुपति होके कहे कि आपही बतलाइये मे तुम्हारे साथ कैसा बर्ताव करूं जिस्मे आप मेरी निन्दा करना छोड़ दें—तब निन्दा करना जैसी सहज बात है ठीक पथ दिखलाना वैसी सहज बात नहीं है—जिस घोड़े की चाल अच्छी नहीं है उस्की निन्दा भलेही कियाकरो किन्तु उस घोड़े को बश मे कर सुन्दर चाल पर उसे चलाना विरल चतुर अभ्यासी का काम है ।

अंगरेज़ी राज्य की निन्दा आप भलेही घर बैठे करते रहिये पर अंगरेज़ यदि पूछैं कि केवल अपनेही दोष से हमने तुम्हारा देश बसी भूत किया कि

इसमे तुम्हारा भी कुछ दोष है अस्तु जो हुआ सो हुआ अब आपही बतलाइये मै क्या करूं जिस्मे मै आप के समीप निन्दनीय न बनूं ? अब बतलाइये इस्का उत्तर आप क्या देंगे क्योंकि हिन्दुस्तानियों मे आप किसे इतना योग्य पाते हैं जिस्के हाथ मे इतने बड़े देश का शासन करना सौंप दिया जाय—आप यदि हिन्दूधर्म मे निष्ठा रखने वाले के हाथ मे राज्य सौपने को कहैं तो मुसल्मान बंगधर वा मेम विवाहे मद्यप राज सन्तान उछले कूदेंगे—इस्के विपरीत यदि मुसल्मान या यूरेशियनो के हाथ मे राज्य सौंपने को कहैंगे तो हिन्दूमात्र बिगड़ खड़े होंगे—अन्त को यही बात निर्द्धारित होती है कि अभी इस देश का राज्य अंगरेज़ोंही के हाथ मे रहना उत्तम है पर सब के गुरू गोवर्द्धन दास "तर्कदेव„ यही बतलाते हैं कि दूर सागरपार बासी स्वार्थान्ध अंगरेज़ों से इस देश का कल्याण अनहोना है तब महाशय आप कौन सा उपाय इस देश के कल्याण का निश्चय करते हैं—अभी यहां वालों मे राज्य शासन की योग्यता नहीं है यदि यह कहिये तो अंगरेज़ों की निन्दा करना व्यर्थ है "उपवास से मरना अच्छा वा पतोह्न का जूठा खाके जीना ?„ अंगरेज़ अपनी निन्दा सुनके यदि और भी उत्पीड़न मे प्रवृत्त हों तो दोनो संभव है या तो इस देश का कल्याणही हो या महा अकल्याण—अर्थात् पूर्ण रीति पर हमारा कल्याण होने मे सन्देह हो रहा—यदि आप अपनी बातों को सत्य समझ तत्व कथन मानते हों निन्दा नहीं मानते तो आप क्या प्रमाण रखते हैं कि अंगरेज़ भी आपही के समान उसे सत्य समझें—यदि आप यह कहिये कि निन्दा निन्दनीय को गर्हणा के निमित्त नहीं की जाती किन्तु स्तुत्य की स्तुति के लिये तो संभव है आप का तात्पर्य धार्मिक राजाओं की स्तुति के लक्ष्य से हो जिस्से आशा की जा सक्ती है कि अधार्मिक राजा भी अधर्म को छोड़ के धर्म के पथ पर प्रवृत्त हों—परन्तु निन्दापात्र मनुष्य आप के वाक्यार्थ के ग्रहण मे स्वतंत्र है वह आप के तात्पर्य को यों ग्रहण करेगा कि निन्दक अपने को हमसे उत्तम समझ घमंड मे फूला हुआ है और घमंड

का परिणाम शुभकारी नहीं होता–यदि आप कहैं सम्पादक को स्वतंत्रता दी गई है तो मै आप को अदूरदर्शी समझूंगा बस आप सम्पादकता कर चुके जब आप को इतनी बुद्धि भी नहीं है कि दुनिया की दुकानदारीके रंग ढंग बूझ सकैं तो किस भरोसे सम्पादकता का बोझ उठाये हुये हैं–यह आप ने नहीं देखा कि बिल्ली चूहे को थोड़ा अवसर दे धर मारती है ।

यहां पर आप कह सक्ते हैं कि परिणाम के फला फल के विचार मे अपनी अपनी बुद्धि सर्वथा समर्थ है–अपने पूर्वजों के देखाये मार्ग पर दृढ़ रह हम ने निज बुद्धि से विचार किया तो सच २ कहनेही का परिणाम हमे उत्तम जंचा अतएव हम ने उसी को स्वीकार किया तुम्हे उसका परिणाम मन्द जान पड़ता है तो तुम्हारे विचार से हम दोषी होके भी अपनी समझ मे निर्दोष हैं–पर प्यारे सम्पादक आप के इस बचन से मै यद्यपि निरुत्तर हूं तथापि दूरदर्शिता को काम मे लाय आपही कहिये कि प्रसव के समय किसी स्त्री के स्वजन की मृत्यु का संबाद पत्र आवे और वह स्त्री पूछे कि कैसा समाचार है तो यद्यपि अन्त मे सत्य का परिणाम उत्तमही हुआ करे परन्तु सच बातलाइये आप मे इतना महा साहस आसकेगा कि सत्य २ सन्देश सुना उसके स्त्री के और गर्भस्थ शिशु के प्राण का सन्देह कर देवें ? दुष्टों के मिथ्या जाल मे फंस किसी उत्तम पुरुष का प्राण बध होता हो और आप की मिथ्या साक्षी से उस साधु के प्राण की रक्षा जब संभव है तो उस समय झूंठ बोल के पश्चात् उस पाप का प्रायश्चित्त धर्म शास्त्र मे उक्त है—इन बातों से मेरा आशय कहीं आप ऐसा अटपटांग मत ग्रहण करलें कि मैं झूठी प्रशंसा से अंगरेजों के खुश करने की संमति आप को देता हूं–महाशय यह कदापि मेरा मत नही है कि सम्पादकीय कृत्य से आप को डिगाऊं बरन चतुर स्वार्थान्ध अंगरेजों को झूठी २ स्तुतियों से बशी भूत करना मूढ़ता की बात है किन्तु उनके भयंकर कोप से देश की हानिपर सशंकित और चिन्तायमान् हो ऐसी संमति देता हूं ।

मनधातु से जिस्का अर्थ ज्ञान है मुनि पद सिद्ध हुआ है और मुनि से मौन पद बनता है इस लिये मौन का अक्षरार्थ ज्ञानित्व है परन्तु प्रचलित अर्थ तूष्णीं भाव लिया जाता है जिस्से स्पष्ट है कि मौन ज्ञानी जनो का भूषण है दूसरी ओर से विचार किया जाता है तो वाग्मी पद का अर्थ वावदूक अर्थात् अच्छी वक्तृता करने हारा है जिस्से वक्तृत्व भी एक उत्तम गुणो मे गिना जाता है-अब देखिये मौन से और वाग्मित्व से विरोध होके भी अपने २ अवसर पर दोनो पद अलग २ भूषण हैं अन्यथा दूषण होते हैं—जो अवसर पर चूकता है वह चुप्पा या बाचाल कहा जाता है इस प्रकार के विरोध के और भी उदाहरण हैं यथा फुर्तीला और उतावला दोनो शब्द एकार्थक होके भी विषय भेद की व्यवस्था से एक प्रशंसात्मक दूसरा कुत्सात्मक है—कहावत प्रसिद्ध है कि प्रत्येक मनुष्य के कान सुनने के लिये दो हैं पर मुख एकही है--महाशय परिणाम पर दृष्टि रख कहिये कि अंगरेजों की निन्दा से मौन ग्रहण करने का अवसर है अथवा उनकी निन्दा मे वाग्मी बनेने का ?

जब मेरे परामर्श के अनुसार निन्दा और स्तुति दोनो मे आप निषेध पाते हैं तो सिद्ध हुआ कि देश के सुधराव के लिये दूसरे २ उपदेशात्मक लेख लिख लिख संपादकता का कार्य निर्वाह कर सक्ते हैं सत्य है-परन्तु भय शीलता से भी आप को सावधान रहना चाहिये अवसर पर भय त्याग शुभ परिणाम परिचिन्तन कर यथार्थ स्तुति वा निन्दा से आप को पराङ् मुख होना भी अनुचित होगा और इस अवसर अनवसर के सोचने का भार आप के कन्धे पर उसी क्षण से रक्खागया है जिस क्षण से आप ने सम्पादक बनने की दीक्षा ग्रहण किया अतएव मेरी समझ मे तो आजकल अंगरेजों की निन्दा का अवसर नहीं है क्योंकि आजदिन उनको सर्वतो मुखी प्रभुता है वे क्रोध मे आय भर आप को तंग किया चाहैं तो गिन के जितना कौर आप को खिलावें उतनाही खाना पड़ेगा ऐसे अवसर पर उनकी निन्दा या उन्मे दोष ढूढ़ना

अरण्य रोदन के समान है अथवा घातित पशु के चीत्कार तुल्य व्यर्थ है-ऐसे अवसर पर आप उनकी स्तुति भी करें तो क्या उनका स्वार्थान्ध चित्त कभी करुणार्द्र होगा-ऐसे समय में आप का परम कर्तव्य यही है कि जिस विषय में अंगरेज आप से पूछें उस्मे राजा प्रजा दोनो के हित का अनुचिन्तन कर जो उचित समझिये सो कहिये यथाशक्ति निन्दा के अंश से तो सर्वथा सावधान रहिये और मिथ्या स्तुति तो कदापि मत कीजिये और जिस विषय में सर्कार आप से कुछ पूछतीही नहीं और प्रजा का उस्पर कुछ विशेष लक्ष्य भी नही है उस्के उपोद्‌घात से कल्याण समझिये तो उपोद्‌घात कीजिये और कल्याण मे संशय हो वा अकल्याण की संभावना हो तो उस विषय को डाल रखिये अवसर की प्रतीक्षा करते रहिये-आप जिस्को निन्दा वा स्तुति न समझें और दूसरा उस्को निन्दा वा स्तुति समझे तो इस भय से मत भागिये क्योंकि ऐसा डरने से संसार मे फिर पांव रखने का ठांव न मिलेगा- "प्रवृत्तिःकुत्र कर्तव्याजीवितव्यं कथंनुवा-„ आप मुझ तुच्छ बुद्धि का परामर्श सुन ऐसा कह के मत टाल दीजिये कि क्या इतनी बुद्धि भी हम लोग संपादकी का दावा बांध नहीं रखते जो तुम अति तुच्छ सामान्य २ बातें भी हमे सुझाओ तब सूझे-महाराजा युधिष्टिर से ज्ञानी को महाभारत मे धौम्य ने वेही बातें सुझाई हैं जो बातें उक्त महाराज जानते थे उस्का कारण भी धौम्य ने यही कहा है कि जानते जन भी अवसर पर न चूकें इस प्रयोजन से जो इष्ट मित्र हों उन्हे चाहिये कि जानी बूझी बात को भी दुहरा के जतलावें और यह उस प्रेमी मित्र के प्रेम का लक्षण है न कि आत्म गरिमा प्रगट करना उस्का उद्देश्य इस्मे रहता है--इति-

सरयूप्रसाद मिश्र

संपादक-ऐसे शुभचिन्तक मित्र का शुभ परामर्श मुझे शिरोधार्य है।

। रणधीर सुन्दरी ।

। उपन्यास ।

२ परिच्छेद

—अङ्क ७ के आगे से—

पीतमतुमगुनवेलरी, पसरीमोउरमांहि ।
नेहनीरमितहीबढ़ै, क्योँहूसूखतनाहि ॥

अब हम रणधीर और उसके साथी को सरोवर के किनारे छोड़ कुछ वृत्तान्त मुसल्मानो के दल का आप को सुनाया चाहते हैं ।

यह दल शाहनशाह अक्वर की चुनी २ सेना और सरदारों का था— जब अक्वर ने देखा कि पहले जो सेना और सरदार रणधीर का सामना करने को भेजेगये थे सब विफल प्रयत्न और परास्त हो कर भाग निकले और इस्से रणधीर का यश और मुसल्मान संम्राट की अपकीर्ति दिन दूनी बढ़ती जाती है तो इस लिये इस कलंक और अपवाद के मिटाने को शाहनशाह ने अपने समग्र बल को एकत्र कर एक बड़े भारी दल को इस युद्ध के निमित्त भेजने का विचार स्थिर किया और जितने बड़े २ वीर योद्धा और विजयी सेनानी थे सबों को भिन्न २ प्रान्तों से बुला कर इस दल के संग किया और ऐसा प्रबन्ध किया कि मानो समस्त पृथ्वी के जय करने का सामान है—इस दल मे बड़े २ उत्कट वीर धनी भी थे जिन्हों ने स्वप्न मे कभी समर भूमि को पीठ न दिखाई थी और यवन सम्राट को अपना स्वामी मान उसकी सेवा और आज्ञा पालन मे तन मन से तत्पर थे ।

चलती बेर संम्राट ने सब बीरों से और विशेष कर उसमान से यह कह-दिया कि यह दल मेरे राज्य की मान रक्षा के हेतु भेजा जाता है जो तुम लोगों मे थोड़ा सा अंश भी राजभक्ति अथवा बीरत्व का शेष हो तो बिना शत्रु को परास्त किये मुझे अपना मुख न दिखाना—यवन संम्राट अक्बर की

सेना पहले रणधीर के साथ युद्ध मे कई बार परास्त हो चुकी थी इस्से ऐसी विभीषिका अक्बर के मन मे समाई थी कि इस बार जहां तक चुनी हुई सेना इकट्ठी हो सकी सबों को दिल्लीश्वर ने अपने सुयोग्य जेनरल उसमान के साथ कर रणधीर के मुकाबिले को भेजी और यह सब सुभट दल नैपाल की पर्वत श्रेणी के दक्षिण ओर की तराई मे इस प्रकार जा पड़ा कि रणधीर को निकल कर भागजाने का कोई अवसर न मिले ।

संध्या के समय जब सब लोग अपने २ कामो से निश्चिन्त हो चुके तो जेनरल उसमान ने अपने प्रधान २ युद्ध कुशल वीरों को बुला कर इस बात का विचार आरंभ किया कि शत्रु से किस प्रकार लड़ना उचित है—परन्तु युद्ध विषयक मंत्र गोपनीय होने के कारण उस्का विशेष वर्णन अभी हम नहीं किया चाहते अतएव अपने पाठकों का चित्त रंजन कराने को कथा के एक दूसरे भाग मे थोड़े समय के लिये बिलमाते हैं ।

उसमान का नियम था कि जहां कहीं जाता था अपने परिवार भर को साथ लिये चलता था–इस अवसर पर भी उस्का कुनबा उस्के साथही था–इस्के एकही स्त्री थी क्योंकि और मुसल्मानों के क्रम के अनुसार इसने अधिक विवाह नहीं किया था—एक इस्की कन्या थी जिस्का वयक्रम १५ वा १६ वर्ष से अधिक न था–जैसा यह लालित्य और सौन्दर्य संपन्न थी वैसाही ऋजु भाव और गुण शील आदि ललना जाति सुलभ सद्गुणो से विभूषित मानो कोई देव कन्या थी प्राक्तन जन्म किसी पाप के कारण म्लेच्छ के घर मे इसे जन्म लेना पड़ा था–मै समझता हूं कौन ऐसा नीरस अथवा यों कहिये बिना मन का मनुष्य होगा जिस्का मन उस्की सुहावनी सूरत और माधुरी मूरत पर देखतेही लट्टू न हो गया होता–मै समझता हूं ऐसे मूसर चन्दों के मन की ऊसर धरती के साथ समता देने मे किसी को कभी कुछ संकोच न होना चाहिये जिस मन रूप भूमि मे प्रेम और स्नेह का बीजही नहीं जमता तब ऐसी रूप माधुरी की छबीली अलबेली वेल को वहां फैलने के निमित्त अवकाश न पाने के लिये कौन पछताय—इस वेल के सुमन की महक उसी मन

होते आये हैं सो न बन्द हुई और नये हेड मास्टर भी उसी चाल पर चला चाहते हैं—हम समझते हैं डइरेक्टर साहब को इस विषय का एक सर्कुलर कर देना चाहिये कि स्कूलों के प्रधान आधिकारी हेड मास्टर आदि उसी स्कूल के छात्रों को तनखाह लेकर अलग न पढ़ाया करें क्योंकि इस प्रइवेट टूशन के कारण धनवानो के बालकों का पक्ष पात किया जाता है और धनवानो के बालकों से हर तरह पर चढ़े बढ़े गरीब छात्रों के परिश्रम और योग्यता की यथोचित कदर न हो कर उनके साथ अन्याय कियाजाता है—जब वे देखते हैं कि उन्ही के समान कोटि के बालकों का धन के कारण पक्षपात किया गया है तो उनको अपनी गरीबी पर कलक आती है कि यदि वे निर्धनी न होते तो यह दुर्दशा उन्हे कभी न सहनी पड़ती—इन कारणो से स्कूल की इस कुरीति का उठना अत्यावश्यक है—दूसरी कुरीति पैसे की प्रतिमास उगाहनी है जो फीस दूनी और तिगुनी होजाने पर भी नहीं बन्द हुआ चाहती और इस कुरीति के भी बुनियाद डालने वाले वही हेड मास्टर साहब हैं—छिः प्रत्येक लड़कों से ८ पैसा प्रतिमास भिक्षा वृत्तिके समान उगाहना सर्कार के लिये कैसी लज्जा की बात है फीस दूनी होने पर भी पंखा कुलियों की तनखाह क्यों न उसी में देदी जाय हम इसे कई बार लिख चुके कहीं न सुनाई हुई तो हार मान बैठ रहने से एक बार फिर इसकी याद दिलाना उचित समझते हैं- पंखा कुलियों की तनखाह लड़कों से वसूल कर दीजाय यह दस्तूर हम किसी स्कूल मे नहीं देखते- अस्तु हमे शोक है कि हेड मास्टर गार्डेन साहब से हमारा केवल एकही वर्ष के लिये पिंड छूटा रहे गा—हम दुआ देते हैं कि ईश्वर इनको सदा के लिये इनस्पेक्टर करदे और इनके स्थान मे कोई उत्तम कोटि का पुरुष स्थिर रूप से नियत किया जाय ।

मे फंसेगी जिनको इसी लिये हम मनीषी कहते हैं—परन्तु उसमान इस्को जी जान से प्यार करता था और कभी इस्को किसी बात मे थोड़ासा भी दुखी और अनमन होते नही देख सक्ता था और इस ने भी अपने मा बाप की आज्ञा के बाहर होना सीखाही न था उनकी इच्छा जांच कर और मन की बात परख कर जिस्मे वे प्रसन्न रहैं वही करती—इस्की एक चचेहरी बहन भी इस्के संग रहती थी जिस्के बाप मा दैवी इच्छा को कौन रोक सक्ता है जब यह निपट बालक थी कूंच कर गये थे बरन इस्को अपने सगे मा बाप की सुध भी न थी उसमान ही ने इसे बालक पन से अपनी निज की लड़की की भांत पाला था और यह भी अपना बाप उसी उसमान को मानती थी—इस्का नाम रजिया था और उसमान की सगी लड़की का नाम ज़ोहरा था—इन दोनो मे इतना नेह और प्रेम था कि एक कोख की दो सगी बहनो मे कहीं ढूंढने से भी न पाइयेगा दोनो एकही संग खाती पीती उठती बैठती थीं और जब तक उसमान अपने डेरे मे रात को नहीं सो रहते थे तब तक दोनो संगी संग बैठी बात चीत किया करती थीं—आज भी उसी प्रकार दोनो बैठी हुई जो बात चीत कर रही हैं वह हम अपने पाठकों को सुनाते हैं।

ज़ोहरा—बीरजिया यह जो इतनी बड़ी लड़ाई का सामान कियागयाहै खुदा जाने इसका अंजाम क्या होगा—ज़ाहिर असबाब तो रणधीर सिर्फ एक छोटा सा ज़मीदार मालूम होता है लेकिन सब लोग उस्से ऐसे डरे हुवे और हिरासां जान पड़ते हैं कि किसी की हिम्मत उस्से मुकाबले की नही पड़ती और इसी सबब से इतना कुछ सामान जंग इस शख्स के ज़ेर करने के लिये किया गया है लेकिन खौफ यह है कि जो अब के हमारे लोगों के पैर उखड़े तो फिर हमारा ठिकाना कहीं नहीं और सल्तनत का ज़वाल तो समझो आया ही गया।

रज़िया—बहिन तुम ऐसे अंदेशे अपने दिल मे क्यौं लाती हो फज़लइलाही और इकबालशाही से यह फौज ऐसी नही है कि इस्से कोई दुश्मन बच सके एक २ बहादुर इसमें ऐसे हैं कि रुस्तम और अस्फन्दयार का मुकाबिला

करैं और जीते जी मैदान जंग से भागने वाला तो इनमें एक भी नहीं है—

ज़ोहरा—बहिन यह तो सच है लेकिन एक तो खौफ हमारे लोगौं के दिलौं पर ऐसा गालिब है कि पहलेही से वह लोग रणधीर को एक शेर समझे हुवे हैं दोयम है भी वह ऐसा बहादुर और होशयार कि हमारी एक हिकमत उसके सामने पेश नहीं जाती और सुना है फौज मे जिधर वह अपनी साथियौं को लेकर पिलता है उधर को सफ़ की सफ़ साफ करता चलाजाता है—

ज़ोहरा—बहिन यह सब कुछ सच हो तब भी एक का इलाज दो मशहूर है और जब एक के मुकाबिले मे दस हौं गे तो वह कहांतक ज़ोरावर होगा—फिर सिवाय इसके आजही खबर मिली है कि वह अपनी गढ़ी मे है भी नहीं कहीं गया है जो इस वक्त में हमला किया जायगा तो गढ़ी का सर होना कोई मुशकिल बात नहीं है—और जब फौज उसकी टूट गई तो फिर अकेले वह क्या कर सकेगा खुद आमिलेगा या कहीं जंगलौं मे निकल जायगा तब भी उस्से निजात मिल जायगी और ऐसा जान पड़ता है कि अचाजान इसी तजवीज़ मे हैं भी ।

ज़ोहरा—इस बात को सुन कर कुछ प्रसन्न सी हुई परन्तु रज़िया को इसका कुछ भेद न समझ पड़ा—कारण यह कि वह इसके गुप्त प्रेम से जानकार न थी—पाठकों को बड़ा आश्चर्य होगा कि ज़ोहरा ने रणधीर को पहले कहां देखा था जो उसमे इस्का प्रेम उत्पन्न होगया—पाठकगण—वास्तव मे ज़ोहरा ने रणधीर को कभी नही देखा था परन्तु प्रेम का यह नियम नही है कि अपने प्रीतम के देखनेही से उत्पन्न हो प्रेम की कहानी निराली है—कोई नहीं कह सकता कि यह कब और कैसे होता है-यह एक हृदय का भाव है जो कभी अपने प्रीतिपात्र को देखने से कभी उसकी कथा सुनने से और कभी २ विना देखे सुने अपने आप उधर खिच जाता है और प्रेमी को अकस्मात् अपने प्रीतम के पास ले जाता है—जिन पुरुषों को कभी इस प्रेम पंथ पर चलना पड़ा है वे इस को भले प्रकार

समझ सकैंगे और जो कभी इस के फंदे में नहीं फसे वे हमारी बातों को ठट्ठे में उड़ादेंगे-जो कुछ हो परंतु यह बात निस्संदेह सत्य है कि रणधीर के गुण और उस को चर्चा अपने चारो ओर सुनते २ एक ऐसा प्रेम उसके हृदय में उत्पन्न होगया कि जब कभी उसकी चर्चा होती थी तौ यह उसको बड़े चाव से सुनती थी और उस्से उसको हर्ष और सन्तोष सा बझ पड़ता था-यद्यपि यह इसे पूर्ण विश्वास था कि उसका रणधीर से साक्षात् कार होना असंभव सा है परन्तु प्रेमी जन हताश तौ कभी होते ही नहीं—उसको ऐसा बोध होता था कि कभी रणधीर को वह अवश्य देखे गी-जब से यह लड़ाई का सामान हुआ तब से उसकी आशा और भी बलवती होती गई परंतु रणधीर के जय पाने की दशा मेंतौ उस से मेल होना किसी प्रकार संभव था ही नही जो कुछ आशा थी तौ वह मुसलमानों के ही विजय पाने में थी-सिवाय इस के उसको यह भी निश्चय था कि रणधीर के जीते जी मुसलमानो का विजयी होना एक बड़ी कठिन बात है और जहां वह जी से पिता की जय की चाह रखती थी वहां रणधीर का अनिष्ट सोचने से उसका चित्त कांपता था-इसी हेतु जब उसने यह सुना कि रणधीर अपनी गढ़ी में नहीं है तौ उसकी दोनो मनो कामना पूरण हुई कि उसके पिता की जय भी हुई और रणधीर भी निष्कलंक कुशल से रहा—इसी से उसको बड़ी प्रसन्नता हुई थी परन्तु रज़िया के सामने उसने अपने को बहुत दबाया और यह भेद खुलने न दिया यद्यपि रज़िया बेगम से उसको कुछ छुपाव नही था तथापि प्रेम का यह भी एक अंग है कि अपने भाव का दूसरे से प्रगट करना अच्छा नहीं लगता उसको गोप्य रखने ही में एक अलौकिक प्रकार का आनंद मिलता है और दूसरे यह भी सोच था कि जो माता पिता को यह भेद खुला तो बड़ी लज्जा होगी-अभी इस प्रणय के अंकुर कोलगे हुवे थोड़े ही दिन हुवे थे इस लिये कुछ थोड़ा सा विचार और लज्जा अभी शेष थी नही जब यह प्रेम देवता अपना पूर्ण प्रकाश करते हैं तब तो लज्जा और विचार कहीं रही नही जाती परन्तु इसका अंकुर भी ऐसा दृढ़ होता है कि जहां जम गया वहां से फिर नही

उखड़ता–हां जो इसकी भूमि हृदय स्थान है वही स्वयं इसे निकाल कर फेंके तो कदाचित् इस्से छुटकारा होतो हो–

इतनी ही बातैं होने पाई थीं कि उसमान अपने डेरों को आते हुवे जान पड़े—बस वे दोनो बहन भी वहां से उठ कर अपने पिता की सेवा सुश्रूषा के लिये उसमान के डेरे मे पहुंचीं और जब वहां सब काम से छुट्टी पा चुकीं तो रात बहुत जा चुकी थी इस्से दोनो अपने २ डेरौं में सोने को चली गईं– रज़िया तो पड़ते ही गहरी बेफ़िकरी की नींद में सो गई परंतु ज़ोहरा को नींद कहां—अपने पलंग पर लेटी तौ सही परंतु रज़िया के संग जो उस्की बातैं हुई थीं उन्ही का ध्यान फिर उसे आया और इस बात को सोच कर कि रज़िया से उसे छुपाव करना पड़ा उसको बड़ी व्याकुलता हुई और किसी प्रकार उसे नींद न पड़ी—तब तौ वह बहुत घबड़ा कर उठ बैठी और ईश्वर से रोरो कर इस प्रकार प्रार्थना करने लगी—

वा रे खुदा यह क्या आफ़त मेरे पीछे लगी कि चोरों की तरह मुझे अपने दिल के राज़ को छुपाना पड़ा–मैंतौ कभी इन बातों से वाकिफ़ भी न थी यह यकायक क्या हो गया—अगर मेरे मा बाप को खबर हो गई तौ वह क्या कहैंगे और लोग मुझे क्या हंसेंगे कि बिन देखे इश्क़ कैसा–फिर दिल भी कहां फसा है कि जहां किसी तरह कोई उमेद नहीं—हिंदू मुसलमान का मेल कैसा यह मैने माना कि यह हज़रत इश्क़ मुझे जो चाहें सो नाच नचावैं और मुझे उनके हिंदू पन से कुछ गरज़् न हो क्योंकि इश्क़ मे तमीज़ मिल्लत और मज़हब की कहां है लेकिन उनको क्या गरज़ पड़ी है जो उनको कभी मेरा खयाल भी हो–इस्से जान पड़ता है कि कभी को मुझे अपनी शरम हयाही से नहीं बलकि जान से भी हाथ उठाना पड़ेगा—या इलाही तूही मेरी शरम का निगहबान है तू अच्छे तौर से जानता है कि दिल के ऊपर मेरा काबू नहीं हर चन्द मै बहुत कुछ इस खयाल को अपने दिल से दूर करना चाहती हूं पर यह किसी तौर से दूर नहीं होता अब मै तेरेही भरोसे हूं जो कुछ मेरे हक़ मे बेहतर हो वह कर लेकिन किसी तरह दिल को तसल्ली हो।

इसदरदेदिलसेमौतहो, यादिलकोताबहो।
किसमतमेजोलिखाहो, इलाहीमिलाबहो॥

यह कहकर बहुत रोई और रोते रोते सो गई।

जिस समय ज़ोहरा यह प्रार्थना कर रही थी उस समय उसमान जो किसी कार्य्य विशेष को बाहर निकला था ज़ोहरा के डेरे के पास आया तो वहां उसकी आवाज़ सुन कर इस बात के देखने को कि यह इतनी रात गये क्या कर रही है वहां ठहर गया और सब बात सुनी—उस समय उसको इतना आश्चर्य और दुख हुवा कि थोड़ी देर तक उसको कुछ सुध बुध न रही कि मैं कौन हूं कहां हूं और क्या कर रहा हूं-परंतु या बुद्धिमान् इस लिये यह समझ कर कि प्रेम बल से नहीं जीता जा सकता और समझाना बुझाना भी सब निरर्थक होगा और समझावे तो उसको जो अपने में हो—उस बिचारी का भी दोष क्या उसकी सामर्थ से भी इसकी तरंगों का रोकना बाहर था इस लिये चुपचाप यह बिचार करता हुवा कि अब क्या कर्तव्य है उलटे पांव अपने डेरे में लौट आया और इसी सोच विचार में सो गया—अब इन सब को सोते हुवे छोड़ कर हम अपने पढ़ने वालों को भी विश्राम करने का अवसर देते हैं—

—लौकिक—

यह लौकिक ऐसी भारी बलाय है कि संसार में रहकर यदि आप शुद्ध अलौकिक या निरा पारमार्थिक ढूंढ़ा चाहैं तो बड़ी कठिनाई आप को झेलना पड़ेगा—सच तो यों है कि आप अलौकिक इच्छा चाहते हैं तो विरक्त बन केवल कन्दमूल और शाकाहार से निवाह कर जन समाज से दूर कहीं निर्जन बन में जा बसिये-तब तो अलबत्ता संभव है कि इस लौकिक दूषित यातना से कदाचित् बचे रहें तो रह सक्ते हैं किन्तु आदमियों के दंगल में बस आप का शुद्ध अलौकिक होना मानो शहनाई का बजाना और चने का चाबना

दोनो कामो का एक साथ निवाहना है-जो काम या जो बात निपट अलौकिक और शुद्ध पारमार्थिक बुद्धिमानों ने नियत कर रक्खा था लौकिक उस्मे भी जा धसा और यहां तक उसे बिगाड़ डाला कि शुद्ध परमार्थिक की महक भी अब उस्मे न बच रही-दंभ देव की व्यापक शक्ति को नमस्कार है जिनके जाल मे बड़े २ वीत राग विरक्त और मुक्त भी फसे हुये काठ की पुतली से नाचा करती हैं-मै तो यही कहूंगा कि जो कोई इस लौकिक के जाल मे न फसा वही बड़ा ज्ञानी-बड़ा तपस्वी-बड़ा संयमी-श्रद्धालू-भक्त-और जीवन्मुक्त है लौकिक के फन्दे से मुक्ति पानाही योगीश्वरों की सिद्धियां हैं-दीवाना-सौदाई-मजनूं-अत्यन्त घृणित-हो लौकिक से अपना गला छुटाना बहुत उत्तम है पारलौकिक के पक्के दूकानदार साक्षात् दंभ के प्रमावतार बनकर महा महोपाध्याय षट् शास्त्रवेत्ता सिद्धेश्वर होना अच्छा नहीं-बहुधा देखा जाता है कि ऐसे लोग भी मौजूद हैं कि लौकिक से अपने को छुटते हुये नहीं पाते तो दीवाने सौदाई महा मैले और घिनौने बन जाते हैं—राजा सगर के पुत्र असमंजस ऋषभदेव दत्तात्रेय प्रभृति महात्माओं की पुरातन कथाओं का स्मरण कीजिये और विचारिये उन कथानकों का क्या वास्तविक भावार्थ है-सच पूछिये तो इस लौकिक के दुश्मन हमने खोजते २ दोही को पाया एक इन सिद्धों को दूसरे दिवाल दारियों को—पाठकजन इन दिवालियों को भी उन सिद्धों से आप कुछ कम न मानियेगा क्योंकि इज्जत आवरू या मोती सी आब उतरने का खयाल जिस्पर लौकिक का सतखंडा महल खड़ा हुआ है दिवाले के साथही साथ निकल भागता है—

हमने ऊपर लिखा है शुद्ध पारलौकिक कामों को भी लौकिक ने अपने जाल मे फसा छोड़ा है-पढ़ने वालों के मन मे तर्कना उठी होगी यह कैसा? तो लो इसे भी सुनते चलिये-आप राजा वलि से महा दानियों का कान काटे हुये कलियुग के करन बने बैठे हैं—पुश्तहा पुश्त का संचित धन बहाये देते हैं मै बड़ा दानी हूं इस दिमाग मे फूले नहीं समाते पर सोचिये और बताइये

तो कभी एक पैसा भी शुद्ध परमार्थिक के ध्यान से किसी को या किसी काम मे आप ने दिया है–बड़े २ यज्ञ किये बड़े २ दान दिये पर जो कुछ किया लौकिक मे सुख्याति के ध्यान से जिन्हे दिया सुई देख के–जिन्हे आप ने भारीभरखं मोटे ताज़े चेहरे मोहरे से दुरुस्त हट्टे कट्टे पाया उन्हे आप ने भी उलचना आरंभ कर दिया क्योंकि वहां तो यही लौ लगी है इन्हे देंगे तो ये चार भले २ लोग जो रियासत की नाक पकड़े हैं उनके बीच के बैठने वाल हैं वहां जाकर हमारा नाम करेंगे—वही काम क्यों न करें जिस्मे युग युगान्तर के लिये हमारी उदारता का स्मरण लोगों को बना रहे नाम का नाम और परमार्थ खिलौने मे–बतलाइये दान की वह बात कहां रही "जिसे दहिना हाथ दे उसे बायां हाथ न जानें„ इत्यादि–हमे अफसोस है कि कितने ऐसे दानी हमसे छूट गये होंगे पर छूटा करो हमे उनकी क्या परवाह है–दान के क्रम मे ईसा का एक यहूदी को फटकारना हमे निहायतही पसन्द आया है जिस्की चर्चा हम यहां पर बिना चलाये आगे नहीं बढ़ सक्ते "एक बार एक यहूदी ने ईसा से आकर पूछा गुरु मै क्या करूं जो स्वर्ग के राज्य का अधिकारी बनूं–ईसा ने जवाब दिया बहुत से रोज़े हैं नमाज़ हैं खैरात हैं उन्हे किया कर स्वर्ग को सीधा चला जायगा—यहूदी ने कहा गुरु यह मै सब कर चुका—ईसा ने जवाब दिया तो तू अपना सर्वस्व कंगलों को लुटा दे तब तू पूरा २ स्वर्ग का अधिकारी होगा–यहूदी बड़ा धनी था और अपने दान का बड़ा घमण्ड रखता था शरमिन्दा हो कर चुपका उठा चलागया–„ यह वाक्य ईसा का इसी स्थल का है–"ऊंट का सूई के नाके से निकलजाना सहज है पर धनी के लिये स्वर्ग का मार्ग अति दुष्कर है–„ नरसी भगत का इतिहास और कबीर की कितनी चितावनी इस दान के क्रम मे याद रखने लायक हैं पर पाठक जन ऊब न उठें इस्से उन्हे हम छोड़ अब दूसरे विषय पर इस अपने अलौकिक लेख मे लौकिकता का प्रकाश दिखाया चाहते हैं–

आप बड़े नैष्ठिक और श्रोत्रिय हैं धर्म मे बड़ी श्रद्धा और भक्ति प्रकाश किया करते हैं त्रिकाल सन्ध्या गंगा स्नान वैश्वदेव अग्निहोत्र सब मे टांग

चढ़ाये हुये हैं पर यह बतलाइये यह सब निरीपोप लीलाही है कि जी से भी कुछ है ? या बड़े २ नरेश और महाराजों को फसानेही के निमित्त आप का वेदाधिगम अग्निहोत्र और दीक्षा है। हम काशी को भी बार २ असीसते रहते हैं जो ऐसे २ नाटकों की रंग भूमि है हमारा विश्वास न मानो प्रबोध चन्द्रोदय नाटक निकाल कर पढ़ो बड़े २ दिलबहलाव के तमाशे उस्में पाओगे—रहा भक्ति और श्रद्धा का निवास स्थान ८४ कोस का व्रज सो हम व्रज विहार और विन्द्राबन की लीला के जीव हुआ ही नही चाहते व्रजको दूरही से प्रणाम कर चल खड़े होते है—तथापि-परस्परं भोज्य मह निशं रतिः स्त्रीभिः समं पान मनन्त सौहृदम् । श्री गोकुलेशार्पित चेतसांनृणां रीतिः परा सुन्दरि सारवेदिनाम्,,—पाठक जन समझते होंगे यह सब को सुनाता है आप कोराही बचा चला जाता है—लोगों को भ्रम होगा यह कोई बड़ाही देश हितैषी और आज़ाद मुहफट कहने वाला आदमी है यह कोई क्या जाने यहां देश को चूल्हे मे झोके बैठे हैं हम तो लोक रंजना को अपना सिद्धान्त किये हैं-मन से यही भावना लगी रहती है कि हमारे लेख पर लोग रीझैं ग्राहक बढ़ैं टेंट गरम हो पर किस्मत की कमनसीबी-हिन्दी के दुर्दिन-और अपनी समाज की विद्वत्ता को हम कहां तक सराहैं दस वर्ष सराहते २ बीत गये पेट खाना मुह लजाना न बन्द हुआ—इन्ही लोक रंजना चाण्डालिनी की··········· ···

इसी से हम को लौकिक से घिन हुई तो आज उसी को धरदाबा जिनको इस्में कोई अंश प्रतिकूल प्रति भात भया हो माफ करैं क्योंकि लोक मे रह लौकिक से बचना संभव नहीं हम पहलेही निश्चय कर चुके हैं जवस मे वस कर मगर से विरोध कहां का न्याय है ।

पुरानी और आज कल की नाम करने की रीति।

। हिन्दुस्तान में ।

नाम करना, नाम कमाना, नाम पैदा करना, नाम चलाना, नाम बनाये रखना, इत्यादि एकही तात्पर्य के द्योतक भिन्न २ वाक्यालङ्कार या मामूली बोल चाल में कथन के प्रकार हैं और जिन का पुराने और अबके नई चाल के लोगों में सर्वथा जुदा २ भाव ग्रहण किया जाता है—अर्थात् जिसे हमारे पुराने लोग नाम करना नाम कमाना नाम चलाना मानते हैं उन पर इन दिनों के पढ़े लिखे लोग घिनाते और हंसते हैं-पुराने लोग ब्याह शादी तथा लड़का पैदा होने की खुशी में बड़ा भारी जशन शीशे आलात से सजी हुई मोहफिल कर जमात की जमात लट्टूदार पगड़ी वाले लोगों को बुलाय सात भांति की मिठाई उन्हें भोग में दे नाम करने के घमण्ड में फूले नहीं समाते—लट्टू बाजों ने उस सात भांत की मिठाई का भोग चाव रूमाल से मुह पोंछते घर की राह ली और मन में यही सोचा किये ऐसाही रोज़ एक बिना सींग पूछ वाला मिलता रहे तो इससे बढ़कर आदमी की ज़िन्दगी में मुबारक दिन और क्या होगा—यहां लाला जी मन मगन होते पूर्ण सन्तोष का अनुभव कर रहे हैं चार भाइयों की कृपा से हमारी वाह वाह हो गई और इतने दङ्गल में भी कोई वस्तु न घटी—चुटकी बजाने वाले चापलूसों ने हां में हां मिला दिया बस फिर क्या शाहजी के लिये मानो सात स्वर्ग और अपवर्ग का सुख भी पसंगा है क्षणभर की शोभा के लिये मंगनी का हाथी घोड़ा सैकड़ों की फुलवारी और आतश बाज़ी फुकवा दिया अथवा बाप मा की करनी में सर्वथा कुपात्र कट्टहे को ज़र ज़ेवर से मालामाल करदिया मोटी तोंदवालों को यथेष्ट भोजन और भूरसी दक्षिणा से तृप्त कर नामवरी की पराकाष्ठा को पहुंच गये, पढ़े लिखे लोगों की मण्डली शाह जी की पुरानी

अकिल और घुनी दिमाग पर खिजाते और तर्स खाते शोक करते है कि इस बुद्धि के दरिद्री को कैसे समझावें इस क्षणभर की शोभा से कौन सा चिरस्थायी फल प्राप्त हुआ-ईश्वर को क्या कहें जो ज़र दिया जनानों को-इस दीवाने को इतना न सूझा कि इतने रुपये में तो न जानिये कितना बड़ा देश की भलाई का काम निकलता-जो माल कुपात्र कट्टे को देदिया गया और अशिष्ट तुन्दिल ब्राह्मणों को खिला दिया गया वही योग्यता संपन्न अनुपपन्न विद्वानों को दिया जाता तब भी प्रशंसा की एक बात थी—हम भी मानते हैं सभ्य समाज का यह कहना सर्वथा युक्ति संगत है इस प्रकार का अपव्यय करते हमारे देश के कितने सेठ साहूकार राव से रंक बन गये और बनते जाते हैं एक ओर से सर्कार पंप लगाये देश का धन चूसे लेती है दूसरी ओर से अमीरों की फ़ज़ूल खर्ची और नाम पैदा करने की खाहिश धन का संहार किये देती है धन्य वैभवोन्माद—वाहरे पुरानी अकिल हज़ारों फिटकार ऐसे नामवरी पर-पुरानी अकिल शिवाले या मन्दिरों में हज़ारों लाखों फूंक समझती है इससे बढ़कर नाम चिरस्थायी रखने का कोई दूसरा प्रकार नहीं है—नये लोग कहते हैं वही धन किसी विद्यालय में दान देदिया जाय वा सदा के लिये छात्र वृत्ति स्कालरशिप उस धन से नियत कर दीजाय तो न जानिये देश का कितना उपकार हो, मूर्खता देश से निकल भागे और असंख्य पुण्य की प्राप्ति हो सो घलौने में—किन्तु गतानुगतिक न्याय के क्रम पर धर्मशाला शिवाला सदावर्त भण्डारा आदि पुराने लोगों में नाम स्थिर रखने को उपाय निकाली गई है वो अब उस समूह के नये लोगों को जब कभी इतना वैभव हो गया जिसके उन्माद में उनको नाम करने की इच्छा हुई तो इन्हीं सब बातों से उनकी समझ में नाम चिरस्थायी रह सक्ता है-इतनी अकिल उन्हें कहां से आ सक्ती है जो शोच सकें कि देश को हज़ारों नई बातों की आवश्यकता है जो हम लोगों के धर्म्म की कोटि में आकर देश की भलाई का प्रधान अङ्ग हो सक्ती है—गोशाला स्थापित करना अनाथ विद्यार्थियों को आश्रय देना ईसाई पादरियों ने लाखों अनाथों को इसी त-

रह आश्रय दे २ कितनों को ईसाई कर डाला--लाखों गौवें काटी जाती हैं नगर २ गोशाला स्थापित हो जांय और उनमें बढ़ी लंगड़ी लूली अपाहिज बैल और गौवें रहा करें और धर्मार्थ खिलाई जांय तो क्या कोई अल्प पुण्य का काम हो और गोधन की क्षीणता से देश जो नित्य २ क्षीण होता जाता है सो बच रहे, यह क्या कुछ कम उपकार है—देश में कारखाने खोले जांय हज़ारों ग़रीबों की पालना हो यह क्या कोई धर्म्महो नहीं है—अपने देशी बन्धु अनेक प्रकार के मोह और अज्ञान के कारण अनेक वेदनायें सह रहे हैं, यदि सस्ती २ पुस्तकें वा गुटके और सस्ते २ समाचार पत्र छाप कर इन लोगों को सामाजिक राजनैतिक और शिल्प वाणिज्य सम्बन्धी ज्ञान दिया जाय, जिससे उनका दुःख दरिद्र दूर हो, तो क्या कम उपकार हो? समर विजयी श्रीमान् राजारामपाल सिंह बहादुर जो हिन्दी के उद्धार में बद्ध प्रण होकर सैकड़ों रुपये महीने हिन्दोस्थान पत्र के पालन में व्यय कर रहे हैं इस असंख्य पुण्य की समता पुराने लोगों के गतनुगतिक क्रम की उदारता और धर्मशीलता कभी कर सक्ती है? मैं समझता हूं हमारे देश के यदि और २ राजे महाराजे इस श्रेणी के हो जाते तो अति अल्प काल में देश का उद्धार हो जाता—अस्तु यह तो पुराने और नये लोगों का नाम करने में समझ का झगड़ा अब तक लिखते रहे अब यह दर्साया चाहते हैं कि इन विविध वाक्यों के अलग २ क्या भावार्थ हैं--नाम करना या होना वह है कि किसी अवसर पर जैसा लोग बराबर करतूत करते आये हैं उतना आपने भी किया आप का नाम हो गया—इस नाम करने के मानों यही माने हुये कि जितना लोग करते आये हैं उससे कम करने में बदनामी की भय से बचनाही मात्र इसका उद्देश्य है—नाम कमाना या नाम पैदा करना वह है कि जिस बात को किसी ने नहीं किया उसे अपने निज पौरुष बुद्धि विद्या साहस या सम्पत्ति के द्वारा कर गुजरना—सार्थक जन्म ऐसोंही का है जो किसी बात में एकता हो रहे हैं—"अपुमानर्थ बज्जन्मा यस्य नाम्नि पुरस्थिते। नान्याङ्गुलिस मभ्येति संख्यायामुद्यताङ्गुलिः„—हमारे यहां रामरघु प्रभृति

यूनान देश में सिकन्दर यूरोप में नेपोलियन बोनापार्ट आदि इस कोटि के मनुष्य हुये हैं जो "उत्तमाश्चात्म विख्याताः„ की कोटि में आसक्त हैं—नाम बनाये रखना वही है कि बड़ों की पदवी को तो पहुंच न सके किन्तु गिर पड़ किसी तरह एक ढर्रे पर चले जा रहे हैं उन्हें हम मध्यम कोटि में रक्खेंगे—और इतना भी जो न कर सके उन्हें अधम कोटि में समावेशित करना चाहिये ऐसों का निरर्थक जीवन किस लिये है इसे परमात्मा जाने।

। प्राप्त ग्रन्थ ।

। दयानन्द दिग्विजयार्क ।

फर्रुखाबाद निवासी पं० गोपालराव हरी प्रणीत तीन खण्डों में यह ग्रंथ श्रीमत्स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के चरित्र का सर्वस्व है इस देश के आबाल वृद्ध वनिता कौन नहीं जानते कि हाल में सरस्वती महाशय एक विचित्र प्रति भा संपन्न पुरुष और देश के संशोधकों में शिरोमणि हुये हैं तब ऐसे महान् पुरुष का चरिताख्यान पढ़ने को किसकी लालसा न होगी उस चरिताख्यान का इस ग्रंथ में सर्वस्व है मेरी समझ में यह ग्रंथ न केवल उन्हीं के पढ़ने योग्य है जो आर्य मतानुयायी हैं किन्तु विद्या रसिक मात्र के लिये मनोरंजक है—कई ठौर इस ग्रन्थ का बड़ा ही अद्भुत लेख है विशेष कर वहां जहां पर स्वमी जी का भिन्न २ मतावलम्बियों से शास्त्रार्थ है मुसल्मान और ईसाइयों से जहां पर वैदिक धर्म से उन २ मतावलम्बियों का बिवाद है मुझे वह बहुतही भावता है—मूल्य तीनो खण्ड का २।=) मे डाक व्यय के है।

। गोधर्म प्रकाश ।

एक वर्ष की पूरी जिल्द—बंधी हुई—डाक ब्याय सहित १।) मे—इस मासिक पत्र का उद्देश्य बहुत उत्तम है और इसके सम्पादक सेठ मोहनलाल गोरचिणी

सभा के सभापति इस ओर पूर्ण दत्तचित्त हैं जैसा इनके प्रबन्ध से फर्रुखाबाद की गो शाला आज दिन ब्रजराज के गोष्ठ का अनुकरण कर रही है वैसाही यदि प्रति नगर मे गो शालाएँ स्थापित हो जांय और ऐसेही दो एक मनुष्य सच्चे मन से प्रवृत्त हो जांय जैसा सेठ मोहनलाल जो प्रवृत्त हैं तो क्यों कभी इस देश का गो धन क्षीण हो—और २ नगर वाले चाहो फर्रुखाबाद के उत्साही मनुष्यों का नमूना इस बात मे पकड़ें भी पर महा स्वेच्छाक्रान्त इस इलाहाबाद के लोग तो कभी किसी के नमूने पर कुछ नही किया चाहते—जिसे गो धर्म प्रकाश की पूरी जिल्द साल भर की मंगाना हो सेठ मोहनलालजी से फर्रुखाबाद मे व्याल्यू पेएबिल भेजकर मंगा ले ।

दिनचर्या

फर्रुखाबाद निवासी आर्य पुस्तकालय के मेनेजर पं० गणेशप्रसाद उभित—इसमे स्वामी दयानन्द सरस्वती जीका कुछ थोड़ा सा जीवन चरित्र है जिस्के पढ़ने से पाठकों को यह मालूम होगा कि जो उन्नत मना हैं उनके चित्त मे पहलेही से सूक्ष्म रूप मे उस्का अंकुर विद्यमान रहता है—"होन हार वीरवान के होत चीकने पात„ मूल्य मे पोस्टेज ≈॥ है)

। अङ्गरेज़ी भाषा की दूसरी पुस्तक ।

पं० दीनदयाल शुक्ल रचित—बालकों के लिये उपयोगी अंगरेज़ी शब्दों के हिन्दी मे माने दाम मे पोस्टेज ≈)

—हिन्दोस्तान—

हिन्दी भाषा का परमोत्तम दैनिक पत्र—इस पत्र के प्रादुर्भाव से हमारे लिये तथा हमारी टूटी फूटी हिन्दी के लिये बड़े अभिमान का विषय है प्रथम एक तो यही कि इस भाषा मे भी हिन्दी का दैनिक पत्र ज्यों त्यों कर निकला तो—दूसरे इस्के सुयोग्य सम्पादक पं० मदनमोहन मालवीय जैसी योग्यता अपने उत्तमोत्तम लेख के द्वारा प्रकाश कर रहे हैं और जैसा उत्साह श्रीमान् राजा रामपाल सिंह बहादुर तन मन धन से दर्सा रहे हैं उस्से यही आशा होती है कि कुछ दिनों मे यह पत्र सब हिन्दी पत्रों को दबाकर जल मे तूंबी सा उतराय चलेगा अक्षरों मे जैसा रेफ का ऊर्द्ध गमन रहता है वैसाही यह हिन्दोस्तान हिन्दुस्तान मात्र में सब सम्बाद पत्रों के ऊपर रहेगा-यह कालाकांकर से निकलता है और १०) वार्षिक इस्का मूल्य है ।

। निष्कारण दान शीलता ।

इसे हम निष्कारण दान इस लिये कहते हैं कि ब्राह्मनों की पोथियों मे इस प्रकार के दान का कहीं चर्चा नहीं है—न किसी मोटे आदमी का इस प्रकार के दान से पेट भरता है न परलोक मे इस्का कुछ प्रति फल मिले तब यह दान निष्कारण तो हुआही अस्तु जो हो हम फर्रुखाबाद निवासी सेठ मोहनलाल को हर्ष के साथ धन्यवाद देते हैं जिन्होने ५) इस पत्र के सहायार्थ दान दिये—यह देना निष्कारण इस लिये और भी है कि पामरों मे इस्की चर्चा कहीं न होगी ।

। ग्राहकों से ।

वर्ष पूरा हो गया यदि पाठक जन अपना २ मूल्य कृपा कर भेज दें तो बार २ तकाज़ा करने की झौंझट से बचें ।

विज्ञापन ।

दयानन्द दिग्विजयार्क

चौबीस अध्याय का यह सद् ग्रन्थ नीचे लिखे अनुसार सब तीन खण्डों में ऐसा अद्भुत परिपूर्ण किया गया है कि जिसे सुचित्ती से अवलोकन किये पीछे समाज, स्वार्थ और परमार्थ सम्बन्धी कोई बात व कोई काम जानने व समझने के लिये शेष नहीं रहता जिन महाशयों को अपेक्षित हो, वे ग्रन्थकार पण्डित गोपालराव हरी जी मंत्री वैदिक समाज फर्रुखाबाद से वेल्यूपेबिल द्वारा मांगती रहैं परंतु अपना पता साफ़ लिखा करें ॥

प्रथम खंड, ॥) केवल द्विती खंड, ।॥) तृतीय खंड १)

श्री जीका फोटूचित्र बड़ा ॥) छोटा ।)





रा॰ना॰गो॰
५-१०-२७

हिन्दीप्रदीप।

मासिक पत्र।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंदभरै॥
बचिदुसह दुरजन बायुसों मणिदीप समथिर नहिंटरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै॥

१ अगस्त सन् १८८७ | जिल्द १० संख्या १२

इलाहाबाद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
देशोपकारक यंत्रालय में प्रकाशित
किया गया

मूल्य अग्रिम ३।≤) पीछे देने से ४।≤)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १॥≤)

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द १० | १ अगस्त
संख्या १२ | सन् १८८७ ई०

। संसार सागर का अद्भुत प्रवाह ।

इस संसार सागर का अद्भुत प्रवाह जो चल निकला सो चल निकला इस प्रवाह को चाहो आप गड्डलिका प्रवाह कहो चाहो अन्ध परंपरा कहो चाहो भेड़िया धसान कहो चाहो गतानुगतिक न्याय कहो एक वार इसी समाज के बीच किसी न किसी ढब से चल निकलना चाहिये—इस प्रवाह के बेग के आगे स्थगित सा हो विवेक पड़ा २ ववांया करता है बुद्धि विराम को प्राप्त होती है तालीम के पीछे ताली पिटती है सुशिक्षा भिक्षा मांगती डोलती है—हजार २ वाज़ और वक्तृता किया करे कौन सुनता है—समाज मे आप का नाम एक वार भलाई या बुराई के रजिसटर मे दर्ज हो जाना चाहिये किसी कारण से आप नेक नाम या भले लोगों की श्रेणी मे भरती कर लिये गये

फिर आप टट्टी के आड़ मे छिपे २ कितनेही बुरे काम करते रहिये आप को बदनाम करने का किसी को साहस न होगा— एवं एक वार किसी कारण से कोई बुराई का टीका आप के माथे पर लग गया फिर आप सौ सौ फिकिर भले और नेक नाम बनने की कीजिये समाज उसे कभी अनुमोदन न करेगी— "गतानुगतिको लोकः कुट्टिनी सुपदेशिनीम् । प्रमाणयतिनोधर्मे यथागोघ्नमपिद्विजम्,, । ईश्वर न करे कोई इस प्रवाह मे पड़े जिसे समाज ने तक लिया उसका निस्तार फिर कहीं नहीं है— इस प्रवाह की धारा मे उचित अनुचित ठहरता है और अनुचित उचित होकर ग्रहण कर लिया जाता है वास्तव मे न कुछ उचित है न अनुचित इसकी परख केवल चलन वर्ताव या रिवाज पर निर्भर है—"श्रुतिर्विभिन्ना स्मृतयोपिभिन्ना नैकोमुनिर्यस्य मतंनभिन्नं । धर्मस्यतत्वं निहितं गुहायां महाजनो येनगतः सपन्था—,, हजार २ चेष्टा कीजिये कि हम उस पन्था के पान्थ न बने समाज के वन्धन से मुक्त हो आज़ाद और स्वतंत्र रहकर भी लोगों की अंगुश्त नुमाई से बचे रहें सो कभी संभव नहीं— समाज के अंगुल्या निर्देश से बचने का बहाना मात्र जिसे आप "मारेज करेज,, कहेंगे उसे हम बेहायाई अथवा आंख का पानी ढरक जाना मानेंगे—सुतराम् आप को अधिकार है इसे चाहो आप कौटिल्य समझिये पालिटिक्स का दाँव पेंच मानिये न्याय विरुद्ध कहिये पर हम इसे बुद्धिमानी का काम कभी न मानेंगे कि संसार मे रह इसके प्रवाह के विरुद्ध चल कर ठठोल लोगों

के ठट्ठे मे उड़ समाज की ओर से मूर्ख बनाये जांय इसी सूक्ष्म दर्शिता की असलीयत पर गीता का यह श्रीमुख वाक्य है—"जानन्नपिहिमेधावी जडवल्लोकआचरेत्,,।

रुक्मा बाई

हा? क्या यह वही भारत भूमि है जिस्मे सती शिरोमणि जनक नन्दिनी अनुसूया सावित्री आदि हुई हैं—क्या यह वही देश नहीं जहां की देवाङ्गना सदृश ललनाओं के पवित्र चरित्र सुन २ आज तक लोगों के पाप दूर होती हैं—हा? काल की क्या कराल महिमा है कि आज उसी देश मे रुक्मा बाई सरीखी स्त्रियां सतीत्व स्वरूप निर्मल चन्द्रमा के ग्रास करने को राहु रूप हो उतरीं—हमारे यहां की अनादि काल से यह प्रथा चाली आती है कि कन्या को जिसे बाप माने या दूसरे बड़े लोगों ने हाथ पकड़ा दिया जन्म पर्यन्त उसी के साथ उस कन्या को निर्वाह करना पड़ता है—पति चाहो कैसाही नष्ट हो परन्तु पत्नी उसी की सेवा और आज्ञा पालन को अपना सर्वोत्कृष्ट धर्म मान सदा पति की सेवा मे तत्पर रहती हैं—कहा भी है—वृद्ध रोग वश जड़ धन हीना—अन्ध वधिर क्रोधी अति दीना—ऐसेहु पति कर किय अपमाना नारि पाव यम पुर दुख नाना—एकै धर्म एक व्रतनेमा काय वचन मन पति पद प्रेमा— अस्तु पातिव्रत शिक्षा के इन अन मोल वाक्यों के रहते भी अब यह दशा है कि स्त्रियां अदालतों में खुला खुली अपने पति के विरुद्ध मुकद्दमे दायर करती हैं और मुक्त कण्ठ होकर कहती हैं कि यह हमारा पति नहीं है—इस अंगरेज़ी राज्य की आज़ादगी के प्रभाव से अनेक भांत के अन्याय देखे सुने जाते थे पर ऐसा आज तक नहीं हुआ कि एक हिन्दू महिला जिस्का लोक और शास्त्र रीति अनुसार पाणि ग्रहण किया गया वह अपने पति को पति कर न माने—इस्पर भी अंगरेज़ी गवर्नमेंट यह अत्यन्त ही अनुचित कर रही है जो ऐसे २ मामिलों में हाथ डालती है।

अब यहां पर हमारे विपक्षी लोग कहेंगे यह तो तुम सब सत्य कहते हो किन्तु उन अबलाओं का कुछ सोच नहीं करते जिन्हें उनके गुरुजन बे सोचे समझे मोहवश हो एक अन्धे कुएं मे डाल दिया करते हैं इसपर दूसरा महा अन्याय यह है जो इस बात पर हठ करना कि जिस्के संग माता पिता वा गुरु जनो ने कर दिया उसी के साथ वह यावज्जीवसती होती रहे सब तरह का दुःख भोगे और चूं न करे—इस्के उत्तर में हम यही कहा चाहते हैं कि प्रथम तो जो प्रीति या हित की इच्छा माता पिता की अपनी सन्तति पर होती है वह दूसरे को नहीं होती दूसरे अपने सन्तान के हित अनहित का विचार उनके ऊपर न छोड़ा जाय तो दूसरा कौन बच रहा जो उनका ऐसा हितू है जिस्पर यह भार रक्खा जाय—यदि यह कहो कि उन बालक और बालिकाओं ही पर यह निर्भर रहै कि दोनो अपने मन से चुन लिया करें तो जो बालक या बालिका अभी लड़कपन से निकल युवा अवस्था की तरंगो में लहरें ले रहे हैं उनका विचार या विवेक ऐसा दृढ़ और परिपक्क हो कहां सक्ता है जैसा उनके माबाप का होगा जिन्हो ने संसार को भली भांत देख भाल लिया है और कितनी ऊंचो नीची दशा के परिणाम का अनुभव किये बैठे हैं—जब यह बात है तो निश्चय होगया कि पुत्र अथवा कन्या के विवाह मे जैसा माता पिता की बुद्धि काम दे सक्ती है वैसा उन बालक बालिकाओं की नहीं और जो माबाप भूल करैं तो लड़के उनसे अधिक भूल कर सक्ते हैं—यदि यह कहिये कि वे आप भूल करैं उस्के लिये भुगतैं परन्तु दूसरे की भूल के लिये वे क्यों भुगतैं? वाह क्या अच्छी बात है एक मनुष्य जो यौवन के मद मे उन्मत्त हो बाल्य अवस्था के भोले पन से बे समझ हो उस्पर किसी प्रकार का रोक न रख छोड़ दो चाहो वह कुवें मे गिरे गिर जानेदो परन्तु जो लोग उनके रक्षक या मोहाफिज् हों उनको किसी प्रकार का अधिकार प्राप्त न हो कि उनको अच्छे मार्ग पर चला सकें इसोलिये हमारे प्राचीन लोगों ने उस रीति को प्रचलित न करने दिया जो अब अंगरेजों में प्रचलित है कि विवाह केवल वर और कन्या की पसन्द पर निर्भर रक्खा

गया है और बहुधा विवाह के पहलेही विवाह की सब रीत भांत चुकालेते हैं—हमारे शास्त्र कारों ने यह नियम बनाये थे कि माता पिता अपनी कन्या के लिये योग्य वर ढूंढैं— "काममामरणात्तिष्ठेत् गृहे कन्यर्तुमत्यपि—नत्वेनां संप्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कर्हिचित्„— अर्थात् कन्या ऋतु मती हो कर भी जन्म पर्यन्त बिना व्याही चाहो घर मे बैठी रह जाय पर निर्गुणी वर को कभी न दे—हां इतना अलबत्ता उचित है कि माता पिता के जंचे हुये वर मे कन्या की भी संमति लेली जाय सो बाल्य विवाह की कुप्रथा चलाने वाले का सत्यानाश हो वे बातें हमसे कोसों दूर हो गईं—गन्धर्व विवाह निस्सन्देह केवल वर और कन्या की रज़ामन्दी से होता था परन्तु आर्ष और ब्राह्म विवाह की अपेक्षा गन्धर्व विवाह सर्वथा अधम समझा जाता था—जो कन्या की सम्मति लेने के विषय मे आज्ञा थी वह बाल्य विवाह की कुप्रथा के कारण अब नितान्त निष्फल है जो इस कुप्रथा के दूर करने का प्रयत्न किया जाय और यह आज्ञा देदी जाय कि जब तक वर कन्या अपनी संमति देने के योग्य न हों तब तक विवाह न हो तो अनुचित भी न होगा और न शास्त्र विरुद्धही है सो जब गवर्नमेंट से यह प्रर्थना की गई तब तो सर्कार कानो पर हाथ धर नाह २ कर कोसों भागी और मिस्टर मालावारी का प्रयत्न सब निष्फल गया किन्तु अब विवाह तोड़ने के कानून बनाने को जो सब तरह हमारे शास्त्र के विरुद्ध है और जो संसार को भ्रष्ट करने वाला है उस्के लिये सर्वतो भाव से सर्कार सन्नद्ध है—हमारे यहां तो जो कुछ मुह से कह देते थे जन्म पर्यन्त उस्से नहीं फिरते थे चाहो जो हो—बलिहारी अंगरेज़ों की इनको मुह से कह देना तो कुछ बातही नहो है आराम बड़ी चोज़ है आज हमको एक बात मे सुबीता जान पड़ता है हमने उस्का प्रण कर लिया कल उस्मे कुछ तकलीफ जान पड़ी उस्से फिर गये—यदि ऐसाही है तो विवाह की आवश्यकता क्या है जब तक जिस्का मन जिस्से रुचै तब तक वह उस्के साथ रहे जब उस्को दूसरे के पास सुबीता जान पड़े

तो उसके पास चली जाय और जो विवाह की प्रथा को तोड़ना अभीष्ट नहीं है तो जैसी रीति चली आती है उसको वैसही चली जाने दे—रुक्माबाई को हम इतना दोष नहीं भी देते जितना उसके पति को कि शास्त्र और लोक दोनो के विरुद्ध पति पत्नी के झगड़े को राजा तक ले पहुंचा क्या यह वह न समझा कि राजा का अधिकार मनुष्य के मन पर कुछ नहीं है और जो राजा के दवाने से बे मन रुक्माबाई उसके पास गई भी तो इस्मे क्या सुख हो सक्ता है—भला वे दोनो ना समझ हुये तो गवर्नमेंट को क्या सूझो जो ऐसी बात मे हस्ताक्षेप करती है—यदि सर्कार की यही नीति है कि मानन मान मैं तेरा मेहमान हम यूरोप की प्रथा अवश्य चलावेंहीगे तो क्यों नहीं सीधे से कह देती कि हम तुमको अवश्य यूरोपियन बना डालेंगे जैसा आलमगीर ने सैकड़ों हिन्दुओं को मुसल्मान बना डाला था—तो इस्से भी हमे एक प्रकार का सन्तोष रहता परन्तु यह कैसा ऊपर से तो कहना कि हम तुम्हारे धर्म विषय मे हस्ताक्षेप नहीं करेंगे और असल मे भीतरही भीतर उसकी जड़ काटने की इच्छा रखना— ह—प्र—

।चोज़।

एक वकील ने किसी गवाह से चिढ़ कर कहा "तुम्हारे चिहरे से साफ २ बदमाशी झलकती है,, गवाह ने जवाब दिया "मुझे आज तक खबर न थी कि मेरा चेहरा आईना है,,।

किसी ठठोल का संयोग वश किसी महा कुरूपा स्त्री के साथ ब्याह हो गया पति उसे देख मनोमन कुढ़ता और झुंझलाता था—एक दिन स्त्री ने पूछा प्रियतम आप के बहुत से कुटुम्बी नाते रिश्ते वाले हैं मुझे बतलाओ किनसे घूंघट काढ़ा करूं और किनके सामने मुह खोले रहा करूं—ठठोल ने

उत्तर दिया तू एक मेरे सामने घूँघट काढ़ लिया कर और जिस्को जी चाहे मुंह दिखाली फिर।

। अनुभूत सिद्धान्त ।

दो बात स्मरण रखने की हैं—परमेश्वर और मृत्यु। दो बात भूल जाने की हैं—दूसरों की बुराई और अपनी भलाई दूसरों के साथ। परमेश्वर को युक्तियों से मत ढूँढो किन्तु विश्वास से। अपने दोषों को पहचानना सिद्धि की सीढ़ी है। दुखी हैं वे जिनका विश्वास कच्चा है। शोच है उनका जो अपने तर्क के बल से ईश्वर को पाना चाहते हैं। कच्चे आस्तिकों से नास्तिक अच्छे कि उनके प्राण संशय में तो नहीं पड़े हैं। क्या उनसे कोई बुराई हो सक्ती है जो २४ घंटे में एक बार भी स्मरण कर लेते हैं कि एक दिन अवश्य मरना है। ईश्वर के पाने का प्रेमही परिस्कृत पथ है। यथाधिकार प्रेम की बेल बढ़ाओ प्रेम के न रहनेही से भारत आरत दशा में आ रहा है। ये किसी बुद्धिमान् के अनुभूत सिद्धान्त हैं इनको मनन करता रहै तो कभी क्लेशित न हो।

। सर्कार की मुसल्मानो पर अनुचित कृपा ।

हम नहीं समझते सर्कार मुसल्मानो पर अनुचित कृपा हर एक बातों में क्यों किया करती है—हाल में अलीगढ़ के सैयद साहब ने सर्कार को मुसल्मानो की असंपन्नता और उन्नति में हिन्दुओं की अपेक्षा पीछे हटे हुये प्रगट कर सर्कार से मुसल्मान छात्रों को विशेष छात्र वृत्ति "स्कालरशिप" के लिये

निवेदन किया है और कदाचित् सर्कार ने उसे मंजूर भी कर लेगी अब जो मुसल्मान कालिजों मे पढ़ कर डिगरी पास किया चाहेंगे उन्हे हिन्दुओं की अपेक्षा विशेष छात्र वृत्ति मिला करेगी—सैयद साहब का कथन है मुसल्मानों पर विशेष कृपा के कई एक हेतुओं मे एक यह भी है कि अंगरेजी राज्य मे मुसल्मान प्रजा बड़ी दुखी और क्लेशित है अर्थात् जिस्के तात्पर्य यही हुये कि जो हुकूमत मुसल्मानो को हम लोगों पर पहले हासिल थी सो न रह गई अब वे और हम दोनो एक से हो गये—आज तक ऐसी बात नहीं सुनी गई थी कि जब किसी देश की प्रजा किसी विदेशी के आधीन हो जाय तो यह कहे कि हमको बादशाहत से तो निकाल दिया किन्तु और प्रजाओं से हमको बड़ा बनाये रहो—सैयद साहब अपनी गूढ़ पालिसी केवल इस बात को कायम रखना चाहते हैं कि मुसल्मानो की बादशाहत छुटने पर भी बादशाहत की बू अपनी जाति के लोगों मे लगाये रक्खें यदि ऐसा है तो कल्ह को बद्धुआ वालों के साथ भी यही रियायत सर्कार को करनी पड़ेगी फिर जो सैयद साहब का दिली मतलब अपने जाति वालों मे बादशाहत की बू कायम रखने का नहीं है तो अंगरेजी राज्य मे मुसल्मानो के क्लेशित होने का क्या कारण है—अस्तु जो हो अब हम यह पूछा चाहते हैं कि डइरे-क्टर साहब को इतना साहस क्योंकर हो सक्ता है कि हम लोगों का रुपया ऐसे २ खाम खयाल के लोगों की चिट्ठी पर खरच कर दिया करैं—हम लोग सर्कार को कर इस लिये देते हैं कि वह रुपया हम सबों की रक्षा और उन्नति मे एकसा व्यय किया जाय न कि एक श्रेणी के लोगों को उस रुपये से विशेष लाभ पहुंचे दूसरे श्रेणी के लोग बैठे २ मुह ताका करैं छिः इस्से अधिक अन्याय और क्या होगा? आबादी के हिसाब से भी देखा जाय तो मुसल्मान प्रजा हिन्दुओं का छठवां भाग हैं तो राजकीय कर भी जितना हिन्दू प्रजा से सर्कार के खज़ाने मे जाता है उतना मुसल्मान प्रजा से नहीं मिलता उसी औसत से सर्कार की हर एक बातों मे पहले छ हिन्दू लाभ उठाने वाले हो लें तो एक मुसल्मान हो खैर यहां बराबर का वर्ताव किया

जाता है तब भी हम लोग सर्कार को कभी दोष नहीं देते पर जब देखते हैं एक को तो आपने स्वर्ग मे चढ़ा दिया दूसरे को पाताल मे झोंके देते हैं तो क्यों न कुढ़न पैदा हो—सैयद साहब का बयान है कि हिन्दुओं की अपेक्षा मुसल्मान अधिक दरिद्र और अनुपपन्न हैं यह भी सर्वथा झूठ है क्योंकि यह बात नित्य देखने मे आती है कि मुसल्मान कितना रुपया भोग लिप्सा और ऐयाशी मे अपव्यय करते हैं और इस भोग लिप्सा मे पड़ उनके बड़े २ घराने बरबाद हो गये यहां तक कि लखनऊ की इतनी बड़ी रियासत इसी मे सत्यानाश हो गई—ऐसी २ फजूल खर्चीं के लिये तो रुपया है अपने लड़के बालों को उच्च शिक्षा देने मे गरीब हैं सर्कार जब इनको सहायता करे तो इनको उच्च शिक्षा मिले—फिर सर्कार को तो इस प्रकार की उतरा चढ़ी मंजूर है जिस्मे हिन्दू और मुसल्मानो मे ऐक्य न होने पावे-सैयद साहब पहले अपने लोगों को अच्छी चाल चलन सिखावें तब उन्हे शिक्षा भी देने का हौसिला करैं हमारे बहुतेरे हिन्दू भाई भी जो बहुधा भोग लोलुप और ऐयाश होगये तो इन्ही मुसल्मानोही के घनिष्ट संबन्ध के कारण—अगर बड़े २ ओहदेदार मुसल्मानो के घर का हाल लिखा जाय तो यह प्रगट हो सक्ता है कि उच्च शिक्षा और ऊंचा पद पाने पर भी इनकी विलासी प्रकृति घटने की कौन कहे अधिक बढ़ गई है वरन अंगरेज़ी फेशन और अंगरेज़ी शिक्षा की वार्निश उस्पर हो जाने से मानो उस्मे गोट सी लगा दी गई इस लिये पहले अलीगढ़ के संशोधक महाशय अपने मुसल्मान भाइयों को मेहनत की आदत दिलावें और उन्मे भोग लिप्सा कम करैं तब उनके लिये उच्च शिक्षा का भी प्रयत्न करैंगे तो अनुचित न समझा जायगा नहीं तो उन्हे आगे बढ़ाने का हज़ार २ उपाय किया जायगा सब विफल होगा।

विकिरण

पदार्थों के उस गुण को जिस से उन की गरमी निकल कर उन के बाहर जा रहती है विकिरण (radiation) कहते हैं। यदि तपे हुए लोहे का कोई टुकड़ा ठंढा करने के लिये हवा में रक्खा जाय तो जिस तरह सूरज और दिये

से प्रकाश निकल कर चारो ओर फैलता है उसी प्रकार लोहे में से भी गरमी निकल कर चारो तरफ़ फैलने लगेगी। पदार्थविद्या जाननेवाले पंडितों ने अनुमान किया है कि गरमी प्रति सेकेन्ड ३३८०० कोस जाती है। गरमी फैलने के समय जितनी दूर जाती है उतना ही उस का तेज घटता जाता है, परन्तु जिस पदार्थ से गरमी निकलती है उस से एक हाथ दूर पर जितना उस का तेज रहता है दो हाथ पर उस का आधा और तीन हाथ पर तिहाई नहीं रहता, बरन एक हाथ की दूरी पर जितना तेज रहता है दो हाथ पर उस का चौथाई, तीन हाथ पर उस का नवां हिस्सा, और चार हाथ पर सोलहवाँ हिस्सा रहता है। इन का नियम यह है कि दूरी का बर्ग करने से जो अंक मिले उतने की एक भाग गरमी उस जगह पर रहेगी।

सब पदार्थ की विकिरण शक्ति बराबर नहीं होती। जिस चीज़ में बहुत से छेद रहते हैं वा जिस का तल ऊंचा नीचा होता है उस की विकिरण शक्ति चिकने धात से अधिक होती है। लाह की विकिरण शक्ति सोना, चांदी और तांबे से अठगुनी है।

जानना चाहिये कि इसी विकिरण शक्ति के कारण ओस पड़ती है। सूरज जब अस्त हो जाता है तब पृथ्वी में की समाई हुई गरमी धीरे २ बाहर होकर हवा में ऊपर जाती है। इस के कारण भूमि और तब उस के पास की हवा ठंढी हो जाती है, और अधिक सरदी से भूमि के निकट की भाफ जम कर ओस बन जाती है। जैसा ऊपर लिख चुके हैं सब पदार्थों में विकिरण शक्ति बराबर नहीं है, इसी लिये सब चीज़ पर ओस बराबर नहीं जमती। जिस बस्तु की विकिरण शक्ति अधिक है उस की गरमी झट निकल जाती है, और वह ठंढी हो जाती है। इस कारण उस चीज़ के चारो ओर जो भाफ का समूह है वह जम कर ओस की बूंद के रूप में उस बस्तु पर देख पड़ता है। जिस बस्तु की विकिरण शक्ति कम है वह वैसी ठंढी नहीं होती और इसी लिये उस पर ओस भी कम जमती है। धात से भेंड़ के रोएं

की विकिरण शक्ति अधिक है, इसलिये रात को अगर भेंड़ का रोआं और धात का कोई बरतन एक जगह रक्खे जायं तो सबेरे देखने में आवेगा कि रोएं पर बहुत सी ओस जमी है पर बरतन पर एक बूंद भी हो या नहो। ऐसा भी देखने में आता है कि एक ही जगह एक पेड़ पर तो ओस पड़ी है पर उस के पास के दूसरे पेड़ पर एक बूंद नाम को भी नहीं। इन पेड़ों को विकिरण शक्ति कमती बढ़ती रहना ही इस का कारण समझना चाहिये।

अगर किसी प्रकार के रोक से ज़मीन को गरमी न निकल सके तो इस के पास की हवा ठंढी नहीं होती और इसी कारण ओस भी नहीं बटुरती। जाड़े के ऋतु में जिस रात को बदली रहती है उस रात को पृथ्वी की गरमी बादल फाड़ कर नहीं निकल जा सकती और इसी लिये पृथ्वी के पास की हवा ठंढी न हो सकने के कारण जाड़ा भी कम लगता है और ओस भी नहीं जमती। इसी तरह जहां पेड़ की छाया का दूसरे प्रकार की आड़ रहती है वहां भी ओस नहीं जम सकती। यह भी लोगों ने देखा होगा कि जिस रात को कड़ी हवा रहती है उस रात को और चीज़ की कौन कहे घास पर भी जिस की विकिरण शक्ति बहुत है, ओस कम जमती है। इस का कारण यह है कि यद्यपि घास के पास की हवा ठंढी होती है तौ भी बयार के बहने से चारो ओर की गरम हवा आकर उस को बहुत ठंढी नहीं होने देती और इसी लिये ओस भी कम जमती है। जिस रात को हवा और बदली दोनों हों उस रात को कुछ भी ओस नहीं जमेगी। मिट्टी और कंकड़ से घास की विकिरण शक्ति बहुत अधिक है इसी लिये उन पर ओस भी बहुत जमती है। यह सब नियम ईश्वर ने बिना युक्ति के नहीं बनाए हैं। देखो अनाज के पौधों को बचाने और बढ़ाने के लिये बहुत सी ओस चाहिये और वह इसी नियम के द्वारा वहां अधिक जमती भी है॥ का—प

मृतहिन्दी को जीवनदान मिलने का क्या उपाय है॥

। हिन्दुस्तान से ।

इन दिनों हमारे देश के लोग तीन हिस्सों में बटे हुये हैं—पूर्ण शिक्षित, शिक्षित अशिक्षित अथवा अर्द्ध शिक्षित–इन्मे पूर्ण शिक्षित वे हैं जो बड़े से बड़ा इम्तिहान पासकर, पूर्ण प्रज्ञ अथवा पूर्ण विद्वान, फजीलतकी पगड़ी बांधे, इल्म के जोर में भरे हुये अपने दहिने बांये ऊपर नीचे चारो दिशा में उठते बैठते खाते पीते सेते जागते सब समय अंगरेजीहो अंगरेजी पुकार रहे हैं, उनका परम पुरुषार्थ, उनकी योग्यता का सर्वस्व, अथवा उनकी सभ्यता उनके उद्योग और चेष्टा का अन्तिम छोर इसी में है कि हिन्दुस्तानी पन की बू हमसे किसी प्रकार दूर हो, जब तक इसका लेश मात्र भी बना रहेगा तब तक हमारा कल्याण सर्वथा असम्भव है अतएव उनकी बोल चाल रहन सहन, रीति व्योहार, पहनाव उढ़ाव सब कुछ अंगरेजी होगया, उनका दृढ़ सिद्धान्त यही है कि हमारी मातृभाषा अंगरेजीही और मत हमारा नेचर वाद अवश्य होना चाहिये, बिना इसके हमारा कथमपि श्रेय नहीं है—पाठक जन अब आपके मन में ऐसों की तस्वीर भरपूर उतर आई होगी तो अब और हम किसे खोजने जांय आपही हमारे सर पंच बनिये इस दशा में कभी सम्भव है कि दीन हिन्दी का उद्धार किसी भांति हो सकेगा हम तो यही आशा कर रहे हैं और ईश्वर करे जल्द वह दिन आवे कि इस नाखांदी हिन्दी के तिलशः खण्ड २ कर दिये जांय और यह छिन्न भिन्न हो जड़ पेड़ से उखाड़ कर फेंक दीजाय जिसमें हमारे उच्च शिक्षित पूर्ण विद्वानों का मनोरथ सफल हो—अब दूसरी श्रेणी के लोगों को लीजिये, इन अधकचरों को आप अर्द्ध जरती न्याय के अन्तर्गत मानिये यथा "अर्द्धजरत्यासुखमेव कामयते नान्यांगानि„ अर्थात् "अर्द्धजरती„ स्त्री जो और सब अंगों से बुढ़ाय गई पर

मुख में यौवन की झलक जान पड़ती है तो कामी जन उसके मुख ही की शोभा पर अपने को न्यौछावर किये हुये बार २ पानी पीते हैं, अथवा इसे छोड़ दीजिये इस अंगरेज़ी कहावत में इनका समावेश क्यों न कीजिये— "Jack of all trades master of none" रोटी कमाय पेट भर लेने को थोड़ा २ सब सूंघ रक्खा है पर पूरे एक में भी नहीं—"गुरोर्गिरः पंचदिनान्यधीत्य वेदान्तशास्त्राणि दिनद्वयंच । अमीसमाघ्राय चतर्कवादा न्समागतः कुक्कुटमिश्र पादाः„ इनमें भी सब हिन्दीही के रसिक और भक्त हों सो भी नहीं वल्की-यांश इन में के मोलवी साहब को अपना सहमान्य बनाये बैठे हैं, सभ्य समाज में शुस्ता उर्दू के मुकाबिले हिन्दी के भद्दे शब्द मुंह से निकल जाना मानों प्रायश्चित्त के भागी होना है इनके द्वारा हिन्दी का भाण्डार बढ़े सो तो होना नहीं, क्योंकि इन बेचारों में उतनी योग्यता कहां जो बङ्ग भाषा के समान अंगरेज़ी तथा अन्य भाषाओं के सद्ग्रन्थ और सुप्रसिद्ध ग्रन्थ कर्त्ता और लेखकों के लेख का अनुवाद कर सकें, हां ऐसे लोग नागरी के पूर्ण हितैषी अलबत्ता हैं, जहां तक उनका किया हो सकता है लेख और धन दोनों से इसकी वृद्धि में तत्पर हैं—अब अशिक्षित या अर्द्ध शिक्षितों की तीसरी श्रेणी को लीजिये जिनमें लगभग सबके सब मुड़िया अक्षर महाजनी के दोस्त रामागती वाले हैं, तुलसीकृत रामायण का पढ़ लेना मात्र मानों उनके वित्त के बाहर है, धन ऐसे लोगों के पास बहुत है; फजूलख़र्ची में चाहे सब का सब फूंक बैठें, पर उस धन से कहो कभी हिन्दी का कुछ उपकार साधन हो कभी सम्भव नहीं—"तद्भाग्यंधनस्यैव यन्नाश्रयतिसज्जनं„ उनके धन का कहां ऐसा भाग्य कि हिन्दी के सुलेखक विद्वानों के पास जाय, उसे तो कुमार्ग में अपव्यय होना बदा है फिर जब यह दशा है कि तुलसीकृत रामायण का पढ़ लेनाही मात्र उनकी विद्वत्ता की चरम सीमा है तब हम लोगों के गूढ़ लेखों का मर्म्म उनके मन में क्योंकर आसकता है उनको जैसा "प्रभु पूरन ब्रह्म अखण्डा„ अथवा बारहमासे या लावनी ठुमरी में मनोरंजन होगा वैसा हिन्दुस्तान और विलायत के राजनैतिक विचारों के मर्म्म पर

कथोपकथन कभी प्रीति उत्पादक हो सकेगा, ? मैं समझता हूं कभी नहीं— तो अब आपही बतलाइये हिन्दी के लिये जीवनदान मिलने की कौन उपाय है ? अस्तु, इन तीनों कोटि के मनुष्यों से निरास हो अब कोरे पण्डितों को लीजिये क्योंकि ये तो संस्कृत के पण्डित हैं तो हिन्दी तो संस्कृतही की अंग लालिता कन्या है—सो इन पण्डितों का यह हाल है कि दो लड़ांकू मेढ़ों की तरह शुष्कवाद में कहिये वादी का दिमाग़ चाट डालें, पर लिखने को कहिये तो एक पंक्ति भी शुद्ध न लिख सकेंगे, बरन हिन्दी का लिखना पढ़ना अपनी अप्रतिष्ठा मानते हैं इन्हें हम पण्डित कहैं कि निपट मूर्ख उन रामागतो वालों से भी गये बीते समझें—अब बचे हमारे कायस्थ भाई जिनसे अनादि काल से कुछ न कुछ विद्या का संपर्क चला आया है, पर बाल्य अवस्थाही से यवनी उर्दू फारसी के अनुशीलन से इन को समाज को समाज महा म्लेच्छ होगई, इन से हिन्दी का उपकार कब होना है — ये लोग क्षत्री बनते हैं हिन्दुओं में सब से श्रेष्ठ और अति प्राचीन अपने को मानते हैं पर हिन्दूपन की बुनियाद हिन्दी का मूड़ काटने को तैयार हैं, दश बर्ष से कायस्थ समाचार निकलता है, तथा उसी के ढङ्ग पर हाल में खत्री हितकारी निकलने लगा है, परन्तु दोनों उर्दू में, उन्हें हिन्दीमें करने की चेष्टा आजतक किसी ने न किया धिक् इसे हम खत्री हितकारी कहैं या खत्री अपकारी— जिस बात में केवल समाज अथवा धर्म्म का सम्बन्ध हो उस में भी हिन्दी का प्रवेश न होने पावे तो उन्हें क्योंकर हिन्दू कहने को हिम्मत हमारी हो अस्तु इधर से भी हमैं नैराश्य है—कचहरियों में इस का प्रवेश होकर यह राज भाषा कीजाय कभी मुमकिन नहीं चाहो आप हज़ार बर्ष तक सिर पटकते रहिये—तब इस मृत हिन्दी के पुनरुज्जीवन की कौन आशा है- केवल इतनीही कि हम लोग जो हिन्दी के लेखक बनने का अभिमान रखते हैं बेहयाई से अपना शुष्क रुधिर चुसाय २ चाहो इसे जीवित रक्खें तो यह कण्ठ गत प्राण होनेपर भी जीतीही रहैगी ॥

। सुख और दुःख ।

संसार मे विरले ऐसे मनुष्य होंगे जो दुःख की निबृत्ति और सुख की चाह न रखते हों और जो संसारिक बिषय बासना के दास न हुये हों — अंगरेज़ी मे किसी कवि का कथन है "Bring me the man who is not the passions slave" यह बात निराली है कि किसी को किसी एक बस्तु मे सुख मिलता है तो कोई दूसराही वस्तु अपने लिये सुख का साधन मानता है — प्राणी मात्रको एकही वस्तु या एकही बिषय सुखद नहीँ होते गोबरेले को अतर सुंघाने से मरजाता है — "भिन्नरुचिर्हिलोकः,, प्रायः देखने मे आता है जो वस्तु एक को सुखदायी है वही दूसरे को दुःख देनेवाली होती है — मनुष्य की प्रकृति भिन्न २ है तो उनकी सुख लिप्सा भी जोपृथक् २ हुई तब इसमे आश्चर्य क्या है— एक को विषयास्वाद सुख का हेतु है दूसरा उसमे हेय बुद्धि और जैसे होसके उस्का त्याग सुखका हेतु मानता है तीसरे को इन दोनो से कुछ सरोकार नहीँ वह केवल परिश्रम शील होनाही सुख समझता है — चौथा आलस्य मे सब सुख का अनुभव करता है चाहो उस्को कैसीही हानिहो आलस्य का त्याग उस्के लिये महा दुखदायी है उदार मनुष्य को खरचने खिलाने लेने देने मे असीम सुख मिलता है बद्ध मुष्टि कंजूस की समझ मे जो सुख की अन्तिम सीमा हांव हांव कर रुपया बटोरने मे है वह इन्द्रासन के लाभ मे भी कदाचित् नहो

इत्यादि — जो लोग उपदेशक बन दूसरों को सुख का मार्ग सुझाते हैं वे भी अपनीही प्रकृति के अनुकूल वस्तु मे सुख बतलाते हैं—जिस वस्तु को हम दुःखद मान उस्से घिनाते हैं वह भी प्राकृतिक नियम के अनुसार स्टष्टि मे बड़े ही काम की है तो निश्चय हुआ वास्तव मे सुख दुःख का अस्तित्व नितान्त कल्पित है मनुष्य का मन जिस भाव से जिसे ग्रहण करता है उसी भावना का नाम सुख अथवा दुःख है — यह तो गंभीर बुद्धि वालों का काम न समझा जायगा कि थोड़ा सा भी अपने प्रतिकूल किसी बस्तु या प्रतिकूल किसी दशा के आपड़ने पर विकल हो धैर्य को पास फटकने का अवसर न देना और उस व्याकुली मे भाग्य अदृष्ट और ईश्वर पर सम्पूर्ण दोष आरोपित करना हम कहते हैं यदि अदृष्ट या ईश्वर का यह सब दोष है तो उसके प्राकृतिक नियम सब किसलिये रक्खे गये हैं — और प्रकृति देवी की विश्व विमोहिनी अपरि मित व्यापकता मे सब समीचीन और अच्छाही अच्छा है निष्प्रयोजन तो कुछ हई नहीं ज्ञानातीत होने के कारण उनका मर्म हमारी समझ मे नहीं आता तो यह हमारे ज्ञान शक्ति का दोष है ईश्वर को सर्वज्ञ सर्व नियन्ता सर्व व्यापक आदि लड़ी के लड़ी विशेषण युक्त अपना प्रभु मान उस्मे दोष लगाना कैसी अदूर दर्शिता और मूर्खता है — इस्से सुख दुख मे सम भावका होनाही परम सुख या सच्चा सुख है जो योग सिद्धि का प्रधान अंग और शान्ति लाभ का एक मात्र सहायक है— ह प्र—

अंगरेज़ और हिन्दुस्तानी ।

अंगरेज़ जैसा महारानी की प्रजा वैसाही हिन्दुस्तानी भी हैं—पर उनकी और हमारी दशा में आकाश पाताल स्वर्ग नरक का अन्तर पाया जाता है—विलायत में राजकीय प्रबन्ध की प्रणाली के कारण किसी छोटे से छोटे दरजे के मनुष्य पर यदि किसी प्रकार का अत्याचार किया जाय तो देश का देश उस ओर टूट पड़ता है और उसका संशोधन तत्क्षण करनाही पड़ता है—जंटमेजिसटरेट को कौन गिनती है प्रधान २ मंत्री भी कोई काम प्रजा के विरुद्ध अपने मन से किया चाहै तो "पबलिक„ सर्व साधारण उनके प्राण का गाहक होजाता है अन्त को उसे अपने मंत्रि पद से इसतीफाही देना पड़ता है— वहीं हम लोग कितनाही फूंक २ पांव रक्खें छोटे से छोटे हुज़ूर लोगों के खिलाफ ज़रा भी किसी बात मे स्वच्छन्दता प्रगट किया चाहै कि उसी दम दो कौड़ी के कर दिये जांय अपना सगे से सगा मित्र वैरी बन जाय—अमीर से अमीर पर चाहो जो अत्याचार हो हम लोगों मे इतनी स्वच्छन्दता और साहसनही है कि चूं तक सकैं—चिरकाल से पराधीनता मे पड़ हजारों लात खाते २ गरमी और जोश का कहीं लेश भी बाकी न बचा—"कोउ नृप होहि हमें का हानी„ वाली कहावत का जन्म इसी देश का है विलायत अथवा और २ देश जिनके रग २ मे स्वच्छन्दता भरी है वे—"चेरी छोड़ न होउब रानी„ पर ठट्ठ मार हंसते हैं और हमारी निर्जीवता पर तर्स खाते हैं—हमारे हुज़ूर लोग चाहो जो अत्याचार करैं हम उन्हे देवता समझ पूजतेही जांय—डाली—नज़र मुफ़्त मे सवारी और बंगला न दीजिये खैरखाह सर्कार कभी न समझे जाइये चाहो आप घर बैठे महारणी की भक्ति के उद्गार से पूरित हो उनके नाम का माला जपते रहिये और उनकी प्रजा अपने देश वान्धवों के पूरे हितैषी क्यों न बनते रहिये—यद्यपि महारानी की प्रतिज्ञा है कि हमारी दृष्टि मे जित और जेता दोनो बराबर हैं किन्तु बर्ताव मे इन दोनो के बीच जो बड़ी भारी खाढ़ी पड़गई है उसका मुह नित २

चौड़ा चोता जाता है ज्यों २ देर होती है त्यौं २ इंडिया गवर्नमेंट माहाराणी की उस प्रतिज्ञा को विफल करने मे सफलोद्यम होती जाती है—थोड़ा सोचनेही से मालूम हो सक्ता है कि वह गदर का समय था हिन्दुस्तान की चन मन प्रजा का मनोरंजन और लड़कों को भांत बहलाने की यह सब ततवोर थी—राजनैतिक मर्म के जानने मे नितान्त मूर्ख यह हम लोगों की सिधाई का दोष है कि जो बात निरे फुसलाने की थी उसे वास्तविक मान बैठे ।

हम लोगों को अपना सुख बढ़ाने और दुःख दूर करने का अधिकार अपने हाथ मे नहीं है इस्से बढ़कर पछतावे की बात और क्या हो सक्ती है-हिन्दुस्तान की हुकूमत हिन्दूस्तानियोंही के हाथ मे रहे यह जो प्रस्ताव महाराणी ने किया था जब तक इस्का पूरा २ वर्ताव न किया जायगा तब तक हिन्दुस्तान के दिन फिरने की कोई संभावना नहीं है—मुष्टि मेय थोड़े से अंगरेजों की खातिरदारी के लिये २४ करोड़ प्रजा का मन दुखी किया जाय इसो का नाम ब्रिटिश जाति का औदार्य है? यह हिन्दुस्तानही के जल वायु मे सहिष्णुता इस परम सीमा को समाई हुई है कि घाव पर घाव सहकर भी दास्य भाव से विमुख नहीं होती कोई दूसरा देश होता तो अब तक कभी इस बन्धन को तोड़ भरपूर इस्का प्रतीकार कर गुज़रता अंगरेजों का यह अहो भाग्य कहना चाहिये कि उनका सरोकार ऐसी जाति के लोगों से आपड़ा जिनमे राज भक्ति और सिधाई का अन्त है—हमारा भोंदूपन उनकी चालांकी हमारी सिधाई उधर की ढिठाई यहां की शालीनता वहां की बेहयाई चिरकाल तक स्मरण के योग्य रहेगी—हमारी जड़ प्रकृति और हमारी दुःखित दशा पर कितने उदार मना अंगरेज़ भी सहानुभूति और पछतावा प्रगट करते हैं तब और लोग तो कियाही चहें ।

। इलाहाबाद युनिवरसिटी के फेलो मे । त्रुटि ॥

मिस्टर ग्रिफिथ मिस्टर घोस बनारस के मथुरा प्रसाद मिश्र सरीखे विद्वान् नजानिये क्यों छोड़ दिये गये—हाईकोर्ट के वकीलों मे सिवाय एक के क्या कोई भी इस योग्यता के न थे—राजा रामपालसिंह क्या योग्यता और देशहितैषिता मे किसी से कम हैं क्या उपाधिधारी कृत्रिम कई एक राजाओं से ये रजाई मे किसी से पीछे हटे हैं—प्रयाग मध्य हिन्दू समाज के सुयोग्य प्रेसिडेंट पं—लक्ष्मीनारायण व्यास की इतनी योग्यता न समझीगई कि इस अधिकार पर नियत किये जाते — हमारे यहां के एडिटरों मे कोई इस लियाकत के न ठहरे छिः—जिन्हे सैयां चाहे वही सोहागिन जो लोग हुये हैं उनमे बहुतों के दोष निकालने मे सिवाय बिगाड़ के बनाव की कौन सूरत है बात इतनीही है कि वे कर्मचारी हाकिमो के कृपा पात्र हैं-जिनका हमने नाम गिनाया वे शुष्क देशहितैषी केवल प्रजाका हितचाहने वाले हैं क्यों किये जांय ।

। श्रीमान् सर आलफ्रेड लायल का प्रस्थान ।

पांच वर्ष और कुछ महीने के उपरान्त श्री मान् अब हमसे विदा होते हैं— गुण की गरिमा स्थापित करने में जहां बहुत सी बातें मानी गई हैं वहां "दोषाभावोगुणः„ दोष का

अभावही गुण यह भी एक सिद्धान्त है—श्री मान की करतूत से यदि हमारे देश के लिये कोई बड़ी भलाई की बात नहीं बन पड़ी तो ऐसी कोई बुराई भी इन्हो ने नहीं किया शान्त शील फिलोसोफी संबन्धी विचार मे अहर्निश तत्पर रह जैसे आये वेसे चलेजा रहेहैं—एक दूसरी बात यह भी है कि इनको कुछ अपने मन से करने का अवसर कहां मिला पहले तो यही कि जो बड़े विद्वान और मौलाना हैं उनको मुल्की इन्तिजाम का खट २ रुचता कब है दूसरे यह कि लार्डरिपन महोदय परम साधु प्रकृति के थे उनके शासन काल मे ये महाशय भी उसी ढंग पर न चलते तो निभती कैसे लार्ड डफरिन की कुटिल पालिसी इन पर अधिक नहीं व्यापी यह हम लोगों के लिये बड़े हर्ष की बात है—लार्ड डफरिन महोदय का पक्षपात मुसल्मानो की ओर देख ये भी कुछ २ उसी ओर झुक चले—श्री मान् बड़े पक्के सिविलियन हुई हैं लेडसेन केश इसकी साक्षी है अस्तु चलते २ अपनी राज धानी इलाहाबाद मे युनिवरसिटी कर चले इस लिये ये चिरस्म रणीयरहेंगे ईश्वर इनकी याचा शुभ और मंगल मयी करे।

रानी त्रिपुरसुन्दरी, ———

३ परिच्छेद।

युद्दचेच

नेपाल की पर्वत स्थली के पश्चिमी सीमा पर युद चेच नाम की एक छोटी सी बस्ती थी यह बहुत बसी हुई नथी परन्तु जो लोग इसमे रहते थे वे सदा प्रसन्न मन निरामय हृष्ट पुष्ट और सन्तुष्ट चित्त थे जिनके दयार्द्र सरल की

मल हृदय मे कपट और माया की छाया भी नहीं आई थी—जो अपने निष्कलङ्क अति दीर्घ जीवन मे भी प्रिय वियोग जनित दुःख किसे कहते हैं जानतेही न थे—जिनके डील डौल मे एक प्रकार का ऐसा अकृत्रिम सुहावना पन झलकता था जिस्का संपादन आधुनिक फैशन की बनावट और सजावट के बाहर था—जो अपने गाढ़े परिश्रम का फल कृषि की संपूर्ण उपज का छठवा भाग राजकर समझ बिना मांगे अपने आप राजा को दे आते थे और उस्की भुजा की छांह मे निर्द्वन्दसदा सुख की नींद सोते थे—उस ठौर का जल वायु कुछ ऐसा नीरोग निर्मल और स्वच्छथा कुछ इस कारण से भी कि नगर निवास जन्य लंपटता व्यभिचार आदि अनेक दोष दूषित कलुषित जीवन का स्वाद वे लोग नहीं चीखे थे इस कारण इन दिनो के सुसभ्य नागरिकों के समान पीले आम की सी पीतिमा उनके सर्वाङ्ग मे नही छाई हुई थी—सब के सब हृष्ट काय दृढाङ्ग उद्यमशील और परिश्रमी थे जिनके देह की प्रभा युद्ध मे उत्साह की साक्षी दे रही थी—नित्य नई व्यूह रचना और कृत्रिम युद्ध के निरन्तर अभ्यास के कारण उस वस्ती का नामही युद्ध क्षेत्र पड़ गया था—यद्यपि यह बस्ती बहुत घनी बसी न थी पर जो वस्तु मनुष्य के सुख और आराम के लिये उपयोगी है उनके बनाने या उत्पादन करने वाले सब प्रकार के मनुष्य वहां बसते थे खेतिहारों की संख्या उन्मे सब से अधिक थी आस पास की पृथ्वी अधिक उपजाऊ होने के कारण थोड़े ही परिश्रम मे मनमाना अन्न और दूसरी वस्तु उपजती थी—अकाल अथवा मंहगी को यहां के लोग जानते ही न थे प्रत्येक गृहस्थ के घर इतना अन्न संचय था कि दस वर्ष तक बैठे २ खाया करैं तब भी न चुकै—इस बहुतात के होने पर वे लोग आलसी और निरुद्यमी होना अपने लिये बड़ी लज्जा मानते थे राजकीय अत्याचार से सर्वथा अबूझ थे ही ब्राह्मण क्षत्री से लेकर अंत्यज पर्यन्त कोई ऐसा न था जिसने युद्ध की शिक्षा न पाई हो—इस बस्ती के पूर्व और पश्चिम की ओर दो ऊंचे २ पहाड़ों के शिखर थे जिनपर चढ़ना मनुष्यों की कौन कहे पशु पक्षी के लिये भी दुर्घट था—दक्षिण ओर एक खुला हुआ मैदान

नीचे के देशों मे आने जाने का मानो मार्गसा था—पूर्व शिखर से पश्चिम शिखर तक एक बड़ी लम्बी मिट्टी की दीवार ३२ हाथ ऊंची और १२ हाथ मोटी बनी हुई थी इस्के आगे एक खाई २० हाथ चौड़ी और ३० हाथ गहरी खुदी थी जिस्मे पहाड़ी झरनों का पानी बारहो मास भरा रहता था—उत्तर की ओर इस बस्ती के एक बड़ा भारी बन था जो कोस दो कोस तक तो अति रमणीक और सोहवना था परन्तु इस्के आगे ऐसा घोर और गम्भिन होता चला गया कि उस्मे आगे जाने की किसी को सामर्थ्य न था और इसी कारण कोई नहीं जानता था कि इस्का अन्त कहां है—यह वही बस्ती थी जहां रणधीरसिंह धर्म राज्य करता था उस्की सब प्रजाही उस्की सेना परिच्छद थी जिनकी कथा मात्र कान मे पड़ने से शत्रुओं का हृदय कांपता था—

रणधीर तो आज अपनी गढ़ी मे है नहीं परन्तु उस्के पीछे उस्का चचेरा भाई अजेय उस्के स्थान मे सब काम करता है—मुसल्मानो की चढ़ाई का समाचार पहलेही गढ़ी में पहुंच चुका था—सब लोग अपना २ काम काज छोड़ रात दिन हाथियार बांधे गढ़ी में बने रहते थे—अजेय ने सब सेना को चार भाग मे बांट रक्खा था एक धीर ध्वज के आधिपत्य मे धुस की रक्षा कररही थी—दूसरा भाग सेना का बलवन्त के अधिकार मे कोश और शस्त्रागार की चौकसी कर रहाथा—तीसरा भाग उस गहनवन की रखवाली कर रहा था जिस्मे शत्रु का दल वहां आकर न छिप रहै चौथा हिस्सा सेना का उस पहाड़ी मार्ग पर तैनात था जिस्का हाल हम ऊपर लिख आये हैं—

आधीरात के ऊपर जबकि सबलोग कमर बांधे हुये थोड़ा आराम करने को अपने २ डेरों में सोये हुये थे केवल थोड़े से पहरुये पहरा देरहे थे कि मुसल्मानों की फौज गढ़ी के धुस से २०० गज की दूरी पर देख पड़ी पर वे लोग ऐसा धीरे २ आरहेथे कि घोड़ों की टाप तक का शब्द नही सुनाई देता था—चारो ओर सूची भेद्य अन्धकार छाया हुआ था रात को धोस और कोहिरे से मशाल और लालटेनों की रोशनी महामन्द झिलमिलाती

सी थी किन्तु दैव का दाहिने होना इसी का नाम है अकस्मात् मुसलमानो की अश्वारोही सेना के एक घोड़े का पैर फिसल गया और सवार उसका नीचे गिरपड़ा—इसकी आहट पातेही पहरावाले सिपाहियों ने बिगुल दिया और सब लोग सावधान हो अपने २ स्थान में पहुच गये—इस समय तक मुसल्मानो का दल भी पास आगया धीर ध्वज ने अवसर देख अपने योद्धाओं को बाण वर्षा की आज्ञा दी और एक अश्वारोही को अजेय के पास इसका समाचार देने को भेज दिया—आज्ञा पातेही इधर के बीरों ने ऐसो बाण की वर्षा की कि विपक्ष दल वाले जो आगे बढ़ आये थे घायल हो हो वहां के वहीं रहगये उनका सरदार उसमान अपने दल में आगे बढ़े हुये योद्धाओं को विनष्ट होते देख जो सेना पीछे रहगई थी उसे लौट आने की आज्ञा दी और उस ओर धावा करने का बिगुल दिया जहां अजेय थोड़े से दल के साथ गढ़ी की चौकसी कर रहा था—

क्रमशः—

। पुस्तक प्राप्ति ।

। चातुर्यंतार्णव ।

बाबू रतनचन्द बी—ए—वकील हाईकोर्ट कृत—इस पुस्तक का लेख सच २ चातुर्यंतार्णव है यह पुस्तक ६ लेखों मे विभक्त है इसमे कहीं २ कहानी के ढंग पर बातें लिखी गई हैं कहीं २ स्वप्न के ढंग पर लेख है पर जिन बातों पर लक्ष्यकर जो कुछ इसमे लिखा गया है सब अनुभूत और सत्य है—जिस ढंग पर संसार चलरहा है उसका पूरा २ चित्र इसमे खींचा गया है इसे ध्यान देकर पढ़ने से दुनियादारी और चालांकी की पूरी बानगी

मिल जाती है मूल्य ।) प्रयाग प्रेस में छपी है बाबू रतनचन्द वकील हाईकोर्ट के पास मिलैगी ।

। संसार सुख ।

तीन हिस्सों में गुजराती से लक्ष्मीनाथ भट्ट कृत अनुवादित—इसमें सरल भाषा में छोटे २ किस्से लिखे गये हैं जिन में एक २ शिक्षा संसार के सुख के संबन्ध में पाई जाती है—इन पुस्तकों में एक उत्तम गुण यह है कि यह स्त्रियों के पढ़ने योग्य भी है—मूल्य पहिले और तीसरे खंड का ।) प्रति खंड—दूसरे खंड का मूल्य ॥) विहारबन्धु प्रेस बांकीपुर में छपी है ।

॥ श्री हरिश्चन्द्र कला ॥

बाबू हरिश्चन्द्र के उत्तम लेखों का संग्रह १२८ पेज में प्रति मास शुक्ल पक्ष को द्वितीया को प्रकाशित हुआ करेगी—इसका वार्षिक मूल्य ६॥) होगा जिसे लेना हो मैनेजर खड्ग विलास प्रेस बांकीपुर से लिखे ।

विज्ञापन।

दयानन्द दिग्विजयार्क

चौबीस अध्याय का यह सद्ग्रन्थ नीचे लिखे अनुसार सब तीन खण्डों में ऐसा अद्भुत परिपूर्ण किया गया है कि जिसे सुचित्ती से अवलोकन किये पिछे समाज, स्वार्थ और परमार्थ सम्बन्धी कोई बत व कोई काम जानने व समझने के लिये शेष नहीं रहता जिन महाशयों को अपेक्षित हो, वे ग्रन्थकार पण्डित गोपलराव हरी जी मंत्री वैदिक समाज फ़र्रुखाबाद से वेल्यूपेबिल द्वारा मांगती रहैं परंतु अपना पता साफ़ २ लिखा करें॥

प्रथम खंड, ॥) केवल द्विती खंड, ॥।) तृतीय खंड १।)

श्री जी का फ़ोटूचित्र बड़ा ॥) छोटा ।)





हिन्दीप्रदीप ।

मासिक पत्र ।

बिद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंदभरे ॥
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणि दीप समथिर नहिंटरे ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरे ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरे ॥

१ सिंतबर सन् १८८७ | जिल्द ११ संख्या १

इलाहाबाद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
देशोपकारक यंत्रालय में प्रकाशित
किया गया

मूल्य अग्रिम ३।=) पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १॥=)

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द ११
संख्या १

१ सितंबर
सन् १८८७ ई०

। नये वर्ष का आरंभ ।

समय को शास्त्रकारों ने भगवान् का रूप माना है लव निमेष से लेकर ब्रह्मा की आयुष्य पर्यन्त सब इसी का विस्तार है—इसके सदैव चलायमान् चक्र की धुरी में यह एक अद्भुत शक्ति है कि संपूर्ण संसार को अपनी वेग गति से रौंद सौंद पुराना कर देती है पर आप वैसी की वैसी नई बनी रहती है—हम भी इसी की वेगगामी गति में पड़ यह गया वह आया करते २ दश वर्ष काट डाला प्रति मास नित्य नूतन विषय लिखते २ घिस गये पर समय आज भी वैसाही टटकाबना है जैसा यह प्रथम मास के प्रथम दिन में था—हमारे नूतन सहयोगी हिन्दुस्तान हमें वृद्ध जावालि की उपाधि देते हैं यद्यपि समय के अनादि और अनन्त बिस्तार पर ध्यान देने

से दस बर्ष का क्षणिक जीवन किसी गिनती मे नहीं है पर ऐसी संकटी मे भी जबकि देखते २ हमारे न जानिये कितने सहयोगी उदयास्त को प्राप्त होगये हम हट्टे कट्टे वैसे के वैसे बने जीवते रहे और मृतक नादेहन्दों के मुह मे क्षार दे उन्हे भार मे झोक अपना चरखा बराबर ओटते ही जाते हैं और जान दार थोड़े से भी ग्राहक हमे पूछते रहें गे तो कण्ठ गत प्राण होनेतक ओटतेही रहें गे—यह क्या कुछ थोड़े हर्ष की बात है देहं वा पातये कार्यं वा साधये ।

इसी से हम दसवें वर्ष को ग्यारह कर मनहूस सुन्न को अपने मे से निकाल एक और एक ग्यारह होते हैं यह एकादश सकल बिघ्न बिध्वंसकारी त्रिपुरारी सदा शिव की समता का द्योतक है तो क्या यह आशा करना नितान्त निरर्थक हो सक्ता है कि शिव जी हमरे समस्त अशिव और बिघ्नों को इस ग्यारहवें बर्ष मे हम से हटाते बिष्णु की द्वादशी संख्यातक हमे पहूंचाय दें—इसमे अचरज क्या है क्योंकि "जीवन्नरो भद्र शतानि पश्येत्—,,

अपूर्व वेदान्त।

प्राणियों के सुख के आवरण (ढकना) और दुःखके प्रादुर्भाव (प्रगटहोने) का कारण मायाहै और मायाका अर्थहै सत्ता वाअसत्तासे अनिर्वचनीय अर्थात् जिसे न कहसक्तेहैं कि हैवा न कहसक्ते हैं नहीं है जैसा स्वप्न में व्याघ्रका दर्शन जिसे यदि कहैं हैतो बाघका सबकाम शिकारआदि वह क्यों नहीकरता और यदि कहैं नहींहै तो दिखलाई वह क्या दिया जिसेदेख स्वप्न देखनेवाला चौंक

के भयभीत हो जागपड़ा—निदान उस माया से विरक्त होके मोक्षकी इच्छा रखनेवाला कर्मी को परंपराके द्वारा शुद्धचित्त निष्पाप और निष्कामहो उस समस्त मायाजालका फैलानेवाला महा मयावी के शरण में जाके अपना सब कुछ समर्पण करै और वह मायावी चाहै कि हम मोक्षदें अथवा मोक्षका अधिकारी इसे स्थिर करैं तब उस प्राणीको सुखका आविर्भाव होके मायाक्रांत दुःख का तिरोभाव होसक्ता है—मायाका अर्थ यहांपर ममता प्रज्ञा उन्नत बुद्धि छल और शक्ति है – जबसृष्टिकर्ता की कृपालुताकी ओर विचार करतेहैं कि कैसे कौशलसे विश्वंभरने विश्वके भरण और पोषण की युक्ति निकाली है तब उसकी माया को ममता अर्थ मेंव्यवहार करतेहैं और जब सृष्टिकर्ता की प्रपंच रचनामे निपुणताकी ओरध्यान देतेहैं और उसकी चमत्कार बुद्धिपर आश्चर्य होताहै तब उसकी मायाको प्रज्ञा कहते हैं और जब युक्तियोंके द्वारा सृष्टि के प्रयोजन ढूंढतेहै और कुछनहो पाते और कहतेहैं कि सृष्टिकर्ताने प्रयोजन छिपा रक्खाहै तब मायाको छल अर्थ मे प्रयोग करते हैं योंही सृष्टि कर्ताने जब सृष्टि की उपादानता और निमित्त कारणता का एकत्र समावेश देखते हैं और चकित होके उसकी अचिंत्य शक्ति को चित्तमे लाया चाहतेहैं पर नही लासक्ते तब उसकी माया को शक्ति कहते हैं—मायावीने प्राणियोंके हितार्थ वेदकी कल्पना कियाहै जिस्मे उसने कहाहै कि जोमै सो तू मुझमे तुझसे तनिकभी अन्तर नही है जो अन्तर देखता है वह मूढ प्राणी दुःखभागी होता है यह नाना रूपका जगत् उस ऐश्वर्यवान् की मायाका प्रपंचहै इत्यादि—

इस समय भारत भूमिमे अंगरेज़ों का राज्यभी इस प्रपंचात्मक जगत् के बीच परम प्रपंचहै इस्मे प्राणियोंके सुखका जो अनेक प्रकारका आवरण और दुःखका प्रादुर्भावहै सोवड़े ऐश्वर्यवान् अंगरेज़ों की मायाका प्रादुर्भाव है जो सत्ता असत्ता दोनोसे अनिर्वचनीय है क्योंकि यदि वह राज्यहै तो भारत मे अराजकता कीसी दशा क्यों देख पड़ती है दुर्बलोंको बलवान् क्यों पीड़ा देते हैं ? कचहरियों मे झूठका सच्च सच्चका झूठ क्यों होरहा है ? रक्षक के नाम से भक्षकपुलिस और अमले क्यों निःशङ्क जो चाहते हैं सो करते हैं "कच„ बाल

"हरी„ मूड़ने वाली किन्तु मूड़ का वाल मूड़लेना तो एक उपलक्षण मात्र है प्रजाके मूल धनको अलबत्ता मन मानता मूड़लेतो है-फिर यदि यह कहैं कि भारत में अंगरेज़ी राज्य नहीहै तो यह प्रत्यक्ष क्या विद्यमानहै जिस्को भयसे प्रजा मात्रके रोंघटे खडे होतेहैं सत्का अर्थभला और असत्का अर्थ बुराहै यदि इह अर्थसे देखैं तौभी अंगरेज़ों का राज्य सत् नही प्रतीत होता क्योंकि जो भांत २ के टेक्स लगाये गये है उन्मे कहीं न्यायकी गन्धिभी नहीं पाई जाती—वङ्ग भाषाका संजीवनी नामक पत्र "इनकंटेक्सका अत्याचार„ नामक लेखमे इसबातको सिद्ध करताहै कि इङ्गलेंड सरीखे अतिधनी देशमें जिस आमदनी पर जो टेक्स लगाया जाताहै वही टेक्स भारत से दरिद्र देशमें उस्की चौथाई आमदनी पर लगाहै अंगरेज़ी राज्यको असत् बुराभी नहीं कह सकते क्योंकि मुसलमानों के राज्यकी अपेक्षा इस राज्य मे फिरभी न्यायकी सुनाईहै वस्तुतः जैसा तुलसीदास का यह कहना कि "विधि प्रपंच गुण अवगुण साना„ तैसेही अंगरेज़ का राज्य भी गुण और अवगुण से ऐसा मिश्रितहै कि उसे न सत् कह सक्ते हैं न असत्-कोई नही जान सक्ता विधिने किस प्रयोजन से संसारको सत् असत् से मिश्रित कर रक्खाहै वैसाही कोई प्रजा नही कहसक्ती कि अंगरेज़ों ने अपने राज्य रूपी प्रपंच को किस प्रयोजनसे सत् असत् से मिश्रित कर रक्खाहै—वेदमें लिखाहै मायावीका स्वभाव मायाहै तथापि मायावी मायासे लिप्त नहीं रहता इधर अंगरेजोंका इतिहास भी कहताहै कि राज्य प्रपंचको बढ़ाते जाना इस जातिका स्वभावही है अपने से सबलके सामने मेऊं बनेरहना दुर्वलको तनिकभी चूकते देख झाकूदना- इस सब ओरसे दाव रहाहै कुश्नही बन पड़तो निरपराध दुर्वल ब्रह्माका आक्रमण करलिया- फिर इस राज्य प्रपंच को बढ़ाते चले जाना रोम राज्यके समान भीतर २ कितनाही पोलापन आता जाय इस्की चिन्तासे वैसाही निर्लेप रहना जैसा वह बड़ा मायावी अपनी बनाई हुई मायासे निर्लेप रहताहै- फिरभी जैसा विधाता न्यायवान् कहा जाताहै वैसाही कानून की किताबोंमे ब्रटिश राज्य भी नीतिमान् प्रख्यातहै-जैसा मायावी चित् घनानन्द स्वरूपहै दुखी केवल मायामे फसेजीव मात्रहैं वैसाही

अंगरेज़ महाशयभी नित्य आनन्द स्वरूपहो आमोद प्रमोदमे प्रमुदित रहते हैं जीवके स्थानापन्न प्रजा अनेकानेक क्लेश सहती हुई दुःखभागी होरही है सो किसकी करनी से ? मूलमे बिधाता को कौन दोषदे सक्ताहै निज मूढ़ता और अज्ञानके कारण अपने दुःखका हेतु जैसे जीव कहे जातेहैं वैसाही अपने क्लेश और दुःखका कारण यहांकी अज्ञ और मूढ़प्रजा अपने आप मानीजाती है अंगरेजी राज्यको दोष देनेका साहस कौन करै—श्लोक है

"यद्यधर्मःकृतः सद्भिर्नसवाच्यः कथंचन
असत्कृतमधर्मन्तु वदन्धर्ममवाप्नुयात्,,

अर्थात् सत्जन से जो अधर्म कियागया उसका कथन कभी न करन चाहिये परन्तु असत् जनसे जो अधर्म किया गया है उसके कहने मे धर्मकी प्राप्ति होती है बिधाता को सत् समस्त बेद कहते हैं और "जीवाः स्वभावतो दुष्टाः,, जीवगण सब स्वभाव से दुष्ट हैं यह महाप्रभु वल्लभाचार्य का निश्चय है फलतः प्रपंच रचना से सत् बिधाता को असत् कहने का सामर्थ्य किसी को नहीं है ऐसही अंगरेजी राज्य असत् है ऐसा कहने से पाप लगता है नरक रूपी कारागृह मिलता है जो कुछ पाप बनता है जीव अर्थात् प्रजाही से बिधाता वा अंगरेजी सर्कार सर्वथा निर्लेप निष्पाप और शुद्ध है—जैसा जीवों का कल्याण इसी मे है कि "पापोहं पाप कर्माहं पापात्मा पाप संभवः। पाहिमां पुंडरीकाक्ष सर्व पापहरो भव,, मैं-पापी हूं मेरा आचरण पापमय और पाप देही हूं पापही से मेरा जन्म है हे कमल नयन नारायण मेरी रक्षा कर मेरे सब पापों को छीन ले यों कहता हुआ जैसा कोई नारायणजी के शरण हो वैसाही अंगरेजी राज्य की प्रजाओं का हित इसी मे है कि उक्त बचन को उच्चारण करती इनके शरण मे प्राप्त हो फिर नारायण जी अपनी इच्छा पर स्वतंत्र हैं चाहो उद्धार करैं वा नकरैं वैसाही अंगरेज़ महाशय भी अपनी इच्छा पर स्वतंत्र हैं चाहो कृपा करैं वा नकरैं—

अंगरेज़ राज की कृपालुता पर ध्यान कीजिये तो कैसी कुशलता से

आत्मीय अंगरेज़ों के भरण पोषण की युक्ति निकाली है तब उनकी माया को हम ममता अर्थ मे व्यवहार करते हैं और अंगरेज़ी राज्य रूपी प्रपंच रचना मे बुद्धि की निपुणता की ओर जब ध्यान देते हैं और चित्त चमत्कृत होता है तब उनकी माया को प्रज्ञा कहते हैं—फिर जब उनकी प्रतिज्ञा का विचार करते हैं और उस्से जो प्रयोजन अनुमित होता है कि भारत की प्रजा का कल्याण चिन्तन उनका उद्देश्य है परन्तु उस्का असमंजस विधान देख उक्त महाशयों के राज्य का छल प्रतीत होता है तब उनकी माया को छल भी कह सक्ते हैं—उक्त राज के अचिन्त्य पराक्रम पर विवेचन करने से कौन उनकी माया को शक्ति नहीं कहेगा क्योंकि मूठी भर गौराङ्गों की सहायता से कई कोटि प्रजा विजित हो शासित की जारही है—जीवों को पशु कहा है और पशुओं के पति भगवान् को कहते हैं भारत की प्रजा वस्तुतः पशु है तब उनका पति क्या हुआ सो पाठक जन आपही इस्का गुनावन कर लें मै अपनी लेखिनी के मुख मे मसी क्यों लगाऊं जैसा जिस २ अभिलाषा से जीव नाना भांति से भगवान की अनेक उपचारों से पूजा उपासना करते हैं यहांलौ कि ठग और चोर भी काली आदि की पूजा मे महा घृणित नरबलि चढ़ाते हैं जिस्मे उनके अभीष्ट की सिद्धि हो वैसाही यहां की प्रजा बहु भांति से अपने उत्तम मध्यम अधम मनोरथ से यथायोग्य अपने सामयिक राजादेव को अनेक उपचारों से पूजा अर्चा करती है और दास्य भाव और सेवकाई का फल उच्छिष्ट महाप्रसाद पाके सन्तुष्ट रहती है।

अंगरेज़ी गवर्नमेंट की सर्वतोमुखी प्रभुता और शक्तियों की समष्टि उनकी माया है जिस्की साक्षात् सजीव प्रतिमा का नाम बिक्टोरिया भगवतीजगद्विजयिनी जगदम्बा है जिस्का यथार्थ मे अनुगतार्थ नाम "बिक्टोर्जा" है क्योंकि ऊर्ज का अर्थ संस्कृत मे बल और तेज है सो महारानी का बिकट बल और तेज जगद्विख्यात है—"बिकटोर्जा" को देवगण "अंगरेज़" देवभाषा "अंगरेज़ी" मे बिक्टोरिया, नाम से व्यवहार

करती हैं क्योंकि सिद्धान्त है "परोक्षप्रिया हि देवाः" अतएव उक्त देवों के गुणो मे सब देवताओं के नाम का लक्षण समन्वय किया जा सक्ता है उदाहरण यथा महारानी "जिष्णु" विष्णु अथवा इन्द्र हैं क्योंकि "जि" धातु जिस्से जिष्णु बना है उस्के अर्थ जय करने के हैं इसी से उन्हें हम सब लोग विजयिनी कहते हैं— महारानी इन्द्र है "इदि" धातु जिस्से इन्द्र बना है उस्के अर्थ परम ऐश्वर्यवान् है सो उनसे बढ़कर ऐश्वर्य आज दिन किस्का है महारानी "गोत्रभिद्" हैं क्योंकि "गोत्र" पर्वत "भिद" चूर्ण करना— पर्वतों को चूर २ कर न जानिये कितनी रेल की सड़कें बनादी हैं—गोत्र वंशको भी कहते हैं कितने राज वंश मे भेद करवाय उनका विनाश कर डाला— विष्णु हैं क्योंकि उस्का प्रभुत्व व्यापक है—शंकर हैं क्योंकि अपने जाति वालों को सब प्रकार का सुख देती हैं—भीम हैं क्योंकि हम सब प्रजावर्ग उनसे अत्यन्त डरते हैं—"दण्डधर" हैं क्योंकि दण्ड के द्वारा प्रजा का शासन करती हैं—"प्रभंजन" पवन हैं क्योंकि प्रबल शत्रुओं को रण मे जय किया है—वाचस्पति हैं क्योंकि बहुत पढ़ी लिखी हैं—विद्याधर हैं क्योंकि बहुत विद्या धारण करती हैं—चन्द्रमा हैं क्योंकि "चदि" आनन्द मय हैं—लोकेश अर्थात् ब्रह्मा हैं क्योंकि लोगों की ईश्वरी हैं—अप्पति वरुण हैं क्योंकि समुद्र पर जितना अधिकार इनका है उतना किसी का नही—वैश्वानर अग्नि हैं क्योंकि सब नरों की हितकारी हैं—ईशान हैं क्योंकि अपने ऐश्वर्य बल से सबों का शासन करती हैं—निर्ऋति हैं क्योंकि ऋति कहते हैं पीड़ा को सो उनके द्वारा पीड़ा का निराकरण होता है—विश्वंभरा हैं क्योंकि अपने जाति के समस्त देवगणों का भरपूर भरण करती हैं—दुर्गा हैं क्योंकि दुरा धर्ष हैं—लोक माता लक्ष्मी हैं क्योंकि ज़बानी जमा खर्च समझिये तो जननीके समान हमारे देश की प्रजाओं का रक्षण करती हैं-निदान सर्व देव मयी हो कर सूर्य को आज्ञा दे रक्खा है कि वह उस्के राज्य मे सदा प्रकाश पहुचाता रहे इसीसे महारानी के राज्य मे सूर्यास्त होताही नहीं—महारानी की आज्ञा से अग्नि वरुण वायु आदि

देव गण समय २ अनेक २ कल और यंत्रों के द्वारा उस्का अभीष्ट सिद्ध करते उस्की सेवा कर रहे हैं लन्दन "नन्दन„ अर्थात् देवताओं के बन मे उस्का भवन है--अंगरेज् लोग उस्की देव सदृश प्रजाहैं–उन्मे कोई २ प्रधान अधिकारी हैं यथा "आनन्दरत्न„ "ग्लाडस्टोन„ ग्लाड अंगरेज़ी मे आनन्द को कहते हैं स्टोन कीमती पत्थर अर्थात् रत्न का वाचक है—उनके अधिकारियों में किसी २ को सब तरहका अधिकार प्राप्तहै यहां तक कि वे सुनेचाहो सबको पर करेंगे अपनेही मनकी जैसा स्टेट सेक्रेटरी इत्यादि—हिन्दुस्तानी उस्कीप्रजा मनुष्य कोटिमे गिनी जाती है यद्यपि देवताओं कीसी पदवी इन मनुष्योंको नहीं है तथापि प्रजात्व धर्म दोनोमे समान है–उस देवता और मनुष्य का बिभेद दोनोके न्यायाधिकारमे प्रगट होता है जैसा हिन्दुस्तानी हाकिम जो मनुष्यकी कोटि मे है उसें इतना अधिकार नहीं है कि वह अंगरेज, अपराधी जो देवताओं की कोटिमे रक्खे गयेहैं उस्का मुकद्दमा कर सके—इस समय दैत्यगण (मुसलमान) देवगणोसे परास्त हैं।

महाराणीने प्रजाओंके हितार्थ देवबाणी अंगरेज़ीमे कानून निर्माण करायेहैं जो वेदोंके तद्वत् हैं जिनकी कई शाखायेहैं उनके पठन पाठन से यही स्पष्ट ज्ञात होता है कि जैसी काली वैसी गोरी प्रजा दोनो समान हैं इन्मे अन्तर देखने वाला मूढ़ और भ्रान्तिमति है पर यह बात केबल कहने को है बर्ताव को नहीं वेदोंमे सारूप्य सालोक्या सायुज्य सामीप्य चार प्रकारकी मोक्ष लिखीहै साबुन से देह पोतने से जाकेट पतलून हैट आदि अंगरेज़ी पोशाक पहनने से अर्थात् असल बिलायती लोगोंका रूप प्राप्तकर सारूप्य मुक्ति मिलती है—उपनिषदोंमे लिखा है यज्ञ के धूम के योग से जीव लोकान्तर मे जाय हिरण्यगर्भ का संयोग पाय मोक्ष पाताहै वैसाही रेलतथा जहाजके धूमकी सहायतासे प्रजा स्वर्ग सदृश अंगरेज़ोंके देशमे सालोक्य मुक्ति प्राप्त करसक्तीसे— सायुज्य और सामीप्य मुक्तिके अधिकारी हमारे पुत्र पौत्रगण होंगे जो कुछ दिनोके उपरान्त उच्च शिक्षा आदि के प्रभाव से सर्वथा अंगरेज, बन जांयगे–जो

अयोग्य होकर देवताओं के योग्य वेश सजते हैं वे पाखण्डी हैं देवता उनपर क्षमा कर रक्खे हैं।

उक्त बेदों के अभ्यासीजन चित्त को एकाग्र कर योगाभ्यास के समान अनेकानेक परीक्षा पार कर सब प्रकार की सिद्धियां प्राप्त करते हैं—कोई २ संसार के पार करने के समान समुद्र पार कर सालोक्य मुक्ति के अधिकारी होते हैं बहुतेरे उनमे से पुनर्जन्म के समान पुनः इस कर्म भूमि भारत में प्रभु की इच्छा अनुसार प्रत्यागमन करते हैं और उस स्वर्ग से लौटने की पहचान अपने साथ एक अप्सरा लिये आते हैं वहां निरन्तर अमृत पानके समान वारुणी का इतना अभ्यास पड़ जाता है कि एक क्षण बिना वारुणी के नहीं रह सकते —उक्त बेदों के अनेकानेक आचार्य हैं जो उनके अर्थ को भिन्न २ रूप से व्याख्या करते हैं और बड़े २ पातकियों को भी नरक कुण्ड समान कारागार से बचाने का सामर्थ्य रखते हैं जैसा वकील व्यारिसटर आदि—पूजा भी सब अच्छी पाते हैं इन आचार्यों मे से कुछ चार्वाक के समान लोकायतिक भी हैं-जिनका सिद्धान्त है कि ऐहिक सुखोपभोग मात्र संसार में सार है-आचार्यों ने अनेक युक्तियां तर्क और वाद की निरूपण किये हैं किन्तु विश्वबिमोहिनी माया का अन्त किसी ने नपाया मृत्यु के अनन्तर की दशा विश्वासही पर निर्भर है वैसाही अंगरेजी राज्य के प्रपंच का परिज्ञान प्रत्यक्ष रूप से किसी को भी विदित नहीं है जिसे जैसा सूझे वा जैसा विश्वास करै "पिण्डे पिण्डे मतिर्भिन्ना तुण्डे तुण्डे सरस्वती ,, इस रहस्य के मर्म को पहुंचना विलक्षण विचक्षण का काम है सामान्य जन का नहीं—बेद से विदित है कि मनुष्यों की अपेक्षा देवताओं मे यथार्थ ज्ञान अधिक है इसी से मनुष्य उनके आधीन हैं और मनुष्यों की अपेक्षा भी राक्षसों मे यथार्थ ज्ञान अल्प है इसी से वे गो ब्राह्मण इत्यादि को उत्पीड़ित करते हैं-ऐसे हो हिन्दुस्तानियों की अपेक्षा अंगरेज लोग जो देवता के समान हैं एकता का भर पूर यथार्थ ज्ञान रखते हैं इसी कारण मूढ़

मनुष्य हम लोग उनके आधीन हैं—यदि मनुष्य भी यथार्थ ज्ञान को प्राप्त करलें तो देवता हो जांय हिन्दुस्तानी भो यदि एकता को पहचान लें तो अंगरेजों के समान सुखी हो जाँय—राक्षसों मे यद्यपि यथार्थ ज्ञान नहीं है तथापि दैवात् एकता की उपासना मे वे समर्थ हैं अतएव कभी २ इतना बल पकड़ लेते हैं कि देवताओं को भी उनकी ही मनकीसी करना पड़ता है—समस्त मनुष्य गण मिलके विशुद्ध एकता की उपासना नहीं करते इसी से देवता और राक्षस दोनों के अत्याचार सहा करते हैं—यदि एकता की आराधना मे हम सब लोग दत्तचित्त हो जांय और भ्रम मूलक देव दैत्य मनुष्य इत्याकारक भेद बुद्धि दूर कर दें परस्पर एक दूसरे को निजआतमीय समझें तो उस मायावी की प्रपंचात्मक माया का सहज मे पार पासक्ते हैं—एकता का नामान्तर समता है और वेदान्त में समताही को यथार्थ वस्तु प्रतिपादित किया है सो सब का निचोड़ यही है कि मूर्खता विजृंटभित वैषम्य को चित्त से बिलग कर शुद्धान्तःकरण द्वारा समता को संपादित करो विकल्प बासना भेद बुद्धि को दूर बहाओ तब समता देवी का प्रसाद पाओगे और सनातन सुख चितघनानन्द मे लीन हो सिद्धावस्था को प्राप्त हो गे इति—एक अपूर्ववेदान्ती—

। ब्राह्मणों का अमिट संकट।

ब्राह्मणों की जाति ऐसी रची गई कि कभी संकट सेरहित न रही—प्रथम तो इसके लिये यम नियम आदि समय की कसौटी ऐसी बनाई गई कि उन्ही को सेवन करते २ शरीर इनका शुष्क हो जाता है दूसरे इनके पूर्व पुरुषों की बुद्धि मे न जानिये क्या समाना कि जितनी ऐश्वर्य और सुख विलास की सामग्रियांथीं उन्हें तुच्छ ठहराया और कह दिया कि—"ब्राह्मणस्यशरीरोयंतुच्छकामाय नेष्यतेकृच्छ्रायतपसेचेवप्रेत्यानन्तसुखायच"—अर्थात् ब्राह्मण की यह देह तुच्छ काम जो संसार के सुख और भोग विलास

आदि हैं उनके लिये नहीं बनाई गई किन्तु बड़े २ कृच्छ्र चान्द्रायण आदि व्रत और कठिन तपस्या के लिये है— कन्दमूल फल वा यथा लाभ वस्तु से कालक्षेप करना—धर्म कर्म जो परम पुरुषार्थ हैं उन्मे प्रवृत्त रहना— तपश्चर्या से शरीर सुखाना—राज्य सुख ऐश्वर्य और प्रभुता की अभिलाषा नरखना— लोभ और हिंसा आदि पाप कर्म से बचे रहना इत्यादि इनके नित्यनैमित्तिक कर्म नियत किये गये हैं—अब के ब्राह्मण चाहो जैसे हों परन्तु पूर्व काल के ब्राह्मण प्रायः सच्चरित्र और निर्लोभी थे और उस समय भी कभी संकट से रहित नथे— जितने दैत्य और दानव बंशी राजा और प्रचण्ड राक्षस हुये उन सबों ने इन ब्राह्मणो ही पर चोट करना मुख्य काम समझा रामायण की कथा से ज्ञात होता है कि महाराजा श्री रामचन्द्र को दण्डक बन मे एक ऋषि ने निशाचर खादित ऋषि और ब्राह्मणों की हड्डियों का बड़ा भारी ढेर दिखलाया था उपरान्त कार्तबीर्य बंशी क्षत्रियों ने भृगु बंशी ब्राह्मणों पर कैसा कुछ अत्याचार कियाथा—कंस दंतवक्र शिशुपाल प्रभृति द्वापर युग के राजाओं ने ब्राह्मणो से विद्रोह रखने की कोई बात नहीं छोड़ रक्खी उपरान्त बौद्ध मत और जैन धर्मी राजाओं ने सब से मुख्य अपराधी इन्हो ब्राह्मणोहो को ठहराया—वैदिक धर्म और श्रौत स्मार्त कर्म को अपनो सामायिक सामर्थ्य रूपा नदी मे भली भांत डुबोया परम अहिंसा शील और जीव रक्षक मताभिमानी होने पर भी प्रत्यक्ष ब्राह्मणो के वलि प्रदान का ब्रत धारण किया अथवा आरे के ब्राह्मणों के बलि प्रदान की किंवदन्ती उन्हो के अत्याचार रूपी प्रेस से प्रकाशित की गई— फिर उनसे भी चढ़बढ़कर महम्मदी मत के प्रचण्ड ज्वाला नल की असह्य आंचने विशेष कर इन्ही के कोमल चर्म को जलाया और इस मृतक दशा पर भी कुछ २ ताप पहुंचाती ही रहती है—फिर क्या इतने ही पर इनके संकट की पूर्णाहुति होजाती है ? "निःसारं कदलीं मत्वाछेत्तुं कोन समुद्यती„—केले के पेड़ को नितान्त कोमल समझ कौन उसके काटने को सन्नद्ध नहीं होजाता बड़े न्यायाभिमानी अंगरेजों के राज्य मे इनके

मत के धर्मोपदेशक पादरी लोग जिन के मत मे पराये को दुख देना या हिंसा महा निषिद्ध कर्म है और प्रेम जिनका मूल मंत्र है वे भी इन्ही पर मर्म बेधी बाग बज्र लेकर डट गये कोई देव स्थान वा तीर्थ स्थल न छोड़ा पीनल कोड की दफायें भी इनके लिये कुछ कारगर नहीं होतीं एक ओर हिन्दूमत का याची स्नान दान आदि करता है दूसरी ओर ईसाई गण विश्वास विघातक बाण चलाते हैं "आप लोग ब्राह्मणों की पोथियों पर क्यों विश्वास जमाये हुये हैं ये सब के सब बड़े कपटी लालची और स्वार्थ साधक हैं ये तुम्हें नरक की राह में लिये जाते हैं हमारे प्रभू ईसा की शरण गहो आओ हम तुम्हें मुक्ति का मार्ग बतलावें„- पाठक जन समझते होंगे कि ब्राह्मणो का संकट यहींतक हो चुका सो नहीं तिलक माला से अलंकृत बड़े जटा धारी बिरक्त वैष्णव नटवा चमार पटवा बाबा लोग ब्राह्मणो की सूखी हड्डी पर दो चार भंगोटना बिना जमाये नही रहते चेलों को समझाते हैं--"शुणो बच्चा रघुणाथ जी की भक्ति पदारथ सन्तों की सेवा से मिलता है बह्मण सह्मण की बात मत माणा करो वही करणा जो अपणे गुरू का आदेस हो„—इत्यादि अस्तु यह सब संकट तो ब्राह्मणों की जाति चिरकाल से झेल रही है जिसे सहते २ नसूर होगया अब नया संकट सुनिये देश के महा संस्कारकारक परंधाम बासी श्री स्वामी दयानन्द अपने अनुयायी आर्यगणोको यही शिक्षा दे गये हैं कि तुम ब्राह्मणों को दुर्बाक्य दान मे अपना परम कल्याण समझना और जब तक ब्राह्मणों को पोप न कहलोगे तबतक अपने दैनिक पाप से कभी न छुटोगे-यहां तक हमने ब्राह्मणों के भूत काल और बर्तमान् कालिक संकटों का संक्षेप से बिवरण किया और भविष्य संकटों की चोट का क्या परिणाम होनहार है हम उसे नहीं स्थिर कर सके कि किस सीमातक वह बढ़ेगा और इसका क्या फल होगा-इन बर्तमान् संकटो में एक आभ्यन्तरिक संकट भी कई बर्षसे उपस्थित है सो यह है कि जबसे कायस्थ मूल पुरुष निर्णय व्यवस्था प्रकाशित हुईहै तबसे ब्राह्मणो से बहुतेरे कायस्थ राजसभासे द्विजाति बर्ण निरुद्धदायनिर्णय होने और इसकारण से रुष्टहैं

कि वेजन्सपत्रों मे हमारे नाम के साथ दास पद क्यों लिखते आये हैं संकल्पोंमे हमें अमुक दास क्यों अवतक कहा और कहते हैं और हालमे जो एक विज्ञापन यहां की कायस्थ धर्मसभा की ओरसे यम द्वितीया के दिनहूं मे छपकर बटा है उस्मे जैसा क्रोध कायस्थोंका इस देशके ब्राह्मणोपर प्रगट किया गया है उसे देख यही निश्चय होता है कि सहायहीन ब्राह्मणोका कल्याण अब गोब्राह्मण प्रतिपालक श्रीनारायण के आधीन है नहीं तो इस व्यर्थके सामाजिक झगड़ोसे सिवाय हानिके लाभकुछ नही है पर कायस्थ महाशयगण क्यों हमारे कहने पर कान देंगे अब इस प्रकाश के समय ऐसे२ शुष्कवादसे नतो देशका कुछ कल्याणहै न कायस्थ जातिका गौरव बढ़ताहै और ब्राह्मण बेचारेतो सहते २ सहगये अवइन्हे और अधिक कोई क्या गिरावेगा "नशयानः पतत्यध„; गिरते पड़ते लड़खड़ाते इस विपत्ति कालमेभी हिन्दू धर्मकी चूंदी गहि के पकड़े हुये जिस ढर्रेपर ढुलके हैं उसीपर चुपचाप चलेजा रहे हैं नईरोशनी के प्रकाश और नूतन सभ्यता के सूर्यकी हजार २ किरनैं चारों ओर छिटकी रहैं इनपर वह कभी व्याप नही सकीं–जबतक ब्राह्मण अपनी ब्राह्मणता पर आरूढहैं तभीतक यह देश भारत बर्ष कहलाने योग्य है तभी तक हमारेमे आत्मगौरवहै यत्किंचित् हिन्दूपनका आभास और आर्यताका अभिमान बना है– इसीसे हम कहते हैं अब गौ और ब्राह्मणों की रक्षा श्रीनारायण हीके आधीनहै– फिर हमारे मनमे यह कथमपि नहीं आता कि सबांशमे देशके बिगड़ाव और अवनतिका हेतु केवल ब्राह्मणही हुये विषयानुराग और दुर्बलता देशके मनुष्यों मे बराबर से सबों मे एकसी बढ़ती गई—ब्राह्मणोमे यदि लालच और स्वार्थ परताका दोष लगायाजाय तो साथही इन्मेसहिष्णुता तितिक्षा आदि बिशेष देखी जातीहै यह निश्चय है कि यह जाति सदासे द्रव्यहीन होती आई है भोग बिलासकी बारीकी जिस्से निर्बलता बढ़ती है वह रुपये के आधीनहै दरिद्र बेचारा मनको मार शान्ति और तितिक्षानगहै तो करक्या सक्ताहै और अन्तको वही दरिद्रता इनदिनों के ब्राह्मणोके बेकदरीका कारण हुई नही तो योग्यता प्रभृति सद्गुण मे अब भीब्राह्मण औरों से कि

सो अंशमे कम नही हैं और देशके उद्धारका अंकुर इन्ही मे छिपा पड़ा है देखें उसके उभड़ने का कब समय आता है—

। अलीगढ़ इन्सटिटूट गज़ट की हांवहांव ।

यह बात विदित है कि हिंदोस्थान की प्रजा दो बड़े विभागों मे विभाजित हैं— अर्थात हिन्दू और दूसरे मुसलमान—और इसमे भी संशय नही कि मुसलमानोंको इस देश का बहुत पुराना निवासी नही कह सक्ते— क्योंकि इतिहासों से विदित होता है कि इन को इस देश मे तशरीफ लाए केवल ६४० वर्ष के लग भग हुये हैं-बहुत मुद्दत तक मुसलमानों ने हिंदूओं पर ऐसे ज़ोर ज़ुल्म के साथ राज्य किया कि इन बिचारों का दम बंद कर दिया—और उनको ज़ुल्म सहने की इतनी आदत होगई कि उनकी औलाद अर्थात् हम लोग यद्यपि अब अन्याय बहुत कम होता है तो भी जब कभी कहीं २ हो जाता है तो चूं नहीं करते इस बात का धन्यबाद इन्हीं ज़ालीमों को देना चाहिये — कि बड़े २ ज़ुल्म होने पर भी हम लोग बहुधा उन आन्यायों को चुप चाप सह लेते हैं-परंतु इस्मे कुछ संदेह नहीं कि जब कभी कोई बात अन्याय की हमारे कानों मे इस कौम की ओर से सुनाई देती है तो इस कारण कि अब हम और ये महाशय दोनो एकही राजा की प्रजा हैं हम को उसी प्रकार बुरी लगती है जैसे किसी स्त्रीको अपनी सौति का कटु बचन बुरा लगता है कभी २ उसको न सह कर वह स्त्री जैसा न्याय की इच्छा से उसके आन्याय युक्त बचनों को सर्व साधारण पर विदित कर न्याय चाहती है इसी प्रकार हम भी इन महाशयों के अन्याय रूप बचन उनके प्रत्युत्तर सहित प्रकाश कर सर्व साधारण से यह बात पूछते हैं कि जो कोई महाशय ऐसे मज़मून लिखें जैसे कि अलीगढ़ इंस्टिटूट गज़ट मे लिखे गए हैं किस प्रकार माननीय और इंसाफ पसंद समझे जासक्ते हैं हमको यह कहना भी अवश्य

है कि यदि ये बचन अपनी कौम को तरक्की की घुड़ दौड़ मे न्याय पूर्वक दौड़ाने के लिये चाबुक मारने की इच्छा से लिखेगए हैं तो वे इतने अनुचित नहीं होंगे जितने कि अन्य अभिलाषा से लिखे जाने से होंगे अब हम दृष्टांत देकर अपने प्रयोजन को प्रगट करते हैं—तरक्की के मैंदान मे हिंदू और मुसलमान दो घोड़े दौड़ रहे हैं—प्रथम का सवार बहुत सीधा सादा परंतु न्याय के पथ से पग बाहर नहीं धरता दूसरे घोड़े का सवार सब बातों मे होशियार परंतु बुडढा होने से बल हीन होजाने के कारण उसके बदले मे अपनी तजर्बे कारी को काम में लाता है-और सदैव नये२ उद्योग ऐसे किया करता है कि जिस्से दूसरा घोड़ा उसके घोड़े से पीछे ही रहे—यह उद्योग भी इसी प्रकार का हमारी समझ मे आता है कि दूसरे घोड़े वाला धोखे मे आकर अपने घोड़े को ढीला करे जो पहले ही से बहुत सुस्त चल रहा है और उसी के साथ यह भी अभिप्राय है कि यदि उसके घोड़े के बराबर पहुंच जावे तो यह चाबुक मार अपने घोड़े से दुलत्ती दिला दूसरे घोड़े और सवार को गिरा कर आप आगे निकल जावे—हम अपने घोड़े के सवार को मचेत करते हैं कि वह दूसरे घोड़े से सदैव इतने फासले से रहे कि उसकी दुलत्ती न लगने पावे—और ठीक२ न्याय पूर्वक अपने घोड़े को उसकी शक्ति भर चलाते रहें परंतु इस लेख से हमारा अभिप्राय यह भी है कि सर्व साधारण इस लेख को पढ़ कर इंस्टिटूट गजट के मज़मून दाता की परीक्षा करें और इस बात का विचार करें कि उनके बचन सत्य के पथ को बहुत दूर छोड़ असत्य की पगडंडी पर चल खड्ड मे गिरने का कुछभय न करके घुड़ दौड़ की बाज़ी को सुगमता से जीत लिया चाहते हैं—और उसी के साथ यह विचार करना भी अनुचित न होगा कि जो ऐसे असत् और अन्याय रूप उपाय से दूसरे को परास्त करने का उद्योग करे वह किसी प्रकार सर्व साधारण का माननीय और इसके बचन प्रमाणिक समझे जा सकते हैं वा नहीं—

अब हम उन विषयोंका उत्तर लिखते हैं, जो उदाहरण की रीतिपर इंस्टिट्यूट गज़ट अलीगढ़ में लिखे गए हैं—जब एक बड़ेनामी कृतघ्नी हकीमने (जैसा कि पिछली तहकीकात से प्रगट हुआ) इस सबेके प्यारे पुत्र आगरा कालेज को उसके रक्तकसे मिलकर ज़हर दिया, तो वह करीबुलमर्गही नहीं होगया वरन उसको गवर्नर जनरेलके हुकुम रूप मलकुल् मौतने दर्शन देहीदिया,—और बड़े २ डाक्तरों ने जब उसकी ज़िंदगी से नैराश्य प्रगटकी तो कौम अपनें प्यारे पुत्रकी मृत्युसे ऐसे करुणा मय स्वरसे रोई कि ईश्वर को भी दया आगई—और उसने मलकुल्मौत के कबज़े से उसकी रूहको इस शर्तपर छुटालिया कि वेलोग अपने पुत्रकी खुराक के लिये ईश्वरसे कुछ मदद न मांगें—उस हकीम ज़हर खिलाने वालेको बड़ाबड़ा दुःख इस कारण हुआथा कि ईश्वरने बिचारे दीन हिंदुओंके ऊपर क्यों दयाकी, परंतु तब भी इस बातका पूर्ण निश्चयथा कि ईश्वरकी सहायता बिना कुछ नहीं होसक्ता, और इसलिये अभी नहीं तो थोडे दिनमें यह हिंदुओं का प्रिय पुत्र अगरा कालेज अवश्य कालवश होगा—और तब हकीम साहब के हृदय कमलकी प्रत्येक पंखड़ी खिल जांयगी परंतु जब इस सूबे के हिंदुओंने देखाकि उनके उस पुत्रका जीवन केवल उनकेही उद्योग पर निर्भर है, तो कमर कस कर भिक्षुक बन उसका जीवन उन लोगोंने स्थिर किया—यह बात अवश्य हकीमजी साहब को बहुतही निराशताकी हुई जिसका हृदयमेरखना जब कठिन हुआ, तो इस मज़मूनके रूपमेउसे बाहर उगलतेही बना—हम इस स्थान पर इस बातको लिखना नहीं चाहते कि ईश्वरभी ऐसी शर्त करने मे दोषभागीहुए वानहीं ? क्योंकि जब देखा जाता है बिनप्रयोजन के कामोंमे हज़ारों रुपये नित्य प्रति बिगड़ते हैं तो हिंदुओं के प्यारे पुत्र की सहायता मे एक साथ सहायता करने से इनाकार करना अवश्य कुछ दोषारोपण उनके सिरपर भी आसकता है—ऐसे स्थानपरजो हिंदुओं ने चंदा दियातो कुछ आश्चर्य्य की बात भी नहीं—वे तो अपनी दयालु प्रकृति के कारण किसी म्लेच्छ के जीव बचाने के हेतुभी अपनी शक्तिके अनुसार दान देना स्वीकार करलेते हैं, फिर अपने पुत्रके जीव बचाने मे सहायता दी तो क्या अदभुत बातहुई

हमको यह बातभी दिखानी अवश्यहै कि हुक्काम वक्त यदि आगरा कालेज को ऐसे समयमे सहायता करनेको उद्यतहैं, तो ऐसा करनेसे वे केवल अपने फर्ज़ को पूरा करते हैं, कोई बात हिंदुओंके पक्षपात की नही करते— क्योंकि यहतो हाकिम का धर्महै कि जबकोई बलवान् पुरुष बलहीन पर अन्याय करे तो बलहीन पुरुष की रक्षा करनी अवश्यहै— और यदि उस रक्षाके निमित्त कुछ पक्षपात भी करना पड़ेतो हमारे निकट वह पक्षपात मे दाखिल नही होसक्ता—

वार्डस् इंस्टिटूशन के अलीगढ़से आगरे को हटाएजाने के विषयमे हम दो फल निकाल सक्ते हैं एकतो हाकिमों का पक्षपात जैसा कि प्रतिपक्षी का विचार है दूसरा विद्यार्थियों की भलाई—प्रथम दशामे हाकिमों को पक्षपाती मान लेना पड़ेगा, दूसरी दशामे मोहम्मदो कालेजसे आगरा कलेज की पढ़ाई उत्तम मानलेनी पड़ेगी— अब देखना चाहिये कि इन दोनो बातोंमे कौनसी अधिक संभवहै- हाकिमोंके पक्षपातके विषयमे यदि कुछहै तो हमारे प्रतिपक्षियों की ओर बहुतहै जैसाकि हम आगे किसी समय दिखावेगें और इस लिये यह विचार केवल उसी समय करने योग्य होगा जब दूसरे विचारके लिये कुछभी संभावना न पाईजाय—इम्तहानों के फलोंसे जाना गयाहै कि आगरा कालिज का फल कम नहीहुआ- तो ऐसी दशा में विचारे हिंदुओंके लड़कों को लाचार करके मुसलमानोंका संसर्ग कराना सर्कारका अतिही घोर अन्याय होता— क्योंकि जब उनका अभीष्ट अर्थात् अच्छी पढ़ाई दोनोस्थानों पर तुल्यथी, तब क्यों उनको मुसलमानों के संसर्ग करने को दृढ़ करते परंतु इस्के सिवाय कुछ और भी कारण हो सक्ताहै जिस्से खुद मुसलमनोंके लड़कोंने भी अलीगढ़की अपेक्षा आगरेका रहना अधिक पसंद किया अच्छे बोर्डिंग् होम का बनना पढ़ाई मे विद्यार्थियों के लिये कुछलाभ कारक नहीं होसक्ता—हमने सुना है कि किसी ऐसे कारण से जिस्को मोहम्मदी कालिज की कमेटीने प्रगट करना उचित नही समझा ५० से अधिक बोर्डर लोग एक साथ अन्य२ स्थानों पर चलेगये फिर क्या ऐसी दशामे बार्डस् इंस्टिटयूशन अलीगढ़ से आगरा को चलाजाना किसी भांति अनुचित था—

पक्षपातियों के सिवा और कोई इसका उत्तर (हां) नही देगा जो बहुत से मुसलमानों ने अपने जिद्दी तबियत के कारण मोहम्मदी कालिज की मदद नहीदी और खान बहादुर वा नवाब बहादुर की इच्छा से आगरा कालिज को सहायता कीतो यह बात अवश्य ही पक्षपाती लोगों के निकट अनुचित भासती होगी—परंतु उनके इस बातके करनेसे हमको फिर दो फल निकालने पड़ते हैं—एक यह कि जो कारण प्रतिपक्षियों ने बताया वह ठीक है अथवा उन लोगों ने अपने लड़कों की भलाई मुख्य समझ बाहरी दिखावट की ओर मुहम्मदी कालिज के अधिष्टाताओं के पक्षपात युत विचारों की ओर कुछ ध्यान न देकर जो कुछ उनको इस विषय मे उचित ज्ञात हुआ वही किया—अब यह देखना चाहिये कि इन दोनों बातों मे कौन सी बात अधिक संभव है—

यह बात सब जानते हैं कि इन दिनों मुसलमानों मे सुन्नी शिया के सिवाय जो पुराने समय से चले आते हैं नये दो भेद होगए हैं—एक की निशानी टर्कीक्याप अर्थात् फुंदनेदार लाल टोपी है और दूसरों की पुरानी रवाज की टोपी है यह बात भी भली भांति जानी जाती है कि लाल टोपी की कदर सर्कार मे बहुत अधिक है—क्योंकि उसकी बदौलत बड़े बड़े खिताब और ओहदे कभी २ अयोग्य पुरुषों को भी मिल जाते हैं—और इसी कारण हमारे निकट अच्छे ओहदे वा बड़े खिताब का मिलना इन दिनो योग्यता की निशानी पूर्ण रीति से नही रही–अर्थात् यह कि किसी खिताब के लग जाने से किसी मनुष्य को योग्य मान लेना इन दिनो बड़ी भारी भूल मे हमको डालता है इसी कारण सब उत्तम जनों के निकट यदि नवाब बहादुर व खान बहादुर वा और कोई खिताब अनुचित कर्म्म से अयोग्य पुरुष को मिल जावे तो वह खिताब कभी अच्छे पुरुषों के निकट ऐसे खिताब धारकों की प्रतीति को नही बढ़ाता—परन्तु हां जो उचित कर्म से ऐसे खिताब मिलें तबही उसके धारक प्रतिष्ठित समझे जा सक्ते हैं और सब से बड़ा उचित कर्म्म भले आदिमी का यह है कि मन

के भावों के अनुसार सब बाहरी काम करे इस्से यह निश्चय होता है कि जिन महाशयों ने खिताब की इच्छा से आगरा कालिज को सहायता दी वे निःसंदेह आगरा कालिज को सहायता के योग्य और मोहम्मदी कालिज को उस्के अयोग्य निश्चय करते थे यह बिचार उनका ठीक था वा नही इस बात पर स्थिर है कि किन कारणों से यह निश्चय उनके मनमे उत्पन्न हुआ–जिन कारणों को वे महाशय आप ही ठीक २ बता सक्ते हैं हमारा अनुमान इस विषय मे न ठीक हो सक्ता है और न फल दायक है इस हेतु हम उस्को छोड़ते हैं।

जिन लोगों ने मुसलमानो को बिलाइत भेज कर तालीम दिलाने की राह निकली थीं वे निःसंदेह मुसलमानों के धन्य वाद योग्य हैं–न केवल मुसलमानो के बरन हिंदूओं के भी क्योंकि उस्से पहले जो मुसलमानो को उच्च पद मिलते थे वे बहुधा हाकिमों की खुशामद के कारण वा इस हेतु कि सर्कार को मुसलमानों से कुछ भय था मिलते थे परंत, जब से ये लोग बिलाइत जाकर तालीम पाने लगे तो अब वह बात नही है अब कुछ योग्याता भी आगई–और अब संभव है कि वह योग्यता बहुत काल तक स्थिर रहे हिंदू लोगों को धन्य बाद इस हेतु देना चाहिये कि जब एक सड़क तयार होगई तो उस्का बनाने वाला सब चलने वालों के धन्य बाद योग्य होता है चाहो वह किसी नीयत से उस सड़क को बनावे।

यह बात कुछ आश्चर्य्य की नहीं है कि हिंदुओं ने अपने मज़्हबी खयालों को दबा कर बिलाइत का जाना पसंद कर लिया क्योंकि जब ऐसी मूर्ख अभिमानी मुतअस्सिब कौम के लोग जो जंगली जानवरों के सदृश अपने शुभचिन्तक और रक्षक को नुकसान पहुचाने को अपने मज़्हब का उसूल समझते थे जिसे कि आम मुसलमान जनाब सैयद अहमद खां साहब बहादुर सीएस आई को निस्बत खयाल करते थे अपने उन खयालों को छोड़ कर नये २ खयालों मे बिश्वास करने लगे तो हिंदू लोग जिनका मज़्हब मोंम की नाक की भांत जिधर चाहो उधर को मुड़ सक्ता है यदि

अपने मज़हबी खयालों को दबा कर तरक्की की घुड़दौड़ मे लग गये तो विस्मय का स्थल कदापि नहीं—परंतु तौभी हमको यह कहना उचित है कि जो पांच गुने हिंदू बिलायत मे मुसलमानों से अधिक तालीम पारहे हैं वह हिंदुओं को उस अखाड़े में पूर्ण रीति से दिखाने मे कदापि काफ़ी नहीं–क्योंकि हिंदुओं की संख्या इस देश मे मुसलमानों से २० गुनी है तो जब तक २० गुने हिंदु वहां नहो गये तब तक यह कदापि ठीक रीति से नहीं कहा जाता कि मुसलमानो ने पिछाड़ी रहना निश्चय करलिया–फिर उस समय को देखो कि जिस्मे यह तरक्की मुसलमानों मे हुई है—हमारी ही याद मे मुसलमान लोग गदर से पहले तो शायद फ़ीसदी २ भी अंगरेज़ी नही पढ़ते थे अब यदि हिसाब लगाया जायगा तो निश्चय है कि यह फ़ीसदी बहुत अधिक होगी—फिर क्योंकर मुसलमानो का पीछे रहना संभव है।

इस्मे कुछ संदेह नहीं कि हिंदुओं के सत्य शुभचिन्तक अवश्य ईश्वर से यह प्रार्थना करते हैं कि वह समय अब न आवे कि मुसलमानों के सामने हम लोगों को फिर सिर झुकाना और उनकी कफ़्सबर्दारी करना पड़े–परंतु हाय इस आश को पूर्ण होने की रंच मात्र भी संभवना दृष्टि नहीं आती क्योंकि हमारे हिंदू भाई अभी तक ऐसी स्वतंत्र दशा मे नही हैं वे बहुधा ऐसे लोगों के सहायक बन हमारे मनको खेद उपजाते हैं जो हमारे साथ कभी सहानुभाव नहीं प्रगट करते बरन हमारी तरक्की देख जल भुन कर खाक होजाते हैं—यदि यह सहायता स्वतंत्रता पूर्वक होती तौभी वह खेद बहुत कम होजाता परंतु जब देखा जाता है कि किसी सदरआला वा मुंसिफ़ वा डिपटी कलक्टर वा अन्य सर्कारी अधिकार के अनुचित दबाव के हेतु वह सहायता दी जाती है तो वह खेद और भी अधिक हो जाता है—क्या यह बात मुसलमानों की तरक्की के मैदान मे किसी भांति भी पिछाड़ी रह जाने की संभावना प्रगट करती है कि उनके बड़े २ पद स्थ लोग स्वतंत्र सहायता न देने वालों को अनुचित दबाव डाल अपनी

ईमानदारी को खो परमेश्वर के निकट दोष भागी बन जाते हैं केवल इस हेतु कि वे अपनी कौम को सांसारिक तरक्की कर सकें—हमारे निकट इसका उत्तर भी सिवाय नहीं के और क्या हो सका है।

दयानंद ऐङ्गलो वैदिक कालिज मे चंदा देने वाले हिंदुओं का वही उसूल है जिसकी बुनियाद पर उन्हांने मोहम्मदी कालिज अलीगढ़ मे चंदा दिया है—अर्थात् किसी न किसी प्रकार के खयाल ने उनकी स्वतंत्रता को रोक उसको चंदा देने को वाधित किया—यदि इस एक लाख रुपये मे यह निर्णय किया जावे कि ऐसे हिंदुओं का दिया हुआ कितना रुपया था जो दयानंद के उसूल के विरोधी थे तो निश्चय है कि बहुत थोड़ा रुपया उनका दिया हुआ निकलेगा परंतु तो भी अलीगढ़ इंस्टिटूट गजट के लिये यह थोड़े से रुपये का दिया जाना भी अल्य होगया—इसमे कुछ संदेह नही कि आर्य्य कालिज के मददगार धन्य बाद योग्य हैं परंतु वे इससूबे के लोगों मे शामिल नहीं बहुधा उनमे पंजाब के निवासी थे—हम इस बात मे कुछ संदेह नहो करते कि पंजाब के लोग अवश्य पूर्ण दौड़ मे लग रहे हैं और यह बात हमारे मन को बहुत ही आनंदित करती है कि कोई तो हमारे लोग मुसलमानो के साथ दौड़ने को सामर्थवान हुए मुंशी काली प्रसाद साहब और धूसरों की कौम के उदाहरण उसी सड़क पर चलना है जो मुसलमानो ने अपने लिये तयार की थी—परंतु उस पर वे लोग चल न सके और उस्से बहुत बड़ी और अच्छी सड़क बनाकर उसपर सुख पूर्वक दौड़ रहे हैं—जो कोई अलीगढ़ गया हो और वहां का हाल ठीक दर्याफ्त किया हो वह अवश्य इस बात को जानता होगा कि हमारे इस देश निवासी मुसलमानों के कालेज के सामने यह कुतब खाना कैसी छोटी चीज़ है और जब एक छोटी सी कौम ने इतने थोड़े काल मे इतना बड़ा कालेज तयार कर दिया— न केवल तयार हो किया बरन उसके चलाने के लिये बहुत बड़ी पूंजी भी इकठ्ठी करली तो हिंदुओं की इतनी बड़ी

कौम के लिये यह बात कुछ भी प्रशंसा की नही होसक्ती कि मर पच कर एक छोटा सा मकान बना पाया अब हमको मर पच शब्द का अर्थ प्रगट करना भी अवश्य है क्योंकि इस शब्द के बहुतसे अर्थ होसते हैं इस शब्द के अर्थ इस स्थानपर बहुत मुशकिल के हैं—इसी कारण कुछ वर्णन इसका अवश्य है कि किस तरहकी मुशकिल इसके बनने और पूर्ण करने मे भुगतनी पड़ी—

हमारे प्रतिपक्षियों ने कदाचित् इसी विचारसे कि यह मकान उनके निकट कुछ बहुत काम के नहीं (जे। विचार सर्वथा असत्य है) उसके पूर्णता मे प्रथम ही से विघ्न डालने अरंभ किये—परंतु परमेश्वर अपने भक्तों की अंतमे जय-करता है वे सब विघ्न निवारण होगए—और उनकी एक न चली स्थान आदि सब मिलही गया—तब बहुतों के। अपने विचार के अनुसार यह खयाल पैदा हुआ कि इसके चन्दा इकट्ठा होने में विघ्न डालें यदि कोई मामूली जन भी विघ्न कारी होता है तब भी बड़ी बाधा पड़जाती है तो यह मुशकिल केवल विचारने ही योग्यहै कि जब ऐसे पुरुष विघ्न कारक हों जिनके बचन बहुत से कारणोंसे हिंदू रईसों के लिये कर्म्म के रखा के तुल्य अमिट हों तो उसके इकठ्ठे होने मे कितनी बाधा पड़ी है--परंतु फिर भी ईश्वर की सहायता से उनके मन भी पिघल गए—तो भी देने के समय फिर मुशकिल पड़ी तब उसके अधिष्टाताओं ने अपनी ज़िम्मेदारी से करज लेकर कार्य्य को समाप्त किया कि जो प्रतिपक्षियों की आंखों मे खटकने लगा और इस मज़मून रूप मे बाहर निकाल अपनी आंखों को टंढा किया अब अंत में हम अपने पाठकों को यह लेख अर्पण कर नीचे लिखे हुए श्लोक का स्मरण कराते हैं--भाई प्रतिपक्षियों क्षमा कीजियो—

स्वर्णाद्रि शृंगाग्र मधिष्ठितोपि
काको वराकः खलुकाकमेव

२३

पुस्तक प्राप्ति

श्री हरिश्चन्द्रकला—इस मासिक पुस्तक के प्रकाशक को धन्यवाद है कि इसके द्वारा चिर स्मरणीय बाबू हरिश्चन्द्र के सुललित और सुमधुर लेखों का संग्रह होजायगा—इसकी दो पुस्तकें अब तक निकल चुकी हैं एक मे सत्यहरिश्चन्द्र और दूसरे मे मुद्राराक्षस है ये दोनों लेख उक्त बाबू साहब के परम प्रशंसनीय लेखों मे हैं पहली पुस्तक मे नाटक के सम्बन्ध मे एक लेख है जिस्मे बाबू साहब ने अंगरेज़ी संस्कृत और हिन्दी नाटकों के भेद और उनकी समालोचना तथा गुण दोष प्रगट किये हैं यह लेख बड़ा उत्तम बिल्कुल नया और अब तक नही छपा—प्रारंभ मे बाबू हरिश्चन्द्र की महा अत्युक्ति के साथ प्रशंसा भी है हम अपने चित्त मे उक्त बाबू साहब का आदर और मान पुस्तक संपादक से कुछ कम नहीं रखते बल्कि जितना संपर्क हमारा उन से रहा इन का न रहा होगा किन्तु इतनी अत्युक्ति के साथ उनके गौरव को रसातल मे नहीं डुबोयाचाहते बंगदेश तथा इंगलेंड मे एकसे एक चढ़ बढ़ के सुलेखक और कवि विद्यमान् हैं जो हरिश्चन्द्र से भी कितना बढ़े हुये हैं पर किसी को भारतेन्दु की पदवीन दी गई न किसी के नाम का शाका संवत् चलायागया मिलटन शेक्सपियर सूर तुलसी कालिदास श्रीहर्ष प्रभृति अनेक विद्वान् समस्त विद्या पारंगत हुये हैं किसी का शाका न चला तब इनके नाम का क्यों चलायाजाय

सीधी२ बात तो यों है कि बाबू साहब ने डूबती हुई हिन्दी को एक नया लिबास पहनाय रक्षित रक्खा जिसके लिये इनको बहुत सा परिश्रम और बड़ा धन व्यय करना पड़ा कविता करने से इनकी स्वाभाविक प्रतिभाथी हास्य और शृंगार के तो मानो रूप थे और इस विषय के लेख उनके अलबत्ता बहुत मनोहर हुये हैं और इसीके लिये हम लोग उन्हे अपना अग्र गराय और शिर मौर मानते हैं उन्के नाम का शाका सम्बत् चलाय अपनी हलकई प्रगट कर उनका गौरब कम नहीं किया चाहते ।

। बाल्य बिबाह नाटक।

पं— देवीप्रसाद शर्मा रचित इस नाटक मे बाल्यविबाह की फजीहत अच्छे ढंग से दिखलाई गई है भाषा भी मनोहर है फरुखाबाद आर्य समाज की सहयता से छापी गई है मूल्य ≈)॥ है

हिन्दीप्रदीप।

मासिक पत्र।

बिद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित   प्रगट ह्वै आनंदभरै ॥
बचिदुसह दुरजन बायुसों   मणि दीप समथिर नहिंटरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति   कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख   तादि भारत तम हरै ॥

---

१ अक्तूबर नवम्बर दिसम्बर सं०१८८७ जिल्द ११ २-३-४- संख्या

इलाहाबाद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
देशोपकारक यंत्रालय में प्रकाशित
किया गया

मूल्य अग्रिम ३।≠)   पीछे देने से ४।≠)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १॥≠)

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द ११ संख्या २-३-४ | १ अकटूबर नवेम्बर-दिसम्बर सन् १८८७ ई०

। परदेके आड़ से हमारी बेपरदगी ।

संसार मे जितनी वस्तु अथवा जितने प्राणी देखने मे आती हैं उनका ऊपर का आकार कुछ और होता है भीतर का कुछ और ही यदि बाहर और भीतर का एकसा रहे तो सजावट और कारीगरी को बिश्राम पाने का स्थान ही न रहेगा—बाह्य और आभ्यन्तर के भेद मे आज कल की प्रथा के अनुसार जो मनुष्य जितनाही प्रबीण है वह उतनाही सभ्य समझदार नीति कुशल और बिजयी माना जाता है और जो जितनाही इस्मे पिछड़ा हुआ है या यों कहिये जिसने ज़ाहिरदारी या लौकिक का जामा पहन कपट कापटिक होना जितनाही कम सीखा है उसे उतनाही अर्द्ध शिक्षित असभ्य मूर्ख बिजित सभ्य समाज से निकाला हुआ समझना चाहिये जो भाव मनुष्य के हृदय सरोबर से उठ संसार के सब ब्यापारों मे मुख और जिह्वा के द्वारा बिना कुछ अदल बदल पाये जैसे के तैसे काम मे लाये जांय तो दुनियादारी अथवा सभ्यता या सिबिलज़ेशन का उच्छेदही होजाय—चित्त मे जो २ भाव उठती हैं उनको अपनी शक्ति से जितने रूप मे बदल २ कर बाहर निकालियेग। उतनाही इस संसार मे प्रशंसा पात्र और आदर के योग्य बनिये गा और इसी

को ऊपर का रूप कुछ और और भीतर का कुछ और कहना[मेरा सिद्धान्त है—संसार के सकल पदार्थों के प्रति भासित होने का कारण प्रकाश है और भावों के आने जानेका प्रधान हेतु मनो वृत्ति या अन्तः करण है और जब समस्त वस्तु के विषय अपने २ धर्म पर यथास्थित ज्यों के त्यों उपस्थित हैं तो सन्देह होता है कि कुछ का कुछ देख पड़ने का कारण क्या है। गहरी डुबकी मार कर देखियेगा तो आप को सबके मध्य मे व्याप्त रहने वाला एक परदाही देख पड़ेगा और इस परदे का नाम आप चाहो जो रख लीजिये—इसे चाहो माया कहिये चाहो अज्ञान कहिये अन्धकार कहिये आवरण कहिये कर्मों का फल कहिये पालिसी कहिये जल के लिये तरंग कहिये लकड़ी के लिये वार्निश कहिये कपड़े के वास्ते कलफ़ कहिये कागज के वास्ते ग्लेज़ कहिये धातुओं के वास्ते गिलट कहिये मीना कहिये इत्यादि पर वास्तव मे इस संसार नाट्य शाला मे सभ्यता रूपी मंच पर अपने२ व्यापार रूपी पात्रों के द्वारा एक दूसरे को ठगने का यह परदाही सहायक है- जिस नाट्य शाला मे परदा नहीं है उसको भड़ौती कहेंगे और भड़ौती मे रूपका बदलना नहीं होता उसको ठट्ठेबाज़ी या बैठक बाजी अथवा भताई पन कहेंगे— सृष्टि की आदिमे इस परदे का प्रचार कम था।इसी लिये उस समय को सत युग या "गोलडेन पीरिअड„ कहते हैं ज्यों२ समय बीतता गया मनुष्य जो पदार्थ नित्य देखतेथे उन्हे पुराना समझ नये२ पदार्थ पानेकी चेष्टा में लगे और यह उनकी इस प्रकार की चेष्टाही संसार मे परदा को पैदा करने वाली हुई जिस्मे यहां तक सुथरापन नफासत और तरक्की की गई कि इंगलेंड सरीखे देश आज दिन इस बात मे पराकाष्ठा की सिद्धि को प्राप्त हो गये हैं—इस्मे सन्देह नहीं हमारे पाठक वृन्द चौंक पड़े होंगे क्योंकि वे जैसा परदा इस देश में देखते हैं वैसा इङ्गलेण्ड प्रभृति देशों में नहीं पाते परन्तु ऐसा विचार करना भी उनकी आंख के सामने का एक परदा है हमारा परदा केवल परदेवालियों तक रह कर बाहर वाह्य वस्तुओं में उतना न फैल सका

जितना विलायती कारीगरी की नकल और देखा देखी से हुआ न मानिये मिलान करते चलिये अन्त को आप से यही कहते बनैगा हम निःसन्देह मोर के पङ्खों को उखाड़ उसे कौआ बनाना चाहते हैं—भांत २ की कारीगरी जो हाल में विलायत की कृपा से हमारे देश में चल निकली है जिस्का परिणाम यह देखा जाता है कि हमारा राज्य कारीगरों के हाथ में चला गया इस्का कारण यही हो सक्ता है कि इङ्गलेण्ड की अपेक्षा इस देश वाले नितान्त मूर्ख हैं क्योंकि यहां वाले भीतर पोल और ऊपरी झलक और चमचमाहट करना नहीं जानते—ज्यों २ खूबसूरती निकालते जाइयेगा त्यों २ पोलापन और कमज़ोरी आती जायगी—खूबसूरती लाने में अर्थात् जो मिले उसे बलहीन कर डालने में इंडिया अभी सहस्रों वर्ष तक पीछे हटी रहेगी—इङ्गलेंड की प्रजा में यह एक स्वाभाविक गुण है कि राजपुरुषों से लेकर छोटे दरजे के मोची लुहार बढ़ई तक को यह हुनर मालूम है कि जो सामने आवे उसे बलहीन कर डालो किन्तु ऊपर से ऐसा परदा छोड़ दो कि कोई उनकी चालाकी को ताड़ न सके और इसी बात के विचार में करोड़ों मनुष्य दिन रात लगे रहते हैं सैकड़ों क्लब और कमेटियां इस्के लिये नियत हैं–२० वर्ष पहले की बनी विलायती चीज़ों से मिलाइये तो हमारे लिखने की सचावट तुरन्त आपके मनमे बैठ जायगी ज्यों ज्यों कारीगरी की चमक दमक बढ़ती जाती है त्यों २ पहले की पायदारी उन विलायती चीज़ों की कोसों दूर हटती जाती है–हमारा देश पहले की अपेक्षा कानून की बारी की रेल तार नहर सड़क डाक आदि से दिन प्रति दिन अधिक २ सुशोभित होता जाताहै पर उस्के साथही साथ नित्य प्रति दुर्बलता और कमज़ोरी भी हर एक बातों की बढ़ती जातीहै—एक बातहै जिस्की दुर्बलता हम गिना वे अन्नकी कृशता– धनकी क्षीणता– सीधापन सचाई ईमानदारी की दुर्बलता–श्रद्धा आस्तिक्य बुद्धि तथा विश्वास का घाटा इत्यादि–हमारे राजकर्मचारी जो ऊपरी परदा छोड़नेमे बड़े निपुण हैं नित नया कानून गढ़ प्रजा को जितनाही खूब सूरत बनाते जातेहैं उतनाही प्रजा क्षीणबल– क्षीणसत्व– क्षीणधन–

होती जातीहै नहीं तो रुक्माबाई के मुकद्दमे की बुनियाद पर जो तिलाकनामे "डेवोर्स एक्ट„ का आन्दोलन होरहाहै उस्से क्या प्रजा सुखारी होगी एवम्" मेडिकल रेजिसट्रेशन ऐक्ट„ के प्रचार से प्रजा क्योंकर निरोग होजायगी– हिन्दू प्रजामात्र मूड़ पटकतेर थकगये "स्लाटर हौस„ का नियम न हुआ कि गौओंकी रक्षाहोती— लिबरल दल के लार्डरिपन क्या किसी को देगये कि उनके लिये जयर की धुनि बांध दी गई पृथ्वीपर उनका पैर न पड़ा लोग उनको कन्धोंपर लादे २ फिरे— बड़ीर अदालतों से जिन्मे रक्तबीजकी सन्तान के समान वकील मुखतार और वेरिस्टर बढ़ते जातेहैं देशका कौनसा कल्याण हुआ–प्रत्येक नगर म्युनिसपलिटी के नयेर प्रवन्ध से चौगुनी चुंगी के बोझसे दबा जाताहै देशका कौनसा उपकार हुआ— मैं समझताहूं इस सब का उत्तर सिवाय उस महा आवरण परदे के और क्या होसक्ताहै– क्योंकि तिलाक नामेके जारी होनेका परिणाम यही होगा कि देश भरमे पति पत्नी के बीच कलह मच जायगी लन्दन के शहर का नमूना हमारे प्रत्येक नगरोंमे देख पड़नेलगेगा प्रतिमास हज़ार बारह सौ मुकद्दमे इस क़िस्म के अदालतोंमे दायर हुआ करेंगे–किसी पतिने अपनी पत्नी को अपराध लगाकर गोली मारदी किसी पत्नी ने अपने पतिको ज़हर देदिया– कोई अपने पतिसे इच्छा अनुसार खाना कपड़ा न पाय अदालत दौड़ी इत्यादि— इसीतरह मेडिकल रेजिसट्रेशन ऐक्ट के प्रचार से हमारे वैद्यक शास्त्र पर छूरी चल जायगी सर्कार समझती है इस ऐक्ट के जारी होने से प्रजा को नीरोग कर देंगे– यदि हमे बलवान् और नीरोग करना होता तो हाल मे बंबई के माला बारीने बाल्य विवाह के उठा देने के लिये इतना घोर आन्दोलन किया सर्कार ने यह बहाना कर कि वह हामारे धर्म मे हाथ न डालेगी एक न सुना बाल्य विवाह के संबन्ध मे यदि कोई ऐक्ट कर दिया जाता तो देश का देश निरामय हो निर्बलता के बन्धन से मुक्त होजाता मेडिकल रेजिसट्रेशन ऐक्ट तो हमारी निर्बलता दूर करने का एक परदा मात्र है—इस मेडिकल रेजिस्ट्रेशन ऐक्ट के प्रचार से धीरे २ देश के वैद्य और

हकीम दो कौड़ी के कर दिये जांयगे डाक्टरों की बन पड़ेगी जो बीमारी टके के नुसखे देशी दवाई सोंठ पीपर मिर्च मे दूर होती हैं उनके दूर करने को मछली का तेल बरांडी तेजाब हड्डी का सत्त आदि बड़े दाम की दवाइयां खाने पर भी एक दिन मृत्यु आवेही गी और अन्त को अभिनय के समय परदे के भीतर से वे ही पात्र निकलें गे जो आप को बलहीन करने के सिवाय सबल कभी करी नहीं सक्ते।

फिर इस परदे का एकही रंग रूप हो सो भी नहीं बरसाती कीड़ों की भांत यह समय २ अनेक रंग रूप बदला करता है—"अनेक रूप रूपाय विष्णवे प्रभ विष्णवे,, तिल मे तेल के समान यह परदा अंगरेजी पालिसी के सर्वांश मे व्यापक है इसी से हम इसको विष्णु के साथ व्यापकता धर्म मे उपमेय मानते हैं– जब से इनके चरण कमलने भारत की पृथ्वी को सुशोभित किया तब से आज तक इस परदे की परदगी बढ़तीही गई अब इस समय थोड़े दिनों से इसका नया ढंग कमिशन के रूप मे निकल पड़ा है– शिक्षा कमिशन नियत किया गया एक महा विद्वान् एल––एल–डी–इसके सभा पति नियत हो कर आये रातो रात लोगों ने जाग २ अभिनन्दन पत्र "एड्रेस„ तैयार किये बड़ी भारी सभा जुड़ी उनके सामने खूब अपने दुख रोये—परन्तु हमारी सीधी और भोले जी की प्रजाने यह न समझा कि यह केवल परदाही परदा है जिस्के भीतर कुछ औरही तिलिस्म इकठ्ठा है ज्यों २ यह परदा उठता जाता है इस्के पात्र निकलते आते हैं जिन लड़कों की तालीम चार आने मे होती थी उनके लिये दो रुपया महीना खर्च करना पड़ता है अब "नयायुनिवरसिटी„ खोला गया है अवश्य कई एक बड़े २ कालेज छप्प कर जिये जांयगे दूसरा फल इसका यह भी अवश्य होगा कि पंजाब "युनिवरसिटी„ के पास किये हुये पश्चिमोत्तर मे नौकरी न पावें पश्चिमोत्तर के बंगाल मे इत्यादि— अब सिविल सरविस कमिशन और फिनेन्स कमिटी जारी है देखें इन परदों का ज़हर कहांतक असर करता है— परदा छोड़ने वाले ये सब भांत २ के कमिशन किये जाते हैं अन्न का

30

कमिशन न किया गया कि बिलायत मे जो यहां का अन्न ढोया जारहा है वह बन्द होता और अधिकांश प्रजा जो खाली पेट सोरहती है सो पेट भर अन्न खाने को पाती पर इस प्रकार के कमिशन मे परदे की तो गुंजाइश नहीं है किन्तु उलटा इंगलेंड का परदा फाश होता है और वहां के लोग विना अन्न भूखों मरने लगें गे जब पर्दे से पर्दा छोड़ने वलों का नुकसान हुआ तो वह परदाही किस काम का किन्तु यह तो हमारी बे परदगी के लिये है कि इस्के द्वारा अन्न धन वस्त्र सब से हीन हो कौड़ी २ के लिये दर २ डोलती फिरैं-इसी से हम परदे मे अपनी बेपरदगी निश्चय कर अपनी भाग्य सराहती हैं और अंगरेजी राज्य को कोटि २ धन्यबाद दे आनन्द मे फूले नहीं समाते। व-रा

"न्याय सभा नाटक,,

।बाबू रतनचन्द वकील हाईकोर्ट संपादित।

।भूमिका।

यह नाटक इस अभिप्राय से लिखा गया है कि जब राज्याधिकारी प्रजा की जाति के नहीँ होते और वे प्रजा को तुच्छ समझ बैर भाव से देखते हैँ तो प्रजा भी उन्हे उसी भाव से देखने लगती है और अन्त को ऐसा बिरोध बढ़ जाता है जो राजा प्रजा दोनो के लिये हानि कारक होता है—इसमे यह भी दर्साया गया है कि राजा के मन मे यदि इस प्रकार का बिरोध नहीँ है और वह अपनी जाति को और प्रजा की जाति को एकही समझता है तो अधिकारियों के बिषम आचरण से जो बिरोध का अंकुर जमा था वह मिट जाता है और सब लोग सुख पूर्वक रहते हैं।

इसमे न्याय के फल और अन्याय के कुफल भी प्रगट किये गये हैं और यह भी दिखाया है कि प्रजा के चित्त को सब से अधिक यह बात हर्षित करती है कि हमारा राजा न्याय करता है और अन्याय को नहीं चाहता।

इसमे यह भी स्पष्ट रीति पर विदित किया गया है कि अच्छे लोगों की यही बड़ी पहचान है कि वे सर्वसाधारण के लाभ को अपने लाभ से बढ़ कर मानते हैं और धर्म बिरुद्ध बातें किसी की प्रसन्नता के हेतु नहीं करते—इससे राजा और प्रजा के धर्म और राज्याधिकारियों की शिक्षायुत बातें भी बहुत स्थलों मे मिलैंगी।

मैं आशा करताहूं पढ़ने वाले यदि कोई बात इसमे अनुचित पावें तो मुझे सूचित कर दें कि जिस्मे वह सुधार दीजावे।

रतन चन्द

सूत्रधार

आजमेरे सौभाग्य की सीमा नहीं है कि ऐसे २ धनी मानी ज्ञानी देश हितैषी महानुभाव सज्जन जन मेरा अभिनय देखने को एकत्रित हुये हैं—इस्से इस समय मेरा प्रधान कर्तव्य यही जान पड़ता है कि इनको कोई ऐसा अभिनय दिखाउं जिस्मे आदि से अन्त तक देश का हित निकलता हो और इन देश हितैषियों के चित्त मे इस बात का निश्चय कर देना मेरे आज के खेल का मुख्य लक्ष्य होना चाहिये कि अपने राजा के लाभ को जो एक प्रकार से प्रजाही का लाभ है निज के लाभ से बढ़कर समझें परन्तु खेल बड़ा है रात्रि अधिक बीत गई इस्से नटी को बुलाकर संगीत का तो अब

32

अवसर न रहा और पात्र लोग भी सब सज्जित हो चुके हैं तो हम अपना और इन महानुभाव सभासदों का समय क्यों व्यर्थ जाने दें प्रस्तुतही का अनुसरण क्यों न करें--प्रस्थान ।

१ अंक

१ गर्भांक

।स्थान आगरा बादशाह की कचहरी।

। बादशाह और बीरबल बैठे हुये।

बाद-हम तो सब काम अपनी प्रजा के प्रसन्न रखनेही को करते हैं तौ भी प्रजा सन्तुष्ट नहीं होती इस्का क्या कारण है।

बीर--मुझे तो इस्का कारण यही ज्ञात होता है कि हुजूर का क्या इरादा है इस्का ठीक २ पता प्रजा को नहीं लगता--दूसरा कारण यह भी है कि हुजूर मुसल्मान हैं और प्रजा अधिकांश हिन्दू हैं जिनको हुजूर की कौम से हमेशा दुख मिलता रहा है जब तक आपके मनोरथ ठीक २ उन्हें न जान पड़ जांयगे तब तक उनको सन्तोष होना अति कठिन है।

बाद-तो ऐसा काम करना बहुत उचित है जिस्से प्रजा को सुख मिले उन्हें दुखित देख मेरा जी अति दुखित होताहै- अचरज की बातहै कि मैं उनको प्रसन्न रखने के उद्योगमें लगारहूं तौभी उन्हें सुख न मिले--बीरबल तुम इस बातका निश्चय करो कि कौन सा हमारा बर्ताव उनके साथ उनके मनको दुखित करताहै जिस्मे हम उस कुत्सित बर्ताव के दूर करनेका उपाय करैं- हमने यह स्थिर कर लिया है कि हिन्दू मुसल्मान दोनोको एक दृष्टि से देखैं जिस्मे वह बैर भाव जो हमारी कौमके बादशाहोंकी अनीति के कारन पैदा हो गया है जाता रहे।

बीर--हुजूर इस्से अच्छा और कोई उपाय प्रजाको प्रसन्न रखनेका नहींहै कि वे अपने मनमे पूरा बिश्वास करलें कि हुजूर अपने पुरखोंके समान अन्यायी नहीं हैं।

बाद—अन्याई शब्द सुन कुछ कोधित हो त्योरी चढ़ा—क्या हमारे पुरखे अन्यायी थे ?

बीर—मैंनेतो आपके पुरखों को देखा नहीं पर जिन्हों ने देखा है वे उन्हें अन्यायी ही बतलाते हैं—जो आप अपनी पुरखों के चरित्र सुनें और न्याय की दृष्टिसे देखैं तो निश्चय है आपभी उन्हें अन्यायी कहैं—न्याय और अन्याय की जड़ प्रत्येक मनुष्य के हृदयमे लगी है जो बात अन्याय की मनुष्य करता है बिवेचनाशक्ति तुरन्त उसे पहचान लेती है कि यह अन्याय से बचती हैं और न्याय के पक्ष पातीहैं इस कारण प्रजा तुरन्त जान लेगी कि आपके पुरखों के काम न्याय संमत थे या न्याय बिरुद्ध ।

बाद—हमारे पहले लोग न्यायवान् थे या अन्यायी—इस्मे कुछ सन्देह नहीं कि प्रजा उनसे प्रसन्न न थी और उसी बैर की गांठ उनके मन मे ऐसी दृढ़ हो गई है कि हमारे सब काम चाहे जैसी इच्छा से हम करैं उनकी दृष्टिमे अनुचित जचते हैं । सो वीरन तुम ऐसा उपाय करो जिस्मे प्रजा के मनसे वह बैर भाव जाता रहै और हम उनके हृदय कमल निरन्तर प्रफुल्लित देखैं ।

बीर—पृथ्वीनाथ, प्रजाको प्रसन्न रखने के लिये दो बात बहुत आवश्यक हैं एक यह कि प्रजाके मनमे निश्चय होजाय कि राजा हमारा भला निरंतर चाहता है—दूसरे यह कि प्रजा की धर्म संबन्धी बातों मे राजा कभी हाथ न डाले उनका न्याय भली प्रकार से करता रहे और उचित कामों मे उन्हे स्वतंत्र करदे ।

बाद—बीरबल तो तुम अच्छी तरह इस बातका निश्चय करो कि हमारी प्रजा के अप्रसन्नता के क्या कारण हैं और वह किस्के अपराध से हैं और इस्के लिये जोकुछ खर्च पड़े वह हमारे खजाने से दियाजाय मै टोडरमल से कहदूंगा—बीरबल तुम मुस्तैदी के साथ इस कामको जल्द पूराकरो बल्कि अपनी मदद केलिये आकिलखां को भी अपने साथ रक्खो ।

बीर—जो हुकुम हुज़ूर का (दोनोगये)

। टोडर मल्ल का प्रवेश ।

टोडर—मै हुजूर की उदारता से हैरानहूं जिस किसीने लल्लो पत्तोकी दो चार बातें इधर उधरकी किया कि फिसिल गये यह नहीं समझते कि आमद से अधिक खर्च करना कौनसी बुद्धिमानी है—बीरबल एक चालाक छटा आदमी— किसी न किसी बहाने सर्कार को अपने काबूमे कर अपना मतलब गांठताहै— टोडरको लोग सूम प्रसिद्ध किये हैं यह कोई नहीं समझता रुपये पैसे का मामिला कैसा कठिन होता है एक २ पैसे का हिसाब रखना पड़ताहै इस खर्चको मै किसमद्द मे दर्ज करूं—ये लक्षण कोई अच्छे नहीं राज पाट कभी ऐसी उदारता और फजूल खर्च मे स्थिर रहा है अच्छा तो मैं भी जाताहूं जब तक निभता है चलाताहूं नहीं देखा काम करूंगा (प्रस्थान)

---

२ गर्भाङ्क

स्थान

। गांव के पास एक बगीचा ।

। बीरबल आकिल खां भृत्यवर्ग बैठे हुये ।

बीर— (आकिल खांसे) साहब क्या करना चाहिये— ये लोग ऐसे डरे हैं कि सच्चा२ अपने मन का भाव नहीं प्रगट किया चाहते इन के सीधे और सरल चित्त मे यहां तक अपने राजा को भक्ति और भय समाया हुआ है कि अनेक२ दुःख और क्लेश सह कर भी भीतर ही भीतर मसोस२ रह जाते हैं पर कोई बात मुह पर नही लाते और हम लोगों को बादशाह का नौकर समझ हमसे और भी छिपाते हैं— तो इस लिये इनको यह निश्चय कराना चाहिये कि हम लोग बादशाह के विरोधी हो कर उनकी भलाई की नीयत से यहां आये हैं— इस लिये आकिल खां तुम गांव मे जाकर गांव के एक २ सर पंच और हर फिरके के एक २ सरदार चौधरियों को समझा बुझा

मेरे पास भेजो तुम्हारी अक्किल ज़रूर इसमे काम करेगी इसी लिये तुम्हारा नाम आक्किल खां है।

आक्किल खां—भला उपाय आप ने सोचा— अच्छा मै जाता हूं (प्रस्थान)

बीर—(स्वगत) यद्यपि ऐसा करने से बादशाह सलामत मुझसे खुश होंगे परन्तु मेरे साथी और सब राजकाज अधिकारी अवश्य चिढ़ैं गे-यद्यपि थोड़ा सा फरेब तो ज़रूर इस काम को सिद्ध करने के लिये करना पड़ेगा पर अन्त इसका उन्ही लोगों की भलाई के लिये है जिनसे यह फरेब किया जाताहै।

(हर भजन सिंह हीरा सिंह संपत सिंह का प्रवेश)
। तीनो बीरबल को सलाम कर खड़े रहते हैं।

बीर—भाई आज आप लोग इसलिये बुलाये गये हैं कि आप लोगों से कुछ सलाह करनी है घबड़ाओ मत कि कोई नया टिकस हम पर लगाया जायगा या कोई दूसरा अत्याचार किया जायगा बरन एक ऐसे मामिले मे आप से सलाह करनी है जो हमारे तुम्हारे तथा सब देश भर से संबन्ध रखता है आप लोग डरिये नहीं मेरे पास आ कर बैठ जाइये (नौकरों को इशारे से बाहर करता है)

हरभजन-जी सरकार का हुकुम (स्वगत) परमेश्वर कुशल करे आज हम लोगों का जो बुलावा है तो कुछ न कुछ ज़रूर दालमे काला है-(तीनों बैठ जाते हैं)

बीर—भाई तुम से यह पूछताहूं तुम सब प्रजा गण हमारे बादशाह सलामत से प्रसन्न हो या नहीं– यदि नहीं हो तो इसका कारण क्याहै?

हर—हम सब लोग बहुत प्रसन्न हैं (कुछ घबड़ाकर) और जान माल से बादशाह सलामत के लिये हाज़िर हैं।

बीर—भाई तुम डर से ऐसी बात कहते हो--मै गंगाजी की शपथ कर कहता हूं कि मै तुम्हारी बुराई किसी तरह नहीं चाहता बरन तुम लोगों की भलाई के लिये अपनी निज की हानि भी सहने को उद्यत हूं-आप लोग मेरीबात पर विश्वास रक्खो और जो काम मैने उठाया है उसे ध्यान देकर सुनो तब आप को तुरंत निश्चय हो जायगा कि मैं जो कहता हूं वह सत्य है वा नहीं।

हीरासिंह—नहीं२ हम लोगों को सब तरह पर बिश्वास है कि आपकी बात झूठ नहीं है हम लोग सब भांत आपकी सहायता करने को उद्यत हैं।

बीर—यह तो आप को मालूमही है कि मै भी आपही की कौम का हूं—इस लिये जहां तक हो सकेगा आप लोगों की भलाई मे तत्पर रहूं गा—परन्तु मै बादशाह की ओर से एक अधिकारी भी हूं इसलिये अपने मालिक की हानि भी नहीं चाहता यदि दोनो बातें एक दूसरे से बिरुद्ध होतीं तो कभी मैं इस काम मे न पड़ता या इस अधिकारही को छोड़ देता परन्तु मैने जो बिचार कर देखा तो दोनो मे एक दूसरे का सहायक पाया— इसे आप निश्चय जानिये हमारे हज़रत सलामत तन मन धन से प्रजाका भला चाहते हैं— हिन्दू और मुसल्मान दोनो को अपने२ धर्म मे स्थित देख प्रसन्न होते हैं ईश्वर से डरते हैं— और रात्रि दिन यही प्रार्थना करते हैं कि जब तक उनका राज्य रहे प्रजा सब सुखी रहें— पुराने समय का इतिहास जब देखते हैं और हम लोगों पर मुसल्मानो की अनीतिका हाल पढ़ते हैं तो आंसू भर लेते हैं इस्से निश्चय होता है हमारे हुजूर बड़े दयावान् और न्यायी हैं— बाजे २ स्वलाभ पोषक मंत्रियों ने हज़रत के मन को प्रजा की ओर से हटा देना चाहा और सूचित किया कि ये गैर कौम के लोग कभी अपने न होंगे और इसी कारण से अगले बादशाह भी इन पर अनीति करते आये मै भी उस समय था मैने अर्ज़ किया जब तक ठीक २ बात न ते करली जावे कि प्रजा ने राज द्रोही कर्म क्यों किये मै नहीं कह सक्ता कि इस्मे प्रजा की भूल है या आप के अधिकारियों की—और जब तक आपकी ओर से प्रजा को ऐसा बिश्वास न कराया जाय कि आप तन मन धन से उन को अपने बाल बच्चों की भांत चाहते हैं तब तक प्रजा जो नितान्त मूर्ख है कभी यह विश्वास नहीं कर सक्ती कि आप उनकी बात सुन अपने स्वलाभ पोषक अधिकारियों को पदच्युत कर उन्हें दंड देवेंगे—बादशाह ने मेरी इस बात को पसन्द किया और आज्ञा दी कि तुम इसकी खोज करो कि हमारे अधिकारियों मे कौन लोग ऐसे हैं जिनकी अनीति के कारण प्रजा हम से विद्रोह चाहती है जिस्मे मैं उन अधिकारियों

का दंड द्वारा शासन करूं—ऐसा समय ईश्वर ने देश के सौभाग्य के कारण दिखलाया कि मुसलमान बादशाह जो हमारे लिये सब तरह पर विदेशी राजा है उसके मन में हमारी ओर से इतनी जगह हो—अब आप सब लोगों को उचित है कि जो २ बातें आप के जी की हों उन्हें खोल के कहो कि उनके दूर करने की उपाय की जाय।

संपत सिंह—सर्कार जो कुछ हम लोगों का भला होन हार है वह सब आपही के किये से होगा हम लोगों को तो इतना भी साहस नहीं है कि बादशाह सलामत के एक प्यादे की भी बात दोहरा सकें-पर जो आप हमारे सहायक हों और इस बात का भरोसा दें कि हुज़ूर हमसे नाराज़ नहोंगे तो अपना सब दुःख उनकी सेवा में निवेदन करदें।

बीर—मैं आप लोगों को निश्चय कराता हूं आप लोग अपना दुःख हुज़ूर से ज़ाहिर करैं आपका किसी तरह का नुकसान हरगिज़ न होगा हमारे बादशाह सलामत बड़े दयालु स्वभाव के हैं अवश्य तुह्मारा दुःख दूर करने का उपाय करेंगे और इस बात को भी जाने रहो कि हम लोगों मे अभी इतनी ताकत नहीं आई कि मुसल्मानों को देश से निकाल सकें और २ मुसल्मान बादशाहों से यह हज़रत सलामत बहुत अच्छे हैं इस लिये इन के मन के माफिक चलने मे आप सब लोगों को लाभ ही लाभ है हानि कुछ नहीं है।

हर—बात तो सत्य है पर मुसल्मानों के जैसे २ अन्याय हम पर होते हैं वे नहीं सहे जाते-अभी तक तो हम लोग अज्ञान मे पड़े थे और यही जानते थे कि हमारा पद क्या है जो हम अपने जीतने वालों का किसी बात में सामना कर सकें—यही समझे हुए थे कि हम लोग केवल मेहनत मजूरी से पेट भर लेने और मुसल्मानों की आज्ञा पालन करने के लिये पैदा किये गये हैं-परन्तु अब आप की कृपा से वह अज्ञान जाता रहा और हम मुसल्मानों से किसी बात मे कम नहीं हैं बरन यह हमारी सह न शीलता और आलस्य ही का फल है कि मुसल्मान लोग जो दूसरे देश

के आदमी हैं हमारे देश में आय सब तरह के ज़ोर ज़ुल्म के साथ हम पर बादशाहत करते हैं हमें अत्यन्त तुच्छ समझते हैं—क्या हमारे लिये चिल्लू भर पानी में डूब मरने के लिये इतना ही सोचना बहुत नहीं है कि हमारे पुरखे इस देश के कैसे नीति निपुण राजा थे वही हम उन्ही के वंश में पैदा थोड़े से म्लेच्छों से अनेक प्रकार के अत्याचार सह कर भी हुकूमत किये जाते हैं-और लङ्गड़े गधे की भांत इस हत जीवन को घसीट रहे हैं क्या हम लोगों को संसार में पानी के बुल्ले समान अनित्य जीवन ऐसा प्यारा है कि उसके कारन अपना देश और स्वच्छन्दता खो बैठें—क्या यह विचार हमारे मन को कमल की भांत प्रफुल्लित न करेगा कि हमारे देशी भाई हमारे अनित्य जीवन की हानि से म्लेच्छों के असंख्य अन्यायों से बचे जिसे दिन रात वे सहा करते थे [ठहर कर] महाराज कृपा कर मुझ को क्षमा कीजिये इस समय मुझे यह स्मरण न रहा कि यह सब बात मैं किस के सामने कह रहा हूं।

वीर—मैं इस समय आप की बात सुन और आप का वीर स्वभाव देख अति प्रसन्न हुआ और अब निश्चय हो गया कि देश के कुछ अच्छे दिन आये कि जब प्रजा मण्डल के मुखिया आप लोगों के सदृश देख पड़ने लगे जो देश हित के लिये तन मन धन सब कुछ अर्पण करने को उद्यत हैं वरन ऐसे काम में जान तक दे डालने को सुख का मूल समझते हैं हे देव तुम भारत पर कब दया करोगे कि इन म्लेच्छों से इसका उद्धार हो—आप लोग निश्चय मानिये जो मैं अपने अधिकार पर बना रहा तो क्रम क्रम आप के सब दुःख एक एक कर दूर हो जांयगे—।

हर—यदि आप के सदृश उच्चपदाधिकारियों की ऐसी इच्छा है तो बहुत जल्द हमारा मनोरथ सिद्ध होगा—हम लोग सब भांत आप के आज्ञाकारी हैं जिस समय जो आज्ञा होगी उसको पूरा करना हमारा काम है और परिणाम सोंच आज्ञा देना आप का काम है क्योंकि हम लोग मूर्ख मनुष्य हैं इस काम का अन्त में क्या फल होगा इसे नहीं सोच सकते क्यो

ध में आप बिना सोचे समझे भी काम कर डालते हैं पव आप से बुद्धिमान् नीति कुशल हमारे राह दिखाने वाले हुए तो क्यों न हमारा भला होगा।

बीर—मैं आप लोगों से अति प्रसन्न हूं—अब रात अधिक गई अपने अपने घर को पधारिये फिर इस्की सलाह करेंगे [सब गये]

क्रमशः

। लिलार ।

हमारे कानपूर के सहयोगी संपादक शिरोमणि ब्राह्मण "भौ" पर अपने कलम की कारीगरी का उमदा नमूना दिखला चुके हैं उन्ही को अपना शिक्षा गुरू मान हम भी आज लिलार पर अपनी लेखिनी की सुघराहट की बानगी का दो एक नमूना चतुर पाठकों को दिया चाहते हैं—सच पूछिये तो भौं की उसआड़ी बेल के खिलने को जिस्मे उक्त संपादक की कारीगरी का निचोड़ है भूमि या ज़मीन यही चौड़ा चकता माथा है—सांझी बाज़जान सक्त हैं पहले ज़मीन साफ कर तब बेल बूटे उठाये जाते हैं—अथवा भौं रूप शोसनी तहरीर के बाद यह लिलारही ऐसी चौड़ी बेल आपड़ती है जिस्मे ललना जन सौभाग्य सूचक सिन्दूर रोरी या श्याम मंजनी आदि के रंग बरंगे भांत २ के बूटे जमाय टिकुली रूपी बुन्दा उस्मे जड़ अपने सौन्दर्य को शतगुण विशेष करती हैं—अथवा बिधना के अमिट अक्षरों के लिखने को यह भाल पहही एक मज़बूत स्लेट मिली है जिसपर बालिश बह्मा लड़कों की भांत आज तक खली पट्टी लिखने का अभ्यास नहीं छोड़ता और जन्म

तुये को छट्ठी के दिन प्रत्येक नये २ भाल पट्ट पाय फिर २ बालक बन बाल क्रीड़ा का अनुभव करता है—दार्शनिकों के समस्त दर्शनों का आश्रय भूत चित्तवामन यद्यपि दसों इन्द्रियों का राजा वा प्रभु माना गया है पर ज्ञान वा बुद्धि का निवासस्थान मस्तिष्कही है इसी से हमारे प्राचीन शास्त्रकारों ने इसे उत्तमाङ्ग माना है यूरोप मे इसी लिये अपूर्व अद्भुत प्रतिभावालों का सिर बिकता है जर्मनी के वृद्ध विस्मार्क न जानिये कै बार अपने बहु मूल्य मस्तिषक का बड़ा दाम ले चुके हैं—नसीब किसमत करम भाग दिष्ट आदि इसी लिलार के अनेक नाम हैं—नसीब के सितारे की चमक को कोई सितारा नहीँ पाता—लोग कहते हैं करम की रेख अमिट है "करम रेख नामिटै करे कोई लाखों चतुराई,, "यद्धात्रानिजभालपट्ट लिखितं तन्मार्जितुं कः,, क्षमः॥ करम की रेख मे मेख मारना बिरले चतुर सयाने पुरुषार्थियों का काम है—चतुरान न की चातुरी का चमत्कार कुछ लिलार ही के संबन्ध से देखा जाता है अच्छे२ बिद्वान् गुणवान् कृत विद्य भी भाग्यवान् के सामने हाथ पसार दीन बनते हैं इसी बात पर कुछ किसी कवि ने कहा है" भाग्यवन्तं प्रसूयेथाः माशूरान् माच पण्डितान्,, धन्य हैं वे भाग्यवान् पुरुष जिनको हर एक के सामने माथा नहीँ नवाना पड़ता—मूर्ख ना समझ को समझा कर राह पर लाने को हजार२ माथा पटको कुछ नहीँ होता" मूरख को समझाइबो ज्ञान गांठ को जाय,,—"ज्ञान लव दुर्विदग्ध

अद्यापि तं नरं नरज्जयति,,-घर में चोरी होगई चोर सेन्ध दे सब माल मताल ढोलेगये इधर दौड़े उधरदौड़े थाना गये पुलिस लाये सौ २ तदबीर किया कुछ न हुआ अन्तको माथा ठोक बैठ रहे—इत्यादि इस लिलार के व्यापार की अनेक लीला देखलाने को हम भी देर तक माथा पचाते रहे पाठक जन न रीझैं तो लाचारी है।

।लावनी।

धन धन्य!! जगत के नाथ तेरी बलिहारी।
भारत की नेशनल कांग्रेस भइ सुख कारी॥
भइ एकता की सोपान सर्व सुख दाई।
मिले पूर्ण प्रेम से हिन्दू तुर्क इसाई॥
मिले बंगाली मद्रासी महराठे भाई।
जी खोल मिले गुजराती अरु पंजाबी सब हरखाई॥
निकसत है सबके मुखसे यह हर बारी।
भारत की नेशनल कांग्रेस भई सुख कारी॥
क्या भारत बासी अब भी पड़े सोवैं गे।
निज लाभ छोड़ मुह मोड़ सिसक २ रोवैं गे।
आमिलो शीघ्र सब देश बन्धु दुख टारी।
भारत की—॥
सब प्रान्त के प्रति निधि देशहितैषी जाओ।
दुख प्रजा का सारा सचमच गाय सुनाओ॥

मत डरो राज पुरुषों से न कुछ शरमाओ।
नहीं होत सांच को आंच तो क्यों घबराओ॥
सब मिटैगा इससे दुःख कष्ट भय भारी।
भारत को—॥

है अब कि बार मद्रास मे कांग्रेस प्यारी।
सब जाव देशके हितू न हिम्मत हारो॥
प्रिय देशके पीछे तन मन धन सब वारो।
यह बिनती है शिव राम की उर मे धारो॥
होवेगा तुह्मारा नाम भी पर उपकारी।
भारत को—॥

।छन्द पार्सियों की ध्वनि का।

जाओ प्यारी सिधारी सिधारी। प्रिय देश का सुख दुख विचारी॥
होगीनेशनल कांग्रेस तुह्मारी। आशा हित की जिससे हमारी॥
प्रजा भारतकी है दुखियारी। सिर से टालो पड़ी दुख भारी॥
शीघ्र मद्रास में तुम पधारो। प्रिय देश का सुख दुख बिचारो॥
कष्ट कहां लो तुह्मे हम सुनावें। न्याय मंहगा औ देर मे पावें॥
बोझा टैक्स का नित २ बढ़ावैं। बिन उद्यम भूखों मर जावें॥
नेक इस ओरतो तुम निहारो। प्रिय देश का सुख दुख बिचारो॥
सिविल सर्विस की वय बढ़वाओ। सभा कानून की सुधराओ॥
पार्लीमेंट मे प्रतिनिधि पठाओ। बिनती करकै यह सब हक पाओ॥
कहेशिवराम यह मानो पियारो। प्रिय देश का सुख दुख बिचारो॥

ठुमरी

चलो प्रिय देश हितैषी सबै मदरास को प्रीति उमङ्ग भरे।
बड़े बड़े धीर बीर पण्डित गन बुद्धिमान् बिद्वान जुरे॥
नेशनल कांग्रेस हो सुख दायक देश को हित उपकार करे।
फूट कपट छल द्वेष कलह हठ मूढ़ता दीनता दुःख हरे॥
बन्धु प्रेम अनुराग परस्पर एकता देश अभिमान धरे। भेजहु
निज निज नगर से प्रति निधि चुन चुन देश हितैषी खरे॥
आयो समय अनमोल सुखद शुभ भारत के धन भाग फिरे।
बिनती करे शिव राम ईश सों बेग दरिद्र अरु कष्ट टरे॥

। लाटसाहब के दफ्तर मे अग्नि के उतपात के संबन्ध मे लोगों के अनेक अनुमान।

६ नवम्बर शनिवार को रात्रि के समय अचानक गवर्नमेंट सेक्रेटीरियट के दफ्तर में भारी अग्नि के उत्पात से बड़ी हानि हुई—मेज़ कुर्सी तो सब जली गये किन्तु कागज़ पत्र जो सन ५७ के गदर मे भी नहीं जले थे वह भी इस भयङ्कर अग्न्युत्पात मे भस्मसात हो गये–जंगी सिपाही गोरों की मदत से आधा के लग भग दफ्तर बच रहा किन्तु वह भाग जहां पुराने २ कागज़ और सनदें रक्खी रहती थीं वह सब का सब जल गया अब इस्पर हमारे देश के लोग भांत २ के अनुमान की खिचड़ी पका रहे हैं–प्रायः हिन्दू दैवी कोप और मुसल्मान गज़ब इलाही बतलाते हैं—नये बन्दोबस्त की चक्की मे पिसे हुये ज़मीदार उसी निष्ठुरता का परिणाम समझते हैं जो उनके साथ जमा बढ़ाने मे की गई–बनिज ब्योपारी महाजन ऐसे उत्पातों के माता पिता का नाम टैक्स रखते हैं–फारसी अरबी के आलिम फाज़िल मिडिलक्लास के इमतिहान की कैद के कारण नौकरी नहीं पाने से

ऐसे उत्पात रूपी वृक्ष का वीज मिडिलक्लास के इमतिहान की कैद ही को पुकारते हैं-और जो देशोपकारी दया शील भारतवर्ष की उत्तरोत्तर अवनति का महा विकराल कारण गो बध देख २ झुलस रहे हैं वे लोग इन उत्पातों के होने को कुछ आश्चर्य नहीं समझते और वास्तव में गो बध सरीखे अन्याय का आद्योपान्त समझने से बड़े २ धैर्यधारी गंभीर पुरुषों का भी अन्तरात्मा बिकृत भाव धारण कर लेता है-खेतिहर जिनपर बेदखली और इजाफ़ा की चिनगारी हरसाल कानून रूपी आग्नेय वलाहक बर्षा करताहै वे भी इन उत्पातों का होना कुछ आश्चर्य नहीं मानते-जिन प्रतिष्ठित और भले मानसों के घर पर और खेतों पर अहर्निश चोरों की अनिवार्य बाधा दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है और पुलिस के ओर से उस्के निवारण के पलटे उस्की वृद्धि के प्रयत्न और चौर सहायक भूस्वामियों के झुंड और युत्य की संख्या के अधिक होने में कुछ प्रतिषेध और रुकावट का आगम राजा की ओर से नहीं पाया जाता जो ऐसे कामों की ज़िम्मेदारी का नेग सब भांत प्रजा से चुका लेता है और शिचा महा नदी की वृद्धि होने पर भी पुलिस के शरिस्ते मे प्रायः नादिरशाही की प्रकृति के से लोग भरे जाते हैं जिनको अपनी संकल्पित कमाई की पूंजी की संख्या पूरी करने के सिवाय राज भक्ति और प्रजा हित से मानों कुछ सरोकार ही नहीं है वे लोग इस उत्पात का कारण चोरों की अधिकाई और पुलिस की असावधानता बतलाती हैं—इन दिनों दिहातों मे चोरों की भय सुन कंप होता है बिशेष कर सोरांव के परगने में कि ढिठाई के साथ ललकार के चोर और उन के सहायक लोग प्रजा के बालबच्चों को उस राजराजेश्वरी के राज्य में भय भीत किये रहते हैं जिस्का प्रताप साम्प्रत समस्त राजराजेन्द्रों से बढ़के हैं-एक २ थाने पर पुलिस के एक ही आदमी का सदा के लिये चिरस्थायी होना उनके अत्याचार को बिशेष बढ़ाता है-आफिसों के क्लर्क जन इस उत्पात का हेतु उस पंक्ति भेद को मानते हैं कि जो सर्कारी छुट्टी के कायदों मे यह नियम कर दिया गया है कि सौ रुपये से कम तनख्वाह वालों

को रियायती छुट्टी बिना उनके अफसर की मरज़ी के प्राणान्त तक होने पर न मिले जो लोग दार्शनिकों के ढंग पर कारण से कार्य का अनुमान करते हैं उन को यह जन श्रुति है कि यह चुरट के व्यसनी किरानी या साहब लोगों की करतूत है जिन के हाथ मे दिन को सेकड़ों बार दिया सलाई का बकस आता है और नशे की दशा या और किसी उमंग मे उस समय यह खयाल नहीं रखते कि सर्कारी कार्यालय मे भर २ आग उड़ाना उत्पात जनक है-अस्तु यह सब भांत २ के अनुमान लोगों के इस उत्पात के संबन्ध मे हो रहे हैं इन सब अनुमानों मे जिन की राय मे पुलिस कृत अत्याचार का फल यह अग्नि का उत्पात ठहराया गया है यह हमे भी ठीक मालूम होता है पुलिस कृत पीड़ा हम लोगों के लिये ऐसही दुःसह है-अब हम अपने नये प्रभुवर श्रीमान् कालविन् साहब बहादुर लफ्टिनेन्ट गवर्नर से प्रार्थना करते हैं कि इस नूतन कानून बनाने वाली कौंसिल मे सब से पहले पुलिस के संशोधन का विचार दृढ़ करें-यह महकमा जीव धन धर्म प्रतिष्ठा की रक्षा के लिये स्थापित है अब वह समय न रहा कि पढ़े लिखे मनुष्य न मिलें जब तक इन्ट्रेन्स पास न कर ले चीफ् कांस्टेबिल का ओहदा न पावे-पढ़े लिखे और नूतन प्रकाश अलियों में जो अन्याय शील भी होंगे तो सौ में एक—मियांजी की प्राचीन ढंग की पढ़ाई वाले जो बचपन से झूठा मसौदा गांठना सीखते हैं वे भला ओहदा पाने पर भी अपनी गुरु परम्परा प्राप्त पद्धति को क्यों कर छोड़ सकते हैं—यदि गवर्नमेन्ट हमारा कहना न मानें और उन्ही लबड़ धौंधो को पसन्द करे तो लाचारी है—जिन प्रबन्ध कर्त्ताओं के अन्याय और सुनी अनसुनी करने का दुखरोना गाते २ हमारी वृद्धा लेखिनी को सबलबाई का रोग हो गया है वह अपने अश्रुबिन्दुओं को ऐसही टपकाया करेगी कभी तो किसी सुयश शाली की दृष्टि इधर पड़ेहीगी ।

। हिन्दुस्तानियों का व्यर्थ मनोरथ ।

हमारे हिन्दुस्तानी भाई व्यर्थ मनोरथ मे कैसे उछल कूद कर आनन्द प्रमोद मे मग्न प्रमोद की आशा मे दिन काटते हैं-मेम्बर बनते हैं-सभायें

स्थापित करते हैं-भांत २ के स्वार्थ और अधिकार गवर्नमेन्ट से मांगते हैं-समाचार पत्रों मे साहस और उद्दण्डतापूर्ण आर्टिकिल लिखते और संभावित असंभावित प्रत्येक विषय मे सम्मति देते हैं-इतना भी कभी नहीं सोचते कि गवर्नमेन्ट का ख़याल हमारी ओर कैसा है—एक सुशिक्षित हिन्दुस्तानी रईस श्रीमान् बड़्सराय लार्ड डफ़रिन महोदय से मिले प्रत्येक बात चीत मे उन्हे सानुग्रह पाया तब उनसे चार प्रश्न किये।

१ यह कि इनकंटैक्स जिस्का कई अवतरण हो चुका है कभी प्रजा का पिण्ड छोड़ेगा? इस्के उत्तर मे श्रीमान् दयानिधि ने कहा कभी नहीं।

२ यह कि हम सब हिन्दुस्तानी राज भक्त और सुयोग्य होने पर भी राज काज के सब अन्तरङ्ग निवन्ध मे क्यों नही भरती किये जाते? इस्के उत्तर मे श्रीमान् ने कहा ये सुयोग्य और विश्वास पात्र नहीं हैं—विशेष कारण यह बतलाया कि ये लोग जहां किसी कार्य मे प्रस्तुत हुये एक दैशिक स्वार्थ की खींच अधिक करते हैं साधारण भलाई पर दृष्टि नहीं देते-इस्के दृष्टान्त मे लेडी डफरिन फंड का दृष्टान्त दिया कि इस फंड के सहायक और दाताओं की दृष्टि छोटे बड़े लाट की प्रसन्नता की लोलुप है स्वदेशीय ललना गणों के श्रेयस्कर कार्यों पर नहीं—प्रश्न कर्ता ने अन्त मे यह भी पूछा कि भला कभी येलोग विश्वास पात्र हो सकेंगे! इसपर लाट साहब ने कहा बहुत बहुत बहुत विलम्ब है।

३ यह कि वालंटियर का काम इन्हे क्यों नहीं मिलता! इस्का उत्तर भी वैसाही मिला जैसा ऊपर कह आये अर्थात् विश्वास पात्र नहीं हैं और मोम के समान हर ओर फिर सकते हैं-तात्पर्य यह कि किसी बात मे पक्के नहीं हैं किन्तु हर एक बात मे कच्चे और अच्च हैं।

४ यह कि हिन्दुस्तानी महाजनों राजाओं नवाबों खानबहादुरों सेठ साहूकारों रईसों ठाकुरों को आप कैसा समझते हैं! इस प्रश्न का संक्षेप उत्तर यह दिया कि जैसा एक किस्म का तमाशा—हमारे बड़्सराय साहब बड़े सुशान्तः करण और दूर दर्शी पुरुष हैं-चाहो उनके हार्दिक भाव से किसी

को कैसोही हानि वा लाभ हो पर उन्हो ने कोई तात्पर्य छिपा नही रक्खा-हमारी क्षुद्र बुद्धि मे यह भी आता है कि हिन्दुस्तानी भाई इस कलियुग के श्वेत बाराह कल्प मे जैसा कि पुरोहित पाधा नित्य संकल्प मे पढ़ते हैं कभी बिश्वास पात्र वा सुयोग्य न बनेंगे–हां जब कभी कृष्ण बाराह कल्प या रक्त बाराह कल्प लगेगा तो कदाचित् इन की सुयोग्यता और बिश्वास पात्रता की बारी आवे।

। मांगलिक स्वागत ।

शान्ति रस्तु सदैव शुभहो सकल बिघ्न निवारणम्।
कुटिल नीति पलाय इत सो होइ धर्म सुधारणम्।
आइये प्रभु कालबिन शुभ गहहु आसन लाटको।
रिपन नाथ सुनीति पालहु चहै डफरिन डाटको।
चहो अगिले तामसन अरु कालबिन मग पालहू।
चहो लायल लवड़ धौंधौं देख नयन हालहू।
मंडलेश बिभाग पति पर जोअनन्त कृपा करी।
खेल खेलत दंड पेलत भूल मूल सुचाकरी।
आपनेही राज आफिस की बुरी गत देखली।
बुद्धि अरु अनुमान करि सब देश बिधि अब रेखली।
गये सब चिरकाल संचित लेख पावक पिटमे।
ऐसेही सब प्रजा रोवत प्रबल दुष्ट झपेटमे।
पुलिस की करतूतिमे तृण जालि कलम लजातुहै।
यहीएक निबन्ध विनुसब कुशल नित्य नसातुहै।
जहां सकल उजड्डपन को दुसह डंका बजत है॥

राज धर्म पलाय नित नित चोर सेना सजत है ।
चहै तनिक जगाय दो कहि नीति शिक्षा भाग को ।
गये सोवत बरिस दस संग लिये देश अभाग को ।
दिनन कटि कटि याम शाला भई गाडर लट्ठ सो ।
श्रीमती को कोश लीलत किते सज्जन गट्ट सो ।
किते पूरब यन्थ बनि गये लक्खन नगर को ।
किते धरना दिये रोवत चिते प्रभुवर डगर को ।
नारि शिक्षा बिना भिक्षा मरी दुचित दुकाल में ।
बात तक कोउ नहीं पूछत गये यहि दस साल में ।
चहै सरल प्रचारि भाषा प्रजा कहं गुण देहु ।
चहै खोलि कठोर आखर सकल मति हरिलेहु ।
चहहु हिन्दी पक्ष गण की दिनन उन्नति होइ ।
चहहु तो चिरकाल श्रम कृत देहु सकल डुबोइ ।
शुभाशुभ अधिकार यहि क्षण दियो श्री पति हाथ ।
ढूंढ के चह मिलहु सुजन नरन की पहिचानि ।
मिलत जो बहु करत अस्तुति शुभग भेख बनाय ।
यही धोखा देत है सब स्वार्थं तत्पर हाय ।
देश के कल्याण हित कोउ बिरल प्रभु ढिग जाय ।
झुकत कहत हुजूर आला उच्चपद ललचाय ।
पूर्व संस्तव जनित सुख प्रभु आज देहु भुलाय ।
बनहु जनु नव पुरुष या जग नीति को अपनाय ।
आदि सी अस अन्त लों जो रहत प्रभु यहि देश ।

भूतिनी सम तेहि खुशामद करत है आवेश।
सो शिफारिस सुता जनि बहु ठनत हैं अन्याय।
पुत्र पच्छ विपच्छ बनि दोउ करैं कर्म्म कराल।
न्याय नाशि कलङ्क लावैं प्रभुन के शुभ भाल।
आपने निज बिनय का प्रभु कहत अन्त निचोड़।
चलहिगो नहिं याहितें कछु दुष्टजन की जोड़।
एक करगत मान बिद्या दूसरे मे न्याय।
दया हृदि सब प्रजा जय जय कहैं शंख बजाय।

।उपयुक्त बिशेषण।

भुजा का—मृड़ाल कमनीय—दण्ड—दोर्दण्ड—शालप्रांशु।
मुखका—चन्द्रानन—अरबिन्दानन—बिकच पंकजदलदास्य आस्यकमल—जितशर्बरीश—प्रभापुंज पिंजरित।

स्मितका—ज्योत्स्नास्मित—सुधाधवल—सुधाबर्षि—कैरव कुल बिकाशि—उदारहास्य।

नेत्रका—स्मितसरीरुहचारु—चंचल चंचरीकसहोदर—मीनतरल।

ललाटका—बिन्द्रुमलतारक्त—शोणसरोज पट—तप्तहाटक द्युतिमुट्।

अधरका—बिम्बौष्ठ—बन्धूक बन्धु—बिद्रुमाधर—अधरित प्रवाल नव लक्ष्मी—बन्धुजीवप्रभाहर—"अधरीय मधीरध्याः बन्धुजीव प्रभाहरः—अन्य जीव प्रभां हन्त हरतीति किमद्भुतम्"।

५०

गुलाब की पखुरी से-जपा कुसुम प्ररोह ।

नासिका—शुक तुण्ड नासिका—दन्तावली विजित दाड़िम दामराजि ।

कण्ठ-कम्बु कण्ठ-कपोत ग्रीव—कपोल का-मधूक कलिका मधुर ।

कन्धे का—वृषस्कन्ध ।

बक्ष स्थलका—कपाट बक्ष-"कपाट बक्षाः परिणद्धकन्धरः„ -रघुः ।

जंघाका—कदलीकाण्ड—करभोरू ।

कमर का—मृगराज कटि ।

चरण का—चरण कमल-पादपद्म- अंघ्रिसरोरुह ।

गमन—गजराज गमन-मरालगमन—"निन्दा मे„—चौंटी की चाल—जनवासे की चाल ।

चेष्टा—काकचेष्टा—ध्यान—बकध्यान ।

निद्रा—श्वान निद्रा—कुंभकरण निद्रा ।

पीतिमा-लवलि फल पाक प्रणयिनी-कनक कान्ति-चम्पक बरण ।

कीर्ति—कीर्ति कौमुदी-कीर्ति मराली ।

यश—स्फटिको ज्वल—करीन्द्र कुन्द कुमुद क्षीरोदनीर प्रभ-शरच्चन्द्र मरिचिरुचि—यशः पुंज पिण्ड धवलित दिक्चक्रवाल-सुयश सुगन्ध सुगन्धितदिङ्मण्डल ।

चिक्कणता और मृदुता-नवनीत-मालती-चमेली-रुईका गहला केश । रेशम के लच्छे—चामर द्युति ।

प्रभा—तड़िद् गौरी—दामिन सी दमकती ।

जीवन—नलिनी दलगत जलवत् तरल—पानी का बुल्ला सा क्षणिक—इत्यादि—फिर कभी ।

।नया न्याय शास्त्र।

न्यायशास्त्र में द्रव्य-गुण-क्रिया-सामान्य-विशेष-समवाय-और अभाव ये सात पदार्थ माने गये हैं तहां द्रव्य धन दो प्रकार के मुख्य है और उसी के आश्रित और सब पदार्थ हैं नित्य और अनित्य-नित्य अर्थात् जो कभी नहीं चुकता जैसा बड़े आदमियों का धन-अनित्य जैसा साधारण लोगों का धन मेहनत मजूदूरी कर रोज़ लाये रोज़ चुक गया-नित्य द्रव्य सदा ऐरन् चग्रस्ट में बन्द रह कर आश्रय की दशा में रहता है और अनित्य द्रव्य कभी आश्रय और कभी आश्रित की दशा मे अर्थात् खाने पीने से बढ़ा ताले मैं बन्द कर रक्खा गया तब यह आश्रय की दशा में रहा और जब रोज़ लाये रोज़ खर्च किया तब यह आश्रित अर्थात् पाने वालों की दशा में रहता है जैसा पाने वाला इस्की चेष्टा में दर २ मारा फिरता है वैसाही यह भी इधर से आया उधर गया-सो ऐसा ही न्यायशास्त्र मे कहा भी है-

"अन्यत्र नित्य द्रव्येभ्य आश्रितत्व मिहोच्यते,,

द्रव्य से पृथ्वी थंभी है द्रव्य के द्वारा यज्ञ किये जाते हैं उसी से स्वर्ग (आकाश) भी थंभा है द्रव्य न हो तो किसी का पानी (प्रतिष्ठा) न बचे द्रव्य से तेज होता है द्रव्य से प्राण वायु ठहरा है-

"मृतस्य हरति प्राणान् यो यस्य हरते धनम्,,

जिस्केपास द्रव्य हैउसी के हाथ मे समय है जिस्के पास लोई उस्का सब कोई,,-द्रव्यवान्के आधीन दिशा है क्योंकि जिस ओर वह रहता है उसी दिशा में सब लोग जाते हैंलोगों केआत्मा और मन द्रव्य हीको ताकते हैं-तौ पृथ्वी-अप्-तेज-वायुआकाश काल-दिशा-आत्मा मन-नैयायिकों के ९ पदार्थ जो हमने गिना येसब द्रव्यात्मक हैं-समस्त गुण द्रव्याश्रित हैं इस्में वृद्धों की संमति भी है-

"सर्वे गुणाः कांचन माश्रयन्ति,,

अब नैयायिकों के २४ गुण भी द्रव्यात्मक क्यों कर हैं सो देखाते हैं पहिला गुण रूप सो भी द्रव्य में होता है क्योंकि सुन्दर रूप होने ही के कारण "सुवर्ण„ कहा जाता है और रूप शब्द से प्रशंसा अर्थ में "य„ प्रत्यय करने से चांदी "रूप्य„ कहा जाता है सुवर्ण रूप्य और ताम्र ये तीनों द्रव्य के नाम से व्यवहार किये जाते हैं—अर्थ-(प्रयोजन) भी द्रव्य ही का नाम है एक अणु से द्रव्य का आरम्भ नैयायिकों के मत से होता है वैसाही एक आने से कम को जो द्रव्य में गणना की जा सके तो उस्से कम फिर उस्से भी कम इत्यादि विभाग की अनास्था हो जायगी-अथवा एक आने से कम को भी जो धन कह सकें तो एक पाई को परमाणु कहदो बस उसी से अणु (आना) बन जायगा—नैयायिकों का दूसरा गुण रस (मजा) सो भी द्रव्य ही से मिलता है—कहावत भी है—"कुछा तोहि किन पूछा„—तीसरा गुण गन्ध (गर्व) सो उसका कारण भी द्रव्य है चाहो वह सुगन्ध (मान) हो चाहो दुर्गन्ध (घमण्ड हो)—चौथा गुण स्पर्श [दान] सो भी द्रव्य के आधीन है पांचवां गुण संख्या (गिनती) सो द्रव्य ही की होती है इङ्गलेंड के (रासचइल्ड) सौ करोड़ के धनी हैं अमुक बाबू साहब एक करोड़ के धनी हैं इत्यादि—छठवां परिमाण का नियामक भी द्रव्य ही है—७ पृथक्त्व एक को दूसरे से जुदा करने का हेतु भी द्रव्य होता है द्रव्यही के लिये एक बाप के कई लड़के अपने २ हिस्सों का बांट कर अलग हो जाते हैं—८ संयोग सो एक का दूसरे के साथ संयोग द्रव्य ही के कारण होता है ऐसा ही ९ विभाग भी इसी द्रव्य के कारण होता है—१० परत्व [बड़प्पन] भी द्रव्यही से मिलता है—११ अपरत्व (छोटाई) का हेतु भी यही है—"कौड़ी नहीं तो कौड़ी के फिर तीन तीन हैं„—१२ स्नेह [प्रेम] भी द्रव्य ही के लिये किया जाता है—१३ द्रवत्व का कारण भी द्रव्य है कैसे ही कड़े से कड़े को भी आप द्रव्य दे द्रव अर्थात् मुलायम कर सक्ते हैं—१४ पुण्य यावत् पुण्य कर्म सब द्रव्य से होते हैं—१५ पाप द्रव्यवान् होकर पाप कर्म से बचा रहे यह आश्चर्य है अथवा द्रव्य के लिये मनुष्य कौनसा पाप

कर्म नहीं करता १६ शब्द (ख्याति) द्रव्य के आधीन है १७ संस्कार (सफाई) द्रव्य ही से होती है—१८ बुद्धि सो द्रव्यानुबन्धिनी है १९ सुख और २० दुःख दोनो द्रव्य के द्वारा होते हैं "अर्थस्यो पार्जने दुःखं तथैव परिरक्षणे„ २१ इच्छा द्रव्य के लिये किस्को नहीं होती २२ द्वेष द्रव्य के निमित्त बहुत सुलभ है २३ प्रयत्न कौन इस्के लिये नहीं करता २४ गुरुत्व (गौरव प्रतिष्ठा) द्रव्यही से मिलती है-हमारे पाठक जन समझ गये होंगे कि नैयायिकों के २४ गुण क्योंकर द्रव्य के आश्रित हैं—अवान्तर गुण भावना (चिन्ता) द्रव्य की किस्को नहीं रहती- किसी क्रिया के लिये वेगधनही के निमित्त होता है अर्थात् अमुक व्यापार या अमुक धन्धा करें तो बहुत द्रव्य मिले ऐसा कौन न सोचता होगा—सत्य बुद्धि वा मिथ्या बुद्धि धन के कारण समय २ पर स्वीकार करलेनी पड़ती है- हमको धनहीं का अनुभव और स्मरण होता है।

द्रव्य नहो तो देह कैसे ठहरे इन्द्रियों का विषय सन्निकर्ष कैसेहो—१ घ्राण को द्रव्य के बिना सुगन्ध सूंघने को न मिलेगा २ नयन को धन बिना नाच न दीखेगा—कानको धन बिना गान न सुनाई देगा- धन नहीं तो किससे मोल ले ४ रस चीखैं धन नहीं तो ५ आलिङ्ग के द्वारा त्वचा को सुखदायी वस्तु दुर्लभ है—ये पांचों ज्ञानेन्द्रियां धन के आधीन हैं—धन पड़ा होतो १ हाथ से लपक के उठालें २ पांव से दौड़कर प्राप्त करैं ३ मुख से गड़प कर जावें ४ पेट मे पचालेवैं ५ आनन्द के लिये घर पर बुलालावें धन नहो तो धनबिना पांचो कर्मेन्द्रियां झख मारा करैं।

द्रव्य प्रत्यक्ष प्रमाण गम्य है अनुमान से कहसक्ते हैं कि संसार मे धनही सार है उपमान (तुलना) से धन को सब से अनुपम मानते हैं—शब्द से भी सुनते हैं कि धन उपादेय पुरुषार्थ है--चलो चारो प्रमाण द्रव्य की ही सिद्धि के लिये प्रयोग किये जाते हैं- सब ठौर द्रव्यही की आसमन्तात् व्याप्ति है—धनही से व्यभिचार होता है द्रव्यही के कारण अनेक उपाधि उठखड़ी होती है—द्रव्य की अव्याप्ति रहने से कुछ काम नहीं सरता द्रव्य

की अतिव्याप्ति जहां अपना कुछ भी अधिकार नहीं वहां भी हस्तक्षेप करादेती है अंगरेज़ों का ब्रह्मा आदि देशों मे हस्तक्षेप करने का द्रव्य की अतिव्याप्तिही मुख्य कारण है—बिना द्रव्य के सब कुछ असंभव है भ्रान्ति और संशय का मूल भी द्रव्यही है—द्रव्यही का स्वप्न सब देखरहे हैं द्रव्य की मृग तृष्णा मे प्राणी दंदह्य मान हैं—धनही से एक को दूसरा अपेक्षा करता है—समस्त सुखों का धनही उपलक्षण है द्रव्यही के लिये अनेक प्रकार के विवाद उठखड़े होते हैं और विवाद भंजनभी उसी से होता है—सर्वत्र द्रव्य का विचार है—द्रव्यही के लिये बड़े २ तर्क वितर्क किये जाते हैं—धनही के कारण गमन किया जाता है धनही के लिये देश२ भ्रमण करते हैं धनके बढ़ने से लोग बढ़जाते हैं घटने से घटजाते हैं धन पाकर सब फुदकते फिरते हैं धनवान् दूसरे को दबालेता है अच्छो नैयायिकों की सब क्रियायें भी इसी द्रव्य पर निर्भर हैं—द्रव्यही से घट बनता है द्रव्यही से पट तनता है द्रव्यही से मठ उठता है बिना द्रव्य सब बात अटपट है द्रव्य के लिये जब खटपट होती है तो दांत खटाखट बोलते हैं—सब संबन्धों मे द्रव्य का संबन्ध प्रधान है जहां अयुत सिद्धि अर्थात् दस सहस्र की प्राप्ति है वहां लोगों का समागम (समवाय) संबन्ध है द्रव्य जितना जिसके पास हो यदि उतना और कई एकों के पास हो तो उनके द्रव्यों के ऊपर सामान्य दृष्टि रहैगी और उन्मे जाति पांति की ऊंचाई (परत्व) और निचाई (अपरत्व) का विचार किया जायगा परन्तु जिसके पास ऐसे नित्य द्रव्य हैं जो औरों के पास नहो तो उनके द्रव्य पर सबकी विशेष दृष्टि होगी उनको कोई नहो पाता पर नैयायिक विशेष को अन्त्य (अधम) कहते हैं—दे—भा—प—सू—१० द्रव्यही से व्यापार होता है द्रव्यही से व्यापारी कहे जाते हैं लौकिक वा अलौकिक संबन्ध द्रव्यही का होता है सविकल्पक वा निर्विकल्पक ध्यान द्रव्यही का होता है जब दूसरे को जमा मारलेने मे किसी का भय नहीं रहता तब निर्विकल्पक (निःशङ्क) और जब जमा मार लेने

मे किसी का भय रहता है तब सविकल्पक (सशङ्क) ज्ञान होता है ।

द्रव्यवान् के वाक्य मे लोगों की आकांक्षा पाई जाती है लेक्चर आदि मे यदि कोई द्रव्यवान् वक्ता हो तो उस्की योग्यता कंगाल वक्ता से बहुत अधिक मानी जाती है-द्रव्यवान् की आसत्ति (समीपता) सबी चाहते हैं—द्रव्यवान् का वाक्य दुरूह है उस्का अर्थ लक्षणाशक्ति से निकालना पड़ता है जिस्मे वक्ता कि मूर्खताका छिपाव हो—ज्ञान मे भासमान् विषय जगत् मे स्त्री पुत्र आदि द्रव्य के सुखापेक्षी हैं अत एव द्रव्यवान् ज्ञानी और विषयी दोनो कहे जा सक्ते हैं-आकृति भी द्रव्यही के आश्रित है-जहां द्रव्य का अभाव है वहां सब किसी के संसर्ग (संपर्क) का अभाव है अन्योन्याभाव (परस्पर भेद) द्रव्यही के कारण होता है द्रव्य ने किस्की बुद्धि का ध्वंस नहीं किया होगा ।

कणाद और गौतम न्यायशास्त्रके प्रवर्तक आचार्य हैं कणों को भक्षण कर जिये इस्से कणाद कहलाये और गौके समान सूधे बन के गौतम कहलाये तब द्रव्यात्मक न्याय शास्त्र के ज्ञान मे पक्के समझे गये—इस्से जानाजाता है कि कण भक्षण कर और गौके समान सहन शील बन के जो कालक्षेप कर दिन रात द्रव्य का विचार ठानता रहता है वही द्रव्य का अधिकारी होता है—कणाद का दूसरानाम उलूक है अतएव निश्चय होता है द्रव्य का व्यासंगी दिन मे भी रात्रि देखता है—गौतम का दूसरा नाम अक्षपाद है जिस्से ज्ञात होता है कि जिस्के पांव मे भी चालचलन की संभाल के लिये देखने को आंख हो वही द्रव्य के बिषय मे पण्डित है अन्यथा प्रसिद्ध है कि लक्ष्मी का वाहन अर्थात् धन का पात्र उल्लू है ।

द्रव्यही साध्य है द्रव्यही साधन है द्रव्यही से सपक्ष (मित्र) और विपक्ष (शत्रु) होते हैं-द्रव्यही के कारण जगत् मे बिरोध और वाधा है द्रव्य के ज्ञान मे भ्रान्तिही के कारण हेत्वाभास भी हेतु के स्वरूप मे प्रतीय मान होते हैं—द्रव्यके ज्ञान से ईश्वर प्रसन्न होता है और मुक्ति मिलती है-द्रव्य ही से कोई साधारण और कोई असाधारण होते हैं—द्रव्य के अन्वय (रहने)

से सब कुछ रहसक्ता है द्रव्य के व्यतिरेक (न रहने) से कुछ भी नहीं रह सक्ता—द्रव्य के कारण सधर्मा विधर्मा होजाता है और द्रव्यके द्वारा विधर्मा सधर्मा कर लिया जा सक्ता है—वस्तुतः द्रव्य बड़ी भारी सिद्धि है पुरुषार्थ है जैसा कहा भी है "द्रव्यस्य सर्ववशाः„ जिसने द्रव्य का ज्ञान न उपार्जन किया उस भकुये ने कुछ भी न किया !

ह्रस्वत्व दीर्घत्व अणुत्व वा महत्व चय अपचय वा प्रचय उत्कर्ष वा अपकर्ष सब द्रव्य ही के परिमाण के तारतम्य से प्राप्त हैं अनुपलभ्यमान द्रव्य के उपलम्भ निमित्त पक्षपात पूर्वक परामर्श (विचार) कियाजाता है संकल्प विकल्प सब द्रव्यही के विचार से उपस्थित होते हैं यदि द्रव्य न हो तो किसी की सत्ता न पाई जाय द्रव्य बड़ा व्यापक है—द्रव्य उत्तेजक है महत्व का पात्र है द्रव्य की महिमा प्रत्यक्ष और अतीन्द्रिय भी है इस लिये उसकी योग्यता का पहचानना परम चतुर का काम है—इति

एक नया नैयायिक

। देखते हैं ।

सम दृष्टि शान्त शील साधूजन जगत् भर को एक दृष्टि से देखते हैं—समाधि लीन योगी जन जिन्हे आत्मा का साक्षात् कार है वे परमात्मा की जागती ज्योति को अपने हृदयाकाशमे देखते हैं—तत्ववेत्ता ज्ञानी इस असार संसार को स्वप्नवत् देखते हैं--ऐब ढूढ़ने वाले खल लोग दूसरे के छिद्र को देखते हैं—स्वार्थ परायण लालची अपने फायदे को देखते हैं—इस विकराल कलिकाल के खोटे समयमे कोई २ कन्याराशी बाप अपने लड़कों को एकक्खे होकर देखते हैं ऐसा मालूम होता है मानो उन्होंने अपनी एक आंख फोड़ लिया हो अथवा एक ओर

का अपना संपूर्ण अंग का अंग काटकर फेंक दिया हो—अस्तु अच्छे हाकिम अपने छोटे बड़े मातहतों को एक नजर से देखते हैं कहने को हमारी महाराणी श्रीमती राज राजेश्वरी भी अपनी काली गोरी प्रजा को एक नजर से देखाती हैं—अभिमानी नीचा देखते हैं—हम लोग जो मुल्क की भलाई के जोश में भरे सम्पादक बनने का दिमाग रखते हैं जरासी बात को बहुत कर दिखाने वाले गवर्नमेन्ट की चूक देखते रहते हैं—व्यभिचारी लम्पट पर नारी को देखता है-चोर पराये का धन देखता है-दुष्टजन दूसरे की बुराई देखते हैं—भले मानुष सब की भलाई देखते हैं-इत्यादि, पाठक जन देखते २ आप की आंख भी गई होगी देखाते २ हमारा दिमाग चुरने लगा पर इस देखने देखाने का छोर न मिला इससे आज के लिये यहीं विश्राम ॥

निज़ाम के इस दान के हम क्या समझें।

क्या बात है राज भक्ति का तो हमारे निज़ाम साहब से अन्त है, गनीमत हैं जो हिन्दुस्तान के ऐसे बिगड़े जमाने में भी लायलटी की दुम पकड़ उसे घिरा रहे हैं-औदार्य और सखावत की सीमा तक किसी न किसी भांत पहुंचाते जाते हैं—धन्य हैं कि समय कु समय अपने मालिक की दस्तगीरी करने में नहीं चूकते और क्या करें अब इस निर्जीव हिन्दुस्तान के नाड़ी २ नस २ का दम निकल रहा है नहीं तो इस उदारता फ़ज़ूल खर्ची वा अपव्यय के आगे ६० लाख क्या ६० करोड़ भी बड़ी बात न थी-अस्तु इस महादान का असर हम दो तरह पर देखाया चाहते हैं- एक यह कि इसका असर हमारी गवर्नमेंन्ट पर क्या पहुंचा दूसरे यह कि स्वयं हमारे ऊपर

इसने क्या असर पहुंचाया इन दोनों बातों का बिचार आज यहां हम यथा संख्य क्रम से करते हैं—पहले यह देखना चाहिये कि इस महादान को निज़ाम साहब ने कौनसा संकल्प पढ़के दिया है और उनके मुखाम्बोज से कौन २ आखर उस समय निकले और उस्के क्या तात्पर्य हैं—उस समय उनके मुखारबिन्द से जो पदावली निकली वह यह थी कि यह दान श्री गवर्नमेन्ट सरीखे सुपात्र ब्राह्मण को इसलिये दियाजाता है कि रूस सदृश महा भल्लूक जनित बाधा निरशन पूर्वक सीमा के अरक्षित रहने से जो भय उपस्थित है सो शान्त हो सीमा की रक्षा के यथोचित्त प्रबन्ध में यह रुपया लगाया जाय—हमारी सदा की मर भुक्खी पेटू गवर्नमेंट (जिस्को अपने स्वदेशियों के पालन पोषण की तृष्णा कभी कम होतीही नहीं जिस तृष्णा रूपी बिकराल वाड़वाग्नि में ऐसे २ लाखों दान समा सक्ते हैं क्या बरन समाते जाते हैं और पता नहीं लगता) टहपर भूखे कबूतरों की भांत एक बारगी टूटही तो पड़ी न देखा आव न देखा ताव बड़ी प्रसंसा सन्मान और भाव भक्ति के साथ उसे स्वीकार ही तो कर लिया—इस दान के स्वीकार से मानो इंडिया गवर्नमेंट मुह पुकारे इस बात को प्रगट कर रही है कि हिन्दुस्तान के लिये बड़ा नाज़ुक वक्त आया है पश्चिमी सीमा पर वास्तव में महाभय आकर उपस्थित हो गया है—हमारा यह मतलब नहीं है कि हमारे पाठक तथा देश के और सब लोग इस बात को बहुत दिनों से भली भांत नहीं जानते कि सीमा पर महाभय उपस्थित है और दिन दूना होता जाता है, किन्तु यह गंभीर बिचार की बात है कि अब ऐसा कुसमय आकर उपस्थित हो गया कि जिस गवर्नमेंट पर भरोसा रख हम सुख की नींद सोते थे अब उसे यह मुक्त कंठ हो कहना पड़ा कि तुह्मारे देश की सीमा पर प्रबल शत्रु का भय है— इस कथन का भावार्थ हम अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार यही निकालते हैं कि यह कोई छोटी बात नहीं है कि हमारी रखवाली करने वाला स्वयं इसे जोखिम समझ अत्यन्त भय भीत होगया तो अब उसके द्वारा दूसरे की भय दूर होने की आशा कितनी क्षीण और दुर्बल होगई—हम

गवर्नमेंट की पूरी बहादुरी तथा पूर्ण रीत पर अपनी रक्षा तब समझते कि निज़ाम साहब ने जिस समय इस दान देने का प्रस्ताव किया था उसी समय हमारी गवर्नमेंट यह कहती कि हम आपके इस सौहार्द भाव से अति प्रसन्न हुईं और तुम्हारी राजभक्ति का हमें पूरा परिचय मिल गया अब इस दान को आप अपने पास रखिये हमको रुपये की कमी नहीं है किन्तु इसके विपरीत देखती हैं तो गवर्नमेंट ने बड़ी चाहसे इसे स्वीकार किया तो इसका तात्पर्य हम यही निकाल सक्ते हैं कि वह खतरा और भय जिस्को हम पहले छोटा समझे हुए थे वास्तव में बहुत बड़ा है न केवल इतनाही वरन उस्का यथोचित प्रबन्ध भी बिना दूसरे की सहायता के गवर्नमेंट नहीं कर सकती–हमारी समझ में प्रजा के मन में यह भासित हो जाना कि सर्कार अपनी तथा हमारी शत्रु से रक्षा करने में असमर्थ और कमज़ोर है कितनी लज्जा और हानि की बात है न कि प्रसन्न होने की कि एक हिन्दुस्तानी रियासत को अच्छा जाल में फसाय कई लाख रुपये झंस लिया अब हम महाराणी के उन प्रधान मंत्रियों की बुद्धि को क्या कहें जिन की सलाह से इस दान के महा प्रतिग्रह लेने को गवर्नमेंट ने हाथ पसारा–क्या सात सौ आठसौ पार्लियामेण्ट महासभा के मेम्बरों में एक भी ऐसा वीर उदार मनवाला नहीं है जो इस रुपये को तृण समझ यह कहता "ब्रिटिश सिंह ऐसे २ भालुओं को क्या समझता है जो ऐसी छोटी बात के लिये निज़ाम तथा किसी दूसरे अपने आधीन भूस्वामियों के आश्रित हो„ पर शोक का विषय है कि यह "इण्डियनगोल्ड„ भारतीय स्वर्ण संपत्ति के विष ने पहले हम हिन्दुओं को छार में मिलाया उपरान्त मुसल्मानों को नसाया अब इन पर उस विष का प्रबल आवेश छाया हुआ है जिस्से इनकी विलासी प्रकृति बढ़ती २ इन्हे यहां तक निस्तेज आलसी और स्वार्थ लोलुप बना दिया कि स्वप्न में भी इस का ध्यान इनके मन में न रहा कि किस बात से हमारी हेठी है और किस्से हमारी बात चौगुनी ऊंची होती है—अस्तु इन स्वार्थ लंपटों की कौन कहे स्वयम् महाराणी के हस्ताक्षर निज़ाम

के पास आये जिस्का आशय यह था कि हम तुम्हारी राज भक्ति और प्रेम देख अति प्रसन्न हुईं और धन्यवाद पूर्वक इस दान को स्वीकार किया—महाराणी का यह सब आभ्यन्तरिक भाव था हम निश्चय पूर्वक नहीं कह सक्ते क्योंकि हम देखते हैं तो महाराणी संसार के राग द्वेष से विमुक्त निर्लेप हमारे बेदान्तियों के ब्रह्म के समान हैं उनकी बड़ाई और प्रशंसा का पिष्ट पेषण हम कहां तक करें जैसा उन के सलाहकार मंत्रियों की राय होती है वैसा ही उन को करना पड़ता है इसलिये हम उन मन्त्रियों ही की कुटिल बुद्धि की यह सब करतूत मानते हैं।

अब निज़ाम के उपरान्त सुनते हैं पटियाला के महाराज का भी यही हौंसिला हो रहा है और वे भी कोई इसी प्रकार का महादान किया चाहते हैं निज़ाम ने तो बेरार की सांगता मे इस दान को दिया महाराज पटियाला किस्की सांगता में दान देने का हौंसिला किये हैं सो हम नहीं जान सकते—अभी पटियाले ही पर क्या है यावत् राजा और बड़े २ रईस सेठ साहूकार हैं उन सबों को टिक्स को भांत ऐसाही दान देना पड़ेगा और यह सब राजा लोग Volantarily स्वेच्छा से देते हैं हम कभी न मानेंगे किन्तु प्रत्येक छोटी बड़ी रियासत के रेजिडेंट उन को ऐसा दबाते हैं कि लाचार हो उन्हें करना ही पड़ता है।

—:०:—

। रुक्मा बाई ।

हम लोगों के बिवाह आदि सामाजिक बातों में राजा को कहां तक हस्तक्षेप करना चाहिये यह एक बड़े बिचारांश का प्रश्न है—यह बात तो स्पष्ट रीति पर मान ली गई कि राजा को निषेध का अधिकार है परन्तु किसी काम में बलात् नियोजित करना यह अधिकार कभी नहीं है और निषेध का अधिकार इसलिये है कि वह मनुष्यों को उस काम से रोक सके जिस्से दूसरे को हानि पहुंचने की संभावना हो और इस सब का तात्पर्य यही

है कि आपस में बैर विरोध न बढ़ै और सब अमन चैन से रहें—सब लोगों को पूर्ण स्वातंत्र और अधिकार है कि जो जिसे भावै वह काम करै परन्तु हां जो वह किसी ऐसे कर्म को करेगा जिसका करना कानून के द्वारा राजा की ओर से वर्जित कर दिया गया है और उससे दूसरे को हानि भी पहुंचती है तो राजा को अधिकार है उसे दण्ड दे परन्तु जिसे मनुष्य न करना चाहे वह काम दवा के उससे कराना यह अधिकार राजा को कभी नहीं है।

विवाह विषयक प्रश्न में राजा को हस्तक्षेप का कहां तक अधिकार है इस प्रश्न के विचार में पहले यह निश्चय कर लेना आवश्यक है कि विवाह क्या वस्तु है कथा क्या नये सम्बन्ध उसमें उपस्थित होते हैं और विवाह से तात्पर्य क्या है—यह प्राकृतिक नियम है कि कीट पतङ्ग पशु पक्षी मनुष्य किसी जाति के स्त्री पुरुष जब अपनी परिपक्व दशा को पहुंचते हैं तो उनमें एक प्रकार की आकर्षण शक्ति आजाती है जिससे दोनों परस्पर एक दूसरे को खींचते हैं इसी का नाम प्रणय वा प्रीति है जिसका परिणाम दोनों का संयोग और उस संयोग का फल कुल की वृद्धि है—जीवधारी मात्र का यही स्वभाव है और स्त्री पुरुष का संयोगही उन की उत्पत्ति का हेतु है मनुष्य में और इतर जीवधारियों में अन्तर केवल इतना ही है कि जैसे और २ प्राकृतिक नियमों में इतर जीवों से मनुष्य में कुछ विशेषता रहती है वैसही विवाह सम्बन्ध में भी यह विशेषता है कि और जीवधारियों में संयोग के पश्चात् स्त्री जाति पुरुष से कुछ प्रयोजन न रख दोनों के संयोग का जो फल रूप शिशु उस की रक्षा और पोषण सो उसके बड़े होने तक स्वभावतः अपने आपही करती है—परन्तु मनुष्यों में इसके विपरीत केवल शारीरिक संयोग न हो कर आत्मिक संयोग भी होता है अर्थात् जिन दो प्राणियों में प्रीति उत्पन्न होती है उन दोनो का आत्मा खिंच कर एक हो जाता है और जब एक बार संयोग हो गया तो दोनो जन्म पर्य्यन्त बिछुरना नहीं चाहते दोनो का हिताहित एक हो जाता है सुख दुख संपत् बिपत् में एक दूसरे के साथी होते हैं।

अब जिन्मे मानुषी स्वभाव विशेष और प्रबल होता है उन्मे यह आत्मिक संयोग भी प्रबल होता है और जिन्मे यह कम है और आसुरी वा पशु की प्रकृति का अंश विशेष है उन्मे यह आत्मिक संयोग भी ढीला होता है वे पशु धर्म के अनुसार केवल विषय सुख को जानती हैं जहां और जिस प्रकार यह सुख प्राप्त हो वही करती हैं-अब यह शारीरिक संयोग जो प्रकृति वश हुआही करता है इसे विवाह नहीं कहते विवाह केवल उस आत्मिक संयोग का नाम है जो दो जनों मे सब लोगों और समाज के सामने शपथ द्वारा अग्नि आदिक की साक्षी दे किया जाता है और एकवार इसका व्रत अंगीकार किया तो जन्म भर के लिये इस बन्धन मे पड़गये—
इसलिये यह धर्म और समाज से संबन्ध रखता है राजा को इस्मे कोई अधिकार नहीं है कि हाथ डाले फिर राजा को किसी के मन के ऊपर कुछ वश नहीं है वह परस्पर का प्रणय या प्रेम बलात् किसी के मन में नहीं डाल सक्ता और इस्मे वह बलात् हस्तक्षेप किया चाहे तो दो मित्रों की मैत्री को भी वलात् स्थिर रखने का प्रयत्न करे वा किसी काम मे जो दो साझी हों तो बल से उन्हे दबावे कि वे जन्म पर्य्यन्त साझी बने ही रहें—और ये दोनो बातें सर्कार नहो करती तो निश्चय हुआ कि वैवाहिक संवन्ध मे राजा का केवल इतनाही कर्तव्य है कि विवाह के व्रतों के खण्डन करने से जो किसी को कुछ हानि पहुंची हो तो राजा उस हानि की पूर्ति उस व्रत के खण्डन करने वाले से करावे और उस हानि की पूर्ति केवल धन संबन्धी हो सक्ती है इसलिये सिवाय धन दण्ड के और किसी प्रकार का दण्ड देना राजा को अनुचित होगा—परन्तु इस विषय मे इतना और कहनाहै कि प्रीति की अपरिपक्व दशा मे जो विवाह होते हैं उसे हम विवाह कभी न मानेंगे गुड़िया गुड़वा के समान जहां स्त्री पुरुष को विवाह के जो व्रत हैं उन के ग्रहण करने की वा उन व्रतों के समझने की सामर्थ्य नहीं है वह विवाह नहीं कहा जायगा बरन गुडियों का खेल किन्तु विवाह तो वही है कि दोनो अपनी परिपक्व अवस्था मे पहुंच अपनी इच्छा से दूसरों के

कराये हुये नियम को अंगीकार करलें—हम लोगों मे जो विवाह किये जाते हैं वे सब इसी प्रकार के होते हैं तब रुक्माबाई का क्या दोष है जो ऐसे विवाह से मुह मोड़ना चाहती है—माता पिता की आज्ञा के उल्लंघन वा स्वतंत्राचरण का दोष चाहो उस्पर आप भलेही लगावें किन्तु विवाह व्रत के खण्डन का दोष आप उस्पर नहीं लगासक्ते हमारा कहना यही है कि जब तक दोनो अपनी पूर्ण अवस्था को पहुंच उस संबन्ध को न मान लेवें तब तक वे दोनो पतिपत्नी नहीं कहे जासक्ते—बस राजाज्ञा यही होनी चाहिये कि जो विवाह बालक पन मे किया गया वह विवाह नहीं कहा जा सक्ता और ऐसे विवाह के कारण जो पीछे से कोई हनि वा उपद्रव उठ खड़ा हो उस्के उत्तर दाता वा दंडनीय मा बाप होने चाहिये- इस्मे कुछ लोग यह कहेंगे बाल्य विवाह हमारे मनों का आमोद है और शास्त्र की मर्याद है इस्में आप क्यों राजा को बलात् हाथ डालने को कहते हैं इस्के उत्तर में हम यह सिद्ध करते हैं कि बाल्य विवाह को अपने आमोद का कारण समझना सर्वथा भूल है आप अपने आमोद के कारण दो अनमेल प्राणियों को उस अवस्था में मिलाना चाहते हैं जो उस समय तक यह जानते ही नहीं कि मेल और परस्पर का प्रणय तथा संयोग किस्का नाम है और क्यों संयोग होता है-और ऐसी दो अनमिली जोड़ी को मिला के आप आशा करते हैं कि यह बन्धन यावज्जीव स्थिर रहे यह कैसा अन्याय है और जो अन्याय है वह शास्त्र के प्रमाण से क्योंकर सिद्ध होसकता है आप शास्त्र को क्यों काटों मे घसीट रहे हैं यों कहिये हमारे मन की मौज हम जैसा चाहते हैं सो करते हैं-शास्त्र कारों में प्रधान मनुजी जिनका वेदों में भी प्रमाण माना गया है सो यही कहते हैं कन्या ऋतु वती होकर भी पिता के घर में रहे पिता उसके समान बर को ढूंढ उस्का ब्याह करे और जब पिता के ढूंढने से योग्य वर न मिल सके तब कन्या अपने आप ढूंढ ले परंतु अपनी ही जाति में ढूंढे- वैद्यक शास्त्र भी यही कहता है अपरिपक्व अवस्था में स्त्री पुरुष का संयोग महा अकल्याण कारी है—"ऊन षोड़ष वर्षा याम प्राप्तः पंच विंशतिम्। यद्याइत्त

पुमान् गर्भः कुक्षिस्थः सविपद्यते–„ फिर केवल मूढ़ मा बापों के आंख का क्षणिक सुख के अतिरिक्त लाभ इस बाल्य विवाह से कोई भी नहीं है एक तो लाभ कुछ नहीं दूसरे अनर्थ और शास्त्र विरुद्ध हम नहीं समझते तब इस कुरीत को क्यों न छोड़ना चाहिये— बाल्य विवाह के पक्ष पाती कहते हैं हम बालकों को व्यभिचार दोष से उनका बिवाह कर उन्हें रोकते हैं दूसरे यह कि बालक पनेही से जब कन्या ससुरार में जायगी तो उस घर और कुल की रीति से भली भांत परिचित हो जायगी परंतु ध्यान देने की बात है व्यभिचार दोष कुसंगत वा कुविचार से होता है बिना जिस्को अपरिपक्व दशा में कभी व्यभिचार होहीगा नहीं और वह कुसंगति या कुविचार आपका दोष है बालकों का नहीं आप उनको उत्तम शिक्षा दीजिये कुसंगति से बचाइये गर्भाधान मे समय कु समय का भी विचार रखिये जिस्मे सन्तान दोष युक्त नहो— इन सब बातों के संयम से व्यभिचार दोष बालकों मे कभी न होगा और जो उन्हे इस भांत शिक्षित न रखियेगा तो बिवाहित होने पर भी व्यभिचार से मुक्त वे कभी न रहेंगे अत एव अपना कर्तव्य न कर जो छोटे बालकों के गले मे छूरी फेरते है यह आप का दोष है उन ना समझ बालकों का नहीं—पर आपतो स्वयं महा व्यभिचार और अशिष्ट आचरण मे सौंदे हुये हैं किस मुंह से बालकों को रोक सक्ते हैं तब बाल्य विवाह का एक बहाना ही सही—और प्रीति की जो आप कहते हैं तो सच्चा प्रेम जो होगा और उत्तम शिक्षा होगी तो वहां की रहन सहन रीति रसम कन्या को सीखते क्या लगता है यह केवल आपका भ्रमही मात्र है जो इस अनर्थ कारी कुरीति का जन्मदाता है—इस नितान्त अशास्त्रीय कर्म को स्वर्ग की प्राप्ति के लोभ से जो लोग प्रचलित रक्खे हैं उन के लिये केवल द्रव्य दण्ड भी बहुत कम है सर्कार को चाहिये जिस प्रकार यह कुसंस्कार हम-से दूर हो सो करे द्रव्य दण्ड क्या ऐसों का सर्वस्व अपहरण कर लेना चाहिये और जो लोग इतनी भय देखाने पर भी न चेतें वे अपने किये का फल भोगें बाल्य बिवाह उठ जाने से हमारे धर्म मे किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंच सक्ती—

हरदेव प्रसाद—

। पतिव्रताओं के लिये बसीकरन जादू।

। सारसुधा निधि से।

जादू जगत मे करत मूरख नारि अपने पीयपे।
उलटी लराई होत निस दिन दुख उठावत जीयपे॥
पड़ दगाबाजन फन्द अति मति मन्द टोना करत हैं।
यह जान उनकी बान पति सन्मान बदले लरत हैं॥
यह सिद्ध मंत्र सुनो हमारो चहोजो पति बस करन।
जो कहै पति सो मानिये कीजे सकल बिधि अनुसरन।
जादू यही पति बसकरन है प्रीति युत सेवा करो।
धन रूप को अभिमान तजि पति टहल केवल उरधरो॥
जो चहो पति निज हुकुम राखन आप पति हुकमें रहो।
जो कहै सो करनी करो प्रतिकूल मत मुखसे कहो॥
यह एक पति बसकरन टोना सजनि निज जिय जानिये।
करि स्ववश पति दोउ लोकमे सुख सुयश अपनो आनिये॥
है धर्म कर्म यही तुम्हारो टहल पति की कीजिये।
पिता अरु ससुराल दोऊ कुलको बड़ाई लीजिये॥

। प्रजास्यात् सन्ततौ जने।

प्रजा शब्द का एक अर्थ सन्तान है दूसरा अर्थ जन अर्थात् राजा के पालनीय लोग-प्राणियों के मन की दो ऐसी वृत्तियां जिनके चरितार्थ करने का फल प्रजावर्ग हैं उन्मेप्रथम मदन बेग और दूसरी उत्कर्षेच्छा है मदन जनित खेद की निवृत्ति के लिये नर नारी परस्पर समागम करते हैं जिस्का फल सन्तान की उत्पत्ति होता है—दूसरी वृत्ति उत्कर्षेच्छा से दुर्बल को प्रबल द-

६६

वा लेते हैं जिस्का फल यह होता है कि बहुत से लोग प्रबल के वशीभूत हो जाते हैं और ये दोनों वृत्तियां न केवल मनुष्यों ही मे है किन्तु जीव-मात्र में इस्का आधिपत्य देखा जाता है—उद्भिज्जजाति पेड़ पाल्लव में भी गर्भाधान का क्रम है परन्तु उन्मे इतर जीव धारियों के समान प्रबल मदन वृत्ति है वा नहीं इस्का पूरा प्रमाण अब तक नहीं मिला परन्तु उत्कर्षेच्छा तो उद्भिज्जों मे भी स्पष्ट देखी जाती है कि प्रबल शक्ति के बीज वाले अङ्कुर दुर्बल शक्ति वाले बीज के अङ्कुरों को दबा के आप बढ़ जाते हैं—कभी २ मदन वृत्ति के चरितार्थ करने में उत्कर्षेच्छा ही काम देती है जैसा किसी २ जाति के बानर बहुत सी बानरियों को संग लिये घूमा करते हैं उन के एक झुंड का यदि दूसरे झुण्ड से सामना आ पड़ता है तो दोनों झुंड परस्पर लड़ पड़ते हैं जिस्का प्रयोजन यह रहता है कि जिस झुंड का स्वामी बानर वध किया जायगा उस झुंड की बानरियों का स्वामी जीतने वाला झुंड का स्वामी बानर होगा और बानरियां भी अपने झुंड के अधिपति के साथ दूसरे झुंड से लड़ा करती हैं जिस्का आशय यही है कि मेरी मदन वृत्तिचरितार्थ करने वाला वध न किया जाय और झुंड का स्वामी बानर भी इतना काम लोलुप रहता है कि यदि बन्दरिया पैदा हुई तो उसे पलने देता है और यदि नर सन्तति हुई तो बानरियों को उस्की रखवाली करना कठिन हो जाता है।

उक्त समागम के फल स्वरूप सन्तान और वशीभूत प्राणियों की स्थिति का क्रम बहुतेरे जीवों में एक प्रकार का है और बहुतेरों मे दूसरे प्रकार का—कोई २ जीव तो उत्पन्न हुए सन्तानों वा वशी भूत प्राणियों का संहार कर डालते हैं दैवात् कोई सन्तान वा वशीभूत प्राणी बच निकलता है जैसा सर्प में और कोई २ जीव उत्पन्न सन्तान या वशीकृत प्राणियों को अनेक २ यत्न से रक्षा करते हैं—उन्ही जीवों के समान मनुष्य भी वे दोनो बातें करता है यथा व्यभिचारणी माता के हाथ से निज बालक का वध इस्के उदाहरण दुर्लभ न-

हीं है और वशीकृत प्राणियों के संहार का उदाहरण हलाकूचंगेज़ आदि अनेक निष्ठुर अत्याचारी मुसलमान हैं जिनका नष्ट चरित्र इतिहासों मे स्पष्ट है

जीवों का बहुधा स्वभाव है कि जिस्का जो अभ्यास पड़जाता है वही उसे रुचता है और वह रुचिही व्यसन का कारण होतो है जिस्से अभ्यास का जो विषय है सो दुस्त्यज होजाता है—जैसा काम जनित बाधा की शान्ति के हेतु नर और नारी के सहवास का अभ्यास बढ़ते २ यहां तक बढ़ जाता है और इतना रुचिकर मालूम होने लगता है कि कभी २ वही व्यसन मे गिनाजाता है जिसका छूटना मौके से दुर्घट हो जाता है—स्नेह चिकने को कहते हैं जिस्के योग से एक के साथ दूसरा चिपक जाता है इसी से सहवास को दृढ करने के हेतु रुचि को स्नेह कहने की परिपाटी पड़गई है ऐसाही वशीभूत प्राणियों के मध्यमे भी जब बिजयी और विजित दोनो के साथ रहने का अभ्यास चिरकालिक हो जाता है तो दिन २ दोनो के सुख की वृद्धि होती जाती है और परस्पर का स्नेह बढ़ता जाता है किन्तु इस अंगरेज़ी राज्य मे जेता की अत्यन्त लोभी प्रकृति के कारण इस्से उलटा क्रम देखाजाता है—ठीक २ परिपालन नहोने के कारण प्रजा भूखो मर रही है राजपुरुष ऊंची २ तनखाहें पाने से बिलासी होतेजाते हैं केवल कानून कायदे की पाबन्दी के सिवाय प्रजा का सुख वा दुख किन २ बातोंपर निर्भर है इस्का मर्म जानने की कभी चेष्टा ही नहीं करते अथवा जानते भी हैं तो जान बूझ अजान बनते हैं या महा लोभी और स्वार्थ लंपट होने के कारण प्रजा के दुःख को सुनी अन सुनी कर देते हैं गोवध का न उठाना टैक्स इत्यादि को दिन २ बढाते जाना प्रजा मे किसी प्रकार की स्वच्छन्दता न आने देना आदि इस्के अनेक उदाहरण हैं—जो प्रजा अपने हस्तगत है उस्का जो इस प्रकार कुढ़ा कर भी अंगरेज़ महाशय ब्रह्मा काबुल आदि नये २ भूभाग की प्रजाओं के भार को उठाने का उद्यम करते ही जाते हैं इस्का क्या हेतु है ? केवल यही कि स्वार्थान्ध होने से अपना प्रयोजन साध लेना उनका उद्देश्य है प्रबल वैरी का आक्रमण न सह्मालि सकेंगे तो यहां की प्रजा पर ममता तो हई नहीं अपना

डेरा डंडा उठाय चंपत होंगे प्रजा पर जो आपड़े भुगतती रहे ।

अङ्गरेज़ राज के शुभ पदार्पण से मुसल्मानी राज्य की अपेक्षा देश में स्वास्थ्य रक्षा और अमन चैन भर पूर है इस्मे कुछ सन्देह नहीं किन्तु यह सोच अचरज होता है कि इतने स्वास्थ्य और सुख पर भी कोई प्रसन्न नहीं है इसका कारण क्या है? रामायण में गुसाईं जीने एक स्थान मे कहा है—"बोले बिहसि महेश तब ज्ञानी मूढ़ न कोय—जिहि जब रघुबर करहिं जस सो तस तिहि छन होय„—हम यह ठीक नहीं कह सक्ते कि इङ्गलेण्ड की परम सभ्य मंडली जिसने यहां के राज्य प्रबन्ध का निर्माण स्थिर किया है उस्मे सब बुरेही बुरे हैं भले एक भी नहीं हैं—किसी जाति वा किसी देश मे न सब के सब नितान्त दुष्टस्वभाव हो के मनुष्य होते हैं न उन में सब के सब भले और अत्यन्त साधु हो होते हैं किन्तु इतना तो अवश्य निश्चय है कि साधारण रीति पर मनुष्यों की प्रकृति यही है कि बिना किसी कारण के कोई किसी को हानि पहुंचाना नहीं चाहता वरन दुखी को दुख मे देख दया आती है पर लोभ के वश में पड़ बड़े २ विद्वान् भी अन्ध के समान हो जाते हैं तब ये लोग उस प्रकार के न हों यही आश्चर्य है जिन्होंने पञ्जाब अवध ब्रह्मा आदि अनेक देशों को केवल लोभ के परतंत्र हो कर छीन लिया और न्याय अन्याय कुछ न बिचारा तब प्रजा और सन्तति में एक सा भाव होना तो अतीव दुर्घट है और इन से ऐसी आशा करना भी नितान्त भूल है ।

। गवर्नमेन्ट के विशेष बिचार योग्य बात ।

३ दिसम्बर के हिन्दुस्तान में रतलाम राज्य के मन्त्री पं० श्याम जी की राय लिखी है कि "हिन्दूशास्त्रों के अनुसार उन स्त्रियों को जो अपने पति के सङ्ग रहने से इनकार करती हैं कारागार नहीं होना चाहिये और सिविल प्रोसीजर कोड का २६० वां दफ़ा अति कठोर होने के कारण संशोधनीय है और यद्यपि धर्मशास्त्र में विवाह सम्बन्ध तोड़ने की आज्ञा नहीं है

तथापि कोई २ अवस्थाओं में विवाह संबन्ध तोड़ देने में हमारी कोई हानि नहीं देख पड़ती,,—हम नहीं समझते कि जो लोग धर्मशास्त्र की मर्यादा के उत्पाटन में तत्पर हैं वे शास्त्र का नाम लेकर गवर्नमेंट को क्यों धोखा देते हैं उनको जो कुछ कर्तव्य है उसे केवल बुद्धि संसिद्ध तर्क बितर्क के द्वारा क्यों नहीं सिद्ध करते अथवा यह क्यों नहीं कहते कि हिन्दूशास्त्र सर्वथा डुबो दिया जाय कि सब झगड़ा निवृत्त हो और ऐसे २ मामिलों मे मन मानी व्यवस्था गढ़ा करें और यदि हिन्दूशास्त्र के प्रमाण से कहते हैं तो उक्त २६० दफा को क्यों कठोर बतलाते हैं—यह तो सांप्रतिक गवर्नमेंट की दयालुता है कि उस ने ऐसे अन्याय के लिये अति मृदुदंड निर्णय किया है मनुस्मृति अध्याय ८ श्लोक ३७१ में ऐसी स्त्री जो अपने निरपराध स्वामी को निष्कारण छोड़े या उस्का उल्लंघन करे उस्के लिये यह लिखा है—"भर्तारं लंघयेज्जातु स्त्री ज्ञाति गुणदर्पिता। ताः श्वभिःखादयेद्राजा संस्थाने बहु संस्थिते,,—अर्थात् जो स्त्री जाति और गुणों के अभिमान मे भर कर अपने पति का उल्लङ्घन (अपमान—बिरुद्ध आचरण—आज्ञा भङ्ग आदि करे) उस स्त्री को राजा कुत्तों से उस स्थान मे चिथवावे जहां बहुत से आदमियों की भीरहो—अब सोचना चाहिये कि रुक्माबाई के उपस्थित बिवाद मे और मनु की इस दण्ड आज्ञा केसं घटित होने मे क्या अन्तर है मैं समझता हूं कुछ नहीं—रुक्माबाई सुशिक्षिता के दर्प से दर्पित हो अच्छे भले चंगे पति का उल्लङ्घन कर रही है जिस्के कारण उसे बंबई हाईकोर्ट से कारागार का दंड दिया गया है जिसे लोग कठोर कहते हैं तो फिर यही दंड प्रचलित किया जाय जो मनु महाराज सरीखे अग्रसोची पहले ही से लिख गये हैं—ऐसा होने से एक नये प्रकार का कौतुक होगा और सतीत्व धर्म फिर नये सिरे से अपनी वास्तविक रूप को प्राप्त होगा जो इस कलिकाल में बिगड़ा चाहता है और कुत्तों के दांत भी एक धार्मिक कार्य मे उपयोगी होंगे—बर्तमान समय की गवर्नमेण्ट ने जिसे अपनी सभ्यता का बड़ा अभिमान है ऐसे २ अपराध तथा चोरी आदि अपराधों मे अत्यन्त मृदु दंड रक्खा है उसी का यह

परिणाम है कि ऐसे २ उपद्रवों के कारण भले मानुषों को बड़े २ क्लेश उपस्थित रहते हैं धन्य हमारी आधुनिक गवर्नमेंट की सभ्यता हमारे प्राचीन असभ्य शास्त्रकार ही भले थे कि उन की कठोर दंडाज्ञा के कारण भले लोगों का क्लेश तो निरस्त रहता था—

हृदय।

भारत सुदशाप्रवर्त्तक से

हमारे अनुमान से उस परम नागर की चराचर सृष्टि में हृदय एक अद्भुत पदार्थ है देखने में तो इसमें तीन अक्षर हैं पर तीनों लोक और चौदहों भुवन इस तिहर्फी (अक्षर) शब्द के भीतर एक भुनगे की नाईं दबे पड़े हैं। अणु से लेकर पर्वत पर्य्यन्त छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा कोई काम क्यों न हो बिना हृदय लगाये वैसा ही पोच रहता है जैसा युगल दन्त की शुभ्रोज्ज्वल खूंटियों से शोभित श्याम मस्तक वाले मदस्रावी मातङ्ग को कच्चे सूत के धागे से बांध रखने का प्रयत्न अथवा चंचल कुरङ्ग को पकड़ने के लिये भोले कछुये के बच्चे को उद्यत करना। आंख न हो मनुष्य हृदय से देख सक्ता है पर हृदय न होने से आंख बेकार है। कहावत भी तो है“ क्या तुम्हारे हिये की भी फूटी हैं„ हृदय से देखो, हृदय से बोलो; हृदय से पूछो, हृदय में रक्खो हिये जियेसे काम करो। हृदय में कृपा बनाये रक्खो। किसी का हृदय मत दुखाओ। अमुक पुरुष का ऐसा नम्र हृदय है कि पराया दुख देख कोमल कमल की दण्डी सा झुक जाता है अमुक का इतना कठोर है कि कमठ पृष्ठ की कठोरता तक को मात करता है। कितनों का हृदय बज्राघात सहने को भी समर्थ होता है। कोई ऐसे भीरु होते हैं कि समर सन्मुख जाना तो दूर रहा कृपाण की चमक और गोले की धमक के मारे उनका हृदय सिकुड़ कर सोंठ की गिरह हो जाता है किसी का हृदय रणक्षेत्र में अपूर्व बिक्रम और अलौकिक युद्ध कौशल दिखाने को उमगता है। एवं किसी का हृदय विपुल और किसी का

संकीर्ण किसी का उदार और किसी का अनुदार होता है। विभव के समय यह समुद्र की लहर से भी चार हाथ अधिक उमड़ता है और विपद काल में सिमट कर रबड़ की टिकिया रह जाता है–सतोगुण की प्रवृत्ति में राजपाट-तक दानकर संकुचित नहीं होता, रजोगुण की प्रवृत्ति में बालकी खाल निकाल झींगुरों की मुश्कें बांधता है। फलतः प्रेम, करुणा, प्रीति, भक्ति माया, मोह आदिगुणों का प्रकाश दशा में कभी २ को ऐसा प्रभाव होता है, कि उसका वर्णन कवियों की सामर्थ्य से बाहर हो जाता है उसके अनुभव की हृदयही जानता है मुंह कहने को अशक्य होता है यदि यह बात नहीं है तो कृपाकर बताइये चिरकाल के बिछुरे प्रेमपात्रों के परस्पर सम्मिलन और इकटक अवलोकन में हृदय को कितनी ठंढक पहुंचती है वा सहज अधीर स्वभावतः चंचलमृदु बालक जब बड़े आग्रह से मचल कर धूलि में लोटते हैं वा किसी नई सीखी बात को बालस्वभाव से दुहारते हैं उस काल उनके मुंह मुकुर पर जो मनोहर छबि छाती है वह आप के हृदय पर कितना प्रेम उपजाती है वा जिस को हम चाहते हैं वह गोलो भर टप्पे से हमें देख कतराता है तो उसकी रुखाई का हृदय पर कितना गम्भीर घाव होता है। अथवा बहु कुलीन महादुखी जब परस्पर असंकुचित चित्त मिलते और अत्रुटित बातों में अपना दुखड़ा कहते हैं उस समय उनके आश्वासन की सीमा कहां तक पहुंचती है। शुद्ध एवं संयमी नारायण परायण को प्रभु कीर्त्तन और भजन में जो अपूर्व आनन्द अलौकिक सुख मिलता है वा प्राकृतिक शोभा देख कवि का हृदय जो उल्लास, शान्ति और निस्तब्धभाव धारण करता है उसका तारतम्य कितना है पाठक हमारे लिखने के ये सब सर्वथा बाहर हैं अपने आप जान सक्ते हो भक्तिरस पगेहुए महात्मा तुलसीदासजी राघवेन्द्र राघो की प्रशंसा में कहते हैं "चितवनि चारु मारुमदहरनी। भावति हृदय जाय नहिं रनी," इससे जान पड़ता है कि हृदय एक ऐसी गहरी खाड़ी है कि जिसकी थाह बिचारे जीवको उसमें रहने पर भी कभी २ उस भांति नहीं मिलती जैसे ताल की मछलियां दिन रात पानी में बिलबिलाया करती हैं पर उसकी

थाह पाने की क्षमता नहीं रखतीं जब अपनेही हृदय का ज्ञान अपने को न है तो दूसरे के मन को थाह लेलेना तो बहुत ही दुस्तर है । तभी तो साधारण धीमानों की यह प्रशंसा है "अनुक्तमप्यूहतिपण्डितोजनः" कि बिना कहे वे दूसरे के हृदय का भाव कभी २ लख लेते हैं । तो भी निस्सन्देह दूसरे को हृदय की थाह लगाना बड़ा दुरन्त है न जाने इस हृदयागार का कैसा मुंह है पण्डित लोग कुछ ही कहें हमारी जान तो इस का स्वरूप स्वच्छ स्फटिक की नाईं है । इसी से हर चीज़ का फोटू इसमें उतर जाता है । जिस भांति सहस्रांशु की सहस्र २ किरणें निर्मल बिल्लौर पर पड़कर उसके बाहर निकल जाती हैं इसी तरह सैंकड़ों बातें हजारों विषय जो दिन रात में हमारे गोचर होती है हृदय के शीशे के भीतर धसते चले जाते हैं और समय पर ख्याल के कागज में तस्वीर बन सामने आजाते हैं । इसमें कोई जल्द फ़हम होते हैं कोई सौ २ बार बताने पर नहीं समझते । उनका हृदय किसी ऐसी चिन्ताकीट से चेहटा रहता हैं कि वह आवरण हो कर रोक करता है जिस तरह अक्स लेने के लिये शीशे को पहिले खूब धो धुवाकर साफ़ कर लेते हैं इसी भांति सुन्दर बात को धारण के लिये हृदय की सफ़ाई की बहुत बड़ी आवश्यकता है । राजर्षि भर्तृहरि का वाक्य है "हृदिस्वच्छावृत्तिः श्रुतमधिगतैकव्रतफलम्" अर्थात् हृदय स्वच्छवृत्ति से और ज्ञानशास्त्र श्रवण से बड़ाई के योग्य होते हैं । यह स्वच्छ थैली जिनके पास है वही सदाशय हैं वही महाशय हैं और वही गम्भीराशय हैं उन्हें चाहे जिन शुभ नामों से पुकार लीजिये । और जिन को उदरदरी में इसका अभाव है वे ही दुराशय क्षुद्राशय नीचाशय ओछे छोटे और पेट के खोटे हैं देखो सहृदय के उदाहरण ये लोग हुये हैं । सूर्य्यवंश शिरोमणि दशरथात्मज रामचन्द्र को कराल केकैयी ने कितना दुःख दिया था १२ बर्ष बनके असीम आपदों का कुश नयन ओट न रहने वाली सती सीता का बिरहजन्य शोक स्नेहसागर पिता का सदा के लिये बियोग; ये सब सहकर उनका शुद्ध हृदय उस सौतेली मा से पुनर्मिलन में समर्थ हुआ, आज कल के ओछे

पाव मा बाप की तिरछी आंख की आंच न सह कर वह बैठते हैं कि हमारा तो उनकी तरफ से हिरदै फट गया, प्रिय पाठक! श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज भी एक बड़े विशद और विशाल हृदय के मनुष्य थे, जिन्होंने लोगों की गाली गलौज निन्दा चुगली आदि अनेक असह्य बातों को सह कर उन के उपकार से मुंह न मोड़ा। आज जिनका विपुल हृदय मानो निकल कर सत्यार्थ प्रकाश बन गया है। एकबार वहां के चन्द लोगों ने कहा कि वह नास्तिक मुंह देखने योग्य नहीं है। यह सुन कर कुछ भी उन की सुखश्री मलिन न हुई और किसी भांति माथे पर सिकुड़न न आई। गम्भीरता से उत्तर दिया कि यदि मेरा मुंह देखने में पाप लगता है तो मैं मुंह ढांप लूंगा पर दो २ बातें तो मेरी सुन लें। बस इसी से आप उन के वृहत हृदय का परिचय कर सक्ते हैं किसी ने सच कहा है। "सज्जनस्य हृदयंनवनीतं यहदन्ति कवयस्तदलीकम्। अन्यदेहविलसत्परितापा त्सज्जनो द्रवतिनोनवनीतम्„ एक सहृदय कहता है कि कवियों ने जो सज्जनों के हृदय की उपमा मक्खन से दी है वह बात ठीक नहीं है। क्योंकि सत्पुरुष पराया दुःख देख पिघल जाते हैं और मक्खन वैसा ही बना रहता है बस प्यारो यदि तुम सहृदय होना चाहते हो तो ऐसे उदार हृदयों का अनुकरण करो, ऐसे ही हृदय दूसरोंके हृदयों में क्षमा, दया, शान्ति तितिक्षा, शील सौजन्यता, सच्ची आस्तिकता और उदारता का बीजारोपण करने में योग्य होते हैं और सच्चे सुहृद कहाते हैं।

।माघ मेला।

अधकुंभी होने से अब कि साल माघमेला की विशेष धूम है नगाड़े सा चूतर वाले हुरदङ्ग नागे बैरागड़े और उदासियों के झुण्ड के झुण्ड अभी ही से इकट्ठे हो रहे हैं और जड़बुद्धी महाजन तथा दुर्भिक्ष और टैक्स के बोझ से दबी और कु-

चलो प्रजा का धन लूट २ नित्य माल चाबना और कलोलें करना उनकी फकीरी और बैराग योग का सारांश है जो हो पर हमारे देश के बजूसूम निकम्मे धनियों के श्रद्धा जाड्य का निचोड़ यही है कि इन आवारा और हुर्दङ्गों ही के मान दान से स्वर्ग की सीधी सीढ़ी लग जाती है—जिन से किसी वास्तविक देश की भलाई के काम मे शरीक होने को कहा जाता है तो खीस वाय दुम दबाय भाग निकलते हैं अस्तु माघ मेले में पहले की अपेक्षा अब राजकीय अत्याचार बहुत कम है और मेले का प्रबन्ध भी कई बर्ष से अच्छा होता है पर प्रयागवाल और दूकानदारों से महसूल इतना अधिक उगाहा जाता है जिस्से अन्त में लोगों को नफा नुकसान बराबर रहता है किसी दस में एक दूकानदार या प्रयागवाल को महसूल आदि का बोझ चुकता कर शायद ही कुछ बच रहता हो-इसलिये जब तक इन महसूलों में कमी न होगी हम कभी न कहैंगे कि यह अत्याचार नहीं है

।दुर्भिक्ष अब और किसे कहैंगे॥

महीनों से १२ सेर का गेहूं बिक रहा है और यावत् अन्न सब मंहगे हैं कोई प्रकार का अन्न सस्ता नहीं है कि गरीब बेचारे उसी से अपने दग्धोदर को किसी भांत पूर्ति कर अपने कुनबे को पालते—कई बर्ष से बराबर अच्छी बृष्टि होती है किसी प्रान्त में अवर्षण नहीं है कि सब अन्न उधर को खिचजाय तब इस दुर्भिक्ष का दोही कारण है एक तो राजा की नीयत

दूसरे बिलायत को गेहूँ आदि अन्न को खींच-हम तो उसी दिन अपना करम ठोंक बैठे थे जिस दिन सुना कि अमरिका वालों ने "एक्सचेंज,, बट्टे के गोल माल के कारण इङ्गलैण्ड को गेहूं देना बन्द कर दिया है अन्न की ऐसही खीच बनी रही और राजा की ओर से इसके रोकने का कुछ प्रबन्ध न किया गया तो आश्चर्य नहीं कि कुछ दिनों में अभी ५ सेर का गेहूं बिके-गवर्नमेंट को हमारा उचित परामर्श यही है कि हम सब लोग जहाजों में लद २ बङ्गाले की खाड़ी मे डुबो दिये जांय इङ्गलेंड ही वाले जियें—धन्य स्वार्थान्धता !! धिक !! यहां तक स्वजाति पचपात—दूसरे यह अन्न का दुर्भिच राजा के नीयत की पूरी कसौटी है—वही लार्डरिपन महोदय के समय में प्रजा पाँच वर्ष लौं कैसे सुख और अमन चैन में रही अन्न का अत्यन्त सुकाल था किसी प्रकार की आधिभौतिक या आधि दैविक पीड़ा हम पर न आई वही दो वर्ष से देखते हैं खेत में जब तक अन्न के पेड़ खड़े रहते हैं तब तक यही आशा होती है कि अन्न के बोझ से पृथ्वी दबी जाती है कटने के समय न जानिये सब बीज कहां उच्छिन्न हो जाते हैं और किसानों के देन पोत तक को भी भर पूर नहीं आंटता-रोग देखो तो जैसा हैजा और ज्वर आदि का उपद्रव इस वर्ष हुआ वैसा कम किसी वर्ष उठाना पड़ा है हमारे शास्त्रों का यही निश्चय है कि पुण्यशील राजा के राज्य मे प्रजा को सब सुख ही सुख रहता है और राजा के मन मे खोटाई जब है तो उस्का असर प्रजा पर पहले

पहुंचता है—ईश्वर से हमारी यही बिनती है कि हमारे सामयिक प्रभु को अब भी सुबुद्धि दे जिस्मे हमारा कल्याण हो नहीं तो उधर से टैक्स इधर से अन्न का अकाल भारतीय प्रजा को निर्मूल कर डालेंगे ।

। मा ।

संसार मे मा शब्द भी अनुपम और अद्वितीय है विचार के देखिये तो मा के सदृश उपकारी प्रेम और वात्सल्य का सर्वस्व इस लोक मे दूसरी कोई बस्तु नहीं पाई जाती—जिस्के उच्चारण मात्र से प्रेम और प्रतीति का पूर्ण संचार हृदय मे होता है जो मनुष्य आखों को बन्द कर ध्यानगम्य अपनी मा के चरण कमलों पर सिर धर उन्हे अपने प्रेमाश्रुबिन्दुओं से धोते हैं तब जो आनन्द उन्हे मिलता है उस्की साची केवल चित्त की बृत्ति है जिव्हा के द्वारा उस्का प्रकाश किसी तरह होही नहीं सक्ता वा जिस समय मा अपनी गोद मे बैठाय प्रेमाश्रुओं से सींचती है उस समय नये पौधे को जल से सींचने के समान स्तनन्धय बालक को असीम आनन्द और पुष्टि पहुचती है-मा के चिन्तवन मात्र से पाप मनुष्य के हृदय से निकल अलग खड़ा होता है काम क्रोध लोभ मोह इन सबों मे कामका वेग अति प्रबल होता है और उस काम को जगाने वाली संसार मे अबला गण हैं परन्तु अबला के सन्मुख होने पर यदि कहीं मुह से निकल जाय तू मेरी मा है तो काम का प्रबल उद्वेग भी शान्त होजाता है इसी से भिचुक लोग स्त्रियें को मा या माई ऐसा कह भि-

चा मागते हैं—जब तक मनुष्य अपनी माता की गोद नहीं छोड़ता तब तक [निष्पाप] innocent [समझा] जाता है परन्तु ज्यों ही मा की गोद छोड़ मनुष्य अपने [पावों] से उछल कूद करने लगा कि निष्पाप न रहा भांत २ की बिपत् संपत् क्षण २ मे उसके लिये कहीं दूर नहीं है—अज्ञ हो चाहो ज्ञानवान् हो दुःख और वेदना के समय केवल मा का आश्रय सब लेते हैं—मा कोही सब पुकारते हैं—राम रहीम भी माका मकार रहनेही से परम पवित्र सन्तोष दायक शब्द होगया है—राम से से म के निकाल डालने पर रुलाने वाला रा रहता है रहीम भी मा कि निकाल डालने पर जो बचगया वह रही क्यागया और मनुष्य की कौन कहे पशु भी भयमे पड़ म म ऐसा पुकारते हैं—पहला शब्द जो मनुष्य उच्चारण करता है वह यही मा है—निषेधार्थक मा के कारण पार्वती का नामही उमा हो गया कविवर कालिदास लिखते हैं—"उ मेति मात्रा तपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम,,—स्मृतियों मे भी नित्य पूज्य पंच देवताओं मे मा को सब से श्रेष्ट माना है—"नदेवोमातरःसमः,, प्रयाग के मुख्य अधिष्ठातृ देव माधव इसीलिये माने गये कि उसमे मा है "मा लक्ष्मी के धव पति,,मा "लक्ष्मी,, संसार मे ऐसी वस्तु है कि इसके लिये कौन नहीं ललचाता "एक कंचन एक कुचन को किन न पसारयो हत्थ,, बर्णमाला मे मा न होता तो मान माप अथवा मान प्रतिष्टा का परिज्ञान इसको कभी होताही नहीं पाणिन भगवान् जो बड़े सयाने और चतुर रहे प्रमाण के ज्ञान की शक्ति केवल इस मा मे पाया इसलिये अपने धातु पाठ मे

माङ् माने यह धातु गढ़गये—अस्तु आकार विशिष्ट मा शब्द की पूर्ण कला और अद्भुत शक्ति को अलग रख हम केवल म का विचार करते हैं जिसके उच्चारण मात्र से प्रेम और विश्वास का अंकुर मनमे जमजाता है संस्कृत अक्षरों की वर्णावलीमे "ल" के उपरान्त प्रेम मैत्री और प्रतीति का पोषक वात्सल्य रस से सना यदि कोई अक्षर है तोयही "म" है माता मित्र मनुआ मधुर मार्दव महो मेल ममता माशूक आदि शब्द जिन्हें प्रेम और विश्वास का भाण्डार कह सक्ते हैं मकार युक्तही रक्खे गये हैं मृत्यु और मरण मे भी म के रहने से हम इसकी न्यूनता नहीं कहना चाहिये "एकोहि दोषो गुण सन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणे मानते क्योंकि ष्विवाङ्कः" ह० प्र०

पुस्तक प्राप्ति।

खड़ी बोली का पद्य

बाबू अयोध्या प्रसाद खत्री मोज़फ़रपुर निवासी कृत संग्रहीत—इसमें पंडित स्टाइल मुन्शी स्टाइल आदि कई प्रकार की बोली के पद्यों का उदाहरण दिखाया गया है—प्राचीन कविता से इसका ढंगही कुछ निराला है—पर पहले खड़ी बोली का कुछ "डेफिनिशन" लक्षण होना चाहिये अभी तो हमे यही मालूम नहीं कि खड़ी बोली कैसी बोली है और जिस भाषा में तुलसी आदि कवियों के काव्य तथा इन दिनों के समाचार पत्र और ग्रंथ लिखे जाते हैं वे किस बोली में हैं—अस्तु ग्रन्थकार का यह प्रयत्न अवश्य सराहना के योग्य है—पर मेरी समझ मे गद्य लेख खड़ी बोली मे हो या ब्रज भाषा मे हो चाहो उसमें कूट २ के संस्कृत शब्द भरेजायं चाहो अरबी के बड़े बिकराल शब्द उसमे हों अपने २ ढंग के सबो लेख उत्तम हैं पर हम अपनी पद्यमयी सरस्वती को किसी दूसरे ढंग पर उतार मैली और कलुषित नहीं किया चाहते पद्य या कविता उसी का नाम है जिस मार्ग पर भूषण मतिराम पद्माकर तथा सूर

तुलसी बिहारी प्रभृति महोदय गण चल चुके हैं क्योंकि रस और माधुर्य जो कबिता का प्राण है सो इन रूखी खड़ी बोलियों में कभी आने ही का नहीं—इसी से मेरा एक यह भी मत है कि हिन्दी की उन्नति केवल गद्य लेख के द्वारा हो सकेगी पद्य में कबिता के नाम से जब आप कुछ लिखियेगा तो उन्हीं पुराने कवियों की चोरी होगी इसी से किसी अंगरेजी बिद्वान् का यह मत भी है " As civilization increases Muses decrease,, अर्थात् ज्यों ज्यों सभ्यता का प्रकाश होता जाता है पद्यमयी सरस्वती क्षीणता की दशा में आती जाती है—इसलिये कबिता के लिये उत्तम और उपयुक्त भाषा ओज माधुर्य गुण विशिष्ट बुन्देल खण्ड ही की मर्दानी बोली है—क्योंकि भाषा कवियों के समूह के समूह उसी प्रान्त मे हुये हैं ख़ैर उसके अभाव मे मधुर पर ज़नानी ब्रज की भाषा भी उपयुक्त है—ठेंठ बैसवारे की बोली की कबिता न जानिये क्यों मुझे बहुत ही भाती है—गोसाईं तुलसीदास की कविता में सब प्रकार की बोली पाई जाती है इसी से वह अधिक सर्व संमत और मधुर है—अब गद्य लेख के सम्बन्ध मे तुलसी सोना मुह मे ले कर यह प्रण कर लेना कि गूढ़ातिगूढ़ संस्कृत शब्दों के अतिरिक्त उर्दू शब्द आने ही न पावें जैसा हमारे नवीन सम्पादक हिन्दुस्तान तथा दो एक और सहयोगी करते हैं दफा की जगह अध्याय सिपाही का योद्धा जहाज को अर्णव यान कचहरी को न्यायालय इत्यादि—ऐसा करना तो मानो हिन्दी का गला घोटना है और संस्कृत शब्दों की सांकड़ से उसे जकड़ रखना है भाषा के विस्तृत करने का यह उत्तम प्रकार कभी न कहा जायगा—नवीन क्रम की हिन्दी के जन्म दाता सुग्रहीत नाम बाबू हरिश्चन्द्र के लेख को नमूने में रख के चलिये तो ये दोष कहीं न पाइयेगा न विहारबन्धु तथा काशी पत्रिका ही की भाषा को हम हिन्दी कहेंगे जिनके सम्पादकों को यह ज़िद है कि जिसके लिये सुगम कोमल प्रचलित हिन्दी शब्द मौजूद हैं उनके लिये भी कठिन से कठिन अरबी फ़ारसी शब्दों ही का प्रयोग करना जैसा खट्टा के लिये तुर्श लिखना पहाड़ की जगह कोह लिखना आत्मा न

लिखा रूह लिखना लाज, की जगह शरम भय को खौफ़ इत्यादि—अस्तु गद्य मे इन विविध भाषाओं को भर पूर खिचरी बनाय उसे चाहो खड़ी बोली कहो चाहो साधु भाषा कहो कोई हानि नहीं है पर पद्य में खड़ी वोली उस स्त्री के समान भासित होती है जिसका नख से सिख तक सम्पूर्ण अलङ्कार उतार लिया गया हो मेरी तो यही संमति है ग्रन्थकार के मत के अनुकूल न हो तो आशा है मुझे माफ करेंगे।

माधुरी बिलास।

चार हिस्सो में लखाऊ ज़िला इटावा निवासी शङ्कर दीक्षित बिरचित ग्रन्थकार की कबित्व शक्ति निस्सन्देह प्रशंसा के योग्य है और अनेक प्रकार के छन्द कबित्त सवइया इत्यादि तथा भांत २ के गाने के उपयोगी छन्दों की बानगी इन पुस्तकों में दीगई है किन्तु देशोपकारी बातों पर यह कबिता की जाती तो अधिक लाभ था मूल्य ॥) चारो हिस्सों का है।

गोधर्म प्रकाश।

• • • • • •

हरिद्वार गोरक्षणी सभा के सभापति सेठ मोहनलाल द्वारा सम्पादित इसमे गोरक्षा संबन्धी लेख जो इधर हाल के नम्बरों मे छपचुके बड़ेही अद्भुत और चमत्कारी लेखहैं वार्षिक मूल्य १।) फरुखाबाद से यह मासिक पुस्तक निकलती है उद्देश्य इसका बहुतही प्रशंसनीय है।

। क्षमावड़न को उचित है।

वर्षों से यह त्रुटि हमारे साथ लगी आई कि हम ठीक समय पर न उपस्थित होसके इसलिये अबकि बार मासिक के बदले त्रयमासिक हो कर आये हैं तीन मास का हिसाब लगाने पर हमारे कलेवर मे थोड़ीसी न्यूनता पाई जायगी आशा है कि हमारे बाचक वृन्द अपना बड़प्पन निबाहने को हमे माफ करेंगे।

Gulzartaph

हिन्दीप्रदीप ।

मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ॥
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणि दीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

१ जनवरी फरवरी मार्च सं० १८८८ जिल्द ११ ५-६-७, संख्या

इलाहाबाद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
देशोपकारक यंत्रालय में प्रकाशित
किया गया

मूल्य अग्रिम ३।=) पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १।=)

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द ११ संख्या ५-६-७ } { ५ जनवरी-फरवरी-मार्च- सन् १८८८ ई०

सन १८८८ और हमारे नये लाटसाहब को दरवार का हौसिला

समय भी कैसाही उड़ंकू दोवाज़ कबूतर है जो उन्नति और अवनति के दो वाज़ुओं से उड़ता हुआ अनेक झोंके खाखा कर संसार मात्र को अपने साथही साथ उड़ाये चलता है अनेकानेक शताब्दी न जानिये कितने बर्ष मास पख २ वारे निगल कर आज सन् १८८८ का आरंभ है बिशेष दूर न जाकर हम इधरही दो तीन शताब्दियों के सन् ८८ की समालोचना करते हैं सन १५८८ में भारत की क्या दशाथी साहनसाह अक्बर देहली के तखत पर सुशोभित थे यह पहला बादशाह था जिसने अपने बुद्धि बल से लोगों को अपना कर लिया जिस्के दरबार के नौरतन अभी

तक याद किये जाते हैं हिन्दूकुलभूषण बीरबल तो उस्के नाक के बाल थे राजा टोडरमल ने मोहाल मौज़ा पटवारी कानूनगो जमाबन्दी इत्यादि का जो तरीका जारी किया था वह आज तक चला जाता है मुल्लाफैज़ी और अबुल् फज़ल की बुद्धि और विद्या जगद्विख्यात और आदर के योग्य थी अबुलफज़ल की लेखिनी की प्रशंसा में शाह ईरान यों कहता था हिन्दुस्तान की तलवार से मै नहीँ डरता जितना अबुलफज़ल की क़लम से "मनज़तेग हिन्दी नतरसं मगर अज़ कलम अबुलफज़लमी तरसं,, अबुलफज़लके क़लम की यह कैसी बड़ी तारीफ़ है कि उन्होने बेनुक्ते का एक नयाकुरान गढ़ डाला अक्बर यहां तक सर्व सम्मत और सबको प्यारे हुए कि हिन्दुओँ ने उन्हे अपना अवतार और मुसल्मानो ने अपना पैगम्बर माना उसी के उपरांत दूसरी शताब्दी के सन् १६८८ ईसवी में उन्हीके परपोते औरंगज़ेब दिल्ली के तख्त पर हुकूमत करते थे जिनकी करतूत से हिन्दुओं की कौन कहे मुसल्मानी ही मे आपस में बिगड़ गई शिया सुन्नी दो हो गये अपनी सपूती से लोहू की नदी बहाकर बाप भाई सबको कतल या कैद कर अकेले आपही आप बच रहे दक्खिन में महराठों के आदि पुरुष शिवराजवली पैदा हुये जिनके उत्तेजित पराक्रम से प्रोत्साहित हो उनकी जाति वाले धीर बांकुरे हठीले महराठे पीछे से दक्खिन मे दिल्ली की हुकूमत का कहीँ नाम निशान भी न रक्खा पंजाब में नया मत चल पड़ा जो गुरू नान्हक के शिष्य कहलाये पौरूषेय गुणशाली जिन सिक्खों के अन्तिम वीर

पंजाब के सिंह Lion of Punjab को देखने वाले अब तक मौजूद हैं—उपरांत सन १७८८ में पश्चिम से उस महा प्रतापी सूर्य का उदय हो रहा था जिसके तेजः पुंज प्रताप को लक्षित करना लेखनी की सामर्थि के बाहर है जिसका हुंकार और भ्रकुटी बिलास ब्रह्मा से काश्मीर तक नेपाल से सीलोन तक व्याप्त है छोटे बड़े राजा प्रजा सूर सामन्त सब जिसका मुंह जोहते हैं ऐसे समय इस अन्तर्वेदी आर्यावर्त पश्चिमोत्तर और अवध के राज्य सिंहासन पर आज दिन सर आकलैंड कालविन विराजमान हुये हैं बहुत से पढ़े लिखे लोग जो भाग्य और किस्मत के कायल न थे उन्हे भी यह मानना ही पड़ा कि नहीं भाग्य भी कोई चीज़ है क्योंकि कितने इनके समान कोटि वालों ने इस पद के पाने के प्रयत्न से निराश हो घर की राह ली यदि उनका नाम गिनाया जाय तो उन्हे लज्जा होगी और हम धृष्ट समझे जांयगे हम लोगों के खयाल से इसे ईश्वर की बड़ी कृपा और सपूती की बड़ी बात कहना चाहिये कि बेटा भी उसी पद पर सुशोभित हो जिस पद पर पहले बाप रह चुका है—यह पहले लफ्टिनेंट गवर्नर हैं जिनकी दो पुश्त बराबर एक ही ओहदे तक पहुंची सरविलिअम म्यूर के उपरान्त ऐसा कोई हाकिम इस पद पर न आया जो प्रजा की अन्तरंग बातों से भरपूर जानकारी रख उनको प्रसन्न रखने की यथोचित चेष्टा करता क्योंकि हिन्दुस्तान ऐसे देश में वही प्रजा के मन को आनन्दित और सन्तुष्ट रक्खेगा जो उनके अन्तरंग अभिप्रायों से पूर्ण रीति पर परिचित होगा सर आकलेंड कालविन से हमको वह आशा करना कुछ अनुचि

८४

त न था किन्तु बहुत सी बातें जो इन दरबारों मे उन्होंने कही उन के तात्पर्य स्पष्ट न देख वह आशालता मुरझासी गई–कुछ दिनोसे लोगों ने यह निश्चय कर रक्खा है कि दरबार से प्रजा को कोई लाभ नहीं है क्योंकि जो प्रयोजन दरबार का था कि हमारा वास्तबिक राजा अपने प्रजागण से भरपूर परिचित हो जाय सो इन दरबारों से न होते देख दरबार करना बन्द कर दिया गया था पर अब वह फिर प्रारंभ कियागया है देखे इसका क्या परिणाम होता है–प्रभुवर कालविन को स्मरण रख ना चाहिये कि अब यह देश वही नहीहै जो ३० बर्ष पहले था जब इनके पिता इस पद पर सुशोभित थे–हमारी बात चाहो कड़ुई और बुरी मालूम हो अंगरेजी की उच्च शिक्षा और अंगरेजों का बिशेष संपर्क नें हमारे खयालों को बिलकुल बदल दिया और राज्यशासन के उच्चाधिकारियों मे जो इन बातों पर ध्यान नही देते उन्हे पीछेसे पछताना पड़ता है पर अभी तो इनके शासन का प्रारंभही है जब तक हम इनसे बिशेष परि चि तन हो जांय इनके बिषय मे कुछ कहना सुनना धृष्टता समझी जायगी किन्तु इलाहाबाद के दरबार मे बहुत सी प्रलो भन की युक्तियों के कहने के उपरान्त श्रीमान् का यह कहना कि "आप लोग अपनी प्रवृत्ति उन कामोंकी ओर झुकावें जो यथार्थ मे आप लोगों से संवन्ध रखताहै और जिनको आप पूरा कर सक्ते हैं–अधिक साहस के ऐसे खयालात और बिचा रांशों के वादानुवाद मे समय को व्यर्थ न खोवें जिनके पूरा

८५

होने के लिये उस समुदाय के काम की आवश्यकता है जो चिरकाल और अत्यन्त श्रमजनित शिक्षा और सभ्यता का फल है" मैं समझता हूं यह हमारा जातीय महासभा इत्यादि बातों से संबन्ध रखता है किन्तु सोचने की बात है मनुष्य मे अपनी भलाई और आगे बढ़ने के प्रयत्न की चेष्टा स्वाभाविक धर्म है विशेष कर उस दशा मे जबकि हम अपने एक दूसरे भाई को सभ्यता की सीमा तक पहुंचे हुये देखते हैं ऐसे समय शुभ चिन्तक दूरदर्शी उदार प्रकृतिवालों को यही उचित है कि उसके उत्साह को अपने उत्तेजित बचनों से चतुर्गुण बढ़ावे-पहले तो यह कलंक का टीका हमारे माथे पर लगाना कि इनमे समुदाय शक्ति नहीं है जब हम समुदाय सक्ति पैदा करने की चेष्टा मे लगे तब हमारे उत्साह को इस तरह पर भंग करना कहां की उदार नीति है—कोई जाति या देश सदा एक सी गिरी और हीन दशा में कभी नहीं रहा किन्तु मनुष्य की दशा का परिवर्तन प्राकृतिक धर्म है भिन्न २ देश के इतिहास उसकी साक्षी दे रहे हैं तब यश या अपयश चाहो जो लेले।

॥ फ्रीट्रेड ॥

हमारे नव शिक्षित अंगरेजी विद्याभिमानी युवक गणों की नस नस में पाश्चात्य शिक्षा के विष ने यहां तक प्रवेश कर लिया है कि अंगरेज महाशय चाहे कैसाही विचार हीन बचन कहें उनको वे गुरु वाक्य और वेद वाक्य से अधिक समझ दासवत् उनके अनुगामी होने में नहीं चूकते और आप अपने साथ स्वतंत्रता का झंडा उड़ाय दूसरों को जो उनसे सहमत न हों हंस-

८६

ते हैं और अपने को महा महोपाध्याय समझ साधारण लोगों को जिनसे वे अशिक्षित समझ घिनाते हैं उन बेचारों को अंगरेजों की कुटिल नीति का मर्म बतलाना तथा उनका समाधान करना तो एक ओर रहा उनसे साधारण बात चीत करने में भी समय की व्यर्थ हानि मानते हैं— जहां बहुत सी विष भरी शिक्षा इन्हें मिली है उन्मे यह "फ्रीट्रेड" भी एक है जिसे देखिये इसी का गुण गा रहा है और फ्रीट्रेड २ कहते २ अपना सर्वस्व खो बैठे फिर भी यह फ्रीट्रेड पिशाच उनका पिण्ड नहीं छोड़ता— भला साहब फ्री-ट्रेड है क्या वस्तु सो तो बतलाइये? यह फ्रीट्रेड हमारे शिक्षा गुरु अंगरेज महानुभावों की एक बानी है बड़े २ पोलिटकल बिचारों का सारांश है राजनीति का लुआब है गूदा है तुम्हे कैसे समझावें तुम कुछ पढ़े लिखे तो हई नहीं राजनीति बिषयक अंगरेजी भाषा में बड़े २ ग्रन्थ पोलिटिकल इकानोमी के इस विषय के रचे गये हैं उन्हे पढ़ते तो समझ सक्ते कि यह फ्रीट्रेड क्या वस्तु है—अच्छा साहब हम नहीं पढ़ सही आपतो बिद्यातिबिद्य महाविद्य हैं आपने इसका जो कुछ सारांश निकाला हो वही हमको समझा दीजिये—अजी यह बड़ी लम्बी चौड़ी बात है इसका समझना समझाना एक दो दिन का काम नहीं है हमको इतनी फुरसत कहां कि हम तुम्हारे साथ अपना दिमाग खाली करें अब हमे जियादह फुरसत नहीं है हमारे हाजिरी खाने का वक्त हो गया जाइये फिर कभी आइयेगा तो देखा जायगा।

इनके द्वारा इसका भेद मालूम होना अति कठिन है तो अब हमी इसके जानने का प्रयत्न करें— हमने जहां तक अंगरेजी लफ्जों के मानी सुने सुनाये हैं उससे यही अनुमान कर सक्ते हैं कि यह दो अंगरेजी शब्दो की मिलावट से बना है फ्री और ट्रेड फ्री का अर्थ है स्वतंत्र और ट्रेड का तात्पर्य है वाणिज्य– अर्थात् इस "स्वतंत्र वाणिज्य" का प्रयोजन यह है कि संसार भर के मनुष्य मात्र बिना किसी रोक टोक के परस्पर एक दूसरे के साथ स्वतंत्र वाणिज्य कर सकैं सब को सब जगह की चीजें आसानी से मिल सकैं सब लोग आपस

में भ्रातृभाव से मिलैं और मनुष्य मात्र में प्रेम और प्रतीति बढ़ै—यदि इसके यही तात्पर्य हैं तब तो लेखक महाशय आप व्यर्थ इस फ्री ट्रेड को बुरा कह हम सबों को गुमराह कर रहे हैं यदि इसके द्वारा संसार भरके मनुष्यों में सुहृद् भाव उत्पन्न हो सक्ता है तो भारतीय प्रजा गण को वांछनीय और क्या है—हां साहब ऐसीही ऐसी चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे सादे निरे सिंपिलटन हम हिंदुस्तानियों को दम झांसों मे रख चतुर लोगों ने मन माना लूटा बुद्धिमानी और चतुराई इसी का नाम है कि हम लुटजाने का भी हम बराबर उनको अनेक धन्यवाद देते रहे—यदि ऐसी ही ऐसी बातों से सुहृद्भाव संसार मेस्थिर होता है तो व्यर्थ को इंगलैंड रूस फ्रांस प्रभृति बड़ी २ सेनायें साज आपस में लड़ झगड़ प्रतिवर्ष लाखों मनुष्यों की जान संग्राम महायज्ञ में होम करती हैं—स्वतंत्र वाणिज्य की करतूत से क्यों न-हीं इन्से सुहृद् भाव स्थिर हो जाता एक दूसरे के हानि लाभ को अपनी ही हानि वा लाभ समझें विषम भाव का बीजभी न रहना चाहिये—यह नया और अनोखा सौहार्द और भ्रातृ भाव देखा गया कि अन्न पैदा करने वाले खेतिहर बेचारे मर २ अन्न पैदा करैं उनको लड़कों की भांत बहला फुसला अथवा कभी को उन्हे नवाब साहब भी बनाकर आप उनके खाने का सब अन्न बटोर ले जांय और अन्त में जब वे बेचारे भूखों मरने लगैं तब लाचार हो उस अन्न के बदले मे दिये हुये उन खेल खिलौने अथवा लोहे लक्कड़ों को बेच फिर दूसरे देशों से अन्न लावैं जिस्से जितना उन्होंने दिया था उसका चौथाई भी हाथ न लगै—अब हम पूछते हैं इस भ्रातृ भावका परिणाम हमारे देश के सीधे सादे मनुष्यों को फुसलाय केवल स्वार्थ साधन के अतिरिक्त और क्या है—फिर यह फ्रीट्रेड़ तभीतक उत्तम है जबतक इ-स्के द्वारा मेनचेष्टर और लिवरपूल को कोई हानि नहीं पहुंची किंचित् भी हानि पहुंचने पर वही धुआंधार फिर कहां ग्लैडस्टोन कहां लार्डरिप-न ये लोग अपना फ्रीट्रेड लिये बैठे रहैं—इस स्वतंत्र वाणिज्य की सराहना

तभी तक है जब तब विलायत के कारीगरों का माल यहां भर पूर खपता जाता है और वहां के सौदागरों को इससे लाभ है--मान लीजिये वे सब कारीगरी की चीज़ें जो बिलायत से अब हिंदुस्तान को आती हैं यहां ही तैयार हुआ करें और उनका चालान उलटा इंगलैंड को हुआ करे तब इस स्वतंत्र बाणिज्य की कभी कदर न की जायगी बरन तब इसके रोकने का घोर आन्दोलन होगा इनसाफ पसन्द न्याय दृष्टिवाले दो चार मनुष्यों ने किसी अत्यन्त अनीति की बातों पर कुछ कहा सुना भी तो उनकी लंबी २ स्पीच और बक्तृता पर कौन कान देता है ऐसे २ तमाशे और नकलें तो पार्लियामेंट मे रोज़ हुआ करती हैं अच्छी तरह लड़े झगड़े आपस में खूब सिर फोड़ा अन्त में हुआ वही जिस्मे इंगलैंड को लाभ है वही ग्लैडस्टोन काबुल की लड़ाई मे कितना लड़े झगड़े कि लड़ाई का खर्च हिन्दुस्तान पर न पड़ना चाहिये और वही जब प्रधान मंत्री के अधिकार पर पहुंचे तब कहने लगे कि अफ्रिका की लड़ाई का खर्च भी हिन्दुस्तानही से मिलना चाहिये—लोग कहते हैं एक ग्लाडस्टोन ऐसे निकल गये तो क्या सबी ऐसे हैं उनके समूह मे बहुत से भले आदमी हैं जो न्याय अन्याय पर भरपूर दृष्टि रखते हैं परंतु हम तो यही कहेंगे "कालेभले न स्वेत„ माना कि एक दो पुरुष ऐसे हों भी जिनको बास्तविक न्याय पर भरपूर दृष्टि है तब भी क्या एक चना भार फोड़ सक्ता है।

अब देखना चाहिये यह फ्रीट्रेड हम लोगोंको सिखाने ही के लिये है कि इसकी कुछ जड़भी है-जब अंगरेज़ी राज्य को यहां बहुत दिन नहीं बीते थे और यहां का बना कपड़ा बिलायत मे उलटा जाकर बड़े दामों मे बिकता था तब यहां का बना कपड़ा पहरनें और बेचने के लिये दण्ड विधान किया गया उस समय यह फ्रीट्रेड कहां गयाथा—इसकी बुनियाद तो तब से है जबसे कि बंबई वालों ने कपड़े की कलें जारी किया और यहां भी बहुत क़िस्म के कपड़े बनने लगे तब मेनचेस्टर के जुलाहों मे खलबली पड़ी कि

कपड़े का टिकस बन्द कर दिया जाय जिस्मे बिलायत का बना और बम्बई का बना कपड़ा एक भाव पड़े और अब सर्कार को कोना झाकना पड़ा कि किस युक्ति से बिलायती कपड़ों पर "इमपोर्टड्यूटी„ बन्द करें सोचती २ इसी फ्रीट्रेड़ की सहज युक्ति ध्यान मे आई तो अब टिकस उठ जाने से बिलायती कपड़े और बंबई की कलों के बने कपड़े एक भाव पड़ने लगे—अब आप अच्छीतरह समझ गये होंगे कि यह फ्रीट्रेड का ढोंग क्यों रचागया—भला कहिये तो किस देश मे बाहर से आई हुई चीज़ों पर महसूल नहीं लगता क्या यहां की गवर्नमेंट मेनचेस्टर के सौदागरों के मालकी रक्षा का प्रबन्ध नहीं करती उस्की रक्षा के लिये नियत पुलिस पहरुये आदि का खर्च यहां की गवर्नमेंट अपने खज़ाने से क्या नहीं देती तब उस व्यय को उसी तरह पर उनसे भी क्यों न उगाहे जैसा हम से भांत २ के करके द्वारा उगाहती है किन्तु इसी फ्रीट्रेडने उन्हे उम्र कर देने से स्वच्छन्द कर दिया हमलोग बहुत रोये गाये कौन सुनता है—परिणाम में इस "इमपोर्ट ड्यूटी„ नये मालकी आमदनी पर टिकस उठजाने से घाटा देख इनकंटेक्स आदि बहुत से नये २ टेक्स भारतीय प्रजा पर जारी किये गये परन्तु मेनचेष्टर वालों की धमकी के कारण विदेशीय वस्तुओं की ओर कौन निहार सक्ता है—फ्रीट्रेडके पक्षपाती हमे लालच दिखाते हैं कि इस्के द्वारा बिलायत में अन्न रुई नील आदि के भेजने से हिन्दुस्तान को भी तो लाभ है कि महसूल का एक पैसा भी नहीं देना पड़ता परन्तु वास्तव मे देखिये तो लाभ क्या बिल्कुल हानि ही हा-नि है क्योंकि बदले में हम को बिलायत की बनी कारीगरी की चीज़ें मिलती हैं अथवा हुंडी मिलेगी सोभी वहां के माल ही पर होगी बस प्राणपोषक अन्न दे अङ्गर खंगर कंकर पत्थर लीजिये—अन्न जो हमारा आहार है जिस्से श-रीर पलता है सो समुद्र पार बिलायत को ढो गया पेट बिना खाये मानता नहीं अब बतलाइये उस कांकर पत्थर या लोहा लक्कड़ को चबांय या क्या क-रें हमको उस अंगर खंगर की कुछ आवश्यकता नहीं है उसे आप अपने पा-

नहीं रखिये हमारे लिये तो अन्न धन बड़ा धन है हमारे यहां सदा इस धन का विशेष आदर रहा और जो आप को हमारे ऊपर कृपा करना ही मंजूर है और आप हम को अपना धन देना ही चाहते हैं तो हमारा कृषी धन और गो धन छोड़ और जो चाहिये वह बदले मे लीजिये यदि आप हमारे ग्राहक बनें तो बड़े २ कारखाने हम आप के लिये खोल सक्ते हैं यदि आप यह कहैं हमारे यहां और सब वस्तु होती है हम को तो केवल कृषी धन की चाह है तो अन्त में हमारी यही प्रार्थना है कि हमको इस्का बदला करने की श्रद्धा नहीं है क्षमा करिये आप अपना धन किसी और को दीजिये हम अपनी गाढ़ की मिरजई मे अच्छे हैं आप के तनजेब और नैन सुख की इच्छा हमे नहीं है आप हमारे देशी भाइयों को लुभाइये नहीं आप के लिये बहुत से देश हैं वहां अपना जाल फैलाइये जब सिवाय अन्न के और कुछ हमारे पास देने को नहीं है तो हम अपना प्राणरूपी धन आप को भेंट नहीं करेंगे-रूस अपना अन्न दे जर्मनी दे वे लोग मांसाहारी हैं हम को तो केवल अन्न ही का आधार है हम जो अपना अन्न धन और गो धन आपको दे दें तो हम फिर क्या करें यहां तक तो आपको देते रहे कि पहले तो आप को अपने पुरखों का उपार्जित धन धान्य जो था वह दे डाला फिर लाखों बीघे नील अफीम और चाह मे बरबाद कर आप को दिये इतने पर भी आप को सन्तोष न हुआ तो अपने गाय बैलों के चरने की जो धरती थी वह जोत बो डाली ऊसर तक न बची सैकड़ों मील जंगल काट २ कर बो डाले फिर आप की शिक्षा मान वर्ष मे तीन २ चार २ फसलें पृथ्वी से लेने लगे इतने पर भी आप संतुष्ट न हुए तो अपना पेट काट २ आप के अर्पण किया जहां ३० सेर मन भरका अन्न बिकता था वहां १५ सेर १२ सेर का बिकने लगा पेशावर से कलकत्ते तक एकही भाव होगया पहले जब कभी वर्षा के अभाव से अन्न नहीं होता था तो वह महर्घता एक देशीय होती थी पर अब तो इस स्वतंत्र वाणिज्य की कृपा से देश भर में मंहगी छाई

हुई है और सब चौपट हो रहा है—और २ देशों को देखिये तो सब ओर से यही सुनाई देता है अमुक देश ने अमुक वस्तु अपने राज्य से जाना बन्द कर दिया अब के अमुक देश ने अमुक वस्तु पर इतना कर अधिक बढ़ा दिया इत्यादि—फ्रीट्रेडके उपासकों की दृष्टि मे हम लोग जो इसके विरोधी हैं अनुदार और मूर्ख तो हई हैं किन्तु अधिकांश यहां के ऐसेलोग भी जो खेती नहीं करते इस धर्म के काम मे बाधक हैं क्योंकि जब तक जीते हैं छीन झपट कुछ न कुछ खाही जाते हैं और उतनाही नैवेद्य हमारे पूज्य मेहमानों का कम हो जाता है—"घरका खाना किसने जाना„ दूसरों को तुम से कुछ लाभ न हुआ और अपनी मेहमानदारी की तारीफ उन के मुख से न सुनो कि आप बड़े सभ्य और उदार हैं तो आप का जीना ही व्यर्थ हैं—इसलिये हमने एक सुगम उपाय सोचा है कि इस भारत भूमि को खोद २ जहाजों में लाद २ इङ्गलेण्ड भेज दो और समुद्र पाट २ इसे इङ्गलेंड की भूमि कर डालो जिस्मे भारत की भांत इङ्गलेंड की धरती भी उर्वरा और रत्न गर्भा हो जावे परन्तु भारत का नाम उस्में न लगा रहे उपरान्त खेतिहरों को उसी तरह जहाजों मे लाद २ इङ्गलेंड पहुंचा दो बाकी लोगों को यहां के यहीं डुबो कर आप भी इस सेवा का पुण्य भोगने को स्वर्ग सदृश वहीं जाकर बसिये क्योंकि १२ सेर १० सेर तथा ८ सेर का अन्न बिकने से कैसी ही मंहगी होगी प्रजा धीरे २ रसातल को पहुंचेगी यहां बहुत से बोर धनवान् ऐसे भी हैं कि जब तक रुपये का सेर भर अन्न मिलता जायगा तब तक सर्कारको प्रसन्न रखने के अर्थ वा साहब कलट्टर की भयसे अथवा अपनी अमीरी की ठसकमे कभी यह मुह से न कहेंगें किहां अब अकाल है—किसान बेचारे जो ऐसेही फटेहालमे हैं तबतक मे तो कहीं उनका नाम निशान भी बाकी न रहेगा—इस्से हे भाई स्वतंत्र वाणिज्य के प्रेमियो आप इस काम को जल्द कीजिये अब अधिक कष्ट सहा नहीं जाता—हे अनाथ सनाथ जगन्नाथ अशरण शरण हम तुझे कोटि कोटि धन्यबाद देते हैं कि तूने ऐसा शीघ्र हमको हमारे पापोंके परिणाम रूप दुःखसे मुक्त करनेका उपाय करा दिया—यद्यपि शास्त्रों मे ऐसा कहा है कि प्रजाका कष्ट राजा के दोषोंका परिणाम है और माता पिता के दोषसे सन्तति दूषित होती है परन्तु हम ऐसा कह अपनी राज भक्ति मे बट्टा नही लगाया चाहते किन्तु समस्त दुःख और क्लेशों को अपनेही कर्मोंका का फल मान आपके इस शुभन्याय को बिनीत भावसे ग्रहण कर चंचल लेखिनी के चपलताकी क्षमा मांगते है—इति—ह—प्र—

कानग्रेस बधाई

॥ पण्डित श्रीधर पाठक रचित ॥

श्रीन्याश्चनेल कानग्रेसो भवतु भारत शुभाय

छप्पय

श्री भारत भारती प्रनय पूरन परिचायक
न्या सकरन नृप नीति, प्रजा जन प्रीति विधायक
श्च नैः शनैः प्रतिनिधि शासन पन्था संस्थापन
ने म ग्रथित सुख नेमि सनेह सनेह बनावन
ल व लेश कलेशादिकन को देश माहि शेष न रहै
का रज सोई कीजै सुगम बार बार नृप सों कहै ॥१॥
न गर नगर सों ह्वै प्रतिनिधि पाहुने पधारे
ग्रे ट ब्रिटन गुन गाथा गौरव गावन हारे
सो भा सुठि अनुराग उदधि मदरास जुड़ाई
भ रित नेह नव नदी उमगि भेटन उमड़ाई
व रसाय आस घन बिन्दुकन, त्रास निधन बिश्वास धन
तु लना पाइय नहिं जासु जग, जाति सभा आनँद सदन ।२।
भा वित भारत भार हरन सौभाग्य विवर्द्धन
र चन मान मृजाद आदि जातीय परम धन
त न मन धन सों प्रगटि भारतेश्वरी चरन रति
शु द्ध भाव युत सुमिरन तिहि प्रन अरु भारत गति
भा वै नेक न जनता बिषैं विषम भाव ममता जनित
य ह सफल होउ सो देश में "कान ग्रेस,, जातीय नित ।३॥

लखनऊ मे मुसल्मानों की जातयी सभा और सर सैयद अहमद तथा उनकी ऊट पटांग वक्तृता

मन्दराज में जिस समय जातीय महासभा का अधिवेशन हो रहा था उसी समय सैयद अहमद खां साहब के प्रयत्न से लखनऊ में मुसल्मानों की जातीय सभा का अधिवेशन किया गया—उसी समय इस सभा के करने से इन का यह प्रयोजन था कि सर्कार को इसबात का निश्चय करा दें कि मंदराज की कानग्रेस नेशनल कांग्रेस नहीं है अर्थात् हिन्दुस्तान के सब फिरके और जाति के लोग इस्मे शरीक नहीं है इसीलिये मुसल्मानों ने अपनी जाति की सभा अलग की है--अस्तु आश्चर्य और हर्ष की बात है कि जिस्को सर्कार मुसल्मानों का बड़ा भारी Reformer संस्कार कारक और अग्रणी मानती थी और जिस्को हम लोग भी ऐसा ही समझे हुए थे उसको उन्ही के मतवाले प्रतिष्ठित और माननीय नहीं मानते—लखनऊ की महमेडन कांग्रेस मे जैसा लोग सैयद साहब की राय से विरुद्ध रहे कि केवल २० आदमी इनसे सहमत रहे और २०० आदमियों ने इनके विरोध मे अपनी राय प्रगट की इस्से हमको अतिशय आश्चर्य होता है कि उक्त सैयद अब अपनी जाति के अग्रणी होने का अभिमान किस मुंह से करते हैं और गवर्नमेंन्ट इनको क्या समझ हिन्दुस्तान के कुल मुसल्मानो का प्रतिनिधि प्रधान या नेत्र माने बैठी है?—अब इनकी ऊटपटांग वक्तृता की समालोचना मे हम यह कहा चाहते हैं कि इस महमेडन कांग्रेस मे जो एक प्रकार जातीयसभा है जिस्का उद्देश्य समाज संशोधन था "पोलिटिकललेक्चर" राजकीय विषयक व्याख्यान की क्या आवश्यकता थी—अस्तु सैयद साहब को सर्कार से कई तरह की पेन्शन मिलती है खिताब पर खिताब इनके नाम के आगे जुड़ता जाता है एक बेटा हाईकोर्ट का जज्ज है दूसरा बेटा पुलिस के महकमे मे बड़े से बड़े उच्च

पद पर है जो पद हिंदुस्तानियोंको कम मिलते हैं—इन्हीं सब बातों का स्मरण कर सैयद साहब का जी भर आया अपने ऊपर गवर्नमेंट के इतने एहसानों के ख़याल ने गद्गद कर दिया सर्कार की तारीफ करते २ हमलोगों को जह्द बहू जो कुछ मन मे आया कह सुन डाला ब्रिटिश—गवर्नमेंट की सच्ची कदर करना और अपनी निर्पक्ष सम्मति गवर्नमेंट के कामों पर प्रगट करना कुछ "इज्युकेटेड नेटिवों„ अङ्गरेज़ी के पूर्ण विद्वानों ही को आता है सैयद साहब में कहां तक "इज्युकेशन„ है उनकी स्पीच इस्की साक्षी है—यह समझ मे नहीं आता कि बङ्गालियों से सैयद साहब क्यों इतना बुरा मानते हैं क्या अपने लिकचर में जहां २ बङ्गाली उन्होने कहा है उस्से उनका प्रयोजन हिंदूमात्र से है ? हम ऐसी उम्मेद इनसे नहीं करते थे—"अङ्गरेज़ों को कांटा छूरी से खाते देख बङ्गाली लोग भय के मारे टेबिल के नीचे जा दबकेंगे„ इस्के क्या माने हैं ? पठानों के तलवार की जो तारीफ की गई सो किस समय के तलवार की—क्या वह तलवार जो सन् ५७ के बल्वे में पठान या इतर मुसलमानोंने ज़ाहिर की थी ? औरङ्गज़ेब का नाकों में दम कर जब शिवाजी ने सितारे मे अपनी राजधानी जमाया तब उन मुगल और पठानों की तलवार कहां गई थी ?—जब गिनती के थोड़े से सुफ़ेद सौदागरों ने दिल्ली के साहन शाह से दीवानी निज़ामत और मुल्क पर मुल्क लेते गये तब पठानों की वह तलवार कहां चली गई थी क्या इस तलवार की तारीफ़ से पंजाब के सिंह की आंख झप् जायगी ? राजपूतों की तलवारको सैयद साहब क्यों दिव्ते हैं राजपूतों की तलवार तो मियान के भीतर है उनकी यही वांक्षा है कि यदि शाह अकबर ने हमको अपना विश्वास पात्र समझ कर मुल्की इन्तिज़ामों मे हमे अग्रसर किया तो ब्रिटिश सिंह भी हमें विश्वास योग्य समझ होगी—अपने राजा से चाहो वह हिंदू हो मुसलमान हो अङ्गरेज़ हो चाहो जो हो लड़ना या उस्की आज्ञा भङ्ग करना तो हम लोग जानते हो नहीं—ब्राह्मण और सैयद को छोड़ दूसरे को सर्कारी ओहदे

न दिये जाती और "मेरिट" योग्यता का खयाल बिल्कुल न रख चुन २ केवल खान दान पर ऊंचे ओहदों का मिलना निर्भर रहता तो जो उन्नति भारतवर्ष मे इन दिनों देखी जाती है कभी न होती—जो योग्य हो उसीको ऊंचेपद मिलने चाहियें चाहे वह बङ्गाली हो पारसी हो महरठा हो सिक्ख हो मदरासी हो चाहो जो हो—सैयद साहब अपने आप इसबात को स्वीकार करते हैं कि मुसल्मान तालीम में पीछे हटे हुए हैं मूर्ख हैं निर्धन हैं आलसी हैं तब गवर्नमेंट के पक्ष में यह क्योंकर उचित हो सकता है कि मुल्क का इन्तिज़ाम ऐसों के हाथ में दिया जाय—मिलिटरी बजट तैयार करने के संबन्ध में सैयद साहब ने बहुत कुछ कहा किन्तु सैयद साहब इतना भी न सोच सके कि हिन्दुस्तानियों में आज दिन कैसे २ चमत्कार बुद्धिवाले अपनी बुद्धि वैभव से चमक रहे हैं जिनके साथ मुकाबिला पड़ने पर अङ्गरेज़ों के भी दांत खट्टे हो गये तब जो शङ्का सैयद साहब को उठी है उस्की निवृत्ति इस के द्वारा होना कौनसी बड़ी बात है—सैयद साहब के लेक्चर मे पद २ मे भीरुता प्रगट होती है सो कदाचित् उमरका तकाज़ा हैं बुढ्ढे होने से हर एक बात मे भय और निर्बलता आजाना प्राकृतिक धर्म है—अफसोस है कि सैयद साहब जो अबतक हमलोगों की दृष्टि मे माननीय और प्रतिष्ठित समझ जाते थे एक बारगी खुल पड़े अब हमलोगों को इनकी ओर से और भी होशयार और सुचेत हो जाना चाहिये दिल मे जो कुछ सैयद साहब के था उसे दिल मे रखते ऊपर प्रकाश कर क्यों अपनी "स्टेट्सम्यानशिप" राजनीति प्रवीणता मे वट्टा लगाया । ?

दैवो दुर्बल घातकः

हमलोग समाचार पत्रों मे गोरक्षार पुकार रहे हैं लम्बे २ प्रस्ताव इस विषय के लिख रहे हैं नगर २ गांव २ मे गोशाला स्थापित करने के प्रयत्न मे लगे हुये हैं वहां गवर्नमेंट की ओर से ऐसे नये २ गुल खिलते जाते हैं कि जड़ पेड़ से गोरक्षा का कहीं नाम निशान भी बाकी न रहै—सुनते हैं कहीं सरे राह दो एक मुसल्मानोंने गोवध किया था उसपर मुकद्दमा दायर होने से वहां के मेजिस्ट्रेटने दो मुसल्मानों को पचीस २ रुपया जुर्माना किया था इस बुनियाद पर कि पीनल कोड के किसी दफा मे लिखा है कि वह ये जो किसी के पूजा या परसतिश की है उसको बिगाड़ने या नष्ट करने पर वह मनुष्य जो इस काम का करने वाला है अपराधी और दण्ड के योग्य है—इस मुकद्दमे की अपील होने पर वहां के जज्ज ने निर्णय किया कि उस दफा मे object का लफ्ज़ है जिसके मानी ये के हैं जो बेजान चीज है जानदार को कभी ये नहीं कह सक्ते गऊ जानदार है अर्थात् जड़ पदार्थ नहीं है तब जानदार क्योंकर जड़ पदार्थ के अन्तर्गत हो सक्ता है इसलिये मुकद्दमा खारिज कर दिया गया—उपरान्त यहां की हाई कोर्ट मे उसकी अपील की गई जिसपर फुलबैंच से अर्थात् हाईकोर्ट के सब जजोंने मिलकर यही निर्णय किया कि जानदार चीज़ "आवजेक्ट„ जड़ पदार्थ मे नहीं आसक्ती और कानून मे "Object of worship„ है अर्थात् बेजानदार चीज़ जो पूजी जाती हो उसका नष्ट करने वाला अपराधी और दण्डनीय है और सदा के लिये यह एक "इलिङ्ग„ कर दिया गया की ताज़ीरात हिन्द के उस दफा मे "आवजेक्ट„ के माने बेजानदार समझा जाय—वाह धन्य है जज लोगों की अकिल कहां तक उनकी गंभीर और विशाल बुद्धि की प्रशंसा की जाय जिनके ध्यान मे यह न आया कि इस "रूलिङ्ग„ के हो जाने से कितने हिन्दुओं का जी दुखेगा—हम यहां पर सुयोग्य सम्पादक सारसुधानिधि से बिल्कुल सहमत हैं जिन्होंने एकविस्तृत प्रस्ताव इस विषय पर लिखा है और वह यह है-यदि

बिचार के देखा जाय तो भारत के २५ करोड़ मनुष्यों मे २० करोड़ ऐसे हैं जो गोबध का नाम ही सुन कांप उठते हैं रहे ५ करोड़ उन्मे यद्यपि गऊ देवता स्वरूप नहीं है तथापि अधिकांश उन्मे ऐसे हैं जो इस देशोपकारी पशु का बध नहीं चाहते बरन मुसल्मानों मे भी बहुत से ऐसे निकलेंगे जो इस महा मांस से पहरेज़ करते हैं जो मुसल्मान हिन्दुओं से द्वेषबुद्धि रख गोबधमे प्रवृत्त भी होते हैं तो इसी कारण से कि कानून के द्वारा इसको कुछ सज़ा नहीं है यदि कानून से एकबारगी इसका निषेध कर दिया जाय तो न उन्के धर्म कर्म मे किसी प्रकार की हानि पहुंचे न उनको किसी और तरह की हानि हो किन्तु इस ग्रीष्म प्रधान देश मे जो वे लोग यहां के जल वायु के बिरुद्ध केवल द्वेष बुद्धि से इस अस्वास्थ्य कर मांस को खाते हैं और कुष्ट आदि महाव्याधिका दुःख भोगते हैं उस्से बच जांय अब गोभक्षकों में रहे क्रस्तान या यूरेशियन सो वे भी चिरकाल से रहते २ भारतीय (नेटिव) होगये किन्तु अपने को यूरोपियन बनाने को इस अहित कर निन्दित मांस के खाने में प्रवृत्त हैं फलतः यहां के क्या मुसल्मान क्या क्रस्तान किसी के पक्ष में ऐसा नहीं है कि यह मांस यदि उन्हे न मिले तो वे व्या कुल हो जांय अथवा उनकी तनदुरुस्ती या धर्म कर्म में किसी प्रकार की बाधा पहुंचे—धर्म तो ऐसा कोई भी नहीं है जिस्मे इस हत्या के न होने से बाधा पहुंचे और भारत बर्ष के जल वायु से ऐसा भी नहीं है कि बिना इसके खाये स्वास्थ्य भंग हो जाय बरन स्वास्थ्य के लिये तो यह मांस अत्यन्त ही दूषित है— तब यहां जो थोड़े से यूरोपियन रहते हैं उनको अलबत्ता जन्म से ही इसके खाने का अभ्यास है उन्हीं थोड़े से लोगों के स्वाद निमित्त यह महा जघन्य कर्म यहां बन्द नहीं किया जाता जो यहां की प्रजा को महा पीड़ा कर और अत्यन्त हानि दायक है।

पहले तो भारतबर्ष कृषि प्रधान देश है और यहां की खेती सिवाय गो जाति के किसी दूसरे पशु के द्वारा हो नहीं सक्ती इस गोबध के प्रचलित रहने

से यहां तक गोवंश निर्वंश हो गया कि अच्छे बैलों के अभाव से खेती जैसी होनी चाहिये वैसी नहीं होती वरन किसानों की अवस्था अत्यन्तही शोचनीय हो रही है यहां तक कि दुर्भिक्ष ने मानो अपना एकाधिपत्य इस देश में जमा रक्खा है बैल ऐसे मंहगे बिकते हैं कि किसान के लिये एक बैल का खरीदना भी जन्म पर्यन्त ऋणी बने रहने का ठीका लेलेना है— दूसरे इस देश का बल कर पौष्टिक आहार घी दूध मक्खन मठा है और उस घी दूध को पैदा करने वाली गौये हैं जिनकी क्षीणता से देश का देश दिन २ निर्बल और क्षीण सत्व होता जाता है— तीसरे यहां की २० करोड़ प्रजा के धर्म के विरुद्ध यह महा हत्या के होने से सबों के मन मे असंख्य दुःख हो रहा है जहां का राजा विदेशी और विजातीय हो और उसी के सहारे से प्रजा के धर्म मे निरन्तर आघात लगाता रहे तो उसका परिणाम अच्छा नहीं होता चौथे स्थान २ में गोशाला स्थापित होती जाती हैं समाचार पत्रों में इसका घोर आन्दोलन मच रहा है इत्यादि गोहत्या के अवश्य होनहार अनिष्टों को देख कर भी गोभक्षक हाकिमों का इसपर कभी ध्यान भी नहीं जाता यह कितने आश्चर्य की बात है प्रत्युत यह बिचार कर कि कहीं ऐसा न हो कि प्रजावर्ग की प्रबल युक्तियों से गवर्नमेंट कायल हो गोवध निवारण की व्यवस्था कर दे। इसीसे बोध होता है गोभक्षक जज्जलोग ऐसा अद्भुत कानून गढ़ने लगे कि जिस्मे गवर्नमेंट की दृष्टि में गोघात भारतीय प्रजा के धर्म विरुद्ध न जचे क्योंकि कानून में निर्जीव पदार्थही को धर्म का आधार निश्चय किया है गौ निर्जीव पदार्थ नहीं है इसलिये गोबध कोई अपराध ही नहीं हो सका। हम पूछते हैं ईसा भी तो सजीवथे तब क्यों वे ईश्वर के अवतार और धर्म के आधार माने गये। क्रस्तान लोग ईश्वरोपासना में ईसा को क्यों मध्यस्थ मानते हैं बल्कि रोमनकैथोलिक संप्रदाय के पादरी ईश्वर के प्रतिनिधि मानेजाते हैं—क्या मुसल्मान भी पैगम्बरों को सामान्य लोगों की अपेक्षा श्रेष्ठतम नहीं मानते? जिस प्रकार मुसलमानी और क्रस्तानी धर्म मे सजीव मे

भी धर्म का संबन्ध दृढ़ मानागया है इसी प्रकार सनातन आर्य्य धर्म मे भी ईश्वर का विग्रह गौ और ब्राह्मण ये तीनो महामान्य और धर्म के आधार स्वरूप समझे गये हैं अतएव हम सकोर से स्पष्ट कहते हैं कि यह विषय अतीव गुरू तर और प्रयोजनीय है इसपर गवर्नमेंट ध्यान न देगी तो इसका परिणाम उत्तम न होगा—गोजातिकी उपयोगिता और उपकारिता और भारत की २० करोड़ प्रजा के धर्म का आधार समझ के गवर्नमेंट को गोरक्षा का अवश्य सदुपाय करना चाहिये और हाईकोर्ट के जजों ने जो हाल में "आवजेक्ट," शब्द की व्याख्या मे नई "रूलिंग," करदिया है उसकोतो अवश्य स्पष्टकरनेको उस दफा मे कुछ और शब्द बढ़ादेना चाहिये जिस्मेवह भ्रम जातारहै नहीं तो मुसल्मान एक तो इमे योंही जब तब बकरीद के उपद्रव मे सताते हैं तबतो उनकी बन पड़ेगी और हिन्दू और मुसल्मानों मे परस्पर का विद्रोह दिन २ बढ़ताही जायगा जिस्का फल देशके कल्याण का सर्वथा विघातक है-एकतो कालके प्रभावसे हमारी गौवें योंही दुर्बल औरक्षीण हो रही हैं दूसरे "गण्डस्योपरि पिण्डम," के समान हाईकोर्ट की यह नई रूलिंग तो सच २ "दैवो दुर्बल घातकः," बनी।

प्रतिमापूजन

हमे यह देख बड़ा खेद होताहै कि लोग प्रतिमा पूजन के तात्पर्य को न समझ व्यर्थ हमारे हिन्दू धर्म पर दोषारोपण करते हैं—मुसल्मान वा इसाई जो इस्के गूढ़ अभिप्राय न समझ हमारे विरुद्ध हैं तो इसका कुछ आश्चर्य नही क्योंकि उनके मत के प्रवर्तकों की इतनी पहुंच न थी कि इस्के गूढ़ भाव को पहचान सके वे लोग अपने अनुयायियों को एक निरी सीधी सादी राह दिखलाकर शान्त होगये यह समझ कि हमारे इस बताये हुये ढर्रेपर चलेजांयगे तो बस इतनेही से इनका कल्याण हो जायगा फिलासोफी और दर्शनों के खट खट मे क्यों इन्हे व्यर्थ फसावें किन्तु हमारे भारतीय आर्य्य बन्धुगण भी जो परम दार्शनिक और महा फिलासोफर बनने का दम भरते

हैं और जिनकी कोई बात विज्ञान और फिलासोफी से शून्य नही है वे भी इसके मर्म को न पहुंच दूसरे दूसरे नासमझ मतावलंबियोंकी भांत व्यर्थ इसको दूषित कहैं यह कितने शोक का विषय है आज मै उन्ही के विचारार्थ इस विषय मे कुछ लिखताहूं ।

सब लोग जानते हैं कि जब हम किसी का चिंतवन ध्यान वा विचार करते हैं तो जो कुछ भाव हमारे मन में उदित होता है उसको जब हम दूसरों पर प्रगट किया चाहते हैं तो जो लोग हमारे सामने हैं उनको तो शब्द द्वारा अपना आशय प्रगट करते हैं परन्तु जो लोग हमारे पास नहीं हैं उनसे जब उन बातों का कहना होताहै तो कुछ संकेतों के द्वारा कागज कलम सियाही से अपने मन के भाव को प्रकाश करते हैं— परंतु अक्षरों के द्वारा उन भावों के प्रकाश करने में बहुत देर लगती है फिर भी कभी २ स्पष्ट रीति पर उसे नहीं वर्णन कर सके इसीलिये उन भावों को प्रगट करने का दूसरा द्वार चित्रपट निश्चय किया गया है इसी से जब कोई बात बहुत उत्तम रीति पर कही जाती है तो लोग कहते हैं मानों उसका रूप खड़ा कर दिया गया है— चित्रकार इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि जिस बात का चित्र बनाना होता है पहले मन में उसका मनन और ध्यान कर लेना होता है और जो चित्र वे बनाते हैं वह ध्यान का ही चित्र बनता है हमारे प्राचीन चित्रकार महात्मा आर्यगणों ने अपने भावों को जो ईश्वर के चिन्तवन से उनके मनमें उदित हुये हों उन्हें अक्षरों के द्वारा न कहके चित्र के द्वारा प्रगट किया तो क्या हानि हुई और जब हम उस पत्र वा पुस्तक को जिस्मे ईश्वर का वर्णन हो बड़े आदर से रखते हैं तो फिर जिस चित्र द्वारा वही सब बात प्रगट की जाय तो इस चित्र की प्रतिष्टा करने में क्याक्षति है आज कल हमारे शुष्क वेदानुयायी लोग यह कह के बहुतों को भटकाते हैं कि वेदों में कहा है“ उस्के प्रतिमा नही है अतः प्रतिमा पूजन वेद विरुद्ध है” अजी साहब उस वेद मंत्र का यह तात्पर्य नहीं है जैसा आप समझे हुये

हैं उसकी प्रतिमा नहीं है अर्थात् आप उसका जहां तक मनन और विचार करते जाइये कभी किसी दूसरे में उसकी समता न पाइयेगा न यही आप कह सकते हैं कि वह केवल इतनाही है या ऐसाहीहै तो इसका यह प्रयोजन नहीं है कि आप उसका यथा शक्ति ध्यान वा मननभी नकरैं किंतु अपनी२ प्रकृति और बुद्धि के अनुरूप जैसा उसका चिन्तन और मनन आप करते हैं वही उसकी प्रतिमा है— यद्यपि वेदाज्ञानुसार उसकी प्रतिमा नहीं हो सकती और इसीलिये जहां तक आपकी चिन्ता प्रकृति और बुद्धि की दौड़ है उस्से वह परे है ज्ञानातीत है—"गो गोचर जंह लग मनजाई—सो सब माया जानेहु भाई„ तब भी जहां तक हम उसका बिचार और मनन कर सकैं वही हमको कल्याण कारक और पवित्र करने वाला है इसलिये उसके पाने का एक मात्र अवलंब हम लोगों के लिये केवल प्रतिमा पूजन ही है और न यह किसी तरह पर वेद विरुद्ध है जो लोग इसे वेद विरुद्ध मानते हैं वे लोग भी सिवाय अपने मन की बनाई हुई कल्पना के वर्णन से बाहर ईश्वर की जिस्की कोई प्रतिमा हई नहीं उपासना करी नहीं सकते— जो उसके पूर्ण भक्त हैं और जिनको उसकी कुछ भी झलक मिल गई है या यों कहिये जो उसके खयाल में मस्त हैं मजनूं हैं उनको तो वेद से भी कुछ प्रयोजन नहीं है गीता में श्री मुख वाक्य भी तो है—त्रैगुण्य विषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन—फिर प्रतिमाही के द्वारा यदि मनुष्य बुराई की ओर से मुह मोड़ भलाई की तरफ रुजू हो तो क्या हानि है—इसे हम पाप तो किसी तरह पर कहैंहीगे नही क्योंकि जिस कर्म से मनुष्य की झुकावट परमार्थ परोक्ष या ईश्वरीय बिषयक हो वह पाप कर्म क्यों कर हुआ यदि ईश्वर की ओर चित्त के रुजू होने ही को आप प्रतिमा पूजन कहते हैं तो लाचारी है— नहीं तो किसी भांत आप अपने को ईश्वर के प्रेम मे फसाइये हम सब को प्रतिमा पूजन ही मानेंगे लामज़हब हो जाइये तब तो आप से हमको कुछ भी वक्तव्य न रहेगा नहीं तो किसी न किसी शकलमे आप प्रतिमा पूजक या बुतपरस्त हुई हैं स्वामी जी महराज जो बेतरह प्रतिमा पूजन के पीछे पड़े तो रोही इसका का

रण हो सकता है एक तो यह की इस प्रतिमा के आड़ से बड़े २ निकम्मे दुराचारियों को मन मानता धन मिलता है जो केवल नाम मात्र को विरक्त अथवा मत प्रवर्तकोंमे प्रधान या महन्त बनते हैं पर अधिकधनप्राय वैभवोन्मादमे उनमत्त हो व्यभिचार आदि दोष से दूषित हो भरपूर गुलछर्रे उड़ाते हैं इसलिये स्वामी जीने यह सोचाकि प्रतिमा पूजने की जड़ यदि काटदीजाय तो हमारे देशकि अमीर उमरा और राजा बाबुओं का जो असंख्य धन मन्दिर शिवाला आदि मे अपव्यय होताहै सो नहीं कर देशोन्नति के कार्य्य मे वहीधन लगे-किन्तु इस्के कुपरिणाम को स्वामी जीने न सोचा कि प्रतिमा पूजन ही हमारे देश मे हिन्दूमत वेदमार्ग या अस्तिकता की जड़ पुष्ट रखने की पताका या द्वारहै इसी बहाने उन पतित दुराचारी धनियों का बहुतसा धन मज़हबी या पारमार्थिक बातोंको लक्ष्यकर उठायाजाताहै और गेहूं के संग बथुआ भी सिंचने की भांत अच्छे साधु चरित्र और सद्वृत्तों कोभी इस भयङ्कर अविवेकान्धकार पूरित समय मे यत्किंचित् सहारा पहुंच जाताहै तो सदाचारी सद्वृत्त सर्वथा निर्मूल तो न हुये यदि इन पामरों को यह निश्चय होजायगा कि प्रतिमा पूजन बेद विरुद्ध और निरर्थक है तो जोकुछ धर्मका काम परलोक और अदृष्ट की बुद्धि से उनसे बन पड़ताथा सोतो कहीं नाम कोभी न बच रहा रही आपकी उन्नति सो आप बेदकी सहस्रों श्रुतियां पढ २ कर चिल्लाते रहिये कौन सुनताहै-नईरोशनी और नूतन सभ्यता का प्रकाश कुछ ऐसा दुर्बल नही है कि आपकी शिक्षा उसे दबा देगी और अन्त मे उन पामरों का समूह का समूह "इतोभ्रष्टस्ततोभ्रष्टः„ हो किसी काम का न रहजायगा आपके हाथ मे कभी आनेवाले नही हमारे हाथसेभी निकल जांयगे—दूसरा कारण यह मालूम होताहै कि समयानुसार इसाई और मुसल्मानों के मज़हबों का मुकाबिला पाय प्रतिमा पूजन मे भद्दापन और बोदापन झलकता है इसे दूर करदें तो हमारे बेद के मार्ग में भी खूबसूरती आजाय और जब हम इस्मे पहले खूबसूरती करलेवें तो उन सुशिक्षितों को जिन्हे

हम वेदोंसे विविध विज्ञान चातुरी की पूर्णकला प्रगट कर दिखातेहैं और उन्हे अपना चेला मूड़ने की चेष्टा कर रहे हैं अवश्य सफलोद्यम होंगे और इसाई ब्राह्मो या नेचरियों के समान हमारा आर्य मत भी सभ्य समाज के आदर योग्य हो जायगा इन्ही युक्तियों को काममे लाय स्वामीजी प्रतिमा के उच्छेदमे प्रवृत्त हुयेथे पर वह बात स्वामीजी के साथगई अब हमारे आर्य बन्धु जो देश का सच्चा कल्याण चाहते हों तो ऐसी २ बातोंपर जियादह ज़ोर नदेकर सबके साथ मिलकर चलें जिस्मे सच्ची ऐक्यता की बुनियाद पड़े—अब अवतारों के विषय मे जो उसी अप्रतिम ईश्वर की प्रतिमाहै और जिस्की प्रतिमा बनाकर बहुत लोग पूजतेहैं उसे हम फिर लिखेंगे-ह-प्र—

अथ महाकलि पुराणे जुबिलीकृत माहात्म्यम्

एक समय नैमिषवन भीतर सौनकादि मिल असी हजार ।
सूत पुराणिक से पूछत मे तात कहहु तुम हितू हमार ।
पिछले युगन केरि गाथा सब कही अनूपम विविध प्रकार ।
जिहके सुने सकल अघ भागे अस हो सुकृत पुण्य विस्तार ।
सतयुग त्रेता द्वापर माहीं पुरुष रहे सब सुकृत निधान ।
तिनकी करनी तिनके संगमे अब कलियुग करि कहहु विधान ।
इह युग प्रानी अतिही कृतघन कबहूं धर्म सुने नहि कान ।
तामस पाप चहूं दिस छायो अब मनुजन कर कवन ठिकान ।
कलियुग जीवनके प्रति तातें अब तुम दयाधारि मनमांह ।
कहहु उपाय सुगम बड़ कोउ हमरे मन अस परम उछाह ।
सुन पौरानिक पुनि हसि बोले तात धन्यतुम इहियुग मांह ।

जीव दयातुम चितमे धारे तुम्हरे पुण्य केर नहि थाह।
जो तुम हमसे पूछा अबहिन तैंभहि हनुमत परम कृपाल।
श्रीराघव प्रति दोउकर जोरे बोले हेप्रभु दीनदयाल।
प्रभुसे बिमुख करन अति दुस्सह नाथ कुटिल कलिकाल कराल।
तिहमे जीव निपटही कुत्सित रचा केहिबिध होय सुत्राल।
सुन रघुबर अतिहर्षित होइके बोले पवन तनय प्रति तात।
कलियुग अघमयजीव सकल दिस तिनकर रचानाहिं लखात।
एक उपाय रचोहम तिनहित हमरे जे बानर विख्यात।
जिन ममहित सबगृह सुख तजिके सेवत रहे हमहिं दिन रात।
तेसब कलि मानुष बनजइहैं करिहैं बहुबिध भोगबिलास।
चक्रफिरे चहुंदिस से तिनको भारत मांहि करे सुखबास।
संवत उनइस सो चालिसमे ऊपर तीन बर्ष कछुमास।
बिक्रम नृपति राजके बीते यह सुख जगमे करीप्रकाश।
देख दुखमय दशाजगकी दया हिय निज आनिकै।
निर्माण जुबली कूब करहिंगे बात यह मन ठानिकै।
तामस प्रकृति साधन बनहि नहि बिषहिसों बिष मारिये।
करिमद्यपान अनेक संयम भांस रुचि उपजाइये।
ममभक्तते सब मनुज बानर करिनेह तिन संग खाइहैं।
उच्छिष्ट उनकर प्रीति युतकर ग्रहण सादर आनिहैं।
तबकोटि जन्म अनेक अघ सब दोष दूर बहाइहैं।
पुनिभोगि सुख संसार मंह मम धाम सीधे जाइहैं॥

सकल भूमि गोपालकी यामे अटक कहा ।
जाके मनमे अटक है सोई अटक रहा ॥
जुवली क्लब सेये बिना जो नर चह कल्यान ।
ताकी उपमा कबि कहैं पशुबिन पूछ बखान ॥

इति श्री कलि कलुष बिध्वंसिने जुबली क्लब माहात्म्ये प्रथमोछ्वास:

हमारे पाठक शिरोमणि इस भेद को कुछ न समझे होंगे कि यह जुबिलीक्लब ये क्या गा गये इसलिये इसका विववरण भी आवश्यक है ।

पश्चिमोत्तर की राजधानी इलाहाबाद ने वड़ाही काम किया कि एकही छलांग में नई रोशनी के ऐन फाटक पर पहुच सुशिचितों की प्रथम श्रेणी मे जा कर नाम लिखाथा और वह चमत्कार दर्साया जिसे कलकत्ते के बाबुओं ने पूरे सौबर्ष में भी न कर पाया था मुह ताकतेही रह गये — अंगरेजों से सीखने और लेने की सैकड़ों बाते हैं उन्मे किसी पर हमारा ध्यान न गया सिवा इस ढो के कि पेट पालना और जैसे हो अपनाही मतलब गांठना यावत् उन्नति और भलाई इसी में आवसी कि उनके चेले बन पहले उनका सा भोजन और पहनावे का अभ्यास डालें अब आप समझें यह जुवतीक्लूब उसी धभ्यास के बढ़ाने का चटशाला है — एक समय हिन्दुस्तान का वह भी था कि फारसी की तालीम और मुसल्मानों की सभ्यता ने हमपर वह असर पहुंचाया कि शेर शायरी बेश्या ऐयासी औवल दर्जे की सभ्यता का ज़ेवर समझा जाताथा पर पर वह भी चन्दां इतनी

१०६

बुरी बात न थी जितना खाद्य अखाद्यपर कांटा छूरी का चल पड़ना है साहब बहादुर का अर्थ खान पान के बिचार का मिटजाना तो था ही साथही साथ साहब बहादुर उसी क्लास के लोग समझे जाते थे जो रज़ील कौम किरंटे थे जिनका " सोशलस्टेटस,, सामाजिक सन्मान कोई चीज़ न था किन्तु इस जुबलीक्लब रूपी बारीक चश्मे के द्वारा अब हमें यह देख पड़ा कि साहब बहादुर बनना कोई सामान्य बात नहीं है – इसमे सब जमात और सब डिपार्टमेंट के लोग भांत २ का रूप कसे देख पड़े तो निश्चय हुआ कि यह जुबली क्लब महिमा और प्रतिष्ठा प्राप्त करने का बड़ा भारी वसीला है " मति मारी गई तो कहा करिये जू,, ।

सर लिपेलग्रिफिन और बेगम भूपाल ।

इंडियन यूनियन के लेख से ज्ञात हुआ कि सरलिपेल ग्रिफिन अब इस फिकिर में हैं कि बेगम भूपाल को पदच्युत कर वंधुओंकी भांत कैद रख अपने उस कलंक का पूरा बदला चुकावें जो कलकत्ते की अमृत बाज़ार पत्रिका चिरकाल से इनपर लगारही है-अमृत बाज़ार पत्रिका से तो इनकी कुछ चली नहीं तो अब उस अबला पर अपना बल दिखाया चाहते हैं सचहै-"टेढ़जानि शंकासबकाहू-बक्रचन्द्रमा ग्रसैनराहू-,, जिनके ज़रासा भौं तिरछी करलेनेपर गायकवाड़ शाह अवध सरीखे बड़े से बड़े देशाधिपति अपने स्थान से और पदसे च्युत हो कान पकड़ बाहर करदिये गये तो उन्हीकेभाई बन्धों मे से यह सर

लिपिल ग्रिफिन भीहैं जिनके प्रतिकूल होजानेसे बेचारी बेगम भूपाल जो निरी अवला है के दिन तक खैर मनासक्तीहै- यदि सर लिपेल का बेगम पर यह कुविचार सत्यहै तो हम क्या कोई भी उनकी प्रशंसा न करेगा बीर पुरुष कभी अवलापर हाथ नही डालते यदि उनको ऐसीही बीरता छाई है तो अपने मुकाबिले के वेरी अमृत बाज़ार पत्रिका से भिड़ें—गवर्नमेंट जब उनका पक्षपाती और सहायक है तब ग्रिफिन साहब को किस्की डरहै जोचाहें सो करडालें "सैंया भये कोतवाल अब डर काहेकी, गवर्नमेंट उनकी सहायक और हाथ पकड़नेवाली न होती तो अखवारोंमे ग्रिफिन साहब की इतनी फज़ीहत होनेपरभी बिल्कुल सुनी अनसुनीकर सर्कारने उन्हे उसीस्थान और उसी पद पर नियत रक्खा जिस्मे अब उनको अपने वैरियों के दबाने का पूरा अवसर मिले सच तो यह है कि सर्कार इन सिविलियनों की करतूत को कभी नहीं पलटती न उनके अविचार कारिता का कुछ दण्ड देती है विशेष कर ऊंचे अधिकारियों को। हिंदुस्तान का इतिहास इस बात की साक्षी दे रहा है – वारेन हेसटिंग से आरंभ कर आज तक न जानिये कितने साहसी अत्याचारी यहां आये और कैसा २ साहस का काम वे लोग कर गुज़रे बताइये किस्को क्या दण्ड मिला अथवा उनकी करतूत जो सर्वथा इस देश के लिये हानिकारक और गवर्नमेंट को लाभदायक हुई कब पलट दी गई हम तो यही कहेंगे सरलिपेल ग्रिफिन साहब न चूकें और इस

अवसर को कभी हाथ से न जाने दें क्योंकि गवर्नमेंट उनकी मित्र और सहायक है तब बेगम सी विधवा का हनन रूप महा पातक का अनुष्ठान कर क्यों न चिरस्थायी कीर्तिस्तंभ गाड़ चलें – हां न्याय अन्याय के देखने और समझने वालों से कुछ शंका अलबत्ता है कि वे लोग कभी २ गवर्नमेंट को भी कुछ ध्यान में न लाय जैसा कुछ उनकी समझ से ठीक और उचित आता है वैसाही निरपक्ष और निर्भय हो कह देते हैं चाहो उस कहनेका कुछ असर न हो तो क्या कियाजाय लाचारी है क्याम्बे के नबाब के मुकद्दमे की भांत सेक्रेटरी आफ स्टेट क्षण भरमे ग्रिफिन साहब की भी सब बात मेटदेंगे—छि: एक अकिंचित्कर अबला पर अपनी योग्यता और पौरुष दिखाना क्या ही महाबुद्धिमानी का कामहै– हमारे देशके राजा नौबाब बेगम आदि तो वैसेही सब तरह पर बद्धांजलि उनकी प्रजाहैं तब उनको मारनेसे क्या हाथ लगेगा “नहिगजारियशवधिमृगाला,, रहे ग्रिफिन साहब के अत्याचार के टोकने वाले संपादक अमृत बाज़ार पत्रिका सो भी सैयद साहब के न्याय के अनुसार अंगरेजों के खाने के टेबिल पर कांटा छूरी देख टेबिल के नीचे छिप जानेवाले बंगाली ही बाबू ठहरे इस योग्य कहां कि ग्रिफिन ऐसे सिंहकी तड़पके सामने ठहर सकैं—पर अमृत बाज़ार पत्रिका वाला यह बंगाली तो न जानिये कहां का ढीठ और साहसी निकला कि सैयद साहब के उस सूत्र को भी बाधलिया कुछ डरताही नहीं ललकार २ हमारे सिंहको क्रोध दिलाता

है-उचित है उसे कुछ दण्ड दियाजाय जिस्मे सैयद साहब का जी जुड़ाय और बंगाली लोग हमारे ऐंगलो इंडियन तथा सिविलियन ओहटे दारों के साथ "कंपिटीशन,, करने की हिम्मत फिर कभी न करें और जो इसे भी तुच्छ समझ अपनी बान वह न छोड़ें तो उसे बकने दो -"कह मुनि राम जाय रिस कैसे-अजहुं बन्धु तब चितव अनैसे- इहके कंठ कुठारन दीना-तो हम कहा क्रोध कर कीना,,—अस्तु ग्रिफिन साहब को चाहिये संपादक अमृत बाजार पत्रिका से जी खोल कर भिड़ें बेगम बिचारी तो वैसाही सोच के मारे पागल सी हो अधमरी हो गई है उसपर हाथ साफ़ करने मे कौन सी प्रतिष्ठा है- बड़ों को बड़ोंही पर पुरुषार्थ दिखाना उचित है-"महान्महत्येव करोति विक्रमम्,,—

।न्यायसभा नाटक।

।प्रथम अङ्क।

।तृतीय गर्भाङ्क।

।स्थान।

।बादशाह की कचहरी।

।बादशाह और फैज़ी बैठे हुये स्थान स्थान मे नकीब चोबदार आदि खड़े हुये।

बाद—फैज़ी बीरबल का कोई कासिद भी न आया न इसी बात की कुछ टोह मिली कि प्रजा के चित्त मे शान्ति आई या नहीं और अब उन सबों का क्या इरादा है।

फैज़ी— हज़रत सलामत के सामने कुछ बात कहते जी डराता है और

स्वामी के हितकी ठीक २ बात बिना कहे सेवक का उद्धार भी नहीं है इस लिये जो अपनी जान का अमान पाऊं तो कुछ अर्ज करूं।

बाद—फैजी क्या तुमने हमको और २ अन्यायी बादशाहों के समान समझ रक्खा है जो टीक २ बात कहने से डरते हो जो तुह्मारे ही मन में ऐसो समाई हुई है जो हमारे हर एक कामों को हर दम देखते रहते हो तो रैयत बेचारों को कौन कहे जो बहुधा अपढ़ और मूर्ख हैं और इस कारण हमारे बिचारों को उलटा समझ रक्खा है—फैजी अब हम तुह्मैं चिताये देते हैं कि ठीक २ बात कहने मे कोई हानि नहीं है परन्तु झूठ हो और दूसरे को उससे नुकसान पहुंचता हो तो वह कभी मुझ से न कहना।

फैजी—हुजूर उचित कहते हैं पर सच २ कहदेने से इतने बैरी होजांयगी कि आपके दरबार मे मुझे ४ दिन भी ठहरना मुशकिल होगा—जिन लोगों का हुजूर को पूरा २ बिश्वास है उनका खुलासा सब हाल कहदेने से सिवाय हुजूर के दिल को रंज होने के और कुछ फल नहोगा—जैसा बीरबल का हाल जो हमने सुना है ठीक२ कहदेने से निश्चय है—

बाद—बीरबल का हाल सुनने को तो मेरा बहुत जी चाहता है क्योंकि मैने बीरबल को अपना बड़ा बिश्वास पात्र समझ एक बड़े ही बिश्वास योग्य काम मे लगाया है।

फैजी—हुजूर कल शाम को जो हाल बीरबल की नमक हरामी का सुना है उससे रोंगटे खड़े होते हैं।

बाद—क्या बीरबल से नमक हरामी होना मुमकिन है इस बात का निश्चय कैसे हो मैंतो यही समझताहूं कि बीरबल से नमक हरामी होना वैसाही अनहोनी बात है जैसा पश्चिम से सूर्य का उदय होना।

फैजी—इस बात को तो मैंने हुजूर से कई दफा अर्ज किया कि हिन्दू की जात बड़ी काफर होती है इन से जो कुछ न बन पड़े वही थोड़ा है इसी लिये हम लोग उनपर जुल्म करते आये हैं—किसी ने सच कहा है "गवांर की अक्किल शिर मे„ अर्थात् जब पिटता है तो सब उसकी अक्किल

ठीक होजाती है-देखिये यही बीरबल जो हुज़ूर की निगाह मे कैसा खैर खाह ज़ाहिर मे है उसी बीरबल की खबर आई है कि बागियों से मिल लड़ने के लिये यहां आता है ।

बाद—नहीं २ यह ख़बर कभी सच नहीं हो सकती हम तुमको बड़ा अकलमन्द समझते थे परन्तु अब जाना जाता हैं कि तुह्मारी अकिल साधारण लोगों की सी भी नहीं है जब इस ख़बर को तुमने सुनी थी तो उसे अकिल की तराज़ू में बिना तोले और कहने वाले का गुण दोष बिना बिचारे क्यों सच समझ बैठे जो काम इस समय बीर बल के सिपुर्द किया गया है वह इसी किस्म का है उसके सबब हजारों उसके दुश्मन हो सक्ते हैं जो सैकड़ों तरह की झूठी २ बातें उसके निस्बत कहेंगे—खैर अब बतलाओ यह खबर तुम को कैसे मिली और किसने कही क्योंकि अब मुझे लाज़िम आया कि इसकी पूरी २ तहकीकात करूं न इस सबब से कि बीर बल बागियों से जा मिला बरन इसलिये कि ऐसे को वाजिब सज़ा मिलनी चाहिये (क्रोध से आखें लाल और भौं टेढ़ी होजाती है)

फैजी—यह तो मैं पहलेही जानता था कि बीरबल हुज़ूर पर जैसा बसीकरन कर रक्खा है उसके प्रभाव से किसीकी बात जो उसके बिरोध मे कही जायगी हुज़ूर उसे कभी सच न समझेंगे—आप बीरबल को बड़ा विश्वास योग्य मानते हैं लाचारी पर पीछे आप को पछताना पड़ेगा—यह खबर कल मुझ से मीर हक्कुल्ला साहबने कहा था—मीर हक्कुल्ला साहब की बात झूठ हो इसका ख़याल कभी स्वप्न में भी नहीं होता किसी दूसरे से सुना होता तो मैभी विस्वास न करता न हुज़ूर से अर्ज़ करता ।

बाद—मुमकिन है मीर साहब धोखा खा गये हों बीरबल ऐसी हरकत करेगा मुझे किसी तरह निश्चय नहीं है मानलो यदि यह सच भी है तो वह मेरे ही दोष के कारण है जिस्को सुधारने को बीरबल ने यह उपाय सोचा है

चोबदार—(आकर हौर अदब बजालाने के बाद) हज़रत सलामत दाम

एकबलाह्न बीरबल आये हैं और कहते हैं मैं हुज़ूर से अकेले मे मिला चा-हता हूं ।

अकबर—फ़ैज़ी अब तुम थोड़ी देर के लिये बाहर जाओ—अबतुम जान सक्ते हो कि यदि बीरबल का इरादा बागी होने का रहा होता तो कभी तनतनहा मेरे सामने आने का इरादा न करता (चोबदार से) तुम जाकर जल्द उसे यहां लाओ ।

चोबदार | जी हुक्म हुज़ूर का (बाहर गया)

फ़ैज़ो—मैतो जाता हूं पर एक हिन्दू को इस कदर सिर चढ़ा रखना हुज़ूर के लिये अच्छा नहीं है (प्रस्थान)

। बीरबल का प्रवेश ।

बीर—(प्रसन्न वदन बादशाह का पैर चूम बैठ जाता है) हुज़ूर के इक बाल से सब बात ठीक है प्रजागण की सब शङ्का दूर होगई और मेरे भ-रोसे पर उनके मुखिया लोग हुज़ूर के कदम बोसी को आये हैं—ऐसा जान पड़ता है कि इन बेचारों पर हुज़ूर के अधिकारियों ने ऐसे २ अत्याचार किये जिसे वे लोग न सह सके और उपद्रव करने का पूरा मनसूबा गांठ लि-या था पर मैंने उनको खूब समझाया कि तुम्हारा यथोचित न्याय किया जायगा और अपराधियों को दण्ड मिलेगा इसी भरोसे पर वे लोग मेरे सा-थ आये हैं अब जो आज्ञा हुज़ूर की हो ।

बाद—बीरबल हम तुह्मारे इस काम से बड़े ही खुश हैं अब हम को निश्चय हुआ कि हम अपनी देशी विद्रोही प्रजामात्र का जी अपनी मूठी मे कर सकेंगे तो अब तुम कल शाम के वक्त उन सबों को हमारे पास लाओ—और हां कल फ़ैज़ो एक बात तुम्हारे बरखिलाफ़ कहते थे-पर मैंने उस्का विश्वास न कर बातों ही बात मे उसे उड़ा दिया ।

बीर—हुज़ूर सच तो यह है कि जो कुछ उस बेचारे ने हुज़ूर से अर्ज़ किया झूठ नहीं था-वह यह था कि जब मैंने देखा कि प्रजा मेरी बातों का

विश्वास नहीं करतीं और जो खोल अपनी बात मुझ से नहीं कहतीं तब मैने यह शपथ उनसे किया और मै अब भी उस्से इनकार नहीं करता कि जो बादशाह सलामत तुम्हारे दुःख दूर करने का उपाय न करेंगे तौ मैं उनका साथ छोड़ तुम्हारा साथी बनूंगा—और ऐसी शपथ मैंने इसलिये की कि मुझे पूरा भरोसा था कि आप सच्चे मन से उनका दुःख दूर करना चाहते हैं और इसी विश्वास पर वे लोग मेरे साथी हो हुजू़र के क़दम बोसी को हाजि़र हुए हैं।

बाद—खैर इसे जाने दो बहुत बढ़ाने से सिर्फ नुकसान के नफा कुछ नहीं है।

बीर—हां यह आप का कहना ठीक है पर इस बात का भी हुजू़र विश्वास रक्खें यदि इसे आप बिना पूरी २ तहकीकात किये छोड़देंगे तो फौजी़ सरीखे तअस्सुबी मुसल्मानो को यही श्रद्धा होगी कि आप मेरा पक्ष करते हैं और आप के न्याय गुण में बट्टा लगेगा॥

बाद—पर इस समय मुनासिब नहीं है एक नया मामिला उभाड़ा जाय और बहुत दिनों से हमारी दोनों प्रजा हिन्दू और मुसल्मानों मे जो बैर की गांठ पड़ी आती है सो और भी दृढ़ कर दी जाय हमको तुम्हारी ईमानदारी का सब तरह पर विश्वास है इस बात पर जियादः ज़ोर दिया जायगा तो मुसल्मान ज़ुरूर हम से बिगड़ जांयगे तब हिन्दू तन मन से हमारी मदत करने को मुस्तैद होंगे?

बीर—हुक्म हो तो हुजू़र के बैरियों से लड़ने को तीन दिन में एक लाख आदमी जमा कर दूं जिस्मे आप को विश्वास हो कि हिन्दूलोग कैसे राजभक्त हैं हिन्दू और मुसल्मान दोनो की परख का यह बहुत अच्छा अवसर आप को मिला है।

बाद—(स्वगत) एक बार हिन्दू प्रजा की परख और जांच तो करनाही चाहिये जिनकी बाबत हमेशा हम को यह निश्चय कराया जाता है कि ये

आपस में बड़ा विरोध रखती हैं और किसी बात मे एका नहीं रखती इस्मे कहां तक सचावट है दूसरे यह बात भी खुल जायगी कि बीरबल अपने जाति के लोगों मे कहां तक प्रतिष्ठित और माननीय है कि इन्ही बात से कोई बाहर नहीं हो सक्ता (प्रकाश) अच्छा तो वीरवल ऐसाही हो मुझे भी तुम्हारी यह बात पसन्द आती है पर इसका खयाल रहे कि इस्से मेरा मतलब हिन्दू मुसल्मानो मे बैर की आग और भी भड़का देने का नहीं है बल्कि इतनाही कि मुसल्मानो मे जो फसादी हैं वे अपने मुखालिफों की भोर भार देख दबके रहैंगे और हमेशा जो एक न एक फसाद उठाया करती हैं सो न करैंगी -दूसरे यह भी निश्चय होजायगा कि उन फसादियों की जमात में मुसल्मनी के बीच ज़बानी जमा खर्च करने वाले कितने हैं और सच २ करके दिखाने वाले कितने हैं बीरबल अब तुम जाओ तीसरे दिन फिर मुझसे मिलना ।

वीर—जो हुक्म हुज़ूर का जाता है ।

बाद—बीरबल की ओर से तो मुझे खातिर जमा है अब चल कर फैजी को भी कुछ टटोलैं (प्रस्थान)

। जवनिका पतन ।

होली

(१) कैसी यह होली मचाई । आग तन मन में लगाई ॥ अब लों ये डफरिन लाट पधारे बरह्मा में चेति लड़ाई । जासु खरच भारत सिर डारो दीन दुखी बिलखाई ॥ जानि निज जाति भलाई ॥ कैसी यह होली मचाई—

(२) देखिय पत्र सबहिं मिल बहुबिधि देश दशा दिखलाई । मानी न एक सीख गुनियन की निजमन रीति चलाई ॥ भई सब

को दुखदाई। कैसी यह होलि—

(३) इनकम टिकस लगायो प्रजा पर घर २ मची है तबाई। हाय हाय दुख कासो कहूं अब कोऊ न हमारी सहाई॥ बिपद यह कैसे गमाई। कैसी यह होलि--

(४) हाय महा दुख दीनो नयो यह नित नव टिकस बढ़ाई। गाज परे ऐसी नीति के ऊपर दीन कहैं घबराई प्रान अब कैसे बचाई॥ कैसी यह होलि— शि—रा—

।अंगरेज़ी शिक्षा के गुण दोष।

नव शिक्षितों में बहुत से लोगों ने सिद्धान्त कर रक्खा है कि संस्कृत पढ़ना पढ़ाना नितान्त निरर्थक है—हमे चाहिये सब से प्रथम मा के पेट से निकलते ही बच्चे को अंगरेज़ी पढ़ाना आरंभ करा दें हमारे बंगदेशीय महाशयों को तो जो कुछ बुद्धि का सर्वस्व है वह इसी अंगरेज़ी ही मे है जैसा हमारे एतद्देशीय कायस्थों को मुसल्मानी राज्य मे अधिक अधिकार पाने के कारण फारसी से यहां तक घनिष्ट संबन्ध होगया है कि विद्यारंभ की रीति का नामही बिसमिल्ला रख दिया गया है—कारण इसका यही जान पड़ता है कि ये लोग औरों को चाहो जैसी लंबी चौड़ी स्पीचें दें और विद्या का चाहो जैसा प्रयोजन दिखावें परन्तु अपने लिये यही सिद्धान्त कर रक्खा है "करो पूत सोई जामे हड़िया खद बद होई"—जो अंगरेज़ी पढ़ने से नौकरी न मिलती होती तो विद्या पढ़ना निष्कारण धर्म मान कोई इसे न पढ़ता परन्तु हमारे बंग देशी तथा अन्य प्रान्त के लोग भी यही सिद्ध करते हैं कि बिना इसके मनुष्यता या इनसानियत आतीही नहीं जिसका फल यह देखने मे आता है कि संस्कृत विद्या या सनातन धर्म अथवा

प्राचीन आचार विचार पर कुल्हाड़े चल रहे हैं सुतराम् जो कुछ प्राचीन या पुरातन है सब का सब घृणास्पद और अश्रद्धेय है जो कुछ अर्वाचीन या नूतन है नये खयाल नई रोशनी होटलों मे खाना अंगरेजी कपड़े पहनना इत्यादि श्रद्धास्पद और सभ्यता का पूर्ण अंग है--जिस्मे सब प्रकार का आराम और सुबीता हो शरीर को किंचित् मात्र भी क्लेश न उठाना पड़े वही धर्म है हमारी बात का विश्वास नहो तो प्रत्यक्षे किं प्रमाणं सब ओर से गोरक्षा का घोर आन्दोलन होरहा है बंग देश मे तथा अन्य सुपठित समाज के बीच के आदमी इस्मे प्रवृत्त हैं हम भर पूर इस्की जांच करचुके हैं कि जिस बात मे बंग देशी तथा सुपठित समाज उत्साह होती है उसे सर्कार से कराही के छोड़ती है परन्तु लाचारी है इस ओर इनकी रुचि और श्रद्धाही नही होती यह कौन नहीं जानता कि गौ हिन्दू धर्म का एक मात्र मुख्य अंग है किन्तु अंगरेजी शिक्षा के प्रताप से ये लोग इस ओर से सर्वथा वेसुधसे होगये हैं जो लोग इस्का यत्न करते भी हैं उनको निरा मूर्ख मान उनकी बातों पर कभी कान नहीं देते—यह हम नहीं कहते कि बङ्गालियों मे हिन्दू रही नहीं गये अधिकांश उन्मे अब भी कट्टर हिन्दू हैं परन्तु संग दोष से होटलों मे गो मांस भक्षकों के साथ खाने पीने मे कुछ विचार न रह जाने से दूसरे नये प्रकाश नई सभ्यता का विशेष संपर्क क्योंकर उन्हे सनातन धर्म या सनातन रीति पर दृढ़ रख सक्ता है इसी से हम कहते हैं धर्माभिलाषी पुरुषों को पहले ही से अपने बालकों को अंगरेजी पढ़ाना अतिप्रशंसनीय नहीं है—

हम विद्या पढ़ने के दो मुख्य फल मानते हैं एक रोटी कमा खाना जिसे एक प्रकार गौण फल कहेंगे दूसरे ज्ञान वृद्धि और चरित्र संशोधन जो विद्या के अनुशीलन का पहला या मुख्य फल है अब देखना चाहिये अंगरेजी शिक्षा से वे दोनो प्रयोजन सिद्ध होते हैं या नहीं—इस्मे सन्देह नहीं अंगरेजी राज विद्या होने के कारण इस्के जानने वाले हाजरों रुपया नौकरी

के द्वारा कमाते हैं और सब लोगों मे आदर पाते हैं पर अब उनकी गिनती अधिक बढ़जाने से सैकड़ों जूती भी चटखाते फिरते हैं कोई बात नहीं पूछता यदि कहो जो योग्य पुरुष और विद्वान हैं उनकी कदर तो अब भी है तो योग्यता अङ्गरेजी से भिन्न कोई दूसरी वस्तु है क्योंकि योग्यता रखने वाले तो कहीं बेकदर नहीं रहते किसी एक बात मे सुयोग्य होना चाहिये तब उसके लिये जीविका की कभी कमी न रहेगी महाजनी मे कोई २ मुनीम अपने मुनीमी के काम मे ऐसे पक्के होते हैं कि सैकड़ों का महीना पाते हैं और सिवाय मुड़िया अक्षर के एक अक्षर दूसरी भाषा का नहीं जानते यदि कानून मन्तिक और लाजिक अथवा पालिटिक्स का भरपूर समझना ही योग्यता है तो अंगरेजी ही मे क्या सुर्खाब का पर लगा है जिसकी बुद्धि उन विषयों की ओर अधिक झुकती हो वही योग्य अथवा विद्वान् है किसी खास भाषा के ज्ञान पर योग्यता की छाप नहीं लगजाती—यदि यह कहो अनेक प्रकार के हुनर रसायन विद्या आदि अनेक प्रकार के विज्ञान और सायन्स कल आदि की विद्या की तरक्की जैसी अंगरेजी मे है दूसरी भाषा मे नहीं है अतएव बिना अंगरेजी जाने उनका ज्ञान हमे असंभव है यद्यपि संस्कृत मे भी इस प्रकार की अनेक विद्याओं को लोग बतलाते हैं पर अब उनका होना नहोना बराबर है क्योंकि न उनकी पुस्तकें मिलती हैं न उनके बतलाने वाले मौजूद हैं तो अब उन विज्ञानो के सीखने की एक मात्र अंगरेजी ही अवलंब है—हम भी आप की यह बात मानलेते हैं तो अब देखना चाहिये अंगरेजी सायन्स पढ़ने वाले किस प्रयोजन से सायन्स पढ़ते हैं और क्या उसका परिणाम होता है कितने उनमे से कल चलाते हैं और जो लोग बिना पढ़े लिखे हैं वे इन कामों को कितना करते हैं—आपही बतलाइये के आदमीयों को आपने देखा है कि सायन्स पढ़ बाबू बन नौकरी पाने के हौसिले मे दर २ घूमते नहीं फिरा किये जितने लोग अपने बालकों को अंगरेजी पढ़ाते हैं उनका वास्तव मे यही

११८

तात्पर्य होता है कि इस्से सर्कारी नौकरी मिलजायगी लड़का हमारा दोसौ अढ़ाई सौ तनखाह पावेगा कुरसी पर बैठेगा बाबू साहब वकील या डाकटर साहब कहलावेगा यह कभी न सुना कि अमुक विद्वान् ने केवल अपने साय-न्स के द्वारा कमाने की कुछ युक्ति निकाली और उस्से अपने को या अपने देश को कुछ लाभ पहुंचाया हो अंगरेज़ी पढ़कर बाबू बनने के मुकाबिले मे कल चलाने का मैला काम कहां किसी को पसन्द आता है बरन उनके लड़के भी जिनके यहां सनातन से जो काम चलाआया है वे भी उसे छोड़ बाबू ही बनने के हौसिले मे हैरान देखे जाते हैं तब अङ्गरेज़ी का पढ़ना न पढ़ना एक सा रहा जो लोग कुछ नहीं पढ़े हैं उन्मे अच्छे २ घड़ी साज़ ब-ढ़िया २ मिस्तरी लुहार राज इत्यादि देखे जाते हैं जिन्मे बहुतेरों ने नई २ चीज़ें बनाने का हौसिला भी किया है वर्त्तमान के चाकू कैंची बनाने वाले दास कम्पनी का ताला बनाने वाले लखनऊ में कागज़ की कलजारी करने वाले आगरा मे कपड़े की कल के मुख्य प्रबन्ध कर्ता सब ऐसे हैं जिन्होंने अङ्गरेज़ी का एक अक्षर भी कभी नहीं सीखा—पर अङ्गरेज़ी के पूर्ण विद्वानों मे किसी को न सुना कि ऐसा २ काम कभी किसी ने आरम्भ किया हो यह भी तो न देखने मे आया कि सर्व साधारण के लिये किसी ने ऐसे ग्रन्थ हो अपनी भाषा मे उल्था किये हों कि जो लोग इन कामो मे लगे हुए हैं उ-न्ही को उस्से कुछ लाभ पहुंचता तब बतलाइये अङ्गरेज़ी शिक्षा से कौनसा विशेष लाभ हुआ—यह तो प्रत्यक्ष है कि विदेशीय भाषा समस्त देश की भाषा नहीं हो सकती अतएव स्वदेशीय भाषा मुख्य होगी गौण मे विदेशीय भाषा मानी जायगी पर हमारे यहां इस्के विपरीत पाया जाता है स्वदेश भाषा का कुछ भी ध्यान लाभ न कर सब के सब विदेशीय भाषा फारसी या अङ्गरेज़ी ही की ओर झुकते हैं।

अस्तु अंगरेज़ी के द्वारा क्या संसारिक लाभ है सो तो हम दिखाचुके अब इस्केद्वारा मानसिक या पारमार्थिक लाभ का विचार करना भी अवश्य है

सिवा अपने और अपने शिक्षा गुरु अंगरेज़ों के और सब को मूर्ख और पशु समझना इसकी प्रथम शिक्षा है नास्तिवादी आज़ाद या लामज़हब बनबैठना इसके सिद्धान्तों की परिणाम बुद्धिका सारांश है जिसके तात्पर्य यह हुये कि जो कुछ अपने जानने में आया वही मानो सब सृष्टि का सार है उसके अतिरिक्त और कुछ जानने के योग्य हई नहीं जो अपनी समझ मे न आवे वह सब "ऐबसर्ड और नानसेन्स„ है—"कनवीनियन्स„ का महाराज्य ज़रा भी किसी बातमे कठिनाई झेलना पड़ा तुर्त उसे छोड़ दिया—हमारे सुशिक्षित विद्वान् "पेट्रियाटिज़्म„ का बड़ा अभिमान रखते हैं, कि यह हमने अंगरेज़ों ही से सीखा— अब देखना चाहिये यह "पेट्रियाटिज़्म" क्या है यह एक शब्द है जो लाटिन भाषा का एक शब्द पेटर से निकला है जिसका अर्थ है पिता अर्थात् जैसा घरका स्वामी पिता इत्यादि अपने ऊपर भांत २ का क्लेश उठाकर भी अपने कुटम्ब का पालन पोषण और रक्षा इत्यादि अपना धर्म और मुख्य काम समझता है वैसेही सब लोग अपने देश को अपना कुटुम्ब मान उसके पालन पोषण और रक्षा को अपना मुख्य धर्म मान इस कार्य मे अनेक प्रकार का क्लेश भी अपने ऊपर सह कर अपने कर्तव्य से जो नही हटते उसे पेट्रियट कहते हैं और उनको जो अनुराग या ममता अपने देश पर होती है उसका नाम "पेट्रियाटिज़्म„ है स्वदेश अनुराग जिसका परिणाम सब जगत् का हित साधन है केवल यह रह गया कि जिस्से अपने को विशेष संबन्ध है उसी के हित मे तत्पर रहना और उस्से जो दूसरे को कुछ हानि पहुंचे वा उसका सर्वस्व बिगड़ता हो तो कोई चिन्ता नहीं जहां पहले यह नियम था कि अपने कुटुम्ब के लिये अपने शरीर पर कष्ट उठाना धर्म मानते थे और देश या जाति के हित के आगे अपने निज कुटुम्ब की हानि को परम पुरुषार्थ समझते थे वहां अब ठीक इसके विपरीत है अपने देश या जाति के हित के सामने मनुष्य जाति मात्र को कुछ न समझना देश और जाति मे भी अपने ही वर्ग या विभाग के लोगों का हित हो तो और

सब लोग रसातल को ढकेल दिये जांय कुछ परवाह नहीं बरंमे भी अपने कुटुम्ब का पालन अवश्य है कुटुम्ब पालन मे अपने निजके शरीर का आराम सब के ऊपर है इसी से आज कल बिवाह बन्धन का नियम तोड़ देना लोगों को बहुत रुचता है कि पति से पत्नी को वा पत्नी से पति को किसी प्रकार का क्लेश पहुंचे तो उस संबन्ध को भी अलग कर दो-तो इस पेट्रियाटिज्म„ का यही प्रयोजन हुआ की जिस्से अपना अधिक लगाव है उसके हित के लिये दूसरे के अहित का कुछ ध्यान न होना उसके प्रमाण मे हम सैयद साहब को रखते हैं जिन्होंने अपने थोड़े से मुसल्मानों को सब से आगे बढ़ाने को नेशनल कांग्रेस के जो देस भर के हित के लिये है बिरोधी बन गये उनको समझ में देश के और सब लोग मर खप जाय केवल उनके अनुयायी थोड़े से मुसल्मान सब से बढ़ के रहैं इसी प्रकार बङ्गाली चाहते हैं बङ्गाली सब से अच्छे रहैं पंजाबी पंजाब हो की उन्नति के लिये प्राण देते हैं बिहारी बिहार के लिये कायस्थ चाहते हैं हमी सब में श्रेष्ट बने रहें ब्राह्मण ब्राह्मणोंही की धूसर धूसरों ही की मान वृद्धि चाहते हैं—यह कोई नहीं सोचता कि सब मिलकर अपने देश को एक साथ आगे बढ़ाने का प्रयत्न करैं और देश मे जो कोई योग्यता संपन्न हो वही अपनी योग्यता का लाभ उठावे; क्या यही पेट्रियाटिज्म„ है कि बंगालियों को तथा और हिन्दुओं को आगे बढ़ती देख सैयद साहब कुढ़ कर मियान से बाहर निकल पड़े—यह तो अंगरेजी का "पेट्रियाटिज्म बन्धुस्नेह हुआ अब देश प्रबन्ध जैसा हम अंगरेजी से सीख रहे हैं उसे भी प्रगट कर दिखाते हैं अबिश्वास और येनकेन प्रकारेण अपना कार्य्य साधन अंगरेजी नीति का मुख्य अंग है—देश प्रबन्ध को अंगरेजी मे "पालिटिक्स „ कहते हैं सो दो प्रकार का है एक वह जो किसी राज्य को अपने देश और अपनी प्रजा से होता है दूसरा वह जो एक राज्य को दूसरे राज्य से है-सो यहां वर्तमान् राज्य को हमारे देश से इस बात का तो

929

भर पूर संबन्ध है कि किसी न किसी बहाने से रुपया इनसे खींचते रहो और देने का काम पड़े तो खिताब और पुचाड़ा दे फुमला रक्खो सर्कार कर्जी है कहां से पावें जो दे—धिक् ऐसी सर्कार को—धुणाक्षर न्याय से जो कभी कोई काम प्रजा के हित और भलाई का करो तो मन माना एक की जगह चार अपव्यय कर जन्म पर्यन्त कौड़ी २ ग़रीब प्रजा से वसूल करते रहो और उस भलाई के काम मे भी अपने ही देश तथा अपने ही जाति के लोगों का पेट भरते रहो—अदालत मे जा कर अपना न्याय चाहो तो रुपया दो सड़क बनवाओ तो रुपया दो लड़कों को तालीम दिया चाहो तो रुपया दो नहर बनवाओ तो रुपया दो पानी की कलगैसकी रोशनी चाहो तो रुपया दो- प्रजा चाहो भीतर ही भीतर भूखों मरती रहे पर राज्य को मिल गया "इम्प्रूवमेंट,, चाहिये-हमारे अगले राजा महाराजा जो अपने प्रमाणित धन मे से खर्च करते थे तो फ़जूल खर्च और मूर्ख कहलाते थे यद्यपि उस खर्च का सब लाभ उन की प्रजा ही को पहुंचता था परन्तु अब जो खर्च किया जाता है जिस्से किसी प्रकार का लाभ प्रजा को नहीं पहुंचता वह सब उत्तम और प्रसंशनीय है यह सब काल की उलटी गति और अंगरेज़ी ख़याल की महिमा है-पृथ्वी का कर जहां तक कसते बनपड़े सो तो कसतेही जाना वह तो मानो सर्कार की बपौती है सिवाय इस्के इनकं-टैक्स नोन पर टिक्कस व्हीलटैक्स आदि न जानिये कितने टैक्स उगाहते २ प्रजा को निर्जीव कर डाला फिर भी प्रतिवर्ष का जो बजट तैयार होता है उस्मे आमदनी से खर्च का सीगा बढ़ाहुआ रहता है चाहो तुह्मारे पास एक पैसा न हो और इस भांत २ के टैक्स देने के पीछे सब कुछ तुह्मारा बिकजाय परन्तु राज्य कर का रुपया देनाही होगा-निर्विवेकी अधिकारियों को इख्तियार है वे जितना रुपया जिस काम मे चाहें लगाते जांय खर्च मे कमी पड़ गया टिक्कस लगादो-यह तो अधिकारी लोगों की कथा हुई अब प्रजा की सुनिये लड़के मदर्से से निकलते ही बिस्मार्क के चाचा और

वीकन्सफील्ड के बाबा अपने को मानने लगते हैं जानते इतना भी नहीं कि हमारे परोसी को क्या दुख है किस बात की उसे आवश्यकता है पर बड़े से बड़े विषय मे गाल बजा बजा राय देने को मुस्तैद हैं सो यह सब तभी तकजब तक कोई बड़ा अधिकार या ऊंची नौकरी नहीं मिली अधिकार मिलजाने पर हुजूर की हां में हां मिलानाही उच्च शिक्षा का सर्वस्व है—देश हित का झंडा फहराते हुये चार रुपया सैकड़े सालियाने के ब्याज पर गवर्नमेंट पेपर मे करोड़ों रुपये लगारक्खे हैं परन्तु इस बात की हिम्मत या साहस नहीं होता कि अपने रुपये से बड़े २ कारखाने खोलैं देशीकारी गरी की उन्नति करैं जिस्से हामारे देश के लाखों मनुष्य जो बेकाम बैठे भूखों मरते हैं उन्हे पेटभर अन्न खानेको मिले—परन्तु यह सब करै कौन ? इस्मे केवल लंबी चौड़ी बातें बनाकर स्पीच और लेक्चरों से तो काम सरने वाला नहीं है इस्मे तो तन मन धन सब देश हित मे अर्पण होना चाहिये कानग्रेस मे प्रतिनिध बन कर लंबी २ स्पीचें और रिज़ोल्यूशन से कुछ न होगा—इत्यादि इस अंगरेजी की महिमा है जिसे जितना ही पल्लवित करते जांयगी उतनाही पढ़ने वालों को भ्रम पैदा होगी इस्से यहां ही इसे समाप्त करते हैं—यह तो अंगरेजी की महिमा हुई अब संस्कृत के गुण दोष किसी दूसरे अवसर पर लिखेंगे— ह— म

। क्या होगा ।

इस प्रश्न का उत्तर अति दुष्कर है—पुरान के ऐतिहासिक वर्णानो से क्या होता है इसका दृष्टान्त तो बहुत ठौर मिलता है पर क्या होगा इसकी टोह कहीं से नहीं लगती—महा भारत

723

के बन पर्व मे महाराजा युधिष्ठिर से प्रेत ने चार प्रश्न किये थे-"कावार्तांच किमाश्चर्यं,, —क्या होता है अचरज क्या है ? इत्यादि—इसके उत्तर मे महाराजा युधिष्ठर ने कहा था-"भूतानि कालः पचतीति वार्ता,,—प्राणी मात्र को काल बटोर २ अंधेरे गड्ढे मे फेंकता जाता है यही हो रहा है—पर क्या होगा न इसके पूछने ही का साहस उस प्रेत को हुआ न महाराजा युधिष्ठिर सरीखे बुद्धिमान को पूछने पर भी इसका उत्तर सूझता-सच है मनुष्य के लिये भविष्य का ज्ञान सर्वथा महा निशा का अन्धकार है गो रख धन्धा है पहेली है मुअम्मा है रिडिल है। हज़ार २ टटोला करो सिर पचाते रहो कुछ पता नहीं लगता-कदाचित् भविष्य का ज्ञान होजाने से मनुष्य किसी कामका न रहेगा संसार के सब काम स्थिर हो जांयगे यह समझ ईश्वर ने मनुष्य को भविष्य जानने की शक्ति नहीं दी—यदि प्रत्येक मनुष्य को यह मालूम हो जाय कि आगे की घड़ी मे दिन मे महीने मे साल मे हम यह करेंगे और यही होगा तो इस संसार की क्या दशा होती और जीव की अल्पज्ञता और उस अलख अगोचर के अनन्त ज्ञान मे अन्तरही फिर क्या रहता-? उधर प्राणनाथ महाराज दशरथ को स्वर्ग बास होगया जीवन सर्वस्व रामचन्द्र सरीखे सत्पुत्र बन को सिधारे केकेयी सी सौत डाकिनी बन डसने को बैठी है उस समय अथाह दुःख सागर मे मग्न कौशिल्या देवी हाय अब "क्या होगा,, यह कहते भी जो जीती रहीं इसमे निर्लज्ज प्राण को जीविताशा पिशाचीही

कारण थी—वानरों की असंख्य सेना ने लङ्का को सब ओर से घेर लिया यह सुन ललना जाति सुलभ भीरुता के बशी भूत हो मन्दोदरी अपनी सहचरी सखियों से बोली एक बन्दर जो पहले आया था सो तो प्रलय का सा दुन्द मचागया अब कि बार तो इतने आये हैं सखियो अब "क्या होगा,,—इन्द्रजित की शक्ति से विद्ध लक्ष्मण अचेत पड़े थे वैद्यसुखेण नाड़ी देख बोला सूर्योदय के पहले हनूमान जो संजीवनी लेकर न लौटे तो इन के जीने की कोई आशा नहीं है यह सुन रामचन्द्र अधैर्य हो बोले हाय अब "क्या होगा,, माता सुमित्रा को क्या मुह दिखावेंगे—मेरे सौ हीरालाल एक एक कर भीम के भीम पराक्रम मे सब के सब वलि चढ़ गये इसे याद कर दुखित गान्धारी सोचने लगी हाय "क्या होगा,, अब मैं अपने बुढ़ापे को कैसे झेलूंगी—दर्शनी हुंडी आखिरी मिती पुजने को आई रुपया तैयार नहीं न हो सका है आधी रात को शाहजी सोच के मारे बिछौने पर करवटें लेते हैं औरठंढी सांसें भर कहते जाते हैं हाय दिवाला पिटा कैसे इज्जत रहे अब"क्याहोगा, सावन का—महीना है झड़ी पर झड़ी पानी एक दम को फ़ुरसत नहीं देता आधीरात है हाथ पसारे नहीं सूझता सन्नाटा छाया हुआ है आंख की पुतली घर का चिराग़ एक लौता लड़का है हाल की व्याही बहू घर मे बैठी है बस समझ लीजिये रामही से अयोध्या है बेटे को हैज़े ने आकर दावा हांथ पांव ढंढे होगये ऐसे समय रांड बुढ़िया मा ढाढाम छोड़ छाती पीट २ रोने लगी

१२५

हाय "क्याहोगा,, मेरा बुढ़ापा कैसे कटेगा—रूस बड़ी सेना लिये मुल्क पर मुल्क फतह करता रेल और तार बराबर बैठाता तार बांधें चला आरहा है ईश्वर न करै वह दिन आवे कदाचित् जैसा उसका लक्ष्य है हिन्दुस्तान को भी एकही ग्रास मे हप्प करगया तब हमारी ब्रिटिश गवर्नमेंट का "क्याहोगा,, हजारों लाखों बिलायती साहब लोग जो थोड़ाही परिश्रम कर "अल्पायास महत् फलं,, की भांत लंबी २ तनख्वाहें फटकार असंख्य रुपया जमा कर बिलायत में जाय इण्डियन नबाव बनते हैं उनका "क्याहोगा,,—हिन्दुस्तान में ठौर २ कपड़े की कल और भांत २ के कारखाने जारी होते जाते हैं बोध होता है एक दिन ऐसा भी आवें कि देशी चीजों के आगे बिलायती कारीगरी का अनादर होने लगे तब मेनचेस्टर के जुलाहे तथा बिलायत के अन्य कारीगरों का "क्याहोगा,,—थकूसूर थीबाको उसकी जन्म भूमि से निकाल अंगरेजी राज्य वहां स्थापित होने से ब्रह्मा में इतना हल चल पैदा होगा इसका लार्ड डफरिन साहब को कभी विश्वास नहीं था कि इस चिप्रकारिता का परिणाम "क्याहोगा,,—बिलायत के थोड़े से सौदागरों की एक कंपनी यहां व्योपार करने की इच्छा से आई थी उन्हें क्या मालूम था कि आगे चलकर "क्याहोगा,, कि हमी लोग इस देश के पूर्ण स्वामी बन बैठेंगे—महाराणी को यह क्या मालूम था कि हमारे प्रोक्लेमेशन का अर्थात् हम काली

१२६

गोरी प्रजा की एक नजर देखती हैं अमर "क्या होगा,, कि हिन्दुस्तानी बात २ मे उसी प्रोक्लमेशन की बुनियाद पर झगड़ने लगते हैं—सुतराम् "क्या होगा,, महा निशा के इस अन्धकार को टटोल भी लिया तो "क्या होगा,,— आपने इस पहेली का मतलब खोला भी तो "क्या होगा,,—और हमने उस हल किये-हुये मतलब को जाना भी तो "क्या होगा,,-अजी होगा क्या होली आई है हम तुम और यह "क्या होगा,, तीनो उसी होली मे———दिये जांयगे झगड़ा तै होगा "नरहैगा बांस न बजेगी बांसरी,,—

। हमारे देशवालों की कभी साधारण उन्नति हो सकेगी ?

कभी नहीं।

यह सब कोई जानता है कि समस्त उन्नति का मूल विद्या बीरता और व्यवसाय से संबन्ध रखता है और ये तीनों तभी प्रकर्ष गुण के उत्पादक हो सकते हैं जब हमारे देश की जनता का प्रत्येक समुदाय इसका यथोचित आदर करे—एक ही विद्वान् वा पंडित झटपट देश के देश को सुशिक्षित नहीं कर सकता न एक ही मल्ल विद्या विशारद शूर बीर देश भर की सूरमां बनाय कायरपन उनसे दूर कर सकता है न एक ही महान् उद्यमी पुरुष व्यापार के उन सूक्ष्म सूत्रों को बिना फैलाये समुदाय मात्र को व्यौपारी उद्यमी और साहसी बना सकता है बस निश्चय हुआ कि सर्व साधारण मे बिना प्रचार पाये कोई बात अपनी यथोचित उन्नति को नहीं पहुंचती—इस प्रसंग का उत्थान इस मूल पर हुआ है कि आज कल हमारे प्रान्त मे कोई २ लोगों के आचरण मे देशोन्नति का उत्साह ऐसा चमक रहा है जैसा अंधेरी रात मे

बिजली की छटा जिस प्रकार घट पट आदि पदार्थों का ईषत् आभास कर विलीन हो जाती है उसी प्रकार नूतन प्रकाश धारी युवक गणों के हृदयाकाश के विद्युत् की चमक भी मूर्खतान्धकार की राशि में वही गुण प्रकाश कर उच्छिन्न होजाती है—अंधेरी रात मे बिजली की चमक से इतना उपकार तो अवश्य होताही है कि हम कहां खड़े हैं और हमारे आस पास क्या २ स्थूल पदार्थ हैं—सुतराम् अंगरेज़ी शिक्षा जनित अल्पस्थायी विद्युत् प्रकाश से वे लोग जो आंख खोले घरके बाहर खड़े हैं चमक के समय कुछ देख लेते हैं पर कोठरी के भीतर सोने वाले अथवा विषय कूप मण्डूकों के लिये एक बिजली नहीं चाहो सहस्र बिजली चमके बिना भगवान् भास्कर को उजाला पहुंचे कभी न जगेंगे न उठैंगे इसलिये अंगरेज़ी शिक्षा की यह विद्युत् शक्ति जो विरल नवबारिद मंडलों से उठती है कुछ अधिक उपकार नहीं करसक्ती क्योंकि जब तक यहां की देश भाषा रूपा सूर्य्यप्रभा उदयाचल पर पांव न रक्खेगी कोई सामर्थी पुरुष इस अल्प स्थायिनी विद्युत् शक्ति को चिर स्थायिनी कर सकता है सो हमको कभी आशा नहीं होती कि यह देशभाषाकी प्रभा उषकाल के आगे वढ़ सूर्योदय के नाम से पुकारी जायगी कारण यह कि चुम्बक शिला केवल लोहे शक्ति से मित्रता रखती है न सोने रूपे से—मान लीजिये अंगरेज़ी भाषा इस समय का सुवर्ण है परन्तु भारत की उन्नति रूपा चुम्बक शिला बिना देश भाषा रूपा लोहे शक्ति पाये आलिङ्गनोत्साह नही प्रगट कर सक्ती—देशोन्नति रसिक लोग डंडों से मार २ कर चाहते हैं कि देशोन्नति चुम्बक सामयिक सोने से प्रीति कर अपनी जड़ता छोड़ आलिंगन को दौड़े किन्तु वे महात्मा लोग इतना भी नहीं सोचते कि देश भाषा को ससम्पन्न कर भारतोन्नति चुम्बक से मिलावें पर सामयिक सोने की कदर देख नही आशा होती कि यह बेल कभी मढ़ये चढ़ेगी—जिस्को देखो वही रत्ती दो रत्ती इंगलिश रूपा सोना लिये भारतोन्नति चुम्बक को जिस्की तोल कई करोड़ मन सोने से भी अधिक है चैतन्य करने को दौड़ता है—कुछ वर्ष पहले दरभंगा के महाराजा ने

देशी भाषा की वृद्धि का ग्रन्थ रचना के द्वारा उद्योग किया या इनाम की लालच से कुछ ग्रन्थ बने भी जो लोग वहां तक पहुंच जोड़मन्दी लगा सके अपना काम निकाला सोभी न जानिये कहां झोंक दिये गये कि आज तक न छपे अब वहां सामयिक सोने की व्यवस्था सुनो जाती है कि मेनेजर साहब का वेतन ३ सहस्र है भत्ता और इनाम इसके ऊपर—चार पांच तहसीलदार अंगरेज़ जिनकी तनख़ाह ५ या ६ सौ से कम नहीं है बाग़ का माली ५००) महीने का बाजा वाला ३००) महीने का है घोड़ों के सहीस कोचवान प्रभृति दो२ सौ तीन तीन सौ के सब अंगरेज़ही हैं गुरूजी पुरोहित जी को इतनी तनख़ाह कभी न मिलती होगी क्योंकि वेतो साहब लोगों मे नहीं है—इस प्रबंध और पश्चिमोत्तर के मंडलेश्वरों में राजा रामपालसिंह ने भी पूर्वोक्त चुम्बक शिला और लोहो शक्ति के संयोजन का परिकर बांधा था पर वहां भी उसी सामयिक सोने की क़दर मंजिलत बढ़ती जाती है राजा हनुमत् सिंह की संस्कृत पाठशाला का स्वरूप सोने का होगया ५०) की जगह ३००) से अधिक व्यय होता है दूसरे प्रेटईसटर्न होटल जिसका व्यय ५००) से अधिक मासिक का सुनाजाता है लाभ जो कुछ हो—यूनियन पेपर जिसका माहवारी ख़र्च उससे कम का न होगा फिर अंग्रस कांग्रस मे गये आये साहब सूबा डाक्टर दवाई का ख़र्च अलग है यहां भी बेक़दरी है तो हिन्दीही की जिसकी दृत्ति संकीर्ण करने के अभिप्राय से ये सब बड़े २ ख़र्च उपस्थित हुये हैं और होते जाते हैं—हम को इसलिये खेद होता है कि उक्त समर विजयी का धन संजीवन औषधी रूप है जो हिन्दुस्तान दैनिक समाचार रूपी वैद्य बना हुआ है जिसके द्वारा सहस्रों अनाथ रोगी पथ्य सेवन सीखते और चंगे होते हैं सो संजीवन औषधी के समान उसी धन को सामयिक सोने की भाव भगति के भार में झुकते देख हम लोग क्यों कर धीरज धरैं—ईश्वर करै प्रिय दैनिक हिन्दोस्तान की वह दशा न हो जैसा एक बीमार हरिण की हुई थी जिसको देखने को बहुत से बीमार भाई बिरादरी इकट्ठे हुये और

उनको सब हरी भरी दूब चर डाली जब वह निरोग हुआ तो बिना चारा पानी के मौत से अधिक दुःख पाने लगा—हिन्दुस्तान के स्वामी तथा उसके एडिटर महाशय इस अविनय को जो शुभ चिन्तकता के ध्यान से की गई है क्षमा करेंगे—एकहि साधे सब सधै सब साधे सब जाय—

मनुष्य का प्रकृति के अनुसार जीवन, मरण

ईश्वर ने प्रकृति के नियम ऐसे उत्तम किये हैं कि उनको लोक में यदि मनुष्य अपने जीवन की गाड़ी बे रोक चलने दे तो सन्देह नहीं उसे इस संसार को "आधि व्याधि पूरित„ कहने का कदापि अवसर न मिले वरन वह जगत को केवल निरवच्छिन्न सुखों का अखण्ड भंडार ही देखे और बार २ पुष्पदन्त के राग में राग मिला यही कहे "इदंहि ब्रह्माण्डं सकल भुवना भोग भवनं„

सच है मनुष्य दुःख भोगने के लिये नहीं उत्पन्न हुआ, किन्तु सृष्टि के विविध दृश्यों में उस अदृश्य बाजीगर के अद्भुत, अगम्य, और असंख्य कौतुकों को अपने कायिक और मानसिक दोनो नेत्रों से देख कर जो कुछ सुख प्राप्त होता है और वह सुख अमित है अपार है अनवधि है जिसको समझना ही मनुष्य के जीवन की सफलता है उसकी प्राप्ति दुर्लभ नहीं रहती

परन्तु यह निश्चय रखना चाहिये कि यह सुख जो यथार्थ में प्रकृति की सर्वोत्तम विभूति है, प्रकृति ही के नियमों से प्राप्य है—इस निधि पर पहुंचने के लिये सिवाय प्राकृतिक रोड के और कोई सड़क नहीं हैं—परन्तु सावधानी की आवश्यकता है कि यह गाड़ी फिसल जाय उलट जाय, गिर जाय और टूट कर नष्ट भी हो जाय तो आश्चर्य नहीं—

आप देखते हैं कि जब से पिता का वीर्य बिन्दु माता के उदर के स्थल

शय में अधिष्ठित होता है प्रकृति तभी से अपना कार्य्य आरम्भ कर देती है—नौ मास के नियत काल में उस बिन्दु को जननी के शरीर में से अपेक्षित सामग्री की सहायता से मनुष्याकार कर अन्त को पृथ्वी पर ले आती है—यह शंका होसक्ती है कि गर्भ वास और जनम प्रक्रिया का काल बालक को अनेककष्ट और वेदनाओं का हेतु होता होगा—पर वास्तव में ऐसा नहीं है उसे कष्ट अणु मात्र भी नहीं होता, और यदि होता है तो तभी जब कि प्रकृति अत्याचरित हुई हो प्रकृति उसको गर्भ से इस प्रकार मुक्त कर देती है जैसे मा सोते हुए बालक को अपनी गोदी से पालने में पौढ़ा देती है—

वैद्यक विद्या के तत्व वेत्ताओं का यह सिद्धान्त है कि यदि जन्मावस्था से प्राणी बराबर प्रकृति के नियमानुसार ही रहे तो मरण भी उसका वैसा ही सुखाला हो जैसा कि जनम हुआ था—प्रकृति उसकी देह को उसी तरह समाप्त करदे जिस तरह आरम्भ किया था—अर्थात् प्राण का प्रयाण भी वैसाही सुगम हो जैसा प्रवेश था और वे "यातनायें,, जो मरण काल में प्रायः देखी जाती हैं कभी न हों--किसी को याद नहीं है कि प्राण उस के शरीर में कब और किस रीति से धंसे और जो प्राकृतिक नियमों का सहज अनुगामी है उसे मरती समय भी यह न मालूम होगा कि उसके घट से गला घुट कर जी निकल रहा है अर्थात् प्रकृति के लाड़िले को मरने में भी कष्ट नहीं है और इसी प्रकार के मरने को "मौत से मरना,, (Natural death) कहते हैं।

यह बात सर्वथा सत्य है कि जो कुछ शारीरिक कष्ट प्राणी को होता है केवल प्राकृतिक नियम विरोध से और ये विरोध कभी २ इतने प्रबल और इतने अधिक होते हैं कि प्रकृति की एक नहीं चलने देती और नियत काल के पहले ही प्राणी को उसकी गोदी से छीन लेती हैं और छीनते समय ऐसा कष्ट अनुभव कराती हैं जिसे मरण काल की वेदना कहते हैं और जिस्से डर कर किसी ने कहा हैं प्राण प्रयाण समये कफ वात पित्तैः कण्ठावरोधन विधौ स्मरणं कुतस्ते—

प्राकृतिक नियम विरोध जिस मृत्यु का कारण हो उसी को अप्राकृतिक मृत्यु वा अकाल मृत्यु कहना चाहिये—इस प्रकार की मृत्यु में प्राणी सम्बन्धीय प्राकृतिक नियमों को विजातीय विरुद्ध नियमों से लड़ाई ठाननी पड़ती है जिसका परिणाम (कभी शीघ्र कभी विलम्ब से) भौतिक शरीर का समाप्त होना है— रोग जनित मृत्यु इस हेतु से अकाल मृत्यु है—

यह बात याद रखने लायक है कि पृथ्वी की आकर्षण शक्ति जन्म से ही प्राणी पर अपना बल करती है, परन्तु किसी शक्ति विशेष से प्राणी इस आकर्षण को आक्रमण कर लेता है, यदि प्राणी में ऐसी शक्ति न हो तो उसका शरीर कदापि न बढ़ सके और न चल फिर सके और पृथ्वी उसे जड़ पदार्थ की भांति अपनी पीठ पर अवश्य पटक ले, परन्तु प्राणी इस अद्भुत शक्ति के बल से आकर्षण को परास्त करता हुआ बढ़ता चला जाता है मनुष्य की वर्द्धन शक्ति की परमावधि ३० वर्ष तक मानी गयी है, इसके अनन्तर शारीरिक वृद्धि रुक जाती है और स्थिरता आती है, इस बल वीर्य संयुक्त स्थिर दशा मे मानुषिक देह फिर लगभग ३० बरस तक बना रहता है·परन्तु इस ३० बरस के उपरान्त अर्थात् जन्म से लग भग ६० वर्ष के अनन्तर वह शक्ति जिसने शरीर को पृथ्वी की आकर्षण शक्ति से बचाया था मन्द होने लगती है और नित्य २ ऐसी घटती है कि अनुमान ३० ही बरस में मनुष्य के देह को जड़ पदार्थ की तरह पृथ्वी की पीठ पर पटक आप अवसान को प्राप्त हो जाती है–परन्तु कैसे पटकती है ? पटकने मे दुःख देती है कष्ट भुगतवाती है ? नहीं कदापि नहीं; बरन धीरे २ (इतना धीरे कि मनुष्य को बिलकुल नहीं मालूम पड़ता) शरीर की सञ्चित भौतिक शक्तियों को घटाती और हटाती जाती है और शरीरी बिना अनुभव किये उनका त्याग करता जाता है जैसे निद्रा के आगमन समय में बेमालूम सुख पूर्वक बेसुधी धीरे २ छाती आती है उसी तरह मृत्यु भी बिना दुन्दुभी बजाये हौले २ प्राकृतिक जीवी प्राणी के पास आती है।

वाह! ईश्वर की कैसी कृपा और चतुराई इस जनन मरण व्यापार में झलकती है, और धन्य हैं वे जो इस कृपा के पात्र हैं ।

। कानग्रेस की कबीरें ।

यद्यपि ग्राम के लोग ठेठ हिन्दी छोड़ अंगरेजी फ़ारसी कुछ नहीं जानते तो भी अपने हित अनहित को कुछ२ समझते जाते हैं—इन दिनों एक हमारे मित्र ग्राम से कुछ लिख लाये हैं जिस्से स्पष्ट ज्ञात होता है कि खेतिहर लोग भी केवल कानग्रेस के लाभही को नहीं समझे किन्तु कानग्रेस विरोधी गुरूओं के खेल को ताड़गये हैं रसिक पाठकों के अवलोकनार्थ उसे यहां पर हम प्रकाश करते हैं,

कबीर

(१) अरारररारा कबीर सुनलो भगतो मोर कबीर—सपना देखें सैयद बाबा कुटिल फिरिस्ता ठाढ़—बदनामी का काम बतावें जो दुनिया मे गाढ़—भला यह मतलब हिकमत असली का ।

(२(हिन्दू मुसलमान दोउ पेहियाधुरी मेलको लाय । इल्मी कोचवान चह जोतन ठहे के बुरी बलाय भला तुम दोड़ो धुरी नसावन को ।

(३) तुमसे बढ़के अधिक बतक्का जल्दी मिले न कोई । सो विचार न मन मे लाओ उठो नींद को खोई । भला अब चला तरेरा माया का ।

933

(४) कुटिल फिरस्ते को निरखि कीन्हों वृद्ध बिचार। मुझे मुनासिब है यही करूं कुटिल उपचार। भला जिमि पूरै स्वारथ की थैली।

(५) हंसमुख० है बुढ़ऊ कहैं क्यों हज़रत अकुलात। अनहोनी मे कर सकूं यह आदत की बात। अजी यह राज विरोधी सुहृत के।

(६) नारि पुरुष मे रारि मचाऊं सुत पितु देहु लड़ाय। गुरू चेला का भाव मिटाऊं जो कलि राज सहाय। भला यह खरी हमारी मश्शाकी।

(७) फेकौं बूटौ मंत्र की जादू की बौछार। भूंकि मरैं जिमि स्वान सम सड़े गले अखवार। भला जो निरे हमारे चेले हैं।

(८) देखो मेरे हाथ मे टोपी फुंदनादार। करिहौं कारज सत्य करि कोऊ न बूझन हार। भला जहां होहि अंधेरा दिनहो मे।

(९) कुटिल फिरिस्ता जब गयो बुढ़ऊ करैं बिचार। कौन नतीजा होइ अब कीन्ह्यो अङ्गीकार। भला अब छल बल की टोपी सिर रक्खो।

(१०) देश भलाई का बाना बांध्यो भयों जगत् मशहूर। कुटिल देव का कहा न मानूं तबहूं चखनाचूर। अजी अब बनी बनाई सब बिगरै।

(११) पड़े दबसठे सैयद बावा कहा करूं मैं हाय। पूतो मीठ भतारौ मीठा किरिया केहको खाय। भला अब खुली हमारी सब कलई।

(१२) गली २ में भिच्छा मांग्यों खड़ा कियों कालेज । मेल बेल की जड़ काटन को करत छुरी में तेज । भला यह करम रेख को को मेटे ।

(१३) कुटिल पच्छ जो मैं कहूं रैयत सब रिसियाइ । प्रजा पच्छ रोटी सके दौलत जाय पराय । भला अब बुढ़वा पड़ा फजीहत में ।

[१४) कौन जगह ऐसी भली जहं खोलों कुटिल दुकान । कोऊ माखमाने नहीं गहैं सुनें जो कान । भला सो चलो लखनऊ है बेहतर ।

(१५) नई रोशनी ऐसी बाढ़ी बदरी कुटिल पराइ । धन्य लखनऊ नगर बर जहं सब चूक निरख बिकाइ । चलो जहं मर्दहु कपड़े से होवें ।

(१६) बहत गोमती स्वच्छ जल यही लखनऊ धाम । और भरी चसराफ की पूर करी सब काम । भला अब कथा सुनो टुक बुढ़वा की ।

(१७) जो चाहै जारी करै गवर्नमेंट कानून । विपिन बसावै निमिष मह चह नगर करै सब सून । भला तो हम सब बोलें केहि लेखे ।

(१८) जो कानर्येस मदरास को वहां गये नुकसान । जहां बसे कनकटा जोगी पहुंचत काटै कान । भला झूठ भाग छिपो तुम कोठरी मे ।

(१९) एक तो बंबू कानर्येस दूजे फखू नसाय । बरै सम बङ्गाली बाबू दौड़िकाटि धर खांय । भला नहिं उचित साथ कमजर्फों का ।

२० हिंदूमहं रजपूत एक हम महं सभी सपूत । धुनिया जुलहा कूंजड़ा अरू हिजड़ा अति मज़बूत । भला जो जिसिम कटावें सख्ती से ।

२१ नसरथ पुरमे मुर्चा बांध्यो भागा बड़ जुझार आप अभागा पहिले भागा पहुचाजाय बिहार ।भला यह तेज रविश की है खूबी ।

२२ बैसी तेज न तेग है जैसी तेज जबान । मनसबूता से नाजिम भागा साथी मुगल पठान । भला तहां खेत रहा कनपुरियन का ।

२३ ओहदे हुल्म मिलान से मिलैं न मम मनभाय। होहि निरा बेकूफ जो पंचाइत मे जाय । भला यह राह खुशामद की अच्छी।

२४ जब तक हमरी कौम की हुलमो फतेह नहोइ । थंभा रहे सब मामिला तनक न सनके कोइ भला बस बजे शिफारिश का डंका।

२५ बोट तरीका बुरा है हमरी मंशया थोरि हुकुम बही वेहरत मिले पच पात रससोरि । भला सब साहब हमरे कब्ज़े मे।

२६ हक्कशाह से मांगना धूम धाम के साथ बेअदबी की बात है जो दुनिया के नाथ । भला चुपचाप कहो तुम बंगले पर ।

(१७) साहब रहैं सलामत मेम मुबारक पांव। मुह मांगे की चाकरी अरु छकड़म मिले खिताब । भला फिर इन्त कथा मे क्या रक्खा ।

(१८) होत न म्यूनीसिपलमे जो मजाज़ सर्कार । तुम मेम्बर होते नहीं गिनती के अनुसार। भला बस हूलरहे ना सब अच्छा

(२९) मुलक मेल से क्या मिले सब लोग भार मे जांय । अनायास सतवा मिले तो क्यों हम अकुलांय । भला तुम बात हमारी लिख रक्खो ।

३० कान्ग्रेस तजि निज गेहमे बैठि लगाओ ध्यान । तुमहो से

जर जरनैल और हाेहुकमान । भला हम बड़े लाट से कहदेवैं। दिन २ बटुरत जात है बहुगुण्डो का झुंड । महरानी के राज मे यह कैसा भर भंड । भला जगदीश बचावे आफत से।

। धन्य बाद ।

हम अत्यन्त कृतज्ञता पूर्वक श्रीमान्राय गुदर सहाय को धन्यबाद देते हैं कि उन्हों ने इस वर्ष फिर हमे सहायार्थ ५) दान दिया—अपने बड़प्पन के अहंकार मे उन्मत्त देश मे सैकड़ों वैभवोन्मादी पड़े हैं पर हमारे किम गों के रातको नित्य बड़े २ तेजस्वी ग्रह तारागण उगते हैं पर अन्धकार दूर करने को सामर्थि केवल चन्द्रमा ही को हैं—"नक्षत्र तारा ग्रह संकुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः„-

। पुस्तक प्राप्ति ।

ऋगवेदिय श्री सूक्त पं—शिव राम पांड़े वैद्य कृत भाषानुवाद तथा टिप्पन सहित गृहस्थ के लिये नित्य श्री सूक्त की १५ ऋचाओं का पाठ दरिद्र को दूर हटाने का परमोत्तम नटका है इस्का अनुवाद बहुतही शब्दार्थ संमिलित है मूल्य डाकव्यय सहित ≡)॥ यह पुस्तक प्रयाग वैदिक यंत्रालयमे छपी है ।

योग बाशिष्ठ सार

इस पुस्तक के दश प्रकरण हैं —जिन्मे योग वाशिष्ट के अनुप ज्ञान और वैराग्य का संग्रह किया गया है— गीता के समान यह ग्रंथ भी परमार्थ साधन तथा अज्ञानान्धकार निवारण का उत्तम ब्रह्मास्त्र है-हम पं—शिवराखन लाल शुक्ल को अनेक धन्यबाद देते हैं जिन्हों ने इस्का शुद्ध हिन्दी भाषा मे अनुवाद कर इस छिपे हुये रत्न को सबके समझने योग्य कर दिया और अब इस्का प्रतिपाद्य विषय उत्कृष्ट ज्ञान और विरक्ति सर्व सुलभ होगया— इस्मे प्रति श्लोक के नीचे एक २ दीर्घ मे का शब्दार्थ संग्रह भवार्थ है तदनन्तर भाषा मे टीका है जिस्का ज्ञान सार नाम रक्खा गया है योगबाशिष्ट सार के अनुवाद का नाम ज्ञानसार बहुत ही उपयुक्त है— मूल्य इस्का।≡) है जिस्को लेना मंजूर हो उक्त पण्डित जी को लिखे ।

। इसे माफ़ी मांगना कहें या बेहयाई।

बेहयाई का जामा पहिन फिर हमको माफ़ी मांगना पड़ा कई कारणों से फिर इस बार हम मासिक के बदले द्वैमासिक हो कर आये हैं और जो त्रुटि होगई है उसका कारण भी हम दूसरे अंक में सविस्तार निवेदन करेंगे आशा है कि हमारे रसिक पाठक क्षमा करें मैं हम प्रतिज्ञा करते हैं अब आगे से ऐसा न होगा।

रा॰ला॰गो॰-७-४-८८

हिन्दीप्रदीप ।

मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली कोछपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंदभरे ॥
बचिदुसह दुरजन बायुसों मणिदीप समथिर नहिंटरे ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

अप्रेल सं॰ १८८८ जिल्द ११ संख्या ८

इलाहाबाद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
देशोपकारक यंत्रालय में प्रकाशित
किया गया

मूल्य अग्रिम ३।≈) पीछे देने से ४।≈)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १॥≈)

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द १२ | अपरैल—
संख्या ८ | सन् १८८८ ई०

।फलं नकिंचितअशुभात्समाप्तिः।

हम अपने शरीर का रक्त सुखाय २ नजानिये किस तरह इस पत्र को चलारहे हैं उसमेभी हजार २ उजुर माजरा पेश करने पर भी १०) टिकस हमे देनाही पड़ा पत्र से हमे कुछ आमदनी होती हो इसकी तो चर्चा चलानाही व्यर्थ है किन्तु हमारी दोवर्ष कीभी कुल आमदनी जोड़ीजाय तबभी हम १०) टिकस देने योग्य न ठहरेंगे टिकस उगाहने वाले बिना पहले से किसी तरह की इत्तिला दिये हमारे दरवाजे पर मलिकुलमौत से आहीतो गये और ऐसा दबाया कि देनाही पड़ा—यद्यपि पारसाल भी यह झगड़ा हमारे पीछे लगा था पर जो महाशय टिकस लगाने के अधिकारी कियेगयेथे वे हमारी दीनदशा को भरपूर लखहमे माफ कर गयेथे पर इस वर्ष नजानिये किसने क्यों इस वधिक समान कार्य करने का साहस किया—जो होहमारे सपरिवार ,के १५ दिन का भोजन छीन" जो उन की कार गुजारी और सर्कार के घर भी उनकी सुर्खरूई महासागर मे एक बिन्दु के समान भी नहोगा„ क्या फल पावेंगे—हा हम अपना भीतरी हाल किस्से कहैं हमे दसबर्ष इस पत्र के पीछे सती होते बीत गया यह एक ढंग जिस क्रम से उठाया उसी क्रम पर आज तक चलागया—एक दोहोंतो कहैं नजानिये कितने अनगिनत दुरूहदु:

साध्य विषयों पर सर्कार तथा कर्मचारियों से बराबर भिड़ खड़े होते हैं जो हमारी गिरी हीन दशा के सर्वथा विरुद्ध और अत्यन्त साहसिक कृत्य है— हमारे देखते २ न जानिये कितने चार दिन की चांदनी समान देशी तथा अंगरेज़ी पत्र थोड़े, दिन के लिये उठे तो बड़े ज़ोर शोर के साथ पर अणु मात्र संकीर्णता मे पड़ जाय बजाय गये और ऐसे अस्त हुये कि नाम तक उनका एकक्षीन सा होगया किन्तु हम सब संकीर्णता झेल कर भी राम रसरा रेंघती ही जाती हैं–हमारे देश मे अब भी एकसे एक चढ़ बढ़ के श्रीमन्त राजा बाबू देश हितैषी देशानुरागी विद्यमान हैं पर किसी की कृपा दृष्टि हमारी ओर कभी झूठ भी न पड़ी तब हमे क्योंकर ढाढ़स हो — अपनी देश का रंगढंग देख इस पत्र के द्वारा हम रोटी कमाय खांय अथवा धनी बन बैठैं यह आशा करना तो निरी हिमाकत थी अस्तु निज के भोजन मे से भी एक ग्रास कम खाय इसे चलाते हो जांयगे तो अब उसपर टैक्स ने हमे आय दबाया अब हमारा ढाढ़स छुट गया हिम्मत नहीं पड़ती कि सम्हाल कर फिर आगे को पैर उठावें—हम अपनी पुराने हिन्दुओं के क्रम का अनुसरण कर देखें तो हमारे समानकोटिवाले सदा से अदंड्य रहे और इस अंगरेज़ी सभ्यता के अनुसार अब हमारा अदंड्य रहना असंभव और अनहोना है क्योंकि और देशों का क्रम देख सर्कार यही समझती है कि जैसा और सब रोज़गार हैं वैसाही एडिटरी भी पढ़े लिखे मनुष्य के लिये एक उत्कृष्ट स्वच्छन्द जीविका है किन्तु यह कैसे हम सर्कार को निश्चय करावें कि हमारे देश मे एडिटरी जीविका होही नहीं सक्ती न कि देशी पत्रों के लिये देशी पत्रों मे भी हिन्दी के पत्रों को उसमे भी हमारे पत्र को जो एक तो मासिक है सर्वसाधारण के पढ़ने योग्य नहीं उसमे भी हम ऐसे नीरस वादी को जो नोन मिर्च लगाकर बोलना सीखाही नहीं–यह तो कर्मचारियों के आधीन था कि वे अपनी सर्व भक्षी राक्षसी प्रकृति से मुंह मोड़ ऐसे २ चण्डाली काम न करते हो उनके मन मे तनिक दया न आई तो लाचारी है—पर अब हमे निश्चय

होगया कि इस टिक्स से जो लोग अत्यन्त दुखी होरहे हैं उसका कारण यही है कि उसके उगाहने मे बड़ाही अत्याचार किया जाता है जैसा इस टिक्स के ऐक्ट मे लिखा है कि सख़्ती बिल्कुल न कीजाय उसके अनुसार वसूल हो तौ भी लोगों को न अखरै—"थोड़ाकिछिन तुलसीदास बहुत किछिन कबिता „—ये नीचे के कर्मचारी बड़ी बेदर्दी से गला घोंटते हैं जिस्का दोही कारण मन मे आताहै यातो इस इच्छा से कि हमारी अच्छी कार गुज़ारी समझी जाय जिस्मे हमारा ओहदा बढ़े तनखाह जियादह मिलने लगे अथवा दिखलानेही को लिख दियागया है कि सख़्ती न कीजाय वरन ऊपर से यह इशारा कर दियागया है कि ज़रा भी दया मन मे न लाय जहां तक होसके बन पड़े निष्किंचन प्रजा को मन मानता रेतो—निस्सन्देह जैसा अत्याचार यहां इसवर्ष टिक्स उगाहने मे कियागया वह कुछ दिन तक याद रहैगाऔर जो बिना निर्ख के सदा के लिये ऐसाही क्रम टिक्स के वसूल का बनारहा तो हम सरीखे कितने गरीब बेचारे क्योंकर निभैंगे—धिक् अंगरेज़ीराज्य का यही न्याय है—अब अन्त मे ग्राहकों से निवेदन है कि चिर काल के परिचय से हमारा सब हाल उन्है विदित होगया होगा इस आशय कोपढ़ रद्दियों मे ताक पर न रखदें किन्तु हमारी कुछ अधिक सहायता की फ़िकिर करैं नहीं यह बोझा हमारे लिये अब अत्यन्त असह्य होगया—फल न किंचित् अशुभा समाप्तिः— समझ अब हम जायाही चाहते हैं।

। अपना चेता होत नहिं प्रभु चेता तत्काल ।

———·◇·———

ऊपर का यह वाक्य बड़े दूरदर्शी चतुर बुद्धिमान का है जिस्का अनुभव हम प्रति दिन प्रति मुहूर्त हर घड़ी हर दम किया करते हैं—गुसाईं जी ने भी तो कहा है "उमा दारुयोषित की नाईं । सबै नचावत राम गुसाईं „ अन्यच्च "प्रातर्भवामि वसुधाधिप चक्रवर्ती सोहं ब्रजामि विपिने जटिलस्तपस्वी„—जस्का निचोड़ यही हुआ कि हम सब लोग संसारी जीव मात्र अपने बश नहीं हैं किन्तु किसी ऐसी अलख अगोचर अपरिमेय महा

१४०

"मेशीन„ कल के रेज़ पुरज़ बने हुये चकराते फिरते डांवा डोल होरहे हैं कुछ टोह नहीं पाते कि उस महा मेशीन के बड़े कारीगर को किस नाम से पुकारैं अदिष्टी दिष्ट वादी उसे दिष्ट कहते हैं "फेटलिस्ट„ उसका नाम फेट किस्मत या भाग्य बतलाते हैं— नैचरिये नैचर इत्तिफाक चान्स इत्यादि नामों से उसे पुकारते हैं स्वभाववादी इसे स्वभाव के अन्तर्गत करते हैं—अभागी निरीश्वर वादी जिन्हे कोई आदि कारण का मान लेना मानो अपनी गांठ का कुछ गवां बैठना है उस कल के बनाने वाले कारीगर का अस्तित्त्व स्वीकार न कर केवल कल ही के कायल हैं और प्रधान अथवा प्रकृति माया नेचर या स्वभाव आदि बिबिध नाम उसका धरा करते है— भोर को उठते ही आशा पिशाची के परवश हो अनेक संसारिक कृत्य की चेष्टा मे लगते हैं जिस बात मे सफलोद्यम हुये उस्मे अपने को कृत कार्य मान फूले नहीं समाते निज पौरुष अथवा पुरुषार्थ के घमंड मे और इतर जन जो सफलोद्यम नहीं हुये उनको आलसी कापुरुष मन्द भाग्य कह कर हंसते हैं और अपनी उस झूठी आशा और उत्साह को परमावधि तक बढ़ाते जाते है—

ईश्वरोहमहं भोगी सिद्धोहं बलवान्सुखी ।
आढ्योभिजवानस्मिकोन्योस्ति सदृशोमया ।
यक्षे दास्यामि मोदिष्ये इत्यज्ञान बिमोहिताः ।
मायया पहृत ज्ञाना असुरं भाव माश्रिताः ।

हमारी बराबरी कौन कर सका है आजदिन जो सुखसंपत भोगविलास हमे मयस्सर है दूसरे लोग उस्के लिये तरस रहे हैं— हमारे समान धनवान् हमसा कुलीन दूसरा ऐसा कोई विरला होगा उसको हमने बात की बात मे इतना दबाला यह सब सहज कामनहीं है उसकी इतनी हिम्मत कहां कि हमारी होड़ करसके इत्यादि—वही कहीं उद्यम विफल हुआ जो सोंचे हुयेथे उस्के विरुद्ध हुआ उदासीन मन मलीन

२४९

हो घर के भीतर झाकिये उस समय संसार फीका लगता है अपने प्रियसे प्रिय शत्रु जान पड़ते हैं पुत्र कलत्र भाई बन्धु सब बैरी मालूम देने लगते है जगत संपूर्ण जीर्ण अरण्य सा बोध होता है चण भर के लिये तीव्र वैराग्य का उदय हो आता है यही जीचहता है कि सब पेखना छोड़ अभी मूड़ मुड़ाय चुटिया कटाय संन्यासी हो जांय और कहांतक कहैं कितने लोग इस नैराश्य और नाउम्मैदी की हालत मे ज़हर खाय जान तक से दरगुज़रे हैं—पर इस भवितव्यता की उलझी गांठ सुलझाने कीउपाय न करसके—अपने सबसंसारिक कामो मे भवितव्य पर सदा ध्यान रख इस्के अशुभपरिणामोमे से डरते रहना एक प्रकार का महा साधन है जो लोग उमंग मे न फूलकर मनमार भवितव्य पर ध्यान दिये रहते हैं लाभअलाभ सुख दुख मे समभाव पैदा कर ने वाली द्वन्द्वातीत को परम शान्ति उन के लिये दुर्लभ नही है जोज्ञान विज्ञान आत्मा और ब्रह्म के अनुशीलन का सर्वस्व है—आज हम पर भी न जानिये क्यों इस शुष्क वेदान्त की शान्ति सवारहो आई कि जिस्के आवेशमे हम महात्मा पलटूदास की मारफत सनो बानो का यहां संग्रह करते हैं।

। अरिल छन्द ।

भूल रहा संसार कांच की झलक मे बनत लगे दमभास उजाड़ा पलक मे। रोवन हारे रोये आपनी धाय से हांरे पलटू ताकें सबकोई ठाढ़ गया किस राह से १

नहि ब्राह्मन नहिं शूद्र न सैयद सेख है हम तुम कोई नाहि बोलता एक है। दूजा नाहीं कोय यही तहकीक है हांरे पलटू लाख बात की बात कहा हम ठोक है २

तीसोरोज़ा रहैं फिरैं सब भटक के आठोपहर निमाज सुये सिर पटक के। मक्के मे जो गये कबर मे खाक है हांरे पलटू एक नबीका नाम सदा को पाक है ३

छत्र पती॰है गये भया धन गिनत है दल बादल की फौज नहीं कुछ अन्त है । मौरङ्ग सोनवार हथी हयसार मे हरि पलटू यमने पकड़ी बांह पड़े तब खाक मे ४

महो मरातिब संग छत्र सिर घूमता घोड़ेवान निशान हथीपर झूमता। कमी रही कछु नाही यही रंग फीक है हरि पलटू सत्य नाम निज सार निशानी ठीक है ५

दुइ दुइ दीपक बाल महल मे रंग है फूलन सेज बिछाय सुन्दरी संग है। सोती छाती लाय परम आनन्द है हरि पलटू खबर पूत को नाहिं काल को फन्द है ६

कलिया नान पोलाव पेट भार खावती शीशी मे सरीम चिराग जलावती। चीरे बन्द लगाय गले बिच सोहती हरि पलटू आये यम के दूत पूत तब रोवती ७

करौं बड़ी कमान हमारे हाथ की परख लगी हरि नाम सन्त के साथ को । पड़ी रहै मैदान चमकती आन मे हरि पलटू छूवत लोग डराय खड़ी चौगान मे ८

घर से निकसे भाग भया मन त्याग मे शब्द गिरो मणि लाग धसे बैराग मे। आगे माया मिली रहे ललचाय के हरि पलटू परे नरक मे जाय महन्ती पाय के ९

चलती चक्की देख दिया हम रोयरे पीसगया संसार बचा नही कोयरे । बीचे रहा लुभाय नहीं कोई निर्बहा हरि पलटू भाग बचे कोई सन्त जो खूटी लग रहा १०

मे जानू जग स्याम जगत है बौरहा जपै नहीं हरि नाम सो केतिक मैकहा —छाड़ स्वर्ग की राह नरक मे जात हैं हरि पलटू जपैं नहीं हर नाम कहे रिसियात हैं ११

सजन लगाया बाग देखनी आंयगी । फल लागा बिश्वास बाग मे खांयगी ।
भंवरा रहा लुभाय सहस दल फूल मे । हारि पलटू जो दिन गये सो गये
आपनी भूल मे ॥ १२ ॥
जो तुझको है चाह सजन को देखना । कर्म भर्म दे छांड़ जगत का पेखना ।
बांध सुरत की डोर शब्दमे पिलेगा । हारि पलटू निगुन सगुन के पार
ठिकाना लगेगा ॥ १३ ॥
हाकिम हुकमी जोर अदल चलावता । राजा रंक फकीर सबै सिर नावता ।
एक भूत के लगे फिरत हैरान हैं । लागी पांचो भूत सबै बौरान हैं ॥ १४ ॥
लूट लिया संसार मया कलबारनी । दर्ब लेय बिष देय पिआवै बारुनी ।
कोइ लोटै है धूर दुखी कोइ मांगता । हारि पलटू अमल नही है भूत
सबन को लागता ॥ १५ ॥
फूट गया असमान शब्द की धमक से । लगी गगन मे आग सुरत की चमक से ।
सेस नाग अरु कमठ लगे दोऊ कांपने । हारि पलटू सहजै लगी समाध बैठ
घर आपने ॥ १६ ॥

। धन्यवाद और निष्कृति प्रयत्न ।

४ मार्च के हिन्दुस्तान मे संपादक महाशय ने इस सामान्य प्रदीप को सूर्य कहने की उदारता प्रगट की है यद्यपि यह क्षुद्र दीपक अपने को ऐसी ऊंची उपमा के योग्य नही मानता पर ऊंचे दिल वालों की नज़र हमेशा ऊंची रहती है ऐसे गुण ग्राहक महानुभावकी गुणग्राहकता का पटतरहम किस्से दें—"सब उपमा कबि रहे जुठारी केहि पटतरौं बिदेह कुमारी" — बस इसकी कृतज्ञता मे धन्यबाद देनाही सहज प्रतीकार है—किन्तु उदारता के उपरान्त उक्त संपादक की चपल बर्ण बिन्यासिका ने इस प्रदीप को बिशुद्धिज्योतिपर भ्रम और बड़े अन्याय का दोष लगाया है जो इस दीपक के लिये नियत पारतोषिक है क्योंकि जिस घर वा कोठरी को दुर्बिनीतता

वाकूड़ा करकट प्रकाशित कर हित और स्वच्छता का उपाय सुझाता है वहां के विघ्न विनायक प्रभृति अधिष्ठाता हमारे ऊपर कुछ कुढ़ाते हैं और अपना विपक्षवादी जान हमें अन्यायी कहते हैं जिसका दूसरा कारण यह भी है कि हमने बहुत खोज किया पर उस चौबे की पोथी हाथ न लगी जिसकी वृन्ताक गुना गुना संपुटित वाक्पटुता जगद्वि-ख्यात है—इस अलभ्य और अनधीत विषय के कारण हमारा दीन लेखक बारहो महीना दस वर्ष से बराबर निष्ठुर बाद और भ्रम भूल की अबीर से फगुआया जाता है तो प्राणाधिक प्रियतर हिन्दुस्तान की शुभचिन्तकता की दृष्टि से यह भी हमारे लिये मानो पुरस्कार की मांगता है—सम्पादक महाशय हमें विश्वास दिलाते हैं कि अब भवान् राजा रामपाल सिंह हिन्दी के बड़े पक्षपाती हैं हमभी तो मानते हैं कि उक्त राजा साहब न केवल अपनेही डौल से हिन्दी के अनुरागी हैं किन्तु इन के पिता पितामह आदि भी हिन्दी संस्कृत के पण्डितों के उदार गुण ग्राहक थे जिनकी वीरक्षात्र वृत्ति का उद्बोधक खड्गधारोपार्जित विस्तीर्ण भूमि मण्डल बिसनाही के नाम से प्रसिद्ध है—नई सभ्यता के अनुसार उक्त राजा साहब की जहांतक प्रशंसा की जाय सब उचित है परन्तु नीतिकारों के सूत्रानुसार गवांरू कहावत के मूल पर इन्होंने उसी बासी रोटी को खाया और देशी विदेशियों को खिलाया जो दूरदर्शी वीरावतंस इनके पूर्व पुरुष उपार्जित करगये थे—पूत वह जो पुरखों की पूंजी को बनाये रक्खे और सपूत वह जो अपने पुरुषार्थ से कई गुना उसे अधिक बढ़ावे निस्सन्देह हमारे समर विजयी सच्चे पूत हैं जो अपने पैतृक राज्य को बनाये हुये हैं यदि लन्दनादि के गमनागमन मे बहुत सा धनव्यय न होता तो कई लाख की अधिक भूमि उपार्जित कर सपूतों मे अग्र गराय कहे जाते—विलायत के गमनागमन से द्रव्य संबन्धी हानि तो अलबत्ता हुई पर देश हित के मूल सूत्र किन २ बातों पर निर्भर हैं इसे इन्होने वहीं जाकर सीखा अब रहा हिन्दुस्तान पत्र के द्वारा हिन्दी की वृद्धि इसके विचार मे हम यही करेंगे कि जिस

प्रकार की भाषा हिन्दुस्तान की है जैसा "व्यतना त्यतना," इत्यादि उससे हमारी हिन्दी को कोई लाभ नहीं है—क्या एकाष्ठ में एक दरजन "अत्र भवान्" भरदेने ही से हिन्दीका गौरव बढ़ जायगा और यह अभागी अत्रभवती बन कर हिन्दुस्तान को सदा असीसती रहेगी। कालाकांकर तथा तत्प्रान्तवर्ती मण्डल मात्र केवल स्वर्ग भूमि बनजाय और हिन्दी संस्कृत का केन्द्र भाग वही हो इस अनुदारता के क्या माने होसक्ते हैं—अथतो यों है कि हिन्दुस्तान की लिखावट हिन्दी को भृष्ट किये देती है और हिन्दी की क़दरदानी के श्रोत पर डांट सी लगा दीगई है—हमनेतो आज तक न सुना कि अमुक हिन्दी के सुलेखक को राजा साहब ने इस प्रकार आश्रय दिया स्वदेश तथा भाषामें अनुराग का अभिमान रखने वालों के लिये यह प्रधान कर्तव्य है कि सामर्थ्य रख कर यथा साध्य ऐसों की सहायता करें जो सर्वथा असमर्थ होकर इस बोझ को नजानिये किस कठिनाई से वहन कर रहे हैं—सच मानिये यदि हिन्दुस्तान के बदले मे प्रदीप न जाता होता तो दाम देकर कभी इसके लेने की लालसा राजा साहब को नहोती केवल हिन्दुस्तान और काला कांकर मे सब उन्नति और तरक्की ला समाय यह तो एक प्रकार को स्वार्थ परता है हिन्दी की सर्व साधारण उन्नति इस्से क्या हुई अस्तु अब यह निर्णय करना कि उक्त समर विजयी की रुचि हिन्दी मे अधिक है या अंगरेज़ी मे व्यर्थ की बकवाद है किन्तु यदि यूनियन लेनेके उपरान्त हिंदुस्तान का प्रादुर्भाव हुआ होतातो हिन्दी के पक्षमे इन की रुचि की प्रबलता समझी जाती—पूर्व प्राप्त वस्तु मे अरुचि उपजे बिना दूसरे पदार्थ की अभिलाषा नही होती जबतक ज्येष्ठा भार्या से सब प्रकार सन्तुष्ट चित्त रहता है दूसरे बिवाह का नाम तक कोई नहीं लेता हिन्दी को कुलाङ्गना कहिये तो उसके मुकाबिले मे अंगरेज़ी अन्याङ्गनाठहरती है अंगरेज़ी की भाव भगति का बढ़नाही प्रमाण है कि उसने हिन्दी भाषा की ओरसे अनिच्छा करादिया जैसा बोलिम्त्र राज कविने अपने वैद्य जीवन ग्रन्थ मे लिखा है

" सहस्त्र धौतेन धृतेन कर्तुरभ्यंगमोघः कृशतां बिभर्ति ।
अन्याङ्गना संगम लालसस्य स्वीयेषु दारेषु यथा भिलाखः ॥

अर्थात सहस्र बार धोये हुये घी के लेपन से प्रादेशिक दाह ऐसा दुर्बल होजाता है जैसा परस्त्रीगामी पुरुष का अभिलाष अपनी स्त्रीमे घटजाता है सुभे यूनियन से कुछ द्रोहनहीं है किन्तु हिन्दुस्तान बेचारा जितना आहार महीने भर की नौकरी के पलटे मे पाता है उतना यह हजरत एकही दोबार की नौकरी के बदले चाट जांयगे - संपादक महाशय इसे हमारा भ्रम बतलाते हैं अस्तु भ्रम सही यदि हमारे इसलिख-ने पर राजा साहब सावधान हो जांय और हिन्दुस्तान पर किसी तरह की आंच न पहुचे तो हमे और चाहिये क्या यही तो हमारा मनोरथ है—उक्त संपादक के बचनानुसार संस्कृत की उन्नति उसी प्रकार की हुई होगी जैसा और कई जगह संस्कृत पाठशाला तोड़ कर अंगरेजी स्कूल बनाया गया है—दूसरे हमपर बड़े अन्याय का बोझ होटल की समालोचना के कारण रक्खा गया है उसे बाणिज्य शिरोमणि समझ निज स्वार्थ ठहराया है जिसपर किसी को कुछ कहने का अधिकार नहीं है—प्रथम तो हमलोग स्वार्थ परमार्थ को एक दूसरे से ऐसा मिलाझुला देखते हैं कि सागलपेटा भात भात लपेटा साग की भांत एक दूसरे से अलग करना कठिन है स्वार्थ जब परमार्थ बिरोधी होतो अवश्य दोषाङ्कित कहा जायगा—फिर जब हम लोग उक्त समर बिजयी के स्वार्थ परमार्थ भिन्न नहीं समझते तब उनके प्रत्येक कामो मे अपनी सम्मति अवश्य प्रगट करेंगे समस्त धर्मशास्त्र के मूल पुरुष भगवान मनुने क्षत्रियों के लिये खेती का भी निषेध किया है जिसमे केवल क्षुद्र जीव कीड़े मकोड़े मरते हैं तब यह काम खेती से कितना बढ़कर हिंसाका है ।

" वैश्य वृत्यापि जीवंस्तु ब्राह्मणः क्षत्रियो पिवा ।

हिंसा प्रायां पराधीनां कृषिं यत्नेन बर्जयेत्"—
क्लिश्यन्नपिहि मेधावी शुद्धं जीवन माचरेत्—
तेनेहश्लाघ्यतामेति लोकेभ्यश्च नहीयते,,—
" येन याता: स्वपितरो येन याता: पितामहा:—
तेन यायात्सतां मार्गं तेन गच्छन्नरिष्यते,,—

यह बात हम लोगों ने कभी नहीं सुना कि किसी सेठ साहूकार राजा बाबू ने होटल का काम अति लाभ दायक समझ कर किया हो यह काम हिन्दुस्तानी ही खयाल से गर्हित हो सो नही विलायती खयाल से भी होटल कीपिंग प्रतिष्ठित व्यवसाय नही है—हमारे पुराने नीति शास्त्र प्रवर्तक आचार्यों ने राज्य के सात अंग माने हैं—स्वाम्य अमात्य सुहृत् राष्ट्र कोषदुर्गबल—और येसातो एक दूसरे के सहायक हैं जिन्मे कोष "खजाना,, सब से बड़ा अंग है बहुत सा उठाना और संचय थोड़ा करना कोष के क्षीण होने का लक्षण है यदि कोष अंग बिगड़ जाता है तो उसे कोष व्यसन कहते हैं जिसका लक्षण यह है व्ययी कृतः परिक्षिप्तो भक्षितो ऽसंचित स्तथा। मूषितो दूर संस्थश्च कोष व्यसनमुच्यते ॥ "धर्महेतो स्तथार्थं भृत्यानां भरणायच। आपदर्थं च संरक्ष्य: कोष: कोषवतासदा ,,—अन्त को कांग्रेस को हम जैसा समझते हैं हमारा जो जीजानता है हमभी इसविषय मे बादानुबाद से कुछ उपकार नही मानते।

हड्डियों के संग्रह पर साधारण प्रजा का तर्क बितर्क।

कुछ दिनो से देहातों मे गाय भैंस सुवर आदि जीव जन्तु ओं की हड्डियां ठौर २ इकट्ठी हो छकड़ों मे लद और खांचियों मे भर कर इलाहाबाद आती हैं और उनका दाम भी शायद २) मन के

हिसाब से सुना जाता है हमको इलाहाबाद और प्रताप गढ़ के जिले का प्रमाणिक समाचार मिला है कि इस्से चमारों को नया लाभ उत्पन्न होगया है कि जो हड्डियां व्यर्थ पडे २ सड़जाती थीं उनसे चांदी मिलने लगी – अब इस्से हमारे मन को एक नये प्रकार का सन्ताप उत्पन्न होगया है वह यह है कि सर्कार जिस तरह हड्डी आदि अपवित्र वस्तु को प्रिय और उपकारी मानती है उसी तरह हिन्दुस्तानी प्रजा उसे घृणित निन्दित और धर्म बाधक समझती है जब से इसका संग्रह आरंभ हुआ है भांत २ के कुतर्क और दुर्भाव होने लगे हैं प्राय: लोग कहते हैं यह हड्डियां चीनी और नमक मे मिलादीजांयगी जिस्से सहस्रों धर्मिष्ठ और परहेजगारों ने चीनी और सामर नमक खाना छोड़ दिया यद्यपि यह खामखयाली और भ्रम मात्र हैं पर इस्से प्रजाका चित्त गवर्नमेंट की ओर से बिगड़ता जाता है बढ़ते २ छोटी सी बात का बतक्कड़ होजाता है टोंटे कंबख्त की चर्चा भी ऐसीही बेहकीकत और बेबुनियाद थी जिसने एक समय प्रलय का सामान उपस्थित कर दिया था लोकापवाद बुरी बलाय है जिसका निवारण राजा के लिये बहुत आवश्यक है सो हमारी सर्कार ऐसी बातों से सदैव बेपरवाह रहती है बल्कि जो संपादक ऐसी उपयोगी बातसु झाते हैं उलटे कठोर बादी और धृष्ट समझेजाते हैं—हमारे नये लाट साहब चारो ओर दर्बार करते फिरते हैं और अपनी स्पीचें छपवा छपवा तहसील दारों की मार्फत नामी जमीदारों के पास भेजते हैं जो फारसी हर्फों मे होने के कारण

वे लोग न पढ़ती हैं न समझ सक्ते हैं यदि उक्त स्पीच का भाव कोई भी न समझे तो कुछ बड़ी हानि की बात नहीं है-पर इस हड्डी के बटोरने से जैसा लोकापवाद बढ़ता जाता है और उससे जो अनिष्ट आगम और भयंकर भावना प्रतीत होती है उसको मन मे लातेही यह जड़ लेखिनी कांप उठतीहै—इस्से उचित है कि हिन्दी भाषा के द्वारा उस हड्डी बटोरने का यथार्थ कारण प्रजा को समझा के कह दिया जाय कि इस अस्थिसंग्रह से तुह्मारे खाद्य पदार्थों मे कुछबाधा और नापाकी नपहुंचे गी-हम लोग सर्वथा सच्चे शुभ चिन्तक प्रजा और गवर्नमेंट दोनो के हैं इस्मेसन्देह नही न हमारी कदर महा मूढ़ प्रजा करती है न महा धूर्त शिरोमणि सर्कार—अस्तु यह हमारी बदनसीबीका परिणाम है। पर हम लोग जहांतक बनपड़ेगा भलाई के काम से न चूकैं गी सर्कार को अधिकार है माने वा नमानै—खेदहै सकल विद्या निधान और गुण गणराशि का पुंजहोने पर भी सर्कार उदारता और प्रजा रंजनता का भाव नधारण कर दिन प्रतिदिन काल भैरव कराल भैरव कुटिल भैरव भीषण भैरव कंकाल भैरव बनती जाती है यह चिन्ह राजा प्रजा दोनो के लिये अशुभ सूचकहैं इसी से उन के मिटाने को हम बारंबार प्रार्थना करती आये हैं और करती जांयगी।

।पूर्णदत्तचित्तहोनेकाएकमात्रउदाहरण।

४ महीने से यहां एक बिरक्त स्वामी आत्माराम टिके हैं जिनकी आकृती और वेश देख यही जान पड़ता है कि यह कोई परमभिखारी या उन्मत्त पुरुष है पर कमली मे लपेटा हीरे की भांत यह महात्मा अपने अध्यवसाय और निश्चय के बड़े दृढ़ मालूम होतेहैं गोरक्षा की ओर पूर्णदत्तचित्त हैं और दृढ़ संकल्प कर रक्खा है कि हम इस देश मे नगर २ गांव २ गौशाला कराही

के छोड़ेंगे कानपुर आदि कई एक स्थानो मे गोशाला स्थापित कर आये हैं माघ मेलेमे बराबर गोरक्षा की पुकार करते रहे कुछ रुपये भी इकट्ठे होगये हैं—अब यहां नित्य चौक मे तद्विषयक वक्तृता किया करते हैं इन के कथन का प्रकार भी उत्तम है यहां के प्रतिष्ठित रईसों को बेर बार कई एक कमेटियां इसके लिये चन्दा एकत्र होने की कर चुके हैं आशा होती है स्वामीजी कदाचित् सफलोद्यम हों —हमारी भी यही राय है कि गोहिंसक सर्कार से इसके लिये कहना और गिड़गिड़ाना नितान्त मूर्खता है देश मे गोधन सुरक्षित रखने को गोशालाएं स्थापित करना सुगम उपाय है एक २ "स्लाटर होस„ बूचड़ खाने के मुकाबिले एक २ गोशाला स्थापित होती जांय हम अपने प्रयत्न से नचूकें आगे जैसा ईश्वर चाहेगा सो होगा वही हमारी ऊपर की कहावत फिर याद आती है —"अपना चेता होतनहिप्रभुचेतातत्काल„।

गूलर का फूल

गूलर के फल को सब देखते हैं पर इसके फूल को आजतक किसी ने न देखा बड़े २ जुगाधी बुढ्ढों से सुना तो यही सुना कि सारे पेड़ भर मे एकही फूल फलता है और वह इतना बड़ा होता है जैसा फूल या पीतल का बड़ा भारी थार अथवा जैसा पूरनमासी का चन्द्रमा या उदयाचल का सूरज—जिसके तेजः पुंज पर मनुष्य की दृष्टि नही थंबती कितने स्वभाविक निःशङ्क गोपालबंशी चर्चियों ने दिवाली की आधीरात को भैंस चराने के समय उसे देखा पागल होगये कितने गड़ह बंशी चरो गरड़िये भेड़ी बकरी चराती हुये उसे देख बज्र गूंगे होगये जिन्हों ने अपनी कमली से आंख

मूंद लिया वेही निज अंगो मे बिना कुछ कलपाये शुद्ध बच रहे—कोई कहता है तैंतीस किड़ोर देवता यक्ष गन्धर्व भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी बैताल विघ्न विनायक उसमे लिपटे रहते हैं—उक्त फूल के पखु-रियों की चमक दमक हीरामणि माणिक्य जवाहिर क्या आकाश के तारों से शत गुन अधिक होती है सैकड़ों वर्ष से लोगों की लौलगी है पर आज तक किसी ने उसे न देखा न उसका चमत्कार वृत्तान्त किसी ने सुना—यह बड़े शुभ संयोग की बात है कि इस गत अर्धकुंभी माघ मेले मे आये हुये औघड़ उदासी योगी वैरागियों के गुरु मंत्र की जोग जुगत बल कितने रसिक सज्जनो के चित्त चकोर की वांछा पूरी हुई परन्तु पूरा२ हाल लिखने और महा भारत के समान ग्रन्थ बनाने का अवकाश किसको है और यह कहना और बतलाना कि किसने देखा और वह देखने वाले सिद्ध महा पुरुष कहां हैं एक प्रकार का बखेड़ा है क्योंकि ऐसे लोग छिपे छिपाये सी-धे सादे सरल भेख मे पड़े रहते हैं उन्हे किसीकी भाव भगतीसे क्या प्रयोजन हां जो लोग इस प्रदीप से प्रेम बनाये रहैंगे कभी न कभी ऐसे अलभ्य अद्भुत फूल का मूल कारण अवश्य जान जांयगे—कलयुगी जीवों के फट कारने वाले उन फकीरों ने तजवीज़ किया है कि इस फूल का दर्शन ऐसी जगह मे हो सक्ता है जहां वर्ष भर मे एक दो बार बड़ी २ सुचरित्रा स्त्रियों का जमावड़ा होता हो जैसा इलाहाबाद का सोहबतिया बाग जहां सोहबत के मेले मे हज़ारों स्त्रियां खेलती और अभुवाती हैं—निखंड आधीरात को महात्मा लोग अलोपांजन क्रिया और अलोपी देवी के मंत्र बल से अलुप्त होकर बैठे थे इतने मे एका एक आंधी आई सब पेड़ कांप उठे एक गूलर का पेड़ न मालूम उसी बाग मे था या मंत्र बल से बुलाया गया पहले ज़र्द-बनात सा दीख पड़ा फिर ऐसा सुफेद होगया जैसा हलब्बी शीशा उसके एक २ पत्ते मे देवलोक और विलायत के भूगोल की रचना दिखाई दी और वह उदुंबर वृक्ष इतना ऊंचा होगया जैसा सुमेर पर्वत की उचाई की

942

उपमा कुमार संभव मे लिखी है—"स्थितः पृथिव्या इव मान दण्डः,,-थोड़ी ही देर मे लालटेनो के समान शोख रंग की हजारों कलियां नारियल सी लटकने लगीं फिर प्रत्येक कलियों के अग्र भाग से एक २ चमकीले तागे निकल कर सबतागों से आपस मे गुथ एक जाल से बन गये मालूम होता था मानो वरुण देवता अग्नि देव निर्मित प्रकाशमय अंगरखे को पहने खड़े हैं बस थोड़ीही मिनिटों मे सब तेज बटुर कर एक होगया जैसा कुम्हार का चाक अथवा गाड़ी का पहिया पर उस्मे जो बेल बूटे थे उसकी छवि और कारीगरी का वर्णन अति दुःसाध्य है जिस्का ढांचा कुछ २ ऐसा ही जंचता था जैसा तांत्रिक लोग देवताओं का पीठ यंत्र त्रिकोण षटकोण अष्ट दल षोड़ष दल आदि का भूगोह बनाते हैं परन्तु भूगोह का अन्त भाग चौकोना होता है पर यह पुष्प चक्र सर्बथा गोलाकार था उपरान्त यक्ष गन्धर्व किन्नर ब्रह्मऋषि देवऋषियोंने आय आय चारो ओर से उस फूल को घेर लिया उसकी रक्षा के लिये नवग्रहों की चौकी बैठगई यमेश्वर देवता नंगी तलवार लिये अनेक रंग बरंगी भाषा मे आगुन्तकों को सचेत और सावधान करते थे कि अपने २ नियत समाज मे प्रतिष्ठा और दर्जा के अनुसार आसन ग्रहण करें—उस समय छिपे छिपाये योगियों को वह सिद्धाई और करामात प्राप्त हुई कि वे लोग भांत २ का भेख बदल२ हर एक समाज का कौतुक देखने लगे पर अपसोस कि वह शक्ति न हमारी लेखनी मे आसकी कि सब ज्यों का त्यों लिखलेते न पाठकों के नेत्र में वह सामर्थ्य है कि एकही व्यवस्था के पढ़ने से सब समझ लेते इसलिये इस पुष्प दर्शन महोत्सव का वृत्तान्त पृथक् २ समाज का जैसा हुआ अलग २ लिखना पड़ा— अस्तु महानुभाव वीरावतंस दरवारियों के उपस्थित होंजाने पर चारो ओर इष्ट देव कुल देव ग्राम देव पितर गण याचकों की भांत आय खड़े होंगये कि उस गूलर के फूल को जवमात्र एक पंखुरी भी मिलै तो हम अपने पूजक और सेवकों के वर अन्न धन सन्तान आदि की वृद्धि फैलावें मरघट के

भ्न धोबी घाट के पिशाच अंगरेजी कबिरिस्तान के क्रिस्तान प्रेतों का झुंड एक तरफ और कर्बला के कबाड़ी जुबाड़ी दूसरी ओर जमा होते जाते थे गंगवारे जमनवारे की रहस्यलीला की नैपथ्य भूमि पृथक् रची गईथी प्रत्येक समाज के प्रबन्ध कर्ता अथवा मेनेजर बेतालगण नियत हुयेथे तथा और २ उपस्थित मेंबरों की अनुमति से वेतालाधीश ने कहा जल्द कोई मत प्रवर्तक महाशय जो सब से पीछे हुये हों सभापति का आसन ग्रहण करें बेलाबीती जाती है— बस एका एक श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती चेयरमेन की चौकी पर आय बैठे और कहा कि कोई आर्य्य भी यहां है ? तत्क्षण कई एक नवीन आर्य्याभिमानियों के छाया पुरुषउपस्थित हो बोले नमस्ते नमस्ते स्वामीजी ने पूछा तुम लोग हमारे अनुकूल क्या काम करते हो जबाब दिया ब्राह्मणों को पोपकह २ उनका जी दुखाना मूर्तिपूजा तीर्थ ब्रत आदि का खंडन जैसा आप करते थे—स्वामीजी ने कहा मै सन्यासी था उत्तेजनाके लिये बन्धु वर्ग ब्राह्मणों को इस बिचार से सब प्रकार का उपदेश करताथा कि बिना इनकी अनुकूलता के कोई मत दृढ़नहीं होता तुम लोग महा अन्याय करते हो--इतने मे कलिराज का वकील बोला यहतो इनका कथन समय के बहुत अनुकूल और सभा के उद्देश्य के अनुसार है—स्वमीजी ने कहा यदिसमय और सभा की ऐसीही रुचि है तो मै जाता हूं इतना कह अन्तर्ध्यान होगये—उपरान्त केशव बाबू ने चेयरमेन बनना चाहा बेताल ने रोका आपब्राह्ममत के आदि प्रवर्तक नहीं हैं इतने मे रजा रायमोहन सभा पति के आसन पर सुशोभित हो अपने ब्राह्मों लोगों से पूछा तुम लोग क्या काम करते हो कई एक बंगाली एक साथ बोल उठे महाशय जनेऊ तोड़ डाला है मद्पीते हैं होटलों मे खाना खाते हैं ब्राह्मण की कन्या शूद्र ब्याह कर अनुलोम प्रतिलोम बर्ण मे यौनिक संबन्ध की प्रथा चलाते हैं बस इतना सुनतेही चेयरमेन महाशय रुमाल से मुंहढांप इशारे से अनुमति ले अन्तर्ध्यान होगये पर चलती बार इतना शब्द उनके मुख से अवश्य निकला अनर्थ अनर्थ अनर्थ—पश्चात् श्री स्वामी

रामानुज बिराजमान हुये दस पांच पोलीश्री दिये हुये चक्राङ्कित आचारी दासोस्मि दासोस्मि कहती दंडवत करने लगी—स्वामीजी बोले क्या कार्य करती हो उत्तर दिया द्विजाति मात्र को निगुरा कहके धिक्कारती हैं चेलों को शंखचक्र से दगाय कर मनमानता धन पुजातीहैं और देवताओं की शिवकी निन्दा करतीहैं—स्वामीजीने पूछा कुछ वेद शास्त्र की भी वृद्धि करती हो ? आचारियों ने उत्तर दिया शिष्यों का धन और२ कामों मे खर्च हो जायगा तो हमारी गुरु पूजा मे कमी आपड़ैगी—कलिराज का वकील बोला यदि इनके स्वार्थ के बिपरीत आपको कुछ वक्तव्य है तो आप अपने आसन का भार किसी दूसरे को सौंप अब जाइये—स्वामी जी बहुत अच्छा कह अन्तर्ध्यान होगये—

जब गुरु नानहक सभापति हुये उस समय सिक्खों के समुदाय से बड़ी मोटी तोंदवाले बहुत से उदासी और निर्मले फकीर उपस्थित हुये वाह गुरु की फतेह कह एक साथ चिल्लाने लगी—गुरु साहब ने पूछा हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म के लिये तुम लोगोंने क्या फतेहका काम किया—कलिराजका वकील बोला गुरु साहब येलोग बहुत अच्छे आदमी हैं लाखों की संपत्ति इनके पास जमा है देन लेन व्यापार जमीदारी सती सेवकों को चेला मूड़ना नित्य मालपुआ और हलुआ छान कितनी संडा रंडाओं का जन्म सफल करना आदि इनका काम है—नेत्रों मे आंसू भर गुरु साहब ने कहा हे प्यारे कलिराज मंत्री क्या हमारे सिंह समुदाय मे से कोई भी ऐसा नहीं है कि हमारी बात का यथोचित उत्तर देता अस्तु यह पत्र जो मे परंपद से लायाहूं कोई पढके सबको सुनादेता—वह पत्र ऐसे बारीक अक्षर और फीकी स्याही से लिखाथा कि किसीसे न पढ़ागया अन्तको एक बड़े पुराने अभ्यासी बाबा सूरदास ने धड़ा धड़ पढ़के सुनादिया गुरु साहब का दिल थोड़ा ठंढा हुआ और कहा मेरे मत मे यही एक बुड्ढा ढिठियार और सब अन्धे हैं ।

इसके उपरान्त श्री स्वामी शंकराचार्य की बारी आई स्वामी जी ने अपने

सुखार बिन्द से कहा हे गिरी पुरी भारती सरस्वती आदि नाम धारक महात्मा ओ आप लोग धर्म पथ पर आरूढ हो क्या धर्मका काम करते हो? वह सुन जो लोग संयोगी गृहस्थ होगये थे व्यापार आदि मे प्रवृत्त हैं उन्हों ने अपने २ व्यवहार के समान उत्तर दिये–विरक्त संन्यासी परमहंसों ने कहा " ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या „ के मूल पर बिचार के द्वारा देह निर्वाह और कालक्षेप करते हैं— स्वामी जी ने कहा धर्म रक्षा और परोपकार के संबन्ध मे आपका कैसा प्रयत्न है? महात्मा महापुरुषों ने उत्तर दिया नश्यमान् अनित्य संसार के उपकार से क्या लाभ—स्वामी जी ने पूछा शरीर भी तो अनित्य है तब इसके निर्वाह का प्रयत्न क्यों किया जाता है— इतने मे कलिराज का वकील बोल उठा सभाआप को धन्यवाद देकर विश्राम की प्रार्थना करते है स्वामी जी ओं शान्तिः शन्तिः शान्तिः कहते हुये अन्तर्ध्यान होगये ।

इसके पीछे उक्त आसन पर बिसमिल्लाह रहिमाने रहीम कह कर महम्मद साहब रौनक अफरोज़ हुये और कहा ऐ प्यारे मुसलमानो अलावे नमाज़ रोजा और कुरान पढ़ने के जो तुह्मारा फ़र्ज़ी काम है खुदावन्द करीम के खिलकत की भलाई और तरक्की के लिये क्या काम करते हो और अपने हमवतनो के साथ किस तरह पर पेश आतेहो ?, यह सुन मुसलमान लोग तो सकूत की हालत मे आगये कलि दूत बोला अगर हुजूर पीछे से मेरे बयान की तरदीद मे कोई खिलाफ कलमा न फरमाने का वायदा करें तो मै अपने दोस्तों की तरफ से कुछ अर्ज़ करूं—हज़रत ने फरमाया अच्छा कहो कलि दूत खुश होकर बोला कि इन आप के उम्मतवालों की वदौलत दुनियाको बहुत कुछ फायदा पहुंचता है अरिस्ते आबकारी को इन्से बहुत मदद मिलती है खुदा की बन्दियां तवायफों की कदरदानी जियादहतर इन्हा पर मुनहसर है इनके मसलहत आमेज़ दरोग से बहुत कुछ काम निकलता है ताज़ियादारी का शौक रोज़ बरोज़ तरक्की पर है इनकी आदत गोश्तखुरी और गाव कुशी की वदौलत हिन्दुस्तान के अलावा और २ विलायतों मे चमड़े की तिजारत से मालामाल है—बस इतना सुनतेही

हजरत ने गरम सांस भर इशारे से उसे चुप रहने का हुक्म दिया और एक बड़ा करामाती आईना तमाम जलसे को देखादिया जिस्के देखतेही हजारों वदकार गाव कुशीके तरफदार बेहोश हो गिर पड़े और समझ गये कि इस्केजरिये से बजाय जबानी कुछ कहने के हिदायत की है और अन्त को महम्मद साहब एक पर्चा उस मजलिस मे फेंक गायब होगये–उस्मे यह लिखाथा "रास्तीके साथ चेतो„ कलिराज के वकील ने बहुत चाहा कि पर्चा निगलजाय पर दीनदार मुसल्मानो ने उसे अपनी जान की जगह मे रख लिया। जब प्रभुईसा मसीह की बारी आई तो बड़ी धूम धाम मची घंटियां बजने लगीं—आसन पर बैठतेही पूछा हमारी दस आज्ञाओं का सार प्रेम और दया धर्म को कितना बढ़ाया—कलिदूत बोला हे प्रभो आपका औरही समयथा जब हर एक बात मे दया और प्रेमही का काम था बिना जिस्के आप का समुदाय कुछ नहीं कर सक्ता था अब इस समय आप के समुदाय वालों ने निजउद्यम और पुरुषार्थ से वह कुदरत हासिलकी है और करते जाते हैं कि आपके एक भी मूल सूत्रों का पालन नकरैं और सब काम अपने मनोरथ के अनुकूल करलें–सबसे बड़ी बुद्धिमानी आपके मत के नामी चेलों की यह है कि प्रतिवर्ष पूर्वा पर विरुद्ध बातैं आप के धर्म पुस्तक को शोधते जाते हैं जेबार उस्का नया एडीशन होता है वेही बातें रक्खी जाती हैं जो युक्ति सिद्ध हो–प्रभू आपकी तीसरी आज्ञा है "व्यर्थ ईश्वर का नाम मतलो„ यहां व्यर्थ और सार्थक क्या बिकुल नाम लेनेकी अवश्यकता नहीं समझते–आपने जिस कर्म को व्यभिचार समझ दूषित ठहरायाथा हमारी सभ्य समाज ने स्व स्त्री पर स्त्री का कुछ भेद ही नहीं रक्खा किसी की मेम कोई साहब जहां चाहैं लिये डोलैं मन माना अपने काम मे लावैं कुछ हर्ज नहीं–आपकी दस आज्ञाओं मे एक आज्ञा यह भी है तूअपने परोसी के धन या किसी वस्तु की लालच मत कर परन्तु इनका उद्दण्ड पौरुष ऐसा क्षुधातुर रहता है कि उसकी प्रेरणा से न्याय अन्याय दोनो को ऐटलांटिक

महासागर मे डुबोय प्रत्येक समुदाय का स्वत्व इन्हें आत्मसात् करनाही पड़ता है न्याय अन्याय सबको भार मे झोंक बिरानी संपत छीनलेना किसी बुराई और पाप मे नहीं गिनाजाता आप को इस्मे कुछ सन्देह होतो प्रत्यक्ष देखलीजिये वह सफेद गजराज के सामने जो ब्रह्मा के अगणित अकाल मृत पड़े हैं उनसे पूछ लीजिये—ज्योंही ब्रह्मा देश के आभास पट पर प्रभु की दृष्टि पड़ी रोमांच होआये आंसू की धारा बहने लगी बोले अरे हत्यारो यह तुमने क्या किया—इसके उपरान्त कलि दूतने प्रभु का मुख बन्द किया और कहा बाबा अब समय न रहा—ईसा को महा दुखित देख आकाश से शनैश्वर नंगी तलवार चमका के बोले मसीह गुरु जी आप बहुत शोक मतकरें मै अभी गूलर की रखवाली मे प्रवृत्त हूं जहां इस्से कुट्टी पाया और मेरी पूर्ण दृष्टि इन पर पड़ी बस ऐसा चाट जाऊंगा जैसा दीमक पुराने कागज़ चाट जाती हैं मै ऐसे २ कितने अहंकारियों को चाट चुका हूं—यह सुन ईसा अन्तर्ध्यान हुये और वह गूलर का फूल महा आकाश को उड़ा जो कुछ पखुरियां उसकी झरीं उन्हें कलिराज के खज़ानची ने बाकस मे बन्द कर दिया और कहा इन पखुरियों के एक २ टुकड़े खैरखाहों को और लखनऊ की मुहमेडन कांग्रेस के मेंबरों को दिये जांयगी—उसी मैसे एक टुकड़ा पाने के लिये हिन्दी प्रदीप की ओर से भी दरखास्त गुज़री इस बुनियाद पर कि महा अन्याय के साथ बल पूर्वक १०) लइसेन्स टैक्स ले लेने पर भी इसने चूं नहीं किया — प्रयोजन इस पखुरी के पाने का यह था कि उस पखुरी का रस स्याही मे मिला कर पत्र छपे जिस्से दो फल प्रगट हों कि नादिहन्दों की दातव्यशक्ति बढ़ै और मुफ्त मे पढ़ने वाले चोट्टों की पुष्प रसमिश्रित स्याही की झार से आंख फूट जाय जिस्से आगेसे बिना टेंट का पैसा खरचे कोई इसे पढ़ने की हिम्मत नकरै जो कोई इस गूलर के फूल संबन्धी माहात्म्य को प्रति बर्ष पढ़

९५८

लीएप्रिल के फुस्न डे महा पर्व मे चार आना दक्षिणा चढ़ाय पढ़ेगा या सुनेगा वह सब दुख दरिद्र दूर बहाय यावज्जीव सुख भोगेगा सकल ऋद्धि सिद्धि विना बुलाये उसके पास दौड़ी आवेगी इति—

रत्नहानि

यहां के हाईकोर्ट के वकीलों मे अग्र गण्य कायस्थ वंशावतंस रत्नतुल्य मुंशी हनुमानप्रसाद ११ मार्च को इस असार संसार से मुंहमोड़ सुरधाम बासी हुये—उक्त मुंशीजी हिन्दू धर्म के स्तम्भ रूप थे विशेष कर ऐसे समय मे जब कि नया प्रकाश और नई सभ्यता ने इन के समकोटिवालों को अपने दल मे मिला लिया था कानून के एच पेच के समझने मे इन की अगाध बुद्धि और मुअक्किलों के साथ इनका कोमल वर्ताव दोनो ऐसे अलौकिक गुण इनमे थे कि जो मुकद्दमा हार जाताथा वह भी हारने की उदासी के बदले इन से प्रसन्न होकर जाताथा —मुंशीजी महाशय रियासत और भल मनसाहत की पूंजी थे आचार बिचार और धर्म के धाम थे शील पालन की कसौटी श्रद्धा और आस्तिक बुद्धि के सर्वस्व थे —देश हित के छोटे बड़े कामोमे दत्त चित्त होकर इन की प्रवृत्ति बड़ी लाभ दायक थी —ईश्वर ऐसे सुकृती को बैकुंठ बास दे और इनका पुण्य प्रताप सौशील्य सौजन्य आदि गुण सम्पन्न इनके पुत्र पौत्रों का निरन्तर कल्याण करे —"बाढ़ो पुत्र पिता के धर्मे"—

प्राप्त

बाल्मीकि रामायण का दोहा चौपाइयौं मे शब्दार्थ अनुवाद बाल काण्ड-अलीगढ़ निवासी बाबू तोताराम कृत-इनकी अद्भुत योजना शक्ति अत्यन्त प्रशंसा के योग्य है मूल्य ॥) हिन्दी भाषा के परम अनुरागी देश हित मे एकान्त दत्तचित्त बाबू तोताराम अनेक धन्य बाद के योग्य हैं।

।समुद्रयात्रानाटक।

देहली निवासी श्री जगन्नाथ भारतीय लिखित —हमारे पास इनकी बानाई बहुत सी पुस्तकें आई हैं पर यह सबों से उत्तम है इसके पढ़ने से ग्रन्थकार की कल्पना शक्ति का पूरा परिचय मिलात है बिरादरी के चौधरियों अथवा ऐसे लोग जो महानिकम्मे और निपट नालायक होकर भी पुराना पिटना पीटते हुये हम लोगों मे बिरादराने की बातों मे अगुआ बन हमारी समाज को सत्यानाश किये देते हैं उनकी भर पूर दुर्दशा इसमे दिखाई गई है।

श्रीयुत हिन्दी प्रदीप संपादक महाशय !

२५ नम्बर के दिनकर प्रकाश मे किसी अदूरदर्शी मनुष्य ने अपनी सम्पूर्ण बुद्धि खर्च कर बड़े परिश्रम से अहोरात्र दिवस जाग २ कर डिक्सनेरी महाडिक्सनेरी के अमूल्य शब्द एकट्ठे कर ब्राह्मण स्तोत्र नामक लेख से अपना पांडित्य और गौरव प्रगट किया है उस स्तोत्र को पढ़ कर स्तोत्र कर्ता के लेखनी की चातुरी की प्रसंसा किंवा उनका स्वभाव बुद्धि हीन मनुष्य ही नहीं किंतु महा मूर्ख भी सहज में जान सकता

है इसमें इसस्तोत्र के पढ़ने से इस बात का परमाश्चर्य हुआ कि जब स्तोत्र कर्ताने ब्राह्मण मात्र के सम्पूर्ण शुभा शुभ आचरणों को अपनी कल्पनाशक्ति के द्वारा १४ नियमों में अथवा चौदा परिच्छेदोमें बिभक्त कर दिया है कोई बात ब्राह्मणों को स्तोत्र पाठ से उठा नहीं रक्खी है तो फिर स्तोत्र कर्ता ने १४ परिच्छेदों के समाप्ति के नीचे अपने को भी उन्हीं ब्राह्मणों के प्रसिद्ध नाम शर्म्मा से क्यों भूषित किया ? जब सम्पूर्ण ब्राह्मणों को स्तोत्र कर्ताने अपनी कुटिल प्रकृती के अनुसार असभ्य नीच शब्दों के टैटिल से दूषित किया है तो स्तोत्र कर्ता भी तो अपने नाम के पीछे "शर्म्मा" का पुच्छल्ला लगाते हैं तब तो स्तोत्र कर्ता उपरोक्त ब्राह्मणस्तोत्र के १४ भागों कि उपासक किंवा पूर्ण अनुयायी नहीं तो और क्या हैं ? जब स्तोत्र कर्ता को ब्राह्मणों को २) रुपये पर नोकरी करनी नहीं सुहाती जिन ब्राह्मणों की उपजीविका जिजमान की परंपरा से चली आती है वह अथवा दूसरी जीविका जो ब्राह्मण अपने उदरनिर्वाह करने के लिये कर ज्यों त्यों समय काटते हैं इत्यादि जो स्तोत्र कर्ता के दृष्टी में खटकती है तो फिर स्तोत्र कर्ता ही क्यों नहीं सब ब्राह्मणों के अन्नवस्त्र का ठीका लेकर सम्पूर्ण ब्राह्मणों की पालना करने में अगुवा होते ? यदि स्तोत्र कर्ता अपने को ब्राह्मणों से श्रेष्ट अथवा धन्नासेठ मान बैठा है तो सम्पूर्ण बखेडों को छोड़कर ब्राह्मणों के हित के लिये तीर्थ २ नगर २ पर्यटन करके जिससे ब्राह्मणों की दशा सुधर जाय ऐसा उपाय क्यों नहीं करता है १ अथवा नगर २ तीर्थ २ मठ, अन्नक्षेत्र, गोशाला, धर्म्मशाला, सदाबर्त, क्यों नहीं जारी कर देता। प·सं–हर्ष

सत्यामृत प्रवाह

नामक अद्वितीय निबंध

कि जो

मत मतांतर के झगड़े मिटा के दृढ़ युक्तों के साथ इस बात को सिद्ध कर्ता है कि मनुष्य को किस बात पर बिश्वास करना चाहिये ॥

यह ग्रन्थ हिंदी भाषा में परंपरा बिद्या के बिधान द्वारा बेद–शास्त्र–पुराण–जबूर–इंजील–तौरेत–और कुरान आदिक सर्व धर्म्म पुस्तक का सार दरशक है ॥

इस एक पुस्तक के पाठ से परमेश्वर की प्राप्ति और स्वभाव शोधन के बिषय में किसी अन्य पुस्तक के पाठकी इच्छा नहीं रहेगी क्योंकि मनुष्य को जो कुछ बनना बरतना और जानना चाहिये वह सबकुछ इसमें बिस्तार से लिखा है ॥

परम बिद्वान, बेदशास्त्रके गंभीर तात्पर्य्य के पारगामी, पदार्थ बिद्या के हस्तामलक ज्ञाता, और परम सत्य के खोजी महा पुरुष, एवं ब्रह्म के साक्षात्कार से जीवन मुक्ति कार परमानन्द गृहस्थही मे लेने वाले अधिकारी तथा जो लोग परमेश्वर की ढूंढ मे बहुतसी ठोकरें खाते, और जो रामदास से गुलाम मुहंमद और गुलाम मुहम्मद से अब्दुल मसीह बन के निज बांधवों को दुखी करते और अन्य मतों के साथ लड़ २ मरते हैं उनको इस अलौकिक ग्रन्थ का अवलोकिन अवश्य करना चाहिये ॥

पंजाब प्रांत के परम प्रसिद्ध महात्मा, बिविध भाषायों में बिविध पुस्तकों के कर्ता, पूज्यपाद श्री स्वामी पंडित श्रद्धाराम जी फुल्लौरी विरचित उनकी विचित्र बिद्या बुद्धि का अंतिम निचोड़ छपना प्रारम्भ हुवा है ॥

मोल इस का अमोल और गुन इस के अतोल हैं केवल न्योछावर मात्र ५) पांचमुद्रा है इस पते पर मिलेगा हरि ज्ञान मंदिर – श्री पंडित श्रद्धाराम जी की बिधवा महतावकुंवरिदेवी फुल्लौर–जिला जालंधर जबतक मैं काशी जी में हूं तब तक तो मेरे पास इस पते से आना उचित है –शहर बनारस मुहल्ला टेढ़ीनीम पंडित बद्रीनाथ जी के मकान पर साधु तुलसी देव

आपका शुभ चिंतक तुलसी देव

हिन्दीप्रदीप ।

मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंदभरै ।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहिंटरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

१ मई सन् १८८८ ई० | जिल्द ११ संख्या ८

इलाहाबाद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
देशोपकारक यंत्रालय में प्रकाशित
किया गया

मूल्य अग्रिम ३।≤) पीछे देने से ४।≤)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १॥≤)

१६१

॥हिन्दी प्रदीप॥

जिल्द १२ सख्या ८ | मई — सन् १८८८ ई

।सैयद साहब अब भी चेतजाइये।

सैयद साहब आप बुरा तो मानेहीँ गे पर हम आप के हित की बात चिताते हैं—इस बुढ़ापे मे आप को यह क्या दुराग्रह समाया हुआ है -जो लोग आज तक आप की बुद्धि का बड़ा गौरव माने हुये थे वेही अब आपकी ओछी बातों को सुन २ हंसते और अचरज करते हैं—आप को हमारी इस नेशनल कानग्रेस से इतना बिरोध क्यों है— हम नहीँ समझसक्ते यह आपको क्यों नहीँ सुहाता कि हमारे देश के लोग भी और देशवालों की भांत अपने देश के प्रबन्ध का सुधराव करने लगें जिस्मे बिदेशियों के बिबिध अन्याय से बचकर सबलोग सुख और चैन के साथ दिन काटैं सब लोग भरपूर योग्यता प्राप्त कर अपने राजा को वह बात सुझावें जिस्से प्रजा का पूरा हित हो—आप साफ यह क्योंनहीं कह देते कि ऊंचे हाकिमों की दुरभिसन्धि के परवश हो हम फूट का बीज देश मे बोरहे हैं सर्व साधारण के हित के काम

मे आपका टांग अड़ाना आपकी नितान्त भूल और भ्रम है थोड़े से अपने चेले चाटियों का खयाल छोड़ हित सोच इस अच्छे काम से बाधक हो केवल कलङ्क का टीका अपने माथे पर लगाना है वह प्रवाह जो अब चलपड़ा है आप हजार सिरपटकिये कभी रुकने वाला नहीं है—क्या आप समझते हैं देश मे स्वास्थ्य और नीति के यथोचित संचार होने से मुसल्मानो को भी वही सुख और आराम नहीँ रहेगा जो हिन्दुओं को होगा टिक्कस आदि भांत २ के अन्याय से केवल हिन्दूही पिसरहे हैं मुसल्मानो का इस बिपत्ति से क्या गला छूटा है ? देशीलोगों को जज्जी आदि ऊंचे अधिकार न मिलते होते तो आपके पुत्र सैयद महमूद कैसे हाईकोर्ट के जज कर दियेजाते—तब नेशनल कांग्रेस क्या बुराई कर रही है कि जिन कारणों से देशी लोगों की उन्नति मे बाधा पहुंचे उनके दूर करने की प्रार्थना गवर्नमेंट से करे—क्या आपने उमर भर मे कभी किसी से अपने क्लेश दूरकरने को नहीं कहा अथवा कभी किसी छोटे अधिकारी के अत्याचार से अप्रसन्न हो ऊपर के हाकिमों से दुःख दूर करने का निवेदन नहीं किया तब आज यदि देश का देश मिल कर उसी बात को करता है तो आपको क्यों अप्रिय लगता है—जो आप यह समझते हों कि कानग्रेस मे हिन्दुओं की संख्या अधिक होने से जब कोई बात आपड़ेगी जिस्मे हिन्दू और मुसलमानो का विरोध है तो वह बात हिन्दुओं ही के पक्ष मे निश्चय कीजायगी और मुसलमानों को इस्मे हानि होगी तो प्रथम आपका ऐसा समझनाही भ्रम मूलक है कि हिन्दू सब अन्यायीही होंगे न्याय कभी करेंहीगे नहीँ—दूसरे कानग्रेस मे जब चुन कर

भेजने की प्रथा रक्खी गई है तो आपको अधिकार है कि हिन्दू अपनी ओर से दो मनुष्य चुन कर भेजें तो आप ४ आदमी मुसलमान भेजिये और हिन्दुओं से भी ऐसेही हिन्दू चुन कर रखिये जिन्मे पक्षपात नहो—रही यह बात कि न्याय न चहके सब तरह मुसलमानोंही का पक्ष और खातिर कीजाय सो यह तो अलबत्ता केवल हुज़ूर लोगों की खुशामदही से होगा परन्तु याद रखिये—"आदि अन्त निवहै नहीं ज्यों बालूकी भीत„ अन्याय का काम थोड़ेही दिन चलता है—जिन हुज़ूर लोगों की खुशामद के भरोसे आप फूले नहीं समाते यह आपकी बिलकुल नासमझी है "कागा कब किस्के मीत भये हैं„ यह सब उन हुज़ूर लोगों की चाल है जिस्की थाह लेने की या टटोलने की आपको बिलकुल अक़िल नहीं है—अपनी करतूत और योग्यता पर निर्भर न रह कर दूसरे का आश्रित बनना मानो अपने को उसके हाथ मे बेंच देना है फिर गुलामी ही से आपको अपना जीवन काटना प्रिय है तो हम कुछ नहीं कहते आप जो चाहैं सो करें— सच मानिये दास्य भाव और गुलामी से यदि राज्य भी मिलजायतो इसमे हम आप की शोभा और तारीफ न मानेगे ऐसी प्रकृति के मनुष्य तो कानग्रेस मे नजांय तभी अच्छा आप के चिन्तनही करने को आज हमने अपने पाठकों का इतना समय नष्ट किया इतने पर भी आप इस दुःस्वप्नमे पड़ेही रहैं तो लाचारी है—परन्तु इतना समझ रखिये आप हज़ार मूड़ पटकिये कानग्रेस आप के बन्दकिये न बन्दहोगी व्यर्थ को आप अपनी हंसी कराते हैं— अन्तको हुज़ूर लोगों को भी यहचितावनी है कि ऐसे मक्कारों को आप लाख २ पुचाड़ा दे २ कब तक रखियेगा इनकी खुशामद

१२४

"विषकुंभं पयोमुखं,, है काम पड़ने पर ऐसों ही से आपको धोखा हुआ है और होगा हम लोग जो अन्याय पथ मे पांव रखते लड़ खड़ाते हैं चोखी बात बोलना और चोखा बर्ताव रखनाही अपने साधुजीवन की सफलता मानते हैं कभी आप के संग बदी न करेंगे आप अपने मन की कुटिलता और मैल दूर बहाय न्याय का स्वच्छ अंजन लगाइये तो देखियेगा इस कानग्रेस का भावीशुभ परिणाम सामयिक गवर्नमेंट को कैसा लाभकारी है जिसका अटल प्रताप इस देश मे चिरस्थायी रखने को यह जातीय महा सभा एकमात्र संजीवनी बूटी हैऔर आपकी उदार नीति की परम शोभा है विघ्न बिनायक न बन हमको अपने ढंग परचलने दीजिये यही आप से प्रार्थना है--इति

। कालातिक्रमण ।

Procrastination

कालातिक्रमण मनुष्य मे ऐसा भारी दोष है कि इससे शाखा प्रशाखा के समान सहस्रों दोष उत्पन्न होते हैं जिस देश वा जाति में उन्नति होने वाली होती है वा होकर प्रौढ़ पड़ती है वहां से यह कालातिक्रमण दोष पहले अन्त हिंत होलेता है तब उन्नति के सोपान का आरंभ होता है और जिस देश वा प्रान्त भाग मे हानि वा अवनति का हाट चमकता है तो प्रधान संघटक अवनति का यही कालातिक्रमण दोष आदि से अन्त तक साथ नहीं छोड़ता-सच पूछिये तो यह दोष एक प्रकार का आगमसूचक चिन्ह है जिस्से झटपट यह निश्चय हम निकाल लेते हैं कि अमुक जाति वा समुदाय मे जो उन्नति या तरक्की के लक्षण दृष्टि गोचर हुये हैं सो सच्चे हैं वा बनावटी—यह एक प्रकार की कसौटी है जिस्के द्वारा मनुष्य जाति के स्वाभाविक सुवर्ण की परीक्षा सहज मे होजाती है-यह दोष जिस प्रकार

अनुचित और निन्दित काम के प्रकरण मे लाभ दायक है वैसाही प्रत्येक शुभ और भले कामो मे हानि कारक और निन्दा का उत्पादक भी होता है यह कालातिक्रमण दोष अर्थ धर्म काम मोक्ष चारो वर्ग मे बाधक होता है इसी से नीतिकारों ने काल विभाग को अर्थात् समय को अपने सब कामो मे बराबर से बांट रहना बड़ा भारी गुण उन नरेशों के लिये ठहराय है जिनके यहां सदा कार्य की बाहुल्यता रहती है-कहा भी है—"धर्मार्थ कामाः सममेवसेव्याः यस्त्वेक सेव्यः सनरो जघन्यः,,-जिस राजा के राज काज मे समस्त कार्य काल विभाग से नहीं होते वहां राजधर्म सदैव खिन्न और मलिन रहता है—धर्म के प्रकरण मे भी कालातिक्रमण बड़ा दोष है सन्ध्योपासन के संबन्ध मे लिखा है-"सायं सन्ध्या मुपासीत नास्तगेनो दृगतेरवौ,, -शतं बिहाय भोक्तव्यं सहस्रं स्नान माचरेत्-लक्षं बिहाय दातव्यं कोटिं त्यक्त्वा हरिंभजेत्,,—इस श्लोक मे उत्तरोत्तर आवश्यक कार्य का बिवरण किया है- सौ काम छोड़ कर भोजन करना चाहिये और सहस्र काम छोड़ कर स्नान इत्यादि— नीति रत्न संग्रह मे लिखा है— "काले स्थानेच पात्रे च नहि वृत्तिं बिलोपयेत्—एतद् वृत्तिबिलोपेने राजा भवति गर्हितः,,—भरत जब चित्रकूट मे रामचन्द्र से मिलनेगये थे उस समय रघु कुल धुरीण श्री रामचन्द्र ने भरत से प्रश्न किया था कि— "कहो भरत सब नौकर चाकर तथा और भृत्यों को उनके परिश्रम का वेतन ठीक समय पर मिलता जाता है वा नहीं क्योंकि उक्त बात के न होने से अनेक उपद्रव उठखड़े होते हैं,,- भारतवर्ष के पण्डितों ने कालातिक्रमण दोष को सदैव से अनुचित और अहित ठहराया था और उसी के मूल पर पक्ष मास दिन के क्रम से नित्य नैमित्तिक कामो को बांध दिया हैं जिस्मे नियत समय के बिपरीत कोई काम न हो जैसा चौर कर्म वस्त्र धारण इत्यादि- उत्तरायण और दक्षिणायन के भेद से वर्ष के दो भाग कर दिये जिस्मे उपनयन मुंडन आदि उत्तरायण के बिहित कार्य दक्षिणायन मे नहीं— यह कौन नहीं जानता कि कालातिक्रमण होजाने से समय पर

बिना जोते बोये खेती नष्ट होजाती है समय से चारा पानी न पाने से हाथी घोड़ा गाय भैंस मैना तोता आदि मरजाते हैं समय पर औषधी न करने से रोग असाध्य हो जाता है समय पर उचित शिक्षा न पाने से लड़की लड़के मूर्ख होजाते हैं अमुक समय पर अमुक काम करेंगे अमुकको अमुक पदार्थ देंगे इन प्रतिज्ञाओं के पूर्ण न करने से मनुष्य मिथ्या वादी और भ्रष्ट प्रतिज्ञ प्रसिद्ध होकर अपनी सब साख और प्रतीति खो बैठता है इत्यादि जहां देखिये इस कालातिक्रमण दोष का निषेधही पण्डित लोग करतेगये हैं—चाणक्यने लिखा है "सिद्धमन्नं फलं पक्वं नारी प्रथम यौवनम्। कालक्षेपो न कर्तव्यो यथा लब्धं समाचरेत्"—इन सब बातों के होते भी हमारे देश के लोग इस दोष को नहीं छोड़ते विशेष कर हमारे नरेशों मे जिनको प्रातः सन्ध्या सांझ को होती है और सायं सन्ध्या अर्द्ध-रात्र को जिन्हें पूजा और सोने से छुट्टी नहीं मिलती उनसे क्या आशा की जासकती है कि अपने राज्य का कुछ अच्छा प्रबन्ध या देश का कुछ कल्याण करेंगे—इसी दोष के कारण निमंत्रित और निमंत्रक दोनो को कैसा कुछ क्लेश सहना पड़ता है कहीं पर भोज्य पदार्थ के संपन्न न होने से निमंत्रितों को और कहीं समय पर निमंत्रितों के न आने से निमंत्रकों को क्लेश होता है—सत्यनारायण की कथा मे तो लोग ऐसा ताड़ के चलते हैं कि ठीक नैवेद्य और पञ्चामृत बटने के समय पहुंचें जिस्मे एक पैसा जो पोथी पर चढ़ाना पड़ेगा वह भी बचजाय—यही दशा सभा और कमेटियों की है आवाहन पत्र या सूचना मे जो समय नियत रहता है बहुतथोड़े उस समय पर पहुंचते हैं प्रायः लोग यही अनुमान करलेते हैं कि सब लोग बिलम्बही मे आवेंगे मानो बिलंब मे आना एक स्वाभाविक धर्म होगया है—यहां के लोगों मे यह दोष इतना बढ़गया है कि इसके कारण बड़े दृढ़ नियम भी तितिर बितर होगये कचहरियों और अदालतों मे जिन राज सभासदों को ठीक दसबजे आना चाहिये वेप्रायः बिलम्ब कर

आते हैं परिणाम मे रात को लेम्प जला के मुकद्दमे सुनते हैं जहां उन्नति वाली देश के लोग भी यहां आकर कालातिक्रमण दोष को आदर देने लगे वहां के निजनिवासियों के स्वभाव से इस दीर्घसूत्रता दोष का दूर होना क्योंकर सहज हो सक्ता है इस्से निश्चय होता है इस गिरे हुये देशकी उन्नति और वृद्धि को अभी बहुत देर है—देश संस्कारकों को उचित है जहां बहुतसे कुसंस्कार के शोधन की और उन का लक्ष्य है वहां महाव्याधि समान इस दोष के दूर करने की प्रवृत्ति भी अपने लोगों मे दृढ़ करें—पशु पक्षी स्थावर जंगम जीवजन्तु सबी इस कालातिक्रमण को बचाते हुये समय के अनुकूल चेष्टा करते हैं जागना सोना चुगने को जाना घोसला बनाना अंडे देना आदि अपने काम नियमित समय से कभी इधर उधर नहीं करते—वृक्षों को देखिये अपने ठीक समय पर फूलते फलते पत्ते झाड़ते हैं इत्यादि प्राकृतिक धर्मों पर दृष्टि देने से अनुमान होता है जगदीश्वर को कालातिक्रमण अत्यन्त अप्रिय है—समय पर वेतन पाने वाले कैसे प्रसन्न रहते हैं और कहते हैं हमारा मालिक कैसा खरा देने वाला है और इसके विपरीत समय पर नपाने वाले अपने सेव्य प्रभू की निन्दा करते हैं—और काम की ओर से जी छिपाते हैं—यह गाथा साधारण समुदाय मे विख्यात है कि जिस समय लंकेश रावण का प्राण प्रयाण होरहाथा उस समय लक्ष्मण जीने उस्से जाकर राजनीति का सूत्र पूछाथा लंकेश ने पश्चत्ताप के साथ कहा कि पूर्ण नीतिशिक्षा का समय अवनरहा पर सिद्धान्त नीति उसने यही बतलाया कि कालातिक्रमण से बचना यावत् राजनीति का सारांश है—महा भारत मे श्री वेदव्यास जी ने लिखा है—"श्वः कार्यं मद्य कर्त्तव्यं पूर्वान्हे चापरान्हिकम्। नहि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य नवाकृतम्—„ जो कार्य कल्ह करना है उसे आज ही करना चाहिये और दूसरी जूनका कार्य दिन के पूर्व भाग मे भुगताना उचित है क्योंकि मृत्यु यह प्रतीक्षा नही करता कि कौन कार्य इसने किया है

कौन नहीं--सब है जिन्हें समय की कदर करना आता है उन्हें क्या नहीं आता। ऐसे लोग जन समाज मे आदर पाय दरिद्र को दूर बहाय सदा सुखी रहते हैं —बुद्धिमानो ने इस विषय पर अन्य के अन्य रंग डाले हैं इसलिये इसे अधिक पल्लवित करना केवल पिष्ट पेषण मात्र है हमारे पाठक जिन्हें सदा नये और टटके प्रस्ताव पढ़ने की टेंव पड़गई है ना कभी सिकोड़ यही कहेंगे आज इसने कहां का राड़ों का सा चर्खा ओटना आरंभ किया तो हमारे लिये यह पिष्ट पेषण ही मानो दीर्घसूत्रता दोष का सहकारी बन जायगा अतएव इस प्रस्ताव को यहीं पर पूरा करते हैं।

।रहिमन शतक।

अर्थात्

रहीम के सौदोहे कनौज निवासी बाबू श्याम सुन्दर वर्मा संपादित—हमे रहीम की गूढ़ और सरस उक्ति की बहुत दिनों से चाहथी आज वह हमारा मनोरथ बाबू—श्या—सुं—वर्मा के उद्योग से सफल हुआ जिसका हम उनको अनेक धन्या बाद देते हैं।

दोहा

यह रहीम सब संग लैउपजत नाहिनकोय।
रबि प्रीति अभ्यास यश होत होतही होत १

निजकर क्रिया रहीम कहि सुधि भावीके हाथ।
पांसे अपने हाथ मे दांव न अपने हाथ २

रूप कथा पद चारुपट कंचन दूवा लाल।
ज्यों२ निरखत सूक्ष्मगति मोल रहीम बिशाल३।

बडन कोऊ जो घट कहे नहि रहीम घट जाहिं।
गिरधर मुरली धर कहे कछु दुख पावत नाहिं ४

ज्यों रहीम सुख होत है बढ़े आपने गोत।

ज्यौं बड्डी अखियांन लखे अखियन को सुख होत ५
ससिको सुखद जो चांदनी सुन्दर सबै सुहात ।
लगी चोर चित जोलटी घटत रहीम निकात ६
ससि सकोच साहस सलिल साजैनेह रहीम ।
बढ़त२ बढ़जात है घटै न तिनिकी सीम ७
ये रहीम बुधि बड़न की घटि को डारत काढ़ ।
चन्द कूबरो दूबरो तऊनखत सों बाढ़ ८
बड़े दीन के दुख सुने होत दया उर आन ।
हरि हाथी सों कब हुती कहु रहीम पहचान ९
कहि रहीम नहिं लेत है रहो बिषय लिपटाय ।
घासचरै पशु आपतें गुर लोनाये खात १०
रहिमन राज सराहिये जो बिधु के बिधि होय ।
रबिको कहा सराहिये जो उगेतरैयां खोय ११
दुर दिन परे रहीम प्रभु दुर थल जैये भाग ।
जैसे जैयत घूर पर जब घर लागत आग १२
छमा बड़न कों उचित है ओछनको उतपात ।
कहु रहीम प्रभु का घट्यो जो भृगु मारीलात १३
जो गरीब सों हितकरैं धन रही वे लोग ।
कहा सुदामा बापुरो कृष्ण मिताई जोग १४
कुटिलन संग रहीम बसि साधुबचौती नाहिं ।
नैना ठैना करत हैं उरज मरोरे नाहिं १५
मनहि लगाय रहीमप्रभु करि देखहि जो कोय ।
नरको बस करिबो कहानारायण बसहोय १६
कमला यह न रहीम थिर सांच कहत सब कोय ।
पुरुष पुरातन को बधू क्यों न चंचला होय १७

रहिमन अंसुआबाहिरे बिथा जनावत येह ।
जाको घरसे काढ़िये क्योंन भेद कहिदेय १८
जाय समानो अब्धि मे गंग नाम भयो धीम ।
काकी महिमा ना घटी पर घर गये रहीम १९
बढ़त रहीम धनाढ्य धन धनै धनीको जात ।
घटै बढ़ै तिनको कहा भीख मांग जो खात २०
गुनते लेत रहीम कहि सलिल कूपते काढ़ ।
काहूको हिय होय गो कहा कूपते बाढ़ २१
रहिमन कहत जो पेट सों तून भयो किन पीठ ।
भूखे मान घटावही भरे डिगावे डीठ २२
मनसिज माली की उपज कहि रहीम नहि जाय ।
फलश्यामा के उरलगे फूलश्याम उर आय २३
जिन रहीम तन मन लियो कियो हिये मे भौन ।
तासों सुख दुख कहन की रही कथा अब कौन २४
धरनी कीसी रीति है शीत धूप घन मेह ।
तैसेही सब दुख सहे कह रहीम यह देह २५
नहि रहीम कछु रूपरंग नहिं मृगया अनुराग।
देशी स्वान जो बांधिये भनव भूमने लाग २६
आपु सदा बेकाम के शाखा दल फल फूल ।
रोकत जाय रहीम कह औरन के फल फूल २७
बड़े जो छोटन सों बधैं कह रहीम यह लेख ।
सहसन के हय बांधिये लै कौड़ी को मेख । २८
जो रहीम करबोहुतो ब्रज को यही हवाल ।
काहे को नख पर धरो गोबरधन गोपाल २९
खाक चढ़ावत सीस पर कहु रहीम केहि काज ।

जेहि रज रिख पतनी तरी सों ढूंढत गजराज ३०
जो रहीम भावीकहूं होती अपने हाथ ।
राम न जाते हिरन संग सीता रावन साथ ३१
हित अनहित सब कोइ कहे को सलाम की राम ।
हित रहीम तब जानिये जेहि दिन अटकै काम ३२
यारी छोड़ी यारने वे रहीम अब नाहिं ।
अब रहीम दर दर फिरैं मांग मधुकरी खाहिं ३३
जो रहीम गति दीपकी कुल कपूत की सोय ।
बारे उंजियारो करै बढ़ै अंधेरो होय ३४
जगत जाहौ किरन सों अथवति ताही कान्ति ।
त्यों रहीम दुख सुख सबै बढ़त एकही भांति ३५
"उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेतिच ।
संपत्तौच बिपत्तौच महता मे करूपता„ ।
जो रहीम छोटे बढ़ैं वढ़त करैं उत्पात ।
प्यादे से फरजी भया कि तिरछे तिरछे जात ३६
गति रहीम बड़ नरनकी ज्यों तुरंग व्योहार ।
दागदिवावत आपनी सही होत असवार ३७
त्यों रहीम तन हाट मे मनुआ गयो बिकाय ।
ज्यों जल मे काया परे छाया भीजत नाहिं ३८
संपत भरम गवांइके तहां वसे कुछ नाहिं ।
ज्यों रहीम ससि रहत है दिवस अकासै मांहिं ३९
संपत संपत मानको सबकोई सब देय ।
दीन बन्धु बिन दीन को को रहीम सुधलेय ४०
दीनहि सब कहं लखत है दीन लखत नहि कोय ।
जो रहीम दीनहि लखत दीन बन्धुसमहोय ४१

ये न रहीम सराहिये देन लेन की प्रीति ।
प्रानन वाजी राखिये हार होय की जीत ४२
हरि रहीम ऐसी करी ज्यों कामान सरपूर ।
खैंच आपनी ओर को डारिदियो पुनि दूर ४३
अब रहीम चुप करि रहो समझ दिनन को फेर ।
जब दिननीके आहि हैं बनत न लागी देर ।
दुर्दिन परे रहीम प्रभु सबै लेंय पहिचान ।
सोंचनहीं धन हानिको होत वड़ो हित हान ४५

सोरठा

रहिमन पुतरी श्याम मनहुं जलज मधुकरलसे ।
मानहु सालिकराम रूपे के अरघाधरे ४६

शेष—फिर

।न्याय सभा नाटक।

।पहले के आगे से।

।२-अङ्क २ गर्भाङ्क।

।बादशाह और फैज़ो एकान्त में बैठ हुये।

बाद-फै.जी मैंने बीरबल को भर पूर टटोला पर कहीं से उस्मे बगावत की कोई बात नपाया—हम नहीं चाहते हमारे दो सरदारों मे कशाकशी और लाग डांट रहे इस लिये उस्से मेल रखने को तुम अब माफी मांगो।

फैज़ी—(क्रोधसे) छिः क्या हम बीरबल ऐसे काफिर से माफी मागें गे—मैं हु.जूर की नौकरी से हाथ धोबैठूं गा पर यह मुझ से कभी नहोगा कि एक काफिर से माफी मांग दीन इसलाम मे दाग लगाऊं—मैं समझता था हु.जूर इनसाफ करैंगे और ऐसी बेअदबी करने वाले नमक हराम एक हिन्दू को मेरे सिपुर्द करैंगे ताकी उसको बदमाशी की मैं पूरी सज़ा देता मुझे यह कभी नहो खयालथा कि हु.जूर को कदम बोसी हासिल करने

से वह काफिर अब काफिर न रहा—हम लोग जो खास मुहम्मद चले उस इस्ला म के उम्मत मे हैं एक महज़ नाचीज़ काफिर से माफी मांगे—हजूर असल तो यह है कि आप ने इन हिन्दुओं को मुह चढ़ा कर सज़ीर कर रक्खा है।

बाद—खैर जो हो मैने तुम को भी इजाज़त दे रक्खा है कि ऐसी हालत मे जो मुनासिब वक्त हो सो करो—तुम दोनों मे आपस की फूटन देख हमारी तो अक्किल तंग आगई-फैज़ी कहां तुम्हारा खयाल है वह ज़मा ना अब न रहा जब कि मुसल्मान बादशाह हिन्दुओं को दबा कर अपना ज़ोर उन पर प्रगट करते थे अब बिना इन से मेल रक्खे इसलामी हुकूमत का इस मुल्क मे कायम रहना नामुमकिन है खैर अगले वक्त मे जो कुछ हुआ हो पर अब ये दोनो बातें एक साथ नहीं निभने की हैं कि इनसे मेल रहे और ये दबे भी रहें—मै अपने भरसक तुम्हें समझाता हूं अब देखूंगा कि अब तुम दोनो मे बैर की आग खूब भड़क उठी तब जो मुझे समझ पड़ेगा न्याव करूंगा।

फैजी—हुज़ूर कहां आप का खयाल है हिन्दू लोग टीड़ी दल के माफिक होते हैं जिनको हम लोग भून कर खाजाते हैं पर यह बात तो हिन्दुओं के साथ हमारा मुकाबिला पड़ने पर हुज़ूर को ज़ाहिर होगी तो अब फिद वी रुखसत होता है (बहुत झुक सलाम कर जाता है)।

बाद—खुदा वन्द करीम खैर करें—हमारी दो प्रजा हिन्दू और मुसल्मानो मे यह बुरा सामान ज़ाहिर होरहा है-खैर क्या हर्ज है दोनो की ताकत और इत्तिफाक की भर पूर परख इससे हो जायगी मुसल्मान लोग हिन्दुओं की भीड़ भाड़ देख आप ही दब जांयगे और इन के साथ फिर अन्याय करने की हिम्मत न बांधेंगे—हमभी अब मगरिब को नमाज़ का वखत आगया चलें (जाता है)

२गर्भांङ्क

स्थान

अछनेरा गांव का मैदान हर भजन सिंह बीर सिंह—डूगर सिंह—शेर सिंह आदि मुखिया बैठे हुये।

हरभ—भाइयो मैं जो कहता हूं उसे ध्यान दे कर सुनो इस समय मुसल्मानो को अपना बल देखा कर इस बात का निश्चय उन्हे करा देना चाहिये कि हम लोग आपस मे चाहो कितना हो विरोध रखते हों पर अपनी जाति के परम शत्रु मुसल्मानो से मुट भेड़ होजाने पर सब एक हो सक्ते हैं।

बीर सिंह—केवल इतनाही नहीं बरन यह भी उन्हें प्रगट हो जाना चाहिये कि हम लोग बहादुरी मे मुसल्मानो से किसी तरह कम नही हैं इस लिये इस जून हम सबों को एक दिल हो जाना चाहिये।

शेर सिंह— यदि ऐसे समय भी हमारा शरीर अपनी जाति और देश को भलाई के अर्थ न लगा तो हमारे जन्म को धिक्कार है—(क्रोध मे तलवार मियान के बाहर निकाल) जो आप लोगों की सलाह होतो यह तलवार खुद हज़रत—

हरभ—(हाथ से उसे दबा) हज़रत सलामत का इसमे कुछ दोष नही है यह सब बदमाशी उनके कामदारों की है हमने निश्चय कर लिया है हमारे बादशाह सलामत को यह कभी मंज़ूर नही है कि उनकी हिन्दू प्रजा पर अत्याचार हो।

शेरसिंह—भाई जो आप कहते हैं कभी होसकता है कि वे मुसलमानो को अन्याय से रोका चाहें और वे न रुकैं—यह भी हज़रत सालामत की एक युक्ति है कि हाथी के देखाने के दांत की भांति ऐसी बात प्रसिद्ध कर रक्खा हैं जिस्मे मूर्ख प्रजा न बहंक जाय भला आपही सोचये बादशाह को हम लोगों पर दया और न्याय करने की इच्छा हो और फिर भी अन्याय हो—मेरे तजर्बे मे तो यही आता है छोटा तुर्क छोटा कसाई वड़ा तुर्क बड़ा कसाई हमारे लिये सब एक से दुखदाई हैं "ऊधो काले सब ही बुरे„।

हरभ—नही यह तुम्हारा कहना ठीक नहीं है जब तक अपनी आंख से

नदेख लेते हजरत के निस्वत ऐसा खयाल मनमे लाना सर्वथा अनुचित था—अभी तक तो मैभी उन्हे ऐसाही समझता था पर उस दिन महाराजबीरबल से बात चीत होने पर मेरा वह खयाल जाता रहा ।

शेर सिंह—भाई हरभजन आप पुराने समय के सीधे सादे लोग हैं बीरबल की चिकनी चुपड़ी बातों मे फिसल गये आप निश्चय मानिये जब तक हम बकरीयों की तरह दबते जांय गे इलाज होती। रहें गी—इसलिये अब हम को भी शेरबन केरहना चाहिये ।

बीरसिंह—भाई यह नौजवान तो होनहार मालूम पड़ता है यह अभी लड़का है ऐसा समझ इस्के कहने को टरका न देना चहिये

डूंगर सिंह-भाई हाथ कंगन को आरसी क्या यदि बादशाह हमलोगों का न्याय भी वैसाही करैंगे जैसा मुसल्मानो का करते हैं तो सब ठीक है नहीं तो जैसा शेर सिंह कह रहा है हम अपनी तलवार के जोर से अपना न्याव करवा लेंगें ।

सब लोग- हां ठीक है।

हर-अच्छा तो आज रातको गांवके बूढ़े २ पुरनियाओं को इकट्ठा कर फिर इस्का विचार करलेना चाहिये और कहो तो बीरबल को भी बुला भेजूं।

शेर-मुझे सर्कारी नौकरों का पूरा विश्वास नहीं है कदाचित् हम लोगों का भेद लेने को बीरबल आमिले हों हम आपस मे न जानिये क्या गुप्त बात कहैं जिस्का भेद खुलजाना भला नहीं -मैं क्योंकर जान सक्ताहूं कि बीरबल सच्चे जी से हम लोगों की भलाई चाहते हैं या कि दिखानेही को सत्पुरुष बनते हैं ।

हरभजन-भीतर का हाल किसी का क्या मालूम पर जहां तक मैने तजरिबा किया मुझे बीरबल बहुत भले और हम लोगों के पूरे खैरखाह मालूम पड़े ।

शेर—यदि ऐसा है तो उन्हें बुलाना हीं चाहिये— अच्छा तो इस समय सबलोग अपने २ काम को जांय अब देर होगई आज रात को इसका फिर विचार कर जो उचित हो उसके लिये विलम्ब न होना चाहिये—

(सबगये)

अहिंसा परमो धर्मस्तथा हिंसा परोदम: ।

अहिंस परमं दान महिंसा परमं तप: ।

मांसाहारी लोग जिव्हा के स्वाद के अतिरिक्त मांस का खाना अत्यन्त पौष्टिक वीर्य वर्द्धक और अतिशय बल का बढ़ाने वाला भी मानते हैं कोई२ यहां तक बढ़कर बोलते हैं कि हिन्दू समाज मे मांसाहारी बहुत कम हैं इससे क्षीणबल होकर मांसाहारी अतिबलिष्ट मुसल्मान तथा अंगरेजों का सहस्रों वर्ष से लात खाते २ इस दशा को पहुंचे— उनका यह भी मत है कि मांसाहार मुकौवी और दिमाग को वड़ी ताकत बख्शता है इत्यादि— इसके उत्तर मे मेरा यही कथन है कि जिनको यह दुराग्रह है कि मांस भोजन सर्वथा गुणकारी है अतएव इसका भोजन अपरिहार्य हैतबतो लाचारी है किन्तु जो महात्मा विवेक और विचार वाली बुद्धिको काम मे लाना चाहते हैं उनसे कुछ कहना या उन्हे समझाना अलबत्ता मेरे बश की बात है— पहले तो यही सोचना चाहिये कि दूध घी आदि दूसरे २ बलकारी सुस्वादु आहार की अपेक्षा मांस दोही दिन मे सड़कर दुर्गन्धिपूरित होजाता है और दूध चिरकाल के उपरान्त सूख जाता है परन्तु दुर्गन्धि का लेश भी कभी उसमे नहीं आता तस्मात् दुर्गन्धि रूप मांस खाने वाले के शरीर मे दुर्गन्धि के परमाणु अवश्य अधिक होजाते हैं जो दुर्गन्धि मेलेरिया हैजा आदि अनेक भयङ्कर और प्राण घातक रोगों की पैदाकरने वाली होतीहै—अतर अथवा दूसरे सुगन्धि पदार्थों के क्रय विक्रय करने वालों को बीमारी कम होती है क्योंकि उनके अंग मे सुगन्धि के परमाणु अधिक

व्याप्त रहती हैं इन मांसाहारियों की कृपा से भारतवर्ष का देश का देश अनेक प्रकार की बीमारियों से प्रति वर्ष व्याकुल रहता है—यहां १५ करोड़ के लग भग मांसाहारी मनुष्य बसते हैं और १० करोड़ निरामिष भोजन वाले दूधाधारी या फलाहारी होंगे जो मांस देख कर घिनाते हैं केवल साग पात फल फूल अन्न आदि भोजन करते हैं—पर संपर्क जन्य अनेक प्रकार की व्याधि जब तब ऐसे प्रबल वेग से फैलती है कि उन १५ करोड़ मनुष्यों की कृपा से वे १० करोड़ मनुष्य भी भांति२ के रोग के चंगुल मे पड़ हजारों लाखों प्रति वर्ष काल के कलेवा होते हैं-इसका कारण यही है कि उन १५ करोड़ मांसाहारियों ने यहा के जल वायु को बिल्कुल दुर्गन्धि पूरित कर डाला अगले समय यहां के लोग अनेक सुगन्धित द्रव्य के साथ चन्दन की लकड़ी सींच२ मुर्दे जलाते थे जिसमें दुर्गन्धि से हवा न बिगड़ने पावे अबतो खाने ही को घी नहीं मिलता तो मुर्दा जलाने मे कहां से इतना घी आवे मुर्दे के साथ थोड़ा सा घी छोड़ केवल लीक मात्र अब तक पीटते जाते हैं दूसरे मुसल्मानी राज्य यहां होने से उन के मुर्दे पृथ्वी मे गड़ने लगे जिन की देखा देखी योगी गोसांई कनफटे आदि भी अपने मृतकों को पृथ्वी मे गाड़ने लगे जब अंगरेजों की दया इस देश पर हुई तो वे भी वैसा ही कर रहे हैं इन सबों की कृपा से हिन्दुस्तान की समस्त पृथ्वी गन्दी हो गई पृथ्वी के छिद्रों के द्वारा करोड़ो मुर्दों के गन्दे परमाणु निकल २ हवा के परमाणुओं में जा मिले और मनुष्यों के शरीर में जो रोम कूप हैं उन छिद्रों के द्वारा भीतर घुस अपना असर करने लगे मानों बीमारियों का सदाबर्त्त बटने लगा फिर तामसी भोजन मांसाहार के असर से लोगों की बुद्धि तमोगुणी हो गई सतोगुण कहीं नाम को भी न रह गया क्रूरता निठुराई लंपटता दंभ आदि अनेक दुर्गुण सब ओर से भारत भूमि मे छागये शीतला का उपद्रव पहले इस देश मे इतना नहीं होता था क्योंकि गर्भवती स्त्रियों

कोदुग्ध घृतआदि उत्तम भोजन अधिक मिलते थे जिस्के सुगन्धित परमाणु माता के शरीर में असर करते थे नौ महीने तक जो दुर्गन्धित लहू स्त्री के गर्भ में रुकता था उसे भी घृतादिक सुगन्धित भोजन परमाणु दबाये रहते थे जब से गर्भवती को दूध घी मक्खन मलाई का भोजन न मिलने लगा तो नौ महीने का वह दुर्गन्धि पूरित लहू इकट्ठा होकर परमाणुओं के द्वारा गर्भाशय में सन्तान के शरीर में प्रवेश करने लगा जो चमड़े को फोड़वालकों के शरीर के बाहर आकर विस्फोटक शीतला चेचक आदि अनेक नाम रूप से कहलाने लगे जिस्की असह्य वेदना से लाखों बालक बालिकायें प्रतिवर्ष यमराज की कराल डाढ़ में जा समाती हैं-वायु और सब तत्वके परमाणुओं को अपनी ओर खींच २ सब ओर फेंका करता है जल में लग कर जो हवा आती है वह ठंढो मालूम पड़ती है अग्नि का संसर्ग पाय जो हवा बहती है वह गरम होती है शीतल गुणजल का है उष्णता गुण अग्निका है ठंढा या गरम होना वायु का धर्म नहीं है और सुगन्धि दुर्गन्धि गुण पृथ्वी के हैं हवा के परमाणु उन को आकर्षण करते हैं-तोड़े हुये फूल थोड़ी देर बाद वज़न में कम हो जाते हैं इस्का कारण यही है कि उस्की बहुत सी सुगन्धि वायु के द्वारा खिंच कर फूल की तौल को कम कर देती है—गौ आदिक पशुओं के बध से दुर्गन्धि के परमाणु आकाश मे वायु के द्वारा आकर्षित हो सूर्य की किरणों से जो भाफ खिंचा करती है उसमें मिल जाते हैं वृष्टि होने पर वेही परमाणु फल फूल और अन्न आदि मे असर कर जाते है जिन के खाने से जो वीर्य बनता है वह अवश्य दूषित वीर्य होता है उस वीर्य से जो सन्तान जन्मे गी वह क्यों न अनेक दोष दूषित रोगी अल्पायु सन्तति होगी—स्वाद भी मांस में घृत और मसाले ही का है—बल घृत और दुग्ध से होता है यदि मांसही खाने से बल होता है तो लोमड़ी या सियार बाघ को क्यों नहीं फाड़ डालते—रामचन्द्र अन्न आहार करते थे पर अति मांसाहारी रावण के भाई कुंभकरण का सत्यानाश कर

हाला हनुमान केवल फल फूल खाते थे उन्होंने मांसाहारी रावण की डाढ़ी जलादी भगवान् कृष्णचन्द्र माखन मलाई खाते थे पर मांसाहारी कंस आदि कितने दैत्यों को मार गिराया—यदि मांस ही खाने से और हड्डी ही चिचोर ने से दिमाग में कूवत आती है तो कुतिया भी क्यों नहीं बी०ए०-एम० ए—पास कर लेती किन्तु बुद्धि और बल केवल घी दूध मक्खन मलाई के खाने से बढ़ता है—ईश्वर ने जल और पृथ्वी के संसर्ग से उत्पन्न अन्नादिक ही मनुष्य के भोजन के लिये बनाये हैं रज वीर्य का विकार गो आदि पशुओं की मांस नहीं काली को जो बकरे आदि का बलिप्रदान दिया जाता है वह भी निर्दई मनुष्यों की लीला है देवी जगत् माता कहलाती हैं तब बकरे आदि अपने पुत्रों के बलिप्रदान से क्यों कर प्रसन्न होंगी बेद में जीव मात्र पर दया करना लिखा है—"नहिंस्यात् सर्वभूतानि„ इस लिये जो मांस खाने का उपदेश देता है वह महा पापी है जिस पुस्तक में मांस खाना लिखा हो वह पुस्तक भी किसी पापी कीबनाई है भेद इतना ही है कि ब्राह्मण की बस्ती में यदि कोई शूद्र जा बसे तो संपूर्ण ब्राह्मणशूद्र नहीं होजाते ऐसाही धर्मात्मा पुरुषों की बनाई हुई पुस्तकों मे मांसाहारियों ने अपने प्रयोजन के वचन ठौर २ लिख मारे हैं - मांस खाने ही से रावण सरीखे नीतिज्ञपुरुष राक्षस कहलाये और मांसाहार से परहेज रखने के कारण मातङ्ग श्याम आदि ऋषि की पदवी के अधिकारी हुये —बवासीर कुष्ठ आदि अनेक महारोग मांस खाने से बहुत जल्द पैदा होजाते हैं इससे हम अपने आर्य मुसलमान और इसाई भाइयों से प्रार्थना पूर्वक निबेदन करते हैं आप मांस भोजन से मुह मोड़ घृत दुग्ध आदि बलवीर्य वर्द्धक भोजन मे रुचि करो और घी दुध देने वाली गौ माता की रक्षा करो इससे आप का यह लोक पर लोक दोनो सुधर सक्ता है और अनन्त कल्याण की प्राप्ति सुलभ हो सक्ती है किम धिकं बिचार परायणेषु —गौरक्षा का उपदेशक स्वामी आला रामसंन्यासी

। रसना ।

जीभ

सा—सु—नि—से

धन्य है उस सूघड़ नटनागर की चतुराई को जिसने यह पञ्च भूतात्मक जीवाधारशरीरके रोमरोममेंऐसीनिज चतुराई दर्साई कि जिसके वर्णन से भारती भी हारती हो चली आई। इसदेह के एक २ अङ्गकी सूघड़ताई कीबड़ाई में गुनिजनोंकी लेखनी धाई वहां हो सकुचाई पूर्ण बड़ाई किसी ने भी नपायपाई तथापि हिये की उमगाढ़ कल्पना कल्लोलनी के धार के पार जानेका सा हस सभी करते चले आते हैं अस्तु उसी रसमें बहता मैंभी इस की कल्पना में आपड़ा: अहा! यह दो उङ्गलका मासका लोथड़ा अपने गरिमा की गरुआई में निज नाम "रस—ना,, धर दरसाता है कि सिवाय मेरे इस स्थूल शरीर के किसी अङ्गमें रस नहीं है जो कुछ है सो मुझी में है। सच्च भी यों ही है कि जगमें जो कुछ सार है उन सभों का यही आधार है। और स्रष्टाने इसे निज सृष्टिका मूलाधार मान मुखरूपी मंजूषामें स्थापित कर बिकट बत्तीस योधाओं के पहरेमें धरा है। जो यह रसना न होती तो जगमें षट् रसको कौन जानता? बड़े बड़े सूप शास्त्रज्ञों की चतुराई और सुघड़ताई को कौन पूछता? षट् शास्त्र बिचारे पछाडें खाते और बेबिचारे रह जाते सिरजन हारे के गुण मनही मन में गुनगुनाते। सङ्गीत बेचारी तो अजन्मा ही रह जाती। अनङ्गके रङ्ग की

तरङ्गो में लहराती निज प्राणाधार प्रेम पात्र को न सुना पाती। भलाई और बुराई छुटाई और बड़ाई लड़ाई और मिलाई सब है इसी रसनाहीकी सुघड़ाई। कुरूपा कोयलकी कूक पपीहेकी पुकार बुलबुल सामा आदि पक्षियों की मनमुग्धकारी बोली की हेतु उनके दुलारका आधार यही रसना ही है। मूरखताई और पण्डिताई की यही है गवाही सब चतुराई इसीमें है समाई क्योंकि "एक बोलबो न सीखो तो सभी गयो धूरमें," "वाणी रसवती यस्य सफलं तस्य जीवनं," 'ज़बां शीरीं मुलुक गीरीं,' इत्यादि नीति इसी रसनाही के हेतु हैं। इसी रसनाही के प्रताप से व्याधको अधम योनि पाकर भी आदि कवि बालमीक ऋषिपुङ्गव हुए। यही रसनाहीका प्रताप है कि सुआ पढ़ाय गनिका तरी, अजामिल तरा। कहां तक गिनाऊं इसकी महिमा अपार है परन्तु न जाने आज दिन हमारे समाज में इस रसनाको रस + ना क्यों कर कह रक्खा है? अरे भाइयो शास्त्रके अर्थ फेरनेमें चतुराई और पण्डिताई है परन्तु इस कोमल रसकी थैली अनुराग रागकी रङ्गी रसनाको जो कहती है कि मेरे सिवाय किसी में रसही नहीं है आप कटु उक्तियों से लिखने कहनेके अभ्यास में पड़ क्यों इसके अर्थको फेरते हैं कि इसीमें रस नहीं हैं। मेरी बिनती यह है कि सब लोग परस्पर में मधुर भाषण करें और यहनिश्चय रक्खें कि जगमें "रसना जो है इसीमें रस हैं अन्यत्र नहीं", इस लिये अपनी अपनी रसनाको रस भरी करें। कार्तिक प्रसाद

पोलिटिकल एज्युकेशन

(राज नीति शिक्षा)

हमारी नेशनल कानग्रेस(जातीय महासभा) आज दिन जिस बात का उद्योग कर रही है वह यही है कि जहां हमारे देशी बान्धवों को हर तरह की शिक्षा मिल रही है वहां उन को पोलिटिकल एज्युकेशन भी मिलना चाहिये—सैयद सरीखे दो एक प्रतिपक्षी कहते हैं इसको हमे आवश्यकता क्या है कि देश का देश राज्य प्रबन्ध और उसके गूढ़ मर्म को जानने लगे केवल उन्ही लोगों को इसका जानना उचित है जो राज काजमें नियत हैं—हमारे शासन कर्ता अंगरेज् लोग इसविद्या मे पूर्ण अभ्यास प्राप्त किये हुये हैं इस लिये इसका सब बोझ उन्ही पर छोड़ उनके प्रबन्ध मे सुख चैन से अपना दिन काटिये पागुर करते बैठे रहिये और जो बिना किये आपसे रहाही नहीं जाता तो जो जिस काम मे लगे हो उसी मे तरक्कीकरो इस बात की चेष्टा करना कि हम भी उन बातों को जानें और समझें और समझ कर उनके कामों में रोक टोक करैं कि वे ऐसा क्यों करते हैं ऐसा क्यों नहीं करते यह सब किसी तरह दुरुस्त नहीं है —सीखी बुद्धि उपराजो माया कभी चली है—कहा भी है "राजा करै सो न्याव पांसा पडै सोदांव, जैसा कोई रोग ग्रस्त हो तो उसको यही उचित है कि रोगदूर करने की विद्या जो जानते हैं उनके पास जाकर दवा लावे और जैसा वह कहै वैसा करै तो बहुत जल्द चंगा होजायगा परन्तु जो प्रत्येक मनुष्य चिकित्सक और वैद्य बन बैठेंगे तो संसार के और सब काम कौन करेगा इसी लिये जुदे २ आदमियों के जुदे २ कामरक्खे गये हैं कि प्रत्येक मनुष्य अपना २ काम करैं और जब दूसरे कामो की आवश्यकता होतो जो जिस काम का करने वाला है उससे उस काम मे सहायता लेकर अपना काम निकालैं —परन्तु-

जो उसकाम मे पूर्ण कुशल हैं उनसे सहायता न लेकर आपही उस काम के करने को दौड़ेंगे तो नकेवल उस कामही को बिगाड़ देंगे किन्तु उनका बहुमूल्य समय भी व्यर्थ नष्ट होगा—हांमाना हमने कि हर एक मनुष्य को अपना २ काम करना उचित है किन्तु इसके संग यह भी तो चाहिये कि हम अपनी दुसरी २ आवश्यकता को इतना तो समझैं कि उस दूसरे मनुष्य से हमारी आवश्यकता पूरी होती है या उसमे कसर रहजाती है और कसर रहजाती है तो क्यों —जब वैद्यके पास रोगी जाता है तो जितनी अच्छी रीति से वह अपने रोग को कही सकेगा उतनी ही सुगमता वैद्य को उसका रोग दूर करने मे होगी —हम जितनाही अधिक देश प्रबन्ध के मर्म मे जानकारी रक्खेंगे उतनाही उत्तम रीतसे अपने प्रबन्ध कर्ता से उसके सुधराइट के लिये निवेदन कर सकेंगे और जहां कहीं उन्हे भ्रम होगा या औरका और समझे होंगी वह सब भूल चूक उनकी दूर हो जायगी गवर्नमेंट के बहुत से ऐसे डिपार्ट मेंट हैं जिनका अंजाम हम बाखूबी कर सक्ते हैं तब इसके क्या माने कि आप ऐसी २ बातों को मनमेभी नलाइये आनरेरी मेजिसटरेटी का काम हम लोग अच्छी तरह करलेते हैं तब कलट्टरी क्यों नकर सकेंगे यह कहना कि आप उसका इरादा भीन कीजिये क्योंकर संभव है संपूर्ण देशका देश इन बातों का जानने वला तोनकभी हुआ है नहो गा आप की विलाय त मे १०० आदमी ऐसी योगयता के होंगे तो हमारे यहां ५ ऐसे निकलेंगे पर उन ५ के लिये भीतो राह खोलिये आपतो कहते हैं हाथ पर हाथ रक्खो तुम चुप चाप बैठे ही रहो द्वार खुलजाने के लिये मत खटखटा ओ अंगरेजी की उत्तम शिक्षा प्राप्त करने से पोलिटिकल एज्युकेशन मे योगयता प्राप्त करने की इच्छा स्वाभाविक है जब हमने अपने तथा दूसरे २ देशों के पुराने इतिहासों को भली भांत पढ़ा और सोचा कि किस का रण से क्या बुराई देश मे वह मूल होगई और अब वह क्यों कर दूर हो

सक्ती है जिन २ बातों में उन २ देश के लोग कमजोर थे उन को दूर कर उन्नति के शिखर पर एक बारगी चढ़ स्वाधीन होगये इत्यादि बातों को सोच हम भी वैसाही क्यों न होजांय इसका अंकुर मन मे जम जाना तो अत्यन्त प्राकृतिक Natural है और वह अंकुर मन मे जम जाने पर फिर यह पोलिटिकल एजुकेशन केवल Theoritical खयाली पोलाव रहे सो नहीं होसक्ता वैसाकरके देखाने की अवश्य इच्छा होतीहै—श्रीमान् लार्ड रिपन इसकी असलीयत को खूब समझ कर आत्मशासन प्रणाली का प्रचार हम लोगों मे कर गये परन्तु वह भी जैसा श्रीमान् लार्ड रिपन महोदय ने चाहाथा उस उमदगी को न पहुंच अनुदार अधिकारियों का इस ओर दत्तचित्त नहोंना ही इसका कारण है अब इस समय नेशनल कानग्रेस का बड़ा भारी आन्दोलन इस बात की साची है कि देश का देश एक छोर से दूसरे तक मुलकी इन्तिज़ाम की तालीम पाने को मुस्तैद हो रहाहै हमारे अधिकारियों का इसमे बाधक होना ब्रिटिश गवर्नमेंट की ओर अश्रद्धा और अविश्वास पैदा करता जाता है जिसका भावी परिणाम अच्छा नहीं जान पड़ता किन्तु हमारे से अल्पज्ञ की बात पर कौन कान देता है और बिना कहे भी नहीं रहाजाता इस दुबिधा मे पड़ हमारी लेखिनी पाठकों के परामर्श की प्रतीक्षा मे यहां ठहरजानाही उचित मानती है ।

।निष्कारण उदारता ।

हम दिल्ली निवासी पं॰ जागन्नाथ प्रसाद भारतीय को अनेक २ धन्यवाद देते हैं जिन्होने अपने अकृत्रिम सौहार्द और उदार भाव से ऐसे संकीर्ण समय मे हमारे सहायार्थ ५) दानदिया हिन्दी के ऐसे एकान्त रसिक के लिये ईश्वर से निरन्तर अभ्युदय प्रार्थनाही इस उपकार का प्रत्युपकार है—किमधिकम् —

हिन्दीप्रदीप ।

मासिक पच ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंदभरे ॥
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप समथिर नहिंटरे ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरे ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरे ॥

---

१ जून सन् १८८८ ई० } { जिल्द ११ संख्या १०

इलाहाबाद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
मालिक ला० गोपालदीन के प्रबन्ध से
देशोपकारक यंत्रालय में प्रकाशित
किया गया
कंचेकिमंडी

मूल्य अग्रिम ३।≶) पीछे देने से ४।≶)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १॥≶)

॥हिन्दी प्रदीप॥

जिल्द ११ संख्या ९ 10 } { जून सन् १८८८ ई०

। त्रिदेव कल्पना ।

हमारे देश के एक प्राचीन पंडित जो कुछ दिन पूर्व इस असार संसार से अन्तर्ध्यान होगये एक अद्भुत युक्ति से त्रिदेव कल्पना करते थे उनका कथन जहांतक हमे स्मरण है वह अपने रसिक पाठकों के अवलोकनार्थ यहां प्रकाश करते हैं— उक्त पंडित जी का कथन था कि ब्रह्मा विष्णु रुद्र ये तीनो देवता सदैव संसार में प्रत्यक्ष रहते हैं मनुष्यों के नित्य नैमित्तिक बर्ताव और व्योहार मे काम आती हैं और उन्हो की दया दृष्टि से मानुषी सृष्टि का निर्वाह होता है—वे कहते थे कि मर्यादा परिपाटी स्थापक जाति आदि के विभाग कारी प्रथम देव ब्रह्मा हैं और सबके प्रतिपालक सत्व गुणाधिकारी राजा प्रजा के मित्र विष्णु हैं और तेजस्वियों मे सब से बड़े सब के राजा और संहारकारी सकलशक्ति संपन्न भगवान् रुद्र हैं— उक्त पंडित जी कपास को ब्रह्मा बतलाते थे कि इसके चारो ढेर जिस्से रुई निकलती है ब्रह्मा के चारो मुख हैं उसी रुई से तीनो गुण अर्थात् तागे निकलते हैं श्वेत तागा सत्व गुण है लालरंग मे रंग जाने से रजोगुण और काले रंग से तमो गुण के तागे होते हैं ब्रह्मा सृष्टि की मर्या

दा के नियामक हैं जिनहे कुछ भी मानुषी ज्ञान प्राप्त हुआ है वे कपड़ा पहनने लगे हैं बन मानुषों मे अभी तक नग्नता देखी जाती है— ब्रह्मा का नाम पितामह (बाबा पुरखा पुरनिया) इसी लिये है कि वे अपने बाल बच्चों को वस्त्र से ढांपे रहते हैं सब लोगों मे यह गाथा प्रसिद्ध है कि मनुष्य जाति को ब्रह्मा ने पृथक२ वर्ण और जाति मे विभक्त किया है सो यह बात कपासही के गुण अर्थात् तागों मे है कि उस्से सब प्रकार के कपड़े बनते है जिनके पहनने से पृथक्२ वर्ण और समुदाय की पहचान होती है जिस्के गले मे यज्ञसूत्र (जनेऊ) डाल दो लम्बी ढीली ढाली बनारसी धोती पहना दो वह उसी समय चाहो जो हो ब्राह्मणही प्रतीत होगा ऐसेही बीर पुरुषों कीसी कछनी और टेढ़ी बांकी पगड़ी आदि से सजे बजे लोग चाहो जो हों क्षत्री प्रतीत होते हैं—इसी प्रकार अपने २ अनुकूल वस्त्र के आच्छादन से वैश्य शूद्र तथा इतर देश देशान्तरवासी विलायती लोग प्रतीत होते हैं यहां तक कि एक अच्छे कुलीन आचार संपन्न यम नियम व्रतधारी द्विजाति कोभी कोट पतलून पहना अंगरेजी टोपी सिरपर रखदो तुरन्त अंगरेजी बाजा वाला तंबूर्ची या मटिया फूस साहेब जचने लगे गा जैसा कि नाटकों के अभिनय मे वस्त्रादि के परिवर्तन से अनेक स्वांग दिखलाये जाते हैं- उक्त पंडित जी विष्णु भगवान् अन्न को कहते थे और यह प्रमाण देते थे "अन्न ब्रह्ममयो विष्णुर्भोक्ता देवो महेश्वरः,,- और यह ध्यान पढ़ते थे

"शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्। लक्ष्मी कान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्,,—

भगवान् अन्न का आकार शान्त है क्योंकि जब भूख से पेट खांबर करने लगता है उस समय अन्न के पेट मे जातेही अद्भुत शान्ति और

प्रसन्नता प्राप्त होती है—"भुजग शयनं„ अन्न देव खेत और खत्तो में सर्प के समान वर्षों और महीनों तक पड़े २ शयन करते हैं जब तक दुर्भिक्ष मचाने वाले बनिये उन्हे न जगावें—पद्मनाभं—अर्थात् कोटहान कोट है नाभि मध्यभाग जिसका—"सुरेश „ देवताओं के स्वामी है—"विश्वाधारं„ अन्नही के आधार से संसारथंबा हुआ है—"गगनसदृशं„ शून्य है तुलना जिस्की अर्थात् जगत मे इनके समान कोई नहींहै—"मेघवर्ण शुभाङ्गं„ अर्थात् मेघ के समान नीला और अच्छा रंग होता है जिनके पेड़ और पत्तों का—लक्ष्मी अर्थात् शोभाके कान्त हैं बिना अन्न पेट मे गये भांत२ की बनावट सजावट सब फीकी मालूम पड़ती है- कमल नाम जल काभी है सोई है नेत्र जिनका बड़े २ योगियों का भी ध्यान अन्न की ओर रहता है ऐसे विष्णु "व्यापक„ अन्न भगवान् सब के भय को मिटाते हैं और सर्व लोक अर्थात् हिन्दुस्तान इङ्गलिस्तान अमेरिका आदि देशों के एकही नाथ प्रभु हैं जिस देश मे एक सालभी अन्न नहीं होता वहां की प्रजा अनाथ के भांत बिललाती फिरती है और जब कभी प्रजा पीड़ा होती है तो यही अन्न भगवान् उसे निवृत्त करते हैं इसी से जयदेव कविने अपनी गीत गोविन्द मे अन्न रूप भगवान् विष्णु की बड़ी प्रशंसा लिखी है—

"वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोल मुद्बिभ्रते दैत्यं तारयते बलिं छलयते चवक्षयं कुर्वते। पौलस्त्यान् जयते हलं कलयते कारुण्य मातन्वते म्लेच्छान्मूर्छयते दशाकृति कृते कृष्णायतुभ्यं नमः„।

बड़े भयानक समयों मे ऋषियों को उंछवृत्ति के द्वारा भगवान् अन्न प्राप्त हो उनकी सहायता से वेदों का उद्धार करते हैं—जिस देश मे अन्न देव दृढ़ रूप से रहते हैं उस देशको दुर्भिक्ष की आपत्ति से ऐसा बचाते हैं जैसा कच्छप अपने अधो भाग मे स्थित जल जन्तुओं को बचाता है पूर्व काल मे अन्न भगवान् ने इस प्रकार की कच्छपी वृत्ति से

१८८

प्रजा को बचाया था इसी से कूर्मावतार की समता अन्न मे आती है—जब कोई राजा "हिरण्य „ सोने का लालची हो अन्न देव की भक्ति से विमुख हो केवल हिरण्य "सोने,, ही पर दृष्टि रखता है प्रजा का कल्याण कारी अन्न की वृद्धि मे विघातक होता है उसका नाम हिरण्याक्ष होता है अर्थात् "हिरण्य, केवल सोने पर अचि-दृष्टि रखने वाला उस समय अन्न देव बाराह के समान उक्त लालची राजा पर चोटकरती हैं और पृथ्वी को उबार लेते हैं—दूसरे हिरण्य "कशिपु,, तकिया या सहारा को कहते हैं अर्थात् जो राजा प्रजा के सुख दुख की सहानुभूति न रख टेक्स पर टैक्स लगा कर केवल सोनाही बटोरने के लिये राज्य करती हैं उनको नरसिंह अर्थात् सभ्यता और हिंसकता दोनो गुण युक्त हो कर अपनी अन्नाश्रिता प्रजा रुपी प्रल्हाद की रक्षा करती हैं-"बलिं छलयति,, जब किसी राजा का बलि अर्थात् राज प्राप्य भाग अत्यन्त बढ़कर सकल सृष्टि के भाग को अपने पेट मे डाल कर स्वयं शतक्रतु बना चाहता है उस समय अन्न देव अप्रसन्न होउपेन्द्र बामन की पदवी को धारण कर उस उपद्रवी राजा को छलती हैं अपना अंग संकुचित कर मंहगी और काल के द्वारा प्रजा से प्राप्य राज कर मे हानि डाल देती हैं—"क्षत्रक्षयं कुर्म ति„ जब राज पक्ष से अन्न भगवान् की कृषि पद्धतिछिन्न भिन्न हो जाती है उत्तम २ गेहूं आदि सुस्वादु अन्न राज पक्ष मे खिच जाता है प्रजा निर्बल और अस्त्रशस्त्र हीन कर दीजाती है चोर उचक्के अथवा हिंसक जंगली जन्तुओं से सताई जाती है उस समय अन्न देव परशुराम का विग्रह धारण करते हैं- "पौलस्त्यं जयति„-जब कोई क्रोधी कामी राजा रावण अर्थात् प्रजा का रुलानेवाला बनता है और सीता अर्थात् खेती की लाङ्गल पद्धति या हल रेखा को अफीम और नील आदि की खेती से स्ववश या कैद मे डाल कृषिको कर्षित और कृश (दुर्बल) कर देता है उस समय अन्न भगवान् सीता अर्थात् कृषि पद्धतिकी मुक्ति के लिये रावण (रुलाने वाले) राजा और उसके साथ कृषि साहित्य विनाशियों को दंड दे फल मूल भोजियों की सहायता से अपनी कृषि पद्धति रेखा को

स्वतंत्र कर संपूर्ण प्रजा के चित्त मे रमजाती हैं उस अवस्था मे अन्न देव का नाम राम होता है–हल द्वारा कृषि का सब कार्य होता है तब हलोबल देव जी अन्न को कहनाही उचित है—अन्न भगवान् अपनी रचा से सृष्टि की पूर्ण रचा समझ दया का बिस्तार करते हैं और जीव हिंसा कोरोकते हैं उस समय बुद्धि के अनुकूल काम करने से बौद्ध कहलाते हैं पर जब उनका कहा कोई नही मानता और अन्न बिष्णु की लक्ष्मी मानुषी सृष्टि की परम उपकारिणी गौओं का संहार अधिक बढ़जाता है तब अन्न देव गुप्त होजाते हैं देवी शक्ति से समुत्पन्न चुधा रूपा बिकराल तलवार समस्त गोभक्षियों का संहार कर देती है तब अन्न देव का नाम कल्की पड़ता है ऐसे दशावतारी कृष्ण के लिये नमस्कार है— अब रजत रूद्र भगवान् का वर्णन सुनिये जो जगत् के राजा हैं जिनकी प्यारी शक्ति का नाम सुवर्ण है रजत रुद्र और अन्न बिष्णु से बड़ी मैत्री है "माधवो माधवा धोशौ परस्पर हितैषिणौ„ रजत रूद्रोपासकों के वर अन्न विष्णु और अन्न बिष्णूपासकों के यहां रजत रुद्र निवास करते हैं जिनके ध्यान का यह श्लोक है--

"शुक्लाम्बर धरं बिष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजं ।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत्सर्व बिघ्नो पशान्तये„—

सफ़ेदी रूपीवस्त्र को धारण किये बिष्णु अर्थात् सब जगह व्यापक पूर्णमासी के चन्द्रमा समान गोल२ और चतुर लोग जिन्हे काममे लासक्ते हैं जिनकी प्राप्ति से मुख प्रसन्न हो जाता है जिनके प्रभाव से सब बिघ्न दूर होजाते हैं ऐसे रुप चन्द्र का मै ध्यान करताहूं— जब रुद्र भगवान् वृषभ पर चढ़ कर चलते हैं तो उनके साथ२ अनेक रुद्र के गण श्यामललित बस्त्र पहने हुये दुर्गा "तलवार, ज्वालामुखी "तुपक„ महा काली "तोप„ उनकी रचा करती रहती है जब रुद्र भगवान् का बिराट रूप बहुत बढ़जाता है तोउनके उपासकों का प्रेम रुद्र की प्रधान शक्ति सुबर्ण मे खिंच जाता है "शैवास्शाक्तो बिशिष्यते„ उसी प्रधान शक्ति सुबर्ण की खींचा खींची ने बिलायत मे एक्सचेंज बट्टा बढ़जाने से भारत बर्ष के व्योपारियों का रुद्र देव संहार करते जाते

हैं—ताम्रखंड डबल पैसा आदि छोटे२ रुद्र गण हैं और कौड़ियों का ढेर भूत प्रेत पिशाचों का दल है- जो सदा रुद्र महाराज के पीछे लगे रहती हैं विष्णु अन्न को बदल कर रुद्र रजत और रजत रुद्र को बदल कर अन्न विष्णु मिलसक्ते हैं इसीसे इनदोनो की उपासना मिली झुली पाईजा ती है लिखा भी है शिवस्यहृदयं विष्णु र्विष्णोश्च हृदयं शिवः,, अन्तर केवल इतनाही है कि रुद्र तमो गुणी पंच बक्त्र हैं उनके उपासक तामसी प्रबल और अभिमानी होते हैं और विष्णु अन्न के उपासक खेतिहर हैं वे बेचारे शान्त शील दबे दबाये पड़े रहते हैं विषमनेत्री रुद्र गणों के द्वारा उन पर अब अधिक अन्याय होने लगा है ऐसे समय मे अब अन्न विष्णु अपने बिराट वैभव को घटाते जाते हैं जो पहले अन्न का भाव था उसका आधा भी अब नहीं है यह लक्षण प्रजा के बड़े अभाग्य का है क्यों कि मनुष्य मात्र का जीवन अन्न के आधीन और अन्न की वृद्धि धेनु रुपा महालक्ष्मी के आधीन है जैसा मंत्र भी है—

"यालक्ष्मी सर्व भूतेषु लोकपालेषु संस्थिता
धेनु रुपेण सा लक्ष्मी ममपापं व्यपोहतु ,,

इस मे कुछ सन्देह नहीं कि धेनुरुपा लक्ष्मी के हीन दीन होने के कारण अन्न भगवान् जब सर्वथा अन्तर्ध्यान होजांयगे तो रजत रुपी रुद्र और सुबर्ण रुद्र शक्ति के उपासकों को भी बड़ी हानि होगी क्यों कि रुद्र भगवान् विष्णु भगवान की सहायता और हृदय स्थ होने के विना प्राण रक्षा की सामर्थ्य किसी को नही है इस लिये रुद्र गणों को उचित है कि अन्न भगवान् और धेनुरुपा लक्ष्मी की पीड़ा पर विशेष ध्यान देकर जगत के कल्यान का उपाय सोचैं अभी सवेरा है "अन्न मूलं बलं पुंसां,,

प्राप्त

। मध्यस्थता ।

भले लोगों की परंपरा से यह रीति चली आई है कि जब

देखते हैं कि दो अपने मित्र किसी कारण से किसी प्रकार की लड़ाई कर रहे हैं और उस लड़ाई से उन्ही दो वीरों की हानि नहीं किन्तु उनके इष्ट मित्रों को भी परिताप पहुंचता है विशेष कर ऐसी लड़ाई मे जिस्के कारण बहुत से श्रेयस्कर और भलाई के कामों मे कुछ उत्तम निर्णय और सिद्धान्त निकलने के पलटे बुरे भले ग्राह्य अग्राह्य अव्यवहारार्ह शब्दों का प्रयोग होने लगे और होते २ "अद्ययुद्धं मया त्वया,, की नौबत पहुंच जायतो ऐसे वर्द्धिष्यमाण पावक मे शान्तिका जल क्यों न छिड़का जाय--यद्यपि मध्यस्थ होना बड़े योग्य और महान् पुरुषों का काम है पर जिस अवस्था मे महज्जन युद्धकुतूहली बन बशिष्ठ और विश्वामित्र के समान लड़ रहे हैं तो फिर क्या कियाजाय यावत् वद्धिवलोदय मनुष्यमात्र को सत्कर्म मे प्रवृत्ति और अनिष्ट कर्म के बारण का अधिकार है—कुछ दिनो से हमारे दो प्रियतर मित्रों के बीच खड़ी बोली की कविता का शास्त्रार्थ समर उपस्थित हुआ है जिस्मे एक पक्ष ब्रज भाषा ही की परंपरा से कविता की उपयोगी ठहराता है दूसरा इस्के विरुद्ध यह उद्यम कर रहा है कि ऐसी खड़ी बोली से कविता कीजाय कि शब्दों के रूप संस्कृत के समान यथा स्थित रहें—इस वाग् युद्ध यज्ञ के दीक्षित एक ओर हमारे प्राण प्रिय मित्र कानपुर निवासी ईश्वरावलम्बित प्रेमेष्ट परायण ब्राम्हण के संपादक पंण्डित प्रताप नारायण मिश्र हैं दूसरे हमारे सुहृद्वरनेत्रानन्द वर्द्धक सुशीलता सौजन्य आदि गुण के आकर पंण्डित श्रीधर पाठक हैं जिनको खड़ी हिन्दी की कविता विशेष प्रिय है— मेरे मध्यस्थ होने का प्रथम हेतु यह है कि मै दोनो कवि वरों का कृपा पात्र और दोनों की उक्ति युक्ति और

लेखचातुरी का श्रद्धालू श्रोता हूं और यह चाहता हूं कि जितने प्रकार की भाषा अर्थात् सूरसेनी मागधी अभीरी कैवर्तकी पिशाची आदि हैं उन्से ऐसे पदार्थ भरे जांय कि उसे "शृरावन्ति गायन्ति गृणान्ति माधवः„ और उस्से हमारे देश जाति और धर्म कर्म्म का उपकार हो भाषा चाहो खड़ी हो दौड़ती हो निहुरी हो बैठी हो पौंगी हो लेटी हो औंधी हो सीधी हो अकड़ी हो जकड़ी हो इस्से कुछ प्रयोजन नहीं "सर्बैरुपायैः फलमेवमाध्यम„—ब्रज भाषा की चटकीली रंगीली रसीली भाषा मे जहां तक यंत्र मंत्र टोटके बशी करण मोहनाचर मिलें जोड़ जाड़ के ऐसे २ पद बनावें और गावें कुपढ़ सुपढ़ को रिझावें कि बिद्या विनोद का कायरपना छुट जावे हिजड़ों के घर मे लड़का पैदा हो और यह बचन चरितार्थ हो—"पर धन हृदय हरा का सत्कबिता वेश बनिताच„—और जिन प्रद्योतित हृदय नवनव गुण रागियों को बेल बूटा चित्र बिचित्र रचना नहीं अच्छी लगती वे बी उर्दू की लौंड़ी या चेली खड़ी बोली अथवा यों कहिये चिकनी साफ स्वच्छ हलब्बी शीशे के समान चम चमाती झल झलाती सादी सीधी भोली भाली समूची भाषा मे जहां तक हो सके उस समय को जो उक्त बिवाद मे व्ययकरते हैं अच्छी २ कबितावली के गुच्छ निर्माण करें ग्राहक या रसिक मण्डली का सोच संकोच मतकरैं आज्ञा होतो उभय प्रणाली अथवा मिश्रित प्रणाली के काव्य रसिकों के प्राचुर्यका ठीकालेलिया जाय बस वाद बिवाद मे अनुचित शब्दों को कानर्यस के प्रतिकूल वादी स्वार्थ तत्परों के कुतर्क रुपी कूड़े खाने मे फेंक दो और अवशिष्ट प्रयोजनीक शब्दों को काव्य चातुरी की लेख चातुरी के काम मे लाओ—"यालोक द्वय

साधनी तनुभृतां साचातुरी चातुरी, —

एक प्रयाग बासी उभय कविवरों की सत्कविता प्रसून का क्षुद्र भ्रमर—

प्रेरित

जनाब मिस्टर एडिटर इस लेख को भी अपने पत्र मे मुद्रित कर मुझे अनुग्रहीत कीजिये।

एप्रेलके भा-सु-प्र-मे महात्मा आलाराम संन्यासी पर अनुचित आक्षेप देख चित्त को अति खेद हुआ-मेरी समझ मे आलाराम ऐसे पुरुष नहीं हैं कि किसी की प्रक्षिप्त निन्दा उन पर संघटित हो जिस प्रकार लड़कों का फेंका हुआ गेंद मज़बूत दीवाल पर से उछल कर फेंकने वाले की तरफ लौट आता है यही दशा सच्चे देश हितैषी महात्माओं की निन्दा प्रयत्न की है कि निन्दक का प्रयास सफल नहीं होता वह निन्दा उलट उसी पर आपड़ती है"—रत्न दीपस्यहि शिखा वात्ययापि न शाम्यति„ आला राम के सत्कर्म की सुगन्धि स्वयं सेठ मोहन लाल जी के लेख से भी निधड़क निकलती है कि अमुक स्थान मे उन्होने गोरक्षा का प्रयत्न किया अभी थोड़े दिन हुये हिन्दीप्रदीप तथा दूसरे समाचार पत्रों मे उनके सत्कर्म प्रचार के समाचार देखे गये और हम लोग कई महीने से उक्त संन्यासी महाशय की शुद्ध निर्लेप प्रकृति देख और गोरक्षा आदि देश हितैषी व्याख्या नो को सुन कह सक्ते हैं कि कदाचित् संपूर्ण देश भर मे बड़ी खोज करने से ऐसे पुरुष मिलेंगे—सच तो यों है कि पाप का मूल कारण लोभ और अभिमान से निर्लेप विग्रह ऐसेही शरीरी को कहना चाहिये जैसे आला राम जी हैं—सेठ मोहन लाल के शब्दों से केवल उलहाने के तात्पर्य निकलते हैं उनसे किसी भद्र पुरुष को अधिक पीड़ा नहीं पहुंच सक्ती जैसा -भा—सु—प्र—ने अपने पृष्ट १५ की २१ पंक्ति से २३ तक लिखा है कोई भी विद्वान पुरुष चाहो जिस संप्रदाय का अभिमानी हो ऐसा कदापि न लिखेगा

"अशिक्षित उजड्ड,, प्रभृति दुःशब्दों का प्रयोग ऐसे शान्त शील सुयोग्य के प्रति व्यवहार करना ऐसा अनुचित है कि जिसका दृष्टान्त भी अनुचितायतै कहा जा सक्ता है–संपादक भारत सुदशा प्रवर्तक को उचित था कि दया और धैर्य को कुछ भी तो आदर देते—कहावत प्रसिद्ध है दुधार गाय के दोलात भी मीठे होते हैं अला राम किसी के नौकर नहीं न उन्हें विशेष महत्व किम्वा स्वार्थ संग्रह की वांछा है जो उचित समझेंगे अवश्य कहेंगे दुःशब्द और कठोर लेखों के रोकने का उत्तम उपाय आत्मचरित्र शोधन और मृदुता है न कि आर्य होकर भी अनार्यता का कुत्सित बर्ताव–मुझे पूर्वोक्त पक्ष मे किसी के साथ कोई स्वार्थ संबन्ध नहीं केवल सत्य बात का अन्वेषक हुआ चाहता हूं—एक प्रयाग वासी तथ्यबादी।

कष्ट साध्य को सुसाध्य करने का सहज लटका

आप जानते हैं सर्कार के कर्मचारी हाकिमो को खुश रखना कैसा कर्रा काम है— बराबर डाली पहुंचाते रहो—चढ़ने को गाड़ी घोड़ा भेजते रहो—घर उनके रहने को दो–नित्य बंगलो पर हाजिर रहाकरो–बेयरा खानसामो को पूजते जाओ—उनकी अर्दली के चपरासी साहब का मिजाज सम्हाले रहो—मेम साहबा या लेडी साहबा के प्रसन्न रखने की चेष्टा मे रात को दिन और दिन को रात कहना तो कोई बड़ी बातही नहीं किन्तु नित्य नये २ चन्दों मे राजा करन और रन्तिदेव कीसी उदारता का उद्गार भी दिखलानाही उचित है— आज महाराणी का जुबिली उत्सव है चन्दा दो कल लेडी डफरिन फंड का चन्दाहै अपने नाम और वित्त के अनुसार शरीक हो परसों अमुक साहब बरसों तक यहां हम लोगों को सरफ़राज कर बिलायत तशरीफ लिये जाते हैं या बिलायत सेहिन्दुस्तान को आते हैं उनकी पधरौनी आतिथ्य या "रिसेप्शन,, अथवा उनकी यादगारी

का स्मारक कुछ चिन्ह बनाया जायगा पत्र पुष्प पान के जगह प्रखुरी ही सही जो कुछ भक्ति और श्रद्धा पूर्वक बन पड़े अवश्य चाहिये जितना ही अधिक सामर्थ्य और बित्त के बाहर हो कर गुज़रो उतनाही अच्छा और उतनाही अधिक पुण्य—"अधिकस्य अधिकं फलम्,,— परिणाम से उतनाही अधिक श्री हुज़ूर के प्रीति पात्र बनोगे झटपट राय बहादुर खान बहादुर बना दिये जाओगे थोड़ीही कोशिश और परिश्रम से के-सी-एस—आई या जी—सी-एस—आई—के लिये शिफारिस करदिये जाओगे सामर्थ्य एक पैसे की होती तुम फौरन बिना कुछ संकोच के एक की जगह दो जबतक न दोगे तब तक आप की रियासत और नाम से फरक आवेगा–फिर केवल इतनाही नहीं सब प्रकार की यातना भोगते रहो कष्ट पर कष्ट उठाते चले जाओ मुंह पर कभी एक बात न लाओ मौन ब्रत धारण किये रहो बहुत बोलने की आदत डालना ठीक नहीं—दिन रात मे २४ घंटे होते हैं— "घड़ी २ घड़ियाल बजावे कौन घड़ी धो कैसी आवे,–न जानिये किस जून कैसी बात मुंह से निकल पड़े छोटे से छोटे भी देवगण तुम से असन्तुष्ट होगये तो फिर निस्तार कहीं नहीं-सच है-"राज सेवा मनुष्याणाम सिधारा वलेहनम्। पंचाननपरिष्वंगो व्यालीवदन चुंबनम्—,,हमारे कई एक घस्सड़ छोटे मोटे रईस और नौबाब या राजाओं की समझ के सर्वथा विरुद्ध इसी प्रकार राज पुरुषों की सेवा और खुशामद करते २ परिश्रम और खिन्न हो किसीने ऊपर के इस श्लोक को कहा है-"भाई हम लोगों के लिये राज सेवा अति कठिन और पद २ मे जान का वैसाही खतरा पैदा करने वाली है जैसा मूर्खता के कारण तलवार की धार को जीभ से चाटने मे है शेर के साथ कुश्ती करने मे है या नागिन

का मुख चूमने मे है--,,हमारी इस समय की चित्रकारी से अब आप अवश्य चेतगये होंगे कि इन राज कर्मचारियों का प्रसन्न रखना कितना कष्ट साध्य कर्म है यह सब कष्ट न उठाना पड़े और हाकिम लोग विनप्रयासही प्रसन्न होजांय वह सहज लटका हम से सुनिये-आप कानग्रेस के बिरोधी होजांय बस आठो सिद्धि नवो निधि तुम से दूर न रहेगी इस महापुनीत कृत्य की बदौलत आप राज भक्तों में अग्रगण्य समझे जांयगे बड़े से बड़ा खिताब दर्बार मे ऊंचे से ऊंचा आसन पाओगे हमारा बिश्वास नहो आप अवध पंच के वनिया अखवार से पूछ देखो- आपने समझदारी की नाक थाम रक्खा जो इस रास्ते पर कदम रक्खो तो दिया अब बहुत जल्द आप साधारण ठाकुर जमींदार से झट्ट राजा या राय बहादुर कर दिये जांयगे राजा साहब अब आप महाराजा की पदवी पावेंगे इस कानग्रेस बिरोध की वदौलत न जानिये कितने बनिये बक्कालों को हमारे हाकिमो की आंख मे सुर्ख रुई पाने का मौका मिल गया है इससे इस सहज लटके को अवश्य काम मे लाओ बड़ा उपकार होगा।

। समयकामूल्य ।

कार्य की उत्पत्ति का लक्षण काल पद प्रयोग किये बिना नहीं बनता जैसा घट की उत्पत्ति का अर्थ यह है कि घट का क्षणक्षण से सम्बन्ध हुआ अर्थात् पहले जो घट नाथा सो अब है तो अब देखना चाहिये कि यदि क्षण पद का प्रयोग नकरैं तो घट की उत्पत्ति का लक्षण नहीं बनसक्ता इसलिये काल को कणाद मुनि कार्यों का महा कारण कहते हैं इससे स्पष्ट है यदि काल न होता तो किसी कार्य की उत्पत्ति नहोती—काल सनातन और अविनाशी पदार्थ है अत एव काल का व्यापार ध्रुव अर्थात् अटल है जैसा बेकन ने कहा है उच्च पद वालों केसिर पर कारोबार का इतना बो-

भ्रम रहता है कि वे उसको नहीं सम्हाल सक्ते हैं क्योंकि यदि सम्हालने का यत्न करैं तो शरीर अस्वस्थ हो जाता है और समय सो किसी की स्वस्थता वा अस्वस्थता देखता नहीं किन्तु अपना व्यापार अर्थात् कार्यों की सामग्री का परिपाक करना ही है जैसा घीका वड़ा यदि ढरक रहा हो और हम बीमार हों और उसको उसक्षण मे न सम्हाल सकें तो काल हमारे मुलाहिजे से घीको नबचा रक्खेगा—निदान संसार भर में कार्य मात्र अर्थात् फल रूप अन्य पदार्थ की उत्पत्ति मे और सब सामग्रियों के रहते भी संशय रहता है परन्तु समय आने पर सामग्रीरहते कार्य की उत्पत्ति अवश्य और ध्रुवहै जैसा धरती मे बीज आदि सब सामग्री के रहते भी तब लों अंकुर नहीं फूटता जबलों उस बीज के जमने का समय नहीं अता—बिशेष २रोग तिजारी चौथिया इत्यादि ज्वरो में कालकी कारणता भरपूर आजमाई गई है—काल दूसरे के काम मे बाधा डाल देता है पर अपने व्यापार मे किसी को फटकने भी नहीं देता जैसा किसी ने बिष पीलिया तो बिष पान का फल मरण या उस्के कार्य का वाधक कोई औषधादि उपस्थित होजाने से प्राण का बच जाना भी संभव है जिस्से बिषपान का फल ध्रुव नहीं कहा जासक्ता है परन्तु काल का व्यापार जो सामग्री का परिपाक है वह मरण वा जीवन दोनो मे समान भाव से ध्रुवहै क्योंकि विष वाऔषध के परिपाक बिना मरण जीवन तत्काल (तुल्या क्षण मे) नहीं होजाता काल केसम्बन्ध से जिनमें बिरोध है उनका बिरोध भी अटल है जैसा एकही क्षण मे जीवन और मरण नही होसक्ता—व्यवहार मे प्रसिद्ध है कि जो कार्यका ध्रुव उत्पादक होता है यदि वह सुलभ नहो और उस्के ग्राहक बहुत से हों तो वह वह मूल्य होता है—नकद की उपादेयता क्यों बिशेष है इसका यही कारण है कि उसके पलटे उपयोगी पदार्थ अवश्य प्राप्त होते हैं इसलिये कि नकद सुलभनहीं है और उस्के चाहने वाले बहुतेरे हैं॥ समय सुलभ नही है मरणासन्न कीदशा मे काल की पूरी परीक्षा की जाचु

को है समस्त पृथ्वी का राज्य एक निमिष के मूल्य मे दे देने पर भी दम नहीं रुक सकता है --समस्त संसार निज सुख की प्राप्ति और दुःखकी निवृत्ति रूपी कार्य की उत्पत्ति मे लगा हुआ है और जैसा हम ऊपर सिद्ध करचुके हैं कि कार्य मात्र की उत्पत्ति मे कालकारण है तो किसैं यह सामर्थ्य कि काल का कोई ग्राहक नहीं है ऐसा कहै--ऊपर की युक्तियों से निरूपित हुआ कि काल बहुमूल्य पदार्थ है परन्तु काल की पूंजी का स्वामी कौन है जिस्के पास से हम उसे मोल ले अपने प्रयोजन की सिद्धि में लगा सक्ते हैं काल किस्के हाथ मे है ? इसका उत्तर यह है कि कालही के भेद से काल मनुष्य के निज हांथ मे होता है और नहीं भी होता जिस समय सामग्री संपादित करने की शक्ति अपने में रहती है उस समय काल मनुष्य के निज हाथ में है चाहे वह उसे उचित रीति से काम में लावे अथवा निश्चिन्त हो के गवावे परन्तु जब उक्त शक्ति अपने मे नहीं है तब काल भी अपने हाथ मेंनहीं रहता जैसा बाल्य अवस्था मे पठन पाठन की सामग्री संपादित करने की शक्ति अपने पास है तो काल भी अपने हाथ में है चाहे पढ़ो चाहे खोओ वही अवसर निकल जाने पर फिर तुम उसे किसो के हाथ से मोल नही लेसक्ते हो तस्मात् काल जब अपने हाथ मे हो तब उसका कुछ मूल्य नही है और जब वह अपने हाथ मे नही है तब उसे किसी के पास से मोल नही लेसक्ते इस कारण वह दोनो दशा मे अनमोल है --भगवत गीता के शङ्कर भाष्य मे कहा है "प्रमादो नाम प्राप्त कर्तव्या करणम्,,--॥ अर्थात् जो कार्य अवश्य कर्तव्य है उसे प्राप्त समय पर न करने को प्रमाद कहते हैं और प्रमाद तमो गुणका धर्म है अतएव कह सकते हैं किजो लोग अपने अनमोल समय को प्रमाद से खोबैठते हैं वे प्राणी तमो गुणी हैं और तमो गुणी को अन्त से क्या फल मिलता है उसे श्री मुखसे भगवान ने गीता मे कहा है—"तथा प्रली नस्तमसि मूढ़योनिषु जायते,,—अर्थात् तमोगुणी मरकर पश्वादि मूढ़योनिमे जन्म पाता है-इत्यादि अनेकानेक दोष समय की बहुमूल्यता

के न पहचानने के कारण उत्पन्न होजाते हैं तस्मात् हे हमारे बाचक बृन्द आपको उचित है इसकी बहुमूल्यता भरपूर पहचान संसार मे बर्तो —

इति—सरयू प्रसाद मिश्रकः प्रयाग

प्रश्नोत्तरी।

कःपरिहार्यो देशः? पिशुनयुतो लुब्धभूपश्च।
केनाशोच्यः पुरुषः? प्रणतकलत्रेणधीर पुत्रेण।
इहभुवनेकः शोच्यः? सत्यपिविभवेयोनदाता स्यात्।
किं लघुतायाः मूलम्? प्राकृत पुरुषेषुया यांचा।+
केखलु नयन विहीनाः? परलोकं ये न पश्यन्ति।
इहखलु बधिरतमा के? हितवचनं ये न शृणवन्ति।
कोमूकः खलुलोके? प्रिय बचनं योन भाषते सदसि।
कोहि सहायः सुदृढः? निः कपटे नार्जितो धर्मः।
कस्यवशं जगदेतत्? प्रियहित बचनस्य धर्म निरतस्य।
पर धन हृदय हराका? सत्कविता वेष बनिताच।
कस्मै स्पृहयति कमला? निश्चल चित्ताय नीति वृत्ताय
किमगाधमंवुधेरपि? खलचरितं शब्द बिद्याच।
किं मुक्ति बल्लिमूलम्? गंगासेवाहरे रर्चा।
कोनिष्कामोबैरी? पापार्थं यः प्रवर्तयति।
कः खलु कमलदिनेशः? मतिगुण बिभवेपि यो नम्रः।
इहको नरकनिवासी? नबिनीता यस्यदृश्यते भार्या।
कः खलु हस्तविहीनः? योनप्रहरति समुद्यतेशस्त्रम्।?

+यांचा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्ध कामा—मे—दू—

। कामकाजी वस्तु ।

। आईने पर कलई करने की युक्ति ।

आईना जिसपर कलई करना हो खूब साफ कर डालो यदि पहले कलई रही हो तो उसे शोरे के तेजाब से साफ कर लेना चाहिये जिसकी तरकी व यह है--सेर भर पानी में आध छटाक शोरे का तेजाब मिलाकर शीशे को धोडालो जब बिल्कुल साफ होजाय तब उसे मीठे पानी से धोओ और कपड़ा या साबर के चमड़े से पोंछ डालो--अब जितना बड़ा शीशा है उससे हर तरफ से एक पैन बड़ा टुकड़ा जस्ते की पन्नी का काटो और उसे चिकने साफ संगमरमर के पत्थल पर बिछादो और शिकन उसकी रूई के पहल से बराबर करदो जब अच्छी तरह बराबर और चिकना हो जाय तब उस पर थोड़ा कच्चा पारा छोड़ दो और उसी रूई के पहल से पारे को तमाम पन्नी के सतह पर फैला दो पारा पन्नी में मिल जायगा कमी होतो थोड़ा पारा और छोड़ दो जिस मे कहीं छूट नजाय नहीं तो दाग पड़ जायगा अब फिर पन्नी के सतह को जिस पर पारा फैला है रूई के पहल से साफ करदो अब बहुत धीरे से शीशे को जिसे तुमने साफ करके रक्खा है पन्नी पर रख दो और चारो कोने शीशे के और बीच मे छोटे पत्थल या लोहे के टुकड़े से दबा दो (पत्थल के टुकड़े न इतने भारी हों कि शीशा टूट जाय और न इतने हलके हों कि कुछ बोझ भी न पड़े) दो घंटे तक पड़ा रहने दो फिर धीरे से उठा लो कलई बन जायगी ।

। कुलफी जमाने कीयुक्ति ।

कुलफी के जमाने के मसालों मे निमक असिल चीज है यह बहुत साफ और टोरैदार होना चाहिये साम्भर या बकका उमदा होगा सेंधा निमक भी लोग काम मे लाते है पर बिल्कुल भूल है क्योंकि यह टोरैदार नमक नहीं कहा जा सकता टोरी जिसे अंगरेजी में crystalihed कहते हैं वह उस वस्तु का नाम है जो किसी चीज के रस स्थिर होरहने से बन जाता है जैसा चीनी

चीनी का शीरा रखने से मिसरी के टोरें बन जाती हैं इसी प्रकार सेंधा के सिवाय और २ नमक भी बनाये जाते हैं—कुल्फी जमाने के लिये एकदल्ल दार बरतन होना चाहिये मिट्टी का ठेला या घटवा विशेष उपयोगी है कुलफी जमाने के समय बरतन को कम्मल से लपेट देतेहैं जिस्मे बाहर की गरमी असर नकरे जिस बरतन मे दूध मलाई या शर्बत आमका रस —फालसे याकसेरु का शर्बत जमाने के लिये भरते हैं उसका नाम कुलफी है— यह पतले धातु का होना चाहिये टीन वालों की दुकान पर बहुधा बनी बनाई मिलती है और जहां नमिलतो हो टीन वाले को कह देने से बन सक्ती है इसकी शकल शीशे के टम्बलर के तरह होती है एक ढपनाभी उसके मुह के नापका होना चाहिये कुलफी जमाने के पहले कुलफी के बरतनों को धो डालो दूध शरबत या जिस्की कुलफी जमाना मंजूर हो उस्मे मीठा केवड़ा इलाइची आदि सुगन्धित वस्तु छोड़ छान डालो और उन्हीं बरतनो मे उसे भर दो ढपने से उसका मुह ढ़ाप सिंघाडे के मैदे या गेहुं के मैदे से मुह उसका लहेस दो इस लिये कि जरा भी छिद्र रह जायगा तो नमक का अंश उस्मे पहुंच सब को नमकीन या खारी कर देगा —कुंडे मे एक और उन कुलफी के बरतनो को रखदो और उस्के ऊपर बर्फ के छोटे २ टुकडों को बिछादो जितना वज़न बर्फ का हो उसका आधा बूंका नमक उस्मे मिला दो —पहले एक तह बर्फ के चूर को कुंडे मे जमाओ और उस्के ऊपर नमक छिड़का दो फिर उन कुलफियों की एक तह उस्पर जमादो फिर और एक तह बर्फ के टुकड़े और नमक को उस्पर जमाओ इसीतर तह बतह रखते जाओ आध २ घंटे बाद दो तीन बार घड़े को हिलाते जाओ दो तीन बार हिलाने से कुलफियां जमकर तैयार हो जांयगी— कुलफियों मे दुध या शर्बत थोड़ा कम भरना चाहिये नही तो जमने पर ठस कर मुंहकुलफीयों का खुल जायगा कुलफी तैयार होगई—अब चाकू से ऊपर का लहेसा हुआ मैदा खिरोच ढपने को खोल अपने काम लासक्ते हो

न्याय सभा नाटक।

३ अङ्क—प्रथम गर्भाङ्क।

। स्थान—बादशाह का महल।

। बादशाह और बीरबल एकान्त मे बैठे हुये।

बादशाह- बीरन कहो तुह्मारे दल मे अब क्या हो रहा है तुह्मारे सब हिन्दू भाइयों मे एका होना संभव मालूम होता है या नहीं।

बीर- मुझे कुछ ऐसा तो भासित हुआ है कि अब इन लोगों की भी आंख खुलती चली है-हु.जूर ने अपने राज्य मे बड़ी मेहनत और खर्च कर सर्व साधारण मे उत्तम शिक्षा का जो द्वार खोल रक्खा है उसका फल अब दृष्टि गोचर हुआ कि सब लोग अपना स्वत्व और अपना नफा नुकसान भर पूर पहचानने लगे हैं— अब वह समय न रहा कि आपके अत्याचारी कर्मचारी जो चाहें सो कर गुजारें और उन्हे कोई न टोंक सके—स्वच्छन्दता और आ.जादगी की आग एक अदना से अदना के मन मे भड़क रही है अब इनको अन्धा धुन्ध और अत्याचार के बल से बश मे रखना सर्वथा दुर्घट है-आप जानते हैं शारीरिक बलमे ये कभी किसी से कम न रहे इन्मे जो कुछ कमी और अभाव था वह मानसिक बलका सो वह घाटा भी अब आपके उदार शासन से जाता रहा अब इनके एका की क्या पूछते हो एक होने के लिये तो अब इनकी नस२ फड़क रही है—और—

बाद (रोककर) बीरन यह लक्षण तो अच्छे नहीं हैं यह आ.जादगी बढ़ते२ कभी को हमारी सलतनत मे .जवाल पैदा करेगो।

बीर—हु.जूर ऐसी बात का खयाल आप कभी ख्वाब मे भी न लाइये हमारी हिन्दुओं की कौम सदा से राज भक्ति मे अग्रगण्य होती आई है अपने राजा को ये लोग साक्षात् ईश्वर का अंश मानते हैं बड़े२ निठुर अत्याचारी शासकों की आज्ञा के विरुद्ध ये कभी नहीं हुये तब आप जैसा

इनके साथ उदार भाव दर्शाय रहे हैं उस्पर ये निहाल हैं केवल जो कुछ कसर है वह आपके स्वार्थ परायण दुष्ट कर्म चारियों की है जिनका ज़ोर तोड़ना इस समय आपका कर्तव्य कर्म है—हुज़ूर यह हमारी ही कौम है कि इनको पुचाड़ा देते जाइये जो चाहिये सो इनसे लेलीजिये जैसा चाहिये वैसा काम इनसे करालीजिये—एहसान फरामोशी तो ये जानतेही नहीं अपनी कबूतर की सी आदत छोड़ जो ये कपट और बुराई करना सीखे होते तो कभी संभवथा कि आपकी सांपसी सयानी कौम सहस्रों वर्ष तक इन पर प्रभुता करती रहती एक की जगह आधी रोटी भी इन्हें खाने को मिलती रहै तब भी ये अपने को सन्तुष्ट और निरापद मानते हैं—इसलिये इन से आप कभी ऐसी आशा न कीजिये कि ये बगावत करेंगे—"माय होती तो मौसी को क्यों झीखती—" सयान पन की बातें बगावत इत्यादि इनमे होती तो सिधाई और भोले पन से अपना सर्वस क्यों खोबैठते—आज मेरे पास खबर आई है कि आपस की सलाह और एकमत होने के लिये आकनेरा के मैदान मे उन लोगों की बड़ी सभा होने वाली है मेरा भी बुलावा आया है मैं नहीं चाहता कि इन गवारों की सभा मे जाऊं—किन्तु—

बाद—नहीं तुमको ज़रूर जाना चाहिये हमारा भी जी चाहता है कि भेख बदल चल कर इस तमाशे को देखैं जिस्से असल हाल इन लोगों के दिलका मालूम हो।

वीर—मैभी मुनासिब समझता हूं कि हुज़ूर ज़रूर चलें इस्से अच्छा दूसरा समय हुज़ूर को प्रजा के चित्त का भाव जानने को न मिलेगा—पर यह बतलाइये आप कौनसा भेख बदल कर चलेंगे—।

बाद—मै समझताहूं तुम्हारा खिदमत गार बन कर चलूं क्योंकि तब मै तुम्हारे पास हर दम रहूंगा और जो कुछ वहां कहा सुना जायगा उसे अच्छी तरह सुन सकूंगा।

वीर—यह तो बड़ा ही अनुचित है कि मैं अपने मालिक को अपना नौकर

बनाज'—हुज़ूर कोई दूसरा भेख रखिये ।

बाद—बीरबल इसका तुम कुछ अन्देशा मत करो आज शाम को हम तुह्मारे साथ चलेंगे तुम अपने लड़का कहांर का कपड़ा हमारे पास भेज देना।

बर—जैसी इच्छा हुज़ूर की—हुज़ूर का नाम हनमंता होगा और हमोरा खासदान लिये रहना पड़ेगा—अच्छा तो इस समय अब मुझे आज्ञा दीजिये (सलाम कर रुखसत होता है)

बाद—देखें वहां चलकर क्या २ तमाशे देखने मे आते हैं हिन्दुओं की राज भक्ति और उनके जी का भीतरी हाल जानने का ऐसा दूसरा मौका न मिलेगा– अच्छा तो अब दरबार आम का वक्तकरीब है चलकर सलतनत का कुछ काम देखें।

(जाता है)

। पबलिक ओपीनियन ।

। सर्व साधारण का ऐकमत्य ।

सर्व साधारण का ऐक मत्य क्या वस्तु है इस्मे कितना बल है और इसके किये क्या होसकता है इत्यादि अनेक प्रश्न इस ऐकमत्य के साथ २ लगी चलती हैं— इनप्रश्नों का एक साधारण उत्तर हम यही देंगे कि यह वह वस्तु है जो संसार भर को एक कर सकती है गंगा की धारा फिर हिमालय पर चढ़ा लेजा सकती है विन्ध्य पर्वत को चूर२ कर रेत मे मिलादे सक्ती है सूर्य को पश्चिम मे उगा सकती है कहां तक कहें इस्मे वह शक्ति है कि ईश्वर को भी पकड़ कर कठपुतली की भांत नचा सक्ती है—मनुष्य मे बुद्धितत्व ऐसी अद्भुत शक्ति संपादित की गई हैं जिसके द्वारा इसने न जानिये कितने ऐसे चमत्कारी लोकोत्तर चातुरी के काम कर दिखाया और दिखाता जाता है कि दुर्घट घटना पटीयसी उस शक्ति का थहाना या उसके ओर छोर को पहुंचना हम अशक्य या असंभावितही मानेंगे बरन इन्ही कारणो से मानवी सृष्टि जगत् कर्ता की यावत सृष्टि मे प्रधान मानी

गई है-अब सोचना चाहिये जब एक २ मनुष्य मे कभी २ बड़तत्व धर दिया जाता है तब शत सहस्र अथवा लक्ष पुरुषों की पृथक् २ व्यक्ति एक होकर Individuality प्रथकत्वाभिमान दूर कर समुदाय शक्ति मे बंधकर चलैं तो कौन सा ऐसा काम है जो न हो सके तब यह सिद्धान्त दृढ़ हुआ कि निश्चय सब लोगों के एक मत मे बड़ी सामर्थ्य और बड़ा बल है—यह एकमत्य कोई ऐसी बात नहीं है जो हमारे लिये अप्राप्यरही हो बरन बिबिध मणि मुक्ता प्रवाल की भांति यह सदासे हमारे गले का हार और सर्वाङ्ग सुन्दर आर्य्य जाति का भूषण था—वैदिक पौराणिक तथा बौद्धयाजैनियों के समय की अनेका नेक ऐसी आख्यायिकायें प्रचलित हैं जिनके गूढ़ार्थ या मर्म का निचोड़ इस ऐकमत्यही पर आपड़ता है—इस बिगड़ी दशा मे भी हमारी रोज़ की चाल ढाल रीति रसम तेहवार बार मेले ठेले सभों की असलीयत या आदि कारण पता लगाते चलिये तो अन्त मे उसकी बुनियाद इस ऐक मत्य ही को पाइयेगा—समुद्रमंथन राजा पृथु का चरित्र दुर्गामे देवताओं का तेज मिल कर एक होजाना—"अन्येषां चैव देवनां शक्रादीनां शरिरतः। निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत-„ इत्यादि पौराणिकी गाथा और आख्यायिकायें हमारी "पबलिक ओपीनियन„ ऐकमत्य को सब तरह पर पुष्ट करती हैं— महाराजा रामचन्द्र जिनको सब प्रजा पिता से भी बिशेष प्यार करती थी और हिन्दू के बीर्य मात्र को जिनका नाम सुनतेही असीम भक्ति का उदय होता है जिनकी कीर्ति चांदनी अब तक दिशा अङ्गना के मुख को उज्वल कर रही है उनके समय मे भी पबलिक ओपीनियन को इतना ज़ोर था कि जिसके भयसे उन्हे सीता सी सती का त्याग करनाही पड़ा—रामचन्द्र सीता को न त्यागते तो उनका कोई कुछ कर नहीं सक्ता था -पर नहीं राजा का मुख्य काम है कि सर्व साधारण के एक मत्य का बड़ा ध्यान रक्खे जब तक चन्द्रमा सूर्य हैं तब तक उस न्यायकारी राजाका यश स्थिर रहेगा जो अपने प्रजा की साधारण अनुमति

अर्थात् पबलिक ओपीनियन को आज़ादगी के साथ कायम रक्खेगा-क्या कारण कि बिक्रम भोज अकबर इत्यादि का नाम भूलना कौन कहे वरन उनकी कीर्ति को लोग पवित्र समझ गाते हैं और उनका नाम पुण्य श्लोक कीर्तन मानते हैं इसी लिये कि उन लोगों ने अपनी प्रजा का सब तरह पर सन्तोष किया और साधारण अनुमति का पूरा अधिकार रहने दिया-आगेफिर

धन्यबाद

हम अत्यन्त कृतज्ञता पूर्बक फर्रुखाबाद बैदिक समाज को धन्य बाद देते हैं जिसने हमारी बर्तमान कृपण दशा को लख हमारे सहायार्थ १०) भेजा है-बिशेष धन्यबाद बैदिक समाज के मंत्री पं—गोपाल रावहरी महाशय को है जो कई बार ऐसीही सहायता दे हमारी संकीर्णता का उद्धार करचुके हैं बार २ हमारे संकटों के उद्धार से गोपालहरी महाशय नामही से नहीं बरन हमारे लिये सच्चे हरी हैं-" गज की टेर सुनीरघुनन्दन पांव पियादे धाये,,— पाठक जन आप यह न समझिये कि हम ने १०) पाकर आज अच्छा भाट भगतियों का रूप कसा है नहीं मैं अपना यथार्थ अनुभव कह रहा हूं हमारे ब्राह्मणो मे दी एक व्यक्ति ऐसेही सच्चे देशानुरागी हैं जिन्हे देशके कल्याण की बातों से अतिशय प्रीति और आल्हाद होता है बरन पुलकित होजाते हैं—इन्हीं के समान शील और समान धर्मा अकबरपुर निवासी पं—बद्रीदीन शुक्ल भी हैं—ये दोनो माननीय वयो बृद्ध धन्यबाद के योग्य हैं बिशेष कर हमलोग समाचार पत्र संपादकों को तो साक्षात् कलपबृक्ष हैं—अस्तु सब ओर से

अशरण कोई तो इसे शरण देने वाला हो।

प्राप्ति

। समस्या पूर्ति मंजरी ।

श्री गोस्वामी किसोरीलाल महाराज रचित उक्त महाशय की योजना शक्ति और पद लालित्य प्रशंसा के योग्य है इसकी सम्पूर्ण कवित्तें केवल शृङ्गार रस की नहो थोड़ी सी सामयिक देश भलाई के सम्बन्ध मे भी होतीँ तो सोना और सुगन्धि कहा जाता वांकीपुर खड्ग विलास प्रेस मे छपी है मूल्य ≈) मात्र आरा मे उक्त गोस्वामी जी को लिखने से मिलेगी

बिज्ञापन

जो लोग अपने पुत्र और पुत्रियों को लिखाते पढ़ाते और विद्या गुण सिखाते हैं तथा जिन्हे यह इच्छा रहती है कि उनके सन्तान उत्तम२ सज्जनता का भाव ग्रहण करें और जाने कि उपकार प्रत्युपाकार क्या पदार्थ है—माता पिता गुरु की भक्ति भाई का स्नेह लोभ का रोकना धर्म से डरना आतिथ्य और दयाशीलता आदि नीति रत्नों से अपनी प्रकृति को आभूषित करें उन्हे उचित है अतिसरल भाषा की यह आख्यान मंजरी संगा के आदि से अन्त तक अपने बालक बालिकाओं को पढ़ावें इसमे सब २३ आख्यान हैं एकसे एक अनूठे जिनमे भ्रातृ बिरोध और न्याय परायणताके दो ऐतिहासिक दृष्टान्त ऐसे तीब्र गुणकारी हैं कि यदि चित्त पर वैठजांय तो बर्ते तो

अवश्य शिक्षा के पात्र हो हैं किन्तु ज्वान और बूढ़े भी उक्त पवित्र कथाओं के मर्म को समझ बूझ देश और जाति के संहार कारी कर्म और कुमार्ग से लौट कर सुमार्ग के पथिक बन सक्ते हैं उक्त पुस्तक का दाम ।) ठिकाना मंगाने का—राम प्रसाद तिवारी लाट साहब का दफ्तर इलाहाबाद या हिन्दी प्रदीप के संपादक को भी लिखने से मिलसके गी—अधिक जिल्द के ग्राहकों को २०) सैकड़ा के हिसाब से कमिशन भी मिल सक्ता है ।

। प्रकाश ।

पहले गर्मी की तरह प्रकाश को भी लोग अत्यन्त सूक्ष्म और पतला द्रव पदार्थ समझते थे पर अब तो यह मत अधिक साधारण होगया है कि द्रव पदार्थों के हिलने से प्रकाश उत्पन्न होता है—एक बिपल मे प्रकाश १९२०० जासकता है इस हिसाब से सूर्य का प्रकाश हम लोगों को भूमण्डल पर ८ पल मे आता है—अढ़ाई बिपलका एक सिकंड होता है और अढ़ाई पलकी एक मिनिट-प्रकाश किसी भास्वर वस्तु से निकल किरण के रूप मे सीधाजाता है जिन पदार्थों मे से प्रकाश आर पार होता है उन्हे प्रकाशभेद्य transparent कहते हैं और जो वस्तु प्रकाश को रोकती है उसे प्रकाश रोधक कहते हैं— प्रकाश रोधक पदार्थ प्रकाश को प्रतिसारित करते हैं अर्थात् पीछे के ओर फेकदेते हैं गरमी के समान प्रकाश भी ईश्वर की सृष्टि का बड़ाही उपकारी है प्रकाश न होता तो उद्भिज पदार्थों की सृष्टि घास पात पेड़ पालो जो अब मरकतमणि की अकृत्रिम शोभा धारण किये हुये देखपड़ते हैं सब पीले पड़ कर नष्ट होजाते इत्यादि प्रकाश के अनेक गुण हैं जिन्हे हम यहा स्थान संकीर्णता के कारण पूरी रीति पर प्रकाश नहीं करसक्ते शेष दूसरे अंक के लिये रख छोड़ते हैं ।

हिन्दीप्रदीप ।

।मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंदभरै ॥
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणि दीप समथिर नहिंटरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

१ जुलाई सन् १८८८ ई० | जिल्द ११ संख्या ११

इलाहाबाद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
मालिक ला० गोपालदीन के प्रबन्ध से
देशोपकारक यंत्रालय में प्रकाशित
किया गया
कंचेकिमंडी

मूल्य अग्रिम ३।≶) पीछे देने से ४।≶)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १॥≶)

२०६

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द ११ } { १ जूलाई
संख्या ११ } { सन् १८८८ ई०

मध्यम श्रेणी

श्रेणीबद्ध होकर रहना मनुष्य मे स्वाभाविक धर्म है इस स्वाभाविक धर्म ही पर लक्ष्य कर भारवि कविने कहा है "सहापकृष्टैर्महतां नसङ्गतं भवन्ति गोमायुसखा नदन्तिनः ,, और भी "आत्मवर्ग हित मिच्छति सर्वः,, अपने वर्ग की भलाई सब चाहते हैं—निकृष्टों के साथ उत्कृष्ट श्रेणीवालों का साथ नहीं सोहता हाथी और सियार की मैत्री क्यों कर निभ सक्ती है—समाज मे श्रेणी या जुदे२ दरजों का होना ऐसी वस्तु है जिसे पढ़े अनपढ़े बिना किसी से कुछ इशारा पाये सब आप से आप समझ सक्ते हैं क्योंकि ऐसा कौन है जो समाज मे अपना स्थान या दरजा न पहचानता हो—अब देखना चाहिये उत्तम मध्यम अधम इन तीनो मे समाज की स्थिति किसपर अधिक निर्भर है समाज का बल तीनो मे एकसा रहता है अथवा कुछ न्यूनाधिक इस बात के बिचार के लिये सूक्ष्म अनुसन्धान की कुछ आवश्यकता नहीं है किन्तु नित्य के बर्ताव से प्रत्यक्ष है कि ऊंचे दरजे के लोग अर्थात् ऐसे लोग जिन्हे धन का सुबीता रहने से सुख की सामग्री बिना परिश्रम ही या बहुतही थोड़े परिश्रम मे मिलजाती है—ऐसों को

बहुधा उन बातों की चिन्ता करने का बहुत कम अवसर होता है जिन के द्वारा सार्वजनिक या सर्व साधारण का सुख संपादित हो सकता है क्योंकि उन्हे अपने संचित धन का पूरा भरोसा है और समझते हैं कि हमे सुख की आवश्यकीय सामग्री सब सुलभ है तब हमे क्या पड़ी है जो ऐसी बातों के लिये सिरपचावें जो सर्व साधारण के सुख दुख से संबन्ध रखती है और केवल शारीरिक या मानसिक कष्ट सेही सिद्ध हो सक्ती है—धन या सम्पत्ति भी जो उन्होने अपनी निज की गाढ़ी मेहनत से कमाया होता तो उस्के उठाने मे उन्हे कुछ आर होती बाप दादोंनेरातो दिन पच २ न्याय अन्याय का कुछ खयाल न कर कौड़ी २ जोड़ २ मरगये बेटे पोतों का नाम ऊंची श्रेणी मे होही गया बस अब और चाहिये क्या—"एतावज्जन्म साफल्यम्„ तो निश्चय हुआ कि इनसेसमाज की साधारण उन्नति दुर्घट है-अबरहे निकृष्ट श्रेणी या नीचे के दरजे वाले वे बेचारे ऐसी हीन दशा मे रहती हैं कि उन्हे अपना और अपने परिवार का पेट पालना कठिन रहता है तब समाज की उन्नति उनके किये क्योंकर हो सक्ती है-बचे मध्यम श्रेणी वाले सो बिचार कर देखिये तो मनुष्य जाति मे मध्यम श्रेणी बड़े उपकार की है जिसे हम महत्व या बड़प्पन की "नरसरी„ उत्पत्ति स्थान कहें तो कुछ अनुचित नहोगा प्रत्येक "डिपार्टमेंट„ विभाग मे जितने बड़े लोग हुये हैं सब इसी श्रेणी के हुये प्राचीन समय मे युनान और रोममे बड़े वावदूक वक्ता डिमास्थनीज् और सिसिरो इसी मध्यम श्रेणी के थे सुकरात अरस्तू आदि बड़े प्रसिद्ध फिलासोफर हमारे देश के अनेकानेक महा महर्षि व्यास बाल्मीकि अंगिरा परासर प्रभृति कब बड़े अमीर कबीर के घराने मे जन्मे थे—शेक्सपियर मिलटन गोल्डस्मिथ एडिसन जानसन आदि बड़े सुविख्यात लेखक और कवि जिन्हो ने अपनी अलौकिक लेख चातुरी से अंगरेजी सी कर्कश कठोरराक्षसी भाषा को सकल विद्या और उत्कृष्ट बुद्धिमानी का भांडार गढ़ बनादिया कब किसी शाही घराने मे पैदा हुये

थे वरन अत्यन्त गरीबी मे पैदा हुये और गरीबी ही मे मरे भी—हमारे यहां कालिदास जयदेव भारवि तुलसी बिहारी आदि कविवरों की मंडली मे राजा या धनाढय कै कवि हुये हैं—शादी हाफिज, फिरदूसी आदि जन्म के भिखारी और मुफलिस थे—शङ्कराचार्य रमानुज कबीर नानक कृष्ण चैतन्य आदि बड़े २ संस्कार कारक जिन्होंने देश का देश अपने अनुयायीकर डाला किस बड़े श्रीमन्त सामन्त के घर जन्मे थे हाल मे थियोडर-पार्कर मिल बेन डारबिन आदि महा बुद्धिमान् फिलासोफरोंमे एक भी बड़े सुबीते वाले धनियों की कोटि के नथे—वेकन गैलिलियो आदि ईजाद करने वाले जिन्होने आधुनिक विज्ञान सम्बन्धी अनेक सिद्धान्तों का तत्व निकाला है कोई भी ऊंचे दरजे के अमीरी घराने मे नही पैदा हुये थे—हमलोगों की आपेक्ष बंगालजी आगे को कदम बढ़ा चाला है वह इसी मध्यम श्रेणी की कृपा से—रायमोहन राय अत्यन्त अनुपम कुलमे जन्मे थे बाबू केशवचन्द्र किस बड़े अमीर के लड़के थे क्रिशटोदास पाल अत्यन्त निकृष्ट कुल के थे पुण्य श्लोक विद्या सागर महाशय हमारे देश मे सुगृहीत नाम स्वामी दयानन्द सरस्वती कौन से बड़े धनवान कुलमे पैदा हुये—बाबू हरिश्चन्द्र की एक वारको यह उक्ति अत्यन्त ही सयुक्तिक हमे जचती है कि शास्त्रकारों ने सरस्वती का वाहन हंस और लक्ष्मी का वाहन उलूक ठहराया है जिस्का यही तत्व हैकि धनवान् लक्ष्मी के कृपा पात्र होते हैं इस लिये सदासे उल्लू होते आये और हंस के अर्थ हैं श्रेष्ठ के इसी लिये जो लोग केवल सरस्वती के कृपा पात्र हैं वे सदा से आचारण और बुद्धि मे श्रेष्ट ही होते गये सच पूछिये तो ऊंचे दरजे मे नाम लिखाना पद पद मे भयङ्कर बिपत्ति और बड़ी बला है इ,ज्जत और नाम के अनुसार रहने को घर बड़ा सा चाहिये फर्श फरूश शीशे आलात आराइश के लिये क्यों नही अमीर हैं एक पगभी पैदर कैसे चलैं गाड़ी घोड़ा ज़ुरूर चाहिये दस यार दोस्त दस्तरखान के शरीक नहोंतो अमीरी मे दाग लगता है—दरबार मे कुरसी मिलनीही चाहिये हाकिमो की खुशामद करते२ नाक मे

प्राण आलगा है कलट्टर साहब की हांमे हां नमिलावें तो म्युनिसिपल कमीश्नरी छिनजाती है रईस आज़म बड़े से बड़े ताल्लुक़ेदार हैं चन्दों मे भी सब से बढ़कर और सब से पहिले इन्हीं का नाम होना चाहिये बार२ कांखते हैं भीतरही भीतर मसोसकर रहजाते हैं पर क्या करें इ़ज्जत बड़ी है हाकिमो मे रसाई है क्योंकर दुम दबाय बाहर होसकते हैं इतनेसे आप टटोल सकते हैं हमारे यहां की उच्च श्रेणी काक्या स्वरूप है पारवश्य और परतंत्रता की बेड़ीमे सब ओर से जकड़ी हुई उच्चश्रेणी कैसीअकिंचितकर होरह है—विलायत के समान हमारी भी मध्यम श्रेणी जब भरपूर ज़ोर पकड़लेगी इनेगिने ऊंचे दरजे वालों को लात मार सुशिक्षा का पूर्ण वैभव प्राप्त कर सब कामो मे पहिले अग्रसर होती रहेगी ईश्वर करे वह दिन बहुत जल्द आवे उस समय हमाराभारतनयाजन्म पाकर नयेसंस्कारों से उद्भावित हिमनिर्मुक्त शशि प्रभा के समान अपने रसिक चकोरों कोअसीम और अद्भुत आनन्द देगा परन्तु नजानिये किसबड़ भागी को यह सुख देखना बदाहै अभी तो नजानिये कैफसल कटजाने के बाद यह भविष्य बाणी का पूरा होनासमय राज की बही के अनादि अनन्त पत्रे मे लिख दिया गया है हमारे लिलार मे इस अनन्द का अनुभव करना नहीं दिवा गया तोक्या किया जाय।

। खड़ीबोली के पद्य।

मुज़फ़रपुर निवासी बाबू अयोध्याप्रसाद को अनेक धन्यवाद है जो खड़ी बोली को पूरा सहारा देरहे हैं और तन मन से इस्के उद्धार मे प्रवृत्त हैं बहुत सा धन भी एतद्विषयक पुस्तकों के छपाने मे उठा रहे हैं ये सब गुण इनके अत्यन्त सराहने के योग्य हैं अब रहा खड़ी बोली के गद्य और पद्य के संबन्ध मे सो गद्य चाहो जैसी भाषा का देवनागरी अक्षर मे लिखा हो मै सब को हिन्दीही समझूंगा हमारी गद्य भाषा जहांतक और जैसे बढ़े सब हमे स्वीकृत है उत्तम भाव का प्रकाशक कोई लेख होगा पढ़कर या सुनकर प्रसन्न होंगी हिन्दी भाषा के भाण्डार के अन्तर्गत उसे करेंगे निकृष्ट या

२९३

सामान्य होगा मौन साधे रहेंगे—पर अपनी पद्यमयी सरस्वती को मैली नहीं किया चाहती —"सूरदास की कारी कामरी चढ़े न दूजो रंग,, पद्य रचना सरस्वती को यवनी का संपर्क या साथ न कराके जिस रंग मे वह रंगी है वही उसे सोहता है—"मुरारेस्तृतीयः पन्था,,—"गोकुल गांव को पैंड़ोन्यारो,,— कविता के जिस मार्ग पर सूर तुलसी भूषण मतिराम बिहारी पद्माकर से आरंभ कर बाबू हरिश्चन्द्र तक चलचुके हैं उसी को हम पद्य या उत्तम काव्य कहेंगे—क्योंकि हमारी समझ से जगन्नाथ पण्डित राज से संस्कृत काव्य का छोर होगया और बाबू हरिश्चन्द्र के उपरान्त भाषा की कविता अस्ताचल को पधारगई— भांत२ की स्टाइलों मे बंटी हुई यह भी यदि कोई कविता है तो "अम्मा तोर बेटौना सांड,,— "मुखड़ा तोहार देख चंदरमा लजातवा। झौआपाड़ा है खेत मे काका रिसातवा,—इसे भी हम कविता कहेंगे क्योंकि वाचक लुप्ता धर्म लुप्ता आदि उपमाओं के अनेक भेद मे एक प्रकार की उपमा इस्मे आती भी है—पहले मे सांड की उपमा "बेटौना,, मे—दूसरे मे मुखड़ा देख चन्द्रमा का लजाना प्रतीपालंकार पूरी तरह पर पाया जाता है— दो चार ठठोल लोगों की अंड बंड लिखावट का नाम भी जो पद्य या कविता रक्खाजाय तो काव्य प्रकाश मे मंमट भट्टने काव्यादर्श मे दण्डी ने साहित्य दर्पण या कुवलयानन्द और चन्द्रालोक मे उन २ ग्रन्थकारों ने व्यर्थही इतना सिर पचाया और रस तथा अलंकार भाषा औ भाव आदि काव्य के विविध अंग को छान बीन करते २ साहित्य को समुद्र के समान विस्तीर्ण कर डाला— ग्रन्थकर्ता बिहारबन्धु की समालोचना अपने मत के अनुमोदन के लिये उचित करते हैं —

हिन्दी कविता को ऐसी हीन दशा मे पाते हैं इसका क्या कारण है? भाषा निरीगन्दी निरीगवांरी व्याकरण के नियमों से बिल्कुल बिरुद्ध पाई जाती है— शब्दों को वाक्यों को कवि जैसा चाहता है मरोरता है ऐंठता है पर कोई जरा चूं नहीं करता,—

उर्दू को टांगतोड़ने वाले बिहार बन्धु संपादक हिन्दी का रस क्या जानें जो हिन्दी कविता को हीन दशा मे कहते हैं-हिन्दी मे सिवाय कविता के अभी और है क्या-क्या सूर तुलसी के गंभीर भाव शेक्सपियर मिलटन से कुछ कम हैं तब हिन्दी काव्य क्योंकर हीन हुआ ? गन्दी गंवारी भाषा से कदाचित् संपादक महाशय का शाइस्ता उर्दू से तात्पर्य है जो आपको गन्दी और गवांरी है वही भाषा हम लोगों के लिये शुद्ध हिन्दी और पुष्ट भाव उत्पन्न करने वाली है— व्याकरण कवियों के आधीन है कवि मण्डली व्याकरण के आधीन कभी नहीं रही यह क्रम प्रत्येक भाषा का है-दीक्षित और नागेशआदि संस्कृत के प्रौढ़ बैयाकरणियों ने हजार२ प्रयत्न कवियों के प्रयोगों को व्याकरण के सूत्र के अन्तर्गत करने का किया जब कुछ नचली तो चुपहोजानाही अच्छा समझा-पाणिनि जो आदि बैयाकरण हैं उन्हे भी बिश्वामित्र प्रभृति कवियों के आर्ष प्रयोगों के लिये "मित्रेचर्षौ„ आदि कितने सूत्र गढ़ने पड़े हैं तब सिद्ध हुआ कि पहले भाषा बनले तब उसका व्याकरण बनता है इसी से कवियों का निरंकुशत्व सर्बत्र स्वीकार किया गया है भाव या गंभीर अर्थ को पुष्टि के लिये उन्हे अधिकार है शब्द को जिस तरह पर चाहें ऐठैं मरोरैं बरन जहां केवल शब्द चातुरी है अर्थ चातुरी पर ध्यान नहीं दिया गया वह अधम काव्य मानागया है—अस्तु बाबू अयोध्याप्रसाद को खड़ी बोली का पद्य अत्यन्त रुचता है तब हमारे लिये उनका उत्साह भंग करना महापाप कर्म है किन्तु पुरानी रसीली कविता के प्रेम परवश हो उर्दू के ढंग की रूखी और फीकी खड़ी बोली की कविता पर मन मधुप लुभाताही नहीं तो क्या कियाजाय ।

" नहि प्रफुल्लं सहकार मेत्यवृत्तान्तरं कांक्षतिषट् पदाली„

। ऐसे पूत बनिज को जैहैं हाथ की रोटी कुत्ते खैहैं ।

हाल मे बनारस के उमाशंकर मिश्र विलायत बेरिसटर होने गये हैं जिन्होने वहां पांव रखतेही लन्दन के टइमस नामक

दैनिक पत्र में कान्ग्रेस के विरुद्ध एक चिट्ठी प्रकाश किया है जिसे १९ जून के पायोनियर ने छपालाई हम लोगों के प्रति कूल अंडबंड जो मन में आया कहसुन डाला है और वह यह है—

The proportion of the educated class is very insignificant to the uneducated perhaps a drop in the ocean; consequently there is no touch between the enlightened and the unenlightened; and hence it is inpossible for the farmer to represent the latter

"हिंदुस्तान में शिक्षित लोगों की श्रेणी अशिक्षितों की श्रेणी की अपेक्षा अत्यन्त अल्प है शायद समुद्र में एक बूंद के माफ़िक़—इसलिये प्रद्योतित शिक्षित श्रेणी का अशिक्षितों के साथ कोई संसर्ग नहीं है तब यह क्योंकर संभव है कि प्रद्योतित हृदय उन अशिक्षितों के प्रतिनिधि बन कान्ग्रेस के आन्दोलन में प्रयत्तहों इत्यादि,,

इसपर हिन्दुस्तानियों के जानी दुशमन पायोनियर जो काले नाग के समान हमें सदा डंसा करते हैं अंड बंड बक हंटर साहब के कान्ग्रेस पक्षपाती लेख को Apieceof nonsence "विक्षिप्त प्रलाप,, ठहराय कहते हैं हंटर साहब का लेख क्योंकर सही और मोतबिर समझा जाय जब यहीं का एक हिन्दू अपने समाज की आभ्यान्तरिक दशा इस तरह पर प्रगट कर रहा है—हम भी कहते हैं पायोनियर को इसका क्या ज्ञान है जो समझ सकें कि उमाशंकर तथा उनके कई एक साथी हमारी समाज के साथ किस प्रकार का वर्ताव रखते हैं—इन्होने अपनी शिक्षा का यही फल समझ रक्खा है कि जहां तक होसके देश की बुराई करने में न चूकें जिस तरह पर अंगरेजी कर्म चारी हम से खुश रहें वह अवश्य करें देशी लोगों के साथ हमदर्दी रखना कैसा बरन जहांतक इन्हें काटते बन

पड़े काटें --अलवत्ता हमारी प्रद्योतित शिक्षित समाज मे ऐसे लोग निस्सन्देह अत्यन्त कम समुद्र मे बूंद के समान हैं-ऐसों को तो हमारी शिक्षित अशिक्षित समाज कोई भी अपना प्रतिनिधि नहीं करेगी—बिलायत गमन के पक्षपातियो वधाई बजाओ ऐसेही ऐसे बिलायत जाने वालों से आपका यश और कुल उजागर होगा।

। पबलिक ओपीनियन ।

पहले के भागी से

अब यहां पर यह दिखलाया चाहते हैं कि पबलिक ओपीनियन का दृढ होना सामयिक राजा पर विशेष निर्भर है जो राजा अन्याय पर प्रवण चित्त होता है और अपना ही भला चाहता है वह अवश्य इसका बिरोधी होता है—भारत वर्ष मे तो यह बात बहुत ही प्रत्यक्ष है--जब मुसल्मानो का राजया बादशाह सलामत अभिमान और ऐयाशी मे चूर बिद्या और न्याय दोनो के पूरे वैरी जो चाहा हुक्म देदिया कोई पूछने वाला नहीं जो बोला सो मारागया खुशामदियों ने हाथ जोड़ कहा हुज़ूर बहुत ठीक है "पासा पड़े सोदांव राजा करै सोन्याव„—धर्मशास्त्र कानून हुज़ूर का मुख है चलो हो चुका —सैकड़ों वर्ष तक देश इसी क्रम पर रहते २ परिणाम यह हुआ कि प्रजा सर्वथा निर्बल निर्विद्य और डरपोक होगई जिसका संस्कार अब तक उन के चित्त से नहीं हटा अब इस समय बहुत तरह की स्वछन्दता और कानून का अतिशय अधिकार होने पर भी छोटे से छोटे राज पुरुषों का भी अत्याचार चुप चाप सहलेते हैं ज़रा भी बोलने की हिम्मत नहीं करती कभी को कानूनों की बारीक एच पेच न समझने के कारण चुपके हो बैठ रहते हैं इस कारण भी किश्मत और पुलिस के चक्कर मे कौनदड़ भयङ्कर अत्याचार सहलेते हैं—इसी सब का परिणाम यह हुआ कि इन के रुधिर मे गरमी या जोश कहीं नाम को नरहा पांव की धूर से भी अधि

क गये बीते होगये हज़ार२ चिल्लाओ जगाओ कभी न कान देंगे तब पबलिक ओपीनियन का तात्पर्य और मर्म ग्रहण करना तो इन्केलिये बहुत ही बहुत दुर्घट वरन असंभव है दूसरे अनगिनत मज़हबी और सामाजिक व्यर्थ के प्रतिबन्ध इन के साथ ऐसे लगे हैं कि वे इनमे स्वछन्दता और आज़ादी का दखल नहीं होने देते बाल्य विवाह इत्यादि कुसंस्कार जुदा इनका गला घोंट रहा है भाई बिरादरी मे नाक लाज का खयाल प्राण का गांहक हो रहा है गुरू लोग एक ओर से नोचे लेते हैं पुजेरी पंडे कुलपूज्य पुरोहित अलगही कसके इन्हे अपने पंगुल मे दबाये हुये हैं—अस्तु इतने पर सव था निर्जीव न हो कर अपना समय काटते थे सो अब इस अंगरेज़ी राज्य की महीमा ने उस तरफ से भी इन्हे निर्जीव करडाला—इस दशा मे गवर्नमेंट की ओर से सर्वथा असहाय और निरावलंव हो कर्मचारियों की दुष्ट पालिसी से बराबर लड़ते पबलिक ओपीनियन की ओर जो कुछ करैं वही गनीमत है इति।

। कानग्रेस निदान ।

। कड़खा छन्द ।

श्री गनेस को पहले सुमिरों फिर बिसमिल्ला औ रहिमान ।
अग्नि देव अरु बुद्ध गाड को—सब मिलि करैं देश कल्यान १
जय जय बिजय धारिनी देवी—सबकी स्वामिनि कैसरहिन्द ।
जेहि प्रभावतें अभय चराचर —ध्यावत मुनिजन श्रीगोविन्द २
जगत भलाई को कारन है—राजा नीतिमान गुन गात ।
सागर बाढ़ै जिमिचन्द्रालखि-नृपहि निरखि तिमि प्रजा सुखात ३
जगत निआई होत न राजा —अरु मांझी बिन होत जहाज ।
कैसे काम चलत दुनिया को —क्योंकर उतरत पथिक समाज ४
पालै धरम सहित रैयत को—अरु दुसमन सों जीतै कोट ।
प्रजा प्रजापति सम तेहिजानैं —डरसे तजैं लोग मग खोट ५

बादशाह रैयत को पालै—रैयत नृपको करै सहाय ।
दोनो सुख भोगैं दुनिया में—कीरति देस देस चलिजाय ६
हमरी कैसर हिन्दभवानी—हमपर राखत नेह अमोल ।
जेहि प्रभावतें जोभविचारो—सुख से कहै भाव सब खोल ७
नेशनल कांग्रेस को रस चाखहु—भाखहु अपनी मति अनुसार ।
ढोल बजाय कथा यह गावहु—धावहु निज हित हाट मझार ८
जेहि कारण तें कारज उपजै—ताको पंडित करैं निदान ;
नेशनल कांग्रेस को कुछ मतलब- अब सुनलो सब कृपानिधान ९
सबमज़हब के मानुष मिलिके- जो कुछ जोड़ैं सभा महान ।
अपनी गति मति छान बीन के—ताको फिर सब रचैं बिधान १०
इक मतह्वै के बादशाह से अपनी बिनती करैं पुकार ।
होय सुनाई सब रैयत की—तिल तिल छान करै सर्कार ११
सकल भांत अनरीत मिटावे–जुलुम जोर को देय बहाय ।
राज करै फिर मजबूती से—बाढ़ै रिद्धि देश हर्षाय १२
नहिं कांग्रेस कोउ कटहा कूकुर—नहिं कांग्रेसकोउ बुरीबलाय ।
कांग्रेस प्रजा राज हितकारी—जो जगदीश्वर करै सहाय १३
अरथ बतायों यों कानग्रेस का- अब कुछ थोड़ा सुनो निदान ।
जिस्के कारन यह पैदा भै —मानुष जनकी सभा महान १४
सुख दुख मे सबहोत इकठ्ठा—यह मानुष का सहज स्वभाव ।
सुगति भलाई आपनि सोचैं—मिलि झुलि करैं मित्रको भाव १५
सतयुगत्रेता अरु द्वापर मंह–रही जगत हित ऋषी समाज ।
मंडल बांधि२ तीरथ मंह—बहुजन मिल कीन्हे शुभ काज १६
देव दनुज मिल कियो कानग्रस- मथ्यो समुंदर को झकझोर ।
भांत २ के रतन पदारथ–सब भाईन मिल लियो बटोर १७
सुरगण सुखभोग्यो भारत मे—दानव सब मिलि बसे पताल ।

दोनो लहे ज्ञान बहुबिद्या—मणिरत्नाकरओज बिशाल १८
कोऊ निबसे ऊंचे पर्वत—कोऊ समथल धरा बिचार ।
कोऊ बस्यो जाय टापूमे —घेरे चहुंदिशि सागर खार १९
एक पिता के सब बालक हैं—कोउ काले कोउ रंग मे गोर ।
चाहो जैसो मज़हब माने —चाहे रखैंचाल कुछ और २०
मानुष मानुष सब एकै हैं—सबके सदृश तुल्य मुख भाल ।
सींग पूछ काहू के नाहीं—नहिं पछी सम पंख बिशाल २१
मेल करैं क्यों ना आपस मे—सब भाइन संग प्रेम रसाल ।
क्यों ना अपना पथ्य बिचारैं—क्यों ना करैं नीति प्रतिपाल २२
छाती फाटे क्यों दुष्टन की—क्यों राकस जन करैं उपाधि ।
क्यों मानुष मन भाव बिगाड़ैं—क्योंसुख बिच उपजावें व्याधि २३
सांचहु पाप अठारह बिस्वा—दोबिस्वा है पुन्य प्रधान ।
यह चरित्र कलियुग ठाकुर का—जेहिना रुचै न्याय की कान २४
कलियुग हू मे सतयुग की अब—अन्तर्दशा लखैं बुधिमान ।
राज बिराजै महरानी का—जिनका नीत धर्म बलवान २५
दाईपोसत ज्यों बालक को —भांत २ को करत सनेह ।
देखि कसूरी करत ताड़ना—फिर लायक लखि सौंपत गेह २६
यही दशा है अब भारत की—सुनलो सज्जन चित्त लगाय ।
प्रथम कंपनी ईष्ट इंडियन—बालक पन मे कियो सहाय २७
गदर काल मे देखि उपद्रव—बरसायो अति कठिन चपेट ।
फिर अपनायो महरानीजी— अपुन सुतन को अवगुन मेट २८
गुन बिद्या बहु भांत सिखायो—कीन्हे राज काज के योग ।
बड़े २ साहब को भेजि—रैयत को मेटैं सब सोग २९
भारत बासीनित गुन गावत—महरानी को शंख बजाय ।
जो हैं दयामया की सागर—आखिर सकल प्रजा की माय ३०
क्या कीजे वह निज नयन सी—भारत खंड लखो नहिं हाय।

अपने राज कुंअर को भेज्यो—सोलखि कुगति गयो पछताय ३१
जुलुम जोर नहिं होय प्रजा पर—उनके मन यह रह्यो बिचार।
पार्लीमेंट कहाना माने—जो चाहे सो करै प्रचार ३२
मन माने का सैंवर हेरै—मनमाने का रचै कनून।
टिकस भांत २ का लावे—नहि सोचै कछु जून कुजून ३३
हाकिम बनिके जो नित आवें—सो तो भरे अधिक अभिमान।
भेड़ वकरियों के सम समझैं—नेटिव सभी निपट अज्ञान ३४
उनकी संमत चले न पावे-जेहाकिम कुछ नीति निधान।
याते भारत गारत दिनदिन—सबकिसान जिमि पिसत पिसान ३५
रिपन गवर्नर जेनरल आये—जिनका प्रजा करत गुन गान।
ऐसो मंत्री महरानी को—चहिये जोनृपनीति निधान ३६
सो तो बिरल कृपा के बादर—बरसैं सुख संपति मय नीर।
ऐसे राज पुरुष बहुआवें—मारैं ताकि प्रजा हियतीर ३७
घर बकरी हतिबनैं अहेरी—बूझैं नहीं प्रजा का नात।
जो रैयत के रखवाले हैं—सोई नित्य करैं उत्पात ३८
रोवैं साह चोर गन हुलसैं—नित अनीति से प्रजा नसात।
बंगले २ पर वे दौड़ैं जिनकी ऊंची खुशामद बात ३९
अच्छे जनको रखवाओ मे—कौनिउभांत होय नहि योग।
कुपढ़ कुपूत लहैं रहाका—ओहदा मचै देश मे सोग ४०
चोरों के संग करैं मुहब्बत—रैयत घर लगवावैं सेंध।
होय रिपोट लिखैं कुछ औरै—रिशवत की बूड़ै बिसेंध ४१
मलि मलि हाथ सदा से तरसैं—अच्छे अन्य मिलैं ना कोय।
देशी भाषा की दुर्गति है—साहब हंसै देश बहु रोय ४२
सोई कबिवर सोई मुन्शी सोई सब गुन कलानिधान।
सोई एक मुनाफा पावै—डइरेक्टर सों हो पहचान ४३

सोवैं ग्रन्थ छिमावें रोवैं -डइरेक्टर के दफ्तर मांझ ।
यार हिक्मती काम निकालें — सांचहु पठन सरिश्ता बांझ ४४
बन्दोबस्त की सुनो हकीकत —रोटीलिये प्रजा से छीन ।
दुनिया मरै भूख के मारे— दिन २ होंय लोग बल हीन ४५
बेदखली के डंडे बरसैं—अरु बेग्रो के अंकुश मार ।
मददगार है माल अदालत—नित२ कृषी करत संहार ४६
प्रजा कान मे कहै कनुनवा—तुम्हे खेत हम देब दिलाय
लड़हु भिड़ौ तुम ताल ठोंक के- खेती का सब तार नसाय ४७
बन्दो वस्त की बात नियारी - जो धरती को लियो निचोड़ ।
एक बूंद नहिं बछड़ा पावै-रोवै खड़ा चारहू गोड़ ४८
महगी चमकै बढ़ै बिमारी - रैयत मरै कवन रखवार ।
निज२ स्वारथ के सब साथी —स्वामिनि बसै समुन्दर पार ४९
बिगड़ी रैयत निज टंटामे—जग दारिदका बजा निशान ।
उद्यम हरयो बिलायत बासी -फाकौ धूर रहो बिलखान ५०
देश कमाई गै काबुल मे—वर्मा कियो युवक संहार ।
नोन तेल सब जिनिस मसाला—सब पर टिकस कियो संचार
नित नव नाम रूपसों प्रगटै—देश लोग को करै प्रहार ।
नौ नेगहरी कुल्हाड़ाआठै—कैसे सहै अवनि दुख भार ५१
घाट बाट पर चुंगी गरजै—छण २ करै प्रजा पर चोट ।
प्यादे सबो बने सहजादे—सुंग्री मिल झुन करैं खसोट ५३
सत्तू चून चबेनाहू पर—खोंची लेहिं पथिक कोमारि ।
डाढ़ी बाढ़ी बेरहमी की — भाग्योअदलजानि निज हारि ५४
चुंगी चरित कहांलौ कहिये —पुलिसौतें है अधिक कठोर ।
गाली मंत्र पाठ है जिनको—करमठ खास जुलुमको जोर ५५
मार पीट बल जिनको हासिल—बांधे पटका लाल सफेद ।

दीन सरापैं बादशाहको—सज्जन करैं सदा सुनि खेद ५६
होले हौले हौली बाढ़े —कलवारिन को बढ़े कपाल ।
बिगड़े खिलकत पान दोषतें-.चौपट होय धर्म अरु माल ५७
गिनती घटी जाय बैलों की—हतो जाय गौओं का झुंड ।
गोरस लोप होय दुनिया सों—भूखों मरैं प्रजा हति मुंड ५८
दिन२ अन्न मिलै नाहेरे —खेती अधिक बिगड़ती जाय ।
कहं तक सकल गिनावहूं किन्नन- छोटी बात कही नहिं जाय ५९
सुनै न देखै कोउ ऊपरको—जो कुछ उठै प्रजा की टेर ।
बे परवाही राजपच्छ से-पग२ मची निपट अन्धेर ६०
या कारण मदरास बंबई कलकत्ता के बहुगुनवान ।
अटुरि बटुरि के मजलिस जोड्यो—हिन्दू मुसल्मान क्रिस्तान ६१
ताको देख घिगाड़न दौड़े—थाऊ घप्प अर्थ के दास ।
खरी खुशामद से जे बाढ़े सो तो चहैं देश को नास ६२
जे नर निपट खुशामद टट्टू-गौं से सहैं सबै फटकार ।
बनुआ खान बहादुर राजा—ढूढत फिरैं ऊंच अधिकार ६३
छल बल करि नित प्रजहि सतावैं —जोबुढ़िया का लूटैं सूत ।
ते कानग्रेस के भये बिरोधी –घरके बने खरे रजपूत ६४
उनकी तभी भलाई जग मे – खासी मची रहै अन्धेर ।
मेल नहोवै सब रैयत मे—सोई जुगुत करैं फिर हेर ६५
जो बिसुआ के मांग सवांरैं—खेलैंजुआ जुआरिन संग ।
झूठा नित्त मुकद्दमा लावैं –साने रहैं कपट के रंग ६६
पंचाइत के पास न जावैं- कांग्रेस को जानै जिमि काल ।
हाकिम जन से कहैं न सांची—एकशिफारिस को प्रतिपाल ६७
बाढ़ी फूट लूट भारत मे- सांची विद्या गई लुकाय ।
बेद शास्त्र की चर्चा नाहीं-छलबंचकता नित अधिकाय ६८

धरम ग्रंन्थ की शुभ परिपाटी–सब धंसि गई धरा के बीच ।
फैला अधरम नर नारी मे जहांतक रहे कर्म अति नीच ६८
जानत रहे सकल नरनारी—ऋणहत्या है पाप पहार ।
बिना दिये नहिं छूटत कबहूं–तेहि अब समझ लियो रोजगार ७०
ऋण जब मेटिलेहिं पुरखन को–तब सुत गया करनको जाय ।
सो अब पूत बलिष्टर ढूढ़ैं–कवनिहु यतन हजम होइ जाय ७१
कहां तक कथा कहौं कलिजुग की –जहं देखौ तहां मचा फरेब।
करनी समझत साध सन्तकी–मन मे धसत दुःख अवरेब ७२
जो विरक्त बन त्यागी बैठे–माला तिलक नयन रत नार ।
सेवक सती जिन्हे नित सेवैं–जेवैं विविध भांत जेवनार ७३
मन माने को दौलत जोड़ैं–फिर वह करैं कर्म अति खोट ।
को कहि सकै गुरु की निन्दा–बाबा सिद्ध तोंद के मोट ७४
यही वारता उपरेहती मे–तीरथ मंदिर को व्यौहार ॥
मंत्र संकलप शुद्ध न पूंछै––केवल धूरतपन बौछार ७५
चेला मूड़ैं नागा खाकी बैरागी औघड़ बहुपंथ ।
वेद शास्त्र को कोऊ न पूछै–मन माने का रचैं कुपन्थ ७६
कड़ी कमाई जो रैयत की—ताको खांय मुफत ललकार ।
भांत २ को कुकरम ठानै —ब्रह्मचर्य को करैं खुआर ७७
धरम तरीका यों सब चौपट–कहंतक कीजे सकल बखान ।
दूजे व्याह रीति अति बिगड़ी–जातें नसत देश कल्यान ७८
कहुंतो चार बर्ष की कन्या—व्याही जात वृद्ध के साथ ।
कहुं चालिस बर्षहु के बीते—क्वारी रहै टोय निज माथ ७९
बिसुवा पहिनै पाट पटंबर–दुलरी तिलरी मुक्ताहार ।
फटा पुराना लै तन ढांपै –व्याही रोय रक्त की धार ८०
कहो कनून कवन दुनिया मे–जो उनकी नित करै सहाय ।
चमकी हटिया व्यभिचारिनकी– नित२ नवचरित्र अधिकाय ८१

सतो धर्म तो सत्य लोकको -सोग सहित जब किये। पयान ८२
को कहु लंपटता की करनी -धरनी नित २जाय दवान ८३
बढ़ी वकालत रे शठता की-क्यारी भरी कमाई क्यार ।
न्याय सभा की यह हठविद्या - दिन२ मिलै माल बिसियार ८४
कोर्ट फीस की होय तरक्की—साखी चहै जहन्नुम जाय
जितना खरचैं रुपया पैसा उतना न्याय लेंह तौलाय ८५
कहै बलिस्टर तुम क्यों सोचो-सबरो खेल हमारे हाथ ।
साच झूठ को कवन विचारै—जयती वसै बूत के साथ ८६
मनचस्टर के बढ़े जुलाहे —जिनके कपड़े को कर माफ ।
भरत खंड की सब चीज़ों पर —लगो राज कर यह इन्साफ ८७
बिन हथियार हिन्द के वासी—चोरन को नित देंय असीस ।
मटिया फूस हसाई गरजैं-लिये तमंचे तिस्खे बीस ८८
सबरो लिये फिरैं निशि तस्कर—चोरी करैं सदा ललकार ।
पुलिस मंडली लहर उड़ावें—उलटी सहै प्रजा फटकार ८९
कितने चोर बने पनडुब्बे-ग्रांधैं सांस खींच ले जाँय ।
गहना वाले को लेडूवैं —मरी लाश को देंय छिपाय ९०
भले लोग की इज्जत नाहीं-लुच्चे सोहदे करैं सिंगार ।
शंका शरम रहित नर नारी—दिन२ अधिक बढ़ै व्यभिचार ९१
जुआ बहादुर डंका देके-बरहो मास रहैं भर पूर ।
बिन प्रयास नित चांदी बरसे -हरषैं ताल ठोक सब क्रूर ९२
कौन हटावे इन बांकोंको—इनके पास घूंस की तोप ।
चांदी गोला भरि भरि मारैं —फौरन मिटै पुलिस का कोप ९३
उद्यम घटिगा सब दुनिया का—भूखों मरैं अधिक समुदाय ।
कोउन पूछै अमराफन को-गल्ला सुवरन मोल बिकाय ९४
दिन२ नित्य दिवाला निकलैं-कोठी कार बार कहुं नांहि ।

सर्कारी मनिआर्डर चमका—साहूसेठ रहैं पछताहि ९५
गोरस महंग मिलै दुनिया मे— घीमे चरबी देत मिलाय ।
नेम धरम बिगड़ा सबहिन का—कोउ न समरथ होत सहाय ९६
मुलुक बीच नहिं मिलै मजूरी—चढ़ि जहाज टापू मे जांय ।
भांतिर की दुर्गति भोगैं—पशुसम बिकैं मनुष समुदाय ९७
जो भारत धन रत्न शिरोमणि—रहागुणी बल बुद्धि निधान ।
सो मजूर बनि छुधा विकलव्है—मोरिशस टापू करैं पयान ९८।
जो सागर से काढ़ी लक्ष्मी—चौदह रत्न सहित यहि देस ।
सो सासुर तजि गई नैहरे—यातें सब नर भये भदेस ९९
जो रण धीर बीर व्यवसाई—सो मजूर बनि पालैं पेट ।
कहुं चाकर बनि सीस कटावैं—दारिदको अति दुसह झपेट १००
जो जहान मे धरम धुरन्धर—ज्ञानी दयावान गुन पूर ।
दुर्गति देखैं वे भारत की—सांचे सरल प्रकृति के शूर १०१
बहु प्रवीण जन भये इकठ्ठा—पंचाइत जोड़े इकठौर ।
सब लोगन को होय भलाई—ऐसो करें यतन कोउ गौर १०२
ऐसी २ बहु कुरीत को मेटन मे जो होंहि सहाय ।
जिनसे राजा रैयत राजी—सोजानों कांग्रेस समुदाय १०३
जातें झूठ गवाही छूटै—अरु सब मिटै जाल ब्यौहार ।
उचित कनून होय वहजारी—सज्जन बुध पावैं अधिकार १०४
नेशनल कांग्रेस जहं जहं बैठा-तहं तहं कीन्हो विविधि बिचार।
हिन्दी उर्दू अंगरेज़ी मे-कागज़ छप छप भयो प्रचार १०५
जे कांग्रेस के प्रगट बिरोधी—उन कर अब कुछ सुनो हवाल ।
जैसे सूरज की किरनो को—उल्लू समझ लेय निज काल १०६
धवल चांदनी देखि उचक्के-तस्कर गण बहु करैं बिखाद ।
बुलक २ व्यभिचारिन रोवैं—चन्दा सकल बिगारेहुस्वाद १०७
यही दशा भै उन लोगन की—जो कांग्रेस से रखैं विरोध ।

देश भलाई जो ना चाहैं—जिनके अधिक काम औ क्रोध १०८
झूठे खैर खाह मक्कारी—चूतर पीट २ बबराय ।
मेल होन चाहत दुनिया मे—कवनहु यतन सभा रुक जाय १०९
सैयद दौड़े राजा दौड़े —दौड़े मुन्शी बनिज किशोर ।
चट्ट पट्ट एक भट्टहु दौड़े—धर्मचिन्ता मणि लेहुबटोर ११०
भूत कपूता कायर हायी—अपने दल पर करैं कुचोट ।
यही दशा भै अब भारत की—जेती रहे चित्त के खोट १११
भाव कुभाव खुला सबहिन का—गोदड़ मिल झुन्ड किहिस बटोर
कांग्रेस हाथी को अब रोकौ—नहि कछु बनै करहु बहुशोर ११२
सूप बजाये हाथी भागे—ऐसा रचो शिफारिस खेल ।
ऐसी गुटबांधे सब [illegible]—कवनेहु भांतिहोहि नहि मेल ११३
काम हमारो सधै हमेशा—जैसी सई शिफारिस जोर ।
मंत्र खुशामद को हम जानै—कांग्रेस कठिन कायदा घोर ११४
सटर पटर अरु लल्लो पत्तो — किये काम बंगले पर होय ।
न्याय कायदा से क्या मतलब—चाहो मुल्क मरै सबरोय ११५
वे चाहैं इन्साफ कायदा जो भोले नित सहैं कलेस ।
हमरो ठकुर सोहाती को दल—हिकमत सों सुख लहैं हमेस ११६
हमे कांग्रेस की रुचि नाहीं—जितनहि बढ़ै जुलुम औ जोर ।
उतनहि बढ़ै हमारी रोजी—कोनहिं चहै शिफारिस मोर ११७
उलटी सभा करनसे लागी—गढ़ि २ नई बात औ दोष ।
बुद्धिमान एकौ नहिमानै—जिनके हृदय ज्ञान मय कोष ११८
राज भक्ति को बाट न जानै—लालच चाटदिनन अधिकाय ।
सो कांग्रेस के बनै विरोधी —हमरो नाम लिस्ट चढ़िजाय ११९
यह विचार से लालबुझक्कड़— मेटोचहैं स्टष्टि की सोत ।
जैसे पामर जिहि कुल जन्मे—तिसको मिटो नाम औ गोत १२०
बहुत बात खल मंडल कैसुनि—लागै पाप दुःख अधिकाय ।

यातें कथा पापशीलनको—अरुचि शिलातें देहु दबाय १२१
साहब ह्यूम प्रतापी प्रभुवर—कोटिन धन्यबाद के योग ।
जो अंगरेज़ कीर्ति कमला कर—विच कीन्हो रवि किरन प्रयोग १२२
साबित कियो प्रगट दुनिया मे—अंगरेज़हु परमारथ शील ।
मूरखहू जन जो सुनिपावें—गावें गाथा पुण्यरसील १२३
बहुजनजाने रिपन इकल्ले—न्यायधुनाचर भये दयाल ।
ह्यूम महाशय प्रगट दिखायो—इंगलिश दल बहु भद्र कृपाल १२४
जिनसे पाय अमृत शिक्षावल—महु सूखे तरु पल्लव लीन ।
वे सब गये दीन दुनिया तें—जे कांग्रेस सुन भये मलीन १२५
मास दिसंबर मे सोठहे है—इलाहाबाद में जात समाज ।
ऐहैं देश देश के सज्जन— लीन्हे बुधिज्ञान का साज १२६
पर्व बिलच्छण तीरथ पति मे — ठहैहै सकल सुमंगल हेतु ।
जो नर यहि उत्सव मे ऐहैं—उनको रही सुयश को सेतु १२७
सब मज़हब के देश निवासी—मानव स्टष्टि जात के नात ।
देश भलाई के हित ऐहैं— जिनको रुचें धर्म की बात १२८
जैसे वीर मृतक सम लागी—सोवें सकल अंग छितराय ।
जब चेतन की दशा संभालें—तब तनकी शोभा अधिकाय १२९
भारत बीर सुग्धहै सोवें—नहिं सो लखें अंग है कौन ।
अंगहू आपस मे नहि जानें —हम हैं कौनगह्यो क्यों मौन १३०
सो भारत को अंग बतावहूं—सब सज्जन मिलिकरहु खयाल ।
मोहित दशा छोड़ि सब जागहु—अनुरागहु निज अर्थ सम्हाल
हिन्द देशको सिर है ऊंचा —जाको नाम देश पंजाब ।
सुख है काश्मीर जहं उपजी –सुरसति देवी लिये किताब १३१
जहां पांचनद प्रबल बिराजैं—उपजैं धीर बीर बलवान ।
ठहै हैं जाति सभा के साथी —जिनको कौमतरक्की ध्यान १३२

भुजा दाहिनी है भारत की—जाको भाषत दक्षिण देश ।
अस्त्र शस्त्र अरु दान धर्म मे—रुचि युत आगे रहैं हमेश १३४
बायां हाथ देश उत्तर है —दक्षिण भुजको करै सहाय ।
एक धनुष को बढ़ि के थांभै—दूजो खींचै बाण लगाय १३५
पेट भाग है पश्चिम उत्तर—जो क्रश क्षुधा बिकल कंगाल ।
दौड़ धूप देशाटन कारी—भारत पादभाग बंगाल १३६
सोवतहूं मे जिन नहि छोड़ा—यूरप रूस प्रूसको देश ।
सो बंगाल भार सब तन को —करिहै धारण सरुचि हमेश १३७
यह तो हैं सब अंग हिन्द के—एक फूट है रोग महान ।
सो खल डूब जाय सागर मे—होय देश भर सुमति निधान १३८
कांग्रेस द्रोही हैं मद माते—कहते फिरैं फूट जो फूट ।
और न अंगरेज़ जो गुन भावै —केवल धरयो एक सिर बूट १३९
पहली सभा भई पूना मे – दूजी कलकत्ता मे धाय ।
तीजी मंदराज मे चौथी—ठई है प्राग बीच हर्षाय १४०
मास दिसंबरमे चहुं दिशितें—ऐहैं सज्जन सहित उछाह ।
पंडित ज्ञानवान गुन आगर —विद्या सागर बुद्धि अगाह १४१
नगर बंबई मंदराज के—अरु अनेक नगरों के चन्द्र ।
वीर प्रकृति पंजाब निवासी —ऐहैं सभा समझि सुख कन्द १४२
कलकत्ता के बहु बंगाली —पढ़े लिखे गुरु शुक समान ।
विबुध बिहार प्रान्तकेसिल भल –ऐहैं निश्चय सुयश निधान १४३
बौद्ध पारसी जैन मसीही—हिन्दू मुसल्मान गुन मान ।
देश भलाई लगि सबऐहैं –करिहैं बैठि न्याय की छान १४४
लोकपालसम लोकोत राजा—आलस तजि ऐहैं एहिठाम ।
भारी मान प्रतिष्ठा पैहैं—युग २ कीरति रहि है नाम १४५
कांग्रेस नाम पर्व है भारी—जिस्मे नास्तिकहू धरि ध्यान ।

देश भलाई मे धावत हैं—ताको सिद्ध करैं भगवान् १४६
जो बन पड़े जहां लग जिस्से—सब मिलि इस्मे होहु सहाय।
कांग्रेस कथा सुनै यह गावै—जो कोउ सज्जन ढोल बजाय १४७
दोनो लोक बीच सुख पैहैं—जो कोउ पढ़िहैं प्रेम लगाय।
आगम सोची कांग्रेस प्रेमी—जो कुछ पोथी देहिं बटाय १४८
प्राग महातिम मे बर्णन है—आवत रहे नाग यक्षयक्ष।
देव लोक पाताल निवासी—मनुज दनुज तजि भावबिपक्ष १४९
वैसहि मेला यह कांग्रेस का—इस्से बड़ा और को पर्व।
जो जनिहैं सो अवशिहि ऐहैं—पैहैं बिमल मनोरथ सर्व १५०
तीरथ पंडे गेह सुधारैं—यात्री ऐहैं सहित समाज।
देश भलाई प्राग नहावन देखो एक काज दो पन्थ १५१

।सूचना।

पढ़ने वालों के सुभीते के लिये खल्प रक्षा पूर्वक इस कांग्रेस निदान की कापियां अलग भी छापीगई हैं जिनकी जितनी चाहिये मंगालें मोल प्रति पुस्तक –) बाहर वालों को डाक मसूल पड़ने के कारण अधिक कापियों के मंगाने मे लाभ है—जो महाशय कांग्रेस के सच्चे शुभचिन्तक हों उनके लिये ऐसे समयानुकूल ग्रंथों का बांटना और फैलाना अति उपयोगीहोगा।

अजीयगढ़

यह राज धानी बुन्देल खण्ड के अन्तर्गत पन्ना नगर से पश्चिमोत्तर कोण मे सात कोस पर है—यह छोटा सा शहर तीन ओर पहाड़ों से घिरा हुआ है पूरब की ओर टूटा फूटा बड़ा भारी किला है इस्मे बहुत से गिरे पड़े पुराने मन्दिर देखने योग्य हैं जिन्मे चूनेका कहीं नाम भी नहीं है केवल पत्थर पर पत्थर रक्खे हुये देख पड़ते हैं जिनकी नक्काशी और बनावट देख

आश्चर्य होता है मानो साक्षात् बिश्वकर्माने अपनी शिल्प विद्या चातुरी इस्मे प्रगट किया है-यहां श्री सवाई महाराज श्री रणजोर सिंह जू देव राज्य करते हैं सवाई महराज यह पदवी इन्हे सर्कार से मिली है-यशस्वी महाराज की अवस्था अनुमान ४० बर्ष की है इन्के अधिकार मे ८०० वर्ग मील भूमि है जिस्की आमदनी अनुमान ३ लाख के लगभग होगी- उक्त श्री महाराज को दीवानी और फौजदारी का पूर्ण अधिकार प्राप्त है- अंगरेजी राज्य की अपेक्षा प्रजा यहां की सुखी और प्रसन्न देख पड़ती हैं-बस्ती मे सफाई अच्छी रहती है बीमारी बहुत कम होती है हैजे का कभी नाम भी नहीं सुनाई देता--बस्ती के पश्चिमोत्तर कोण मे मैदान है जहां एक बड़ी उत्तम बाग लगी है इस्मे हर तरह के फल फूल काबिली मेवे बादाम पिस्ता नारियर सुपारी चन्दन आदि के वृक्ष भी देख पड़े-आगे इस बाग के बिस्तृत मैदान है जिस्मे महाराज रोज घोड़ा फेरा करते हैं महाराज गोली चलाने मे बड़े निपुण हैं यहां तक कि दो घोड़ों पर सवार होकर ठीक निशाना मारते हैं अब तक महाराजने २० शेर मारे हैं अब अजेगढ़ के पास शेर आतेही नहीं-बिवाहिता रानियों से इनके ३ पुत्र हैं युवराज की अवस्था २२ बर्ष की होगी-युवराज भी बड़े शीलवान् होनहार मालूम होते हैं राजकुमारों के पढ़ाने का महाराज को बड़ा खयाल है एक सुपठित एम-ए—उनलोगों के पढ़ाने के लिये नियत हैं-ये राजकुमार घोड़ा फेरने गोली चलाने और नेजेबाजी मे बड़े पटु हैं-महाराज का प्रजा के सुख चैन और देश हित पर बहुत ध्यान है प्रजा के लिये एक अंगरेजी स्कूल है एक वाला पठशाला भी है एक दवाखाना उस्मे एक हिन्दुस्तानी डाक्तर हैं—अनाथों के लिये सदावर्त भी चलता है—मध्य हिन्दू समाज के उपमंत्री वहां गयेथे एक दिन उनका व्याख्यान भी हुआ महाराज जिसे सुन अति प्रसन्न हुये और मध्य हिन्दू समाज के सहायार्थ कुछ दान देना भी स्वीकार किया-संपादक महाशय मैरी बुंदेलखण्ड की

यात्रा मे यह महाराज मुझे अतिही शूर वीर और उदार देख पड़े यदि और २ राजे भी भांत २ के दुर्व्यसन की निद्रा से जग कर इन्के समान सुचेत होजाते तो देश का कितना उद्धार होता।

बुंदेलखंड-का एक यात्री-

। गवर्नमेंट रिपोटर का पुलिस के आधीन होना ।

ऐसासुनने मे आया है कि पश्चिमोत्तर और अवध देशीय संबाद पत्रों के अनुबादक महाशय डिपटी इन्स्पेक्टर पुलिस के आधीन हो लखनऊ बदले जांयगे —कहां हमलोगों की यह अभिलाषा थी कि यह डिपार्टमेंट हाईकोर्ट की भांत बिलायत के सेक्रिटरी आफ स्टेट के आधीन रहकर स्वतंत्र रिपोर्ट के द्वारा प्रजा का भाव और राजा की स्थिति यथार्थ और ठीक२ प्रगट कर सक्ता सो हमारी उक्त अभिलाषा के लिये यही कहावत आगे आई कि चौबेजी छब्बे होनेगये दुवेहोके आये—पुलिस ऐसे उग्र शासन सरिश्ते की अपेक्षा गवर्नमेंट कितनी उन्नत हृदय और गंभीरभाव गर्भित है जो बहुधा बहुतेरी तुच्छ बातों की ओर दृष्ठयपातनहीं करती गवर्नमेंट मे सहनशीलता आदि गुण अवश्यमेव रहता है नहीं मालूम किस कारण से ऐसे स्वतंत्र और निर्भय रहने योग्य कार्यों का शान्ति शासनाधीकार पुलिस ऐसे क्रूर प्रकृति और असहन शील बिभाग को सौंपाजाता है इसकाभीतरी मर्म कुछ समझ मे नहीं आता कि उसकी आंच रिपोटरी के कार्यालय को अधिक प्रतप्त करेगी या जिनके लिखित भाव का सारांश रूप अर्क निकालकर छोटी बड़ी देशी बिदेशी गवर्नमेटों को चैतन्य चूर्ण की भांत सुंघाया जाता है उनको यह आंच झुल

मावेगी —जो हो सब लोग ऐसा ही समझते हैं कि लार्ड डफरिन के चिरलालितमनोरथ वृक्षका एक यह भी फल है रस जैसा चाहै वैसा निकले।

प्राप्त

। श्री हरिश्चद्राष्टक।

पं-श्रीधर पाठक रचित—हरिश्चन्द्र भक्तों को परमानन्द जनक यह अष्टक उक्त बाबू साहब को चिरस्मरणीय रखने का बहुत उत्तम द्वार रचा गया है पं-श्रीधर पाठक की अनोखी पदयोजना और यमक का ये आठ छप्पै बहुत उत्तम उदाहरण हैं दूसरी बात यह भी लखने योग्यहै कि इन की कवित्व शक्ति केवल खड़ी बोली ही के पद्य को नही उजागर करती बरन प्राचीन प्रणाली के काव्यों को सहारा पहुंचाने मे भी साङ्गो पाङ्ग समर्थ है।

निवेदन

बर्ष पूरा होगया अब हम अपने रसिक पाठकों से निवेदन करते हैं कि कृपाकर वार्षिक मूल्य भेजदें जिस्मे हम बार २ तकाजा करने की झों झट या व्यालयू पेबिल भेजने की बे मुरौ अती से बचे रहैं।

हिन्दीप्रदीप ।

।मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, उपन्यास साहित्य
दर्शन राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पुरित प्रगट ह्वे आनंदभरे ॥
बचिदुसह दुरजन बायुसों मणिदीप समथिर नहिंटर ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

१ अगस्त सन् १८८८ ई॰ } { जिल्द ११ संख्या १२

इलाहाबाद

पण्डित बाल कृष्णभट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
मालिक ला॰ गोपालदीन के प्रन्बधं से
देशोपकारक यंत्रालय में प्रकाशित
किया गया
कंचेकिमंडी

मूल्य अग्रिम ३।=) पीछे देने से ४।=)
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों से अग्रिम १॥=)

॥ हिन्दी प्रदीप ॥

जिल्द ११ संख्या १२	१ अगस्त सन् १८८८ ई०

कल्पना शक्ति

मनुष्य की अनेक मानसिक शक्तियों मे कल्पनाशक्ति भी एक अद्भुत शक्ति है यद्यपि अभ्यास से यह शतगुण अधिक होसक्ती है पर इसका सूक्ष्म अंकुर किसी २ के अन्तः करण मे आरंभही से रहता है जिसका नाम प्रतिभा है और कवियों के लेख मे इसका पूर्ण उद्गार देखा जाता है—कालिदास श्री हर्ष शेक्सपियर मिलटन प्रभृति कवियों की कल्पना शक्ति पर चित्त चकित और कभी २ को मुग्ध हो अनेक तर्क वितर्क की भूल भुलैया मे चक्कर मारता टकराता अन्त को इसी सिद्धान्त पर आकर ठहरता है कि यह कोई प्राक्तनजन्य संस्कार का परिणाम है या ईश्वर प्रदत्त शक्ति खुदादाद या genius है कवियों का अपनी कल्पना शक्ति के द्वारा ब्रह्मा के साथ होड़ करना कुछ अनुचित नहीं

है क्योंकि जगत् सृष्टा तो एकही वार जो कुछ बन पड़ा सृष्टि निर्माण कौशल दिखलाय आकल्पान्त फरागत होगये कविजन नित्य नई रचना के गढ़न्त से नजानिये कितनी सृष्टि निर्माण चातुरी दिखला चुके हैं-यह कल्पना शक्ति काल्पनिक के हृद्गत भाव वा मन के परखने की कसौटी या आदर्श है-शान्त या वीर प्रकृति वाले से शृंगार रस प्रधान कल्पना कभी न बन पड़ेगी मतिराम और भूषण कवि इसके उदाहरण हैं—शृंगार रस मे पगी जयदेव की रसीली तबियत के लिये दाख और मधु से भी अधिकाधिक मधुर गीत गोबिन्दही की कविता विशेष उपयुक्त थी राम रावण या कर्णार्जुन के युद्ध का बर्णन कभी उनसे न बन पड़ ता-यावत् मिथ्या और दरोग को किबलेगाह इस कल्पना पिशा ची का कहीं ओर छोर किसने पाया है अनुमान करते २ हैरान गौतम से मुनि (गोतम) होगये कणाद किनका खा खा कर तिनका बीनने लगे पर मनकी मन भावनी कन्या कल्पना का पार न पाया—कपिल वेचारे २५ तत्वों की कल्पना करते२ (कपिल) "पीले„ पड़गये—व्यासने इन तीनो महा दार्शनिकों की दुर्गति देख मन मे सोचा कौन इस भूतिनी के पीछे दौड़ता फिरे यह संपूर्ण बिश्व भर जिसे हम प्रत्यक्ष देख सुन सक्ते हैं सब कल्पनाही कल्पना मिथ्या नाशवान और क्षण भंगुर है अतएव हेय है— इन्ही की देखा देखी वुद्ध देवने भी अपने वुद्धितत्व का यही निष्कर्ष निकाला कि जो कुछ कल्पना जन्य है सब क्षणिक और नश्वर है ईश्वर तक को इस कल्पना के अन्त

234

गत ठहराय शून्य अथवा निर्बाणही को मुख्य माना—रेखा गणित के प्रवर्तक उक्लीदिस युक्लिडको हर एक शकलों मे बिन्दु और रेखा कल्पना करतेर हमारे सुकुमार मति इन दिनों के छात्रों का दिमाग ही चाट गये —कहांतक गिनावें संपूर्ण भारत का भारत इसी कल्पना के पीछे गारत होगया जहां सिवाय कल्पना Theory के अतिरिक्त Practical करके दिखाने योग्य कुछ रहाही नहीं अन्त मे अब यूरोप के अनेक विज्ञानियों की कल्पना शुष्क कल्पना से करतब्यता Practice मे परिणत देख यहां वालों को हाथ मलर पछताना और सचर कल्पना पड़ा-प्रिय पाठक यह कल्पना बुरी बलाय है चौकस रहो इसके पेच मे कभी न पड़ना नहीं तो पछताओगे आज हमने भी इस कल्पना की कल्पना मे पड़ बहुत सी झूठीर जल्पना कर आपका थोड़ा सा समय नष्ट करवाया छमा कीजियेगा।

आत्माराम का प्रयत्न और गौरव

श्लोक

व्यालं बाल मृणाल तन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृंभते
छेत्तुं वज्रमणीन् शिरीष कुसुम प्रान्तेन संनह्यते।
माधुर्यं मधु बिन्दुना रचयितुं चारांबुधे रीहते नेतुं
वांछतियः खलान् पथि सतां सूक्तैः सुधास्यन्दिभिः।

महाराजा धिराज वसुधेश शिखामणि राजर्षि वर भर्तृहर जी की सार गर्भित बानी के पद २ के कटीले तात्पर्य को समझकर और अपने सहवासियों की करतूत और बिभूत देख भाल यह बिश्वास होही नहीं सक्ता कि बालू

की पृथ्वी पर बड़ी भारी इमारत की नेव ठहरसके- इसमे सन्देह नही कि आलाराम जी एक सच्चे देश हितैषी निर्लोभ साधू हैं और अच्छे २ गुणी विद्वानो की संगत भी करचुके हैं पूर्ण दत्त चित्त हो दिन रात गोरक्षा के लिये प्रयत्न करते ६ महीने से बिफल उद्यम होरहे हैं किन्तु इन्होने एक बार भी न सोचा कि वालू की नेव पर कभी इमारत खड़ी होसकी है " ये गाँहक करमीन के तुम लीनी करवीन„ आला राम को यह क्या मालूम कि इस तरह का पंचाइती काम यहां कब हुआ है और कौनसा खास प्रमाण है कि यहां इस प्रकार के काम कियेगये हैं यदि कालविन अस्पताल म्यूर कालेज म्योहाल आदि दो एक कार्य हुये हैं तो इसका उत्तर एक बालक भी दे सक्ता है कि यह काम पंचाइती सहायता का नहीं है किन्तु जागती ज्योति अंगरेज़ी चपेट की शक्ति है जो जिस पात्र से चाहे जैसा अभिनय कराले चाहो जितना चन्दा लिखाले हाकिमों की नाराजगी यमराज की डाढ़ से भी कितनी अधिक भयंकर होती है आलाराम सरीखे नाराज़ही हो के किसीका क्या कर सक्ते हैं— अच्छाही होगा परमार्थ संबन्धी बातों पर रोज़ २ लेक्चर और व्याख्यान सुना २ कान की चैलियां उड़ाये डालते हैं उससे तो बचे रहैंगे- सच है यहां एक आलाराम नहीं बरन सौ आलाराम और सहस्र जदलराम एकट्ठा होकर चाहैं कि वेद शास्त्र के प्रमाण और उपदेश के द्वारा कुछ पारमार्थिक काम निकालें तो यह उनकी निरी भूल हैं-सरकार बहुत अच्छा करती है जो भारी २ टैक्स और चुंगी के द्वारा सबधन इनका चूसेलेती है अस्तु हमारे चित्त की दाह भी तो किसी तरह पर शान्त हो— घुनाक्षरन्याय से यहांदोएक काम हुये भी तो पुरुष विशेष की प्रभुता और उदारता से— वासुकेश्वर के नीचे गंगा जी का पक्का घाट लाला ठंठी मल ने निज शक्ति से बनवाया और इन दिनो ककरहे घाटपर पक्काघाट अग्रवाल कुल कमल लाला रामदयाल की दयलुता प्रगट कर रहा है बंबई के सेठ ने मुट्ठी गंज मे जो विशाला धर्मशाला बनवायदियाहै

२३९

सो भी अपने ही द्रव्य से यहाँ यदि पंचायत या समुदाय मे परमार्थ का अंकुर जमता होता तो बलुआ घाट सतयुग का बाट देखता मुरझाये पड़ा रहता—फिर कार्यों की संसिद्धि साहित्य के साथ होती है दूसरों का धन तभी हाथ आता है जब किसी प्रकार की प्रभुता का दबाव हो या चित्त के आकर्षण की कोई सामग्री पास हो सो दबाव का हाल तो प्रगट है कि आलाराम न कहीं के हाकिम हैं कि चन्दा देने वाले को किसी बड़े ओहदे पर बैठा देंगे या किसी लाभ दायक काम का ठीका दिलवा देंगे या कि आनरेरी मेजिसटरेट कर देंगे न आलाराम जी इस किस्म के सी-एस-आई-हैं कि छोटे बड़े लाट से उन की जान पहचान हो जिसके द्वारा गोरक्षा मे सहायता करने वाले को लाभ पहुंचा सकें-रही रोचकता की बात सो भी इनमे नहीं देखी जाती महा उजड्ड एक रूखे सूखे संन्यासी हैं यदि उक्त स्वामी जी को श्मसान सिद्धि या मंत्र बल से कोई यक्षिणी या अप्सरा नहीं कोई राम जनी ही हाथ लग जाती और बाबा जी के साथ २ लेकचर मे शरीक रहती तो देखते झुंड के झुंड चेले चाटो चन्दा देने वाले आ टूटते—इस लिये आला राम को चाहिये कि नीचे लिखी प्राचीन कविता पर ध्यान दें किसी दूसरे स्थान मे जाकर गोरक्षा का प्रयत्न करैं यहाँ उनका मनोरथ सिद्ध होना सर्वथा असंभव है।

। छप्पय ।

विकसत बारूतेल यतन करि काढ़त कोऊ।
मृग तृष्णाकोनीर पिये प्यासोही सोऊ।
लहत ससा को शृंग ग्राह मुखसे मणि काढ़त॥
होत जलधि के पार लहर जाकी नव बाढ़त।
रिस भरे सरप की पुहप ज्यों अपने सिर पर धरि सकत।
हठ भरे महाशठ नरनको कोऊ वशनहिंकर सकत।

। नीचपन क्या है ।

कदाचित् आप नीच शब्द का अर्थ गर्हित और अग्राह्य मानते होंगे अथवा हमारी गन्दी और अन्धी समाज के चलन के अनुसार नीच ऊंच का भेद जैसा चल पड़ा है जिस्मे अब जो मात्र भी अदल बदल होना असंभव है वही ऊंचाई और नीचाई की Axiom मूलाधार परिभाषा है दूसरी कोई नई रद्द बदल अब इस्मे होही नहीं सक्ती—पामरों के बीच कदरपाने लायक अन्ध परंपरा सूत्र संघटित इस प्रकार की उचाई या निचाई से हमे कुछ प्रयोजन नहीं-हम यहां पर यह दिखलाया चाहते हैं कि नीचता वहीं निवास करती है जहां प्रत्यक्ष मे उच्चता हिमालय की उंचाई को भी तुच्छ कर रही है—इसी बुनियाद पर "ऊंची दुकान का फीका पकवान„ वाली कहावत का जन्म है—सच है कदर्य की कोई जाति नहीं होती नीची तबियत वाले के कोई सींग नहीं लगी रहती जिसके द्वारा उन्नत मना पुरुष सिंह से हम उसे पृथक् करें मनुष्य मे उचाई और निचाई केवल उसकी समझ और बर्ताव से प्रगट होती है—रुपया ऊंचनीच की भरपूर कसौटी है जिस ने रुपये को लात मार बात और प्रतिष्ठा का आदर किया वह ऊचों से भी ऊंचा है और जिसने रुपये के पीछे सब कुछ गंवाय एक उसी को सिद्ध किया उसके बराबर नीचे से नीचा भी कोई नहीं है—यह कहावत कि "न बाप न मैया सब से बड़ा रुपैया„ ऐसों ही की गढ़न्त है-हम को अपने एक मित्र का अनुभूत यह वाक्य कभी न भूलेगा कि जो चित्त के उन्नत Highmind हैं उनके पास वित्त का संचय होना दुर्घट है जो जितना ही Lowmind कदर्य और नीची तबियत का होगा वह उतना ही वित्त संचय के लिये उपयुक्त पात्र होगा इसी से हमने कहा कि "ऊंची दुकान का फीका पकवान„-विलायत के धनियों की श्रेणी मे चाहो यह बात न भी हो पर हमारे देश के धनियों की गतांक श्रेणी तो इस कहावत की पूर्ण उदाहरण है इसका कारण यही है कि यह श्रेणी चित्त को विस्तार करने वाली उत्तम शिक्षा और सद्विद्या के लाभ से "दूरोत्सारित„ दूर फेंक दी गई है-यही खाता गोद

गादव्याज बट्टे का काम चलाने वाले केवल सुड़िया अक्षरों की पूंजी से बुद्धि कहांतक मांजी जासक्ती है जिस्के मांजने के लिये पूर्ण विद्या और विविध ज्ञान चातुरी की पूर्ण आवश्यकता रहती है और चित्त को विस्तारितया संकुचित करने का एक मात्र प्रधान द्वारा केवल बुद्धि है सो उस्का वहां मूलभी नहीं है तब शाखा प्रशाखा को कौन पकड़ताय—मध्यम श्रेणी के लोगों मे सैकड़ा पीछे ९० उदार मना पाइयेगा तो धनियों की ऊंची श्रेणी मे सैकड़ा पीछे दसही वैसे मिलैंगे इसी से हमारा एक यह भी सिद्धान्त है कि मुल्क कीतरक्की के लिये मध्यम श्रेणी का आगे बढ़ना भी बहुत ज़रूर है हम पहलेही लिख चुके हैं कि नीचता वहीं बसती है—जहां प्रत्यक्षमे उचाई है और इन धनियों की उचाई इसी प्रकार की उचाई है--जिस्का विस्तार हम फिर के दिखलावेंगे।

। समाज की भिन्न २ अवस्था ।

जैसा मनुष्य उत्पन्न हो बाल युवा और वृद्ध अवस्था मे परिणत होता है उसी प्रकार समाज भी बाल्य अवस्था युवा अवस्था और वृद्धावस्था मे परिणत होती रहती है— बालक जैसा अपनी निष्पाप कोमल वय मे अनेक सीधे सादे भोले और मुग्ध गुणों से लोगों का चित्त अपनी ओर आकर्षित करता है और अपनी सोहावनी तोतरी बोलसे कर्ण इन्द्री को अद्भुत तृप्ति पहुंचाता सर्वसंमत और सबों को प्यारा होता है ऐसाही समाजभी बाल्य अवस्था मे अनेक सरल सीधे सच्चे अकुटिल छल छिद्र विहीन निष्पाप भावों से अपनी शोभा को सौगुना अधिक करती है समाज की बाल्य अवस्थाही का नाम सतो गुण सतयुग goldenperiod है वैदिक समय से आरंभ कर मर्य्यादा पुरुषोत्तम अवधेश मुकुट मणि लोकाभिराम रामचन्द्र तक हम अपने प्राचीन आर्यों के समाज की बाल्य अवस्था मानते हैं सरल सच्चा वर्ताव आदि इस्के प्रधान अंग है—इसी प्रकार रोम ग्रीस मिसिर ईथिओपिया केलडिया आदि प्राचीन देशों मे भी जब आदि मे Dawn of Sivilization

सभ्यता का अंकुर बोयागया उस समय तीन २ देश के निवासी परम सौम्य सरल और सच्चरित्र थे बड़ो२ विद्या और विज्ञान की बुनियाद डालने वाले अद्भुत शक्ति संपन्न चमत्कार बुद्धिवाले अरस्तू अफलातूं आदि प्रसिद्ध फिलासोफर इसी समय मे हुये हैं आर्किमिडीज पैथागोरस आदि विज्ञान वेत्ता अपने जन्म ग्रहण से इसी समय को आभूषित कर गये हम इन देशों मे समाज की बाल्य अवस्था ट्रोजन युद्ध से आरंभकर सिकन्दर के पूर्व तक मानते हैं— इस समय के लोग यहांतक निष्पाप और निष्कलंक थे कि देवता समझे गये और इन्द्र वरुण कुबेर आदि नामो से पूजे जाते हैं—समाज अपनी प्रौढ़दशा मे पहुंच पूर्ण सभ्यता के प्रचार से सुशोभित हो बड़े२ अचरज के कामो के संपादन करने मे समर्थ होती है बुद्धि वैभव और धन संपत्ति से पूर्ण होजाती है ज्यों२ सभ्यता की सीमा बढ़ती जाती है त्यों२ समाज के स्वच्छ और पावन आभ्यन्तरिक गुणो मे विष घुलता जाता है शुद्ध न्याय शुद्ध प्रेम और दया मे बट्टा लगता जाता है समभाव मे वैषम्य फैलने लगता है अपना लाभ अपना सुख अपना हित प्रधान हो जाता है इत्यादि—भारत मे समाज की प्रौढ़ता का सूर्यास्त महाभारत की लड़ाई से आरंभ हो महानन्द चन्द्र गुप्त और विक्रम तक कुछ २ रह घोर निशा का प्रारंभ होने लगा समाज के तारुण्य मे घुन लगते २ पृथ्वी राज और जैचन्द का समय पहुचते २ यहां की समाज जरा जीर्ण हो गई—सिकन्दर का समय यूनान मे और सीजरों का समय रोम मे उन २ देशों की समाज के प्रौढ़ता का था जब कि सिकन्दर और रोम के सीजर्स देश पर देश निगलते जाते थे जहां देखो तहां उन्ही की धूम थी आधी के लग भग दुनिया मे उन्ही का एकाधिपत्य था पर बुराई और अत्याचार भी जैसा उन्मे बढ़गया था वह उन २ देशों का इतिहास साक्षी देरहा था परिणाम मे दोही तीन शताब्दी के उपरान्त चरम सीमा को पहुंची हुई उनकी सभ्यता धूर मे मिलगई और यहां तक उनकी समाज ग्रस्त हुई कि अब

बहुत से लोग उनका नाम तक नहीं जानते—जीर्णातिजीर्ण गलित पलित महाझिंझरी भारत की समाज का मुकाबिला इन दिनो इंगलेंड के साथ आपड़ा है जो इसका सर्वग्रास कर बात २ मे भारत की समाज भारत की सभ्यता भारत की विद्या भारत की चातुरी को डांट रहा है जैसा असती पुंश्चली बाहरी चटक मटक के बल सती सावित्री सुगृहिणी को डांट डपट के साथ अपने वशमे रक्खे—भारत की समाज महामन्द और मूर्खातिमूर्ख है क्योंकि यह इंगलेंड की चाल और जालसाज़ी समझ कर मस्टमार चुप चाप काल की प्रतीक्षा करती सब सहरही है—भारत के लोग अयोग्य और विश्वास पात्र नहीं हैं क्योंकि ये लोग हमारे समान घर का परसैया अंधेरी रात के मसल पर चलना पसन्द नहीं करते इसलिये इन्हे ऊंचे २ पदन मिलने चाहिये—भारत के मनुष्य गवांर और भद्देस हैं इनके अंग से नेटिव पन की करीह बदबू उड़रही है क्योंकि इनका रंग काला है हमारे समान चमड़ा के गोरे पर दिल के काले नहीं हैं—हिन्दुस्तानी अपव्ययी भद्दे कुसंग प्रिय-unmannerly हैं क्योंकि ये हमारे समान स्वार्थ परायण टेहाराम सोलह रुपये बोतल की शराब नहीं उड़ाते और भद्दे इसलिये हैं कि अन्तः सार बिहीन केवल फेशन के पीछे हैरान चीज़ों की ऊपरी चमक देख नहीं लुभाजाते—मेनर इसलिये नहीं जानते कि इन्मे पढ़े लिखे लोगों के बीच भी अभी तक पर पुरुष और पर स्त्री का भेद बना है—अपव्ययी इसलिये हैं कि जितना चाहो उतना चन्दा इन से वसूल करलो कभी नाह करने जानते ही नहीं—गाउदी और भिखारी हैं क्योंकि पराधीन और परवश है अन्याय सहते २ घट्टा पड़गया है चूं नहीं करती गाउदी और अब कैसा होगा—इत्यादि छिन्न भिन्न बूढ़े भारत की गिरी और जीर्ण दशा मे सब ऐबही ऐब हैं गुण का कहीं लेश न रहा गुण और भलाई सब समुद्र पार हो इंगलेंड की प्रौढ़ समाज मे जावसे किसके मुहमे दांत है कि उसे बुरा कहे।

। हमारे राजा आप डूबे सो डूबे काशीनरेश को क्यों डूबो रहे हैं?

भारत जीवन से प्रगट हुआ कि राजा शिव प्रसाद ने बनारस के टौनहाल मे कानग्रेस के विरुद्ध एक बड़ी कमेटी की थी जिस्मे काशी नरेश पुत्र पौत्र समेत सभापति थे (आजतक कभी न सुना कि महाराज काशी नरेश निरे हिन्दुस्तानियों की समाज को उपकार पहुचाने वाले किसी ऐसे काम मे अग्रसर हुये हों जिस्मे कर्मचारी हकिमों के खुश रखने का कुछ भी लगाव न रहा हो) राजा जी तो हम लोगों की समाज मे बदनाम होते २ बेहया होगये यहां तक कि इलबर्ट बिल के मामिले मे बंगाल वालों ने इनके नाम का पुतला तक जला डाला तो अब अपने साथ ही साथ हमारे बूढ़े महाराज को क्यों घिर्राये फिरते हैं और बचो खुची उनकी थोड़ीसी जिन्दगी मे कलंक का भारी टीका उनके माथे पर क्यों लगवाया चाहते हैं—अस्तु "लोभी गुरु लालची चेला दोनो नरक मे ठेलिं ठेला,, राजाजी ने उस कमेटी मे जो कुछ अपनी मुख कन्दरा से प्रकाश किया वह कोई ऐसी बात न थी जि[illegible] हम यहां पर दें—अबतो हाकिमो की नजर से भी राजा [illegible]हब की कुछ कदर बाकी नहीं है तब सैऐ २ मौकों पर इतना हांव २ क्यों कर उठते हैं—क्या हमारे गंभीराशय हाकिम लोग इतना नहीं समझते कि कौन आदमी कैसा है ऊंचे अधिकार पाने की खुशामद से निरीलल्लो पत्तो कौन कर रहा है और गवर्नमेन्ट का सच्चा फाइदा कौन कर रहा है फिर भी मौका पाय राजाजी हम लोगों को

२८३

डमने से जो नहीं चूकते इसका येही कारण है याती स्वभावही इनका खोटाई करने का होगया है—"अतीत्यही गुणान् सर्वान् स्वभावो मूर्ध्नि वर्तते,, अथवा हम लोगों से इनको कोई कहो—जिद्दमें आय तुह्मारा कुछ असगुन हो हमारी नाक कटी बलाय से-,, सच है—"चीणा नरा निष्करुणा भवन्ति—

कजरी

कल जुगवा खरान कैसे खेलों कजरी

कल जुगवा खरान कैसे खेलों कजरी।

घर मे अनाज नाहीं—भूखन को साज नाहीं—कोऊ सिरताज नाहीं कपड़ा पुरान।

कैसे खेलों कजरी।

सासु का बिसास नाहीं-ससुर की आस नाहीं—पंगति को चास नाहीं-सैंइयां बिलखान।

कैसे खेलों कजरी।

लोकमें नियाव नाहीं-पंच मे हियाव नाही—साधुता का भाव नाहीं वकिल हैरान।

कैसे खेलों कजरी।

बाह्मन कपूत भेले मूढ़ राज पूत भेले-भूप यमदूत भेले रोवत किसान

कैसे खेलों कजरी।

दया गेली-मया गेली- दुनिया से हया गेली—खिलकत सबनई भेली स्वारथ भुलान।

कैसे खेलौं कजरी ।
धनकहूँ रहा नाहीँ-अन्नहू जुरत नाहीँ—खेतिया के छोजे कहीँ
लागे न ठिकान ।
कैसे खेलौं कजरी ।
जप नाहीँ-तप नाहीँ—संयम बनत नाहीँ-अंग्रेजिया के फेले
लोग भेले किरिस्तान ।
कैसे खेलौं कजरी ।
आपस मे रार फैलो—धरम करम गेलो- झूठ मूठ साख फैलो
लागत गिलान ।
कैसे खेलौं कजरी ।

हरि हरि धीर समीरे बिहरति राधा कालिन्दी तीरे ।
कूजति कल कलरव केकावलि कारंडवकीरे ।
बर्षत चपला चारु चमत्कृत सघन सुघन नीरे ।
गायति निज पद पद्म रेणु रत कविवर हरिश्चन्द्र धीरे ।

हिन्दी का अपमान

हमारी अनाथ हिन्दी भाषा का दिन प्रति दिन अपमानही होता जाता है क्या देशी क्या बिदेशी क्या राजा क्या प्रजा क्या धनी क्या निर्द्धनी सभी इस पर डंडे चलाने पर सन्नद्ध रहते हैं इसके अनादर और अपमान का प्रसंग हम पहले भी कई बार लिख चुके हैं और अब भी लिखते हैं नहीं मालुम कि यह धोबी की गीत हमे कब तक गाना पड़ेगा वही कहावत है कि न मरे न माचा छोड़े—यह निर्लज्ज अभागनी सैकड़ों मानापमान सह हज़ारों विघ्न झेल कर दिन दूना रात चौगुना बढ़तीही जाती

है न जाने इसे कौनसी सिद्ध बूटी या रसायन हाथ लग गई है कि बड़े बड़े विघ्न कारियों का असह्य आघात और ताड़ना सह कर प्रफुल्लित होती जाती है यह दैवी गति कुछ समझ मे नहीं आती—हमारे इस दुर्दशा दलित देश मे इस समय जितनी बढ़ी चढ़ी ठाट बाटकी अभिमानिनी भाषा ये हैं सबकी सब एक एक किस्म की सवारी पर चढ़ी आगेही को बढ़ा चाहती है जैसे संस्कृत का बूढ़ा हंस अंगरेज़ी का चम चमाता फिटन फारसी की पर्दे दार डोली अरबी का भल भलाता ऊंट और बीउर्दू का चीत्कार करता गधा जो यही चाहती है कि इस हिन्दी भाषा को सब से पीछे कर दें पर यह बिना सवारी सिकारी धीरज का ढाल और क्षमा का खड्ग लिये भद्र काली के समान अपने लक्ष्य और केन्द्र स्थान की ओर चली जाती है—हमारे प्रियवर हिन्दोस्थान को इस बात का बड़ा खेद और पछतावा हुआ है कि हिन्दी भाषा इलाहाबाद यूनीवर्सिटी के इन्ट्रेंस क्लास से निकाल दीगई है परीक्षा मे अंगरेज़ी के साथ दूसरी भाषा अरबी फारसीलाचारी से अथवा गौं से संस्कृतभी रक्खी गई है लाचारी यह कि सत्रह अठारह किरोड़ हिन्दू प्रजा पर खुला खुली अन्याय क्यों कर शोभित होगा और गौं यहकि संस्कृत तो प्रायः एक निष्किंचन भिक्षु की जाति पढ़ती है सो भी अंगरेज़ी के साथ बहुत कम लोग—प्रयोजन यह कि किसी उपाय से यह अनादर पात्र जाति अतिशयलालन पालन प्रेम पात्र जाति से उच्चशिक्षा मे नीचे हट जाय--अफसोस कि इन गुरुओं को इतना न सूझा कि पेटारथू और सुख बिलासके लम्पट लोग चाहेकिसी कौम के होंजिधर मिठास देखेंगे मक्खी की भांत उधरै कूद पड़ेंगे उन को धर्म कर्म पक्षविपक्ष कीकुछ खबर नहीं यहांइसमे सरासर हानि दोपक्ष की अवश्य है एक तो गवर्नमेंट की कि जिसको मुफ्त मे यह अपकीर्ति मिलती है कि व्यर्थ कई किरोड़ प्रजा की मातृभाषाका अपमान कर उनका दिल दुखाती है दूसरा पक्ष उस बृहत्समुदाय प्रजा का है जो बनिज ब्यौपारउद्यम खेती केहा

२८६

रा जीविका करती और राजदंड के विविध उंडे सहती है उसका चिर कालिक खिन्न चित्त अवश्य मातृ भाषा के सन्मान से हुलसता सोभी राज कर्मचारियों ने हिन्दी के अपमान के द्वारा न हुलसने दिया—अस्तु कुछ चिन्ता नहीं उनके जिस मानसिक वन मे त्रिविध दुःख रूपी पशु चरते हैं उस झुंड मे एक यह दुःख रूपी पशु भी चराकरेगा—हमारे प्रियवर हिंदुस्तान सलाह देते हैं कि सब लोग मिल के गवर्नमेंट से इसके लिये प्रार्थना करें सो हमे यह बात पसन्द नहीं आती इसके बदले अपने आप हिन्दी के आदर सन्मान की कुछ फिकिर करें जिस्मे हिन्दी भाषा के रसिकों की रुचि मे मंदाग्नि का रोग न पैदा हो—घास फूस कूड़ा करकट भरने से अखबारों की पूर्ति न समझी जाय जैसा हमारे हिन्दी के प्रायः दैनिक साप्ताहिक तथा मासिकपत्र देखे जाते हैं—क्या जरूरत है कि हिन्दी के मुख के कलंक नित्य नये बेहूदा लिखावट के पत्र निकलते जांय बल्कि ढूंढ ढूंढ ऐसे वाक्य और पदावली उन्मे लिखी जांय कि और नहीं तो महीने दो महीने पढ़ने वालों के जी मे चुभती रहे—रही समाज की सहायतासो सबदेखी सुनी बात है इस विषय मे बार २ शब्दों के अपव्ययके सिवाय लाभ क्या है।

। पतित पंचक प्रहसन ।

दो आदमी नेपथ्य के भीतर से वाद बिवाद करते आते हैं।

पहला—हमारा नाम कुतर्क वागीश भट्टा चार्य है—हम क्या कोई ऐसे वैसे मनुष्य हैं चारो वेद पाचवां लवेद हमारी जीभ के आगे नाच रहा है वेदान्त पढ़ते २ देखो हम वेदांत के होगये—व्याकरण को अथ कर घड़ी भर मे सूंघ के फेंक दिया—पतंजली को अंजली से मल डाला—तर्क का पिंड मरक जाते २ तक न छोड़ेंगे—चाण्डाल चण्डेश्वर नाकट कुतर्क मंजरी धूर्त चरित रसायन अज्ञान चन्द्रिका अनीति रत्नाकर अन्याय कल्पद्रुम दांभिकोपनिषद लंपट वृत्ति विवरण इत्यादि कहां तक गिनावें अनेकानेक ग्रन्थ पिये बैठे हैं न विश्वास हो देखलो यह हमारी थल थल तोंद गवाह हो

दे रही है पोथी बांधे २ कौन फिरै नजाने किस जून कैसा काम पड़जाय— महाराज खुरटिसिंह बहादुर के—सी —एस-आई—के हम प्रधान सलाह कार हैं-हम अपनी मिट्ठी गले से जब कुछ कहने लगती हैं तब अपनी स्पीच और वाज के बड़े अभिमानी मिसिरो सीभी करते सरग मे जाय मुंह छिपाते हैं- बाक् पति वृहस्पति अवाकहो जाते हैं- यहां कांग्रेस की कमिटी सुन उसी के भर भंड करने को आयेथे पर हमारी कुछ चली नहीं तो अब जाती हैं आज से हमारा नाम भंडचार्य पड़ेगा—नमस्कार बंदगी गुडमानिङ्ग हम हर फन मौला हैं-प्रस्थान—

दूसरा—सोंचडाज़ो के एक चंडाल हमारे गुरु घंटाल तो चलेगये अब हम बगुला भगत या यों कहिये बक भट्ट किस्के सहारे से चलें यद्यपि गुन तो हमारे मे भी बहुत से हैं कहो एडिटर बनजांय पढ़े लिखे अोनवौने नाम हम-कमद फाजिल कहो वैदिक बनजांय कहो तांत्रिक बनजांय कहो कविबन जांय "शास्त्राणहीनाकवयो भवन्ति„ धनकी चिन्ता मे व्यग्र अनेक रूप कसते हैं पर एक नहीं चलती बड़ा टेढ़ा समय आलगा "धूर्त विद्या पूजिता लोकाः „ का ज़माना नरहा यहां तो सब वार खाली गया तो अब चलो रजवाड़ों मे चल कर कुछ ढोंग रचें (उदासीन मन मलीन हाथ मलता पछताता जाता है)

तीसरा—(परदे के बाहर निकल कर सफ़ेद डाढ़ी पर हाथ फेरता) ओहो अब तो मै बिल्कुल बुड्ढा होगया मै अपनी बुगदादी ऊंठ के सहारे से बिलायत तक को हवा खा आया वहां से लौट कर आतेही एक कतई तबदीलसुफ़ मे वाका होगई(तस्बी कान पर से उतार)तुम समझती होगी मै बड़ा खुदा परस्त हूं वल्लाह मै कसम खाकर कहता हूं कि अल्लाहताला का नाम कभी धोखे से भी जो मेरे जीभ पर आता हो मुझे यह निहायत पसन्द है कि मै अपनाही पेट भरूं—"मोर पेट हाऊ मैनटेहौं काहू-„ किसी गैर कौम काफ़िर को आगे बढ़ती देख मुझे बड़ी बेकली होती है गली गली कूंचे कूंचे पुकारते फिरा पर मेरी कंबख्त कौम कुछ समझतीही नहीं किस्के आगे अपना पसेरीसा सिर देमारूं-अजी मियां सर्कार की ओर से

खैरखाही और सुखे रुई चाहते होतो मत बहको मै तुह्मारे भले के लिये चिल्ला रहाहूं गुमराह मत हो इधर आओ (चारो ओर देख) क्या कोई नहीं सुनता अच्छा तो जाकर लाट साहब से कहता हूं (पछताता हुआ जाता है)

चौथा—मैतो कोई ऐसाही ऐरा गैरा पचकल्यान छोटे मोटे जमीदारों मेहूं पर खून लगाय शहीदों मे मिला चाहताहूं थोड़ी सी अंगरेजी भी मैने सूंघ रक्खा है फारसी अरबी का बड़ा भारी मौलनाहूं धर्म शास्त्र काव्य कोश व्याकरण मे पूरा दं भरताहूं—दासोस्मि दासोस्मि कौनसा शुभ दिन होगा कि मैभी सी-एस-आई- कर दिया जाऊंगा इसी लिये मै आंग्रेस कांग्रेस से न केवल घिन करताहूं बरन दिलसे उस कुकुमेटी की बुराई चाहताहूं—पतित पंचक मे जो मेरा नाम भी लिख लिया गया इस बात का मुझे बड़ाही हर्ष है भला किसी भांत मैं प्रसिद्ध तो होता चला —"घटं भिन्द्यात्पटं छिंद्यात् गर्दभारोहणं चरेत्। येनकेन प्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत्—" कहता बाहर गया—ये चारो अपने २ मनकी गीतगाय रुखसत हुये कि नेपथ्य के भीतर से बूट खट खटाते पांचवा आया—डैम फूल रासकिल्ल तुम लोगों ने क्या हुल्लड़ मचारक्खा है तुम नहीं जानता हम मुंशी मार्जार खास लाट साहब की नाक का बाल है जब से हमारा प्रादुर्भाव हुआ तब से हमे योग्य समझ कन्सिद्रेव संपूर्ण भार अपने प्रपंच का हमारे सिर पर रख अब सुख कीनी दसे सोरहे हैं—पतित पंचक मे पांचका क्या काम था मै इकल्ला ऐसा हूं कि शहर २ गांव २ घूम कर ऐसी २ कुत्सित कुमेटियां और बड़ी २ से बड़ी सभाओं का उच्छेदकरं डालूंगा ज़रा मुझे अपने खानगी कामो से फ़ुरसत तो लेनेदो—हम अपने प्रभुवरों के दास हैं हमारी गति मति सब उन्ही के आधीन है उनका दिया हुआ टुकड़ा खाया करैं पड़ें रहैं जो काम उनके नापसन्द है या जिस्से उन के साथ हमारी बराबरी होती हो उस ओर की राह नतकैं यह इसी समझ दारी का फल है कि बिना बहुत कुछ पढ़े लिखे मुंशी कहलाता हूं—बिना पूंजी धूर की रस्सी बट रहा हूं—इन दिनो के नये लोगों से मेरा बस नहीं चलता क्योंकर उन्हे

सीधी राह पर लाऊं मेरी दूरन्देशी को काम मे नहीं लाते बड़े मूर्ख हैं धिक् धिक् धिक् कहता हुआ बाहर गया।

।इति पतित पंचके प्रथमोङ्कः।

।गवर्नमेंट भूलती है।

—सा—स—नि—से—

हमारे राजपुरुषों का सिद्धान्त है कि भारत बर्ष को २० करोड़ प्रजा केवल लाख सवालाख सैनिक और राज कर्म चारियों के बल बीर्य से दबी रहे— यदि यूरोपीय लोगों के अपराधों का अच्छी तरह विचार हो और उन्हे उनके अपराध का दंड दिया जाय तो यहां के लोग ढीठ होजांयगे दबैंगे नहीं और इन राज कर्मचारियों से फिर कुछ करते धरते न बन पड़ेगा— इसी सिद्धान्त पर निर्भर हो इन यूरोपियनों को दबाने के बदले भांत २ का अत्याचार करने को प्रोत्साहित करते हैं—किन्तु विचार के देखिये तो यह निपट भूल है क्योंकि यह क्योंकर संभव है कि २० करोड़ मनुष्य सवा लाख बिदेशियों की डर से दबे रहें—भारतीय प्रजा का यह नियम है कि राजा को ये लोग ईश्वर का अंश मानते हैं और उसकी आज्ञा पालन को परम धर्म समझते हैं—इसी से ये लोग असीम अत्याचार अनाचार और स्वेच्छाचार सहके भी अपनी ब्रिटिश गवर्नमेंट को बराबर सहायता देते आये और देते जांयगे—दुःख का विषय है कि गवर्नमेंट यहां १५० वर्ष की पुरानी होने पर भी यहां के लोगों की प्रकृति का परिचय न कर सकी—क्षुद्राशय कर्मचारी जो उक्त सिद्धान्त पर आरूढ़ हो यहां स्वेच्छा चार कर रहे हैं कहैंगे—"बस गदर के समय सब समझ लिया यहां के लोग कैसे राज भक्त हैं„—किन्तु उन्हे यह नहीं सूझता कि गदर के समय भी किन की सहायता और मदत से ब्रिटिश गवर्नमेंट का पैर यहां थंबा रहा

२४०

और उस समय महामान्या महारानी बिक्टोरियाने शान्तचित्त से क्या प्रतिज्ञा कियाथा यदि उस समय यही भारतीय लोग इनकी रक्षा नहीं करते तो क्या आज इन दुष्ट कर्म्मचारियों को यहां ऐसा स्वेच्छाचार करनेका अवसर मिलता ? जिन कारणों से यहाँ के थोड़े से लोग उस समय बिद्रोही हो गये थे आश्चर्य्य की बात है कि हमारे अधिकांश राज कर्म्मचारी वही सब कारणस्वयं उत्पन्न करने की चेष्टा करते हैं। यहां की प्रजा कैसी भी दृढ़ राजभक्त है परन्तु मुख्य तीन कारणों से उनमे भी शान्तिस्थायी रहना संभवित नहीं है।

प्रथम कारण धर्म्म में आघात होना। यह शान्तिभङ्ग के बिषय में सबसे प्रधान कारण है किन्तु न जाने क्या कारण है कि हमारे राजकर्मचारी इस गुरुतम विषय को अत्यन्तही लघु समझ रहे हैं। इसका यही कारण बोध होता है कि यह लोग समझते हैं कि भारतवर्ष में अनेक साम्प्रदायिक धर्म्म प्रचलित हैं यहां ऐसा धार्मिक विरोध कोई नहीं है कि जिस्के व्यतिक्रम से समस्तप्रजा को आघातप्राप्त हो। दूसरे यह भी समझते हैं कि अब अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से बहुतों के संस्कार ऐसे बिगड़ गये हैंकीवह लोग धर्म्मविषय को गौण समझते हैं। परन्तु यह महाभूल हैं। क्योंकि यहाँ चाहे धर्म्म विषयमें हजारों ही अवांतर प्रभेद क्यों नहों किन्तु एक गौरक्षा रूप धर्म्म ऐसा प्रबल हैं कि चाहे कैसा भी कोई नास्तिक क्यों नहो गया हो परन्तु जहां उसके कानमें यह शब्द पड़ा कि अमुक स्थान में इस प्रकार से गोवध हुआ और अमुक हाकिम ने उसमें सहायता दिया बस उसी समय उसके अन्तःकरण का भावान्तर हो जाता है। दुःखका विषय यही है कि हमारे राजकर्म्मचारी इसी विषय के आश्रय से यहां हिंदू मुसलमानों मे विरुद्ध उत्पादन कराने की चेष्टा करते हैं। इन को इस चेष्टा का जो प्रतिफल नहीं मिलता है इस से हमारे राज कर्मचारी और भी विशेष भूलते हैं। क्योंकि यह नहीं समझते कि हम लोगों के एतद्विषयक इतने अत्याचारों से भी

जो शान्त हिन्दुओं का अन्तःकरण विचलित नहीं होता है इस का यही एक दृढ़ कारण है कियहां वाले परम राजभक्त हैं। किन्तु यह नहीं सोचती कि यह अबकब तक ये लोग सहन कर सकेंगे। जिस दिन यह अत्याचार असह होजायगा उसी दिन अनर्थ उत्पन्न हो जयगा।

यहां की प्रजा की शान्ति भंग का दूसरा कारण इन की स्वजाति पक्षपातिता है। यद्यपि पहले भी इनका यह पक्षपात ऐसा ही था परन्तु इतना प्रकाशित नहीं होता था, अब समाचार पत्रों के बाहुल्य से कोई बात भी छिपी नहीं रहती है, सुतरां यह पक्षपात अत्यन्त ही बढ़ गया है। गवर्नमेंट को चाहिये कि इस को शीघ्र ही दमन करे। अब इन का यह पक्षपात यहां तक प्रबल हो गया है कि साधारण सब लोगों को दृढ़ विश्वास हो गया है कि अंग्रेज़ी आईन अदालत जो कुछ है वह सब देशियों के दमन करने ही के लिये है। अंग्रेज़ क्या योरोपीय मात्र चाहे जैसा गुरुतर अपराध क्यों न करे किन्तु अदालत में वह निर्दोषी ही ठहर जाता है। अबलोग यह समझ गये हैं कि अंग्रेज लोगोंने हिन्दुस्थानियों को कुत्ता बिल्ली समझ लिया है। आश्चर्य यही कीमारनेवाला अपराधीयहीकह के अपनी सफाई करता है कि हमने कोई आदमी नहीं वरन कुत्ते को मारा था॥ उन के हिसाब हम लोग मानो मनुष्यही नहीं हैं, क्योंकि देशी मनुष्य के प्राण तक मार डालें तौभी उन को दण्ड नहीं होता है इत्यादि इस विश्वास का परिणाम क्या कभी अच्छा हो सकता है कभी नहीं गवर्नमेंट की यह कुछसाधारण भूलनहीं है। प्रजाबिरागकातीसरा कारण यह भी है कि अब यहां की प्रजा करभारसे पीड़ित अत्यन्त व्याकुल होरही है। किन्तु दुःख का विषय है कि हमारी गवर्नमेंटस्वजाति प्रतिपालनके अनुरोध से इस ओर ध्यान तकनहीं देती है यह और भी महाभूल है। हमलोग बहुत दिनोंसे इन्ही उक्त विषयों पर गवर्नमेंट का ध्यान आकर्षण कर रहे हैं किन्तु क्या कहैं गवर्नमेंट सुविज्ञ और नीति कुशल होने पर भी अपनी भूलों पर ध्यान नहीं देती है यह अच्छा नहीं है आगे गवर्नमेंट की इच्छा।

२५२

प्राप्त

मान्य वर महाशय —गत संख्या मे आपने आत्माराम जी के प्रसंग मे भारत सुदशा प्रवर्तक के संपादक को इतना सुझाया तोभी इन्हो ने अपना निन्दित क्रम न छोड़ एक क्रत्रिम संपादक के आड़ से सुविज्ञ पण्डित वर गोपाल रावहरी महाशय को व्यर्थ निन्दा कर उपस्थित कानग्रेस की सहायता मे विघ्नडाल भर पूर अपना जी ठंडा किया है—मुझे इनका यह निषिद्ध कर्म अतिशय असह्य हुआ और एक पत्र इनको लिखना चाहा कि यदि आपने केवल द्वेष बुद्धि से वह प्रेरित पत्र न छापा होतो उस लेख का खंडन मेराभी वह पत्र छाप दीजिये ऐसा होने से हमारे पंडित जी महाराज पर जो दोष लगाया गया है उसकी शुद्धि होजायगी और कांग्रेस संबन्धी कार्य मे विघ्न न होगा और आपने भी जो भूल किया उसका मार्जन हो जायगा पर इन्होने कुछ ध्यान न दिया तब आप की सेवा मे यथा तथ्य जो बात थी सो निवेदन करना पड़ा- यदि नेशनल कांग्रेस का कार्य इस समय मेरे सन्मुख न होता तो मुझे भी इन पर लेखनी उठाने की कुछ आवश्यकता नहोती —संपादक महाशय स्वार्थी और निर्विद्य पुरुष चाहो जो करें और बकें सज्जनों को उसका कभी नहीं ऐसा विषाद होता जैसा विद्वानो की असत् चाल देखके होता है—इनके समूह मे केवल एक पण्डित लक्ष्मीदत्त जो विद्वान् कहाते हैं परन्तु न मालूम वे क्यों इस प्रसंग मे मुह मोड़ बैठे हैं और तनिक भी सत्यता की ओर नहीं ध्यान देते मेरी समझ मे इतना अर्थ दास्य ठीक नहीं मेरे समान उन्हे भी चाहिये कि ऐसी समाजसे अलग हो सत्य और न्याय का अवलंबन करें और भा-सु-प्र—के संपादक को चाहिये जहाँ पत्र के आरंभ मे सिद्धान्त वाक्य "सत्य मेव जयति„ लिखते हैं वहां "अनृत और धार्ष्ट्य मेवजयति„लिखदें-पंडित जी महाशय आपने इस्से कौन सी पंडिताई समझ रक्खा है कि धर्म समाजियों के मुकाबिले जो धर्म निर्णय के लिये ताल ठोंके सन्नद्ध होरहे हैं तुमदवाय आपस मे व्यर्थ की दुलत्तियां झाड़रहे हैं दोनो प्रकार से आर्य धर्म का सत्यानाश कर रहे हो धन्यहो—

सच जानिये आप जो धर्म समाजियों के सन्मुख नहीं आते और बार२ विज्ञापन देकर बुलाने पर भी नहीं सुनते यह आपके पाण्डित्य की शोभा नहीं है–संपादक जी आप एकान्त देश हितैषी पंडितवर गोपाल रावहरी को अच्छी तरह जानते हैं तथा उन्होने जिस प्रकार हिन्दू समाज के चन्दे मे प्रयत्न किया और सफाई दर्साई वह भी आप को सब विदित है हिं-प्र—तथा और २ पत्रों में तीन वर्ष हुये उसका कुल ब्योरेवार हिसाब छप चुका है और हिं-स- की तीनों वार्षिक रिपोर्टों मे भी उक्त चंदा और उसके ब्याज आदि का हाल मुद्रित हो चुका है तथापि—भारत सुदशा वाले उस चंदे केखाजाने का दोष पंडित जीको लगाकर कांग्रेस के सहायार्थ चन्दे के उद्योग मे उक्त पंडित जी को हतोत्साह करने को इस प्रकार विघ्न कर रहे हैं इनको आज तक पंडितजी का कोई काम स्तुतियोग्य मिलाही नहीं आप लोग बड़े भ्रम और गुमराही मे पड़े हैं जो कई बार गोपालहरी महाशय की प्रशंसा कर चुके हैं अस्तु अबभी यदि आप योग्य समझें तो भा—सु-प्र-को सचेत कर दीजिये जिस्मे आगे के लिये ऐसे निन्दित कर्म से मुह मोड़लें यही मेरी प्रार्थना है—

आपका एक प्रेमी-रामचन्द्र वाजपेयी फर्रुखाबाद

हिं-प्र-मेरी समझ मे पं-गो-रा-ह—महाशय को किसी प्रकार का दोष लगाना मानो चन्द्रमा मे धूर फेकना है-देशहित मे ये जैसे पूर्णदत्त चित्त हैं उसे मैं कई बार परख चुका हूं—आगे जिस्की जैसी समझ हो-

---

पतिव्रता

।ब्राह्मण से।

इस नाम का हमारे यहां सदा से बड़ा गौरव है। हमारे वेद शास्त्र पुराण में सहस्रों बचन पतिव्रताओं की महिमा के हैं। हमारी परम पूज्या जगदम्बा श्री पार्वती जी श्री सीता जी श्री अनुसूया जी इत्यादि का बड़ा महत्व विशेषतः इसी कारण है कि वे पतिव्रता थीं! निश्चय स्त्री के लिए पातिव्रत

से बढ़ के कोई धर्म नहीं है न पति से बढ़ के कोई देवता है! यद्यापि साधारण स्त्रियां बोला करती हैं कि "हमार पति परमेश्वर आहीं,, सच तो यों है कि जिस स्त्री ने मन बचन कर्म से सत्य और सरलता के साथ पति प्रेम का निर्वाह किया वुह महत्पूजनीया है! दक्षप्रजापति की पुत्री सती देवी का चरित्र परम प्रसिद्ध है कि उन्होंने अपने प्यारे प्राणनाथ भगवान् भोलानाथ का अपमान देख के पिता का देवताओं का ऋषियों का कहां तक कहें अपने प्राण का भी कुछ सोच संकोच न किया! फिर क्यों न हम लोग सती शब्द को पतिव्रता का पर्याय समझें! भारत की पूर्णोन्नति का एक बड़ा भारी कारण यह भी था कि स्त्रियां बहुधा पतिव्रता होती थीं! संसार रूपी रथ के दोनों पहिए स्त्री और पुरुष हैं! और व्यभिचार को तो व्यभिचारी लोग भी शारीरिक मानसिक आत्मिक और सामाजिक अवनति का मूल मानते हैं! फिर जिस देश में स्त्रियां विशेषतः पतिव्रता हों और पुरुष एक स्त्री व्रत हों उस देश की उन्नति में क्या बाधा हो सक्ती है जिस गाड़ी के दोनों पहिए दृढ़ उस के चलने में भी कोई अड़चल है? प्रेम में यह सामर्थ्य है कि प्रेम पात्र कैसाही हो पर प्रेमिक की दृढ़ चित्तता से वुह अवश्य प्रेमिक के रंग ढंग का हो जाता है! पुरुष कैसाही कुकर्मी और कर्कश हो पर स्त्री सच्ची पति देवता हो तो पुरुष निर्लज्ज व्यभिचारी न रहेगा! ऐसेही पुरुष सचमुच स्त्री से प्रीति रक्खें तो स्त्री का सुधरजाना असंभव नहीं है! इसी से कहते हैं कि पतिव्रता स्त्री दोनों कुल को सुशोभित करती है! जिस घर में पतिव्रता वह घर वह कुल वह देश धन्य है! चित्तौर का राजवंश इन भारत के गिरे दिनों में भी इतना प्रतिष्ठित है इसका मुख्य कारण यही है कि इस घोर कलिकाल में भी यहां सहस्रों शूर और सती थीं! इस ज़माने में हम देखते हैं कि शूरता का तो प्रायः लोपही सा हो गया है पर सती भी बहुत कम रह गई हैं बरंच न होने के बराबर कह सकते हैं! सती से हमारा प्रयोजन यह नहीं है कि खामखाह पति के साथ जलही जाना चाहिए! मुख्य सती वुह है जो पति के विरह

रूपी अग्नि में ऐसा दुःख अनुभव करे कि जीते जी मरजाने समान होजाय पर हाय। एक वुह दिन थे कि हमारे यहां सतीत्व पराकाष्ठा को पहुंचा हुवा था कि जीते जल जाना तक रिवाज होगयाथा और एक वुह दिन है कि पतिव्रता ढूंढ़े मिलना कठिन है ! हम यह तो नहीं कह सकती कि सारी स्त्रियां रुक्मा बाई की साथिनी हो रही हैं पर इसमें भी संदेह नहीं है कि पति के दुःख सुख में अपना सचमुच सुख दुख समझने वाली पति की प्रतिष्ठा का पूरा ध्यान रखने वाली पति से सच्चा स्नेह निभाने वाली स्त्रियां हजारों में दसही पांच हों तो हों ! इस के कई कारण हैं एक तो यही कि स्त्री शिक्षा की चाल उठ सी गई है यदि कोई २ लोग पढ़ाते भी हैं तो मेमों से या मेम दासियों से भला वे ईसा के गीत और लिबरटी सिखावेंगी, अथवा पातिव्रत ! दूसरे थोड़ा बहुत कुछ पढ़ भी गईं तो घर का ठीक नियम नहीं है बहुत सी दो२ चार२ पैसे की ऐसी पुस्तकें छप गईं हैं जो पुरुषों के लिए तो खैर जी बहलाने को अच्छी सही पर स्त्रियों के लिए हानिकारक हैं ! बाबू साहब बाज़ार से लेआए घर में डाल दिया बहुआइन साहबा ने खोल के पढ़ा तो 'जोबन का मांगे दान कान्ह कुंजन में„ तीसरे मरदों की तो सभाएं भी हैं अखबार भी हैं पुस्तकें भी हैं पर स्त्रियों के लिए उपदेश की कोई चाल ही नहीं है ! हम आशा करती हैं कि श्रीमती हेमंत कुमारी देवी (रतलाम वासिनी) अपनी सुगृहिणी नाम क पत्रिका में पातिव्रत पर अधिक ज़ोर दें जिसमें सर्व साधारण स्त्रियों को वास्तविक लाभ हो फोटो ग्राफी आदि की अभी हमारी गृह देवियों के लिए अधिक आवश्यकता नहीं है ! नवीन ग्रन्थकारों को भी चाहिए जहां और बहुत सी बातें लिखते हैं कभी २ इधर भी झुकते रहें व्याख्यान दाता लोग कभी २ स्त्रियों को भी परदे के साथ स्त्री धर्म शिक्षा दिया करें ! यही सब पातिव्रत प्रचार की युक्तियां हैं ! इधर हमारे गृहस्थ भाइयों को भी समझना चाहिए कि दोनों हाथ ताली बजती है उन्हें पतिव्रता बनाने

के लिए इन्हें भी स्त्री व्रत धारण करना होगा ! एक बात और भी है कि स्त्रियां अभी विशेषतः मूर्खा हैं ! अतः साम दाम दंड भेद से काम लेना ठीक होगा निरे न्याय और धर्म से वे राह पर न आवेंगी ! ऐसी युक्ति से बर्तना चाहिए कि वे प्रसन्न भी रहें और कुछ डरती भी रहें तभी प्रीति करेंगी ! कनौजियों की तरह निरी डंडेबाजी से वे केवल डर सकती हैं प्रीति न करेंगी ! अगरवालों खत्रियों की भांति निरी स्वतंत्रता सौंप देने से भी वे सिर चढ़ेंगी अतः भय और प्रीति दोनों दिखाना स्वतंत्र परतंत्र दोनों बनाए रहना ! मौके २ से उन्हें अनुमति और शिक्षा देते भी रहना और कभी उनकी सलाह भी लेते रहना बस इन उपायों से संभव है कि भारत कन्याएं पुनः पातिव्रत की ओर झुकने लगेंगी और पतिव्रताओं के प्रभाव से फिर हमारी सौभाग्य लक्ष्मी की वृद्धि होगी !

प्राप्त

। हितोपदेशावली ।

कवि शंकर दीक्षित रचित सरल दोहों में बालकों की शिक्षा के लिये अति उपयोगी है अंगरेजी में जो उमदा२ Morals हैं उनका अनुवाद दोहों में किया गया है पुस्तक संग्रह करने के योग्य है भरतजीवन प्रेस काशी में छपी है ।

चमक अवश्य पाई जाती है जिनको मंगाना हो —) प्रति पुस्तक के हिसाव से दाम भेज कर बहुत सी पुस्तकें मांगालें अधिक जिल्दों के मंगाने में डांक खर्च मे किफायत होगी

मंगाने का पता एडिटर हिन्दी प्रदीप

अहियापुर इलाहाबाद

निवेदन,

यदि हमारे सहयोगी पत्र संपादक गण ऊर्द्ध लिखित विज्ञापन को अपने २ पत्र मे स्थान देकर प्रकाशित करेंगे तो मुझ पर उनका परम अनुग्रह होगा।

किम्बहुकल्या

बालकृष्ण एडिटर हिन्दी प्रदीप

सूचना

वर्ष पूरा होगया अब हम अपने रसिक पाठकों से निवेदन करते हैं कि कृपाकर वार्षिक मूल्य भेजदें जिससे हम बार २ तकाजा करने की झौंझट या व्याल्यू पेबिल भेजने की बेमुरौअती से बचे रहैं

B. K. Bhatt